

॥ अथ टीकावार्त्तिकसंवलितं समवायाख्यं चतुर्थाङ्गसूत्रं प्रारभ्यते ॥

वनारस जैनप्रभाकर व्यापाखाने मे

JAIN
A. 23.

57.00.05.110

5774

॥ विज्ञापनम् ॥

— — — — —

सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करना हूँ कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससे जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कृति और परभव में श्रम पंगु कुप्टी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाना सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकृति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कन्य सुख इत्यादि स्वर्गमुख मोक्षसुख देने वाले कर्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनन्त है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है, क्यों कि ज्ञान बिना ज्ञानी और ज्ञानी बिना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका सहस्र अध्ययन

अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है, ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणाशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृङ्खलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे । अन्य मतों उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य और उपाध्याय कहलाते हैं । प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझते थे । और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उष्णो हुवा विगमे हुवा ध्रुवे हुवा) त्रिपदी मूल के १२ अंग की रचना कर देने थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके निवाय और कोई कारण नहीं समझा जा सकता । अधुनातन मनुष्यों की जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नहीं याद रहता है ज्ञानावरणीय के सेचय कौन कारण कहेंगे । ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नहीं हुआ किन्तु क्रमसे जाँ जाँ देखा क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये ताँ ताँ ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से १८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४ । विक्रम संवत् ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणितमाश्रमगने सोचा कि पुस्तक विलिखे यह स्मरणशक्ति

जानी रहैगी इसलिये बह्वर्णी पुरमें माधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ ये पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होनेके कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमनी परसती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अवतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रंथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिसमें जी यदि कोई तरहका विघ्न आय पड़े कार्य पूर्ण नहीं, क्योंकि एकता श्रयांसि बहुविधानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहीं चिन्ता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी नत्कर्म समाप्ति में है, ग्रंथ संग्रह किये बिना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जायंगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीछे से मसलमानोंने नष्ट किये जो अब हैं लिखने लिखाने की अज्ञातता से वर्तमान काल में पैताबीस आगम एक

जगह नहीं मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल माहिमा) इस हेतु वर्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है उस कला से मेरा मनो रथ जो के ५०० ठिकाने ४५ आगम का भण्डार करने की इच्छा है शीघ्रही सिद्ध होगी, लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने का ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुंदर पृथ्वी पर इसके सेवाय नहीं है ग्रंथ ठपवाना सुरू किया । यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ ठपवाने में आशातना होती है, इत्यादि अनुया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकशुभतदिक, महा कार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में बड़ा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नहीं है, पक्षपात ठोड के ग्रहण करें । यदि वस्तु के उत्पत्तिस्थान की ओर देखि येगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढ़ते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है यहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरच

करते हैं ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोड़ देना उचित है । इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अप्रति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नहीं करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्यों ने बड़े परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी के देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीड़े खा जाय और ग्रन्थ का नाममात्र ही ओप रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ हो जावे इसके संवाय कोई अविनय और आशुतना 'कर्मबंधका हेतु, नहीं है, वही ग्रन्थ ठपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावे इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नहीं है, यही सर्व कारण सोच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोग भी यथा शक्ति प्रवृत्त हों कि जिसे पुनर्जन्मत युवावस्था की प्राप्ति होय इति शम् ॥

मकसूदाबाद अजीमगञ्ज

राय धनपतिसिंह बन्नादुर

भूमिका ।

सप्तवाय नामक चतुर्थे अङ्क का अनयोग स्थाननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही कर्मसे प्राप्त है ,

आर अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मङ्गल समुदायार्थ द्वारजेन्द्र निरुक्तिक्रम और प्रयोजन सादिकं द्वारों के निरूपण से होती है सो सब इहाँ की स्थानाङ्ग के समान है ॥

समवाय चतुर्थ अङ्गानुयोग, राग नर द्वेष आदि विषम भाव शत्रुओं की सेना के समूल उन्मूलन करने में, तथा त्रिजुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक विसंवाद रहित वचन होने में त्रिजुवनरूप जवन के आंगन में सुधानमन निर्मल जिनके यज्ञ की राशि फैल रही है ऐसे जिनेंद्र परम कारुणिक श्री श्रमण जगवन्त महावीर वर्द्धमान स्वामी नें जैसा कहा उन के पांचवें गणधर आर्य सुधर्मास्वामीने श्रमणसंघ और अपनी साधुसंतति के लिये सूत्ररूप से संकलित किया, समवाय इस पदका समुदायार्थ यह है कि—सम्यक् प्रकार अधिकता करके जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का ज्ञान है जिसमें, अथवा समवाय सम्यक् ज्ञान इसग्रंथ में कहा है, समवाय शब्दसे आत्मा आदि कितने ही पदार्थ एक दो तीन चार इत्यादि एकोत्तर अर्थात् एक के बाद दो और दो के बाद तीन इस क्रमसे सौ पर्यंत और अनेकोत्तर अर्थात् अनेक की वृद्धि कोटा कोटि पर्यंत संख्या विशेषित इस ग्रंथ में कहे हैं, और द्वादशांग गणिपिटक के समाचार तथा आत्मादि पदार्थों को एकेंद्रियादि पर्याप्ता पर्याप्त नारक

तिर्यंच मनुष्य देव जेदमें और उनके आहार लेखा आवास नुपपात च्यवन अवगाहना उपधि वेदना उपयोग
 योग इन्द्रिय कषायादि, मेरु आदि पर्वतों का विष्कंभादि, कुलकर तीर्थकर गणधर चक्रधर बलदेव वासुदेव
 इत्यादि अनेक पदार्थ विशेषतया इस ग्रंथ में कहने में समवाय ऐसा नाम हुआ, वही समवाय क्वायोपशमिक
 भावरूप प्रवचन पुरुष के अगकी तरह अंग है इसलिए समवायांग नाम हुआ, इस ग्रंथ में भाव समवायांग
 कान्ती अधिकार है, यह समवायांग एक अध्ययन रूप एक श्रुतस्कंध एक उद्देशक और एक समुद्देश है, इस
 समवायांग के पदार्थों का तात्पर्य शीघ्र जानने के लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग
 अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही
 चारों जैसे नगर में सुखसे प्रवेश करने में चार द्वार होते हैं वैसे इन प्रवचनमें प्रवेश करने के चार अनुयोग
 रूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं, इन अनुयोगों से जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञान होने में तत्त्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ
 सिद्ध होता है इसलिये इसके पढ़ने पढ़ाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढ़ने का अधिकारी वही
 होगा जोकि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरु का आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिसकी व्यतीत हुआ होगा
 समवायाङ्ग सूत्र देनेका अवसर भी वही है, अन्यथा देनेमें तीर्थकराज्ञा जहादि दोषापत्ती होती है, इति.उम्॥

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धमहुद्रिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधन
पतिसिंहबहादुरेषु संविनयमावदनम् ।

आगे, मैंने सुना है आप की ऐसी इच्छा है कि पैनालिसों जैनागम
की पुस्तकें मूल टोका और जायाटीका सहित पांच सौ कापी छपें और
साधु आठकों के पठन पाठन के लिये पांच सौ स्थानमें पुस्तकालय
स्थापित हों सो यह अति ध्यानदकी बात है, परंतु जिन महाशयों
को द्रव्य दक पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त जी यदि
आप की आज्ञा हो तो बचने के वास्त पांच सौ कापी जैन बुक सुसाइटी
की ओर से जी छपवा ली जावें यह पुस्तकें में अजीमगज से प्रकाश
करूंगा अग्रे शुजम्, सवत् । १८३३ । मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगज

शहर मुरसीदाबाद

द० जैन बुक सुसाइटी

कायसम्पादक

सुबुद्रिसेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकायसम्पादक
महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी
की ओर से पैनालिसों जैनागम की पांच सौ पुस्तकें छपवा लेने की
आज्ञा क विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन बुक
सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पांच सौ पुस्तकें बचने के
वास्ते छपवा लें, परंतु पांच सौ से अधिक छपनेकी आज्ञा मैं नहीं
देता, यदि और कोई छपवाना चाहें तो उचित है कि पहले मुज
से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुई है, अग्रे शुजम् ।

सवत् । १८३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमलमधुकरायमाण याचककल्पवृक्षायमाण वङ्गदेशभूषण कृतदम्बुतोषणा जीमगञ्जवास्तव्य गुणगणसंस्तव्य ज्ञातसार मानसारी सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर क्षितिपति धनपति सिंहस्य धर्मापदेशेन शुभादेशेन ज्ञानवृद्धये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनपत्नीनां सकलयतीनां श्रेयोप्राप्तकाणां श्रावकाणां चापकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराक्षरतन्त्रे जैनप्रभाकरयन्त्रे कृतसम्यग्ध्यास्यं समवायास्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्याङ्गमिव तुरीयमङ्गं तपोधनिना मुनिना सदाऽतन्त्रेण नानकचन्द्रेण सुन्दर मुद्रितमभूत् ॥

समवायास्यंसूत्रं तुरीयमङ्गं मयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यं भविकान्सदापातु ॥ १ ॥

विशेषमायुषांतांचिरजीवितवताभगवतेति अथवापाठांतरेणमथेत्यविशेषमिदं आवसतामयागुरुकुलेआसृशतावासंस्पृशतावामयाविनयनिमित्तंकरत
लाभ्यांगुरोः क्रमकमलयुगलमिति यद्वा आउसंतेणंति आगुषमाणेनप्रीतिप्रणवमनसेति । यदास्यातंतदधुनोच्यते एगेआयाइत्यादि कस्वांचिद्वाचनायामपर
मपिसंबंधसूत्रमुपलभ्यते यथा इहखलु समणेणं भगवद्व्यादि तामेवचवाचनांवृहत्तरत्वाद्वाख्यास्यामःइदंचद्वितीयसूत्रं संग्रहरूपप्रथमसूत्रस्यैवप्रपंचरूपमवसे
यमस्यचैवंगमनिका इहाह्निलोके निर्गथतीर्थया खलुवाक्यालंकारे अवधारणेवा यथाचइहैव नशाक्यादिप्रवचनेषु आभ्यतितपस्यतीति अमणस्तेनेदंचांति
मजिनस्यसहस्रभतिसम्पन्ननामांतरमेवयदाह सहसंमर्दयामणेति । भगवतेतिपूर्ववत् महांथासौ वीरश्चेतिमहावीरस्तेनेदंच महासात्विकतया प्राणप्रहाणप्र
वणपरोषहोवसर्गनिपातेष्वप्रकंपत्वेनपीयूषपानप्रभुभिराविर्भाषितमाहच अयलेभयभेरेवाणंखंतिस्वमपरीसहावयवगगणंपडिमाणंपरेदेवेहिकएमहावीरेत्तिक
थंभूतेनेत्याह आदौप्राथम्येनश्रुतधर्ममाचारग्रंथाभ्रंकरोतितदर्थप्राणायकत्वेनप्रणयतीत्येवंशीलआदिकरस्तीर्थकरस्तेन तरंतितेनसंसारसागरमितितीर्थप्रव
चनंतइत्यतिरेकादिहसंघस्तोर्थंतस्यकरणशीलत्वात्तीर्थकरस्तेन तीर्थकरत्वंचतस्थनान्योपदेशबुद्धत्वपूर्वकमित्यतआह स्वयमात्मनैवनान्योपदेशतः सम्प्रबुद्धोहे
योपादेशवस्तुतत्वंविदितवानितिलयंसंबुद्धस्तेन स्वयंसंबुद्धत्ववास्यप्राकृतस्यैवमंभाय्यं पुरुषोत्तमत्वादस्येत्यतआह पुरुषणांमध्येतेनतेन अतिशयेनरूपादिनोद्धतत्वा

आङ्गरेणं तित्यगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंरुरीणं पुरिसवरगंधहल्यिणा लोगत्त

तपस्वीतेणे भगवंतर्ष्वर्यादिकगुणेकरीसहिततणेकर्मरूपवैरीने विदारतेमहावीरकहीयेतेणे श्रुतधर्मनीआदिनाकरणहारतेणे तीर्थचतुविधसंबंधनाकरणहा
रतेणे परनाउपदेशविनापोतेजप्रतिबोधपाभ्यातेणेकरी स्वामीसर्वपुरुषमांहिउत्तमतेणे पुरुषमांहिसिंहसरीखातेणेकल्याणजाइतेणे पुरुषमांहिप्रवरप्रधान-

दूर्ध्ववर्तित्वादुत्तमः पुरुषोत्तमस्तेन अथपुरुषोत्तमत्वमेवसिंहाद्युपमानत्रयेणास्यसमर्थयद्वाह सिंहइवसिंहःपुरुषश्चासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहः लोकेनहिंसिंहेशैर्य
 मतिप्रकटमभ्युपगतमतःशौर्यैसउपमानंकृतः शौर्यंतुभगवतोवाल्येप्रत्यनीकदेवेनभाष्यमानस्याप्यनीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहृतिप्रवर्द्धमानामरशरी
 र कुक्षताकरणाच्चेत्यतस्तेन तथा वरंचतत्पुण्डरीकंनवरपुंडरीकंधवलंसहस्रपत्रं पुरुषएववरपुंडरीकं धवलताचास्यभगवतःसर्वाऽशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च
 शुभैरनुभावैःशुद्धत्वादित्यतस्तेन तथा वरश्चासोगंधहस्तोएववरगंधहस्तोपुरुषएववरगंधहस्तोयथागंधहस्तिनोगंधेनैवसर्वगजाभज्यन्तेतथाभगवतस्तद्देशविहरणेन
 ईतिपरचक्रदुर्भिन्नजनहमरिकादीनिदुरतानिनश्यंत्येतिशतयोजनमध्येऽतस्तेनपुरुषवरगंधहस्तिनानभगवागुरुषाणामेवोत्तमःकिंतुसकलजीवलोकस्यापीत्यत
 आहलोकस्यतिर्यग्गनारकिनाकिलक्षणजोवलोकस्योत्तमश्चतुस्त्रिंशद्द्वितीयाद्यसाधारणगणोपेततयासकलसुरासुरखचरनरनिकरनमस्यतयाचप्रधानोलोको
 त्तमस्तेनलोकोत्तमत्वमेवास्यपुरस्कुर्वन्नाहलोकस्यसंज्ञिभ्यलोकस्यनाथःप्रभुर्लोकनाथस्तेननाथत्वञ्चास्ययोगक्षेमकृत्त्वान्नायइतिवचनादप्राप्तसम्यग्दर्शनादेर्योगकर
 णेनलभ्यस्यतस्यैवपालनेनचेतिलोकनाथत्वञ्चतात्त्विकंतद्वितत्वेसतिसंभवतीत्याह लोकस्यैकेन्द्रियादिप्राणिगणस्यहितआत्यंतिकतद्रक्ष्याप्रकर्षप्ररूपणेनानुकूलवृत्ति
 लोकिहितस्तेन यदेतन्नाथत्वंहितत्वंवातद्वयार्त्तानांयथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपणेननान्यथेत्येहलोकस्यविशिष्टतिर्यग्जन्मजरामरणरूपस्यांतरतिमिरनि
 करनिराकरणेनप्रकटपदार्थप्रकाशकारित्वात्प्रदीपइवप्रदीपोलोकप्रदीपस्तेनइदंचविशेषणं दृष्टलोकमाश्रित्योक्तमथदृश्यंलोकमाश्रित्याह लोकस्य लोक्यतेइति
 पुंडरीककमलसमानजिमकमलपंकपांशीयेनलीपैतिमभगवतकामभोगेनलीपैतणे पुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानअन्यतीर्थीमदच्छेइतिमारोनासेभगव
 तनेदेशीनेतेषु लोकसमस्तमांहिउत्तमतेषु लोक ८४ लाखजीवायानितहनानाधधणीतेषु लोकभव्यलोकतेहनेहितनाकरणहारतेषु लोक १४ राजप्रमा

॥ टीका

॥ भाषा ॥

लोक इति व्युत्पत्त्या लोका लोकरूपस्य समस्तवस्तुस्तोमस्य भावस्याखण्डमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावभावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल प्रवर्त्तनेन प्रद्योतं प्रकाशं करोतीत्येवंशीलोलोकप्रद्योतकरस्तेन ननु लोकनाशत्वादि विविधयोगो हरिहरहरिश्चरगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेन संभवतीति को स्य विशेष इत्याशङ्क्यान्तर्दिशे प्राभिधानायाह नभयं दयते प्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिण्यपि प्राणिनि दृष्टातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार यतीदयाघृणायस्यासावभयदयो हरिहरादिस्तु नैवमितितेनाभयदयेन न केवलमसावपकारकारिणामप्यनर्थपरिहारमात्रं करोत्यपित्वर्थप्राप्तिं करोतीति दर्शयन्नाह चक्षुर्विचक्षुः श्रुतज्ञानं शुभाशुभार्थविभागकारित्वा तद्दयते इति चक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोके चक्षुर्दत्त्वा वांक्षितस्थानमार्गदर्शयन्महोपकारी भवत्येवमिहापीति दर्शयन्नाह मार्गसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकं परमपदपथं दयत इति मार्गदयस्तेन मार्गदर्शयन्महोपकारी भवत्येवमिहापीति यथाहिलोके चक्षुर्दत्त्वा तन्मार्गदर्शनं चकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवस्थानं प्रापयन् परमोपकारी भवत्येवमिहापीति दर्शयन्नाह शरणं चाणमज्ञानोपद्रवोपहतानां तद्रक्षास्थानं तच्च परमार्थतो निर्वाणं तद्दयत इति शरणदयस्तेन यथाहिलोके चक्षुर्मार्गशरणदानादूर्ध्वस्थानजीवितव्यं ददातीत्येवमिहापीति दर्शयन्नाह जीवनं

माणं लोगनाहाणं लोगहिणुणं लोगपड्वेणं लोगपज्जोअगरेणं अजयदणुणं चरकुदणुणं मग्गदणुणं सरणदणुणं

॥ मूल ॥

तिहां दोवासमानमित्यात्वञ्चकारटाले लोकगणधरलोकनेहने प्रद्योतनाप्रकाशनाकरणे सहाय्ये सहितं सर्वजीवने अभयदाननादातारतरेण सम्भक्तिरूपलोचनानादातारतरेण भूलाश्रणीने मोक्षमार्गनादातारतरेण सर्वजीवने शरणनादातारतरेण सयमरूपजीवितव्यनादातारतरेण बोधिबीजसम्यक्तानादातारतरेण धर्म

॥ भाषा ॥

जीवोभाषमाणधारणमनरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं द्रव्यत इति जीवद्वयो जीवेषु वा द्वायस्य स जीवद्वयोज्जस्तेन इदं चानंतरीकं विशेषणकदंबकं भगवतो धर्ममयस्तत्वात्
संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्य विशेषणपंचकेनाह धर्मश्रुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जंतु धारणस्वभावं दयते ददातीति धर्मदयस्तेन तद्दानं चास्य तद्देशनादेवेत्यती
ग्राह धर्ममुक्तलक्षणं देशयति कथयतीति धर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वं चास्य धर्मस्वामित्वे सति न पुनर्द्वयानटस्येति दर्शयन्नाह धर्मस्य चाधिकज्ञानदर्शनचारित्रा
त्मकत्वाय नायकः स्वामी यथावत्पालनादमनायकस्तेन तथा धर्मस्य सारयिर्धर्मसारयिः यथा रथस्य सारथी रथरथिक मखांश्चरति एवं भगवांश्चारित्रधर्मांगानां सं
यमा मप्रवचनाख्यानं रक्षणोपदेशादमसारयिर्भवतीति तेन धर्मसारयिना तथा त्रयः समुद्राश्चतुर्धो हिमवान् एते च त्वारः अताः पृथिव्याः पर्यन्तास्तेषु स्वामि
तया भवतीति चातुरंतः स चासौ चक्रवर्ती च चातुरंतचक्रवर्ती वरयासौ चातुरंतचक्रवर्ती चेति वरचातुरंतचक्रवर्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रव
र्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्ती यथा हि पृथिव्यां गेपराजातिशयो वरचातुरंतचक्रवर्ती भवति तथा भगवान् धर्मविषये श्रेष्ठप्रणेतृत्वांमध्ये सातिशयत्वात्तद्वो

॥ टीका ॥

जीवदणं वोहिदणं धम्मदणं धम्मदेसणं धम्मनायगेणं धम्मसा
रहिणा धम्मवरचाउरंतचक्रवट्टिणा अम्महिहयवरनाणदंसणधरेणं

॥ मूल ॥

नादातारतेणैकज्ञो धर्मोपदेसनाकहणहारतेण धर्मनानायकअधिकारीतेण धर्मानासारथीभूलाप्राणैनिमार्गेअणेतणे चारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणैकरीच
क्रवर्तिसरीखाविभुवननोराज्यपालतेणे होपनोपरंसरणानावाणमाधारदेणहार चातुर्गतिकसंसारतेहनिवारिवानेविपेआधारभूत अप्रतिहतअखलित

॥ भाषा ॥

॥ ३ ॥

यत इति तेन धर्मप्रवृत्तौ चक्रवर्तिना एतच्च धर्मदायकत्वादिविशेषणपञ्चकत्वं प्रकटयित्वा नानादियोगे सति भवतीत्यत आह अप्रतिहतकटकुक्ष्यपर्वतादिभिर-
स्त्विति अविशङ्कादकेन अतएव चाधिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर स्तेन एवंविध संवेदनसंपदुपेतो-
पि कृत्वा न मिथ्योपदेशित्वा न्नोपकारीति निश्चयता प्रतिपादनाया स्याह अथवा कथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्वं संपन्नमत्रोच्यते आवरणाभावादेतदेवाह व्याहृ-
त्तनिवृत्तमपगतं कृत्वा न्नोपकारं वा यस्य सतथा तेन व्यावृत्तकृत्वा न्न मायावरणयोश्चाभावो ऽस्य रागादिजयाज्जातमित्यत आह जयति निराकरोति रागद्वे-
षादिरूपानरातीति जिनस्तेन रागादिजयस्यास्य रागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वक एव भवतीत्येतदस्याह जानाति ह्याश्च स्मिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक-
स्तेन अनंतरमस्य स्वार्थसंपत्त्युपायउक्तोऽधुना स्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वं विशेषणषट्केनाह तीर्णद्वतीर्णः संसारसागरमिति गम्यते तेन तथा तारयति
परानप्युपदेशवर्तिन इति तारकस्तेन तथा बुद्धेन जीवादितत्वं तथा बोधकेन जीवादितत्वं मेवाऽपरेषां तथामुक्तेन बाह्याभ्यंतरग्रन्थिद्वन्द्वनात् मोचकेन ततएव परे

वियद्वत्तुमेणं जिणेणं जावणं तित्तेणं तारणं युद्धेणं वोहिणं मुत्तेणं मोयगेणं सहन्तुणा सहदरसिणा

वरप्रधानज्ञानदर्शनतेहनाधरणहारतेणे कृत्वा न्नोपकाराधिकपटपणायकी निवर्त्यावीतरागधयातेणे रागद्वेषने जीपणहारतेणे अनेरानेरागद्वेषजीपावेतेणे पोतेसं-
सारसमुद्रतरातेणे अनेरानेसंसारसमुद्रतारतेणे आपणपैतल्वनाजाणतेणे अनेरानेप्रतिबोधतेणे आपणपैकर्मथकीमूकाणातेणे अनेरानेकर्मथकीमूकावेतेणे
सर्वपदार्थना जाणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहवामहावीरमोचजाइवावांछे छेतेमोचकेहधीछे उपद्रवरहितठामथकीचालेनहीतेणे जिहारीगनहीजेह

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

वांतयामुक्तवेपि संपन्नेन सर्वदर्शिना नतुमुक्तावस्थायां दर्शनांतरा इति मतपुरुषेणैव भाविजडत्वेन तत्राशिवं सर्वार्थाधारहितत्वात् अचलं स्वाभाविकप्रायोगिक
 चलनहेत्वभावात् अरुजमविद्यमानरोगंशरीरमनसोरभावात् अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अचयमनाशं साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतं वापरि
 पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अग्न्याबाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावर्तक मविद्यमानपुनर्भवावतारं तद्बीजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरिति नामधेयं यस्य तत्
 सिद्धिगतिनामधेयं तिष्ठतियस्मिन्कर्मकृत् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानं चोणकर्मणो जीवस्य स्वरूपं लोकाग्रं वा जीवस्वरूपविशेषणानितुलोका
 यस्वाधेयधर्माणामाधारेऽप्यारोपादवसेयानितदेवंभूतं स्थानं संप्राप्तुकामेन यातुमनसा नतु तत्प्राप्तेन तत्प्राप्तस्थाकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति
 यदुच्यते तदुपचारादन्यथा हि निरभिलाषा एव भगवंतः केवलिनो भवन्ति मोक्षे भवेच्च सर्वत्र निस्पृहो मुनिस्तत्तम इति वचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन
 भगवता इमेति इदं वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षमासन्नद्वादशांगानियस्मिंस्तद्वादशांगं गणिन आचार्यस्य पिटकमिव पिटकं गणिपिटकं यथा हि बालं जुक्वाणिजक

॥ टीका ॥

सिद्धमयलमस्य मणंतमस्कयमह्वायाहमपुनरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं
 टाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिठगे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥

॥ मूल ॥

नोपंतनथी जेहनोचयनथी जिहांकिसीआबाधानथी जिहांथकीऊपराठोआविवोनथी सिद्धिगति एहवो जेहनोनामधेयं एहवेठामें मोक्षे जाइवानीबांछा
 करेहेतेषेमहाबोरे एहवाद्वादशांगीसूत्रगणौकहियेआचार्यतेहनेपेटोसरिखाहे जिमव्यापारोयानेपेटोरत्नादिकधननीआधारहोइ तिम आचार्यने एहद्वादशां

॥ भाषा ॥

॥ ४ ॥

स्वापिपिटकं सर्वस्वाधारभूतं भवति एवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वस्वाधारकल्पं भवति इति भावः प्रश्नसंतीर्थकरनामकर्मादयः वर्तितया प्रायः कृतार्थेनापि परोपकारस्य प्रकाशितं तद्यथेत्युदाहरणोपदर्शने आचारइत्यादि द्वादशपदानि वक्ष्यमाणानि निर्वचनानीतिकंठानि तत्थ्यन्ति तत्र द्वादशांगेण

॥ टीका ॥

आचार्ये १ सूयगृहे २ ठाणे ३ समवाये ४ विवाहपन्नत्ति ५ नायाधम्मकहानं ६ उवासगदसानं ७
अंतगृहदसानं ८ अणुत्तरोपवाइदसानं ९ परहावागरणं १० विवागसुए ११ दिठिवाए १२

॥ मूल ॥

गीसूत्रज्ञानादिकगुणरत्नोपाधारके कथ्योक्ते तेकहंके आचारांगसूत्रप्रथमं १ जेहमां हिमाधुनोपाचारपामीये । बीजसूत्रकृतांग जेहमां हिस्वसमयपरसमयनी
वक्तव्यतापामीये २ बीजस्थानांग तेमां हि एकथकीमाडीदसलगे संख्यानादसअध्ययनके ३ । चोथोसमवायांग जिहां एकथकीमाडीकोडाकोडिनीसंख्या ४ पांच
मोविवाहप्रश्नतीजेहमां हि छत्रोससहस्रप्रश्नापामीये एतले भगवतीसूत्र ५ छट्ठो ज्ञाताधर्मकथांग जिहां १८ न्यायअनेअजंठकोडिधर्मकथाएछट्ठो ६ सातमोउपासक
दशांगउपासकआवकतेहनादशअध्ययनके ७ आठमोअंतकृतदशांगजेण्यतीएसंसारनोअंतकीधोतेहनाआठवर्गजेमां हि छै नवमोअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेह
यतीअनुतरविमांनेउपनातेहनातीनवर्गजिहांपामीये ८ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमां हिअंगुष्टादिकप्रश्नोअधिकारहुंतीहि वडां पांचआ अवपांचसंवरहारइम
१० अध्ययनके १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनोविपाककेएतले १० सुखविपाकीया १० दुखविपाकीयाअध्ययनके ११ बारमोदृष्टिबादते १४ पूर्वएक

॥ भाषा ॥

मि यलंकारे यत्तच्चतुर्थमंगं समवायइत्याख्यातं । तस्यायमर्थः आत्मादिरभिधेयीभवतीतिगम्यतेतद्यथेतिवाचनांतरद्वितीयसंबंधात्मन्मूल्याख्येति । इहचविदुषाम्पदार्थमभिद्धता सक्रमेणवासा वभिधातयइति व्याख्येयस्तत्राचार्यः एकत्वादिसंख्याक्रमसंबद्धानर्थान् वक्तुकामआदावेकत्वविशिष्टानात्मनश्चसर्वपदार्थाभाजकत्वेनप्रधानत्वादात्मादीन्सर्वस्ववस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेनसप्रतिपक्षानेव एगेआयाइत्यादिभिरष्टादशभिः सूत्रैराह स्थानांगेएकार्थानिप्रायस्तथापि किंचिदुच्यते एकआत्माकथंविदितमितिगम्यते इदञ्चसर्वसूत्रेष्वनुगमनीयं तत्रप्रदेशार्थतयाअसंख्यातप्रदेशोपिजीवइत्यर्थतया एकः अथवाप्रतिक्षण पूर्वस्वभावक्षयाऽपरस्वरूपोत्पादयोगेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रापेक्षयाएकएवआत्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेप्यात्मना संप्रह्नयान्श्रितसामान्यरूपापेक्षयैकत्वमा मनइति तथानआत्मा अनात्माघटादिपदार्थः सोऽपिप्रदेशार्थतया ऽसंख्येयानंतप्रदेशोपि तथाविधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थापेक्षयाएकएवसंतानापेक्ष

तत्पणं जेसेचउत्पेक्ष्यंगे समवायुत्तिष्णाहिते तस्मिणंश्रयमहे पं० तंजहा एगेष्णाया एगेष्णया

अंगएवाद्दयांगोतेवाद्दयांगोमांहिजेहतेह चोथोअंगएतलेप्रवचनरूपपुरुषनेअंगमरीखोअंग समवायांगसूत्र आहियेकश्चोसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधिकपणेजीवाजीवादिपदार्थजेहनेविषे तेसमवायांगकहिये अर्थाधिकारमूत्रेकहैतेमाटेप्रधानसकलपदार्थनोभाक्तारआत्माहेतेमाटेप्रधानपणाथकीआत्माप्रथमभवतस्योचेतनावंतआत्माकहोयेथयसिंसमारमांहिजोवअनंताकेपंपट्द्रव्यनोअपेक्षाएजोवद्रव्यएकजकहोयेएमआगलेसगलेपदेजाणिवो १ तेसमवायांगनोएअर्थअहियेहे १ तेअनुक्रमेकहेहे एकआत्माजीवसामान्यप्रकारेएकपणोएमसर्वत्र एकअनात्माजीवरहितवटादिकपदार्थ एकदंडभूडोव्यापारवोयोगजणिनोतेदंड

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

वापि तुल्यरूपापेक्षयातु अनुपयोगलक्षणैकस्वभावयुक्तत्वात्कथंचिद्विषयस्वरूपाणामपि धर्मास्तिकायादीनामनात्मनामेकत्वमवसेयमिति तथा एकोदंडोदुःप्र
युक्तमनोवाक्यायलक्षणै हिंसामात्रं एकत्वं वास्य सामान्यतयोद्देशादेवं सर्वत्रैकत्वमवसेयं तथा एकोदंडः प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्रं वा तथा एकाक्रियाकायि
क्यादिका आस्तिक्यमात्रं वा तथा एकाश्रया योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वं वा तथा एकोलोक स्त्रिविधोप्यसंख्येयप्रदेशोपि वा द्रव्यार्थतया तथा एकोऽलो
कोऽन्तप्रदेशोपि द्रव्यार्थतया अथ चैते लोकालोकयोर्बहुत्वव्यवच्छेदेन परस्मैभ्युपगम्यंते च कैश्चिद्द्वयो लोकाश्च तस्मिन्लक्षणालोकाश्रयितावन्त एवेति एवं सर्वत्र
गमनिकाकार्या । नवरंधमो धर्मास्तिकायः अधर्माऽधर्मास्तिकायः पुण्यशुभं कर्म पापमशुभं कर्म बंधोजीवस्य कर्म पुद्गलसंश्लेषः सचैकः सामान्यतः सर्वकर्मबंधव्य
वच्छेदावसरेया पुनर्बंधाभावादानेनोद्देशेन मोक्षाश्रयसंवरवेदनानिर्जराणामप्येकत्वमवसेयमिति इह चानात्मग्रहणेन सर्वेषामनुपयोगवतामेकत्वं प्रज्ञाप्य पुन

एगेदंठे एगेश्चदंठे एगाकिरिया एगाश्चकिरिया एगेलोए एगेश्चलोए एगेधम्मे एगे

पुस्से एगेपावे एगेबंधे एगेमोरके एगेश्चासवे एगेसंवरे एगावेयणा एगाणिज्जरा

एकदंडभलामनोप्रभृतियोगत्रयि एकक्रियाकरिवोतेक्रियाकायिक्यादि एकश्रयायोगविरोधलक्षण एकलोकयद्यपि त्रिणिलोके परं द्रव्यार्थपणे एक एकश्च
लोकपंचास्तिकायरहित एकधर्मास्तिकायचलनस्वभाव एकअधर्मास्तिकायस्थिरस्वभाव एकपुण्यशुभकर्म एकपापअशुभकर्म एकबंधजीवने अने कर्मपुद्गलने जो
डिवो एकमोक्षसर्वकर्मबंधकीमंकावणो एकआश्रयकर्मबंधनोउपाय । एकसंवरकर्मबंधनाउपायनोनिरोधक एकवेदनाशुभाशुभकर्मनोउदयकालेभोग

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

लोकादितयाएकवप्ररूपेण तत्सामान्यविशेषोपेक्षमवगंतव्यमिति एवंचात्मादीनां सकलशास्त्रप्रपञ्चानामर्थानां प्रत्येकमेकत्वमभिधायाधुनात्मानात्मपरिणा-
मरूपाणामर्थानांतदेवाह जंबूद्वीपादिसूत्रसप्तकमाययविशेषाणां तथा इमीसेरयणमित्यादिसूत्राष्टादशकमाययिणांस्थित्यादिधर्माणां प्रतिपादनपरं सुबोधं
नवरं जंबुद्वीवेदीवे इहसूत्रेभ्यामविक्रंभेणतिक्रित्वाठोट्टश्यते क्वचित्तुचक्रवालविक्रंभेणति तत्र प्रथमःसंभवत्यत्रापि तथाश्रवणात्सुगमश्च द्वितीयस्त्वेवंव्याख्ये
यचक्रवालविक्रंभेणहस्तव्यासेन इदंचप्रमाणयोजनमवसेयं यदाह आयंगुलेष्वयं उल्लेखप्रमाणश्रीमिणसुदेहं नगपुटविविमाणाहं मिणसुपमाणंगुलेषंतु ॥ १ ॥
तथा पालकयानविमानं सौधर्मेद्रसंबंधपि आभियोगिकपालकाभिधानं देवकृतं वैक्रियं यानंगमनंतदर्थंविमानं यायतेऽनेनेतियानं तदेवविमानं यानविमा-

जंबुद्वीवेदीवे एगंजोयणसयहस्सं श्यायामविरकंजेणंपन्नत्ते श्रृप्पड्ढाणे
नरएएगंजोयणसयसहस्सं श्यायामविरकंजेणं पं० पालए जाणविमाणे

विशो एकनिर्जरा आत्मानाप्रदेश्योक्तर्मपुङ्गलनूवेगलूकरिवो एजंबूद्वीपसकलद्वीपमांहिमुख्यद्वीप एकयोजनशतसहस्रएतले । एकलाखयोजनप्रमाणांगुले ।
लांबपणेअनेपिहुलपणेकश्रोतीर्थकरे । सातमीनरकपृथिवीये पांचनरकावासाहे तेमाहिविचलो अपड्ढाणनामनरकावासेएकयोजनशतसहस्रएतलेएक
लाखयोजन लांबपणेअने पिहुलपणेकश्रो । पालकयानविमानसौधर्मेद्रसंबंधिअभियोगीदेवताएनीपजाविश्रोगमननेअर्थंते एकलाखयोजनजाणवा लां
बपणेअनेपिहुलपणेकश्रोहे पंचानुत्तरविमानमाहिविचलोसर्वार्थसिद्धनामेविमानहेतेमांहिएकामयतारीजीवउपजेतेमांटे महाविमानकहियेतेएकलाखयो

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भांवां ॥

॥ ६ ॥

नं पारियानिकमितियदुच्यते अथीत्यादि अस्तिप्रियते ऐकेषांचिन्नैरयिकाणा मेकंपत्थोपमं स्थिति रितिकृत्वाप्रज्ञाप्रवेदितामया अन्यैश्चजिनैः साचचतुर्थेप्र

॥ टीका ॥

गेएजोयणसयसहस्संश्यायामविस्कंजेणं प० सव्वठसिधेमहाविमाणेएगंजोयणसयसहस्संश्यायामविस्कंजेणं प०
अदानस्कत्तेएगतारे प० चित्तानस्कत्तेएगतारे प० सातिनस्कत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्पन्नाएपुढवीए अ
त्येगइश्याणंनेरइश्याणं एगंपलिनुवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए नेरइश्याणं उक्कोसेणंएगंसागरोव
मंठिई प० दोच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगंसागरोवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइश्या
णं एगंपलिनुवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणंएगंसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥

॥ मूल ॥

जनलांघपणेअनेपिहुलपणेकह्यो । आर्दानच्चनोएकतारोकह्योके । विजानच्चनोएकतारोकह्योके । स्वातिनच्चनोएकतारोकह्यो । एहतेरत्तप्रभापहिलीन
रकपृथिवीनेविश्वे केतलाएक नारकीनां एकपत्थोपमस्थितिआजखोभगवतेकह्योके । एणीयेरत्तप्रभापहिलीनरकपृथिवीने नारकीयांनो उत्कृष्टोए-
कसागरोपमस्थितिआजखोकेभगवते ओजोयेनरकपृथिवीने नारकीयांनो जघन्यपणे एकसागरोपमस्थितिआजखोकेह्यो अनंतज्ञानवतेअसुरकुमारभवन
पतीप्रथमनिकायना देवतानो केतलारकनो एकपत्थोपमस्थितिआजखोकेभगवते असुरकुमारदेवनो उत्कृष्टोभाभेरोएक सागरोपमस्थितिआजखो

॥ भाषा ॥

स्तट मध्यमावसंयाति एवमकसागरापम त्रयादशप्रस्तटउत्कृष्टास्थानां गत असुरमृदाज्याणां तेषमरवलिवर्जितानां भोमेज्जाणंति भवनवासिनां भृमोपृथि
 व्यांरत्रप्रभाभिधानायां भवत्वात्तेषामिति तेषांचैकपत्न्यापमं मध्यमास्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोनेद्विपत्न्यापमे सात्राहच दाहिणदिवदू पलियं दोदेसूणत्तरिज्ञाणं
 ति असंखेज्जेत्यादि असंख्येयानि वर्षाण्यायुर्येषांति तथा तेचतेसंज्ञिनयसमनस्कास्तेचते पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकासेत्यसंख्येयवर्षायुः सन्निपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिका
 स्तेषांकेषांचियेहैमवतैरण्यवतवर्षयो इत्यत्रा स्तेषा मेकपत्न्यापमस्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नयरं गर्भगर्भाशयेव्युक्तांतिरुत्यत्तिर्येषांतेगर्भव्युक्तांतिका नसमूर्च्छन

॥ टीका ॥

असुरकुमारिंदवज्जियाणं ज्ञोमिज्जाणंदेवाणं अत्येगइयाणं एगंपलिनुवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउय
 सन्निपंचिंदियतिरिस्कजोणियाणं अत्येगइयाणं एगंपलिनुवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगप्पवक्कांति
 यमणुयाणं अत्येगइयाणं एगंपलिनुवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्कोसेणं एगंपलिनुवमंठिई प० ।

॥ मूल ॥

कह्यो असुरकुमारिंदचमरेन्द्रवलेन्द्रवर्जोने भवनपतीदेवतानो एकेकनोकेतलाएकनो एकपत्न्यापमस्थितिआजखोकह्यो । असंख्यातावर्धनाआजखानासंज्ञी
 गर्भजपंचेन्द्रियतिर्यचनोएतलेहैमवंतऐरण्यवंतयुगलक्षे ननागर्भजतिर्यचनोयुगलियागर्भजमनुष्यतिर्यचनो आजषाउत्कृष्टोजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपंस
 कगर्भजमनुष्यनूआजषपूर्वकोडिनुपणिकह्योकेतेमाटे अत्येगइयाणं पाठयह्योकेतलाएकनू एकपत्न्यापमस्थितिआजखोकह्यो । असंख्यातावर्धनाआजखानागर्भज

॥ भाषा ॥

जाइत्यर्थः वाचमंतराणं देवाणंति देवानामेव न तु देवीनां तासामर्हपत्योपमस्य प्रतिपादितत्वात् जोइसियाणं देवाणंति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां नापि चन्द्रादिदेवीनां पलियंचसयसहस्समं चन्द्राणञ्चिआउजाणो इतिवचनात् सोहम्मेकप्पे देवाणंति इह देवशब्देन देवादेव्योगृहीताः सौधर्मेहिपत्योपमाद्वीनत रास्थितिर्जघन्यतापि नास्ति इयंचप्रथमप्रस्तटेज्जसेया सोहम्मेकप्पे अत्येगइयाणं देवाणं एगंसागरोवममित्यत्र देवानामेवग्रहणं न तु देवीनां उत्कृष्टतोपितचतासां पंचायत्पत्योपमस्थितिकत्वात् तथा एकंसागरोपममिति मध्यमस्थित्यपेक्षया उत्कर्षतस्तत्र सागरोपमद्वयसद्भावात् प्रस्तटापेक्षयास्तेषां सप्तमे प्रस्तटे मध्यमावसे

जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगंपलिनुवमं वाससयसहस्समज्जहियं ठिई प० । सोहम्मेकप्पे देवाणं जहन्तेणं एगंपलिनुवमं ठिई प० । सोहम्मेकप्पे देवाणं अत्येगइयाणं एगंसागरोवमं ठिई प० । ईसाणेकप्पे देवाणं जह

संज्ञीपंचेन्द्रियमाणसनं एतलेहिमवंतं एरखवतत्तेवसंबंधीयुगलियांमाणसनोकेतला एकनोपत्योपमस्थितिआजपूंकञ्चोभगवंतेवाणं अंतरदेवनो उत्कृष्टो एकपत्योपम जघन्य १० सहस्रवरसनो कञ्चो जातिवीचं द्रमाविमानवासी देवतानो उत्कृष्टो एकपत्योपम एकवर्धलाखे प्रजिकएवडीस्थितिकहीतीर्थं करदेवे । सौधर्मेप्रथम देवलोके देवनो जघन्य एकपत्योपमस्थितिआजखोकञ्चो सौधर्मदेवलोके देवतानो केतला एकनो एकसागरोपमस्थितिआजखो देवीनो सागरोपमनकहिवो उत्कृष्टो पंचासपत्योपमकञ्चो ईशानवीजे देवलोके देवनो जघन्य भाभेरो एकपत्योपम एवडीस्थित अनंतग्यानीये कहो ईशाने देवलोके देवनो केतला एकनो एकसाग

या । ईसाणैकपदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेन देवादेव्यश्च गृह्यन्ते यतस्तत्र सातिरेकपत्न्योपमादत्वाजघन्यतः स्थितिरेव नास्ति ईसाणैकपदेवाणं अत्येगइयाणमित्यत्र देवानामेव ग्रहणं न देवीनां तत्र तासामुत्कर्षतोऽपि पंचपंचाशत्पत्न्योपमस्थितिकत्वादिति तथा ये देवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरं सागरकांतं भवं मनुं मानुषोत्तरं लोकाहितं मिह चकारोद्गृह्यः सप्तमुच्चयस्य द्योतनीयत्वादिमानं देवनिवासविशेषमासाद्येतिरिति एतानि च विमानानि सप्तमप्रस्तटे वसेयानि स्थित्यनुसारेण च देवानामुच्छ्वासादयो भवन्ति तान् दर्शयन्नाह तेषामित्यादि येषां देवानामेकं सागरोपमं स्थिति स्ते देवा णमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इति शेषः आनन्ति प्राणन्ति एतदेष क्रमेण व्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसन्ति निःस्वसन्ति वायुर्दोषिकल्पार्थः तथा तेषामेव वर्णसहस्रस्यान्त इति शेषः आहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्ग

॥ टीका ॥

क्लेणं साङ्गरेगं एगं पलिनुवमं ठिई प० । ईसाणैकपदेवाणं अत्येगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई प० । जे देवा सागरं सुसागरं सागरकांतं जवं मणुं मानुसोत्तरं लोकाहितं विमाणं देवत्ता एउवयन्ना ते सिणं देवाणं उक्को सेणं एगं साग

॥ मूल ॥

रोपमनोस्थितकही । ईयान देवलांके सातमे प्रतरे जे देवताना सागर १ सुसागर २ सागरकांत ३ भव ४ मणुष ५ मानुषोत्तर ६ लोकाहित ७ एणै विमाणे देवतपणे ऊपनाके । ते देवतानो उक्कट्टो एकसागरोपमनो स्थितिकही । ते देवता एक अर्द्धमासे एतले एकणि पखवाडे आणमंति थोडो स्वासलै पाणमंति घणो लै पाणमंति प्राणमंति एह अंतवृत्ति स्वासउत्तरसंतिनो ससंति एह ब्राह्मवृत्तिके इक आचार्य एमक हेके जे देवताने जेतला सागरोपम आज खोते हेने ते तले पखवाडे सासो

॥ भाषा ॥

लानां ग्रहणमाभोगतोभवति अनाभोगतस्तु पतिसमयमेव विग्रहादन्यत्रभवतीति गाथेह जस्सजइसागरोवमा ठिइतस्सतत्ति एहिं पस्सेहिं ऊसासो देवाणं वा
ससहस्सेहिं आहारोत्ति संतिविद्यन्ते एगइया एकेकेचन भवसिद्धियत्ति भवा भाविनीसिद्धिर्मुक्तिर्येषांते भवसिद्धिका भव्याः भवग्गहणेणंति भवस्यमनुष्यजस्स नो
ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेन सेत्स्संति अष्टविधमहर्द्धिप्राप्त्याभोत्स्यंते केवलज्ञानेन तत्त्वं मोक्षंते कर्मराशेः परिनिर्वास्यंति कर्मकृतविकारहाच्चैती भविष्यन्ति कि
मुक्तं भवति सर्वदुःखानां मंतं करिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतया श्रयणादेकतया वस्तून् यभिधायाधुना विशेषमप्याश्रयणाद्वित्तेनाह दोदंढेत्यादि सुगममादि

रोवमंठिई प० । तेणं देवा एगस्स अणुमासस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्स संतिवा नीस संतिवा तेसिणं
देवाणं एगस्स वाससहस्स आहारठेसमुपज्जइ संते गइया न वसिष्ठिया जे जीवा ते एगेणं न वग्गहणेणं सिज्जिस्सं
ति युज्जिस्संति मुच्चिं संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुक्काणमंतं करिस्संति ॥ १ ॥ दोदंढापन्नत्ता तं०

सासकहे तेतले सहस्रेवर्षे आहारनीइकाजपजे । जंचोस्वास ते उत्त्वास नीचोमेस्सिहवोते नीसास तेह देवने ऐकसहस्रवर्षे आहारनोअर्थजपजे । संतेकह
तां ऐकेकेक भवसिद्धिया कहतां भाविनी होणारी के ढूंकडो सिद्धिजेहने ते भवसिद्धिका भव्यजोव संसारमां हिते हलधु कर्मी एक भवने आंतरे सी भस्ये कृतार्थथास्ये बूझ
स्ये केवलज्ञाने कौसकल संसारनां परमार्थजाणिस्ये कर्मकौधो विकार तेह नारहित पणाथ कोठाटाहोस्ये । सकलशारीरी दुःखनी मानसी दुःखनी अंतकरिस्सं-
एतले एकठाणी कहियो ॥ १ ॥ हिवे बीजो अविकारकहे के वेदं डकड्यो भगवंते जे ऐकरो परना प्राणदंडीये हणीये ते दंडकड्यो तेकहे के अर्थदंड ते आत्माने अर्थ पर

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

स्थानकपमात्रेनवरमिह दंडरागे बंधनार्थमूषाणांययंनचत्रार्थंचतुष्टयं स्थित्यर्थंयदमकमुच्छ्वासाद्यर्थंयमिति तत्रार्थेनस्वपरोपकारलक्षणेन प्रयोजनेनदंडो
हिंसाअर्थदंडएतद्विपरीतोऽनर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायांविपल्योपमास्थितिश्चतुर्थप्रस्तटेमध्यमाद्वितीयायांविसागरोपमेस्थितिःषाट्प्रस्तटेमध्यमाज्ञेया तथाअसु

॥ टीका ॥

अष्टादंशेचेव अण्ठादंशेचेव दुवेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुवि
हेबंधणे प० । तंजहा ॥ रागबंधणेचेव दोसबंधणेचेव पुत्राफगुणीनरकत्तेदुतारे प० । उ
त्तराफगुणीनरकत्तेदुतारे प० पुत्राजद्वयानरकत्तेदुतारे प० उत्तराजद्वयानरकत्तेदुतारे प०
इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्येगइअणंनेरइयाणं दोपलिनुवमंठिईप० । दुच्चाएपुढवीए
अत्येगइअणं नेरइअणं दोसागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइ

॥ मूल ॥

नेअर्थेआगलानापाणहणीये तेऽर्थदंड निरर्थकपणंपरप्राणनेहणीये तेअनर्थदंडनिधे वेरागिसमूहकही तेकिसी कहेंके । जीवराशिजीवनासमूह अजीवरा
शि अजीवनासमूह वेप्रकारे बंधनकक्षा तेकहैंके रागबंधण रागेकरीकर्मनोबंधपडे एमज द्वेषबंधणपडे पूर्वाफाल्गुनीनचत्रनाबेताराकक्षा भगवंते
उत्तराफाल्गुनीनचत्रना बेताराकक्षा पूर्वाभाद्रपदनचत्रतणा वितारा कक्षा । उत्तराभाद्रपदनचत्रनाबेताराकक्षा एणीइये रत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीये
केतलाएकनारकीनो चोथेपाद्यडे बेपरवापमस्थितआजधंमध्यमकक्षा बीजी नरकपृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनो छठेपाद्यडे बेसागरोपममध्यस्थितिआ

॥ भाषा ॥

आणंदोपलिनुवमाइंठिई प० असुरिंदवज्जिआणं ओमिज्जाणंदेवाणं उक्कोसेणंदेसूणाइं दोपलिनुवमाइंठिई
 प० असंखिज्जावासाउयतिरिक्कजोणिआणं अत्थेगइआणं दोपलिनुवमाइंठिई प० असंखिज्जावासाउयस
 न्निमणुस्साणं अत्थेगइयाणंदोपलिनुवमाइंठिई प० सोहम्मकेप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं दोपलिनुवमाइंठिई
 प० ईसाणेक्कप्पेअत्थेगइयाणंदेवाणं दोपलिनुवमाइंठिई प० सोहम्मकेप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं उक्कोसेणंदो
 सागरोवमाइंठिई प० ईसाणेक्कप्पेदेवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइंठिई प० सणंकुमारेक्कप्पेदेवा
 णं जहन्तेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदेक्कप्पे देवाणं जहन्तेणं साहियाइंदोसागरोवमाइं ठिई प० ।

जयं कच्छो । असुरकुमारभवनपतीदेवनो । केतलाएकनो विपल्योपमनूं आजघो कच्छो । असुरेद्रवमरेद्र बलेंद्रटालीने बीजोभूमिसंबंधि उत्तरदिशिनानागदेव
 तानो उत्कृष्टोकाइकोओक्खिबिपल्योपमनोआजघो कच्छो असंख्यातावर्धना आजखाना गर्भजमानुष्यनां एतले हरिवर्ध रम्यकचेत्रसंवंधी युगलियामनुष्यनुं के
 तलाएकनो विपल्योपमआजघो कहिउ सौधम्मं पहिलेदेवलोके केतलाएकदेवनो विपल्योपममध्यमआजघो कच्छो । ईशानबीजेदेवलोके केतलाएक देव
 तानूं विपल्योपमआजघोकच्छो । सौधम्मदेवलोकेदेवतानोउत्कृष्टो वेइसागरोपमआजघो कच्छो । ईशानबीजेदेवलोके देवतानो उत्कृष्टोआभेरो

रेद्वर्जितभवनवासिनां देदेशानपत्न्यापमस्थितिरीदौ च्यनागकुमारानाश्रित्यावसेयायतआह दोदेसुणुत्तरिक्षाणंतिं तथाअसंख्येयवर्षायुषांपंचेद्विधतिरिचामनु
याणांचहविर्षरम्यकवर्धजन्मनांदिपत्न्यापमास्थितिरिति ॥ २ ॥ अथविस्थानकंतओइत्यादिसर्वसुगमं नवरभिहदंडगुमिश्रलपगौरवविराधनार्थसूत्राणां

जेदेवा सुजं सुजकंतं सुजवस्सं सुजगंधं सुजलेशं सुजफासं सोहम्मवफ्रिसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तैसिणं
देवाणंउक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा दोरहंअप्पमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उसस्सं
तिवा नीस्ससंतिवा तैसिणंदेवाणदोहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ अत्थेगइयान्नवसिधियाजीवा जे
दोहिंनवग्गहणेहिंसिज्जिस्संति मुच्चिस्संति वुज्जिस्संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुस्काणमंतंकरिस्संति ॥ २ ॥

विद्वसागरोपमआजषोकश्चो सनत् कुमार श्रीजेदेवलोकेदेवतानं जघन्यवेसागरोपमआउषोकश्चो माहेन्द्रचोदेदेवलोकेदेवतानो जघन्य विसागरोपमभाभेरी-
आजषानीस्थितिकहीसौधर्मेदेवलोकेतेरमेप्रतरेजेदेवतानानाम शुभ १ शुभकांत २ शुभवर्ण ३ शुभगंध ४ शुभलेश ५ शुभस्पर्श ६ सौधर्मावतंसक ७ एहसातवि
मानेदेवतापणेजपनाके तेहदेवनो उत्कृष्टो वेसागरोपमआजषोकश्चो तेहदेवनेविहुंअर्धमासेएतलेविहुपखवाडे आणप्राणहुयेआणथोहोस्वासप्राणतेघणोउ
त्वास उत्वासतेउचोलेवोस्वास नीसासतेसासनीचो मेल्हवो तेहदेवताने विहुये वर्षसहस्से तेहने आहारनोअर्धजपजे आभोगआहारस्ये संसारमाहिकेत
लाएकभवसिहीयाभयजीव जेविहुंभयवहणे बेभवनेआंतरेसौभस्ये कृतार्थथास्ये तत्त्वनाजांणथास्ये कर्मबंधयकीमुंकास्येकर्मकृततापटालवाथकीठाठाथास्ये

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ १० ॥

पंचकं न च चार्थसप्तकं स्थित्यर्थनवकं मुक्तासायथं त्रयमिति । तत्र दंडं च ते चारित्र्यैश्वर्यापहारतोऽसारीकियते एभिरात्मेति दंडादुःप्रयुक्तमनः प्रभृतयः मन एव दंडो मनोदंडो मनसावादुःप्रयुक्तेनात्मनोदंडो दंडेन मनोदंड एवमितरावपि तथा गोपनानि गुप्तयः मनः प्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशल्पानौवशस्थानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः सैव शल्पं मायाशल्पं नित्यलंकारे एवमितरेऽपि नवरनिदानं देवादिरिहीनां दर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानात्मैताभूयासु रित्यध्यवसायो मिथ्यादर्शन मत्वार्थश्रद्धानमिति तथा गौरवाणि अभिमान

॥ टीका ॥

तनुदंष्ट्रा प० तं० मणदंष्ट्रे वयदंष्ट्रे कायदंष्ट्रे । तनुगुत्तीनु प० तं० मणगुत्ती वयगु
त्ती कायगुत्ती । तनुसत्त्वा प० तं० मायासत्त्वेणं नियाणसत्त्वेणं मिच्छादंसणसत्त्वेणं ॥

॥ मूल ॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिखे ऐतले बीजोठाणो पूराययो ॥ ॥ २ ॥ ॥ हिवे तोजोठाणो कहेके । तीनदंडक
ह्या जेणेकरी आत्मादंडीये चारित्र्यरूपधनगमाडीये ते दंडकहीये ३ मनेकरी आत्मादंडीये असारकरीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदं डपणिइमज
३ त्रिणिगुप्ती गोपविरो ते गुप्ति कहिये तेकहेके मननो गोपवो ते मनोगुप्ती १ इम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिशल्यके तीरनीपरे शल्यसरीखा श
ल्य भाल दुखदायकपणाथकी ते कहेके मायाकपटतेहीजशल्य तेमायाशल्य १ निदानशल्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकपदवीनो वांछवी २ मिथ्यातशल्य

॥ भाषा ॥

ॐ भाभ्यामात्मनाऽशुभभावगुह्यत्वानि तानि वसंसारचक्रवालपरिभ्रमहेतुकर्मनिदानानि तत्र ऋद्धानरेन्द्रादि मूलाचार्यैर्वादिष्वप्यन्यैर्वैदिकप्रामाण्यभि-
मानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थः एवमसेनगौरवं रसगौरवं सातयागौरवं सातागौरवं चेति तथा विराधनाः खंडनास्तत्र ज्ञानस्य विराध-
ना ज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनौकतानिष्ठत्वादिरूपा एवमितरेषु नवरं दर्शनं सम्यग्दर्शनं चायिकादिचारित्र्यसामायिकादीनि । तथा असंख्यातवर्षायुषांपंचेद्वि-

तनुगारव्या प० तं० । इहो गारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तनुविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दं-
सणविराहणा चरित्रविराहणा मिगशिरनरकहेतितारे प० । पुस्सनरकहेतितारे प० । जेठानरकहे-
तितारे प० । अज्ञीइनरकहेतितारे प० । सवणनरकहेतितारे प० । अस्सिणिनरकहेतितारे प० जरणो-
नरकहेतितारे प० इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तिन्निपलिनवमाइंठिई प० । दो-

तेशुद्धदेवगुरुधर्मनो असहृदिवो विपरीतनो करिवो ३ त्रिस्त्रिगरवके जेणे करी आत्मा भारी थाय समारचक्रवालमां हि भमवानो कारणकह्यो ते कहेके । ऋद्दिगारव-
तेनरेन्द्रादिकनो ऋद्दितथा आचार्यादिकनो ऋद्दितेणे करी अभिमानं करतो आत्मा भारी करे रसे करी मधुरादिकस्वादिकरी आत्मा भारी करवो ते रसगारव कहिये-
साताने गारवे करी सातागारव ३ त्रिस्त्रि विराधना खंडना कही ते कहेके सूत्रादिक ज्ञानतेहनी विराधना प्रत्यनौकपणो करिवो ते ज्ञानविराधना दंसण ते सम्यक-
दर्शनं चायिकादिक सम्यक्तेह नूं विराधवूं भवषं वादनूं वोलिबूं ते दर्शनविराधना २ सामायिकादिक चारित्र्यनूं विराधवूं खंडवूं ते चारित्र्यविराधना ३ मृगसरनचक्रना-

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

झाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्तेणंतिन्नि
 सागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंतिन्नपलिनुवमाइंठिई प० । असंखिज्जावासा
 उयसन्नि पंचिंदियतिरिस्कजोणियाणं उक्कोसेणं तिन्नपलिनुवमाइंठिई प० । असंखिज्जावासाउयसन्निग
 प्लवक्कांतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिन्नपलिनुवमाइंठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं
 तिन्नपलिनुवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प०

॥ मूल ॥

वणिताराकद्धाकेवलज्ञानीये पुण्यनक्षत्रनावणिताराकद्धा । जेठानक्षत्रनावणिताराकद्धा अभिजित् मक्षत्रनातीनताराकद्धा अवणनक्षत्रनावणिताराक
 द्धा अस्विनीनक्षत्रनावणिताराकद्धा भरणीनक्षत्रनावणिताराकद्धा एणीयेरत्नप्रभापहिलीपृथ्वीनेविषे केतलाएकनारकीनी वणिपल्लोपममध्यमआजखूंकद्धं
 बीजोसकरप्रभापृथ्वीनेविषे नारकीनीउत्कृष्टो वणिसागरोपमनंआउखोकद्धो बीजोवालुकप्रभापृथ्वीनेविषे नारकीनी जघन्य वणिसागरोपमआज खोक
 द्धो असुरकुमारभवनपतीनी पहिलीनिकायनादेवतानीकेतलाएकनी वणिपल्लोपममध्यमआउखोकद्धो असंख्यातवर्षनाआउखाना संच्चीगर्भज पंचेद्रिय
 तिर्यंच एतलेदेवकुरु उत्तरकुरुनागर्भज तिर्यंचनी उत्कृष्टो तीनपल्लोपमनो आजखोकद्धो । असंख्यातवर्षना आउखाना गर्भजमनुष्यदेवकुरुउत्तरकुरुना

॥ भाषा ॥

यतिर्यग्ननुष्ठायां देवकुरुत्तरकुहजम्भनां चोषियस्त्रीपमानीति । तवाभ्रभंकरं प्रभंकरं आभाकरं प्रभाकरं चंद्रचंद्रावत्तं चंद्रप्रभं चंद्रकांतं चंद्रध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिंहं चंद्रकूटं चंद्रोत्तरावतंसकं विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कषायध्वानविकथासंज्ञाबंधयोजनार्थं सूत्राणां षट्

जेदेया श्याजंकरं पञ्जंकरं श्याजाकरं पञ्जाकरं चंदं चंद्रावत्तं चंदप्पञ्जं चंदकंतं चंदवन्नं चंदलेसं चंदज्जयं चंदसिंगं चंदसिंहं चंदकूटं चंदुत्तरवह्निंसगं विमाणं देवत्ताएउवयन्ना तेषिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरो वमाइंठिई प० । तेषां देवातिरहं अष्टमासाणं श्याणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेषिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिहिंवाससहस्सेहिं श्याहारठेसमुपज्जइ संतेगइयान्नवसिद्धियाजीवा जे तिहिंजवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति वुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुस्काणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

युगलियातेहनो उत्कृष्टो तीनपत्थोपम आउखो कइओ । सौधमेइयानदेवलोकनेविपे केतलाएकदेवनो चण्णिसालोपमआउखो कइओ सनत्कुमारमाहेइद्वी जेचोथेदेवलोके केतलाएक देवनो चणिसागरोपममध्यमआउखोकइओ जेदेवताभ्रभंकर १ प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७ चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ष ९ चंद्रलेस १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिंह १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेसनत्कुमारमाहेइद्वी देवलोकदेवतापणे उपनाहे तेहदेवतानो उत्कृष्टो चणिसागरोपमआउखो कइओ तेहदेवतानूंविहूंअहमसवाडे थोडोस्वासले घणोस्वास अं चोस्वासतेउस्वासनीचोस्वासमंकवोते

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

ढनरकत्तेचउत्तारे प० इमीसेणंरयणप्पन्नाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिनुवमाइंठिई प०
 तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइणंनेरइयाणंचत्तारिसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंच
 त्तारिपलिनुवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं चत्तारिपलिनुवमाइंठिई प० सणं
 कुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० जेदेवाकिठिंसुकिठिं किठियाप
 त्तंकिठिप्पन्नं किठिजुत्तं किठिलेसं किठिज्जयं किठिसिगं किठिसिद्धं किठिकूळं किठुत्तरवळिंसगंविमाणंदे
 वत्ताएउववन्ता तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवाचउरह्छमासाणं श्वाणमं

इरत्तप्रभापडिलीपृथिवीनेविषेकेतलाएक नारकीनो च्यारपत्थोपम आजधूंकहिंउ कह्वा बीजोवालुकप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो च्यारिसा
 गरमध्य आजधूंकह्वा । असुरकुमारभवनपतीदेवनं केतलाएकनं च्यारिपत्थोपम आजधूंकह्वा सौधर्मईशानदेवलोकनेविषेकेतलाएकनो देवतानोच्यारपत्थो
 पममध्य आजधूंकह्वा सनत्कुमारमाहेन्द्रबीजाचौथादेवलोकने विषेकेतलाएकदेवतानं च्यारसागरोपममध्य आजधूंकह्वा बीजेचौथेदेवलोकनेजेदेवता कृष्टि१ सु
 कृष्टि २ कृष्टिकापच ३ कृष्टिप्रभ ४ कृष्टियुत्त ५ कृष्टिलेश्य ६ कृष्टिध्वज ७ कृष्टिशृंगः ८ कृष्टिसिद्ध ९ कृष्टिकूट कृष्टिकावतंसकएणेविमाननं विषेदेवताप

कण्टिसुवृष्टादीनिष्ठादशविमानानिपूर्वोक्तविमाननामानुसारवतीनि । पंचस्थानकमपिसुगमं नवरं क्रियामहावृतकामगुणाश्रवसंवरनिर्जरास्थानसमित्य
स्तिकायाथेसूत्राणामष्टकं नक्षत्रार्थपंचकं स्थित्यर्थषट्कं उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति । तथाक्रियादुर्व्यापारविशेषाः तत्रकायेननिवृत्ताकायिकीकायचेष्टेत्यर्थः
अधिक्रियतेआमानरकादिषुनेतदधिकरणं । तेननिवृत्ताआधिकारणिकी खड्गादिनिर्वर्तनादिलक्षणेति । प्रहेषोमत्सर स्तेननिवृत्ताप्राहेषिकी परिताप-

॥ टीका ॥

तिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंदेवाणं चउहिंवाससहरसहिं आहारठेसमुप्पज्जइ अत्थेगइ
आज्जवसिद्धियाजीवा जेचउहिंनवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति जायसव्वदुस्काणंअंतंकरिस्संति ॥ ४ ॥
पंचकिरिया प० तं० काइया अहिगरणिया पाउसिअ्या पारितायणिया पाणाइवायकिरिया पंचमहस्यया

॥ मूल ॥

येउपनाहे तेहदेवतानो उत्कृष्टपणे च्यारसागरोपमआउषं कट्थो तेदेवताचिहुंअर्द्धमासवाडेएतलेचोथेपखवाडे थोडोसासलेइ घणोसासले नीचोमेखवोतेनि
खास जंवल्लेवोतेजसासतेहदेवताने विहुंवर्षं सत्तसे आभोगआहारनोअर्द्धउपजे केतलाइककेअव्यजीव चिहुंनेभवग्गहणेच्यारभवनेअंतरे सीभस्येबूभस्ये मुं
कास्येसंसारथकी सर्वदुक्खनो अंतकरिस्से इतिचोथोठाणंसंमत्तं ४ हिवेपांचनोअधिकारलिखीयेके पांचक्रियाकहो क्रियाते कायादिकनोआपारतेकहेके
कायाथेनोपजावोतेआयिकीक्रियाकायचेष्टा आमानरकादिकनेविषेजेकेकरीस्थापीयेतेअधिकरणकौषडादिकनीपजाविवालक्षणे प्रहेषमत्सरतेनेनोपिजा

॥ भाषा ॥

नंताडनादिदुःखविशेषसङ्घं तेननिवृत्तापारितापकी प्राणातिपातक्रिया प्रतीतेति । तथाकाम्यतेप्रभिलष्यन्ते इतिकामास्तेष्वतेगुणाश्चपुद्गलधर्माः शब्दादय इतिकामगुणाः कामस्यवादर्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादय इति तथाआश्रयद्वाराणिकर्मोपादनोपाया मिथ्यात्वादीनि संवरस्यकर्मानुपादानस्यद्वाराण्युपायाः संवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्याश्रयद्वारविपरौतानिसम्यक्त्वादीनि तथा निर्जरादेशतः कर्मक्षपणात्तस्याः स्थानान्याश्रयाः कारणानीतियावदिर्जरास्थानानि प्राणातिपातविरमणादीनि एताग्येवसर्वशब्दविशेषितानि महावृतानिभवन्ति तानिचपूर्वसूत्रेभिहितानि स्थूलशब्दविशेषितानि अणुवृतानिभवन्ति नि

प० तं० सङ्खानुपाणाइवायानुवेरमणं सङ्खानुमुसावायानुवेरमणं सङ्खानुअदत्तादाणानुवेरमणं सङ्खानुमेज्जणानुवेरणं सङ्खानुपरिग्गहानुवेरमणं पंचकामगुणा प० तं० सद्वा रूपा रसा गंधा फासा पंचश्रासवदारा प० तं० मिच्छन्तं अविरेइ पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० सम्मन्तं विरेइ अप्पमत्तया

वीतेप्राणिः पंचप्राणानि परितापवो णडनादिकदुखनो उपजायवो ते पारितापनकीक्रिया परप्राणनो अतिपातविनाश तेणे नीपजावीक्रिया ते प्राणानिपातकी पंचमहाव्रतश्रावकनांवत नो अपेक्षाये घणोमोटो व्रत तेमहाव्रत कट्ठा तेकहैछे सर्वथकी मन यचन कायानेकरी तथा करण कारण अनुमती भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवो उसरवो तेसर्व प्राणातिपातविरमणपहिलामहाव्रत १ सर्व क्रोधे लोभे मृषा भूँठीबोल बाथी विरमवो तेसर्व मृषावादविरमण दूजोव्रत २ जीव स्वामि गुरु अदत्तथकीविरमवो ते सर्वादत्तादानविरमण तीजोव्रत ३ सर्व नवभेदथकी औदारिक

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

जरास्थानत्वं पुनरेषां साधारणमिति । तदिहैषामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्रैवासमिति र्गमने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भाषासमितिर्निरवयवचनप्रवृत्तिः एषणासमिति र्द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनेन भक्तादिगृहणे प्रवृत्तिः आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रूपकरणपरिहृदस्य निक्षेपणावस्था पादानसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसंगतेन प्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तथोच्चारस्य पुरोषस्य प्रश्रवणस्य मूत्रस्य खेलस्य निष्ठीवनस्य मिंघाणस्य नासिकाश्लेष्मणः

श्रुक्साया श्रुजोगया पंचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायानुवेरमणं मुसावायानु अदिन्नादाणानु मेज्जणा
नुवेरमणं परिग्गहानुवेरमणं । पंचसमिईनु पं० तं० ईरियासमिई जासासमिई एसणासमिई आयाणज्जम

मैथुन नवभेदे वैक्रियमैथुन एवं १८ भेदे मैथुनशकी विरमवो ते सर्वमैथुनविरमणचोथो महाव्रत नवविधपरिग्रहयौ विरमवो ते सर्वपरिग्रहविरमणपांचमो महाव्रत पांचकामगुण कामिये अनिलखीयेते कामकहौये तेहौज गुणपुद्गलस्वभावते कामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावक ते कामगुणकक्षा तेकहेके शब्दतेसांभलवो कुरते देखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोविषय फरसतेकायनोविषय आश्रयते कर्मश्राववानोउपाय तेहनेद्वारसरीखाद्वारतेहने प्राश्रयद्वारकक्षा तेकहेके मिथ्यात्वतेविपरीतसद्वहणा तेहपापश्राविवानो उपाय १ एमअविरतिअप्रत्याख्यान २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेक्रोधादिक ४ योगतेमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारजेणेकरी कर्मनोअणमलिवो तेसंवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकक्षातेकहेके सम्यक्ततेशुहदर्शन १ विरतितेप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोजोगादिकनेरोधवो निर्जरातेदेशशकीजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनूखपावणं जूशोकरिवो तेनाथानककहिताउपाय तेनिर्जराठाणकक्षापांचेभेदे तेकहेके जीवमारिवाथकीविरमवोअसरिवो एहकर्मखपाविवानोउपाय १

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाष ॥

जलस्य देहमलस्य परिष्ठापनायाः परित्यागसमितिः स्थंडिलादिदीपपरिहारतः प्रवृत्तिरिति पंचमी । अस्तिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्तिकाया-
दयोगतिस्थित्यवगाहोपयोगस्पर्शादिलक्षणास्थितिः सूत्रेषु उक्तृष्टादिविभाग एवमनुगतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ सिय २ सत्त ३ । दसय ४ सत्तरस ५ त
इयवावीसा ६ ॥ तेत्तीसं जावठिई । सत्तसु विकमेण पुढवीसु ॥ १ ॥ जापठमा एमुजेडा । सावीया एकणिठिया भणिया ॥ तरतमजोगो एसो । दसवाससहरसरय

॥ टीका ॥

तानि रकेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजलपारिठावणियासमिई । पंचअस्तिकायाप० तं० धम्मत्थि
काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए रोहणीनरक्खत्ते पंचतारे प० पुणव्वसु

॥ मूल ॥

एकमृषावादवेरमणं २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममैथुनवेरमण ४ परिग्रहरोविरमण ४ सावधानपणे प्रवर्त्तवोते समिति पांच प्रकारकही तेकहेछे-
चालतो सर्वजीवने जोई प्रवर्त्तवोते ईर्यासमिति १ निरवद्यवचननी प्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभाते पणी नूलेवोते एषणासमतिकही ३ । आदानक
हतां भांडमात्र उपकरणे मुंक्तां समति पूंजी जोईलेवो जोई मुंकिवो तेचोथी समतिकही उच्चार विष्टा प्रश्रवण मूत्र खेल थूक सिंघाण नांकनीमल रिंट
जलमेल एतलापरठतां समतिते स्थंडिलदोषटाली प्रवर्त्तवो एपांचमी समति जाणवी ५ पांचअस्तिकाय अस्तिकहतां प्रदेशतेहनाकाय तेराशिते अस्तिकायकहीये
तेकहेछे धम्मकहिये चलनस्वभाव एहवा प्रदेशराशिते धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय स्थितिस्वभाव २ आकाशास्तिकाय जीवने पुद्गलने बिषे अवकासदेवा
नीस्वभाव जीवास्तिकाय उपयोगलक्षण ४ पुद्गलास्तिकाय स्पर्शलक्षण जाणिवो ५ रोहिणीनक्षत्रना पांचताराकक्षा पुनर्वसुनक्षत्रना पांचताराकक्षा ह

भाषा ॥

णाए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चोदस ६ सत्तरेवअयराइ ॥ सोहम्माजावसुको । नदुवरिइक्किमारोवा ॥ ३ ॥ पलियं १ दोसार
 २ साहिय ३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउइहस ७ सत्तरस ८ सहसमारे तदुवरिइक्किमारोवेत्ति तथावातंसवातमित्थादीनिहादशवाताभिलापेनविमानन
 नरकत्तेपंचतारे प० हत्यनरकत्तेपंचतारं प० विसाहधणिठानरकत्तेपंचतारे प० इमीसेणंरयणप्पन्नाएंपुढवी
 ए अत्येगइष्णाणंनेरइयाणं पंचपलिनुवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्येगइष्णाणं नेरइयाणंपंचसागरो
 वमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणंपंचपलिनुवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्येग
 इयाणंदेवाणं पंचपलिनुवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्येगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई
 प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पन्नं पञ्चंतरे वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवन्नं वायलेसं वायज्जयं वा
 स्तनचवना पांचताराकद्धा विशाखानचवनापांचताराकद्धाधनिठानचवनापांचताराकद्धा इणीअरत्तप्रभापहिलीपृथवीने केतलाएक नारकीनों पांचपल्यो
 पममध्यआजखूंकहिये तीजोवालुकापृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनों पांचसागरोपममध्यआजखूंकहिये असुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनोदेवतानीं पांच
 पल्योपमआजखूंकह्यो भगवंते सोधर्मइशान पहिले वीजेदेवलोके केतलाएकदेवतानो पांचपल्योपम आजखूंकह्यो तीजेसनकुमारमाहेद्रचउथेदेवलोकनेवि
 षेकेतलाएकदेवलोकना देवताने पांचसागरोपमआजखूंकह्यो भगवंते तीजेचउथे देवलोक जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । यीजेप्रतरे ४ । वाताव
 र्त्तनामके ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्त्त ६ । वातलेश ४ । वातध्वज ८ । वातशृंग ८ । वातसिद्ध १० । वातकूट ११ । वातोत्तरावतंसक १२ ए

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

मानितात्थेवंसूराभिलापेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमथतच्चसुबोधं नवरमिहलेश्या १ जीवनि काय २ बाह्या ३ ऽम्यंतरतपः ४ समुद्राता ५ वप्रहार्यानिस
नाशि षट् नचनार्थेद्विस्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति तत्रलेश्यानांस्वरूपमिदं । कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयन्मात्मनः स्फटिकस्येवतत्रायलेश्या

॥ टीका ॥

यसिंगं वायसिद्धं वायकूटं वाउत्तरवह्निंसगं सूरं सुसूरं सूरावतं सूरप्यन्नं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्जयं
सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूटं सूरुत्तरवह्निंसगं विमाणं देवत्ताणुववन्ना तेषिणंदेवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोव
माइंठिई प० तेणंदेवापंचराहंश्चमासाणं आणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेषिणंदेवाणं पंच
हिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाजवसिधियाजीवाजे पंचहिंनवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति जाव
अंतंकरिस्संति ॥ ५ ॥ ठलेसानुपसत्ता तंजहा करहलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

॥ मूल ॥

ह १२ विमाने तथावली । सूर १ । सुसूर २ । सूरावर्त्त ३ । सूरप्रभ ४ । सूरकांत ५ । सूरवर्ष ६ । सूरलेश ७ । सूरध्वज ८ । सूरशृंग ९ । सूरसिद्ध १० । सूरकू
ट ११ । सूरुत्तरावतंसक १२ । एह २४ विमानेदेवतापणेऊपनाके तेहदेवताने उत्कृष्टपणे पांचसागरोपमआजखोकह्यो तेहदेवतापांचपखवाडे पांचअर्द्ध
मासे थोडोसासले षणोसासले नोचोसासमंके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेगये आहारनोअर्थऊपजेके केतलाएक संसारमांहिभव्यजीव जेहपांचभवने आंतरे
सौभस्यं बूभस्यं मंकास्यं संसारसागरयक्को सर्वदुःखनोअंतकरिस्सं मोचजास्यं इति पांचमूंठाणोसम्भत्तं ॥ ५ ॥ छट्ठोठाणोकेके । छलेश्याकही

॥ भाषा ॥

शब्दः प्रयुज्यत इति तथा बाह्यतपः बाह्यशरीरस्य परिशोषणेन कर्मक्षपणं हेतुत्वादिति । आभ्यन्तरं चित्तनिरोधप्राधान्येन कर्मक्षपणं हेतुत्वात् । तथा ह्यस्योऽकेव

पम्हलेसा सुक्कलेसा क्खजीवनिकाया प० तं० पृथ्वीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस
काए ठव्विहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाणु कायकलेसो संली
णया ठव्विहेअग्निंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणणु वेयावच्चं सज्जानु ज्जाण उस्सग्गो ठठाउ

कृणादिकपुद्गलनासंसर्गयकौआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृणादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामोयआत्मनः स्फटिस्येवतत्रायं ले
श्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनीपनीकृणलेश्या १ । नीलासूडाने वर्मतेनीललेश्या २ । अलसीनाफूलसरीषीकापीतलेश्या ३ । ह्रींगलूपरेत्यांसरीखा
तेजोलेश्याजांणिये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ५ । संखसारोषीउजलीशुक्कलेश्या ६ । संसारमांहि कप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेके तेकहेके पृथ्वीकाय
पृथ्वीमाटीकायसमूह १ । एमज अपजलकायपाणी २ । तेयकायअग्नि ३ वायुकाय वायरो वनणतीकायतृणवृक्षादिक ५ अमकायवेंद्रियादिक पचेन्द्रियलगे
कप्रकारेबाह्यशरीरने शोषेकर्मक्षपावे तेवाह्यतप तेहनोकरिवो तेहबाह्यतपकर्मकहिये तेकहेके अणसण उपवासएकधकीमांडी कमासलगे उणोदरीउणे
पेटेजठिवो पूरोआरहानलेवो २ । वृत्तिसंक्षेप वृत्तिन करिवो ३ । रसनीपरित्याग आंबिलनिवो प्रमुखकरिवो कायशरीरे कृशतादितापलोचआतापनादि
कनोकरिवोसंलीनताभंगउपांगसंवरी अक्षयनादिकनोकरिवो कप्रकारेअभ्यंतरतप अंतरंगमलनो सोधणहारतप तेहनो कर्मकरिवो तेतपकर्मकह्यां तेस

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

लोतच भवाश्चाश्रयिकाः समेकीभावेनोत्प्राद्वत्येनचघातानिनिर्जरणानिसमुद्घातावेदनादिपरिणतोहिजीवोबहून् वेदनोयादिकमंप्रदेशान्कालांतरानुभाव
 योग्यानुदौरणेनाक्रियोदयेप्रतियानुभूयनिर्जरयति आत्मप्रदेशैः संक्षिप्तान्घातयतीत्यर्थस्तेचेहवेदनादिभेदेनषडुक्ताः तत्रवेदानासमुद्घातोऽसावद्यकर्माश्रय
 कषायसमुद्घातः । कषायाख्यवारिवमोहनोयकर्माश्रयः मारणांतिकसमुद्घातोऽतर्मुहूर्तशेषायुष्ककर्माश्रयो वैकुर्विकतैजसाहारकसमुद्घाताः शरीरनामकर्मा
 श्रयास्तत्रवेदनासमुद्घातसमुद्घातमावेदनोयकर्मपुद्गलयातंकरोति । कषायसमुद्घातसमुद्घातः कषायपुद्गलघातं मारणांतिकसमुद्घातसमुद्घात आयुःकर्मप
 द्गलावातः वैकुर्विकसमुद्घातसमुद्घातसुजोवप्रदेशान् शरीरादहिर्निष्काग्यशरीरविष्कंभवाहल्यमात्रमायामतश्च संख्येयानियोजनानि दंडंनिसृजतिनिसृज्य
 मत्तियासमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणांतिसमुग्घाए विउह्वियसमुग्घाए ते
 यसमुग्घाए आहारसमुग्घाए ठव्विहेत्थ्युग्गहे प० तं० सोइंदियत्थ्युग्गहे चस्कुइंदियत्थ्युग्गहे घाणिं
 गलेआगलिक्खाणस्ये अनुक्रमेकहेके प्रायकित तेअतोचारदूसण निवारवा भणी आलोचनादिकनोदेवो विनयतेवडेआव्याजठिवो वेयावच्च आहारादिक
 दानेकरी ओठंभवो कालवेलाये सूत्रभणिवो ध्यानतेशुभधाननो ध्याववो उत्सर्गते कायोत्तमर्गकरिवो क्यस्थना कसमुद्घातकच्चा सातमोकेवलिसमुद्घात तेकेब
 लीनो एकाभावे प्रवलपणे जीवप्रदेशथी कर्मपुद्गलनो हणिवो निर्जरवो तेसमुद्घातकहिये तेकहेके प्रथमवेदनासमुद्घात १ वेदनाव्याप्योजीवघ णावेदनीयकर्म
 नाप्रदेशकालांतरेअनुभववायोग्यके तेउदौरणाकरिने आक्षेपोउदयावलिकाये प्रक्षेपोभोगवीने निर्जरेआत्मानाप्रदेशथीसंवहके वेदनोयकर्मना पुद्गलतेवेगल
 कषायसमुकरेइतजोवकषायना पुद्गलनिर्जरावे मारणांतिकसमुद्घात समुद्घातजीव आज्ञाकर्मपुद्गलनिर्जरे ३ विरुवणासमुद्घासमुद्घाजीवना प्रदेश शरीरयकी

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

चसथासूलोवैक्रियशरीरनामकमपुद्गलान्प्राग्बहान्शातयति एवंतेजसाहारकसमुद्घातावपिष्याल्येषाविति । तथाअर्थस्यसामान्यनिर्देशस्वरूपस्यशब्दादे
रवेतिप्रथमव्यंजनावयहानंतरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः सचैकसामयिको नैशयिको व्यावहारिकस्वसंख्येयसामयिकः सचषाढा श्रोत्रादिभिरिन्द्रियैर्न

॥ टीका ॥

दिश्यत्युगहे जिह्मिन्दियत्युगहे फासिन्दियत्युगहे कत्तियानरकत्तेठतारे प० असलेसानरकत्तेठतारे प०
ईमीसेणंरयणप्पन्नाएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं ठपलिनुवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइया
णंनेरइयाणं ठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्थेगइयाणंठपलिनुवमाइंठिई प० सोहम्मी

॥ मूल ॥

वाहिरकाट्टीशरीरंनंवाहल्यपणेविष्कंभपणे जंचपणे संख्यतायोजनदंडकरी वैक्रियशरीरनामकर्मना सूलपुद्गलनेनिर्जरे ४ तेजालेश्यामूकेतिवारे तेजसपुद्गल
निर्जरे ५ पूर्वध्वंरसंदेहटा लिवानेअर्थे आहारकशरीरकर आहारसमुद्घातकरतो आहारकशरीर पुद्गलनिर्जरावे ६ छ प्रकारेअर्थावग्रह व्यंजनावयहानंतर
अर्थनो सामान्यपणेंग्रहिवोते अर्थावग्रह ते एकसमयरहै व्यवहारें असंख्यातसमयरहै तेकहैकै श्रोत्रेन्द्रियकान तेणेकरी सामान्यप्रकारें शब्दरूपअर्थनोग्रहिव
तेश्रोत्रेन्द्रियोअर्थावग्रह १ चक्षुकहिये आंखतेणेकरी सामान्यप्रकारेंरूपनोग्रहिवो तेचक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्र २ एमनासिकायें गंधनोग्रहण ते घ्राणेन्द्रियअर्थाव
ग्रह ३ जोभनेखाद ग्रहिवोतेजिभ्मेन्द्रिय अर्थावग्रह ४ शरीरेकरी स्पर्शनोग्रहिवो तेस्पर्शेन्द्रियाथार्थावग्रह ५ मनंकरो अर्थनोग्रहिवो ते मनोइन्द्रिय अर्थावग्रह ६
कत्तिकानचचनाकृताराकक्षा असलेषा नचचना कृताराकक्षा एणीयें रत्नप्रभापहिली पृथिवीने विषेकतला एकदेवतानोदपत्योपम मध्यआजखोकस्यो ।

॥ भाषा ॥

साणेषु कप्पेषु अत्येगइअणंदेवाणंठपलिनवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेषु अत्येगइअणंदेवाणं
ठसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयंवाई सयंजू सयंनूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किठिघोसं वीरं सुवीरं
वीरगतं वीरसेणियं वीरवत्तं वीरप्पन्नं वीरकंतं वीरवन्नं वीरज्जयं वीरसिंगं वीरसिद्धं वीरकूटं वीरुत्तरव
त्तिसंगं विमाणं देवत्ताएउयवन्ना तेषिणंदेवाणं उक्कोसेणंठसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाठराहंअध्मासाणं
अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेषिणंदेवाणं ठहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जाइ

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तीजोवालकुम्भ पृथ्वीनेविषे केतलाएक नारकीनीं छ सागरोपम आजखोकह्यो । असुरकुमारदेवतानीं केतलाएकनीं छपल्योपमआजखोकह्यो । सौध
मईशान देवलोकने विषे केतला एकदेवतानीं छपल्योपम आजखोकह्यो । तीजेसनकुमार चौथे माहेद्र देवलोके केतलाएकदेवतानीं छसागरोपम आजखो
कह्यो । तीजेवाथे देवलोके जेदेवलोके जेदेवता स्वयंवादी १ । स्वयंभू २ । स्वयंभूरमण ३ घोस ४ । सुघोस ५ । महाघोस ६ । कठिघोस ७ । वीर ८ । सुवीर
९ । वीरगत १० । वीरसेनिक ११ । वीरावर्त्त १२ । वीरप्रभ १३ । वीरकांत १४ । वीरवर्ण १५ । वीरध्वज १६ । वीरशृंग १७ । वीरसिद्ध १८ । वीरकूट १९ ।
वीरुत्तरावतंसक २० । एहवेविमाने देवतापणे जपनाछे तेहदेवतानीं उत्कृष्टो छसागरोपम आजखोकह्यो तेदेवता छठे अर्द्धमासे एतले छठेपखवाडेसासी
साठले घणोसाठले उंचालेबोतेऊसास नीचोमेहिबोतेनीसास तेदेवतानेछहजारवर्षे आहारनीं अर्थजपजे केकेतलाएकभव्यजीव जेकेभवनेआंतर सीभस्ये

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेस्वयंभादौनिविंशतिविमानानीति ॥

नवरनिहभयसमुद्घातमहाबोरोवर्षधरवर्षक्षोणमोहार्थानिचसूचाणिषट् नचचार्यानिपंत स्थित्यर्थानिनव उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीष्टेवेति तत्रेहलोकभयंयत्न

॥ टीका ॥

संतेगइयानवसिष्ठियाजीवाजेठहिंनवग्गहणेहिंसिज्जिस्संति जावसव्वदुस्काणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥

॥ मूल ॥

सत्तज्जयठाणा प० तं० इहलोगज्जए परलोगज्जए आदाणज्जए अकम्हानए आजीवज्जए मरणज्जए असिलो
गज्जए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणांतियसमुग्घाए वेउत्तियसमुग्घाए
तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेज्जगवंमहावीरे सत्तरयणीनु उट्ठंउच्चत्तेणंहोत्या स

ब्रूमस्ये मुंकासे भवमांहिधो सर्वदुखनो अंतकरिस्थे मोक्षजासे इतिक्खंठाणोसमत्त ॥ ६ ॥ हिवेसातनो अधिकारकहेके सातभयनाठामकद्धा तेकहेके
स्वजातीययकीभय उपजेतेइहलोकभय परजातीययकी भयउपजेतेपरलोकभय द्रव्यआश्रीउपजेते आदानभयवाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आक
स्मिकभय आजोविका जीवकानो उपायतेहनो भय तेआजोविकाभय मरणनोभय तेमरणभय अश्लोकअकीर्तितेहनोभय उपजेतेअश्लोकभय सातसमुद्घातपद
नो अर्थइएठाणैकहोके तेकहेके वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणांत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तैजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमोकेवलीसमुद्
घाततेहंकोइक केवलीचार अघातीयाकर्मखपावणेअर्थ केवलीसमुद्घातकरे पोतानां प्रदेशलोकांतलग्गे विस्तारी कर्मपुद्गलनिर्जरं यमण तपस्वी भगवंतमहा

॥ भाषा ॥

जातोयात् परं लोकभयं यदि जातोयात् आदानभयं द्रव्यमाश्रित्य जायते अकस्माद्भयं वा ह्यनिमित्तनिरापेक्ष्य स्वविकल्पाज्जातं शेषाणि प्रतीतानि नवर मन्त्रो कोऽकीर्तिरिति । समुद्रवाताः प्राग्ब्रुवन् केवलिसमुद्रवातो वेदनीयनामगोत्राश्चरन्ति । तथा रत्नि विततांगुलिर्हस्त इति जर्होऽश्वत्वेनेति होत्याबभूवेति तथा

॥ टीका ॥

तत्र वासहरप्पल्लया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमंते निसढे नीलवंते रूपी सिहरी मंदरे सत्तवासा प० तं० जरहे हेमवंते हरिवासे महाविदेहे रम्य ए एरखव ए एरव ए खीणमोहेणं जगवया मोहणिज्जावज्जानु स त्तकम्मपयणीनु वेण्डे महानरकत्ते सत्ततारे प० कत्तिष्ठा इष्ठा सत्तनरकत्ता पुद्गदारिष्ठा प० महाइष्ठा सत्तन

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

वीर सातरत्नि विततांगुलहाय रत्नि कहिये एतले सात हाथ जं चापणे हुया । सात वर्ष धर पर्वत कहिये भरतादिक चेष तेह ना धरणहार कछा । मर्यादा कारी ते कहै के । भरत क्षेत्र हिमवंत क्षेत्र मर्यादा कारी तेलघु हिमवंत पर्वत हिमवंत क्षेत्र हरिवर्ष क्षेत्र मर्यादा कारी तमहा हिमवंत पर्वत हरिवर्ष क्षेत्र महाविदेह मर्यादा कारी रूपी निषध पर्वत महाविदेह रम्य क्षेत्र मर्यादा कारी निषध नीलवंत पर्वत रम्य ए एरखवत क्षेत्र मर्यादा कारी रूपी पर्वत एरखवत एरवत क्षेत्र मर्यादा कारी शिखरी पर्वत । पूर्वापर महाविदेह मर्यादा कारी मेरु पर्वत । जं वूही पमां हि सात वासा कहिये सात क्षेत्र के ते कहै के भरत क्षेत्र मनुष्यनो १ हेमवंत क्षेत्र य गलियां नू २ हरिवर्ष क्षेत्र य गलियां नू ३ महाविदेह क्षेत्र सोथो कर्म भूमिया मनुष्यनो ४ रम्य क्षेत्र य गलियां नू ५ एरखवंत क्षेत्र य गलियां नू ६ एरवत क्षेत्र मनुष्यनो ७ चीव सर्वथा पितृय गयो के मोहनो कर्म जेह नो एह अमर भगवंत पूज्यतौ मोहनो कर्म वरजीने सात कर्मनो प्रकृति ज्ञानावरणीय १ । दर्शनावरणीय २ । वेदनी

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मखिन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्य परद्वारिकाणि स्वा
त्यादी न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिह तु मत्तान्तरमाश्रित्य कृत्तिकादीनि सप्तपूर्वद्वारिकादीनि भणितानि चंद्रप्रभ्रसौतुबहुतराणि मतानि दर्शितानीहार्थ

॥ टीका ॥

रक्तदाहाहिणदारिद्र्या प० अनुराहाइश्यासत्तनरक्तदाह्यवरदारिया प० धनिष्ठाइश्यासत्तनरक्तता उत्तरदारि
या प० पाठांतरेण । अजीयाइयासत्तनरक्तता प० इमीसेणंरयणप्पन्नाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं
सत्तपलिनुवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कासेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए
नेरइयाणं जहन्तेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमारारणंदेवाणंअत्येगइयाणं सत्तपलिनुवमाइंठिई प०

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

य ३ । आजखो ४ । नामकर्म ५ । गोचकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेवेदे भोगे मघानक्षत्रना सातताराकक्षा कृत्तिकाआदिलेईने सातनक्षत्र पू
र्वद्वारिकाकक्षा पूर्वदिशिजाणहारने भलूंथाय । मघादिकसातनक्षत्र दक्षिणद्वारिकाकक्षा । अनुराधादिक सातनक्षत्र पश्चिमद्वारिकाकक्षा । धनिष्ठादिक
सातनक्षत्रउत्तरद्वारिकाकक्षा । पाठांतरेकरीकहियेछे । अभिजिदादिक सातनक्षत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनक्षत्र दक्षिणद्वारिका पुष्यादिकसातनक्षत्र
पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनक्षत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजांणिवो एणीयेरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोसातपल्योपममध्य
म आजखोकछो । तीजीनरकपृथिवीनेविषे नारकीनोउत्कष्टोसातसागरोपम आजखोकछो । चउथीनरक पृथिवीनेविषे नारकीनो सातसागरोपमजघन्य
आउखोकछो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानो सातपल्योपम आजखोकछो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतला एकदेवतानूंसातपल्योपम

सोहम्मीसाणेसुकप्पेसुअत्येगइयाणं देवाणंसत्तपलिनवमाइंठिई प० सणकुमारेकप्पे देवणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा
 सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिं देकप्पेउक्कोसेणंसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० वंजलोएकप्पेअत्येगइ
 याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा सम्मं समप्पज्जं महप्पज्जं पज्जासं ज्ञासुरं विमलं कंचणकूळं सणं
 कुमारवह्निंसगं विमाणं देवत्ताउएवयन्ना तेषिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तरहं
 अरुमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेषिणं देवाणं सत्तहिंवाससहस्सेहिं अ
 हारठे समुपज्जाइ संतेगइयाजवसिद्धियाजीवा जे सत्तहिंजवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति जावसव्वदु

॥ मूल ॥

आउखोकह्मो । बीजासनत्कुमार देवलोके देवतानोउत्कथो सातसागरोपम आउखोकह्मो । माहेद्रचउथे देवलोके देवतानोउत्कथो भांभेरीसातसागरोप
 म आउखोकह्मो । ब्रह्मपांचमे देवलोके केतलाएकदेवतानो सातसागरोपमआउखोकह्मो । सनत्कुमारदेवलोके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ ३ ।
 प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कंचनकूट ७ । सनत्कुमारावतंसक विमान ८ । एहआठविमाननेविषे जेदेवताजपनाछे तेहदेवतानो उत्कथोसात साग
 रोपम आउखोकह्मो । तेहदेवता सातमे पखवाडे सासोसासले घणोमासलेवे नीचोसासलेवे । तेहदेवताने सातवे बर्धसहस्से सातहजारवर्षे आहारनीं अ
 येअरजेछे केतलाएकभव्यजीव जेहसातभयनेआंतरे सीभस्ये दूभस्ये मूकास्ये सर्वदुक्खनो अंतकरिस्थे मोक्षजास्ये इति सातमोठाणोसमत्तं ॥ ७ ॥

॥ भाषा ॥

इति स्थितिसूत्रसमादौ निषट्टौ विमाननामानौति ॥ ७ ॥

अथाष्टमस्थानकं द्वा शायते । सुगमंचैत नवर मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यहृच्चजं वू
शास्त्रलोजगती केवलिसमुद्घातगणधरनक्षत्रार्थानिसूत्राणि नव स्थित्यर्थानि षट् उक्त्वा सादर्थानि त्रीणीति । तत्रमदस्थाभिमानस्य स्थानानि जात्यादौ नितान्येव
मदप्रधानतया दर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि आत्मा मदो जातिमद एव मन्यान्यपि अथवा मदस्य स्थानानि तान्येवाह जाइमएइत्यादि शेषंतथैव तथा प्रवचनस्य द्वादशां
गस्य तदाधारस्य वा संघस्य मातरइव प्रवचनमातर ईर्यासमित्यादयो द्वादशांगेभिहिता आश्रित्य साक्षात्प्रसंगतो वा प्रवर्तते भवति च यतो यत्प्रवर्तते तस्य तदा
श्रित्य मातृकल्पतेति संबपक्षे तु यथा शिशुर्मातरममुंच वाक्कलाभं लभते एवं संघस्ताममुंचत्संघत्वं लभते नान्यथेतोर्याभिमित्यादौ नां प्रवचनमातृकत्वमेवेति तथा

स्काणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥

अथ जयठाणा प० तं० जातिमए कुलमए बलमए रूपमए तवमए सुय
मए लाजमए इस्सरियमए अठपवयणमायान प० तं० ईरियासमिई जासासमिई एसणासमिई आयाण

हि वे आठनोठाणो कहै है । आठमदनास्थानक आश्रय तेमदस्थानक कक्षा । ते कहै है जातिमद जातिते मातृपक्ष तेणे करीमद अभिमान ते जातिमद १ । इमकु
लजेपिटपक्ष तेणे करीमद ते कुलमद २ । बलते शरीरनो सामर्थ्यपणो ३ । रूपते सौंदर्यपणो ४ । तपते दृढ आठमादिक ५ । श्रुतजेशास्त्र घणो भणे तेणे करीम
द ६ । लाभते फलप्राप्ति तेणे करीमद ७ । ऐश्वर्यते ठकुराई ८ । यह आठमदकक्षा । आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवा द्वादशांगन आधारते संघ तेह
ने मातासरिखी माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कह्यो । ते कहै है ईर्यासमिति चालतां जीवने जोई चालै ते ईर्यासमिति १ । भाषानिवद्यबोलिते
भाषासमिति २ । ४२ दूषण्टाली आहार भातपाखीलेवे ते एषणासमिति ३ । उपकरणपूंजीलेवो मुंकवोते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूंजी निर्दोष स्थंडिले

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

अंतरदेवानांचैत्यवृक्षास्तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामगृतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया शृङ्खलामरध्वजादिभिरलंकृताभवन्ति । तेचैवं श्लोकाभ्यामवगन्तव्याः कलंबोउपि सायाणं बडोजक्याणचेइय । चुलसीभूयाणं भवे रक्खसाणंतुकंडउय १ असो गोकिन्नराणंच किंपुरिसाणयचंपओ नागरुक्खोभुयंगाणं गंधब्बाणयतंबुवत्ति ॥ २ ॥ तथा जंबुत्ति उत्तरकुरुषु जंबूवृक्षः पृथिवीपरिणामः सुदर्शनेतितन्नाम एवंकूटशाल्मलीवृक्षविशेषः एवं देवकुरुषु गरुडजातीयस्यवेषु देवाभि

जंमत्तनिरकेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती वाणमंतराणंदेवाणंचेइयसुक्काअठजोयणाइंउहं उच्चत्तेणं प० जंबूणंसुदंसणाअठजोयणाइंउहं उच्चत्तेणं प० कूटसामलीणं गरुलावासे अठजोयणाइं उहं उच्चत्तेणं प० जंबुदीवस्सणं जगई अठजोयणाइं उहं उच्चत्तेणं प० अठसामइए केवलिसमुग्घाए प० तं० पढमेसमएदंकरेइ वीएसमए कवाळंकरेइ तइएसमए मंथंकरेइ

परिठवे तेपारिष्ठावणियासमिति ५ । मननोगोपिवो ठामेराखवो तेमनोगुप्ति १ इमवचननोगोपिवो २ इमजकायानो गोपिवो ३ । वाणमंतरदेवतानांचैत्यवृक्ष तेहने निऊटवरत्तोवृक्षतेचैत्यवृक्ष जेहव्यंतरदेना घरआगलवृक्ष छत्रकरोरह्याकै तेहचैत्यवृक्ष आठयोजनजं चा जंचपणेकह्या । हिवे उत्तरकुरुक्षेत्र नेमां हि जंबूवृक्ष पृथिवीपरिणाम सुदंसणाएहवेनामे अणाढियादेवनोठाम आठयोजनजं चोजंचपणेकह्यो निषधपर्वतहेठे देवकुरुक्षेत्रमां हि शाल्मलीवृक्ष गरुड जातीय वेषु देवतानो आवासभूत तेहआठयोजनजं चोजंचपणेकह्यो जंबूदीपनं चउफेरजगतीकै जिमनगरनेचउफेर गढहीये तिमतेजगती आठयोजनजं चोजं हो । केवलो केइडे अंतर्मुद्गस आउखोवळे अवातियाकर्म वेदनो १ । नाम २ । गोत्र ३ । आयु ४ । बराबर कटिवानेप्रर्थ आठसमखनो केवलसमुद्घा

धानस्य देवस्याशसदिति । जगतीजं ब्रूहीपनगरस्य प्राकारकल्पापालीति । तथा पार्श्वस्यार्हतस्त्रयोविंशतितमस्तीर्थकरस्य पुरिषादाणीयस्सत्ति पुरुषाणां मध्ये
 आदानीय आदेशः पुरुषादानीय स्तस्त्राष्टौ गणाः समानवाचना क्रिया साधुसमुदायाः अष्टौ गणधरास्तत्रायकाः सूर्यः । इदंचैतत्प्रमाणं स्थानां पर्युषणकल्पे
 च श्रूयते केवलमावश्यकं अन्यथा तत्र ह्युक्तम् । दसनवगंगणाणामाणं जिह्वादाणंति । कीर्धः पार्श्वस्य दशगणाः गणधराश्च । तदिह द्वयोरल्पायुष्कत्वादिना का

॥ टीका ॥

चउत्येसमए मंथंतराइपूरेई पंचमेसमए मंथंतराइपफिसाहरई षष्ठेसमए मंथंपफिसाहरई सप्तमेसमएकवाळं
 परिसाहरई अष्टमेसमए दंठंपफिसाहरई ततोपच्छा सरीरत्येज्जवइ पासस्सणंअरिहापुरिसादाणिअस्स अठ
 गणा अठगणहराहोत्या तं० सुजेयसुजघोसेय वसिठेयंजयारिय ॥ सोमसिरीधरेचेव वीरज्जदेजसेइय ॥ १

॥ मूल ॥

तकरै । तेकहेके केवलीपहिलेसमे आत्मप्रदेशवाहिरकाढी दंडाकारकरै हेठेसातमीलगे ऊपरलोकांतलगे विस्तारितेकहेके । वीजेसमेकपाटकरेदक्षिणलोकांत
 लगेप्रदेशेकरीपूरं तीजेसमये मंथानकरैर्यारपांखडीनारवाइयानीपरै पूर्वपश्चिम लोकांतलगेपूरै । आत्मप्रदेशविस्तारै । चउथेसमए र्यारविदिशिनाभाग
 आंतराप्रदेशेकरीपूरै । पांचमेसमयेमंथाननाआंतराविदिशि जेप्रदेशपृथ्वाके तेइहासाना प्रदेशप्रति सातवे पाट्हाले छठेसमये मंथानसंहरै । सातमे समये क
 पाटसंहरै १ । आठमेसमये दंडप्रतेसाहरै ८ । तिवारपके शरीरस्तधर्माये मूलगंशरीरर्होये । श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने पुरुषामांहि आदेयहुकमनाधणीजेह
 नोवचनसङ्गनेग्राह्यमानतेह पुरुषादानीय तेहने आठगणने आठगणधरहुया सामान्य वाचना क्रियासाधु समुदाय तेगछतेहना नायक ते गणधर यद्यपि
 पार्श्वनाथना १० । गणधर आवश्यके कहाके परं वे अल्पायुषहुआ तेमाटे आठलस्याके तेकहेके शुभेय १ । शुभघोष २ । वासिष्ठ ३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५

॥ भाषा ॥

रणेनाविवक्षानुमंतयेति सुभेत्यादिश्लोकः तथा अष्टौनक्षत्राणि चन्द्रेण सार्धम्प्रमर्दं चन्द्रो मध्येन तेषां गच्छतीत्येवं लक्षणं योगसंबंधं योजयन्ति कुर्वन्ति अत्रार्थेऽभिहि-
तं श्लोकत्रयम् पुण्यसुरोहिणी चित्ता महाजेट्टणुराह कत्तिय विसाहा चंदस्सयजोगति । यानि च दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्दयोगीन्यपि कदाचिद्भवन्ति
यतो लोकश्चैटीकाकृतोक्तं । एतानि नक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेण दक्षिणेन च युज्यन्ते कदाचिच्चन्द्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथार्चिरादीन्येकादशविमान

॥ टीका ॥

अठनरकत्ताचंदेणं सठिंपमर्दंजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चित्ता ५ ।
विसाहा ६ अणुराहा ७ जेट्टा ८ । इमीसेणंरयणप्पहाएपुठवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठपलिनुवमा
इं ठिई प० चउत्थीएपुठवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्ये
गइयाणं अठपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं अठपलिनुवमाइं ठिई प०
वंजलोएकप्पे अत्येगइयाणं देवाणं अठसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा अच्चिं १ अच्चिमालिं २ वत्तिरोयणं

॥ मूल ॥

श्रीधर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनक्षत्रचंद्रमासाधे प्रमर्दयोगयोगे साथकरे तेकहैकै । कत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । महा ४ । चित्ता ५
विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणोयेरत्तप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीना आठपत्त्योपम आजखोकह्यो । चउत्थीनरक पृथिवीने विषे केतलाएक
नारकीना । आउसागरोपमआउखूकह्यो असुरकुमारदेवतानोकेतलाएकनो आठपत्त्योपमआउखोकह्यो सौधर्मइशान देवलोकनेविषे केतलाएकदेवतानो

॥ भाषा ॥

नामानोति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानकं सुखावबोधम् । नवरमिह ब्रह्मगुप्ति १ तद्गुप्ति २ ब्रह्मचर्याध्ययन ३ पार्श्वीयसूत्राणां वतुष्टयम् ज्योतिष्कार्यं च
यमस्य १ भोम २ सभा ३ दर्शनावरणार्थं चतुष्टयं क्षित्याद्यर्थानि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैथुनविरति परिरक्षणोपायाः नास्त्रीपशुपंडकैः संसक्तानि संकी

पञ्चकरं ३ चंद्राक्षं ४ सूर्याक्षं ५ सुप्रतिष्ठाक्षं ६ अग्निग्राहं ७ रिष्ठाक्षं ८ अरुणाक्षं ९ अरुणोत्तरवक्रिसंगं वि
माणं देवताएववन्ता तैसिणंदेवाणं उक्त्रोसेणं अष्टमागरोवमाइंठिई प० तंणंदेवा अष्टगहंअष्टमासाणं
आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तैसिणंदेवाणं अष्टहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ
संतेगइयाज्जवसिधियाजीवा जे अष्टेहिंजवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति वुज्जिस्संति जावअंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥
नवयंजचेरगुत्तीउ प० तं० नोइत्थीपसुपंठगसंसत्ताणिसिज्जासणाणि सेवित्तानवइ नोइत्थीणंकहंकहित्ता ज

आठपत्थोपमआउखोकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानी आठसागरोपमआउखोकह्यो । पांचमेदेवलोके जेदेवता अर्चि १ । अर्चिमाली २ ।
वैरोचन ३ । प्रभंकर ४ । चंद्राभ ५ । सूर्याभ ६ । सुप्रतिष्ठाभ ७ । अग्निग्राह ८ । रिष्ठाभ ९ । अरुणाभ १० । अरुणोत्तरावतंसक ११ । एम ११ विमाने देवता
पथे उपनाहे । तेहदेवतानी उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता आठपखवाहें खासोखासले जंघोसासले नीचोखासले नीचोखासमूके तेहदेव
ताने आठेवर्षसहस्से गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभयजीव जेआठभवनेआंतरे सोभस्ये बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये । इति आठमोठाणोस
असो ॥ ८ ॥ हिवेनवनोअधिकार लिखियेके । नवब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृक्षने वाडिनीपरें राखिवानो उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

र्त्तानि शय्यासनानि शयनीय विष्टराणि वसत्यासनानि वासेवसयिता भवतीत्येका १ नोस्त्रीणां कथा कथिताभवतीति द्वितीया २ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा-
यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणां मिंद्रियाणि नयननासा वेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो-
कयिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टैवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतरसभोजी गलत्स्नेहरस विंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पंचमी । नो-
पानभोजनस्यातिमात्रमप्रमाणं यथा भवत्येव माहारकः सदाभवतीति षष्ठी । नोपूर्वरतं पूर्वक्रीडितमनुस्मर्त्ताभवति रतंमैथुनं क्रीडितंस्त्रीभिः सह तदन्याक्री-
डेतिसप्तमी । नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोगंधानुपाती नोरसानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोश्लोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादं च

॥ टीका ॥

वइ नोइत्यीणं गणाइं सेवित्ता जयइ नो इत्यीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं श्यालोइत्ता निज्जाइत्ता
नो पणीयरसजोई नो पाणजोयणरस श्चइमायाए श्चाहारइत्ता नो इत्यीणं पुन्नरयाइं पुत्तकीलिच्चाइं समर

॥ मूल ॥

ते कहैछे । नही स्त्रीपशुपंडक संसक्त व्याप्तशयनपल्यंकादिक आसन ते बाजोटादिकसेविताहुयें । स्त्रीनोकथावार्तानकहे । स्त्रीना समुदायने सेवेनही
स्त्रीना इन्द्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखें एकाग्रचित्तध्यायेनही । प्रणीतरसभोजी नहीय गलत्स्नेहरसविह्वंजिमेनही पाणीसरस भोज
न अधिकमात्राए अधिकजीमे नहीं वस्त्रीसकदलउपरांत जीमेनही स्त्रीने पाकृत्यासंभोगपूर्वक्रीडा संभारि नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते
अनुरागीहोयनसांभले एमज रूडारूपजोवे नही रूडागंधनलेवे न रूडारसनोस्वादकरें न रूडास्पर्शपोताने शरीरेलगाडे आत्मानो आवा मवांछे एतलेष्ट

॥ भाषा ।

नानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । नोसातसौख्यं प्रतिबद्धापि भवति सातासातवेदनीया दुदयम्प्राप्य प्रोद्यस्तीत्यंततया अनेनच प्रथममुखस्य व्य्दास इतिनवमी
इदं च व्याख्यानं वाचनादयानुसारेण कृतं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्तत्रभावादिति तथा कुशलानुष्ठानं ब्रह्मचर्यं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि
चा चारांगप्रथमश्रुतस्कंधं प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नक्षत्रं साधिका नवमुहूर्त्ताष्ट्रेण साईयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वं च तेषां चतुर्विंशो
त्यामुहूर्त्तस्य द्विषष्टिभागैः षट् षष्ठ्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्टिभागानामिति । तथा अभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चंद्रस्यात्तरेण योगं योजयति तत्रोत्तर

इत्तान्नवइ नोसद्वाणुवाइ नोरूवाणुवाइ नोगंधाणुवाइ नोरसाणुवाइ नोफासाणुवाइ नोसिलोगाणुवाइ नो
सायासोरकपद्मिबद्धेयाविज्जवई नववंजचेरशुगुत्तिन प० तं० इत्यीपसुपंढगसंसंज्ञाणं सिज्जासणाणं सेवणया
जावसायासुरकपद्मिबद्धेयाविज्जवइ नववंजचेरा प० तं० सत्यपरिष्सा लोगविज्जं सीनुसणिज्जं सम्मत्तं
आयंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुत्तं महपरिष्सा पासेणं अरहापुरिसादाणीए नवरयणीनु उहं उच्चत्तेणं हो

गार नकरे साता सुखनेविषे प्रतिबद्ध नहीये न डूवीरहे नवब्रह्मचर्यनी अगुप्ति नवप्रकारे ब्रह्मचर्य नरहे तेकहैके । स्त्रीपशुपंढके संसंज्ञायाप्तजे शय्यापत्यंका
दिक आसनबाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाकल्या नवबोल बखाण्याके ते उपराठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिथाय नउमूंवाले जेसातासुखनेविषे
प्रतिबद्ध खूंवीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूचना प्रथमश्रुतस्कंधना नवअध्ययन कक्षा तेकहैके । शस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ । सम्य
क्त ४ । आयंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोक्षाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमाहि प्रधाननवरत्रि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

स्वादिगिः स्थितानि दक्षिणाशास्त्रित चंद्रेण सहयोगमनुभवन्तीति भावः बहुसमरमणिज्जाग्रो इति अत्यंतसमो बहुसमो ऽत एवरमणीयो ऽस्य तस्माद्भूमिभा
गात्ते पर्वतापेक्षया नापि स्वाचारापेक्षयेति तात्पर्यं आवाहाएत्ति अंतरेकत्वेति शेषः उवरिक्षेत्ति उपरितनं तारारूपं तारकजातीयं चारंभ्रमणं चरतिकरोति
नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एव प्रविसत्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पंचयोजनसत्कामत्याः संभवति तथा नदीमुखेषु जगतीरंभ्रिभित्तेनैव तावत्प्रमाणाः ज

त्या अग्नीजिनस्कत्ते साइरेगेन वमज्जत्ते चंद्रेण संहिंजोगं जोएइ अग्नीजियाइयानवनस्कत्ता चंदस्स उत्तरेणंजोगं
जोएइ तं० अग्नीजिसवणोजावन्नरणी इमीसेणं रयणप्पन्नाएपुठवीए अज्जसमरमणिज्जाणु नूमिन्नागाणु नवजो
यणसए उहं आवाहाएउवरिक्षेत्तारारूपे चारंचरइ जंबूद्वीविणंदीवे नवजोयणियामच्छापविसिंसुवा ३ विजय

नवहाथ जंचपणे देहदुया अभीचनचवत्ताभेरो नवमुहूर्तलगे चंद्रमासाथे योग जोजे संबंधकरे अभीचियकी मांडीनव नक्षत्र चंद्रमाने उत्तरदिसे योग जोजे सं
बंधकरे चालै तेकहैछे । अभीचि १ । अश्वि २ । धनिष्ठा ३ । शतभिषा ४ । पूर्वभाद्रपद ५ । उत्तराभाद्रपद ६ । रेवती ८ । अश्लिनी ८ । भरणी ९ । एनव
नक्षत्रजाणिवा । एणीयेरवप्रभा पहिलो पृथिवीनो वणोसमो वणोरमणीक जे भूमिभाग भूमिनो उपल्योभाग तेहथकी नवशतयोजनजं चे आंतरे एतले पृथि
वीथकी नवशतयोजनजं चो जइये तिहांजपिल्यो तारारूप एतलेशनो खरनो तारो जं चोछे भ्रमणकरेछे पृथिवीथकी सातसेने जयोजन तारामंडलछे । ७८०
योजने तारा १० । योजने सूर्य ८० । योजने चंद्रमा ४ । योजने अष्टावीस नक्षत्र ४ योजन बुधनो तारो ३ योजन मंगल ३ योजन शनैश्वर सर्वमिली नवसे योजन
थया । जंबूद्वीपमांहीं नवयो जनलां वामच्छपे सेछे लवणसमुद्रमांहि पांचसे योजननां मच्छे एणे जगतीने छिंद्रे नदीमुखे नवयोजननामच्छ जंबूद्वीपमांही

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

गतोरंधो चित्तेन एतावानेव प्रवेश इति लोकानुभावो वायमिति विजय द्वारस्य जंबूद्वीपसंक्षिप्तः पूर्वदिश्यवस्थितस्य एगमेगाएति एकैकस्मिन् वाहाएति वाहौ

रसणंदारस्स एगमेगाए वाहाए नवनवजोमा प० वाणमंतराणं देवाणं सज्जानुसुहम्मानुनवजोयणाइंउहं उ
च्चत्तेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सनउत्तवरपगलीनु प० तं० निद्रा निद्रानिद्रा पयला पयलापयला
थीणद्धी चरकुदसणावरणे अचरकुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीसेणं रयणप्पज्जाएपुढ
वीए अत्येगइयाणंनेरइयाणं नवपलिनुवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्येगइयाणंनेरइयाणं नवसागरो
वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्येगइयाणं नवपलिनुवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्ये

खाडोमांहीआवे जंबूद्वीपना विजयद्वारने एकैक वाहानेपासे मवनवभोमानगरके तथा उत्तठामकह्योके वाणमंतरदेयनी सभा सुधर्मानवयोजन जंघीजंघ
पणैकहीजाणवी । दर्शनावरणीयबीजोक्कम्मे तेहकर्मनी नव उत्तरप्रकृतिकही तेकहके मुखे जागे तेनिद्रा बइठांआवे ते प्रचला २ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा ३
चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला ४ । थीणद्धी अर्धवासुदेवनो बलहुवे ५ । चरकुदंसणकहिये आंखतेहनो आवरण पडल तेचचुदंसणावरण ६ । चचुविनाशेष
धाकतां चारइन्द्रिय तेहनां आवरण तेअचचुदंसणावरण ७ । अववि दंसणावरण ८ । केवलदंसणावरण ९ । एणीयेरव्रप्रभापृथिवीनेविधे केतलाएक नार
कीनो नवपत्थोपम आउखोक्कह्यो । चउत्थी नरकपृथिवीनेविधे केतलाएक नारकीनो नवसागरोपम आउखोक्कह्यो असुरकुमार देवनो केतलाएकनो नवपत्थो
पमआउखोक्कह्यो । सौधर्मइशानदेवलोकनेविधे केतलाएक देवतानो नवपत्थोपम आउखोक्कह्यो । ब्रह्मदेवलोकनेविधे केतलाएक देवतानो नवसागरोपम

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

पाश्च भोमानि नवभूमिकानि नगराणीति एकोननगराणीत्येके विगिष्टस्थानानीत्यन्ये तथा व्यंतराणां सभा सुधर्मानव योजनानिर्जर्हमुच्चत्वेन तथा पद्मा
 गइयाणं देवाणं नवपलिनुवमाइं ठिई प० वंजलोएकप्पे अत्येगइयाणं देवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प०
 जेदेवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पन्नं पम्हकंतं पम्हवस्सं पम्हलेसं पम्हज्जयं पम्हसिंगं पम्हसिद्धं पम्हकूळं
 पम्हुत्तरवहिसंगं तहा सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जकंतं सुज्जप्पन्नं सुज्जलेसं सुज्जवस्सं सुज्जज्जयं सुज्जसिंगं
 सुज्जसिद्धं सुज्जकूळं सुज्जुत्तरवहिसंगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पन्नं रुइल्ललेसं रुइल्लवस्सं जावरुइल्लुत्तरवहिसंगं
 विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा नवरहंअष्टमासाणं आणमंतिवा
 पाणमंतिवा ऊससंतिया नीससंतिया तेसिणंदेवाणं नवहिंवाससहस्सेहिं आहारठे समुपजाइ संतेगइयाज्जव

आउखोकह्यो । ब्रह्मलोके जेदेवता पद्म १ । सुपद्म २ । पद्मावर्त ३ । पद्मप्रभ ४ । पद्मकांत ५ । पद्मवर्ण ६ । पद्मलेश ७ । पद्मध्वज ८ । पद्मशृंग ९ । पद्मसिद्ध १० । पद्मकूट ११ । पद्मोत्तरावतंसक १२ । एम १२ विमाने तथावली । सूर्य १ । सूर्यावर्त २ । सूर्यप्रभ ३ । सूर्यकांत ४ । सूर्यवर्ण ५ । सूर्यलेश ६ । सूर्यध्वज ७ । सूर्यशृंग ८ । सूर्यसिद्ध ९ । सूर्यकूट १० । सूर्योत्तरावतंसक ११ । तथावली रुचिर १ । रुचिरावर्त २ । रुचिरप्रभ ३ । रुचिरकांत ४ । रुचिरवर्ण ५ । रुचिरलेश ६ । रुचिरध्वज ७ । रुचिरशृंग ८ । रुचिरसिद्ध ९ । रुचिरकूट १० । रुचिरावतंसक ११ । एणेविमाने जेहदेवतापणे उपमाके । तेहदेवतामो नवसागरो पमआउखोकह्यो । तेहदेवता नवअर्दमासे पखवाडे स्वासोस्वासले घणोस्वासोस्वासले जं चोस्वासले नीचोस्वासले तेहदेवताने नववर्ष सहस्से आहारमो अर्थ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

दीनिहादश सूर्याद्यपि हादशैव रुचिरादीग्येकादश ॥

८

॥ दशस्थानकं सुषोभमेव तथापि किंचिद्विस्थिते इहपंचविंशतिसंज्ञाणि तत्रलाघवं द्रव्यतो ल्योपधिना भावतो गौरवत्यागः संविग्नमनोऽत्र साधुदानं वा ब्रह्मचर्येण वसनमवस्थानं ब्रह्मचर्यवास इति तथाचित्तस्य समस्तसमाधानं प्रशान्तता

॥ टीका ॥

सिद्धियाजीवा जे नवहिंजवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति जाव सव्वदुक्काणमंतंकरिस्संति ॥ १ ॥

दसविहेसमणधम्मो प० तं० खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ महवे ४ लाघवे ५ सज्जे ६ संजमे ७ तवे ८ चि
याए ९ वंजचेरवासे १० । दसचित्तसमाहिठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे असमुप्यन्नपुव्वेसमुप्यज्जिजा स

॥ मूल ॥

उपजे । केतलाएक भव्यजीव नवे भवग्रहणे नवभवने आंतरे सोमस्ये वूमस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्से २५८ इति नवमू ठाणूंसम्पत्तं ॥ ८ ॥

॥ भाषा ॥

हिवेदशनोंअधिकारलिखेके अमणकहिये साधुतेहनो धर्मदशप्रकारे तेयमणधर्मकह्यो तेकहेके । चमाक्रोधनिग्रह १ । मुक्तिनिर्लोभपणी २ आर्जवमायानिग्रह ३ । मार्दवमाननिग्रह ४ । लाघव हलुआपणूं द्रव्यथकीहलको जेअल्पउपधि भावहलको गौरवचयत्याग ५ । सत्यभाषी ६ । संयम १७ प्रकारे ७ । तप १२ प्रकारे ८ । त्याग साधूनेआहारादिकदेवो ९ । ब्रह्मचर्यनेविषेवसिवो १० । दशप्रकारेंचित्तना मगनां समाधि प्रशान्तपणी तेहनास्थानक आश्रय तेचित्तसमाधिस्थानक कहिये तेकहेके धर्मनीचिंता जीवादिकपदार्थनो उपयोग तथा उपजिवो मरवो तेहनो स्वभावतेधर्म तेहनो चिंतविवा अथवाश्रुत चारित्रलक्षणधमेनो चिंतावासे कहतां जेहपुण्यवंतने एहवोचिंतनहोयतेधर्मनो चिंताकहीके । असमुत्पन्नपूर्वा पूर्वेअतीतकाले नही उपनी तेहधर्मनीचिंता उपन्यापके सब धर्मजीवादिद्रव्यस्वभाव अथवाश्रुतचारित्र जावितए सपटिआयेकरो जाणे प्रत्यास्थानपटिआयेकरो छांडवायोग्य कर्महुए तेछांडीये तेधर्मचिंतापहिली स

तस्य स्थानात्थाश्रया भेदावा चित्तसमाधिस्थानानि तत्र धर्माजीवादिद्रव्याणामनुयोगोत्पादादयः स्वभावास्तेषां चिंतानुपेक्षा धर्मस्वभावश्रुतचारिणात्मकस्य सर्व
 ज्ञाभाषितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मैभ्यः प्रधानोपमित्येव चिंताधर्मचिंताया शब्दोपलब्धमाणा समाविष्टानांतरापेक्षया विकल्पार्थः स इति यः कल्याण भागी
 तस्य साधोरसमुत्पन्नपूर्वा पूर्वस्मिन्नादौऽतीतकालेऽनुपपन्ना ता तदुत्पादे ह्यर्थापुद्गलपरावर्तान्ते कल्याणस्यावश्यंभावात् समुत्पद्येत जायेतसकिं प्रयोजनाय चेयम
 त आह सर्वं निरवशेषधर्मं जीवादि द्रव्यस्वभाव उपयोगोत्पादादिकं श्रुतादिरूपं वा जाणित्त ए ज्ञपरिज्ञया ज्ञातुं ज्ञात्वा च प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय
 कमेपरिहर्तुमिदमुक्तं भवति धर्मचिंताधर्मज्ञानकारणभूता जायत इति इयं च समाधिरुक्तलक्षणस्य स्थानमुक्तलक्षणमेव भवतीति प्रथमं तथा स्वप्नस्य निद्रावशवि
 कस्य ज्ञानस्य दर्शनं संवेदनं स्वप्नदर्शनं तद्वा कल्याणप्राप्ति रूपकसमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्यते यथा भगवतो महावीरस्य ऽस्थिकग्रामे शूलपाणियक्षोपसर्गावसाने किंप्रयो
 जनं वेद मित्याह अहातञ्च सुमिणं पासित्त एति यथा येन प्रकारेण तथ्यः सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थः तं स्वप्नं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं अवश्यं भाविनो मुक्त्यादेः
 शुभस्वप्नफलस्य दर्शनाय साधोः स्वप्नदर्शनमुपजायत इति भावः कचित्सुजाणं ति पाठ स्तत्रावितथमवश्य भाविसुयानं सुगतिं द्रष्टुं ज्ञातुं सुज्ञानं वा भाविशुभार्थपरि

ब्रंधमं जाणित्त ए सुमिणदं सणे वासे असमुप्यन्तपुत्रे समुपजिज्ञा अहातञ्च सुमिणं पासित्त ए सन्निनाणवासे

मावि १ तथा स्वप्नो देखो जे स्वप्न दीठे महाकल्याणी प्राप्ति होखे ते कहै के असमुत्पन्नपूर्वक एह वो पूर्व दीठे नथी ते स्वप्नो संप्रयोजन अहातञ्च सुमिणं पासित्त
 ए यथा तय्य जूने नही एह वो स्वप्नो फल जाणि वाने अर्थ अवश्य मोक्ष जाणहार शुभस्वप्न देखी चित्तसमाधिपामे जिम श्रीमहावीर स्वामी ए छेहली रात्रिये १०
 स्वप्नपाम्या प्रभाते केवल ज्ञान जपनू एह बीजूं समाधि ठाणूं २ । संज्ञा ज्ञान ते चित्तसमाधि स्थानक मनसहितने संज्ञी कहिये तेहनूं ज्ञान तेजाति स्मरण

च्छेदसंवेदितुमिति कथाणसूचका वितथस्वप्रदर्शनाच्चभवति वित्तसमाधिस्थानमिदं द्वितीयं तथासंज्ञानसंज्ञा साक्षयद्यपि हेतुवाददृष्टिवाद दीर्घकालिकोपदे-
 शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञायाश्चेति सायस्यारिक्त ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञानं
 संज्ञिज्ञानं तच्चेहाविकृतसूत्रान्यथा सपपत्तेर्जातिस्मरणमेव से तस्यासमुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्यते कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुञ्जभवेसुमरिणिति पूर्वभावात्स्मर्तुं स्मृतपूर्व
 भवस्यसंवेगात्समाधि कल्पयतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदर्शनं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणित्व इर्धनं ददति किंफलमि-
 त्याह दिव्यादेवद्विप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यादेवद्युतिविशिष्टां शरीराभरणदीप्तिदिव्यं देवानुभावं उत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावं द्रष्टुमेतदर्थनायेत्यर्थः दे-
 वदर्शनाच्चागमार्थेषु प्रधानाद्यं धर्मबहुमानश्चभवति ततश्चित्तसमाधिरिति देवदर्शनं वित्तसमाधिस्थानमिति चतुर्थं तथाअवविज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपू-

॥ टीका ॥

समुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञा पुञ्जभवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे अणमुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञा दिव्यं देवाहं दिव्यं
 देवजुतं दिव्यं देवाणुजावंपासित्तए उहिनाणेवासे असमुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञा उहिणालोगंजाणित्तए उहिदं

॥ मूल ॥

कहिये से कहतां तेहने असमुत्पन्नपूर्व पूर्वजपनूनयो सेइ अर्थेजपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थे पूर्वभवसंभरि विशेष संवेगउपजे एवीज्जित्तसमाधि स्थानक ३
 तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्व पूर्वउपनो नथो तेहजेने उपजे ते संअर्थउपजे। दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी द्युति
 विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानी अनुभाव वैक्रिय करिवानी समर्थाई देखवानेअर्थे देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु
 इ एहचउष्ठाणूं ४। अवविज्ञान तेहजेने पूर्वनथो जपनू तेहजेने जपजे अवविज्ञानेकरी लोकस्वरूप जाणवाने अर्थे विशिष्टज्ञानथी वित्तसमाविहोय एपां

॥ भाषा ॥

वंसमुत्पद्येत किमर्थमत आह मणोगते जाणित्त ए इत्याह अर्वाधनामर्यादया नियतद्रव्यत्वेन कालरूपेण लोकं ज्ञातुं लोकज्ञानायेत्यर्थः भवति च विशिष्टज्ञानाच्चित्तसमाधिरिति पंचमं तदिति । एवमवधिदर्शनसूत्रमपीति षष्ठं । तथा मनःपर्यवज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येत किमर्थमत आह मणोगते भावे जाणित्त ए अद्वैतीयद्वीपसमुद्रेषु संज्ञिनां पंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकानां मनोगतान् भावान् ज्ञातुमेतत् ज्ञानायेत्यर्थः इति सप्तमं । तथा केवलज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येत केवलं परिपूर्णं लोक्यते दृश्यते केवलालोकेनेति लोकालोकस्वरूपं वस्तु तत्त्वं ज्ञातुं केवलज्ञानस्य च समाधिभेदत्वाच्चित्तसमाधिस्थानता इह वामनस्कृतया केवलिना चित्तचैतन्यमवसेयमित्यष्टमं । एवं केवलदर्शनं सूत्रं नवरं द्रष्टुमिति विशेष इति नवमं । तथा केवलिमरणं वान्म्रियते कुर्यात् इत्यर्थः किमर्थमत आह सर्वदुःखप्र

सणे वासे असमुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञातुं हिणालोगं पासित्त ए मणपज्जवनाणे वासे असमुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञातुं जावमणोग ए जावे जाणित्त ए केवलनाणे वासे असमुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञातुं केवलं लो गं जाणित्त ए केवलदं सणा वासे असमुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञातुं केवललोयं पासित्त ए केवलिमरणं वामरिज्ञातुं सद्दुःखकप्पहीणा ए ।

चमंठां ५ अवधिदर्शनं सेतेहनेपूर्वं उपजं नथी तेहजेहने उपजे तेसे अर्थे उपजे अवधिदर्शने करी लोकस्वरूपदेखवाने अर्थ एहंठां ६ मनपर्यवज्ञानं सेजेहने पूर्व उपजं नथी तेहजेहने उपजे तेसे अर्थे उपजे अद्वैतीयद्वीपमाही संज्ञी पंचेन्द्रियाणां मनोगतभावजाणे एहवृं ज्ञानपामी चित्तसमाधिहीय एसात्तमंठां ७ केवलज्ञानं सेजेहने पूर्व उपजं नथी तेहजेहने उपजवाने अर्थे केवलसकललोकजाणिवाने अर्थे एहचित्तसमाधि नवमंठां ८ केवलदं सण सेजेहने पूर्व उपजं नथी तेहजेहने उपजवाने अर्थे उपजे परिपूर्णलोक देखवाने अर्थे एहचित्तसमाधि नवमंठां ९ केवलीनेमरणे एतले केवलज्ञान उपजार्जीनेमरे तेसे अर्थे सर्वदुःख

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

हाषायेति इदंतुकेवलमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति । तथा अकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधारुस्कृति कल्पवृक्षाः ।
उपभोगताएति उपभोग्यत्वाय उवस्थियति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिगति भाजनदायिनः तुडियंगति तुर्यांगसंपादकाः

मंदरेणपुष्पमूले दसजोयणसहस्साइं विस्कंजेणं प० अरिहाणं अरिठनेमीदसधणुइंउहं उच्चत्तेणंहोत्या क
राहेणंयासुदेवे दसधणुइंउहंउच्चत्तेणं होत्या रामेणंवलदेवेदसधणुइंउहं उच्चत्तेणंहोत्या दसनस्कृता नाणयुहि
करा प० तं० मिगसिरअद्दापुस्सो । तिन्निअपुद्वाइमूलमस्सेसा । हत्थोचिन्तायतहा । दसयुहिकरायना
णस्स १ अकम्मजूमयाणंमणुअणं दसविहारुस्का उवजोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय जिंगाय तुहि

अथ ऋषिनामैर्ष्ये ए १ केवलमरणते सर्वोत्तमवित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरुपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेषिहुलपणेकच्छो अतिहंतअरि
ठनेमी बाबोसमीतोर्थंकर दशधनुषजंघणेषेहुया क्खवासुदेव नवमी तेहनो देहदशधनुषउंचोउंचपणेषुयो रामवलदेव बलभद्र दशधनुषउंचा उंचपणेषुया
दशनच्च ज्ञाननां वृद्धिकरणहार कक्षा भगवंते तेकहेहे सुगधिर १ । आर्द्रा २ । पुष्य ३ अणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४ । पूर्वाषाढ ५ । पूर्वाभाद्रपद ६ । मूल ७
आश्लेषा ८ । हस्त ९ चित्रा १० । एह दशनच्च ज्ञानने वधारेएह मांहि भणवाबेसे तो काहीं विघ्ननउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया
नही तेअकर्मभूमि ५७ अंतरहीप अनेचीस अकर्मभूमि एवं ८६ चेन्न युगलियानां सास्वतांहे । तिहांनां माससे युगलियाने दशप्रकारेवृक्ष एतसे कल्पवृक्ष ।
उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आर्द्ररक्षा वकाभोग्यभावे बांक्षापूरवे एहवा कक्षातेकहेहे । मत्तांगका मद्यनाकारणभूत जाणिवा १ भाजनदातार २

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

दौवत्ति दौपयिष्ठाः प्रदीपकार्यकारिणः जोइत्ति न्योतिरग्निस्तत्कार्यकारिणइति चित्तंगत्तिचित्रांगाः पुष्पदायिनः चित्ररसाभोजनदायिनः मख्खंगाआभरण
दायिनः गेहाकाराः भवनत्वेनोपकारिणः अनम्लत्वंसवस्त्रत्वं तद्धेतुत्वादनग्नाइति घोषादीन्येकादशविमाननामानेति । अथैकादशस्थानं तदपिगतार्थं नवर

अङ्गा दीव जोइ चित्तंगा चित्ररसा मणिअङ्गा गेहागारा अनिगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पन्नाएपुढवीए
अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्तेणं दसजोयणसहस्साइंठिई प० इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइ
याणं नेरइयाणं दसपलियनुवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए दसनिरयावाससहस्साइं प० चउत्थीएपुढ
वीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइ
याणं जहन्तेणं दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्तेणं दसवाससहस्सा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

वाजिचना संपादक ३ दीवा ४ तथा जोतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फूलदायक ६ भोजनदातार ७ आभरणनादातार ८ घरनेकामआवनार ९ वस्त्रना
दातार १० एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दशसहस्रवर्धनो आउखोकह्यो । एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनो
दशपत्नोपम आउखोकह्यो । चउथीपंकप्रभा पृथिवीनेविषे दसलाख नरकायासा कह्यो । चउथी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोउत्कष्टो दससागरोपमो
आउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दससागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपतिदेवनू केतलाएकनू जघ
न्य दशसहस्रवर्धनो आउखोकह्यो । असुरेन्द्र चमरेन्द्र बलेन्द्र वर्जोने बीजाभवनपती देवतानो जघन्य दससहस्रवर्धनो आउखोकह्यो चमरेन्द्र बलेन्द्रनो उत्क

इं ठिई प० असुरिंदवजाणं नोमिजाणं अत्येगयाडणं जहन्तेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं
 देवाणं अत्येगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० वायरवणस्सइ काडएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प०
 वाणमंतराणं देवाणं अत्येगइयाणं जहन्तेणंदसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं
 देवाणं दसपलिउवमाइंठिई प० वंजलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अ
 त्येगइयाणं जहन्तेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं
 रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं वंजलोगवत्तिसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ता तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं दससागरो
 वमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसराहंअष्टमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊरुससंतिवा नीरुससंतिवा तेसिणं

ए जघन्य आउखो एकसागरोपम भाभेरोहे । असुरकुमार देवनेकेतलाएकनो मध्यमआउखो दसपत्थोपमकह्यो । वाडर प्रत्येक वनस्पतीकायनो उत्कष्ट
 दससहस्रवर्ष आउखोकह्यो भगवन्ते । बानवंतर देवतानो केतलाएकनो जघन्य दशमस्रवर्ष आउखोकह्यो । सोधर्म ईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवत
 नो दशपत्थोपम आउखोकह्यो । पांचमे ब्रह्मदेवलोकने केतलानो उत्कष्टो दससागरोपम आउखोकह्यो । छठेलांतक देवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो जघन्य
 दससागरोपम आउखोकह्यो । पांचमे देवलोकने जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुसर ५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ रंग
 लावर्त १० ब्रह्मलोकावतंसक ११ एषेविमाणे देवतापणेउपना तेहनो देवतानो उत्कष्टो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो भगवन्ते । तेहदेवता दशपखडाडे स्वा

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

मिहप्रतिमाद्यर्थानि सूत्राणिसप्त स्थित्याद्यर्थानितुतदेति तत्रउपासंतेसेवते अमणान्येते उपासकाः श्रावकास्तेषांप्रतिमाः प्रतिज्ञाअभिग्रहरूपाः उपासकप्रतिमाः तत्रदर्शनंसम्यक् तत्प्रतिपन्नश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानांप्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचारा अतिमावंतोनिर्देशः कृतः एवमुत्तरपदे अपि अयमत्रश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानां प्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाभावार्थः सम्यग्दर्शनस्य शंकादिशब्दरहितस्याणव्रतादि गुणविकल्पस्थायमभ्युपगमः सा प्रतिमाप्रथमेति । तथाकृतमनुष्ठितं व्रतादीनांकर्म तच्चाणव्रतंज्ञानवांच्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येनप्रतिपन्नदर्शनेन सकृत्तत्रतकर्मप्रतिपन्नाणव्रतादिरिति भावः

देवाणंदसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्यज्जइ संतेगइष्ठा जवसिद्धियाजीवा तेहदसहिंजवग्गहणेहिं सि
ज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुरकाणमंतंकरिस्संति ॥ १० ॥ एक्का
रसउवासगपप्पिमाउ प० तं० दंसणसावण कयल्लयकंमे सामाइष्णकणे पोसहोववासानिरए दियावंजया

सोस्वास घणोलेइ । उंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवतानो दससहस्वर्य गण्ठके आहारनो अर्थउपजेके केतलाएक भव्यजीव तेहदशभवने आंतरे सौभस्ये
बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्स्ये मोचजास्ये इति दसमूठाणूं सम्यक्तं ॥ १० ॥ हिवे ग्यारमो अधिकार लिखियेके इग्यार उपासक कहतां
श्रावकसाधुनो सेवना करणहार तेहनो प्रतिमा तपविशेष तेकहेके अनुक्रमे आगली दंसणते सम्यक्त ते जे आदरे तेदर्शन श्रावककहिये इहां प्रतिमावंत
वीचेंभेद नजाखिवो तेमाटे प्रतिमापाठ उचरीने दर्शनश्रावकनो नामलिधोएम आगलीएतले सम्यक्तना अतिचार शंकादिकटाले तपनो अविकार यन्यांत
रथो जाखवो एहपहिली दर्शनप्रतिमा १ कृतव्रतकर्म अणव्रत जेउचराके तेहना अतीचार विशेषपणेटाले बीजीप्रतिमा २ सावद्ययोगनो टाखिवो निरवय

इतीयं द्वितीया । तथा सामायिकं सात्रययोगपरिवर्जनं निरवद्ययोगोपसेवनस्वभावं कृतं विहितं देशतोयेन सामायिककृतं आहिताग्न्यादिदर्शनात् ज्ञातस्योत्तरपदत्वं तदेवमप्रतिपन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्य प्रतिदिनं मुभयसंख्यं सामायिककरणं मासत्रयं यावदिति तृतीया प्रतिमेति । तथा पौषं पुष्टिकुशलधर्माणं धत्ते यदा हारयागादिकं मनुष्ठानंतत्पौषधं तेनोपसेवनमवस्थानं महोरात्रं यावदिति पौषधोपवासइति अथवा पौषधंपर्यदिनं मष्टम्यादि तत्रोपवासउक्तार्थः पौषधोपवासइति इयं व्युत्पत्तिरेव प्रवृत्तिस्तस्य शब्दस्य आहारशरीरसत्कारा ब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेष्विति तत्र पौषधोपवासे निरत आसन्नः पौषधोपवासनिरतः स एव त्रिधस्य आवकस्य चतुर्थी प्रतिमेति प्रक्रमः अयमत्र भावः पूर्वप्रतिमात्रयोपेतः अष्टमी चतुर्दश्यमावस्था पौर्णमासी व्याहार पौषधादिचतुर्विधं पौषधं प्रतिपद्यमानस्य चतुरो मासान् यावत् चतुर्थी प्रतिमा भवतीति तथा पंचमी प्रतिमायामष्टम्यादिषु पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारी भवत्येतदर्थं च सूत्रं अधिकृतसूत्रपुस्तकेषु न दृश्यते दशादिषु पुनरुपलभ्यते इति तदर्थ उपदर्शितः तदा शेषदिनेषु दिवा ब्रह्मचारौ रत्तीति रात्रौ किमत आह परिमाणं स्त्रीणां तद्गोपानां वा प्रमाणं कृतं येन स परिमाणकृतइति अयमत्र भावो दर्शनव्रतं सामायिकाष्टम्यादि पौषधोपेतस्य पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारिणः शेषदिनेषु दिवा ब्रह्मचारिणो रात्रौ ब्रह्मपरियोगनो सेविषो ते सामायिककृत एतले उभयकाले सामायिककरे मासत्रिणि लगे एत्रीजी प्रतिमा ३ कुशलधर्मनो पोषवो ते पौषध आहारादिकनो त्यागरूपमनुष्ठानं ते पौषधतेषु करौ उपवासवो रहिवो महोरात्रि लगे ते पौषधोपवासनिरत पाङ्किलीत्रिणि प्रतिमा सहित अष्टम्यादिक पर्वने विषे मासचार लगे चतुर्विधं पौषधकरे चतुर्थी पौषधप्रतिमा ४ पंचमी प्रतिमाने विषे अष्टम्यादिक पर्वने विषे एकरात्रि काउसमाकरे शेषदिने दीहे ब्रह्मचर्यपाले रात्रे परिमाणकरे अरात्रिभोजौ अन्नानोकाह्णौ नवांघे पांचमास लगे एतले एपांचमी प्रतिमा ५ छठ्ठी प्रतिमाएं दिवसे अने रात्रिं पिण ब्रह्मचर्यपाले अस्त्रायी स्नाननकरे विकट

॥ टीका ॥

॥ भाषा ॥

माणकृतोऽस्नातस्याऽरात्रिर्भाजिनः अबहकच्छस्यपंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तं च अष्टमिचउहसी सुपडिमठाएगराईया । पञ्चमं असिणाणवि
 यडभोई मउलियडोद्विसबंभयारीएय । रत्तिंपरिमाणकडो पडिमावज्जेदिसुज्जेसुत्ति ५ । तथा दिवापिरान्नावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि
 वर्जकः क्वचित्पठ्यते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तौत्थनिशादी विडभोईत्ति विकटे प्रकटप्रकाशेदिवानरात्रावित्यर्थः दिवापि एवाऽप्रकाशदेहेनभुंक्तेऽशनाद्यभ्य
 वहरतीति विकटभोजी मौलिकडेत्ति अबहपरिधानकच्छद्व्यर्थः पठ्ठीप्रतिमेतिप्रकृतं अयमन्नभावः प्रतिमापंचकोक्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या
 वत्पठ्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइत्ति सचेतनाहारपरिज्ञातः तत्स्वरूपादिप्रतिज्ञानाद्व्याख्यातोयेन ससचित्ताहारपरिज्ञातः आवकः सप्तमीप्रतिमेति
 प्रकृतं इयमन्नभावना पूर्वोक्तप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाआरंभः पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परि
 ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातोयेनासावारंभपरिज्ञातः आठोऽष्टमीप्रतिमेति । इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जनं मष्टीमासान् यावदष्टमीप्रतिमेति
 तथाप्रेष्याआरंभेषु व्यापारणीयाः परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेष्यपरिज्ञातः आवको नवमीति भावार्थश्चेह पूर्वोक्तानुष्ठायिनः आरंभपरै रष्यकारयतो

री रत्तिपरिमाणकडे दिश्याविरानुविवंजयारीअसिणाई विअण्णोई मौलिकडे सचित्तपरिन्नाए आरं

भोजीदिवसेजिमे मौलिकतनघी बांधोपहिरणानी कळजेणेमासकलगे छठ्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनी परिज्ञा पञ्चक्खण माससातलगेकरे प्रासुकआहा
 रकरे सातमी प्रतिमा ७ आरंभपृथिव्यादिक उपमर्दनलक्षणे जेणेपरिज्ञात पचस्योते आरंभपरिज्ञात आवक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेख्या
 रंभनेविषे परिज्ञात पञ्चक्खणके जेहनेते प्रेष्यपरिज्ञा आवककहिये एतलेनवमासलगे परपाळिं कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेआवकने निमित्ते उहसी

नवमासान् यावन्नवमौ प्रतिमेति । तथा उद्दिष्टं तमेव यावकं मुद्दिष्टकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्टं भक्तपरिज्ञातः प्रतिमेति प्रकृतं इहायं भावार्थः पूर्वोदितं गुणयुक्तस्याधाकर्म्मिकभोजनपरिहारवतः क्षुरमुद्दितशिरसः शिखावतोषा केनापि किञ्चिद्गृहव्यतिकरे पृथस्यतत् ज्ञाने सति जानामीत्यज्ञाने च सति न जानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवं विधिविहारस्य दशमौ प्रतिमेति । तथा अमणेति निर्यत्यसद्देशस्तदनुष्ठानकरणात् संश्रमणभूतः साधुकल्प इत्यर्थः चकारः समुच्चये अपिसंभावेनेभवति यावक इति प्रकृतं हे श्रमण हे आयुष्मन् इति सुधर्मस्वामिना जंभूस्वामिना मामंशयतोक्तं मित्येकादशीति । इह चेयं भावना पूर्वोक्तं समग्रगुणो पेतस्य क्षुरमंडस्य कृतलोचस्य वा गृहीतसाधुनेपथस्य इर्यासमित्यादिकं साधुधर्ममनुपालयतो भिक्षार्थं गृहिकुलं प्रवेशे सति अमणोपासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षादेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नमणोपासको ह निति ब्रुवाणस्यैकादशमासान् यावदेकादशी प्रतिमा भवतीति पुस्तकांतरे त्वेवं वाचना दंसणसावणप्रथमा कयवयक द्वितीया । कयसामादण तृतीया । पोसहोयवासनिरण चतुर्थी । राइभक्तपरिवाण पंचमी सचित्त

॥ टीका ॥

नपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिष्टनत्तपरिन्नाए समणनूएणाविज्जमइ समणाउसो लंगंताउ इक्कारसएहिं एक्का

॥ मूल ॥

भातकरो तेजेण परिज्ञातं पञ्चख्यो ते उद्दिष्टभक्तं परिज्ञातं दशमासलगे दशमौ प्रतिमा १० सधली प्रतिमाएं पाक्षिली २ प्रतिमानोकिरिया साथलेता जइये एतले इग्यारमी प्रतिमाएं अमण भूतहुए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले क्षुरमुद्दितशिरहोय शिखामस्तकेराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे आवी जीमे मासइग्यारलगे इग्यारमी प्रतिमा साधुनोवेशवहे भिक्षाएजाए तिवारे कहिये मुक्तअमणोपासकने भिक्षाद्योकोशेकपूछोद्योको कहेंहूं यावककूं एतले इग्यारमी प्रतिमा कहौ ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमंशेहे हे आयुष्मन् चिरंजीवी सांभलि लोकनाकेइहाथकी इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेयोजने आवा

॥ भाषा ॥

परिवाणषष्ठी द्रियाबंभयारी राओपरिमाणकडेसप्तमी द्रियाविराओवि बंभयारी । असिणाणपयाविभवति वोसठ्केसरोमनहेअष्टमी आरंभपरिवाणनवमी उद्दिष्टभक्तवज्जएदशमी समणभूयाविभवइति समणाउसोएकादशीति क्वचित्तुआरंभपरिज्ञातइतिनवमी प्रेथरंभपरिज्ञातइतिदशमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः अमणभूतस्यैकादशीति तथा जंबूद्वीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसत्ति एकविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अबाहाए अबाधयाव्यवधानेनकृतेतिशेषः ज्योतिषंज्योतिषक्रंचारंपरिभ्रमणं । चरत्याचरति तथालोकांतान् एमित्यलंकारे एकादशशतानि एकारेत्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित याकृतेतिशेषः ज्योतिसंतेति । ज्योतिषक्रपर्यंतः प्रज्ञमइति इदंचवाचनान्तरं व्याख्यातं उक्तं एकारणकाओमा मयएकाराहियायएकारा । मेरुअलोगावाहे जोइसचक्रंचरइठाइति । अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंतरं व्याख्यातमालापकइयं व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसयंभवतित्तिमकषायन्ति इहमकारस्यागामिकत्वा

रेहिंजोयणसएहिं अवाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूद्वीवेदीवे मंदरस्सपद्मयस्स एकारसहिंएकवीसेहिं जोयणसए हिं जोइसेचारंचरइ समणस्सणंजगवनमहावीरस्स एकारसगणा एकारसगणहराहोत्या तं० इंदनूई अग्नि नूई वायनूई विअत्ते सोहम्मे मंफिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलजाए मेअजो पन्नासे मूलेनरकत्तेएकारसतारे प०

धार्पेपन्नतेकइतांकड्यो भगवन्ते । एतलेअलोकथी इग्यारयोजने ज्योतिषचक्ररह्योके । ज्योतिषनोकेइडोकड्यो भगवन्ते । जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोचो पखेर इग्यारसेयोजने उपरि एकवीसयोजन ज्योतिषक्रचारचरे भ्रमणकरे । अमणने भगवन्तने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर पहारइया । तेअनुक्रमे कहेके आगुलै । इन्द्रभूति १ । अग्निभूति २ । वायुभूति ३ । व्यक्तनामे ४ । सौधर्मा ५ । मंडित ६ । सौर्यपुत्र ७ । अकंपित ८ । अच

इयमर्धो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातं प्ररूपितं भगवता अन्यैश्चकेवलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथामन्दरेणंपञ्च धरणि तलाग्रोसिहरतले एकारस
भागपरिहीणे उच्चत्वेणंपञ्चसे । अस्यायमर्थः मेरुभूतलादारभ्य शिखरतलमुपरिभागं यादद्विष्कंभापेक्षया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणोहानिमुपगतस्य
उच्चत्वेनोपर्युपरिपञ्चसः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दशयोजनसहस्राणिविष्कम्भतः ततश्चाच्चत्वेनांगुले गते गुलस्यैकादशभागे विष्कम्भतोहीयते एं मेकादशसं
गुलेष्वंगुलहीयते एतेनैव न्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततो नवनवत्यां योजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयन्ते । ततोभवतिसहस्रविष्कम्भ
शिखरे इति अथवा धरणीतलादधरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणोभवति कस्यैकादशभागेनेत्याह
उच्चत्वेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागोनवतैर्हीनोमूलं विष्कम्भापेक्षया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वाच्चमूलविष्कम्भ

॥ टीका ॥

हेष्ठिमगेविज्ञायदेवायं एकारसमुत्तरंगेविज्ञाविमाणसतंजवइतिमस्कायं मंदेरणंपञ्च धरणितलानुसिहरतले

॥ मूल ॥

लभ्राता ८ । मेतार्य १० । प्रभास ११ । मूलनक्षत्रना इग्यारताराकक्षा नवग्रैवेयकमानमाहे सघले हेठल्योत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारथ
धिकएकसो विमानभवनके भगवतेकक्षा मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभाग जिहां पंडगविमानके तिहांलगे विखंभनी अपेक्षाएं एकारसभाग
परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलेंदशयोजनपिहुलो मूलथकी इग्यार अंगुलजंघा बडीये तिहां विखंभपणे एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार
गाजयेगाज हीनकरिये । इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन उगरा । पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये । इमकरता नेजंसहस्र योजने जंघीवडिये
तिहां नवसहस्रयोजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन जगरा । पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जाखिवो जण्ठोभूमिमध्ये नेजंसहस्र भूमिथकी जंघीस

॥ भाषा ॥

स्वेति ब्रह्मादीनि द्वादशविमाननामानि । द्वादशस्थानमद्यतश्चसुगमं । नवरंस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागेकादशसूत्रास्त्राह । तत्रभिन्नूषांविशिष्टं संहननश्रुतवतां प्रति

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

एक्कारसजागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एक्कारसपलिउव
माइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एक्कारससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं
अत्येगइयाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिउवमा
इंठिई प० लंतकप्पेअत्येगइयाणं देवाणं एक्कारसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वंजं सुवंजं वंजावत्तं वंजप्प
जं वंजकंतं वंजवस्सं वंजलेसं वंजज्जयं वंजसिंगं वंजसिद्धं वंजकूळं वंजुत्तरवत्तिसंगं विमाणं देवताएउववत्ता
तेसिणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइंठिई प० तेणं देवाएकारसराहं अरुमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उ

॥ भाषा ॥

र्वमिली एकलाख योजननो मेरुपर्वत । मूलेदससहस्र पिडुली । शिखरनेविषे एकसहस्र पिडुली जाणिवो । एहअर्थ श्रीमहावीरे सुधर्मास्वामी पांचमे गण
धर आगले वखाण्यो । एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार पत्थोपम आजखोकछो । पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतला
एक नारकीनो इग्यार सागरोपम आजखोकछो । असुरकुमार भवनपतीनो केतलाएक देवतानो इग्यार पत्थोपम आजखोकछो । सौधर्म इशानदेवलोक
नेविषे केतलाएकदेवनो इग्यार पत्थोपम आजखोकछो । लांतक छठेदेवलोकें केतलाएकदेवनो इग्यार सागरोपम आजखोकछो । छठेदेवलोकें जेहदेवता
ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकांत ५ ब्रह्मवर्ष ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मसिद्ध १० ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतंसक १२ एणे विम

माभिमिहामिहप्रतिमा तत्रमासिक्यादयः सप्तमासिक्यन्ताः सप्तमासेनमासेनोत्तरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिषेति तथासप्तसमरात्रिदिवान्याहो

॥ टीका ॥

स्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेषिणंदेवाणं एक्कारसरहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआजवसिद्धि
आजीवा एक्कारसहिंनवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति वुज्जिस्संति मुच्चस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुस्काणमंतंक
रिस्संति ॥ ११ ॥ वारसज्जिस्सकूपफिमानु पन्नत्ता तंजहा मासिआज्जिस्सकूपफिमा दोमासिआ
ज्जिस्सकूपफिमा तिमासिआज्जिस्सकूपफिमा चउमासियाज्जिस्सकूपफिमा पंचमासियाज्जिस्सकूपफिमा ठमासियाज्जि
स्सकूपफिमा सत्तमासियाज्जिस्सकूपफिमा पठमासत्तराइंदिआज्जिस्सकूपफिमा दांआसत्तराइंदिआज्जिस्सकूपफिमा त

॥ मूल ॥

ने देवतापणे उपनाहे । तेहदेवतानो इग्यार सागरोपम आउखोकछा । तेहदेवता इग्यार पखवाडे अईमासे स्वासोस्वास घणोले ऊखो स्वासले नीचोस्वास
मंके तेहदेवतानो इग्यार सहस्रवर्षे आहारनोअर्थ वंछाउपज्जे । संमारमाहे केतलाएक अव्वजीव जेह द्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सी
भस्से बूभस्से मूकास्से सर्वदुःखनो अंतकरिस्से । इतिइग्यारमं ठाणुंसम्मतं ॥ ११ ॥ हिंवे वारमो अधिकार लिखियेहे । भिन्नु उत्तमसंहनननो
धणी तथा जघन्य नवमा पूर्वन् बीजं वस्त तेहनो पारगामीहोय । उरुछठो दसपूर्व कोईएकगुरुनो आछा । मांगी गळमांहि पिणहोइ महासत्वनो धणीज
यति तेहनो बारप्रतिमा अभिमिह रूपकही तेकहेहे । पहिली भिन्नुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनी एकदाधीले एकमासदीठ भातपाणी
नी एकेकदाती वधारे सातमासलगे सातमेमासे सातसात भातपाणीनीदातीले लवणखंड माचदाती कहिये । बीजी प्रतिमा विमासिकी २ । बीजीप्रति

॥ भाषा ।

त्राणिद्यासुताः सतरात्रिंदिवास्तावतिस्रोभवन्तीति सप्तानामुपरि अष्टमीप्रथमासतरात्रिंदिवा एवंनवमीद्वितीया दशमीतृतीया आसांचतिसृणामप्यनुष्ठा-
नकृतोविशेषः तथाहिअष्टम्यांचतुर्थभक्तंतपः ग्रामाहिररहेउत्तराशनकरे ८ । नवमी बीजी
अहोरात्रप्रमाणाहोरात्रिकी एकादशीयाषष्ठभक्तेन भवतीतिविशेषः एकरात्रिकीरात्रिप्रमाणासाचाष्टमभक्तेन रात्रौप्रबलंबभुजस्य संहतपादावनतकायस्या
निमेवोदयास्येति तथासमेकोभूयः समानःसमाचाराणां साधुनांभोजनंसंभोगः सचोपध्यादिलक्षणविषयभेदात् द्वादशधा तत्रउपहोत्यादिरूपकद्वयंतत्रोपधि

॥ टीका ॥

चासतराइंदिश्यात्रिकूपफिमा अहोराइश्यात्रिकूपफिमा एगराइश्यात्रिकूपफिमा दुवालसविहेसंजोगे

॥ मूल ॥

मा त्रिणिमासिकी ३ । चउथी प्रतिमा चारमासिकी ४ । पांचमी पांचमासनी प्रतिमा ५ । छठो छमासनी प्रतिमा ६ । सातमी सातमासनी प्रतिमा ७
आठमी पहिली प्रतिमा सातदिवसरात्रिनी आठमी प्रतिमाए सातदिनलगे अष्टमीए चतुर्थभक्त तपकरे ग्रामबाहिररहे उत्तराशनकरे ८ । नवमी बीजी
पणिसात अहोरात्रनी भिक्षुप्रतिमा नवमी प्रतिमाए उकडासनकरे ९ । दशमी बीजी पणिसात अहोरात्रनी तिहां वीरासनकरे १० । इग्यारमी एकअ
होरात्रिनी भिक्षुप्रतिमाते षष्ठभक्ते उपवासे पूरिये ११ । बारमी भिक्षु प्रतिमा एकरात्री प्रमाणे अष्टमभक्त उपवासे समाप्तिहोइ रात्रिए प्रलंबभुजाकरि का
जसगकरे कांइककाया नमाडे नेचमेखनकरे १२ । बारें प्रकारे संभोग एकसमाचारी साधनी एकभोजनादिकनी विचारहारकह्यो । उपधिवरच पात्रादि
कनी संभोग लेवोदेवो संभोगी साधुसाथें तुभमोत्पादन दोषेविशुद्धकहीये अशुद्धलेई त्रिणिवेला प्रार्थितलेई तोहीते संभोगीकरी चउथी वेलाप्रार्थितलेतो

॥ भाषा ॥

वस्त्रपात्रादिसंभोगिकः संभोगिकेनसांक्षुभ्रमोत्पादनैषणादोषैर्विशुद्धं गृह्णन्शुद्धः अशुद्धं गृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चित्तो वारत्रयंयावत्संभोगाहेस्तुथेवेला
याः प्रायश्चित्तप्रतिपद्यमानोपिविसंभोगार्हइति । विसंभोगिकेनपार्श्वस्थादिनावा संयत्यवामार्हं मुपधिशुद्धमशुद्धंवा निःकारणं गृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चि
त्तोपि बेलात्रयस्यापरिसंभोग्य एवमुपधेः परिकर्मपरिभोगंवाकुर्वन् संभोग्योविसंभोग्ययेति उक्तंच एगंचदोषितिविच आउडुंतस्सहोइच्छित्तं । आलोचयतइत्य
र्थः आउडुंतवित्तो परिणतिहिं विसंभोगोत्ति सुयस्ससंभोगिकस्य विसंभोगिकस्य चोपसंपन्नस्यश्रुतस्य वाचनाप्रच्छेनादिकं विधिनाकुर्वन् शुद्धस्तस्यैवाऽविधिनीप
सम्पत्स्यऽनुसम्पत्स्यवा पार्श्वस्थादेर्वाचयवाचनादि कुर्वंस्तथैववेलात्रयोपरिसंभोग्यः तथा भक्तपाणेति । उपधिवारवदवसेया नवरमिहभोजनंदातुंच परिक
र्मपरिभोग्योः स्थानेवाच्यमिति तथा अंजलीपगहेइति इहेतिशब्दउपदर्शनार्थः चकारः समुच्चयार्थः तत्तुपलक्षणत्वा दंजलिप्रग्रहस्यवंदनादिकमपीहद्रष्टव्यं
तथाहिसंभोगिकानामन्यसंभोगिकानांवा संविग्नानांवन्दनकं प्रणाममंजलिप्रग्रहं नमःक्षमाश्रणेभ्यइतिभणनं आलोचनासूत्रार्थनिमित्तनिषद्याकरणंच कुर्वन्
शुद्धः पार्श्वस्थादेस्तानिकुर्वंस्तथैवसंभोग्यो विसंभोग्ययेति । तथा दायणायत्ति दानन्तत्रसंभोगिकायवस्त्रादिभिः शिष्यमाणोपग्रहासमर्थे संभोगिकेऽन्यसंभोगि
केऽन्यसंभोगिकं यथाशिष्यगणंयच्छन्शुद्धः निःकारणं विसंभोगिकस्य पार्श्वस्थादेर्वासंयत्यावा तंयच्छंस्तथैव संभोग्योविसंभोग्ययेति तथा निकाययत्ति नि

प० तं० उवहिसुश्रुतत्रपाणे अंजलिगगहेइ अदायणेअ निकाएअ अप्पुठाणेतिआवरे किअकम्मस्सय

ही तेहसंभोगीनकरीये १ । श्रुतकहिये सिद्धांत तेहनौ वाचना पृष्ठादिककरतो संभोगी तेहोज सिद्धांत अवधिएं भणतो क्रोधीनें तथा पासथाने भणानो
विसंभोगीकहिये २ भात पाणी शुद्धमान लेतो देतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ३ अंजलि प्रग्रहमाहोमाहीं नमस्कारनो करवो उपासत्यानेकरतो विसंभो

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

निकाचनच्छन्दनं निमंत्रणमित्यनर्थांतरं तत्रशय्योषध्याहारैः शिष्यगणप्रदानेन स्वाध्यायेन च सन्भोगिकं निमंत्रणशुद्धः शेषंतथैव तथा अभ्युत्थानेति यावरेति अभ्युत्थानमासनत्यागरूपमित्यपरं सन्भोगासन्भोगस्थानमित्यर्थः तत्राभ्युत्थानं पार्श्वस्थादेः कुर्वं स्तद्विसन्भोग्य उपलक्षणत्वाच्चाभ्युत्थानस्य किंकरतांच प्राघृणकग्लानाद्यवस्थायां किंविश्रामणादि करोमीत्येवं प्रश्लक्ष्णं । तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतस्य पुनस्तत्रैव संस्थानलक्षणं तथा अविभक्तिं वा पृथग्भावलक्षणं कुर्यन्न शुद्धो सन्भोग्यस्याप्येतान्येव यथागम्यं कुर्वन् शुद्धः सन्भोग्यश्चेति तथा किं कर्मस्मयकरणेति कृतिकर्मवन्दनकर्मस्य करणं विधानं तद्विधिना कुर्वन् शुद्धः इतरथा तथैवासन्भोग्यस्तत्र चायं विधिर्यः साधु र्वातेन स्तब्धदेहउत्थानादिकर्तुमशक्तः समूत्रमेवास्वल्लितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमावर्त्तशिरोनयनादियच्छक्नोति तत्करोत्येवं चाग्रठप्रवृत्तिर्वन्दनं विविरिति भावः वेयावच्चकरणे इयति वेयावत्तय माहारोपधिदानादिना प्रथमणादि मात्रकार्पण्यादिना अधिकरणोपशमनेन चोपष्टं भकरणं तस्मिंश्च विषये सन्भोगो भवतीति । तथा समोसरणंति जिनस्तवनरथानुयानपट्यात्रादयो बहवः साधवो मिलन्ति तत्समवसरणं इह च क्षेत्रमाश्रित्य साधूनां साधारणो वयसो भवति वसतिमाश्रित्य साधारणो ऽसाधारणो वेति अनेन चान्येप्यवगृहा उपलक्षिता ते चानेके तथा वर्षावगृह ऋतुवद्वावगृहो वृद्धवासावगृह इति एकैकस्यायं साधारणावगृहः प्रत्येकावगृहश्चेति द्विधा तत्र यत्क्षेत्रं वर्षोपकल्पाद्यर्थं युगपत्पट्यादिभिः साधुभिर्भित्तगच्छस्यैरनुज्ञाप्यते ससाधारणो यत्क्षेत्रमेकरूपेण वेद्यावेच्छकरणेऽप्यसमोसरणं संनिसिज्जाय कहाण्यपग्रंधणे दुवालसावत्ते कित्तिकम्मे प० तं० दुनुणयं

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नै० ४०॥ संभोगी साधुभक्षी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्थानेदेतो विसंभोगी ५ निकाचन निमंत्रण माहोमांही शिष्यउपाध्यायादिकै करतो शुद्ध ६ । व
उपावाण्णके ठीउभा थावो ७ । अपरकहतां अनिरतबोल तथा विविधेकरी कृतिकर्म वादणानो करवो बडानेबांदणानो देवो ८ । वेयावचननो करवो

कसाधवोनुज्ञाप्याश्रिताः सप्रत्येकावगृह्णन्ति । एवंचैतेष्ववगृहेषु आकुञ्चादिना अभाष्यमवित्तं शिष्य मवित्तं वस्त्रादिगृह्णन्तीनाभोगेन च गृहीतं तदनर्पयतः समनोज्ञा प्रमनोज्ञाश्च प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनां चावगृह्णन् एव नास्ति तथापि यदितत् तेन कुलकमन्यवैवचसविगानिर्वहन्ति ततस्तत्क्षेत्रं परिहरं त्येवायं पार्श्वस्थादीनां चावगृह्णन्ते च विस्तीर्णं संविग्याद्याग्यन्नन निर्वहन्ति ततस्तत्रापि प्रविशन्ति सवित्तादिवगृह्णन्ति प्रायश्चित्तिनोपिन भवन्तीति आह च समणः समणन्ते अद्रिन् अण भवगिगृह्माणेवासम्भोगवीसुकरणं पृथक्करणमित्यर्थः इयं ग्य अलंभेण क्तिन्ति इतरान् पार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सन्निसिक्कायत्ति निषद्या आसनविशेषः साचसम्भोगकारणं भवति तथाहि संनिषद्यागत आचार्यो निषदागतं स सम्भोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्तनां करोति शुद्धः अथामनोज्ञा पार्श्वस्थादिसाध्वीगृहस्थैः सह तदा प्रायश्चित्तीभवति तथा कहाण्यपबंधं क्ति कथावादादिकनिषद्या विनानुयोगं कुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपविष्टः सूत्रार्थं प्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदा तथैवेति । तथा कहाण्यपबंधं क्ति कथावादादिकापंचधा तस्याः प्रबंधनं प्रबंधेन करणं कथाप्रबंधनं तत्र सम्भोगाः सम्भोगो भवतः तत्र समभ्युपगम्य पंचावयवेन चयावयवेन वाक्तेन यत्तत्कर्मार्थं न संकलजाति विरहितो भूतार्थाऽन्विषणापरोवादः स एव संकलजाति निर्गतस्थानपरोजल्पः यत्रैकस्य पक्षपरिग्रहोस्ति नापरस्य सादृष्यमात्रप्रवृत्तावितण्डा तथा प्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोत्सर्गकथास्तिकनयकथावा तथा निश्चयकथापंचमौ । साचापवादकथा पथर्थास्तिकनयकथाचेति तत्राद्यास्तिस्रः कथाश्चमणीवर्जैः सह करोति अमणीभिस्तु सह कुर्वन् प्रायश्चित्ती चतुर्थवेलायां वा लोचनपिविसम्भोगाहंति रूपकद्वयस्य संक्षेपार्थो विस्तारार्थस्तु निशीथपंचमो देशिकभाष्यादवसेय इति तथा दुष्कालसावत्ते किं कर्मेति द्वादशावर्त्तं कृतिकर्मवन्दनं प्रश्नमंदादथावर्त्ततामेवास्वानुवन्दनशेषांश्च तत्तर्मानभिधित्तिरूपकमाह दुष्काले एत्वादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधानं प्रथमममित्यर्थः हेऽवनते यस्मिंस्तदवनतं तत्रैकं य

दाप्रथममेव इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाएनिसीहियाएत्ति अभिधायावग्रहानुज्ञापनायावनति द्वितीयं । पुनर्यदावग्रहानुज्ञापनायैवावनमतीति यथाजातं अमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य योनिःक्रमणलक्षणं च तत्ररजोहरणमुखवस्त्रिका चोलपट्टमात्रया अमणोजातो रचितकरपुटस्तुयोन्यानिर्गतएवंभू तएवंवन्दते तदव्यतिरेकाद्वा यथाजातं भण्यते कृतिकर्मवन्दनकं । वारसावयंति द्वादशावर्त्ताः सूत्राभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धायस्मिं स्तद्द्वादशावर्त्तते । तथाचउत्तिरन्ति चत्वारिगिरांसियस्मिस्तच्चतुःगिरः प्रथमप्रविष्टस्यक्षामणाकाले श्रेष्ठ्याचार्यशिरोदयं पुनरपि निःक्रम्य प्रविष्टस्य द्वयमेवेति भावना । तथातिहिं गुत्तंति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः पाठांतरेपि तिसृभिः अद्वागुप्तिभिरेवेति तथादुपवेसन्ति द्वौ प्रवेशौ यस्मिस्तद्द्विप्रवेशं तत्रप्रथमो वग्रहमनुज्ञाय प्रविशतो द्वितीयः पुनर्निर्गत्य प्रविशतइति एगनिक्रमणंति एकनिःक्रमणमवग्रहादावसिद्ध्या निर्गच्छतः द्वितीयवेलायां ह्यवग्रहान् निर्गच्छति पादपतितएव

जहाजायं कितिकम्मं वारसावयं चउत्तिरं तिगुत्ते दुपवेसं एगनिक्रमणं विजयाणं रायहाणी दुवालसजोय

आहार पाणी संभोगीने आणीदेतो मात्रादिक परठवतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ८ । समोसरण तेवणा यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण संभोग साधुनो अवग्रहलेई एकठोरहिवो १० । संनिषद्यागत संभोगीसाथे एजे बैसतो पेस्ती शास्त्रचित्तन करतो पासत्यासाथे करतो विसंभोगी ११ संभोगीसाथे क थाप्रबंध करतोशुद्ध १२ । पासत्यासाथे करतो विसंभोगी ॥ वारे आयर्तमाहे तेकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवंते श्रीवर्द्धमानसामी ऐं तेकहेछे वेअवमत बेवेला मस्तकनमाडवा गुरूनी थापनाकीजे तेहथकी अजठहाथ बेगला रहीपडिकमीए अजठहाथमाहीं अवग्रहकहिये उभांथका इच्छामिखमासमणो कहिये विहु वांदणे विहुवेला मस्तकनमाडिये पछेअवग्रहमांहि आंविये यथाजातमुद्रा जन्मअवसरी बालकनीपरें वलोटीभरीहायजोडोरही कृतिकर्मवांदणा १२ आ ।

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

सूत्रं समापयतीति तथा विजय राजधानी असंख्यातमेजंवूदीपे आद्यजंवूदीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराविषय विजयाभिधानस्य पक्षोपमस्थितिकस्य देवस्य सं
बन्धिनीति तथारामो नवमो बलदेवः देवत्तिंगयत्ति देवत्वं पंचमदेवलोके देवत्वं गतः तथा सर्वजघन्यारात्रि रुत्तरायणपर्यन्ता होरात्रयस्य रात्रिः सा च द्वादशमौहर्ति

॥ टीका ॥

णसयसहस्राङ् आयामविरकं ज्ञेयं प० रामेण वलदेवे दुवालसवामसयाङ् सहाउयं पालित्तादेवत्तिंगं ए मंद
रस्सणं पञ्चयस्सचूलिष्णामूले दुवालसजोयणाङ् विरकं ज्ञेयं प० जंवूदीवस्सणं दीवस्स वेइष्णामूले दुवालस
जोयणाङ् विरकं ज्ञेयं प० सव्वजहन्निष्णाराङ् दुवालसमुज्जत्तिष्ण प० एवमिदं विनायस्सो सव्वठसिद्धस्सणं

॥ मूल ॥

वर्त छहवेला गुरुनेपगे वांदणाकीजे । अहोकाव एपाठकही विहुवेलायई १२ आदत्तयया चोसरां ४ वेला गुरुनेपगे मस्तकनमाडिये । विणीगुप्पी मनवचन
कायानी गुप्तिकीजे । उपवेसवीवेला वांदणानेअर्थे अपयहनां तो आनीने एननिछमण अदयददाधिरि पहिलेवांदणे एकवेला नौकली वाजीवेला गरुपगे बेठा
ज वांदणो समापीएपाठकही एहसमवयांग वृत्तिनोभाव । जंवूदीपनी पूर्वनी पालीनोधणी विजयदेवता तेहनी राजधानी असंख्यातमे जंवूदीपेके बारयोज
नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांबपणेपिहुलपणेकही रामवलदेव कृष्णवासुदेवनी वडोभाई बारमेवर्ष सर्वआउखंपालीने देवपणुंपाम्या पांचमेदेवलोके पहुंता
मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलोके । तेहनेसेविचि ४०० योजनजंची चूलिकाके । तेहनोमूल १२ योजनबीची आठउपरि गिखरेथारयोजन पिहुलपणां
कह्यो । जंवूदीपनी चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन जंचीके । जेहवेदिकानोमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेकही भगवंते सर्वजव
न्यारात्रि उत्तरायणने छेइडे कर्कसंक्रातिनी आसाढीपूनिमनी घणीनाहीरात्रि बारहमूर्तहुई एतले २४ घडीनी रात्रिकही । एमदिवसपणिजाणिवो ।

॥ भाषा ॥

काचतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासातिरेका सामान्या एवंदिवसोविति । सर्वजघन्योद्वादश मौहूर्तिकएवेत्यर्थः सचदक्षिणायनपर्यंतदिवसति ।

॥ टीका ॥

महाविमाणस्स उवरिल्लानुचूलिश्शानु दुवालसजोयणाइं उहंउप्पइश्श इसिपप्पारनामपुढवी प० इसिपप्पार
राएणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इस्सित्तिवा इसिपप्पारत्तिवा तणूइवा तणूश्शरित्तिवा सिद्धित्तिवा
सिद्धालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा वंजेत्तिवा वंजवहिंसएत्तिवा लोकपप्पिपूरणात्तिवा लोगगचूलिश्शाइ

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

क्षिणायननो केहत्थोदिवस मकरसंक्राति पोसीपूनिमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअर्थ जिहांगई थकेसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी
वार्थसिद्ध महाविमान कह्यो तेहनी उपरिली चूलिका शिखरायकी १२ योजनके ऊंचो उत्पत्तिने जईने ईषप्पाग्भार नामपृथिवी सिद्धिशिलाकही रत्नप्रभा
दिक बीजी पृथिवीनी अपेचाये ईषत् थोडोके प्राग्भार विस्तार तथा पिण्ड जेहनी तेहईषत्प्रग्भार सिद्धिशिलाके तेहना १२ नामधेय कहता नामकह्या ते
कहेके । ईषत् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषप्पाग्भार बीजी पृथिवीनी अपेचाएं थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीके हडेमाखि
नाआंख सरीखी पातली ३ तनुतरीवणीज पातली ४ तिहां पहुंचेथके जीवनाकार्य सीभे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धहुआके तेहनूं आलयकहतां घरते सिद्धाल
यु. ६ तिहां जीवपहुंताथकी कर्मथकी मंकाणातेमुक्ति ७ मुक्तजिसिद्ध तेहनूं आलयघरते मुक्तालय, ८ ब्रह्मसकललोक तेहमय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक ते
हनो मुगुट १० लोक १४ राजलोक तेजनिक्करी प्रतिपूर्णथया तेलोक प्रतिपूर्ण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथे चूलिकाचीटी रूपशिखररूप तेलो
कागचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो वारपत्योपम आजखाकह्यो । पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारक

वा इमीसेणं रयणप्यन्नाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइअणं बारसपलिनुवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्ये
 गइयाणं नेरइअणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइअणं बारसपलिनुवमाइं
 ठिई प० सीहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइअणं देवाणं बारसपलिनुवमाइं ठिई प० लंतकप्पेसु अत्येगइ
 अणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिंदज्जयं कंबु कंबुगीवं पुंस्कं सपुंस्कं महापुंस्कं
 पुंस्कं सपुंस्कं महापुंस्कं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवत्तिंसगं विमाणं देवत्ताए उववत्ता तेसिणं देवाणं उक्को
 सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बारसरहं अण्णमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा
 नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहिं अहारठे समुप्पज्जइ संतंगइअ नवसिद्धिअ जीवा

॥ मूल ॥

नो बारसागरोपम आजखोकह्यो । असुरकुमार भवमपती देवतानो बारपत्थोपम आजखोकह्यो । सौधर्म ईशानकल्पं देवलोकं केतलाएक देवतानो बार
 पत्थोपम आजखोकह्यो । लांतक छहादेवलोकं केतलाएक देवतानो बारसागरोपम आजखोकह्यो । लांतककल्पे जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २ । कंबु ३ ।
 कंबुगीव ४ । पुंस्क ५ । सपुंस्क ६ । महापुंस्क ७ । पुंस्क ८ । सपुंस्क ९ । महापुंस्क १० । नरेन्द्र ११ । नरेन्द्रकांत १२ । नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३ । एणे १३ विमाने दे
 वतापणे जपनाहे । तेहदेवतानो उक्कथो बारसागरोपम आजखोकह्यो । तेहदेवतानो बारअहंमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणाले जंचोले नीचोउस्वासले

॥ भाषा ॥

महेन्द्रमहेन्द्रध्वज कंबुकंबुग्रीवादीनि त्रयोदशविमानानीति ॥ अथ त्रयोदशस्थानके किंचित्स्थिते इहस्थिति सूत्रेभ्योऽर्वागष्टसूत्राणि । तत्रकरणक्रियाकर्मनिबं
धनचेष्टातस्याः स्थानानिभेदाः पर्यायाः क्रियास्थानानि तत्रअर्थाय शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डस्वस्थावरहिंसा अर्थदण्डः क्रियास्थानं इति प्रथमः १ ।
तद्विलक्षणोऽनर्थदण्डः २ । तथा हिंसा मायित्य हिंसितवान् हिनस्ति हिंसिष्यति वा अयं वैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेन दण्डो विनाशनं हिंसादण्डः ३ । तथा
ऽकस्मादनभिसंधिना न्यवधार्यप्रवृत्त्यादण्डो न्यस्यविनाशोऽकस्मादण्डः ४ । तथा दृष्टेर्विपर्यासितावा दृष्टिर्विपर्यासिका दृष्टिर्विपर्यासितावा मतिभ्रम इत्यर्थस्त

जेवारसहिं जयग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुरकाणमंतं करिस्सं
ति ॥ १२ ॥ तेरसकरीयाठाणा प० तं० ॥ आठादंठे अणठादंठे हिंसादंठे अकम्हादंठे दि

तेहनो बारिवर्षसहस्रे आहारनो अर्थजपजं । केतलाएक संसारमाहे भयजीव बारभवब्रह्मणे १२ भवनेंआंतरे सीभस्ये बूभस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये
मोक्षजास्ये ॥ इति बारमूठाणं सम्पत्तं २० ॥ १२ ॥ हिंसे तेरक्रियानो अधिकार लखियेके । तेरक्रियाठाणां कच्चाकरिवो तेक्रिया कर्मवत्थ
नचेष्टा तेहना स्थानकभेद तेक्रियास्थानकच्चा तेकहेके शरीरस्वजन धर्मादिकनेअर्थे त्रस थावरने दंडेहणिये तेअर्थदंड १ अनर्थक जीवहणिये तेअनर्थदंड २
एह मुक्कनेहणतोडुतोहणस्ये अथवा हणेके तेमाटे हंज एने पहिले हणं ए हिंसादण्ड ३ अकस्मात् अनेराने वधवा प्रवर्त्योडुतो अने अनेरोहणाण्यो तेअ
कस्मात्दंड ४ । दृष्टिर्विपर्यास तेमतिभ्रम तेणेप्राणिवध तेदृष्टिर्विपर्यासदंड अभिज्ञनेबुद्धि मित्रनोहणिवो ५ आत्मपरोभयार्थ जूठोबोलवो तेजप्रत्ययकारणके
जेहदंडनो तेमृदावाद प्रत्यया ६ । एमअदत्तादत्तप्रत्यया ७ । अध्यात्ममन तेहनेंविषेहो तेआध्यात्मिक मनमाहिं दुष्टभावमोचितवो ८ । मानप्रत्ययअ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

यादृङ्गः प्राणिबधोदृष्टिविपर्यासितावा एकोदृङ्गोदृष्टिविपर्यासितादृङ्गोवा मित्रादेरमित्रादिबुद्ध्या हृमनमितिभावः ५ । तच्चमृषावादे आत्मपरोभयार्थम
 लोकावचनंतदेवप्रत्ययः कारणस्यदंडस्य ममृषावादप्रत्ययः ६ । एवमदत्तादानप्रत्ययोपि ७ । तथाअध्यात्मनिमनसिभव आध्यात्मिका वाह्यनिनिमित्तानापेक्ष
 शोकाभिभवइतिभावः ८ । तथामानप्रत्ययो जात्यादिमदहेतुकः ९ । तथामित्रदेषप्रत्ययः मातृपित्रादीनामल्पेप्यपराधे महादंडनिर्वर्त्तनमितिभावः १० ।

॥ टीका ॥

ठिविपरिष्ठासिष्ठादंठे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्जत्थिए मानवत्तिए मिहदोसवत्तिए मा
 यावत्तिए लोन्नवत्तिए इरिष्ठावहिए नामंतरेसमे सोहम्मीत्ताणेषु कप्पेसु तेरसविमाणाएपत्थिणा प० सोहम्म

॥ मूल ॥

विमानेकरौ आगच्छाने दंडदेवो ९ । मित्रदेषप्रत्यय मातापिताने योडोअपराधे घणोदंडदेवो १० । नायाप्रत्यय मायाकपट तेणेनिवर्ताव्योदंड ते
 मायाप्रत्यय ११ । एमन्तोभप्रत्यय १२ । ऐश्वर्यापथिकीनामे तेरमांक्रियास्थानक काययोग प्रत्ययसंयोगी केवलीने पहिलीसमें क्रियालागे बीजेसमेदेदे तीजेस
 मेनिर्जरे १३ । सौधर्मपहिलो देवलोक ईशानबीजोदेवलोक एहदोदेवलोक लगडाकारेके तेमाटे विहुंदेवलोक तेरविमान प्रस्तुटके उपराउपरि पावडीरूप
 कछो । पहिलो सौधर्मलोक मेरुथकी दक्षिणदिसे अर्धचंद्राकारके । पूर्वपदिमेलांवी दक्षिणउत्तरेपिहुलो । तेहने तेरमेप्रस्तरे शक्रेद्रनो आवासभूतविमान
 अथवा सौधर्मदेवलोकनो अवतंसकमुकुटरूप तेसौधर्मावतंसक विमान साढीबारलाख योजनलांबपणे पिहुलपणैकछो । एममेरुथकी उत्तरदिसे अर्धचंद्राका
 रईशानदेवलोक तेहने तेरमेप्रस्तुटे ईशानावतंसक विमान साढीबारलाखयोजननोकछो । जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनीना जीवनी साढीबारजातिनेविषे
 कुलकोटिनौ योनिप्रमुखउत्पत्तिस्थानक शतसहस्रकछा एतलेसाढीबार कुलकोट जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचनीके । योनितेउत्पत्तिस्थानक जिमगोवर कुलते

॥ भाषा ॥

मायाप्रत्ययो मायानिबन्धनः ११ । एवंलोभप्रत्ययोपि १२ । ऐर्यापधिकः केवलयोगप्रत्ययः कर्मबन्ध उपशान्त मोहादीनां सातवेदनीयबन्धः १३ । तथाविमाणप
त्यहति विमानप्रस्तटाउत्तराधर्यव्यवस्थिता तथासौहृन्मवडिंसएत्ति सौधर्मस्यदेवलोकस्याईचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेत्रयोद
शप्रस्तटे शक्रावासभूतंविमानं सौधर्मदेवलोकस्याऽवतंसकः शिखरकः सइवप्रधानत्वादित्येवं यथार्थनामकमिति णंकारोवाक्यालंकारे अर्धत्रयोदशयेषुतान्य
र्धत्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्राणिचेतिविग्रहः सार्धानिद्वादशेत्यर्थः तथाअर्धत्रयोदशानिजाती जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यगतीकुलकोटिनां योनि
प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्राणि तानितथोच्यतेइति तथापाणाउस्सत्ति यत्रप्राणिनामायुर्विकथनं सभेदमभिधीयते तत्पाणायुर्द्वादशं पूर्वतस्यत्र
योदशवस्तूनि अध्ययनवद्भिभागविशेषाः तत्रागर्भगर्भाग्रये व्युत्क्रांतित्पत्तिर्येषांते गर्भव्युत्क्रांतिकाः तेचते पंचेन्द्रियतिर्यगयोनिक्वाश्वेतिविग्रहः प्रयोजनं मनोवा

वडिंसगेणं विमाणे अरुतेरसजोयणं सयसहस्साइं श्यायामत्रिस्कज्जेणं प० जलयरपंचिदिश्रु तिरिस्कजोणि
श्याणं अरुतेरसजाइ कुलकोणीजोणीपमुह सयसहस्सा प० पाणाउस्सणं पुहस्सतेरसवत्पू प० गप्पवक्कंति
अपंचेदिश्रुतिरिस्क जोणिश्याणं तेरसविहेपनुगे प० तं० सच्चमणपनुगे मोसमणपनुगे सच्चामोसमणपनुगे

हीजयोनिनेविषे अनेकआकारे जीवजिमगोवरमांहि अनेकप्रकार जेजीवउपजेहे तेकुलकहीये । जिहांप्राणीना आजखाना भेदकहिये तेप्राणीनोबारमो
पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेन्द्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेप्रयोग मनवचनकायानो व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक
हेहे । सत्यमनोयोग तेसांचेमनेचिंतवो १ । जूठमनो व्यापारते मृषामनोयोग २ । सत्यासत्यमनोयोग ते मिश्रभावना चिंतवो ३ । असत्यामृषामनोयोग ते

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

कायानां व्यापाराणां प्रयोगः सत्रयोदशविधः पंचदशानां प्रयोगाणां मध्ये आहारकाचारकमिश्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिरश्चामभावात् तौ हि संयमिनाम
वस्तुः संयमवतश्च संयतमनुष्ठानमेव न तिरश्चामिति तत्र सत्यासत्योभयानुभयस्वभावाच्चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाश्चेति, अष्टौ पुनरौदारिकादयः पञ्च
कायप्रयोगाः एवं त्रयोदशेति । तथासूरमण्डलस्यादित्यविमानवृत्तस्य योजनं सूरमण्डलयोजनं तत् । नमित्यन्तर्काचित्रयोदशभिरिकषष्ठिभागै र्येषां भागानामेकष
ष्टायोजनं भवति तैर्भागैर्योजनस्य संबंधिभिर्नृनंप्रज्ञप्तमष्टचत्वारिंशद्योजनभागोद्वयार्थः वज्राभिलापेन द्वादश वदराभिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

असञ्चामोसमणपनुगे सञ्चवडपनुगे मोसवडपनुगे सञ्चामोसवडपनुगे असञ्चामोसवडपनुगे उरालिअसरीरका
यपनुगे उरालिअमीससरीरकायपनुगे वेउह्विअसरीरकायपनुगे वेउह्विअमीससरीरकायपनुगे कम्मसरीरकाय
पनुगे सूरमण्डलं जोयणतेरसेहिं एगसठिजागेहिं जोयणस्सज्जणंइमीसेपं रयणप्पनाए पुढवीए अत्येगइअणं

मनोव्यापार सांचो नही जूठोपिणनही ४ वचनयोग सांचोबोलवो तेमत्यवचनयोग १ एममृषावचनयोग तेहनंकारण २ । सत्यासत्य तेमिअभाषाएं बोलवो
३ । असत्यामृषा तेअवहारवचनयोग जाइआवो लेदे एहवीभाषा ४ । कायाना सातयोगके तेमांहि आहारक १ । आहारकमिश्र २ । एह तिर्यचनेन होय
तेहोअ तेहपूरबधरनेहोई तेमाटे पांचकाययोगलीजे औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिश्र शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिश्रश
रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाएं । कामेणशरीर काययोग ५ । एममनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ यथा सूर्यनूंमांडलू योजनने एकसठ्ठीएतेरभा
गेजंणोकेह्वी । एतले एकयोजनना ६१ भासकीअ तेहवा १३ भाग सूर्यनूंमांडलू पिहलूंछे । एतले एकसठ्ठीवा ४८ भागसूर्यनूंमांडलू पिहलूंछे । एणीएरत्नप्रभा पहिली

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नेरइच्छाणं तेरसपलिनुवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइच्छाणं तेरससागरोवमाइं ठिई
 प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइच्छाणं तेरसपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीमाणेसु कप्पेसु अत्थेगइच्छा
 णं देवाणं तेरसपलिनुवमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेरससागरोवमाइं ठिई प० जेदे
 वा वज्जं सुवज्जं यज्जावत्तं वज्जप्पन्नं वज्जकंतं वज्जवस्सं वज्जलेसं वज्जरूपं वज्जसिंगं वज्जसिद्धं वज्जुकूटं
 वज्जुत्तरवह्मिसंगं वइरं सुवइरं वइरावत्तं वइरप्पन्नं वइरकंतं वइरवस्सं वइरलेसं वइररूपं वइरसिंगं वइरसि
 द्धं वइरकूटं वइरुत्तरवह्मिसंगं लोगं सुलोगं लोगावत्तं लोगप्पन्नं लोगकंतं लोगवस्सं लोगलेसं लोगरूपं लो

नरकपृथिकीनेविपे केतलाएक नारकीनी तेरपल्लोपम आजखोकह्यो । पांचमी पृथिवीए केतलाएक नारकीनी तेरसागरोपम आजखोकह्यो । असुरकुमार
 देवनाकेतलाएकनी तेरपल्लोपम आजखोकह्यो । सौधर्मईमान देवलोकि केतलाएक देवतानी तेरपल्लोपम आजखोकह्यो । सातिककल्लेकेतलाएकदेवनी तेर
 सागरोपम आजखोकह्यो । छठेदेवलोकि जेहदेवता वज्ज १ । सुवज्ज २ । वज्जावर्त ३ । वज्जप्रभ ४ । वज्जकांत ५ । वज्जवर्ण ६ । वज्जलेश ७ । वज्जरूप ८ । वज्ज
 शृंग ९ । वज्जसिद्ध १० । वज्जकूट ११ । वज्जोत्तरावतंसक १२ । एमवज्जनी ॥ वइर १ । सुवइर २ । वइरावर्त ३ । वइरप्रभ ४ । वइरकांत ५ । वइरवर्ण ६ ।
 वइरलेश ७ । वइररूप ८ । वइरशृंग ९ । वइरसिद्ध १० । वइरकूट ११ । एमवज्जनी परिवैरसावे १२ विमानकरी छेहिलो वैरोत्तरावतंसक १३ । वली ॥
 लोक १ । सुलोक २ । लोकावर्त ३ । लोकप्रभ ४ । लोककांत ५ । लोकवर्ण ६ । लोकलेश ७ । लोकरूप ८ । लोकशृंग ९ । लोकसिद्ध १० । लोककूट ११ ।

नानीति । अथचतुर्दशस्थानकंसुबोधं नवरमिहाष्टौसूत्राणि पृथक् स्थितिसूत्रादिति तत्रचतुर्दशभूतग्रामाः समूहाः भूतग्रामास्तत्र सूक्ष्मासूक्ष्मनामकर्मादयव
र्त्तित्वात् पृथिव्यादयएकेन्द्रियाः किंभूताअपर्याप्तकासत्कर्मादयाः परिपूर्णस्वकीयपर्याप्तयइत्येकाग्रामः एवमेतेएवपर्याप्तकास्तथैव परिपूर्णस्वकीयपर्याप्त इति
द्वितीयः एवंवादरावादरनामोदयात् पृथिव्यादयएव तेपिपर्याप्ततरभेदाद्धिवा एवर्द्वाद्रियादयोपि नवरंपंचेन्द्रियाः संज्ञिनोमनःपर्याप्त्युपेताइतरैत्वसंज्ञिनइति

गसिंगं लोगसिंहं लोगकूळं लोगुत्तरवह्निंसगं विमाणं देवताए उचयन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेरससा
गरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवातेरसहिं अणमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊरुससंतिवा नीरुससंतिवा
तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आरुसमुप्पज्जइ संतेगइया जवसिद्धिआजीवा जेतेरसहिं जवग्गह
णेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्काणमंतंकरिस्संति ॥ १३ ॥

चउद्दसन्नूअग्गामा प० तं० ॥ सुज्जमाअपजत्तया सुज्जमापज्जत्तया वादराअपजत्तया वादरापजत्तया

लोकोत्तरावतंसक १२ । एम छत्तीसविमाने देवतापणे उपनाके तेदेवतानोउत्कृष्टो तेरसागरोपम आजखोकह्यो । तेदेवता तेरअर्द्धमासे श्वासोश्वास घणोले
जंचोले नीचोमंके । तेदेवतानो तेरवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव तेरेभयग्रहणे सौम्ये ब्रूम्ये मूकास्ये सर्वदुःखना अंतकरिस्से इति
तेरमूठाणूं सम्यत्तं ॥ १३ ॥ हिंवे चौदमो अधिकार लिखेके । चौदभूतानांग्रामभूतकहतां जीवनो ग्रामसमूह तेभूतग्रामकह्या तेकह्येके । सूक्ष्मए
केन्द्रिय अपर्याप्त सूक्ष्मनामकर्मादयथकी सूक्ष्मपणूंपास्या एहवापृथिव्यादिक एकेन्द्रिय तेकहवाके अपर्याप्तके आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ श्वासोश्वास ४

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तथाउप्यायपुष्पेत्यादिगाथात्रयं तत्रउप्यायमग्नेषियंचति यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणाकृतातदुत्पादपूर्वं यचतेषामेवाग्रम्परिमाणमाश्रित्यतदग्रेणीयं तद्वयंचवीरियंपुष्पंति । यज्जीवादीनांवीर्यं प्रोद्यतेप्ररूप्यतेतद्वीर्यप्रवादं अथिनस्थिपवायंति यद्यथा लोकेअस्तिनास्तिचतद्यत्रप्रोद्यते तदस्तिनास्तिप्रवादं तत्ते

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

वेदियाश्चपञ्जत्तया वेदियापञ्जत्तया तेंदियाश्चपञ्जत्तया तेंदियापञ्जत्तया चउरिंदियाश्चपञ्जत्तया च उरिंदियापञ्जत्तया पंचिदिशाश्चसन्निश्चपञ्जत्तया पंचिदिशाश्चसन्निपञ्जत्तया पंचिदिशासन्निश्चपञ्जत्तया पंचिदिशासन्निपञ्जत्तया चऊदसपुष्पा प० तं० उप्यायपुष्पमग्नेषीयंच तद्वयंचवीरियंपुष्पं अथीनस्थिप

लक्षणपरिचारे पर्याप्तनथीकीधा तेमाटे अपर्याप्त एहवा सूक्ष्मएकेंद्रियनोभिद १ । सूक्ष्मएकेंद्रियपर्याप्ता जेणेआहारादिक चारपर्याप्त पूरीकीधी तेपर्याप्ता २ । वादरएकेंद्रिय अपर्याप्ता ३ । वादरएकेंद्रियपर्याप्ता ४ । वेद्वियअपर्याप्ता ५ । वेद्वियपर्याप्ता ६ । तेंद्रियअपर्याप्ता ७ । तेंद्रियपर्याप्ता ८ । चतुरिंद्विअपर्याप्ता ९ । चतुरिंद्वियपर्याप्ता १० । पंचेंद्रियअसंज्ञी अपर्याप्ता ११ । पंचेंद्रियअसंज्ञीपर्याप्ता १२ । पंचेंद्रियसंज्ञीअपर्याप्ता १३ । पंचेंद्रियसंज्ञीपर्याप्ता १४ । एकेंद्रियमाहि ४ पर्याप्ताहोय आहार १ शरीर १ इन्द्रिय ३ स्वासोश्वास ४ एचारपर्याप्ति जेणेपूरीकरी तेपर्याप्ता त्रिणिकरी मरेते अपर्याप्ति । वेद्विय १ वेद्विय २ चउरींद्विय असंज्ञीसमूहिस पंचिंद्वियमाहि पांचपर्याप्ति चारमूलनी पांचमीभाषाअधिकी संज्ञीगर्भजमांहि मनवध्यो जेमांहि तैतलीकही तेमांहीएक उच्छीहोय तेअपर्याप्तिकहिये । चौदपूर्वकह्या तेआगलिविस्तरपणे वखाणीस्येकहीस्ये अनुक्रमे । उत्पातपूर्व जेमांही द्रव्यपर्याप्तानी उत्पादके १ । बीजोअग्रणीय जेमांहि तेहिजपूर्वनो अग्रपरिमाणपाम्यो २ । बीजोप्रवाद जिहांजीवादिकनो वीर्यप्ररूप्यो ३ । अस्तिनास्तिप्रवाद जेहमांहि अस्तिनास्ति भाव

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नाण्यप्यवयववृत्ति यत्रज्ञानमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोद्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सञ्चप्यवायपुञ्जंति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनंवा सभेदेनयत्र प्रो
द्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोत्रायप्यवायपुञ्जंति यत्रात्मजीवनेकनयैः प्रोद्यते तदात्मप्रवादमिति कर्मप्यवायपुञ्जंति यत्रज्ञानावरणदिकर्म प्रोद्यते तत्कर्मप्र
वादमिति पञ्चक्वाणंभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपवर्ण्यते तत्प्रत्याख्यानमिति । विद्याअणुप्यवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशयवर्ण्यते तद्विद्यानुप्रवादं
अयंभूपाणानु बारसंपुञ्जन्ति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः सफलावर्ण्यन्ते तदवध्यमेकादशं यत्रप्राणाजीवाआयुश्चानेकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तो
क्रियविसालंति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयन्ते तत्क्रियाविशालापूर्वं तह बिंदुसारवन्ति लोकशब्देनलुप्तोद्गव्यः तत

त्रायं ततोनाणप्यवायंच सञ्चप्यवायपुञ्जं ततोत्रायप्यवायंपुञ्जंच कर्मप्यवायपुञ्जं पञ्चक्वाणं जवेनवमं वि
ज्ञाणुप्यवायं अयंभूपाणानु बारसंपुञ्जं तत्तोक्रियविशालंपुञ्जं तहबिंदुसारंच अणुणीश्रुसणंपुञ्जस्स चऊ

प्र० यो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमां हि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदेकश्चो ५ । सत्यप्रवादपूर्वं सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां चिहुंभेदेकश्चो ६ । तिवारपछे आ
त्मप्रवादपूर्वं जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकश्चो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककश्चो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवमं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहांव
र्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्याना अतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्य इग्यारमू जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं
पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेअधावर्णव्या १२ । तिवार पछेक्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकश्चो १३ बिंदुसार जेह

चलोकस्य बिन्दुस्त्रिचरस्य सारं सर्वोत्तमं यत्तल्लोकविंदुसारमिति तथाचौदसवत्युणिति । द्वितीयपूर्वस्यवस्तूनि विभागविशेषास्तानि च चतुर्दशसूत्रवस्तूनि त
थासाहस्यमिति । सहस्राण्येवसाहस्रां तथाकम्पविमोहीत्यादि कर्मविशोधिमागणां प्रतीत्य ज्ञानवरणादिकर्मविशुद्धिगवेषणामाश्रित्य चतुर्दशजीवस्थानानि
जीवभेदाः प्रपञ्चतास्तद्यथा मिथ्याविपरीतादृष्टिर्यस्यासौ मिथ्यादृष्टिः उदितमिथ्यात्वमोहनीयविशेषः तथासासायणसम्पदद्विष्टिति । सहस्रतत्त्वश्रद्धानरसास्वाद
नेन वर्तते इति सास्वादनः घण्टालालान्यायेन प्रायः परित्यक्तसम्यक्त स्तदुत्तरकालं षडवलिकस्तथाचोक्तं । उवसमसम्पत्ताउय यउमित्यत्रपाउपाणस्म । सासायण
सम्पत्तं तदंतरालमिच्छबलियंति । सास्वादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चेति विग्रहः सम्पामिच्छद्विष्टिति सम्यक्तमिथ्याचदृष्टिरस्येति सम्यग्मिथ्यादृष्टिरुदितदर्शनमोहनी

॥ टीका ॥

दसवत्यु प० समणस्सणं जगवउमहावीरस्स चउदसमणसाहस्सिउ उक्कोसियासमणसंपया होत्या कम्मवि
सोहिमग्गणं पढुच्चचउदसजीवठाणा प० तं० नित्यदिठ्ठी सासायणसम्पद्विठ्ठी सम्पामित्यदिठ्ठी अविरेयस

॥ मूल ॥

लोकने बिन्दुनोपरि अचरनोसार सर्वोत्तम ते बिंदुसार चौदमोपूर्वकह्यो १४ । अग्रणीयबीजं पूर्वजाणिवं तेहना चौदवस्तु भागविशेषभूलावस्तुनीतिकह्या । अम
णतपस्वोभगवंत ज्ञानवंत श्रीमहावीरने चौदशमणयतीनासहस्र एतले सहस्रपतीनी उत्कृष्टी साधुनी संपदाकृद्दिह्दुई । ज्ञानावरणीयादिकर्म विशोधि
गवेषणा पढुच्च आश्रीने चौद जीवमास्थानक भेदकह्या एतले चौदगुणठाणा तेकहेके । मिथ्याविपरीतके दृष्टिजेहनी तेमिथ्यादृष्टि प्रथम १ । धोढोतत्व
श्रद्धानरसास्वादेकरी सहितवर्ते तेस्वादन सम्यग् दृष्टि बीजगुणठान २ । सम्यग् मिथ्या दृष्टिजेहनीके ते सम्यग् मिथ्यादृष्टि एतले कांडकसम्यक्ते रुचि
कांडक मिथ्यात्वे रुचि एतले मिश्रगुणठाणबीजं ३ । अविरतिसम्यग् दृष्टिविरतिरहित सम्यग् दृष्टिचौथोगुणठान ४ । विरताविरतियावक ५ प्रमत्तसंयती

॥ भाषा ॥

यत्रिशेषः तथा अविरतसम्यग्दृष्टिर्देशविरतोदेशविरतः श्रावकइत्यर्थः प्रमत्तसंयतः किञ्चित्प्रमादवान् सर्वत्रविरतः अप्रमत्तसंयतः सर्वप्रमादरहितः सएव
नियति इहचपक्येणमुपशमश्रेणिंवा प्रतिपन्नोजीवः क्षीणदर्शनसप्तकउपशान्तदर्शनसप्तकोवा निवृत्तिबादरउच्यते तत्रनिवृत्तिस्तद्गुणस्थानकं समकालप्रतिप
न्नानां जीवानामध्यवसाय भेदतत्प्रधानोबादरो बादरसंपरायोनिवृत्तिबादरः अणियद्विषयायरेत्ति अनिवृत्तिबादरः सचकषायाष्ठकचपणारम्भान्नपुंसकवेदोपश
मनारम्भादारभ्य बादरलोभखंडं चपणोपशमनेयावद्भवतीति मुहुमसंपराएत्ति सूक्ष्मः संज्वलनलोभासंख्येयखण्डरूपः संपरायः कषायोयस्यसूक्ष्मसंपरायो लो
भानुवेदकइत्यर्थोयद्विविधाइत्याह उपशमकोवाउपशमश्रेणीप्रतिपन्नचपकोवाचपक्येणिप्रतिपन्न इतिदशमंजीवस्थानमिति तथा उपशान्तः सर्वथानुदयावस्थो
मोहो मोहनीयकर्मस्यउपशान्तमोहः उपशमषीतरागइत्यर्थोऽयंचोपशमश्रेणि समाप्तावंतमुद्धतंभवति ततःप्रच्यवतएवेति तथाक्षीणो निःसत्ताक्रीभूतोमोहोय

॥ टौका ॥

ममदिठी विरयाविरए पमत्तसंजए ण्णपमत्तसंजए निण्हिण्णनियद्विषयायरे सुज्जमसंपराय उवसमएवाखव

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

कांश्चक प्रमादवंत ६ । अप्रमत्तसंयतसर्वप्रमादरहित ७ । आठमोठाणाथी चपक्येणि तथा उपशमश्रेणी जडतनुजीव अणंतानुबंधीया ४ । क्रोध १ मान २
माया ३ लोभ ४ । अणिमोहनो सम्यक्त १ मिथ्या २ मिश्र ३ एम ७ । दर्शनसप्तचयकरतो चपक्येणी आरूढकही अने निवृत्ति बादर आठमूगुणठाणुकच्छं ८
नवमं अनिवृत्ति बादरतिहां पहिलोकषायाष्टखपायस्थानंतर नपुंसकवेदोदयोपशमाव्यानंतर बादर लोभखंडखपावे कैउपशमावे ८ । सूक्ष्मसंपराय दसमं
तिहांसूक्ष्मसंज्वलन लोभासंख्येय खंडरूपसंपराय कषायनो सूक्ष्मलोभनो वेदोके जिहां सूक्ष्मसंपराय गुणठाणेठाणी जीव उपशमश्रेणी प्रतिपन्नोय कै चप
क्येणी प्रतिपन्नोय १० । इग्यारमं उपसंतमोह सर्वथापि उपशान्त अनुदयके मोहनीयकर्म तिहां इग्यारमं गुणठाणे अंतमुद्धर्तरही कालकरतो अनुत्तर

स्यस तथा जयवीतरागद्वयर्थोऽयमप्यंतर्मङ्गल एवेति तथासंयोगीकेवली मनःप्रभृत्यतिव्यापारवान् केवलज्ञानीति तथाअयोगीकवली निरुद्धमनःप्रभृतियोगः शै
 लेयोगतोऽङ्गपंचाक्षरोद्दिग्गमात्रकालंयावदिति चतुर्दशजीवस्थानमिति भरहत्वादि भारतैरवलोर्जावे इहभरतमेरवतंचारोपितगुणको दंडाकारपनस्तयज्जी
 वेभवतः तत्रभरतस्यहिमवतौऽर्वागनन्तराः प्रदेशाः त्रेणिजीवाः ऐरवतस्यचशिखरिणः परतोन्तरप्रदेशाश्चेतीति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्रवटिस्मत्ति च

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे संजोगीकेवली नरहेवयाउणजीवाउ चउद्दसचउद्दसजोयणसहस्साइं चत्तारि
 ण्णएऊत्तरेजोयणसए ठव्वएकूणवीसेजागेजोयणस्स ण्णायामिणं प० एगमेस्सगंरन्तो चाउरंतचक्रवटिस्स चउ

विमाने अवतरे अने पाछोपडेतो छठेआवी पहिले एउपशमश्रेणीनो धणी जोचपकश्रेणी करतो दशमगुणठाणाथी इग्यारमोमंकी बारमेवहेतेह ११ । वार
 मोक्षीणमोह सर्वथापि क्षीणछे मोहजिहांक्षिणवीतराण १२ । तेरमो संयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवंत केवलज्ञानी १३ । चौदमो असंयोगी केव
 ली मनप्रभृतियोगवणि जिहांरंध्याछे ऋषपंचक्षरकालमान १४ गुणठानकालमान निछे १ सासण २ अविरय ३ परभवियाउणसे सगुणठाणमिच्छस्मत्ति
 नेभंगछावलियाहीय सासणे १ तिन्नीसयरचाउत्थ ४ पुव्वाणकोडिपण ५ तेरसमं १३ । लहुपंचक्षरचरमं १४ अंतहुसे सगुणठाणा १८ भरतऐरवत एहबिहुं
 नेचना जीव तिहां हिमवंतपर्वतयको ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगे लांवीभरजोवा प्रत्यंचाकारें अने ऐरवतनेचनाजीव शिखरीपर्वतयकी परहीश्रेणी जाणी
 वी एहबोहुं जीव चौदचौदयोजन सहस्वनो चारमेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीमहाइयाकभागआयाम लांबापणेकहा एकएकने राजाने पूर्वादिक
 वणिसमुद्र चउथोहिमवंत पर्वत एतलासगौ भूमिना अंतभाग ४ छे । जिहांतेह भूमिनाधणी एहवां चक्रवर्ती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमांहि जे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

त्वातोन्ताविभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासौचकवर्त्तोचेतिविग्रहः रत्नानिस्वजातीयमध्ये समुत्कर्षयंतिवस्तूनीति यदाह
 रत्ननिगद्यते तज्जातीयदुष्कृष्टमिति गाहावद्वत्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहित्यत्ति पुरोहितः शांतिकर्मादिकारी बह्वृत्ति वर्धकिरथादिनिर्मापयिता मणिः
 पृथिवीपरिणामः काक्लिणीसुवर्णमयी अधिकरणीसंस्थानेति इहमप्ताद्यानिपचेन्द्रियाणि शेषाख्येकेन्द्रियाणीति श्रीकांतमित्यादीन्यष्टौविमानानां नामानीति

॥ टीका ।

हस्सरयणा प० तं० इत्थीरयणे सेणावडूरयणे गहावडूरयणे पुरोहियरयणे बह्वृडूरयणे आसरयणे हत्थिरयणे
 अ्सिरयणे चक्ररयणे ठत्तरयणे चम्परयणे मणिरयणे कागिणिरयणे जंबूद्वीपेणंदीवे चउद्दसमहानईनु पुष्पा
 वंरणलवणसमुद्रं समुप्यंति तं० गंगा सिंधु रोहिण्या रोहिण्यंसा हरिया हरिकंता सीत्या सीतदा नरकंता
 नारिकांता सुवस्सकूला रूप्यकूला रत्ना रत्नवई इमीसेणंरयणप्पत्ताए पुद्दवीए अत्यगइयायाणं नेरइण्णणं

॥ मूल ।

उत्कृष्टवस्तु तेहनेरद्वकहिये तेकहेछे । स्वीरत्न १ । सेनापतिरत्न ३ । गृहपतिरत्नतेकोठारी ३ । पुरोहितशांतिक कर्मकारी ४ । वार्धकीसूत्रधार ५ । अश्व
 घोडोरत्न ६ । हस्तिरत्न ७ । एहसातपंचद्रियरत्न । अतिखड्गरत्न ८ । दंडरत्न ९ । चक्ररत्न १० । छत्ररत्न ११ । चर्मरत्न १२ । मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३ ।
 काक्लिणीं सुवर्णमयी अहिरणसंठाणि ७ एह एकेन्द्रियरत्न चौद १४ कक्षा । जंबूद्वीपनेविषेचौद महानदीजाणवी । पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्प्ये पङ्हुचेछे । पूर्वलव
 णसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पङ्हुचे तेकहेछे । गंगा १ । सिंधु २ । रोहिता ३ । रोहितंसा ४ । हरिता ५ । हरिकांता ६ । सीता ७ । सीतोदा ८ । नरकांता
 ९ । नारिकांता १० । सुवर्णकूला ११ । रूप्यकूला १२ । रत्ना १३ । रत्नवती १४ । एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदोपखोप

॥ भाषा ।

चऊदसपलिनुवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुठवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० अ
 सुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं चऊदसपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं
 देवाणं चउदसपलिनु वमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसुदेवाणं अत्येगइयाणं चउदससागरोवमाइं ठिई प०
 महासुक्कोकप्पे देवाणं अत्येगइयाणं जहन्नेणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिकंतं सिरिमहि
 अं सिरिसोमनसं लंतयं काविष्ठं महिंदं महिंदकंतं महिंदुत्तरवप्पिसंगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
 देवाणं उक्कोसेणं चऊदससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा चऊदसहिं अरुमासेहिं अणमंतिवा पाणमंति
 वा ऊरुससंतिवा नीरुससंतिवा तेसिणंदेवाणं चऊदसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पजाइ संतेगइअज

म आउखोकछो पंचमीधूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक गारकीनो चौदसागरोपम आजखोकछो । असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो चौदपत्थोपमआउ
 खोकछो । सौधर्म ईशानदेवलोके केतलाएक देवतानो चउदपत्थोपम आउखोकछो । लांतक देवलोके केतलाएक देवतानो चौदसागरोपम आउखोकछो
 महाशुक्र सातमे देवलोके केतलाएक देवतानो जघन्यो चौदसागरोपम आउखोकछो छठेदेवलोके जेहदेवता श्रीकांत १ श्रीमहांतक २ श्रीसोमनस १ लां
 तक ४ काविष्ठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकांत ७ महेंद्रोत्तरावतंसक ८ एह आठविमानेदेवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उल्लूछो चौदसागरोपम आजखोकछो । तेह
 देवता चौदेअर्धमासे पखवाडे घणोखासले थोडोखासले ऊंचोखासले नीचोखासमूके तेहदेवताने चौदवर्षसहस्त्र आहारनो अर्थउपजे । कैएक भव्यजीव चौ

अथपंचदशस्थानके सुगमेर्षिकं विनिश्चयते इह स्थिते र्वाक्यमस्तमधाणि । तत्र प्रमाद्यने भाषिकास्य संक्षिप्तपरिणामत्वा परमावामिकाः असुरविशेषा येति सृष्टु
षु पृथिवीषु नारकान् कदर्थयन्तीति तत्रांबेत्यादिश्लोकद्वयं एतेष्वप्यारभेदेन पंचदशभवन्ति तत्रांबेति यः परमाधार्मिकदेवो नारकान् हन्ति पातयति बध्ना
ति नीत्वा वारं २ खतले विमुञ्चति स इत्यभिधीयते १ अंबरिसीचेवति यस्तु नारकान्निहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति
सौवर्ण्यवीति २ सामेति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारार्दितानधःशातनपतनादिकरोति वर्णतश्च श्याम इति ३ सबलेत्तियावरेति शब्दल इति चापरः परमाधार्मिक इ
ति प्रक्रमः सचांबवसाहृदयकालेयकादौ न्युत्पाटयति वर्णतश्च श्वलः कर्बुर इत्यर्थः ४ रुद्रो वरुद्रोति यः शक्तिकृत्तादिषु नारकान् प्रीतयति स रौद्रत्वाद्रौद्र इति

यसि हिंसा जीवा जेच ऊदसहिं जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सध्दु
स्काणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहमीया प० तं० ॥ अंबे अंबरिसीचेव सामसव
लेत्तिश्यावरे रुद्रावरुद्रकालेय महाकालेत्तिश्यावरे असिपत्तेधणूकुंजे वालुण वेअरणीत्तिय खरस्सरे महाघोसे

दभवग्रहणे सौमस्ये बृहस्पत्ये मृकास्ये सर्वदुःखनो अंतंकरिष्ये मोक्षजास्ये इति चौदमांठाणो सम्मतो ॥ १४ ॥ द्विवे पन्नरनो अधिकार लिखियेके
पन्नरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी संक्षिप्त परिणामनाधर्मी चिश्चिनरकलगे नारकीने वेदनानादेशहारकत्वातेकहेके । जेपरमाधर्मी देव
नारकीने हृषीपादे अंबर आकाशे उछाले तेअंबकहिये १ । हृष्यानारकीने रापशस्त्रेकरि अनेक खंडकल्पीभावे पचिवायोग्यकरे तेअंदरीषकहिये २ । जेहना
रकीने हावपगने प्रहारैकरी मारौनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकीकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हृदयाकालिजां जपाडे तैश्वलक कहि

॥ टीका ।

॥ मूल ॥

॥ भाषा

५ यस्तुतेषामंगोपांगानि भनक्ति सोत्यंतरीद्रत्वादुपरीद्रइति ६ कालेत्ति यः कंद्वादिषुपचतिवर्णतः कालश्चसकालः ७ महाकालेइतिचापरे परमाधार्मिक इति प्रक्रमः सचक्ष्णमांसानि खण्डयित्वाखादयति वर्णतश्चमहाकालइति असिपत्तेत्ति असिः खड्गस्तदाकारपत्रवदनं विकुर्व्यं यस्तत्समाश्रितनारकानसिपत्र पातनेन तिलशच्छिनत्ति सोऽसिपत्रः ८ धणुत्ति योधधनुषिमुक्तार्धचन्द्रादिबाणैः कर्णादीनां छेदनभेदनादिकरोतिसधनुरिति १० कुंभेत्तियः कुंभादिषुतान् पचतिसकुम्भः ११ वालुत्ति यः कदंबपुष्पाकारासुवज्राकारासुवा वैक्रियवालुकाकारासु तत्तप्तसुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयत्ति वेतरणीयत्तिवपरमाधार्मिकः सचपूयरुधिररूपपुत्रांश्चादिभिरतितापात्कलकायमानैर्भृतां विरूपंतरणं प्रयोजनमस्यांति वेतरणीति यथार्थानदीं विकुर्वंस्तत्तारणेन कदर्थयति नारकानिति १३ खरस्वरिति योवज्रकण्टकाकुलं शाल्मलीवृक्षं नारकमारोप्य खरस्वरं कुर्वंतं कुर्वन्वा कर्षतिसखरस्वरिति १४ महाघोसेत्ति योभीये ४ खड्गभालानेविषे नारकीनेपाडे तेरुद्रपणथकी रुद्र ५ । नारकीना आंगोपांग भाजते अत्यंतरीद्र ६ । नारकीने कडाहीमां घालीने पचावे तेकाल ७ । महाकाल चपर अनेरो तेहनारकीना सूक्ष्ममासनां खंडकरीखाय वर्णकरी पिणमहाकाल ८ शाल्मलीवृक्ष हेठीं नारकीने बेसारी तेहनापत्र असिखड्गाकारे विकुर्वो तेह असिपत्रने पाडे वेकरी तिलतिलमात्र छेदेते असिपत्र परमाधर्मी ९ । तेहना धनुषयकी अर्धचंद्रबाण तेणेकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे भेदे तेधनुषनाम १० । कुंभत्ति कुंभीमांहि तेहनारकीने पचावे तेकुंभ ११ । कदंबपुष्पाकारे वैक्रिय तातीवेलूकरी तेमांहि भाटीनाचणानेपरी पचावे तेवालुक १२ । वेतरणीनदी विकुर्वी पूतिरुधिरतरुंतांबो महातप्त कलकलायमानेभरी तेमांहि नारकीने बोलेंकदर्थे तेहवेतरणीनाम १३ । खरस्वरइति वज्रमय कांटासहित शाल्मलीवृक्ष विकुर्वी तेह उपरिनारकीने चटावीनेताण जिमकांटा उपरि लूगडूनाखीने तांणी तेखरस्वर १४ महाघोसेति बीहता नासता

॥ टीका ॥

॥ भाषा ।

यथापदं पदेनगच्छतीत्यादिषु प्रतिदिनंपञ्चदश भागमितिभावः चन्द्रस्यप्रतीतस्यलेश्यामिति लेश्यादीमिस्तत्कारणत्वात् मण्डलंलेश्यातामावृत्याच्छाद्यतिष्ठति
एतदेवदर्शयन्नाह तद्यथेत्यादि पठमाइति प्रथमायांतिथ्यां प्रथमंभागं पंचदशांशलक्षणं चंद्रलेश्यायाश्चावृत्यतिष्ठतीति प्रक्रमः अनेनक्रमेणयावत् पन्नरसेसुप्ति
पञ्चदशसुदिनेषु पञ्चदशभागमावृत्यतिष्ठति तंचेवति तमेवपञ्चदशभागं शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादिषु चंद्रलेश्यायाउपदर्शयन् पंचदशभागतः स्वयमपसरणतः
प्रकटयन् २ तिष्ठतिध्रुवराहुरिति इहचायंभावार्थः षोडशभागीकृतस्यचंद्रस्य षोडशभागोऽवस्थितएवास्ते येचान्येभागास्तद्राहुः प्रतिदिनमेकैकंभागं कृष्णपक्षे
आवृणोतिशुक्लपक्षे तु विमुंचतीति उक्तंचज्यातिस्करण्डके सोलसभागेकाज्जण उलुवइहायएत्यपन्नरसं । तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिबढ इजोणहंति । ननुचन्द्रविमा

वारसमीए वारमज्ञागं तेरसीए तेरसज्ञागं चउद्दसीए चउद्दसज्ञागं पन्नरसेसु पन्नरसज्ञागं सुक्लपरकरस उवद
सेमाणे चिठत्ति तं० पढमाएपढमंज्ञागं जावपन्नरसेसु पन्नरसज्ञागं ठणरकत्ता पन्नरस मुज्जत्तसंजुत्ता प०
तं० सतजिसय जरणि अद्दा असलेसा साइ तहाजेठाय एतेठणरकत्ता पन्नरसमुज्जत्तसंजुत्ता चेत्तासोएसुणं

तरमोभाग १३ । चौदसीए चौदभाग १४ । पन्नरमेदिने पन्नरमी कलाटाके १५ । तेहीज चन्द्रनो पन्नरमोभाग शुक्लपक्षे राहूमूंकतो चंद्रनेप्रकटती तिष्ठेरहे
शुक्लपक्षने पहिले दिने पहिलो एकभाग बीजेदिनेबीजोभाग एमयावत् पन्नरमेदिने पन्नरमोभागमूंक । छनक्षत्र पन्नरमूहर्तलगे चंद्रमा सार्थे चंद्रसंयुक्तयका
रहे तेह तुलासंक्रांति जाणिवो तेकरहे । शतभिषा १ । भरणी २ । अर्द्रा ३ । आश्लेषा ४ । स्वाती ५ । तथान्येष्टा ६ । एहं छनक्षत्र पन्नरमूहर्त संयुक्तकहीये
१५ मूहर्तलगे चंद्रमासाधेचाले । चैत्रआसौ मसवाडे पन्नरमूहर्तनो दिवस ३० घडीनोहुओ । तेणेमसवाडे पन्नरमूहर्तनो ३० घडीनीराचीहोय । विद्या

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नस्यपंचैकषष्ठिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् राहुविमानस्य ग्रहविमानत्वेनाऽर्द्धयोजनप्रमाणत्वात् कथंपंचदशैर्दिनैर्षट्त्रिंशद्विमानस्य महत्वेनेतरस्यच सप्तत्वेनसर्वा
वरणंस्यादित्युच्यते । यदिदंग्रहविमानोऽर्द्धयोजनमिति प्रमाणंतथाधिकमिति । राहोर्ग्रहस्ययोजनप्रमाणमपि विमानंसम्भाव्यते सघीयसोपिवाराहुवि
मानस्यमहतातमिस्तरश्मिजालेन तस्यावरणाददोषइति तथा षण्णक्षत्राणि पंचदशमुहूर्त्तानि यावच्छ्रेण संयोगोद्येषांतानि पंचदशमुहूर्त्तसंयोगानि तद्य
था सयभिसयाभरणौघो अद्वाअस्त्रेसयाइज्ज्हाय । एण्णक्खत्ता पन्नरसमुहत्तसंजुत्ता । संयुक्तं संयोगइति तथाचेत्तासोएसुमासेसुत्तिस्थूलन्यायमाश्रित्यचैषेऽश्व
युजिचमासे पंचदशमुहूर्त्तो दिवसोभवति रात्रिश्च नियतसु मेषसंक्रांतिदिनेचैवदृश्यमिति पत्रोगेत्ति प्रयोजनंप्रयोगः परिस्यंदआत्मनः क्रियापरिणामोव्यापा
रइत्यर्थः अथवा प्रकर्षेणयुज्यते संबध्यतेऽनेनक्रियापरिणामोव्यापारोऽभवतीति प्रयोगः तत्रसत्यार्थालोचननिबन्धनंमनः सत्यमनस्तस्यप्रयोगोव्यापारः स

मासेसुपन्नरसमुज्ज्हे दिवसोभवति सइण्णपन्नरसमुज्ज्ज्हाइन्नवति विज्जाणुप्पयायस्सणं पुव्वस्सपन्नरसव
त्थू प० मणूसाणंपन्नरसविहेपणुगे प० तं० सच्चमणपणुगे मोसमणपणुगे सच्चमोसपणुगे असच्चामोसमणप

अनुप्रवाद दसमो पूर्वतेहनी १५ वस्तुअध्ययन विशेषकक्षी । मनुष्येने पन्नरप्रकारे प्रयोगकहतांयोगकह्ता । तेकहेहे । सत्यमनोयोग मननोसांचीव्यापार १ ।
एमज सृष्टामनोव्यापार २ । सत्यसृष्टामनोयोगमिश्र ३ । असत्यअसृष्टा मनोयोग ४ । एमज व्यापार वचनयोग सत्यवचनयोग ५ । कृषावचनयोग ६ ।
मिश्रवचनयोग ७ असत्याकृषावचनयोग ८ कायानासातयोग औदारिककाययोग पर्याप्तावस्थाहुई ९ औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तावस्थाहुई उत्पत्ति
समय औदारिकपुद्गल अने कर्मणपुद्गलमिश्रीभावे अंतर्मुहूर्तलगे रहतेभाटे औदारिक मिश्रकाययोग १० । एमज वैक्रियकाययोग ११ । वैक्रियमिश्रकाय

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

त्यमनःप्रयोगः एवंशेषेष्वपि । नवरमीदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकशरीरमेव पुनलस्कंधसमुदायत्वेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः
अयंचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमिश्रकायप्रयोगः अयंचापर्याप्तकस्येति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वाद्दौदारिको वैक्रियेणमि
श्रोयावद्वैक्रियपर्याप्तानपर्याप्तिंगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकस्यमिश्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य

नुगे सञ्चवइपनुगे मोसवइपनुगे सञ्चमोसवइपनुगे असञ्चामोसवइपनुगे उरालियसरीरकायपनुगे उरालिश्य
मीससरीरकायपनुगे वेउव्हियसरीरकायपनुगे वेउव्हियमीससरीरकायपनुगे आहारयसरीरकायपनुगे आहा

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ । कर्मणकाययोग १५ । जिवारं केवली ८ समयक केवलसमुदायकरे केवलीनेत्रीजे चौथे
पांचमेकर्मणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपत्नोपमआउखोकछो । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकी
नो पनरसागरोपमआउखोकछो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपत्नोपम आउखोकछो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरपत्नोपम
आउखोकछो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरसागरोपम आउखोकछो । सातमेदेवलोके ऊदेवतानंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ
४ । नंदकांत ५ । नंदवर्ष ६ । नंदलेश ७ । नंदध्वज ८ । नंदमिह १० । नंदकूट ११ । नंदोत्तरायतंसक १२ । एहवारणिमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवता

॥ टीका ॥

देवस्य नारकस्य वा कर्मणि नैवलम्बि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिक प्रवेग्याद्यामौदारिकां पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्रतेत्येकेत्वा
हारकशरीरकाय प्रयोगस्तदनिनिवृत्तौ सत्यां तस्यैवप्रधानत्वा तद्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगः औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य
एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्यः पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेगं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथैनंपरित्य
जत्याहारकं तावदौदारिकेण सहमिश्रतेति आहमतत्तेनसर्वथामुक्तं पूर्वनिर्दिष्टितं िष्ठव्येवंत्कथं गृह्णाति सत्यं तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ
ह्णात्येवं तथाकर्मणःशरीरकायप्रयोगे विग्रहसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ षोडशस्थान मुच्यते सुगमंचेदं नवरं

॥ मूल ॥

रयमीसयसरीरकायप्पनुगे कम्मयसरीरकायपनुगे इमीसेणंरयणप्पज्जाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइअणं
पन्नरस पलिनुवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्येगइअणं नेरइअणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प०
असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं पन्नरसपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं
देवाणं पन्नरसपलिनुवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे अत्येगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प०
जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पज्जं णंदकंतं णंदवस्सं णंदलेसं णंदज्जयं णंदसिगं णंदसिठ्ठं णंदकूळं णंदुत्तर

॥ भाषा ॥

ने उत्कृष्टो पनरेसागरोपम आउखोकच्छो । तेदेवतापनरे पस्सवाडे सासोसासवणोले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमंके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्से आहा
रनो अर्थउपजे । केतलाएक भय्यजीव पनरभवनेआंतरे सीभस्ये वूभस्ये मूकास्ये सर्वदुःखना अंतकरस्ये मोचजास्ये इति पनरमूंठाणूंसकत्तं ॥ १५ ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्यश्चारात्तत्सूत्राणि तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेऽनुतस्कंधे षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म
ध्ययनं षोडशयेषांतानि गाथाषोडशकानि तत्रममेयन्ति नास्तिकादि समय प्रतिपादपरमध्ययनं समयएवोच्यते वैतालीयकंदोजातिवहं वैतालीयमेवशेषा

वहिस्रं विमाणं देवत्ताए उववन्ता तेषिणं देवाणं उक्कोसेणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवापन्नर
सराहं अरुमासाणं अणमंतिवापाणमंतिवा ऊरुससंतिवा नीरुससंतिवा तेषिणं देवाणं पन्नरसहिं वाससह
रुसेहिं अणरठेसमुप्पज्जइ संतेगइया जवसिद्धियाजीवा जेपन्नरसहिं जवग्गहणेहिं सिज्जिरुसंति बुज्जिरुसंति
मुच्चिरुसंति परिनिह्वाइरुसंति सघुदुरकाणमंतं करिरुसंति ॥ १५ ॥ सोलसयगाहासोलसगा प०
त० । समए वेयालिये उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविज्जत्ती महावीरथुई कुशीलपरिन्नासिए वीरएधम्मो

हिबेसोलथो अधिकार लिखियेके । सूगडांगने पडिलेखेसोल अध्ययन मांइ गाथा एहवोनाम सोलमोछे । तेकहेछे । समएति नास्तिकादिमतनो कथक
प्रथम अध्ययन समयकहिये १ । वैतालिककंदेवांध्यातेयैतालिय २ । उपसर्गपरिच्छा ३ । स्त्रीपरिच्छा ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्तव ६ । कुशीलपरिभाषा ७
वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । सभाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । त्रिणिसय त्रिसठीपाखंडीनोमत जिहांतेसमोसरण १२ । सत्यभायकहीते यथातथा
नाम १३ । ग्रंथतेअध्ययन १४ । ग्रंथनोकथक यमककंदेवांध्यातेयमक १५ । पूर्वाक्तपन्नर अध्ययननो जिहांभावपामीये तेगाथानाम १६ । सोलकषायकह्याभग
वते कषकहियेसंसार तेहनो आयलाभहोय जेहथी तेकपायकह्या तेकहेछे । अनंतामुबंधी क्रोध जेह अनंतांभवनो अनुबंधकरे जावजीवरहे सम्यक्काविवा

॥ ४९ ॥

र्णा यथाभिधेयनामानि समोसरणेति समवसरणं त्रयाणां षष्ठ्यधिकानां प्रवादितानां मतपिंडनरूपं अहातहिएति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तत्रतद्यथा तयिका यथाभिधायकंयथः जमइति यमकीयं यमकनिवहंसूत्रं गाहंतिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानाहाथोगाथावातत्यतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रे गाथा

॥ टीका ।

समाही मग्गे समोसरणे आहातहिए मंये जमउए गाहा सोलसकसाया प० तं० अणंताणुबंधीकोहे अणंताणु बंधीमाणे अणंताणुबंधीमाया अणंताणुबंधीलोत्ते अपच्चरकाणकसाएकोहे अपच्चरकाणकसाएमाणे अपच्चरका णकसाएमाया अपच्चरकाणकसाएलोत्ते पच्चरकाणावरणेकोहे पच्चरकाणावरणेमाणे पच्चरकाणावरणामाया पच्च रकाणावरणेलोत्ते संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमाया संजलणेलोत्ते मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनामधे या प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपत्तेय गिरिराया रयणुअए पियदंसणे मज्जलोगस्सनानीय अ

॥ मूल ॥

नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २ । अनंतानुबंधीमाया २ । अनंतानुबंधीलोभ ४ । एमज अप्रत्याख्यानक्रोध अणुव्रतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १ । अप्रत्या ख्यानमान २ । अप्रत्याख्यानमाया ३ । अप्रत्याख्यानलोभ ४ । प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने आविवानदे चारमासलगेरहे १ । एमज प्रत्याख्या नमान २ । प्रत्याख्यानमाया ३ । प्रत्याख्यानलोभ ४ । संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपनरेदिनरहे १ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ सं ज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कषायथया । मेरुपर्वतनासोलह नामकह्या तेकहेछे । मंदर १ । मेरु २ । मनोरम ३ । सुदंसण ४ । सयंप्रभ ५ । गिरिराज ६ । रत्नोच्चय ७ । प्रियदर्शन ८ । मध्यम लोकनीनाभि १० । अर्थ ११ । सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदक्षिणादे १२ । सूर्यावरण रात्रे सूर्यने आवरेआच्छादे १३ ।

॥ भाषा ।

श्लोकस्य मञ्जुल्लोगस्यनाभीयन्ति लोकमध्ये लोकनाभिश्चेत्यर्थः उत्तरयति भरतादीना मुत्तरदिग् वर्तित्वाद्यदाह सक्वेसिं उत्तरोमेरुत्ति दिसाईयत्ति दिशामादि
रित्यर्थः वहिंसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सदवावतंस इतिचेति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणांमध्ये आदेयस्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरब
ल्योर्दक्षिणोत्तरयो रसुरकुमारराजयोः उवारियालेणत्ति चमरचंचावली चंचाभिधान राजधान्योर्मध्याद्रताऽदतरत्तार्द्धपीठरूपेऽवतारिकल्पयने षोडशयोज
नसहस्राख्यायामविक्रंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेपुदशसु सहस्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्धं गतंतस्यचोत्सेधवृद्धिः षोडशसहस्राख्यस्तउ
च्यते लवणसमुद्रः षोडशयोजनसहस्राख्युत्सेधपरिवृद्धा प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमाननामानि ॥ १६ ॥ अयसप्तदशस्थानकं तच्चव्यक्तं

त्येषु सूरिष्णावस्ते सूरिष्णावरणेतिषु उत्तरेय दिसाइषु वहिंसेइषु सोलसमे पासस्सणंश्चरहतो पुरिसादाणी
यस्स सोलससमणसाहस्सीनु उक्कोसीष्णाणंसंपदाहोत्या णायप्पवायस्सणं पुव्वस्ससोलसवत्थू प० चमरवली
णं उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइं णायामविक्रंजेणं प० लवणेणंसमुद्रेसोलसजोयण सहस्साइं उस्से

भरतादिकचेत्रयकी उत्तरदिशाक्के तेमाटे उत्तरकच्छो १४ । दिशानी आदिक्केजेह्दकी तेदिगादि १५ । अवतंस सर्वपर्वतनी मुगुटरूपे एम १६ नामहु
या । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधान आदानीय महासीभागी तेहनेसोले अमण सहस्र उत्कृष्टोसाधुनी संपदाहुई जाणवी । आत्मप्रवादनपूर्व तेहना
सोलह वस्तुकक्षा । भगवंते अधिकार विशपेकक्षा । चमर चंचावली चंचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीक्षयन तेहअवासनी पीठीकां सोलसहस्र
योजनलांबपणे पिडुलपणेकक्षा । लवणसमुद्रयकी जगतीयकी पंचाणूं सहस्रयोजनेईइतिहां मध्यभागेदगमाले दससहस्र योजननेविधे नगरना गढनीपरि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

हपरिवह्नीए प० इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिउवमाइं ठिइ प० पच
मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिइ प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया
णं सोलसपलिउवमाइं ठिइ प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिउवमाइं ठिइ प०
जेमहासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिइ प० जेदेवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआव
त्तं महाणंदिआवत्तं अंकुसं पलंबं नदं सुन्नदं महान्नदं सव्वन्नदं नदुत्तरवह्निंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना
तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सोलससारोवमाइं ठिइ प० तेणं देवा सोलसहिं अरुमासाणं आणमंतिवा पाण
मंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पजाइ संतेगइयाज

॥ मूल ॥

पाणी ऊंचोगयोछे । तेहनो ऊंचपणानीवृद्धि सोलसहम् योजननीकहो । एहरत्तप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सोलिपल्लोपम आउखोकह्यो । पां
चमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो सोलिसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमार देवनो केतला एकनोसोलिपल्लोपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशानदे
वलोक केतलाएकदेवनो सोलिपल्लोपम आउखोकह्यो । महाशुक्रदेवलोक केतलाएक देवमोसोलिसागरोपम आउखोकह्यो । जेदेवता आवर्त १ । विदावर्त २
नंदिकावर्त ३ । महानंदिकावर्त ४ । अंकुश ५ । प्रलंब ६ । भद्र ७ । सुभद्र ८ । महाभद्र ९ । सर्वतोभद्र १० । भद्रोत्तरावर्तसक ११ । एह इग्यारविमाने देव
तापणेउपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृष्टो सोलिसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता सोलपखवाहेस्वासीस्वाधणोले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेदे

॥ भाषा ॥

॥ ४९ ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नवरमिहस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वाग्दश तथा अजीवकायासंयमो विकटसुवर्णबहुमूल्यवस्त्रपान्ने पुस्तकादिग्रहणं प्रेक्षायामसंयमोयः सतथा सचस्थानोपकरणादीनि

घसिद्धियाजीवा जेसोलसहिं जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिष्ठाइस्संति ससुदु
स्काण मंतंकरिस्संति ॥ १६ ॥ सत्तरसविहेअसंजमे प० तं० । पुढविकायअसंजमे अण्णका
यअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे वेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे च
उरिंदियअसंजमे पंचिंदियअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उपेहाअसंजमे अवहटूअसंजमे अण्ण

बतानो सोलसहस्रवर्षेआहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभयजीव सोलभवने आंतरे सोभस्ये बूभस्ये मृंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्थे ॥ इतिसो
लमंठाणं सम्यत्तम् ॥ १६ ॥ हिंवे सतरमो अधिकारलिखियेके । सतरप्रकारे असंजमकह्यो तेकहेके । पृथिवीकायनो पांचवोसंघटवो हणवोते
पृथिवीकाय असंजम १ । एम अपकाय पाणीतेहनो असंजमते अपकाय असंजम २ । एम तेजकाय असंजम ३ । वायुकाय असंजम ४ । वनस्पतिकाय
असंजम ५ । वेइन्दियअसंजम ६ । तेइन्दियअसंजम ७ । चउरिंदियअसंजम ८ । पंचेइंदियअसंजम ९ । वस्त्रपान्ने अण्णपुंजीलेवो मेलवो तेअजीवकाय असंजम
१० । अथवा बहुमूल्यवस्त्रपुस्तकनोलेवो ११ । उपकरणनोअविधि पडिलेहवो तेप्रक्षायसंयम १२ । असंयमयोगनेविषे व्यापारवो संयमयोगनेविषे अव्यापारवो
तेउपेक्षा असंयम १३ । अवधिण परिठवणोमात्रादिक्कनो अवधिणपडिलेहवो तेअप्रमार्जन असंयम १४ । मननोभूँडोव्यापार तेमनअसंयम १५ । एमवचननो

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

अप्रत्युपेक्षमविधि प्रत्युपेक्षंवा उपेक्षाऽसंयमयोगेव्यापारणं संयमयोगेव्यापारणंवा तथाऽपहृत्यसंयमः अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनंतायः तथाऽप्र-
मार्जनाऽसंयमः पात्रादेरप्रमार्जनयाचेति मनोवाक्कायाऽसंयमास्तेमानकृण्वानामुदीरणानीति असंयमे विपरीतः संयमः वेलंधरानुवेलंधरावासपर्वतस्व

मज्जाणाञ्चसंजमे मणञ्चसंजमे वडञ्चसंजमे कायञ्चसंजमे सत्तरसविहेसंजमे प० तं० पृथ्वीकायसंजमे
आकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सडकायसंजमे वेइंदिञ्चसंजमे तेइंदिञ्चसंजमे चउरिंदि
यसंजमे पंचिंदिञ्चसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उपेहासंजमे अवहटूंसंजमे अप्यमज्जाणासंजमे मण
संजमे वडसंजमे कायसंजमे माणमन्नेणपहण मन्तम्मणक्खवीसजोयणसए उहुं उच्चनेणं प० सहमिपिणवेलं
धरञ्चणुवेलंधरणागराईणं आवसपव्या सत्तरसएक्खवीसाइ जायणसयाइ उहुंउच्चत्तेणं प० लवणेणंसमुदे

असंयम १६ । कायानोअसंयम १७ ॥ सत्तरप्रकारेसंयमकक्षी तेकहेके । पृथिवीकायनो राखवो तेपृथिवीकयसंजय १ । एम अपकायसंजय २ । तेजकायस
जम ३ । वायुकायसंजम ४ । वनस्पतिकाय संजम ५ । वेइन्दियसंजम ६ । तेइन्दियसंजम ७ । चउरिंदियसंजम ८ । पंचेदियसंजम ९ । वस्त्रपात्रपंजीन
लीजे तेअजीवमंजस १० । पेक्षासंजम ११ । उपेक्षासंजम १२ । अपहृत्यासंजम १३ । अप्रमार्जनसंजम १४ । मनसंजम १५ । वयणसंजम १६ । कायसंज
म १७ ॥ जंबूद्वीपआखो धातकीखंडआखो पुक्कराईअर्धो एमअटार्डद्वीप रूपनगरने चउपरैरगटरूप माणयोत्तरपर्वतके तेहसत्तरसे एकवीसयोजन ऊँचो
ऊंचपणेकक्षी, सगलेवेलंधर अनुवेलंधर देवतानागकुमार भवनपति तेहना आवास जगतीयकी चिंहुंपासेके चालीससहस्र योजनलवणसमुद्र मांछिजई

रूपं चैव समासागाथाभिरवगंतव्यमेताः । दसजोयणसहस्रा लवणसिहाचक्रवालउरुंदा । सोलससहस्राउच्चा सहस्रमेगंतुउगाढा । देसूणमठजोयण लवणसि
हावरिदगंतुकालदुगे । अतिरेगंर परिवड्डइहायएवावि । अण्ण तरियवेलं धारंतिलवणोदहिम्सनागाणं । बायालीयसहस्रा ओसत्तरिसहस्रावाहरियं । सठ्ठीना
गसहस्रा धरंतिअरुणोदयसमुहस्र । वेलंधरआवासा लयण्येचउदिसिंचउरो । पुव्वादि अण्णक्रमसो गोथुभ १ दगभास २ संख ३ दगसीस ४ । गोथुभ १ सित
ए २ संखे ३ मणोतिले ४ नागरायाणी । अण्णवेलंधरवासा लवण्येविदिमासुसंप्रियाचउरो । कक्कोडे १ विज्जुप्पमे २ केलासरुणप्पमेचेव । कक्कोडयकहमए केल
सरुणप्पमेथ नागरायाणी । बायालीससहस्रे गंतुंउवहिंसिस्सेवि । चत्तारिजोयणसए तीसैकोसंचउगयाभूमौ । सत्तरसजोयणसए इगवीसेजसियासब्बे

सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वगेणं प० इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए वज्जसम रमणिज्जानु नूमिजागानु

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतकेगोथुभ १ । एम दक्षिणादिकेदगभास २ । संख ३ । दगसीस ४ । तेहनाधणीगोथुभ १ शिव २ । भद्र ३ । मणसिल
अनुवेलंधरनापर्वतविदिगिएं ईशानकोणेंककोट १ । एमजअग्निकोणेंविद्युतप्रभ २ । केलाश ३ । अरुणप्रभ ४ । एहनाधणीनागराजककोट १ कर्दम २ के
सास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दशसहस्रयोजन चक्रवालओटलाकारे समपाणीके तेहउपरि सोलसहस्रकृगाज जचापाके तिहां दिनप्र
ति एवेटकवेलवधे तेहनेधरेराखे तेवेलंधर वेलमांहिलेपासे जंबूद्वीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकौखंडभणी ७३ सहस्रदेवता कसहस्रशिथे वाटेकरी पा
णीबांधता उपराठांमारिखे । वेलंधरअनुवेलंधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसयोजन अधिकसतरसेयोजन जंचाजंचपरेकह्या । जगतीथकी पंचाणूं यो
जनसहस्रजइये समुद्रसांहि तिहां दससहस्रयोजन चक्रवालसमुद्रपाणीके तिहांथकी सोलसहस्रयोजन शिखारूपपाणी जंचाआकाशेंगयाके तीसमुद्रपाता ।

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

चोरिणांति जंघाचारणानां विद्याचारणानां च तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनायेति तिगिंछिकूट उत्पातपर्वतो यत्राग्नौ मनुष्यक्षेत्रागमनायीत्यतति सचेतो
संख्याततमे ऽरुणोदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राण्यतिक्रम्यभवति रुचकेन्द्रोत्पातपर्वतस्वरुणोदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ
सातिरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उहुंउप्पतिहा ततोपच्छा चारणाणं तिरिष्णुगती यावत्तती चमरस्सणं
असुरिंदस्स असुररस्सो तिगिंछिकूटोत्पायपव्वए सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उहुंउच्चत्तेणं प० बलि
स्सणं असुरिंदरुष्णिगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उहुंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प०

समां हि जंडो एकयोजनसहस्रजंघो सोलहस्रसञ्जगोणं सर्वमिली १७ सहस्रयोजनसमुद्रकह्यो । एणीएरत्तप्रभा पृथिवीनेविधे घणोरमणीकसमोभूमिभागहे
तेहयकोभाभेरोबीकोसअधिकसत्तरयोजन सहस्रलगेजंघोउत्पत्ति उडोनेएंतलेलवणसमुद्रनी गिखालगेजंघाउत्पत्तितिवारेपके जंघाचारण विद्याचारणनी
तिरछोगति पवंततले तिरछिदीपे रुचिकवरहीपे एमनंदीखरहीपे जीवप्रतिमावांदिवाजाइं चमरेंद्रनो असुरकुमारदेवतानो इन्द्रतेहनो असुरनाजानो तिगि
छकूट । उत्पातपर्वत जिहां चमरेद्रादिकपातालथकी आवीनेमनुष्यक्षेत्रे आविवाभणीउत्पत्ते उडेतेमाटे उत्पातपर्वतकहिये । तेअसंख्यातमे अरुणसमुद्रथकी
दक्षिणदिशे ४२ सहस्रयोजनजइये तिहां पांमिएते तिगिछकूट । १७२१ योजन जंघोजंघपणेकह्यो । बलींद्रनो असुरेंद्रनो वलीरुचकेंद्रनो उत्पातपर्वत सतर
खे एकवीस जंघोजंघपणे तेहीपणि अरुणसमुद्र असंख्यातमो तेहमां हि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहांरुचकेंद्र उत्पातपर्वतपामियेकह्यो । सतरप्र
कारेमरणकह्यो तेकहेहे । चणचणवितिएं आउखनोदल उछाथायते आवीचिमरण १ । अवधिमर्यादातेणकरी मरवांते अवधिमरण जिमनारकी नरका

वीरमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयत्रायुर्दलिकविष्युतिलक्षणाअवस्था यस्मिं स्तदावीचि अथवावीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीची दीर्घत्वंतुप्राकृतत्वात्तदे
 वंभूतंमरणंवीचिमरणं प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचेदनलक्षणं तथाअवधिर्मर्यादा तेनमरणं मवधिमरणं यानिहि नारकादिभवनिवंधनतया युःकर्मदलियान्यनुभूय
 म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्व्यापेक्षया पुनस्तद्गृहणावधिं यावल्लीवस्य मृतत्वादिति तथा आर्यंतियमरणेति आ
 त्यंतिकमरणं यानिनारकाद्यायुक्ततया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्व्यापेक्षया अत्यंतभावित्वा दात्यंति
 कमिति बलायमरणेति संयमयोगिभ्यश्चलतां भग्नव्रतपरिणतीनां व्रतिनांमरणं बलान्मरणं । तथा वशेनेन्द्रियविषयपारतन्त्र्येण ऋताबाधितावशार्ताः स्त्रि
 ग्धदीपकलिकाचलोकना कुलशभवन् तथा अंतर्मध्येमनसीत्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदंयस्य सीतःशल्यमिमानादिभिर्बालोचितातीचार स्तस्यमरणमंतः
 शल्यमरणं तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यमवलक्षणेवर्त्तते जंतुस्तद्वयोर्यग्य मेवायुर्द्वापुनः तत् चयेन म्रियमाणस्ययद्भवति तत्तद्भवमरणमेतच्चतिर्यग् मनुष्याणामेव
 तदेवनारकाणां तेषां तेष्वेवात्पादाभावादिति तथाबालाश्च बालाअविरता स्तेषां मरणं बालमरणं तथापंडिताः सर्वविरता स्तेषांमरणं पंडितमरणं बालपंडि

आयुर्दमरणे नहिमरणे आर्यंतियमरणे बलायमरणे वसहमरणे अंतोसहमरणे तप्लवमरणे बालमरणे पंडि

युभवने बंधनकर्मदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यंतिक मरण तेजेनरकनूपूर्णं आउखं भोगवीओवलतो फरीने बीजभवे तेहीजभावे ३ व्रतभांजीम
 रते बलातमरण ४ । पतंगादिकनी परौन्द्रियनेवशे मरेतेवशार्तमरण ५ । अपराधअणालोई मरनेअंतःशल्यमरण ६ । जेआउखंभोगवी मरेवलीउपराठी बी
 जभवेतेहीजभावे जिमममुष्यतिर्यच पातानूं आउखूं भोगवीकरी वलीबीजभवेतेहीजमूं आउखूंपामे ७ । अगिरतीनूं मरणतेबालमरण ८ । सर्वविरतीयतीन

तादेशविरतास्तेषांमरणं बालपंडितमरणं । तथाकृद्ग्रन्थमरणमेव केवलमरणंतु प्रतीतं । वेहासमरणंति विहायसि व्योमनिभवं वैहायसं विहायोभवत्त्वंच त
स्य वृक्षशाखाद्युद्धत्वेसति भवेत् तथागृहैः पत्तिविशेषै रूपलक्षणत्वाच्चकुनिकाशिवादिभेदश्च स्पृष्टं स्पर्शनंयस्मिन् स्तनृध्रस्पृष्टं अयवागृध्राणांभक्ष्यं पृष्टमुपसृक्ष्य
त्वाउंदरादियच्च तद्गृध्रपृष्टं मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मानं भक्षयती महासत्वस्य भवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यानं यस्मिन्
तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मच भक्तपरिज्ञेतियदूहं । तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेद्यते आसामनशनक्ति
यामितींगिनी तथा मरणमिंगिनीमरणं तद्विचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्निःप्रतिकर्मशरीरस्ये गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्येवोपगमनमवस्था
नं यस्मिन् तत्पादपोपगमनं तदेव मरणमिति विग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममससमिति भाविभावयन्निश्चलमेवास्ते तथायोवर्त्तते तस्य

॥ टीका ॥

तमरणे बालपंडितमरणे ढउमत्यमरणे केवलमरणे वेहासमरणे गिद्धिपिठमरणे जत्तपच्चरकाणमरणे इंगि
णीमरणे पाउवगमणमरणे सुज्जमसंपराएणंजगवं सुज्जमसंपरायजावेवदृमाणो सत्तरसकम्मपगणीनु णिवंध

॥ मूल ॥

मरणतेपण्डितमरण ८ । आबकनूंमरणते बालपण्डितमरण १० । कृद्ग्रन्थपणेमरेते कृद्ग्रन्थमरण ११ । केवलीपणेमरेते केवलमरण १२ । गलेफांसीलेईमरेतेविहा
सकमरण १३ । गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आपणीआत्माखवाडीमरेते गृध्रपुष्टमरण १४ । भातपाणीपच्चखीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५ । चारेआहा
रपच्चखी भूमिनियमीसंस्थारमूये भवतोवियावचनकरावेते इंगिनीमरण १६ । पादपवृक्षनीशाखाकंदी भूमिंपडचलतोहालेनही तिमसंधारकक्षा पक्कीसा
धुहाले बोलिनहीपासुंपालटे नहीतेपादपमरण १७ । सूक्ष्मसंपराय दशमूंठाणूं सूक्ष्मसंलोभनोअसंस्थितमोभाग किट्टिरूपजेहनेहुएते सूक्ष्मसंपरायभावेवतंतोय

॥ भाषा ॥

तद्वतीति । तथासूक्ष्मसंपरायउपशमकः चपकोवासूक्ष्मलोभकषाय किठिकावेदको भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थि-
त नातीतागत सूक्ष्मसंपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बंधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थः पूर्वतरे गुणस्थानकेषुबंधंप्रतीत्या-
न्यासां व्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका साताप्रकृतिरुपशान्तिमोहादिषु बंधमश्रित्यनुयाति शेषाः षोडशेहैवव्यवच्छिद्यन्ते । यदाह नाणं ५
तराय ५ दसगं दंसणवत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडो मुहुमकसायं मिबोच्छिन्ना । सूक्ष्मसंपरायात्परेनबध्नंतीत्यर्थः ॥ साजानादीनि सप्त

ति तं० श्रान्तिणिणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनाणावरणे चरकु-
दंसणावरणं अचरकुदंसणावरणं उहीदंसणावरणं केवलदंसणावरणं सायावेयणिज्जं जसाकित्तिनामं उच्चागो-
यं दानंतरायं लानंतरायं जोगंतरायं उवजोगंतरायं वीरिअंतरायं इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए अत्ये-
गइयाणं नेरइयाणं सत्तरपलीनुवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

को तथा चपभावेवर्ततोयको एकसोवीसप्रकृतिबंधहे तेमाहिली सतरकर्म प्रकृतिनोबंधपाडे तेकहंछे । आंभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमश्रु-
तज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदंसणावरण ६ । अचक्षुदंसणावरण ७ । अवधिदंसणावरण ८ ।
केवलदंसणावरण ९ । सातावेदमौ १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानांतराय १३ । लाभानंतराय १४ । भोगानंतराय १५ । उपभोगानंतराय १६ ।
वीर्यांतराय १७ ॥ एणोएरत्नप्रभापृथिवीनिविषे केतलाएकनारकीनो सतरपल्योपमआउखीकह्यो । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीएं केतलाएकनारकीनो उत्कृष्टोस

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

रससागरोवमाइं ठिई प० बठीए पुढवीए अत्येगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु
माराणं देवाणं अत्येगइयाणं सत्तरसपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं
सत्तरसपलिनुवमाइं ठिई प० महासुक्कोकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सारेकंप्पे दे
वाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु
मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोंढरीअं महापोंढरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं जा
विअं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेषिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तरस
हिं अहमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेषिणं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्से

॥ मूल ॥

तरसागरोपमआउखोकह्यो । कूट्टीतमापृथिवीए केतलाएकनारकीनो जघन्यो सतरसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो सतरप
त्योपमआउखुकह्यो । सौधर्मईशानदेवलीके केतलाएकदेवतानो सतरपत्योपमआउखोकह्यो महाशुक्रदेवलीके सातमेदेवतानोउत्कष्टो सतरसागरोपमआउ
खोकह्यो । सहस्त्रार आठमेदेवलीके देवताने जघन्यो सतरसागरोपम आउखोकह्यो । सातमेदेवलीके जेदेवता सामायिक १ । सुसामायिक २ । महासामा
यिक ३ । पदम ४ । महापदम ५ । कुमद ६ । महाकुमद ७ । नलिन ८ । महानलिन ९ । पोंढरीक १० । महापोंढरीक ११ । शुक्र १२ । महाशुक्र १३ ।
सिंह १४ सिंहकांत १५ । सिंहविद १६ । भाविक १७ ॥ एणविमानेदेवतापणे उपनाके । तेहदेवतानो उत्कष्टोसतर सागरोपमआउखोकह्यो । जेहदेवतासतर

॥ भाषा ॥

दशविमानानां नामानौति ॥ १७ ॥ अथाष्टादशस्थानक मिहचाष्टीसूत्राणि स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सुगमानिच नवरंबंभेत्ति ब्रह्मचर्यं तथौदारिकका
म भोगान् मनुष्यतियंग् संबंधिविषयान् तथादिव्यकामभोगान् देवसंबंधिनइत्यर्थः तथासखुडहगवियत्ताणंति सहसुद्रकैर्यत्तैश्च येसुद्रकव्यक्ता तेषां तचसुद्र

॥ टीका ॥

हिं आहारठेसमुप्यज्जइ संतेगइया जवसिद्धिआजीवा जेसत्तरसहिं जयग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति
मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुरकाण मंतंकरिस्संति ॥ १७ ॥ अठारसविहेवंजे प० तं० ।
उरालिएकामजोगे नेवसयं मणेणं सेवइ नोविअन्तंमणेणं सेवावेइ मणेणंसेवंतंविअन्तं नसमणुजाणाइ उरालि
एकामजोगे नेवसयं वायाएसेवइ नेविअन्तंवायापसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्तंनसमणुजाणाइ उरालिएका
मजोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोविअन्तंकाएणंसेवावेइ काएणं सेवंतंवि अन्तंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामजोगे नेव

॥ मूल ॥

अर्द्धमासे पखयाडे स्वासीस्वासघणोले जंचोले नीचोस्वासमेले तेहदेवताने सतरर्धसहस्रे आहारनोअर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव जेसतरभवने आंतरे सीभ
स्ये बूभस्ये मंक्रास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्थे मोक्षजास्ये ॥ इतिसतरमंठाणंसंस्कृतं ॥ १७ ॥ हिवेअठारमोठाणोलिखियेहे । अठारमेदेवब्रह्मव्रतकह्योतिकहे
हे । उदारिककामभोग तेमनुष्यनास्त्रीअनेतियंचनीस्त्रीतेसाधेपंचेंद्रियानाविषयशब्दरूपतेकामप्राणरस स्पर्शतेभोगमनेकरीपोतिसवेनही १ । मनेकरीअनेरा
नेपिणसेवाडेनही २ । मनेकरी अनेराएंमैद्युनसेवतांप्रति अनुभायनानकरे ३ । औदारिक कामभोगनपोतेवचनेकरीसेवे ४ । ननिश्चयेंअनेरानेप्रतिवचनेकरी
वसेहे ५ वचनेकरी अनेराने प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनानकरे ६ । औदारिक कामभोगपोतेकायाएंनकरे ७ । अनेराने कायाएंनसेवाडे ८ । कायाएंनकरीअ

॥ भाषा ॥

कारः ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिस्वनियतविहारित्वं ९ नैपेधिकीसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमिः १० शय्यामनोश्चाऽमनोश्चवसतिः संस्तरकोवा ११ आक्रो-
शोदुर्वचनं १२ वधोयद्यादिताडनं १३ याच्नाभिचरणं तथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १५ तृणस्पर्शः संस्तरकाभावे तृणेषुशयानस्य १७ ज-
लःशरीरवस्त्रादिमलः १८ सत्कारपुरस्कारौ चवस्त्रादि पूजनाभ्युद्यानादिसंपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्करणं सम्माननं सत्कारपुरस्कारः १९ ज्ञानंसामान्येनम-
त्यादि कश्चिदज्ञानमिति श्रूयते २० दर्शनंसम्यग्दर्शनंसहनंचास्यक्रियादिवादिनां विवर्जनतः अमर्षेपिनिश्चलचित्ततयाधारणं २१ प्रज्ञास्वयंविमर्शपूर्वको वस्तुप-
रिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादादशांगःसचपंचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुर्याग ४ दूलिका ५ भेदात्तत्रदृष्टिवादस्य द्वितीयेप्रस्थाने

॥ टीका ॥

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे
अलाजपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जलपरीसहे सत्कारपुरस्कारपरीसहे पक्षापरीसहे अन्नाणपरी-
सहे दंसणपरीसहे दिठ्ठिवायस्सणंवावीसंसुत्ताइं ठेन्नठेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाणीए वावीसंसुत्ताइं

॥ मूल ॥

नोश्च तथामनोश्चवसती उपाश्रय तथा संथारानो परीसह ११ । अक्रोध वा दुर्वचनपरीसह १२ । वधयद्यादिके ताडनोपरीसह १३ । याचनाभिचानो
मांगिवो तेपरीसह १४ । अहारादिकनी अप्राप्ति तेपरीसह १५ । रोगमंदयाड तेहनोपरीसह १६ । संथारासंबंधी तृणतेनोपरीसह १७ । जलशरीर वस्त्रा-
दिकनोमल तेहनो परीसह १८ । सत्कार तेवस्त्रादिकनी पूजाऊठी ऊभायाइवो तेषकरी पुरस्कार सम्मान तेहनोपरीसह १९ । प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह-
नोपरीसह २० । ज्ञानमतिश्रुत तेनही तेअज्ञानपरीसह २१ । दंसणतेसम्यक्त तेहयकी जचलवो तेदंसणपरीसह २२ । दृष्टिवाद वारमो अंगतेहना पांचभेद

॥ भाषा ॥

हाविंशतिः सूत्राणि तत्र सर्वद्रव्यपर्याय नयायः स्तवनासूत्राणि छिन्नच्छेदयणादयान्ति इहयोनयः सूत्रं छिन्नच्छेदनेच्छति स छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगल
मुक्कट्टमित्यादिश्लोकः सूत्रार्थतः छेदनस्मितो न तीयादिश्लोकानपेक्ष्यते इत्येव यानिसूत्राणि छिन्नच्छेदनयवन्ति तानि छिन्नच्छेदनयिकानि तानि च स्वसमयायाः
जिनमतायितायाः सूत्राणां परिपाटीः पठति स्तयाः स्वसमयसूत्रपरिपाट्यां भवन्ति तथावाभवन्तीति तथा अछिन्नच्छेदयणपियाइन्ति इहयोनयः सूत्रमच्छिन्नच्छे
देनच्छति मां छिन्नच्छेदनयो यथा ॥ धम्मोमंगलमुक्कट्टमित्यादिश्लोकोऽर्थतोऽद्वितीयादिश्लोकमापेक्षमाण इत्येवं यान्यच्छेदनयवन्ति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानि ता
नि चाजीविकसूत्रपरिपाट्या गोशालकमतानुसारिणां भिदीयन्ते यस्मात्ते सर्वत्रयात्मकप्रतिबद्धसूत्रपटव्यां तथावाभवन्ति अचररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोऽन्यो

॥ टीका ।

अठिन्तठेयणाइयाइं अजावियसुत्तपरिवाहीए बावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरासिण सुत्तपरिवाहीए

॥ मूल ॥

परिकर्म १ । सूत्र २ । पूर्वगत ३ । प्रयमानुयोग ४ । चूतिका ५ । तिहां वीजभेद दृष्टिवादान्ता बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवायकी सूत्रकहिये छिन्नच्छेदनया
इतिनयक सूत्रते छिन्न कहतां इयां खंख्यां छिदये कवौले ते छिन्नच्छेदनय कहिये जिन धम्मोमंगलमुक्कट्टं इत्यादिश्लोक सूत्रार्थयकी छेदेवेकरी गह्यां वीजाश्लोकनी अपे
क्षा वांछानकरे एहवा जेसूत्र छिन्नच्छेदनयवन्त ते छिन्नच्छेदनयिकानि कहिये स्वस्तस्य जिनमत आयितभूत परिपाटी सूत्रपठतिने विषेके । बावीससूत्र अ
छिन्नच्छेदनयक छेदनयकहतां सूत्रछेदेवेकरी छिन्ननयी खंडितनयी ते अछिन्न छेदनय कहिये जिन धम्मोमंगल इत्यादिश्लोक अर्थयकी वीजाश्लोकनी वांछाकरी
ते बावीससूत्र अछिन्नच्छेदनयक आजीविक गोशालमत प्रतिबद्धसूत्र परिपाटी सूत्रपरतिने विषेके । बावीससूत्र चिकनयवन्त तेह गोशालकमतानुसारीय

॥ भाषा ।

न्यापेक्षमाणानिभवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाश्चिन्त्यन्ते यानिनयद्विकत्रिकनयिकानीत्युच्यन्ते त्रैराशिकसूत्रपाठ्या इहचैराशिकागो
 शालक्रमतानुसारिणोऽभिधीयन्ते यस्मात्तत्सर्वंश्चात्मकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवोजीवाजीवश्चेति तथालोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचिन्तायामपि ते
 विविधनयमिच्छन्ति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिकः उभयास्तिकश्चेति एतदेवनयत्रयमाश्रित्य त्रिकनयिकानीत्युक्तमिति तथाचउक्कनइयाइन्ति नयचतुष्का
 मिप्रायात्तेश्चिन्त्यन्तेयानितानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कंचैवं नैगमनयोद्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राहीच तत्रयः सामान्यग्राहीसंग्रहेऽतर्भूतो विशेषग्रा
 हीतुव्यवहारं तदेवंसंग्रहव्यवहारं ऋजुसूत्राः शब्दादित्रयंचैकएवेति चत्वारोनयाइति स्वसमयेत्यादि तथैवेतितथा पुद्गलानामखादीनांपरिणामो धर्मः पुद्गलप
 रिणामः सच पंचवर्णगंधद्वयरसपंचस्पर्शाष्टकभेदाद्विंशतिधा तथागुरुलघुरगुरुलघुइति भेदद्वयत्वेपाठाविंशतिः तत्रगुरुलघुद्रव्यं यत्तिर्यग्नामवाद्यादिः अगुरुल

वावीसंसुताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्तपरिवाप्तीए वावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० कालवस्सप
 रिणामे नीलवस्सपरिणामे लोहियवस्सपरिणामे हालिद्रवस्सपरिणामे सुक्खिल्लवस्सपरिणामे सुप्पिगंधपरि

सूत्रपरिपाटीएके । जिम नयचिन्तानेविषे त्रिणिशायी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोक
 २ लोकालोक ३ एहवा ३ के । राशीना बावीससूत्रके । बावीससूत्र चतुष्कनयवंतकद्धा नैगमनय १ संग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूत्रक २२ सूत्र
 स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेके । बावीसभेदे पुद्गलपरिणाम ऊपरमाणवादिक तेहने परिणामधर्म तेपुद्गलपरिणामकद्धा तेकहेके । कालव
 र्णंकारी परिणतव्याप्त तेकालवर्णपरिणाम १ । एमजनीलवर्ण परिणाम २ । लोहितरक्तवर्ण परिणाम ३ । हालिद्रपोतवर्णपरिणाम ४ । शुक्लश्वेतवर्णपरिणा

णामे दुष्प्रिगंधपरिणामे तिक्तरसपरिणामे कटुयरसपरिणामे कषायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे मञ्जरर
सपरिणामे कर्कशफासपरिणामे मनुष्फासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लज्जफासपरिणामे सीतफासपरिणा
मे उसिणफासपरिणामे णिष्ठफासपरिणामे लुरकफासपरिणामे अगुरुलज्जपरिणामे गुरुलज्जपरिणामे इमी
सेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं वावीसंपलिनुवमाइं ठिई प० ठठीए पुढवीए उक्कोसे
णं वावीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं जहन्तेणं वावीसं साग
रोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं वावीसंपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मोसाणेसु

॥ मूल ॥

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६ । दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७ । तीर्खेरसे परिणत तेतीक्ष्णरस परिणाम ८ । कटुकरस परिणाम ९ । कषायरस परिणाम १० ।
अंबिलरस परिणाम ११ । मधुररस परिणाम १२ । कर्कशस्पर्शकरो परिणतपुद्गल ते कर्कशस्पर्शपरिणाम १३ । मृदुस्पर्शपरिणाम १४ । गुरुस्पर्श परिणाम
१५ । लघुस्पर्शपरिणाम १६ । शीतस्पर्श परिणाम १७ । उष्णस्पर्श परिणाम १८ । स्निग्धस्पर्श परिणाम १९ । रुक्षस्पर्श परिणाम २० । अगुरुलघुस्पर्श परिण
तद्रव्य तैस्थिरसिद्धिचेत्र घंटाकारेरद्यामनुष्यचेत्र वाहिर जातिषविमान २१ गुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेतिर्यन्मामि जातिषविमान जाणिवो तथा वालुआ
दिक २२ एणोयैरत्तप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वावीसपल्यापम आउखोकह्यो कृष्णतमापृथिवीयेउत्कटो वावीससागरोपमआउखोकह्यो हंठेसातम
पृथिवीये केतलाएकनारकीनो जघन्योवावीससागरोपमआउखोकह्यो असुरकुमारकेतलाएक देवतानो वावीसपल्यापम आउखोकह्यो सौधर्मइशानदेवलोके

॥ भाषा ॥

धुर्यः स्थिरसिंहनेत्रं वण्टाकारवस्थितो ज्योतिष्कविमानादीनि । तथामहितादीनि षट् विमानानि ॥ २२ ॥ त्रयोविंशतिस्थानकं सुगममेव नवरं
 कप्पेसु अत्युगडयाणं देवाणं वावीसं पलिनवमाडं ठिई प० अचुत्ते कप्पेदेवाणं वावीसं सागरोवमाडं ठिई
 प० हेठिमहेठिमगेवेज्जगाणं देवाणं जहन्तेणं वावीसं सागरोवमाडं ठिई प० जेदेवा महिणं विसूहिणं
 विमलं पत्तासं वणमालं अचुत्तवत्थिसंगं विमाणं देवत्ताए उववन्ता तसिणं देवाणं उक्कासेणं वावीसं साग
 रोवमाडं ठिई प० तेणं देवाणं वावीसाए अठ्ठमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा
 तसिणं देवाणं वावीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया जवसिद्धिया जीवा जेवावीसं जवग्गह
 णंहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुरक्काणं अंतंकरिस्संति ॥ २२ ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

केतलाएकदेवतानो वावीसपल्लोपम आउखोकद्धो । अचुत्तवारमेलोके देवतानो उत्कथो वावीस सागरोपम आउखोकद्धो नवग्रैवेयकमां हिसगलाहेठिलो ग्रैवेयक
 एतलेपठिले ग्रैवेयकना देवतानो जघन्य वावीससागरोपम आउखोकद्धो । वारमेदेवलोके जेदेवता महित १ । विद्युत् २ । विमल ३ । प्रभास ४ । वनमाल ५
 अन्युतावतंसक ६ । एहक्खविमाने देवतापणे उपनाळे । तेहदेवतानो उत्कथो वावीससागरोपम स्थितिकही । तेहदेवतावावीस अर्द्धमासेपखवाडे स्वासो
 स्वाम घणाले नीचोमंके तेहदेवतानो वावीससहस्रवर्षे आहारनो अर्धरपजे । केतलाएकभव्यजीवजे वावीस भवने आंतरे सीमस्ये दृभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो
 अंतंकरिस्थे मोक्षजास्ये ॥ इति वावीसमां ठाणूं समुत्तम् ॥ २२ ॥ हिवेते वीसमोसमयायलिखिदेक्के । ते वीससूचकतांगवीजुं चंगं तेहना अध्य

॥ भाषा ॥

तेवीसंसुयगठ्जयणा प० तं० । समए वेतालिए उवसग्गपरिखा ल्येपरिखा नरयविज्जती महावीरथुई
कुसीलपरिजासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरिए आहत्तहिए गंथे जमईए गाथा पुंठरीए किरि
याठाणा आहारपरिखा पन्नस्काणकिरिआ अणगारसुयं अइइजं णालंदजं जंबूहीवेणंदीवे नारहेवासे
इमीसेणं उमप्पिणीए तेवीसाएजिणाणं सूरुग्गमणमुज्जत्तंति केवलवरनाणदंसणेसमुप्पसे जंबूहीवेणंदीवे
इमीसेणंसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वज्जे एक्कारसंगिणो होत्या तं० अजितसंजवअज्जिणंदणसुमई जाव
पासोवठ्ठमाणाय उसजेणं अरहा कोसलिए चाइसपुव्वी होत्या जंबूहीवेणंदीवे इमीसे उसप्पिणीए तेवीसं

॥ मूल ॥

यनकञ्जा तेकहेके । समय १ । वैतालिक २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्वीपरिज्ञा ४ । नरकविभक्ति ५ महावीरस्तुति ६ । कुसीलपरिभाषा ७ । वीर्याध्ययन ८
धर्माध्ययन ९ । समाधिनाम १० । मतनाम ११ । समोसरण १२ । याथातथ्यमान १३ । ग्रथनाम १४ । जमक १५ । गाथा १६ । ऐहमील अध्ययन प्रथम
श्रुतस्संधे बीजश्रुतस्संधे सात अध्ययनके तेकहेके । पंडरीक १७ । क्रियाठाणो १८ । आहारपरिज्ञा १९ । प्रत्याख्यानक्रिया २० । अणगारश्रुत २१ । आर्द्रकु
मार २२ । नालंदीनो २३ । जंबूडोपनेविषे भरतज्जेवने विपेणी अवसर्पिणीयं । आदिनाथकीमांढि पार्श्वनाथलग तेवीस जिनने तीर्थकरने सूर्यनेउदय मुहूर्ते
एतले प्रभाति केवलवर प्रधानज्ञान दर्शन उपनोन्नानतेविशेषावबोध दर्शनतेमामान्यावबोध गाथाचात्र तेवीमाणाना उपपन्नजिणवराणपुञ्जहं । वी
रमपहिमहा पमाणपत्ताइचरिमरइ ॥ १ ॥ जंबूहीप नामहीप इण अवसर्पिणीयं आदिनाथविना बीजाचेवीसतीर्थकर पहिलेभवे एकादशांगीहुया इग्यारथ

॥ भाषा ॥

तित्यंकरा पुत्रे मंलिरायाणो होत्या तं० अजितसंज्ञव अज्जिणंदण जावपासोवह्मणीय उसज्जेणं अरहा
 कोमलिए पुत्रजवे चक्कावही होत्या इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरो
 वमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुर
 कुमारणं देवाणं अत्येगइयाणं तेवीसं पलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्येगइयाणं तेवी
 सं पलिनुवमाइं ठिई प० हेठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे
 देवा हेठिमहेठिमगेवेज्जयविमाणंसु देवत्ताए उववन्ता तंसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं

गन गगामोहया । तेकहेछे । अजित १ । संभव २ । अभिनंदन ३ । सुमति ४ । जावत्तुअं पार्श्वनाथ छेहडे वहमानस्वामीलगे ऋषभनाथआदिअग्रिहन्त को
 गलना उपना पहिलेभवे वज्जनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया । जंवूहीपे भरतक्षेत्र एणी अवसर्पिणीयें त्रैवीसतीर्थकर पहिलेभवे मंडलीक राजाहुया ते
 कहें । अजितनाथ संभव अभिनंदन यावत् वहमानस्वामीलगे ऋषभ अग्रिहन्त कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्जनाभचक्रवर्तिहुया । एणीयें रत्नप्रभा
 पृथिवीयें केतलाएक नारकीनोतेवीस पत्थोपम आउखोकछो । हेठेसातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो तेवीस सागरोपम आउखोकछो । असुरकुमारदेव
 तानो केतलाएकनो तेवीस पत्थोपम आउखोकछो । सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानो तेवीस पत्थोपम आउखोकछो । हेठिममध्यम ग्रैवेयके एत
 ले वीर ग्रैवेयके देवतानो जवन्यतिवीससागरोपम आउखोकछो । जेदेवता हेठिम ग्रैवेयके पहिले ग्रैवेयके विमाने देवतापणे उपनाछे । तेदेवतानी उक्क

चत्वारिंशत्त्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तच्चमूत्रकृतांगस्य प्रथमेशुतुक्कंधेर्षोडशाध्ययनानि द्वितीयेमसतेषांचान्वर्थस्तदधिगमाधिगम्यइति ॥ २३ ॥ च
तुविंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेः प्राक् सुगमानिच नवरं देवानां भिन्नादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउत्ति जंबूद्वीपलक्षणवृत्तकेचस्य

॥ टीका ॥

ठिडं प० तेषां देवा तेषीसाए अष्टमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊमसंतिवा नीससंतिवा तेसिणं दे
वाणं तेषीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया जवसिधिया जीवा जे तेषीसाए जवग्गहणे
हिं भिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति मव्वदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥

॥ मूल ॥

चउद्धीसं देवाहि देवा प० तं० । उसज्ज अजित संजव अजिनंदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पह सुवि
धि सीअल सिज्जंस वासपूज्ज विमल णंत धम्म संति कुंधु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नंमी पास वरुमाण

ष्टौ तेषीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेषीसे पखवाडे स्वामोस्वामादिक बोलकरं ऊंचाले नीचांमके तेहदेवताने तेषीसवर्ष सहस्त्रे आहारनी वां
छाउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेवेषीसभवने आंतरं सीभस्ये वृभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्थे मोक्षजास्ये ॥ इति तेषीसमां समवाय मम्यत्तम्
॥ २३ ॥ द्विचे चावोसमां समवाय लिखियेहे । चावोस देवाधिदेव देवइन्द्रादिक तेषीसां हि अधिकादेव पूज्यपणायकीते देवाधिदेवकछा तेकहेहे ऋषभ १
अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । अयांस ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३
अनंत १४ । धर्म १५ । आंति १६ । कुंधनाथ १७ । अरनाथ १८ । मल्लिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । नेमिनाथ २२ । पार्श्वनाथ २३ । वर्धमान

॥ भाषा ॥

वर्षाणां वर्षधराणां ऋदिसीमाजीवोच्यते आरोपितम्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोश्च लघुहिमवच्छिखरिसत्कयोः प्रमाणं २४ ८ ३२ । अष्टविंशद्भागश्चयोजनस्य किं
विदिशेयाविक्रः अत्रगाथा चउत्रीससहस्राङ् नवयसएजोयणाणवत्तोसे चुह्रिमवंतजोवा आयामेणंकलहंवति ॥ १ ॥ कलार्द्धमिति एकोनविंशतिभागस्यार्द्धं
तच्चाष्टविंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिदेवस्थानानि देवभेदा दशभवनपतीनां अष्टौ व्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्कानां एकंकल्पोपपन्नं वैमानिकानां एवंचतुर्विंशतिः
सेन्द्राणि चमरेन्द्राद्यविष्टितानि शेषाणि च ग्रैवेयकानुत्तरसरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्राद्येषु ताम्यहमिन्द्राणि प्रत्यात्मिन्द्रकाणीत्यर्थः अतएव अनिन्द्राणि अवि
द्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशान्तिकर्मकारिणी उपलक्षणत्वात्पुरंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानीति तथा उत्तरायणगतः सर्वाभ्यंतरमण्डल
प्रविष्टः सूर्यः कर्कसंक्रांतिदिन इत्यर्थः चतुर्विंशत्यंगुलिकांपौरुष्यां प्रहरं भवाच्छाया पौरुषीया तांक्षायां हस्तप्रमाणशंकोरिति गम्यते निर्वर्त्य कृत्वा णंवाक्यालंका

॥ टीका ॥

चुह्रिमवंतसिहरीणं वासहरपद्मयाणं जीवानं चउत्रीसं चउत्रीसं जोयणसहस्राङ् नवयत्तीसे जोयणस
ए एणं अष्टत्तीसइन्नागं जोयणस्स किंचिविसेसाहिष्णुं आयामेणं प० चउत्रीसंदेवठाणासइंदिया प० से

॥ मूल ॥

२४ । मेरुयको तीनपर्वत दक्षिणदिसेहं तेमांहि छेहल्लो लघुहिमवंत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेहल्लो शिखरिए विहंवर्षधरपर्वतनी जोवात्तेवनी अने
वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४८३२ योजन नवसे वत्रीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अठ्ठीया ३८ थाय एहवी अर्द्धकला कांईक
विशेषाविक्र लांघणकही । चौवीस देवनास्थानक देवतानामेद् भवनपति १० व्यन्तर २० ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सेन्द्र

॥ भाषा ॥

॥ टीका

॥ मूल

॥ भाषा

निर्गमइहसंभायते नपुनर्यइत्यनप्रवहशब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमोवाविदसाक्षितसूत्रं हि जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यामिह चतुर्विंशतिक्रोसप्रमाणा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

णं चउवीसं पलिनुवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई
प० जेदेवा हेठिममज्जिमगेवेज्जायविमाणेसु देवत्ताए उववन्ता तेषिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोव
माइं ठिई प० तेषं देवा चउवीसाए अणमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेषि
णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जई संतेगइया जवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए जव
ग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्काण मंतंकरिस्संति ॥ २४ ॥
पुरिमपच्छिमगाणं तित्थकराणं पंचजामस्सपणवीसं जावणानु प० तं० इरिअसमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आ

॥ भाषा ॥

कह्यो । सौधर्म इशान देवलोके केतलाएक देवनो चौवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिम उपरिम ग्रैवेयक तेवीजं ग्रैवेयक तिहांना देवतानो जघन्यो चौ
वीस सागरोपम आउखोकह्यो । जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाके तेहदेवनो उक्कथो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता
चौवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक चारिबोलकरे तेहदेवताने चउवीसवर्ष सहस्त्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भवजीव जेचौवीस भवने आंतरे सौभ
स्ये बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति चौवीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ इवे पचीसमो समवाय लिखियेके । प
हिला श्रीआदिनाथनेवारे केहल्या महावीर तीर्थकरनेवारे यत्तीना पंचमहाव्रतनी पंचवीस भावनाकही महाव्रतराखिवाना उपाय तिहां पहिला महा

॥ ठीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

२४ ॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधनवरमिहस्थितेर्वाग्भ्यसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्मति पञ्चानांयामानां महाव्रतानां समाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा
ओत्ति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसंरक्षणायभाव्यन्ते इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रैर्यासमित्याद्याः पञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा
लोकभाजनभोजनं आलोकनपूर्वभाजनपानेभोजनं भक्तादेरभ्यवहरणं अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचिंत्यभाषणत्वादिकाद्विती
यस्यतत्रक्रोधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकास्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञानं ज्ञातायांचसीमायांस्वयमेव उग्राह
मिति अवग्रहस्यानुगृहणता पथात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः २ साधर्मिकाणां गौतार्थममुदायविहारिणां संविगानामवग्रहो मासादिकालमानतः पंचक्रो

लोयज्ञायणज्ञोयणं श्लादाणञ्जंमत्तनिरुक्तेवणासमिर्इ ५ अणुइतिज्ञासणया कोहविवेगे लोन्नविवेगे जयवि
वेगे हासविवेगे ५ उग्राहअणुणवता उग्राहसीमंजाणणया सयमेवउग्राहअणुगेरहणया साहम्मियउग्राहअणु

व्रतनो पांचभावनाकही तेकहेके । इर्यासमितौये मार्गे जोडेचालवो एहप्राणातिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानो उपाय १ । एमसगलेकहेके
मनीगुप्ति २ । वचनगुप्ति ३ । आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवो ४ । आदानलेवो भांडकहतां पात्रादिकनो निजेप मुंकर्यो तिहां समिति पूंजीकरी पके
लेवो मंजिवो ५ । हिवे बीजा महाव्रतनो भावना पांच विचारो बोलवो १ । क्रोधनो त्यागकांडिवो २ । लोभनो त्याग ३ । भयनो त्याग ४ । हासनो कांडिवो
५ । हिवे बीजा महाव्रतनो भावना पांच । गृहस्थने ओटलादिके रहिवानोअर्थ अवग्रह आज्ञानो जणावणो १ । अवग्रहग्रहस्थेदीधियके सीमामर्यादानो ज
णावणो २ । सीमाजालेश्वके स्वयमेवपोतेज अवग्रहनो अनुग्राहकता अंगीकारकरिवो रहिवो ३ । साधर्मिक अनेरा यतीने अवग्रहमागिएं तथा उपाययने

गादित्रैवरूपः साधर्मिकावग्रहस्ततो न चानुज्ञाप्यतस्यैव परिभोजनवतां स्थानं साधर्मिकाणां त्रैवैवसतीवा तैरनुज्ञात एव वास्तव्यमिति भावः ४ साधारणं सामा-
न्यं यज्ञज्ञादितदनुज्ञाप्याचार्यादिकं तस्य परिभोजनं चेति ५ ॥ तथा स्यादिसंस्तुतशयनादिवर्जनादिकाश्चतुर्दश प्रणीता हारोतिस्नेहवानिति । तथा श्रोत्रेन्द्रिय-
रागोपरत्यादिकाः पंचमस्य अयमभिप्रायो यो यत्र स जनितस्य तत्परिग्रहे वतरति ततश्च शब्दादौ रागं कुर्वता तेषां परिग्रहीता भवन्तीति परिग्रहविरतिर्विराविता

॥ टीका ॥

णुस्सवियपरिजुंजणया साहारणत्तपाणं णुस्सवियपरिजुंजणया ५ इत्यीपसुपंरुगसंसत्तगसयणासणवज्ज-
णया इत्यीकहविवज्जणया इत्यीणंइंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरत्तपुव्वकीलियाणं णुस्ससरणया पणीता-
हारवियज्जणया ५ सोइंदियरागोवरइ चरिंइंदियरागोवरइ घाणिंदियरागोवरइ जिप्पिंदियरागोवरइ

॥ मूल ॥

विधे तेहीज साधर्मिकयतीने अनुज्ञाप्य जणावीने परिभोजनतारहिवा ४ । साधारण सहने समुदाये भातपाणी विहस्योहाय तेह आचार्यादिकने अनु-
ज्ञाप्य जाणवीने भोजनता जिमिवा ५ । हिवे चौथाव्रतनी भावना ५ स्त्री पशु पंडकनपुंसके संस्तुतव्याप्त शय्यासननो वर्जिवा १ । स्त्रीसाथे कथानी वर्जिवा
१ । स्त्रीनाइन्द्रियनो मुखकुचादिकनो आलोकन जोइवा तेहनो वर्जिवा ३ । पूर्वगृहस्थपणे संभोगे क्रीडाकीधीहुइ तेहनो अनसंभारवा ४ । प्रणीत आहार
घृतदुग्धादिके अति सरस आहारनो वर्जिवा ५ । हिवे पांचमा महाव्रतनी पांचभावना । श्रोत्रेन्द्रिय राग मधुरगीतादिक कर्णनो विषय तेह उपरि राग
तेहनो उपरति छांडिवा १ । चक्षुरिन्द्रियराग २ । घ्राणेन्द्रियराग ३ । जिह्वेन्द्रियराग ४ । स्पर्शेन्द्रियराग एम पांचइन्द्रियनो विषयराग तेहनो छांडिवा ५ । जेह

॥ भाषा ॥

फासिंदियरागोवरई ५ मल्लीणंश्चरहापणवीसंधणुउहंउच्चत्तेणंहोत्या सवेविदीहवेयहपव्यापणवीसंजोयणाणि
 उहंउच्चत्तेणं प० पणवीसंगाऊआणिउच्चिहेणं प० दोच्चाएणं पुढवीए पणवीसं गिरयावाससयसहस्सा प०
 आयासरसणंनगवनं सचूलिआयस्स पणवीसं अज्जयणा प० तं० सत्यपरिस्सा लोगविजनु सीनंसणीअ
 सम्मत्तं । आवंति धुय विमोह उवहाणसुयं महपरिस्सा ॥ १ ॥ पिण्हेसण सिज्जिरिआ नासज्जयणायवत्य पए

॥ मूल ॥

परिग्रहने भागवोए तेपरिग्रह मांहिलेखवीये ५ मन्निनाथ उगणीसमा तीर्थकर अरिहंत पंचवीसधनुष ऊष्ठाऊंचपणेइया । सवलाइ दीर्घवैताव्य जंवूडीप
 मांहिल्या ३४ धातको खंडना ६८ पुष्कराईभाग ६८ एवं १७० दीर्घवैताव्यपर्वत पंचवीस योजन ऊंचोऊंचपणेकह्यो । पंचवीस पंचवीमगाऊ ऊंडपणे भू
 भिमांहि कथा । बोजी नरक पृथिवीये पंचवीस शतमहस्त्र एतले पंचवीसलाख नरकावामाकह्या । आचारांगना प्रथम पूज्यना पांचचूलिकासहितना पंच
 वीस अध्ययनकथा तेकहेके । शास्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ । सम्यक्त ४ । आवंती ५ । मतांतर लोकसार । धूताध्ययन ६ । विमोचाध्यय
 न ७ । उपधानश्रुत ८ । महापरिज्ञा ९ । पिडेपणाध्ययन १० । सिज्जा ११ । ईर्या १२ । भाषाध्ययन १३ । वस्त्रेषणा १४ । पात्रेगणा १५ । अवग्रह प्रतिमा
 १६ । सातासातक्रिया एवं २३ भावनाध्ययन २४ विमुक्तिनाम २५ बीजा श्रुतस्कांधना अध्ययन १६ उद्देशा २५ चारचूलिकामांहि अंतर्भ्याके अनेपांचमानी

॥ भाषा ॥

भवत्यन्यथावारोधितेतिवाचनांतरे आवश्यकानुसारेणदृश्यंते तथामिथ्यादृष्टिरेव तिर्यगत्या संक्षिप्तपरिणामइत्युक्तमयमपि द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तादिकाः कर्मप्रक
तोर्वध्नातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिगृहणं विकलेन्द्रियादित्रिचतुरिन्द्रियाणामन्यतमः णमित्यलंकारे पर्याप्तान्याअपिवध्नातीत्यप
र्याप्तगृहणमपर्याप्तकण्वद्येता अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावध्नातिमाप्येताः संक्षिप्तपरिणामोवध्नातीति संक्षिप्तपरिणामइत्युक्त मयमपिद्वीन्द्रियाद्यपर्याप्त

सा उग्राहपद्मिमा सत्तिकसनया ज्ञावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्जयणंपणवीसइमं मिच्छादिष्ठिगलिंदिए

सौय चूलिकानां अधिकारनयी परचूलिकाकही सूत्रमांहि तेमाटे इहांनिसीथपद गृह्यास्य विमुक्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकासहित पंचवीसनो जाणिवो
आचारंगं बीजोयुतस्कंधके तेमांहि पहिलेयुतस्कंधे नवअध्ययन तेमांहि नवमोअध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देशा १६ तेहदेवर्द्धिगणि चमाअम
णं विक्के दोपल्यापूछायं आठअध्ययन उगरां तेहना उद्देशा ४४ के एकावनमे ठाणलित्याक्के । हिवे बीजे युतस्कंधे अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामांहि
अंतर्भव्याक्केतो पहिला युतस्कंधना नवअध्ययन बीजे युतस्कंधे अध्ययन १६ एवं पंचवीम अध्ययनकह्या । अने पहिला युतस्कंधना ८ अध्ययनना उद्देशा
६० बीजा युतस्कंधना उद्देशा २५ सर्वमिली ८५ उद्देशाथया । हिवे बीजे युतस्कंधे १६ अध्ययनके तेमांहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपके
आगल्या ७ अध्ययन एकसरां बीजी चूलिकारूप पनरमं अध्ययन बीजी चूलिकारूप सोलमं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पांचमा निशीथाध्ययनेनो इहां अ
धिकारनथी । मिथ्यादृष्टि । विकलेन्द्रिय बद्धन्द्रिय तेइन्द्रिय चउर्गिन्द्रिय अपर्याप्तयका संक्षिप्तपरिणामे महाभंडो अध्यवसायें उपाज्योर्कर्म तेहनी पंचवीस उत्तर
प्रकृतिबांध तेकहेक्के । तिर्यचगति नामकर्म १ । विकलेन्द्रिय जार्दतनाम २ । औदारिक शरीरनाम ३ । तैजस शरीरनाम ४ । कामेण शरीरनाम ५ । हुंढक

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

क प्रायोग्यं वधाति तत्र विगलिं दिय जायनांमंति कदाचित् द्वीन्द्रिय जात्या एवमितरथापीति । गंगेत्यादि पंचविंशतिगं
व्यूतानि पृथुत्वेनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहन्तीति द्वयोर्दिशोः पूर्वतो गंगा अपरतः सिंधुर्गिर्यः पद्मद्विनिर्गते पंच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वा दक्षि

णं अपज्जत्तएणं संकिलिठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगल्लीनुणिवंधति तिरियगतिनामं विगलिं
दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेषुगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं ऊळगसंठाणनामं उरालियसरीरंगोवंग
नामं ठेवठसंघयणनामं वस्सनामं गंधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुत्तिनामं अगुरुलज्जनामं उवघाय
नामं तसनामं वादरनाम अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुज्जनामं दुज्जगनामं अणादेज्जना
मं अजसोकित्तिनामं निम्माणनामं २५ गंगासिंधूनुणंमहाणदीनुपणवीसंगाऊयाणि पोहत्तेणं घट्टमुहपवत्तिए

संस्थाननाम ६ । औदात्तिक शरीरना अंगोरांग ७ । छेवठसंघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यंचनी आनुपूर्वी
१३ । अगुरु लघुनाम १४ । उपवातनाम १५ । त्रमनाम १६ । वादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम
२१ । दोर्भाग्यनाम २२ । अनादियनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकर्म २५ । गंगामिंधूनदीपंचवीस पंचवीस गाऊनेप्रवाहे पिहलपणे पद्म
द्रव्यकी निकली पांचसय योजन हिमवंतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशि प्रवर्ती घट्टमुहपवत्तिएणं घडानामुखनीपरी पंचवीसकोस पिहलीजीभीये मगर
मुखप्रणालीये मुक्तावलीहारसंठाणे संस्थितप्रपात सययोजनोच्च हिमवंतपर्वतयकी हंठीउतरी गंगानदी गंगाप्रपात कुंडमां पढेके सिंधुनदी सिंधुप्रपाते पढे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

णाभिमुखेप्रवृत्ते घटमुहपवित्तिण्यंति घटमुखादिषु पंचविंशतिकीये पृथुजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्तेन मुक्तावलीनाम् मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं
स्थितेन प्रपतज्जलसंतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽधोवर्त्तिनोः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयोः प्रपततः एवंप्रकाररक्तवती नवरंशिखरिषर्षधरोपरि प्रतिष्ठित

णं मुक्तावलिहारसंठिण्यं पवातेण पठन्ति रत्नारत्नवर्द्धनं महाणदीनुपणवीसंगाज्याणि पोहतेण मकरमुहपवि
त्तिण्यं मुक्तावलिहारसंठिण्यं पवातेण पठन्ति लोकाविंदुसारस्सणं पुष्टस्स पणवीसंवत्सू प० इमीसेणं रयणप्प
जाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिनुवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्येगइया
णं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं पणवीसं पलिनुवमाइं
ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्येगइयाणं पणवीसं पलिनुवमाइं ठिई प० मज्झिमहेठिमगेवेज्जाणं दे

के । रत्नारत्नवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी पंचवीसगाऊ पिडुलपणे पुंडरीकद्रव्यको निकली शिखरी पर्वतउपरि पांचसय योजन चालीने मगरमु
खप्रणालीये मुक्ताहारसंठाणप्रपातेकरि हेठोउतरीके रक्ता रक्तकुंडमांहि पडेके । लोकविंदुमार चोदमा पूर्वना पंचवीसव
सुअविकार विधेयकह्या । एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनेविधे केतलाएक नारकीनो पंचवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठीये सातमी पृथिवीये केतलाएकनो
२५ सागरोपम आउखोकह्यो । असुर कुमार देवतानो केतलाएकनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो २५ पल्योप
म आउखोकह्यो । मध्यम हेठिम गैवेयके एतने ऊंचेगैवेयक विमाने देवतानो जवन्य २५ सागरोपम आउखोकह्यो । जेदेवता हेठिम उपरिम गैवेयके त्री

पुंडरीकद्विप्रपततइति तथाशोकविन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥

२५

॥ षड्विंशतिस्थानकं व्यक्तमेव नवरं उद्देशनकालाय वृत्तस्कन्धेऽध्ययने च याव

॥ टीका ॥

वाणं जहन्तेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते
सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा पणवीसाए अण्णमासेहिं अणमंतिवा पाण
मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया न
वसिष्ठियाजीवा जेपणवीसाए नवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदु
स्काण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥

॥ मूल ॥

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाहे तेहदेवतानो उक्कृष्टो २५ सागरोणम् आउखोकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडे स्वामीस्वास घणौले ऊंचौले नीचोमंके
तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्त्रे आहारनो अर्थउपजे । हेकेतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवने आंतरे सीभस्ये वृभस्ये मंकास्ये संसारना परितापथकी ठाढाथा
स्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्थे इति पंचवीसमो ठाणो सम्यत्तम् ॥ २५ ॥ हिवे छब्बीसमो समवाय लिखेहे । छवीस दशकल्प व्यवहारना उद्देश
नकाल जेह श्रुतस्कन्धे जेतला अध्ययनइया तेतला उद्देशनकाल उद्देशनना अवसरकक्षा तेकहेहे । दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना

॥ भाषा ॥

ठकष्यस्स दसववहारस्स अन्नवसिष्ठियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स ठ्वीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं०
 मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति जयं सोगं दुगंठा इमी
 सेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं ठ्वीसंपलिनुवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अ
 त्येगइयाणं नेरइयाणं ठ्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं ठ्वीसंपलिनुव
 माइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्येगइयाणं ठ्वीसंपलिनुवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्जा
 याणं देवाणं जहन्तेणं ठ्वीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेठिम गेवेज्जायविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देगन कालथया । जेहने अनादि अनंत अभव्यपणी सिद्धिनिष्पन्नहे ते अभव्यमिड कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चौथो तेहनीमूल २८ प्र
 कृतिके तेमांहि अभव्यजीवने त्रिपुंजी करणतो आवरे छवीसकर्मना अंगकर्मनी प्रकृति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेहे । मिथ्यात्व मोहनीय १ अनेसोले कषाय
 अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानो ४ प्रत्याख्यानो ४ संज्वलन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्यात्व मोहनी भेलतां १७ । प्रकृति
 स्त्रीवेद १८ । पुरुषवेद १९ । नपुंसकवेद २० । हास्य २१ । अरति २२ । रति २३ भय । २४ । शोक २५ । दुगंछा २६ । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीये केतलाएक
 नारकीनो छवीस पत्थोपम आउखोकछो । हेठोये सातमीपृथिवीये केतलाएक नारकीनो २६ सागरोपम आउखोकछो । असुरकुमार केतलाएक देवतानो
 २६ पत्थोपम आउखोकछो । सौधर्म देशाने केतलाएक देवता २६ पत्थोपम आउखोकछो । मध्यम २ ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रैवेयके देवतानो जघन्य २६

स्थयमान्युद्देशकावा तत्रतावन्तएवउद्देशमकाला उद्देशावसराःश्रुतोपचाररूपाइति । तथा अभव्यानांविपुंजीकरणाभावेन सम्यक्तमिश्ररूपंप्रकृतिद्वयं सत्ता
यानभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्मशाभवन्तीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिस्थानकमपिव्यक्तमेव केवलं षट्सूत्राणिस्थितैरर्वाक् तत्रअनगाराणां साधूनां
गुणाश्चारित्र्यविशेषाः अनगारगुणाः तत्रमहाव्रतानि पंचेन्द्रियनिग्रहाद्यपंच क्रोधादिविवेकाद्यत्वारः सत्यानिर्वाणि तत्रभावसत्यंशुदांतरात्मना करणसत्यंयत्प्र

॥ टीका ॥

तसिणं देवाणं उक्लोसेणं ठहीसंसागरोवमाइं ठिई प० तंणं देवा ठहीसाए अरुमासेहिं अणमंतिवा
पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तसिणं देवाणं ठहीसंवाससहस्सेहिं आहारठंसमुप्पज्जइ संतेगइया
जवसिष्ठिया जीवा जेठहीसेहिं जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु
स्काण मंतंकरिस्संति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं० । पाणाइवायानु वेरमणं
मुसावायानु वेरमणं अदिन्नादाणानु वेरमणं मेज्जणानु वेरमणं परिग्गहानु वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चरिक्कं

॥ मूल ॥

सागरोपम आउखोकछो । जेदेवता मध्यम हेठिम एतले चउथे ग्रैवेयक विमाने देवतापण उपनाछे तेहदेवतानो उक्कट्टो २६ सागरोपम आउखोकछो । ते
हदेवता छब्बीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणाले जंचोले नीचोमिले तेहदेवताने २६ वर्षं सहस्त्रे आहारनो अर्धउपजे । केतलाणक भव्यजीवजे २६ भवने आतरे
सीभस्ये ब्रूभस्ये मंकास्ये संसारदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये इति छब्बीसमो समवाय प्रोथयो ॥ २६ ॥ हिंवे सत्तावीसमो समवाय लिखेके
सत्तावीस अणगारना साधूना चारित्र्य विशेषरूपगुणकछा तेकहेके । प्राणातिपातनो विरमण १ । मृषावादनो विरमण २ । अदत्तादाननो विरमण ३ ।

॥ भाषा ।

तिलेखनादिक्रियां यथोक्तसम्यगुपयुक्तः कुरुते योगसत्ययोगानां मनःप्रभृतीनामवितथत्वं १७ खमाऽनभिष्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसंज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभा-
वः अथवा क्रोधमानयोरुदयनिरोधः क्रोधमानविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोर्निरोधः प्रागेवाभिहित इति नपुनरुक्ततापीति १८ विरागता अभिष्वंगमात्रस्य
भावः अथवा मायालोभयोरनुदयो मायालोभविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोस्तयोर्निरोधः प्रागभिहित इतीहापिनपुनरुक्ततेति १९ मनोवाक्कायानां समाहरण-
तापाठांतरतः समत्वाहरणता अकुशलानां निरोधास्त्रयः २० ज्ञानादिसंपन्नतास्त्रिस्तः २५ वेदनातिसहताशीताद्यतिसहनं २६ मारणांतिकातिसहनता क-

दियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे जिप्पिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लो-
जविवेगे जावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे रक्खमाविरागया मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया
नाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेयणञ्जहियासणया मारणांतियञ्जहियासणया जंबूदीवेदीवेञ्जि

मैयुननो विरमण ४ । परिग्रहणो विरमण ५ । श्रोत्रेन्द्रियनिग्रह ६ । चक्षुरिन्द्रिय निग्रह ७ । घ्राणेन्द्रिय निग्रह ८ । रसनन्द्रिय निग्रह ९ । स्पर्शनेन्द्रिय निग्रह १०
क्रोधनो विवेकत्याग ११ । मान विवेक १२ । माया विवेक १३ । लोभ विवेक १४ । भावमत्य शुद्धात्मास्त्रिवो १५ । करणसत्यइन्द्रियनिरोधप्रतिलेखनादि-
क क्रियानेविषे सावधानपणे प्रवर्तिवो १६ । योगसत्य मनःप्रभृतियोगविक कुशलतानुष्ठाने प्रवर्तिवो १७ । खमा क्रोधनोमाननो उदयनिरोध १८ । विराग-
ता केहसाथेप्रसंगनही १९ । मननो समाहरणता अकुशल व्यापारयको रुविवो २० । एम वचन समाहरणता २१ । काय समाहरणता २२ । ज्ञानकरी स-
म्पन्नता सहितपणी २३ । एम दंसण सम्यक्तसंपन्नता २४ । चारित्त संपन्नता २५ । वेदना अधिसहनता सातादिकनो सहिवो २६ । मारणांतिक अधिसहन

म्याणमित्रबुद्धामारणांतिकोपसर्गसहनमिति २७ तथा जंबूद्वीपिनधातकीखण्डादौ अभिजिद्वर्जैः सप्तविंशत्यानक्षत्रैर्व्यवहारः प्रवर्तते अभिजिद्वर्जस्थोत्तराषा
ठचतुर्थपादानुप्रवेशनादिति । तथामासोनक्षत्रचन्द्राभिवर्द्धित ऋत्वादित्यमासभेदा त्वंचविधान्योक्तनक्षत्रमासः चंद्रस्यनक्षत्रमण्डलभागकाललक्षणः सप्तविं
शतिरात्रिदिवानि अहोरात्राणीति रात्रिदिव्याग्रेणेत्यहोरात्रपरिमाणापेक्षदेदं परिमाणं नतुसर्वथातस्याधिकतरत्वादाधिक्यंवाहोरात्रसप्तषष्ठिभागानामेकविं
शत्येति । विमाणपुटवित्ति विमानानांपृथिवीभूमिका । तथावेदकसम्यक्त बंधाः चायोपशमिकसम्यक्कहेतुभृतशुद्धदलिकपुंजरूपा दर्शनमोहनीयप्रकृतिस्तस्य

इवज्जोहिं सत्तावीसाणुरक्तेहिं संववहारेवहति एगमेगेणंणरक्त्तमासे सत्तावीसाहिंराइंदियाहिं राइंदियग्गे
णं प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुटवी सत्तावीसं जोयणसयाइं वाहल्लेणं प० वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स

ता मारणांतिकोपसर्गनो सहिवो २७ साधुगुण । जंबूद्वीपनेविपे अभिजिद्वर्जं तेउत्तराषाढाना चौथापायामांहि पइठांछे तेमांटे अभीचिनक्षत्र वर्जिने अ
खिनी प्रमुख सत्तावीस नक्षत्रेकरौ व्यवहार प्रवर्तेछे । नक्षत्रमास १ । चंद्रमास २ । अभिवर्द्धितमास ३ । ऋतुमास ४ । आदित्यमास ५ । एवं पांचमासछे
तेमांहि एके नक्षत्रमासे सत्तावीस रात्रिदिवस एतले सत्तावीस अहोरात्रि । रात्रिदिव्याग्रे सत्तावीस अहोरात्रि प्रमाणं पूरयाय । सौधर्म ईशान देवलोक
विमाननो पृथिवी सत्तावीस योजनसय बाहुत्यपणे जाडपणेकही सत्तावीसमया इपुटवी पिंडाइति वचनात्कह्या । वेदकसम्यक्त बंध तेचायोपशमिक सम्य
क्तनो कारणभूत शुद्धदलिक रूप दर्शनमोहनीय प्रकृतिछे तेहनो उवरोति विद्योजक वेगलानो करणहार तेहने मोहनीय कर्मनी प्रकृति २८ छे तेमांही
सत्तावीस उत्तर प्रकृति सत्ताकम्मे सत्तापण्णेकही १६ कषाय ८ नोकषाय एवं २५ थई मिश्रमोहनो एवं १७ प्रकृतिसत्ताये हुए एकसम्यक्त मोहनौटली २८

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

उत्तरउत्ति प्राकृतत्वादुहलकाविर्याजकाजनुः तस्यमोहनौयकर्मणाष्टाविंशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कमांशाः सत्तायामित्यर्थः एकस्योहलि
तत्वादिति । तथायावणमासस्य शुद्धसप्तम्यांमूर्यः सप्तविंशत्यंगुलिकां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते पौरुषीक्षायां निर्वर्त्य दिवसस्त्रेचरविकरप्रकाशमाकाशनिव
र्द्धयन् प्रकाशहान्याहानिन्नयन् रजनोक्षेत्रमंधकाराक्रांतमाकाशमभिवर्द्धयन् प्रकाशहानिवृद्धिन्नयन् चारश्चरति व्योममण्डलेभ्रमणङ्करोति अयमत्रभावार्थ
इहकिलस्थूलन्यायमाश्रित्य आपाद्यांचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणा पौरुषीक्षायाभवति दिनसप्तके सातिरेकच्छायांगुलंवर्द्धते ततश्चयावणशुद्धसप्तम्यामंगुलत्रयंवर्द्धते
सातिरेकैकविंशतितमदिनत्वात्तस्याः तदेवमापाद्याः सातिरेकैरंगुलैः सहसप्तविंशतिरंगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुर्कसंक्रांतैरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगणीउ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसं
गुलियं पोरिसिच्छायं णिवृत्तइत्ताणं दिवसरक्केत्तंनिवहमाणे रयणिखेत्तंअग्निणिवहमाणेचारंचरइ इमीसेणं
रयणप्पत्ताए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलित्तवमाइंठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्ये

मोहिनौ मांहिथौ । यावणसुद्धि सातमदिने सूर्यहस्तप्रमाणे तृणनौ क्षायार्थेनापिये तेषां हि २७ अंगुलीयं पोरसीनौ क्षायाने निवर्तावी करीने दिवसनूक्षेत्र
सूर्यनोप्रकाश घटाडतोथको रात्रिनोक्षेत्र अंधकारनौकांत आकाशने वधारतोथको चारभ्रमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथकी पोसीपुनिमलगे मासे
मुहूर्तना ६१ भागकरी दिनप्रतिवेभाग दिवसघटाडौ रात्रिवधारि । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीविषे केतलाएक नारकौनो सत्तावीस पत्थोपम आउखोकझो
हंठिणं सातमो पृथिवीये केतलाएक नारकौनो सत्तावीस सागरोपम आउखोकझो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो सत्तावीस पत्थोपम आउखोकझो

तमंदिनं तत्रोक्तं पापौ सौख्याभावति ॥

२७

॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपि व्यक्तं नवरनिहपंच स्थितेः प्राक्सूत्राणि तत्राचारः प्रथमांगस्तस्य

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

गडयाणं नेरडयाणं सत्तावीसं सागरोवमाडं ठिडं १० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगडयाणं सत्तावीसं पलि
नुवमाडं ठिडं ५० सोहम्मसीसाणे सुकप्पेसु अत्थेगडयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिनुवमाडं ठिडं ५० मज्झिम
उवरिमगेवेज्जायाणं देवाणं जहन्तेणं सत्तावीसं सागरोवमाडं ठिडं ५० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जायविमाणेसु देव
त्ताए उववन्ता तंसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाडं ठिडं ५० तेणं देवा सत्तावीसाए अठ्ठमासे
हिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीसं वाससहस्सेहिं आहारठे स
मुप्पज्जइ संतेगडया जवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति
परिनिव्वाइस्संतिसव्वदुरक्काण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अष्टावीसविहे आचारपकप्पे ५० तं० ।

सौधर्मे इगान देवलोके केतलाएक देवतानो सत्तावीस पच्चीपम आउखोकछो । मध्यमउपरिम ग्रैवेयके एतले छठ्ठे विमाने देवतानो जवन्त्य सत्तावीस सागरो
पम आउखोकछो । जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रैवेयके विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानो उक्कृष्टी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही । ते
हदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्त्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवने आंतरे सीभस्ये वूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्स्ये मात्तजा
स्ये इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिंवे अष्टावीसमो समवाय लिखेछे । अष्टावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विपश्

॥ भाषा ॥

प्रकल्पोध्यनविशेषोनिशोथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोध्यवसायमित्याचारप्रकल्पः तत्रकचित्ज्ञानाद्याचारविषये अपराधमापन्नस्य कस्यचित् प्रायश्चित्तं दत्तं पुनरन्यमपराधविशेषमापन्नस्ततस्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यं मासिकं प्रायश्चित्तमारोपितमित्येवं मासिकारोपणाभवति तथापंचरात्रिकशुद्धियोग्यं मासिकञ्च शुद्धियोग्यं चापराधद्वयमापन्नस्ततः पूर्वदत्तप्रायश्चित्ते सपंचरात्रिमासिकप्रायश्चित्तारोपणात्सपंचरात्रमासिकारोपणापट् ६ एवं द्विमासिक्यः ६ त्रिमासिक्यः ६ चतुर्मासिक्यः ६ चतुर्विंशतिरारोपणाः तथा सार्द्धदिनद्वयस्य पक्षस्य चोपघातनेन लघूनां मासादीनां प्राचीनप्रायश्चित्ते आरोपणा उपघातिकारोपणा यदाह ॥ अहेण द्विद्वयं पुञ्जदेणं तु संजुयं काउं ॥ देज्जायलहुपहाणं गुरुदाणं तं त्तियं चेवत्ति ॥ यथामासादं १५ पंचविंशतिकाहं च माहेहादशवर्षं सर्वमौलने साहेममविंशतिरिलिधुमासाः तथामासद्वयार्द्धं मासो मासिकस्यार्द्धं पक्ष उभयमौलने सार्द्धो मास इति लघुद्विमासिकं २५ तथा ते मासमेव सार्द्धदिनद्वयानुवातनेन गुरुणा आरोपणा आनुघातिकारोपणा २६ तथा यावत्तानपराधानापन्नानावतीनां तच्छुद्धीनां आरोपणा कृत्स्नारोपणा

मासियाञ्चारोवणा सपंचरात्रिमासियाञ्चारोवणा सदसरात्रिमासियाञ्चारोवणा सपत्सरसरात्रिमासियाञ्चारोव

अथवा आचार तेषाधुना आचार ज्ञानादिकविषय तेह नो प्रकल्पस्थापितो ते आचारप्रकल्प अतो वीसभेदेकह्या तैकहेछे । किहां एक ज्ञानाचारविषये अपराधपास्यां तेह नो कांडक प्रायश्चित्तदीधो वली अनेरो अपराध सेव्यो तेओ तिहां पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग ते मासिकी प्रायश्चित्त आरोप्यो ते मासिकारोपणाहुई पहिली १ । सपंचरात्रेति पंचरात्रीयं शुद्धियोग्यं तथा मासं शुद्धियोग्यं एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पंचरात्रिसहित मासप्रायश्चित्त आरोपणाथकी सपंचरात्रि मासिकी आरोपणाकही बीजी २ । एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो ते दसरात्रि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

णा सवीसइराइमासियाआरोवणा सपंचवीसराइमासियाआरोवणा एवंचेवदोमासियाआरोवणा सपंचराइ
दोमासियाआरोवणा एवंतिमासियाआरोवणा चउमासियाआरोवणा उवघाइयाआरोवणा शुणुघाइया

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

मामिकारोपणा ३ । एमज सपनरसरात्रि मामिकारोपणा ४ । सवीसरात्रि मामिकारोपणा ५ । सपंचवीसरात्रि मामिकारोपणा ६ । एमज पूर्वनेप
री कहीने एकअपराधनो प्रायश्चित्तलाग्यो वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे वेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेवेमामिकारोपणाकही
७ । पंचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीये अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चित्तने पंचरात्रिसहित वेमासिक आरोपणाकर
वी तेसपंचरात्रि वेमामिकारोपणाकही ८ । एमज सदसरात्रि वेमामिकारोपणा नौमी ९ । सपनरसरात्रि वेमामिकारोपणा १० । सवीसरात्रि वेमामि
कारोपणा ११ । सपंचवीसरात्रि वेमामिकारोपणा १२ । पूर्वनीपरीछे विमामिकारोपणा एवं १८ । चौमामिकारोपणा एवं २८ मासनाअई १५ । अनेपूर्व
पूर्वपंचवीसनोअई १२ ॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनंअई मासवली मासाई १५ बिहंमि
लौ देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढावेदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७ ॥ दिनआरोपी तेहउपघातकारोपणा पंचवी
समी २५ । यदाह । अडेणक्षिसेसं पुब्बहेणंतु संजओकाओ । देजायलहुपहाणं गुरुदाणंतत्तियंचेव ॥ वेमासमांहियकी अढीदिनकाढी एतले १ मासदिन
साढासत्ताईस एहने उपघातकारोपणाकही तेमांहि अढीदिनघाति एतले पूरावेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतलो अपराधला
ग्योहोय तेहने तेतलीपूरी आलोयणां आरोपी तेहकृतस्मारोपणा २७ जेहने घणोजघणो अपराधलाग्योके परंछमासी उपरांत आलोयणनथी तोबीजा सग

२६ तथाब्रह्मनपराधानापन्नस्य षण्मासांतंतेषु इतिषण्मासाधिकतपःकर्मतेष्वेवांतर्भावांशेषांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साअकृतस्त्रारोपणेत्यष्टाविंशतिरेतच्च
सम्यग्निशीथविंशतितमोद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावांस्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणामाश्रित्यविवक्षितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्यैत
हातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायंतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिमूत्रेस्थिरास्थिरयोः शुभा

॥ टीका ॥

आरोवणा कसिणाआरोवणा अकसिणाआरोवणा एतावताआयारकप्ये एतावताय आयारियहे नव
सिद्धियाणं जीवाणं अत्येगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ
णिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया आनिणिबोहिअणाणे अठा

॥ मूल ॥

लायेंकर्म क्कमासीमांहि अंतर्भव्याक्के एमजाणी क्कमासीप्रते आरोपीये तेअकृतस्त्रारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रीने एतलेओ आ
चार आचरिवांकट्ठो । जेहने सिद्धिमुक्ति होणारोक्के तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चौथामोहनोयकर्मनी अठावीस कर्मनाअंशकर्मनीप्रकृतिसत्ताये
कही तेकहेक्के । सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनोय १ । मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्वमोहनो २ । सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनी एतले मिथ्यमोहनो ३ । सोलकषाय अणंता
नुबंधो यादिक कपकही संसार तेहनोआय लाभहोय जेहयकी तेकषाय कषायसरीखं फलदे तेहास्यादिकनव नोकषायकट्ठा सर्वमिली २८ प्रकृति मोह
नो कर्मनी एहसघली २७ में ठाणेंनिखीक्के । आभिनिबोविक ज्ञान ते मतिज्ञान अठावीसप्रकारेंकट्ठो तेकहेक्के । अंजेंद्रियनो अर्थावग्रह अर्थनो सामान्य

॥ भाषा ॥

शुभयोरादेयानादेययोश्चपरस्परं विरोधित्वेनैकदायस्यभावादयस्यभवरश्चभातोत्युक्तं तच्चैकग्रहग्रहणंभाषामात्रएवावसेयमिति नारकसूत्रेविंशतिस्ताएव प्रकृतयो

वीसइत्रिहे प० तं० सोइंदियअत्यावग्गहे चरिंदियअत्यावग्गहे घाणिंदियअत्यावग्गहे जिप्पिंदियअत्यावग्गहे
फासिंदियअत्यावग्गहे णोइंदियअत्यावग्गहे सोइंदियवज्जणोग्गहे घाणिंदियवज्जणोग्गहे जिप्पिंदियवज्जणोग्गहे
फासिंदिय वज्जणोग्गहे सोतिंदियइहा चरिंदियइहा घाणिंदियइहा जिप्पिंदियइहा फासिंदियइहा नोइंदियइ
हासोतिंदियावाए चरिंदियावाए घाणिंदियावाए जिप्पिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिय

प्रकारे ग्रहिवो ते प्रथमावग्रह १ समयरहे १ चक्षुरिंद्रियकरी कांडक अर्थनो ग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रियार्थावग्रह २ । एम घ्राणेंद्रियार्थावग्रह ३ । जिह्वेंद्रियार्थाव
ग्रह ४ । स्पर्शेंद्रियार्थावग्रह ५ । नोइंद्रियमन तेहनो अर्थवग्रह तेह नोइंद्रियार्थावग्रह ६ । शब्दना पुद्गलआवी कानना इंद्रियमांहि भराइ तिवारपक्की
शब्दज्ञान उपजे ते श्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह ७ । गंधपुद्गल नामिकामांहि आवी भराइ तिवारपक्की गंधज्ञान उपजे ते घ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रह ८ । एम जिह्वें
द्रिय व्यंजनावग्रह ९ । स्पर्शेंद्रिय व्यंजनावग्रह १० । आंखौने अने मननो व्यंजनावग्रह नहोय तेमाटे ४ व्यंजनावग्रह जाणिया । श्रोत्रेंद्रियेकरी शब्दनेविपे इहा
देवो आलोचवो जेह पुरुषनो शब्दकरेस्त्रीनो एह श्रोत्रेंद्रियइहा ११ । आखेंकरी आलोचवो स्थाणुर्वापुरुषोवा एह चक्षुरिंद्रियइहा १२ । एम घ्राणेंद्रियइहा १३
जिह्वेंद्रियइहा १४ । स्पर्शेंद्रियइहा १५ । नोइंद्रियइहा १६ । तेमनकरी आलोचवो । इहा १ मुहूर्तलगेरहे । श्रोत्रेंद्रियावाय श्रोत्रेंद्रियेकरी निश्चयकरिये ते
श्रोत्रेंद्रियावाय १७ । एम चक्षुरिंद्रियावाय तेस्त्रीलाने ऊपरिकागवइठो एखीलोज एहवो निश्चयार्थ तेचक्षुरिंद्रियावाय १८ । इम घ्राणेंद्रियावाय १९ । जिह्वें

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

धारणा चरिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिह्मिंदियधारणा फासिंदियधारणा नोइंदियधारणा ईसाणेणं
 कपे अठावीसंविमाणवाससहस्सा प० जीवेणदेवगइम्मिवंधमाणे नामस्सकम्मस्स अठावीसउत्तरपगणी
 उ णिवंधति तं० देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउह्वियसरीरनामं तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं
 समचउरंसमंठाणणामं वेउह्वियसरीरंगोवंगनामं वस्सनामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुह्विनामं अगु
 रुलज्जनामं उवघायनामं पराघायनामं जसोनामं पसत्यविहायोगइनामं तसनामं वायरनामं पज्जत्तनामं

द्रियावाय २० । स्पर्शनेंद्रियावाय २१ । नोइंद्रियावाय तेमनेकरी निश्चयार्थकरिवा २२ । अवाय अर्द्धमुहर्त्तरहै । पूर्वकाननेकरी शब्दसांभल्योहीय तेषांभलि
 ये तयोत्रिंद्रियधारणा २३ । नेत्रेकरी संभारिये तेचक्षुरिंद्रिय धारणा २४ । एमज घ्राणेद्रिय धारणा २५ । जिह्वेद्रियधारणा २६ । स्पर्शनेंद्रियधारणा २७
 नोइंद्रियधारणा जेमनेकरीसंभारवो २८ । एहधारणा कालसंख्याता असंख्यातालंगिरहै । एहमतिज्ञानना २८ भेदकह्या । ईशान वीजे देवलोके अठावीसला
 खविमान भगवंतेकह्या । जीवदेवतानो भवबांधतीथको नामकर्मछठो तेहनी १०३ उत्तर प्रकृतिके तेमांहियो २८ उत्तरप्रकृतिबांधे तेकहेछे । देवगतिना
 मकर्म १ । पचेंद्रिय जातिनाम २ । वैक्रियशरीर नाम ३ । तैजसशरीर नाम ४ । काम्मणशरीर नाम ५ । समचउरंससंस्थान ६ । वैक्रिय शरीरांगोपांग ७ ।
 वर्णनाम ८ गंधनाम ९ । रसनाम १० । फरसनाम ११ । देवानुपर्वीनाम १२ । अगकलधनाम १३ । उणवातनाम १४ । परावातनाम १५ । यशनाम १६
 प्रशस्त विहायोगतिनाम १७ । वसनाम १८ । वादरनाम १९ । पर्याप्तनाम २० । प्रत्येकशरीरनाम २१ । स्थिर तथा अस्थिर एहविहुंमाहे अन्यतर अनेरो

पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणंदोरहं अस्सयरं एगनामं निवंधइ सुत्त
गनामं सुस्सरनामं आइज्जअणाइज्जनामेणं दोरहं अस्सयरं एगनामं निवंधइ जसोक्कित्तिनामं निम्माणनामं
एवंचेवनेरइयाविनाणत्तं अप्पसत्यविहायोगइनामं ऊंरुगसंठाणनामं अपिरनामं दुप्पगनामं असुत्तनामं दुस्स
रनामं अणादिज्जनामं अजसोक्कित्तीणामं डुमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावी
सं पलिनुवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावीसं सागरोवमाइं ठिई
प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिनुवमाइं ठिई प० सेहम्मसीसाणेसु कप्पेसु देवाणं

॥ मूल ॥

एकनामवांधे २२ शुभतथा अशुभ एहविहंमांहे एकवांधे २३ । शुभगनाम २४ । सुस्सरनाम २५ । अदेयनाम अनादेयनाम एहविहंमांहे एकनामवांधे २६
यशकीर्त्तिनाम २७ । निर्माणनाम २८ । एमज जीवनेरक गतिनां वंधकरतो एहीज २८ नाम कर्मनी प्रकृतिनां वंधकरे । एतलो विंशेप जाणिवो इहां अप्र
यस्त विहायोगतिनाम १ । हुंडकसंस्थान २ । अस्थिरनाम ३ । दुर्भगनाम ४ । अशुभनाम ५ । दुस्सरनाम ६ । अनादेयनाम ७ । अजस अकीर्त्तिनाम ८ । नरक
गतो ९ । नरकानुपूर्वो १० । एह १० प्रकृति बीजो प्रकृति १८ देवगतिमांहिली लीजे एतले २८ प्रकृति नरकगतिये नामकर्मनी होय । एणीये रत्नप्रभा प
हिली नरक पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो अठावीस पत्थोपम आजखाकह्यो । नीचे सातमी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो अठावीस सागरोपम
आजखाकह्यो । असुरकुमार देवतानी केतलाएकनी अठावीस पत्थोपम आजखाकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोकने विषे केतलाएक देवतानी अठावीस

॥ भाषा ॥

ऽष्टानां तु स्थाने अष्टावत्याश्चाति एतदेवाह एवं चेवेत्यादि नानात्वं विशेषः ॥

२८

॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि

॥ टीका ॥

स्थितेः प्राक् तत्र पापोपदानानि श्रुतानि तेषां प्रसंगस्तथासेवनारूपः पापश्रुतप्रसंगः । स च पापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधोक्तः पापश्रुतविषयतया

॥ ७८ ॥

अथेगइयाणं अष्टावीसंपलिनुवमाइं ठिई प० उपरिम हेठिम गेवेज्जायाणं देवाणं जहन्नेणं अष्टावीसंसा
गरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिम उपरिम गेवेज्जाएसु विमाणेसु देवत्ताए उपवन्ता तेसिणं देवाणं उ
क्कोसेणं अष्टावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अष्टावीसाए अण्णमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा
ऊसमंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं अष्टावीसाए वाससहस्सेहिं आहारठंसमुप्पज्जइ संतेगइया जवसि
हियाजीवा जेअष्टावीस जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुस्काण
मंतंकरिस्संति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहेपावसुयपसंगेणं प० तं । ज्ञोमे उप्पाए सुमिणे अं

॥ मूल ॥

पत्थापमनी स्थितिकही । उपरिम हेठिम एतले सातमे अवेयक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही । मध्यम उपरिम एतले सातमे क्खेयैवे
यक विमाने जेदेवतापणे उपनाक्के तेदेवतानी उक्कृष्टी अष्टावीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता अष्टावीस पखवाडे सामोखास ऊंचोले घणीले नीचोमे
ले तेदेवताने अष्टावीस वर्षसहस्रगये आहारनी वंक्क उपजे । केकतलाएक २ व्यजीव जेअष्टाईस भवने आंतरे सीभस्ये बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनी अंतकर
स्ये मोक्ष जास्ये अष्टावीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिवे गुणतीसमो समवाय लिखियेक्के । उगुणतीस प्रकारे पापश्रुत पापनाकारण जेहस्यु

॥ भाषा ॥

पापश्रुतान्येवाश्चतेऽतएवाह भौमेऽत्यादि तत्रभौमं भूमिविकारफलाभिधानप्रधानं निमित्तशास्त्रं तथाउत्पातं मङ्गजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं ॥ टीका
 निमित्तशास्त्रं एवंस्वप्नं स्वप्नफलाविर्भावकं अन्तरिक्षमाकाशप्रभवगृहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदकं अंगशरीरावयवप्रमाणस्यदितादिविकारफलोद्भावकं स्वरंजी
 वाजोवायितस्वरस्वरूपफलाभिधायकं व्यञ्जनममपादिव्यंजनफलोपदेशकं लक्षणं सांख्यनायनेकविधलक्षणव्यत्यादक मित्यष्टावैतान्येवसूत्रवृत्तिवार्त्तिकभेदाश्चतु
 र्विंशतिः तत्रांगवर्जितानामन्येषां सूत्रं सहस्रप्रमाणं वृत्तिलेखप्रमाणावार्त्तिकं वृत्तेर्वाख्यानरूपकांठिप्रमाणं मंगस्यतुसूत्रलक्षणं वृत्तिः टीकावार्त्तिकमपिपरिमि
 तमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादनपराणि कामन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादीनिवागाशास्त्राणि २५ तथाविज्ञानुयोगोरोहिणीप्रभृतिविद्या

तरिस्के च्छंगे सरे वंजणे लरकणे भौमेतिविहे प० तं० सुत्रे चित्ती वत्तिए एवंएकैकान्तिविहं विकहाणुजोगे ॥ मूल

तशास्त्रं तेषापश्रुतं तेहनोप्रसंगं सेवारूपं तेषापश्रुतप्रसंगं कक्षा । तेकहेके । भौमशास्त्रं जेभूमिकंपादिक फलनो सूचकशास्त्र १ । उत्पातशास्त्रं जेआकाशथी
 रुधिर वृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहनां फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अन्तरिक्ष आकाशथी उपनो गृहादिकनो युद्ध तेहनो फल
 सूचक ४ । अंगफुल्लण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरस्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यंजनममतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ ।
 प्रथम भौमशास्त्रं कक्षा तेविहंभेदै कहैके । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेकरी एमजपूर्वं अष्टांग निमित्तकक्षा तेविहंभेदै । एवं सर्वमिली २४ भेदयथा
 विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विज्ञानुयोग रोहिणी प्रज्ञास्थादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मंत्रानुयोग चेडादि

॥ भाषा

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेष्टकादिमंत्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणि पापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणादिकानि हरमेखलादि
योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्यः सकाशाद्यः प्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुतत्त्वानामनुयोगो विचारस्तत्करणार्थं शास्त्रसन्दर्भद्वयार्थः
सांज्यइति २९ तथापाठादय एकांतरितापणमासा एकोनविंशद्रात्रिदिवसपरिमाणेन भवन्ति स्थूलन्यायेन कृष्णपक्षे प्रत्येकं रात्रिदिवसैकस्य च यादाह च । आसाढब
हुलपक्षे भद्रव एकत्ति एअपोसेअ फगुणवडसाहेसुय बोधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमत्र भावना चन्द्रमासोहि एकोनविंशद्दिनानि दिनस्य च द्विपट्टिभागानां द्वाविं
शत् ऋतुमामय त्रिंशदेवदिनानि भवन्तीति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमामाऽहोरात्रिपट्टिभागानां त्रिंशतामाधिको भवति ततश्च प्रत्यहोरात्रं चंद्रदिनमेकैकेन द्विप

॥ टीका ॥

त्रिज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जांगाणुजोगे अण्णतिलियपत्रत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगूणतीसराइंदिअइरा
इंदियग्गेणं प० जह्वएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे फगुणेणंमासे वडसाहेणंमासे मासोचंददिणाणं

॥ मूल ॥

कमंत्रसाधनापायशास्त्र २७ । योगानुयोग योग वशीकरणापायादिशास्त्र हरमेखलादि २८ । अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिकथी प्र
वर्त्या पोतानो आचार तेहना अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रममृह अर्थ २९ । आसाढमास गुणतीस रात्रिदिवसना २९ रात्रीदिवस परिमाणे पूराथाय
एकतियि अंधारा पखवाडानी घट्टे एम एकांतरित केपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना थाय । यदाह ॥ आसाढबहुलपक्षे । भद्रव एकत्ति एअपोसेअ ॥
फगुणवेसाहेसुय बोधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवा मास २९ रात्रिदिवसना । कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसना । पौसमास २९ रात्रि दिवसना ।
फागुणमास २९ रात्रिदिवसना । वैशाखमास २९ रात्रिदिवसना । चंद्रदिवस पडिवातियि एगूणतीसमुहर्त्त भांभेरानी २९ मुहर्त्तनां कश्चो । जीवभला

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

विभागनहोयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्टाचंद्रद्विसप्ततमेकपथ्यहाराणांभवतीति विशेषस्त्विहचंद्रप्रज्ञमेवसेयइति तथाचन्द्रदिग्गतिं चंद्रदिनं प्रतिपदादि
कातियिः तच्चैकोनविंशमुहूर्त्ताः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनविंशदिनानि । विंशच्चदिनद्विषष्टिभागाभवन्ति ततश्चंद्रदिनं चंद्र
मामस्यविंशतागुणनेनमुहूर्त्तराशीकृतस्यविंशताभागहारः एकोनविंशमुहूर्त्ता द्वाविंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्टिभागालभ्यंतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसीनादिविशेषे
णवैमानिकेष्वुत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनविंशदुत्तरप्रकृतीवेध्नाति ताश्चेमाः देवगतिः १ पंचेन्द्रियजातिः २ वैक्रियइयं ४ तैजसकर्मणशरीर ६ समचतु
रसंसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्कं ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघातं १४ पराघातं १५ उच्छ्वासं १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ व्रसं १८ बादरं १९ पर्याप्तं
२० प्रत्येकं २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ शुभगं २४ सुखरं २५ आदेयानादेययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थं

एगूणतीसंमुहुते सातिरेगेमुहुतगेणं प० जीवेणंपसत्यज्जवसाणजुते जविणसम्मदिठी तित्यकरनामसहियान
णामस्सणियमा एगूणतीसंउत्तरपगह्णानुनिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेषु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेणं रयणप्प

अध्यवसाय युक्तथको भव्यक सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निधे २८ उत्तर प्रकृति बांधीने वैमानिक देवतानेविषे देवतापण उपजे । ते
कहेछे । देवगति १ । पंचेन्द्रिय जाति २ । वैक्रिय शरीर ३ । वैक्रियांगोपांग ४ । तैजस ५ । कर्मण ६ । समचउरंससंस्थान ७ । वर्ण ८ । गंध ९ । रस १० ।
स्पर्श ११ । देवानुपूर्वी १२ । अगुरुलघु १३ । पराघात १४ । उपघात १५ । यशनाम १६ । प्रशस्तविहायोगति १७ । व्रस १८ । बादर १९ । पर्याप्त २० ।
प्रत्येक २१ । स्थिर अस्थिर मांहियेक २२ । शुभ अशुभ मांहियेक २३ । शुभग २४ । सुखर २५ । आदेय अनादेय मांहियेक २६ । यशः कीर्ति २७ । निर्माण

जाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं
 नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं
 ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिउवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम
 गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्तेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु
 देवत्ताए उववन्ता तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगूणतीसाए अ
 रुमासेहिं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं
 आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया जवसिद्धिया जीवा जेएगूणतीसंजवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति वुज्जिस्संति मु

२८ । तीर्थकरनामकर्म २८ । एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेधिपें केतलाएक नारकीनीं २८ पल्लोपमनी आजखो कह्यो । हेठें सातमी पृथिवीयें
 केतलाएक नारकीनीं २८ सागरोपमनी आजखो कह्यो । असुरकुमार केतलाएक देवतानीं गुणचीस पल्लोपमनी स्थितिकही । सौधर्म ईशानेकल्पे केत
 लाएक देवतानीं २८ पल्लोपम आजखोकह्यो । उपरिम मध्यम ग्रैवेयके एतले आठमें ग्रैवेयके देवतानी जघन्यतः २८ सागरोपमनी स्थितिकही । जेहदेव
 ता उपरिम हेठिम ग्रैवेयके एतले सातमे विमाने देवतापण जपनाके तेदेवतानी उक्कृष्टी २८ सागरोपमनी स्थिति कही । तेहदेवताने २८ पखवाडे सासो
 साम चार प्रकारहोय । तेहदेवताने २८ सहस्रें वर्षगए आहारनी इच्छा उपजे । के केतलाएक भव्यजीव जे २८ भवने आंतरे सीभस्ये बूभस्ये मूकास्ये सं

कांश्चेति ॥ २८ ॥ विंशत्तमं स्थानकं सुगमं नवरं स्थितं र्वागष्टौ सूत्राणि तत्र मोहनीयं सामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतश्चतुर्थीप्रकृतिः तस्य स्थानानि निमित्तानि मोहनीयस्थानानि तथा आवृतस्तेत्यादि श्लोकः यथा यंत्रसान्प्राणान्स्थ्यादीन् वारिमध्ये विगाह्य प्रविश्यादकेन शस्त्रभूतेन मारयति कथमाक्रम्य पादादिनाम इति गम्यते मार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वात्संस्क्रियत्तत्वाच्च भवशतदुःखवेदनोयमात्मनो महामोहं प्रकरोति १ तदेवं भूतं वसमारणैकं मोहनीयस्थानमेवं सर्वत्रेति २ मीमांश्लोकः शीर्षावेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेन यः कश्चिद्वेष्टयति स्त्र्यादिवसानिति गम्यते अभीष्टं भृशं लीव्रोऽशुभः समारः स इति इत्यस्य गम्यमानत्वात्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेन प्राक्तनो महामोहं प्रकुरुत इति यावत्करणत् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

॥ टीका ॥

चिरिस्सन्ति परिनिष्ठाऽस्सन्ति सव्वदुस्काण मन्तं करिस्सन्ति ॥ २९ ॥ तीसं मोहणियठाणा प० तं० । जेयावितसेपाणे । वारिमज्जेविगाहिया ॥ उदण्णकम्ममारिइ । महामोहं पकुव्वइ ॥ १ ॥ सीसावहेइ जेकेइ ।

॥ मूल ॥

मारना परितापथी ठांढायासे सर्वदुःखनो अंतकरिस्सि मोक्षजास्ये । इति गुणत्रोसनो ठाणो समत्तम् ॥ २८ ॥ द्विवे तीसमो ठाणो लिखियेहे त्रीस मोहनीकर्मना ठाणाकह्या । तिहां सामान्येकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म प्रकृति तेमोहनीयकर्म तेहना स्थानक त्रीसकह्या । तेकहेह्ये । जेकोइ स्त्रीआदिक वस प्राणाने पांणीमांहे बोलौने उदक शस्त्रं करीने आक्रमे तेमहामोहनीय कर्मबांधे । भवनाशतसहस्रलगे वेदनोयकर्म उपार्जे १ । शीर्षा वेष्टनं करी चर्ममय बांधे करी जेकोइ प्राणीनो मस्तक अत्यर्थे बीटै तीव्र अशुभ समाचारनो धणी आगला मारताने महामोह उपजाविवा पणायकी आत्माने

॥ भाषा ॥

चित्पट्यंत एवेतितेयाख्यायन्ते २ पाणिनाहस्तेनसंपिधाय स्थगयित्वाकितत् आतोरंधंमुखमित्यर्थः तथाआवृत्यावरुद्धा प्राणिनंततः अंतर्नदंगलमध्येरदं कुर्वंत
 वुरुगुगयमाणमित्यर्थः मारयतिमइतिगम्यते महामोहंप्रकरोतीतिद्वितीयं ३ जाततेजसंवैज्ञानरं समारभ्यप्रज्वाल्यबहुंप्रभूतं अवरुध्यमहामण्डपवाटादिषुप्रक्षि
 प्यजनंलोकं अंतर्मध्यंधूमेन वज्रिलिगेन अथवा अंतर्धूमोयस्यामावंतर्धूमस्तेनजाततेजसा विभक्तिपरिणामात् मारयति योसौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्थं ४
 गौर्धगिरमियः प्रहंतिखड्गमुद्गरादिना प्रहरतिप्राणिनमितिगम्यते किंभूतेस्वभावतः शिरसिउत्तमांगे सर्वावयवानां प्रधानावयवे तद्विवातेऽवश्यंमरणा चेतसा

आवहेइच्छाजिस्कणं ॥ तिहासुन्नसमायारे । महामोहंपकुवुड ॥ २ ॥ पाणिणासंपहित्ताणं । सयमाचरियपा
 णिणं ॥ अंतोनदंतंमारिड । महामोहंपकुवुड ॥ ३ ॥ जायनेयंसमारप्प । वज्जुनरुंजियाजणा ॥ अंतोधूमेण
 मारिड । महामोहंपकुवुड ॥ ४ ॥ सीमम्मिजेपहणड । उत्तमंगम्मिचेयसा ॥ यिज्जमत्ययंफाले । महामोहंप
 कुवुड ॥ ५ ॥ पुणापुणापणिधिण । हरित्ताउवहसेजणं ॥ फलेणअदुवदंणेण । महामोहंपकुवुड ॥ ६ ॥ गूढा

महामोह उपार्जे २ । हाथेकरी आगलानां मुखरुंधी आच्छादी भीचनें गलामांहे धुधुराट शब्दकरताथकानेमारि तेमहामोहनौय कर्मउपार्जे ३ । जाततेजा
 अग्नि वहीत प्रज्वालीने वाडादिकने अवरुंधीने रीकीने अन्तां मउपार्जिकमां धूमेकरी मारि तेमहा मोहनौय कर्मकरं ४ । जेप्राणी दुष्टपरिणामे करी प्राणी
 ना उत्तमांगने मांथानेविधे खड्गादिकंकरौ मारि विहचौनेमस्तकने काटीने मारि तेपुरुष महामोहनौयकर्म उपार्जे ५ । पुनः पुनः वारंवार कपटे करीने जि
 मवाटपाडा वाणियांनो वेशकरीन मार्गे परने साथचालीनेमारि मारीने आनंदपणायकौ उपहसे विजोरादिक फलेकरी अथवा दंडेकरी हन्यमान मूर्खज

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

संक्रिष्टेन मनसा यथाकथंचिदित्यर्थः तथाविभज्यमस्तकं प्रकृष्टप्रहारदानेन स्फोटयति विदारयति ग्रीवादिकं कायादपोतिगम्यते स इत्यस्य गम्यमानत्वात् मह
मोहं प्रकरोतीति पचमं ५ पोतानुपुन्येन प्रणिविनामायातः यथा २ वर्णिजकादिवेषं विधाय गलावर्त्तकाः पश्चिगच्छतामहगत्वा विजनेमारयन्ति तथाहत्वा विना
गम्य इति गम्यते उपहमेत् आनन्दातिरेकात् जनमूर्खलोकं हन्यमानं केन हत्वा फलेन योगविभावितेन मातुलिंगादिना अथवा तथादृष्टेन प्रसिद्धेन स इति गम्यते
महामोहं प्रकरोतीति षष्ठं ६ गूढाचारी प्रच्छन्नाचारवान् निगूहयति गोपयेत् स्वकीयं प्रच्छन्नं दुष्टमाचारं तथा मायां परकीयां मायया स्वकीयया च्छादयेत् यथा
शकुनिमारकाश्च दैर्गन्मानमावृत्य शकुनीन् गृह्णन्तः स्वकीयमायया शकुनिमायां छादयन्ति । तथा असत्यवादीनि क्लृवी अपलापकः स्वकीयायामूलगुणोत्तर
गुणप्रतिमेवायाः सूत्रार्थयोर्वा महामोहं प्रकरोतीति सप्तमं ७ ध्वंसयति मायया भ्रंशयति इति यः पुरुषाभूतेनासद्भूतेन कं अकर्मकमवित्यमानं दुष्टेष्टितं आत्मकर्मणा
लक्षणा ऋषिघातादिना दुष्टस्यापारिण अदुवा अथवा यदात्मनः कृतं तदाश्रित्य परस्य समक्षे मचत्वमकाक्षीरेव तन्महापापमिति वदति वदिक्रियायोगः गम्य

यारीनिगूढिजा । मायंमायाएठायए ॥ अमच्चवाईणिगहाई । महामोहंपकुवड ॥ ७ ॥ धंसेइजोअज्जएणं । अ

ननें हसें ते महामोहनोयकर्म उपाजने करे ६ । गुप्तछे आचार कपट जेहनों ते गूढाचारी पोतानुं प्रच्छन्न दुष्टाचारप्रते गोपवे परनी मायाप्रते पोतानी माया
करोटांके असत्यवादी भूठबोलिवा मूलगुण उत्तरगुण खंडीने गोपवे ते महामोहनोयकर्म उपाज ७ । नथी चेष्टितहेकर्म जेहनों एहवा पुरुषप्रते पोताना
कोधा ऋषिघातादिक अणहुते कर्मकरोमारें अथवा पोतानुं कीधुं कर्म तेहने आश्रयणकरी परसमक्षे कहै जे एह खोटो कर्म एहनेहीज कीधो तेमहा मोहनो

मानत्वात् सइत्यस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टमं ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनमध्येइत्यर्थः सत्यामृषा किंचित्कृत्यानिवह
स यानि वस्तूनि वाच्यानि वाभाप्रते अक्षोणभक्तः अनुपरतकलहः यः सइति गम्यते महामोहम्यकरोतीति नवमं ९ अनायकोऽविद्यमाननायको राजा तस्य नयवान्
नीतिमानमात्यः सतस्यैव राज्ञोदारान् कलत्रं दारं वा अर्थागमस्योपायं ध्वंसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति संबन्धः किंकृत्वा विपुलं प्रचुरमित्यर्थः विक्षोभ्य
सामंतादिपरिकरभेदेन मंचोभनादनायकं तस्य चोभंजनयित्वेत्यर्थः कृत्वा विधाय णमित्यलंकारे । प्रतिवाह्या मनधिकारिणीं दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार
न् राज्यं वा स्वयमधिष्ठायित्वेत्यर्थः । तथा उपगतमपि समीपमागच्छंतमपि सर्वस्वापहारेकृते प्रावृतेना तुल्योपमैः करुणैर्वचनैरनुकूलयितुमुपस्थितमित्यर्थः भं
पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशं कृत्वा प्रतिलोमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भिर्वचनैरेतादृशस्तादृशस्त्वमित्यादिभिरित्यर्थः भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

॥ टीका ॥

कम्मं अत्तकम्मणा ॥ अदुयातुममकासित्ति । महामोहंपकुवुइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसनु । सच्चमोसाइंजासइ
अज्जाणऊंऊंपुरिसे । महामोहंपकुवुइ ॥ ९ ॥ अणायगस्सनयवं । दारंतस्सेवधंसिया ॥ विउलंविस्कोजइत्ताणं

॥ मूल ॥

यकमे उपार्जे ८ । जाणतायको पपेदामांहि वेमौने सत्यामृषा कांडक सांची कांडिणक भंठौ वाणौबोलिकलहयकी आसस्योनथी निवत्थी नथी तेपुरुष महामो
हनोयकमे उपार्जे ९ । नथी विद्यमान जेहनो नायकराजा तेहवा राज्यना नयवंत अमात्यमंचौ तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय
प्रति ध्वंसे विनसाडे स्यं करी ध्वंसे प्रचुर सामंतादिकप्रति विक्षोभौने भेदपाडीने बली करीने स्यं करीने कलत्रयकी अथवा अर्थागमद्वारयकी लेवाने योग्य
नथी एहवी राज्य लक्ष्मीये पोंतेज अविष्ठान करीने तथा समीपे आवताने एतले सर्वधन लीयेथके दीनस्वरकरी चाटुवचनबोलतो एहवाने भांपीने सामो

॥ भाषा ॥

विशयतियोमोमहामोहं प्रकरोतीतिदगमं १० अकुमारभूतो कुमारब्रह्मचारीमन् यः कश्चित् कुमारभूतोहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु
गृहोवमकस्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिआस्ते समहामोहंप्रकरोतीत्येकादशं ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तोयः कश्चित्तत्कालणवामेव्याब्रह्मचर्यं
ब्रह्मचारी सांप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपंचनायवदति तथात् एवमयोभावहं सतामनादेयं भणन् गर्दभइवगवांमध्ये विस्वरंनवृषभवनोष्ठं नदतिमुञ्चति
नदनादज्जमित्यर्थः तथायएवंभणन्नात्मनोऽहितो नहितकारी बालोमूढो मायामृषावादगगाव्यानृतं प्रभूतंभाषते यस्वैवंनिन्दितंभाषते कया स्त्रीविषयगृह्या

॥ टीका ॥

किञ्चाणंपफिवाहिरं ॥ १० ॥ उवगंतंपिऊंपित्ता । पफिलोमाहिंवग्गुहिं ॥ जोगजोगेवियारेइं । महामोहंप
कुव्वइ ॥ ११ ॥ अकुमारन्नूएजेकेइं । कुमारन्नूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिह्वेवसए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १२ ॥
अवन्नयारीजेकेइं वन्नयारीत्तिहंवए ॥ गह्वेव्वगवंमज्जे । विस्वरंनयइंनदं ॥ १३ ॥ अप्पणाअहिएवाले । माया

॥ मूल ॥

आतिघालो करेने प्रतिकूलवचने करी रे तं एहवो नीचके एहवा वचनेंकरौ भोगविशिट शब्दादिकने भोगविवाने अर्थे विदारे हरे तेमहामोहनीय कर्म
करे १० । नद्यो कुमार भूत एतले परण्यो के जेकोइं लोकमांहि हं कुमारभूतकं एतले बालब्रह्मचारी हं कं एहवुं कहे वली स्त्रीसाथे गृह लोलुप वली स्त्री
ने आधीन अथवा स्त्रीसाथेवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीयको जेकोइं लोकमांहि हं ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत कं एहवो कहे ते शोभा
रहित साधुजनने अथाह्य गर्दभनीपरे गायना टोलांमां वृषभर्त्तापरे मनोज्ञ नद्यो एहवो शब्दकरे बोले एहवो जे बोले ते आपणा आत्मानो अहितकारी अ
ने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लंपट थईने माया सहित मृषा घणूं बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लामेकरी

॥ भाषा ॥

हेतुभूतया सदित्यभूतोमहामोहंप्रकरोतीति द्वादशं १२ यं राजानं राजामात्यादिकं वा निश्चितआश्रितउद्धृते जीविकालाभेनात्मानंधारयति कथंयशसातस्य राजादेः सत्कीयमितिप्रसिद्धाअभिगमनेन वासेवया आश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तेद्रव्येयः समहामोहंप्रकरोतीति त्रयोदशं १३ ईश्वरेणप्रभुणा अदुवा अथवा ग्रामेणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृतः तस्यपूर्वावस्थायामनीश्वरस्य संप्रगृहीतस्य पुरस्कृतस्य प्रभादिनाश्रीर्लक्ष्मीरतुलाअसाधारणाआगताप्राप्ता अतुलंवायथाभवतीत्येवं श्रीः समागता आगता श्रीकृष्णप्रभाद्युपकारकविषये इर्थादोषेणाविष्टोयुक्तः कलुषेण द्वेषलोभादिलक्षण पापेनाविलमाकुलंवाचेतोयस्य मतया योतगायं व्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगानां चेतयतेकरोति प्रभादे रसौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्दशं १४ सर्पिणागीयथाअण्डउडं

॥ टीका ॥

मोसंवज्जंजसे ॥ इत्यीविसयगेहीए । महामोहंपकुवृड ॥ १४ ॥ जंनिरिसिएउवृहड । जससाहिगमेणवा ॥ तस्सलुप्पडवित्तम्मि । महामोहंपकुवृड ॥ १५ ॥ ईसरेणअदुवाग्रामेणं । अणिरिसरेईसरीकए ॥ तस्ससंपयहीणस्स । सिरीअतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणआविठे । कलुसाविलचेयसे ॥ जेअंतराअंचेएइ । महामोहंपकु

॥ मूल ॥

आत्मानंधारं अने राजसंबंधनी प्रसिद्धिकी तथा सेवायकी तेआश्रित राजाना धननेविषे लोभकरे तेमहा मोहनीय कर्मकरे १३ । ईश्वरेंठाकुरे अथवा ग्रामे जनसमूहं अनीश्वरहुतो तेईश्वरकीधो अममर्थहुतो तेसमर्थकीधो ते जेपूर्वे अनीश्वरहंतो संपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी श्रीलक्ष्मी अतुल असाधारण आवी पासीके जेहनेते उपकारी मूलगो ठाकुर तेहनेविषे इर्थादोषे मच्छरदोषिकरी आविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापेकरी आकुल व्याप्यो के वित्त जेहनी एहवां जेकोइ उपकारी प्रभुने अंतरायप्रति चेतकरे तेहनी आजीविकानो विच्छेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४ । सर्पिणी जिम पांता

॥ भाषा ॥

अण्डककूटं स्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यवापुटं संबद्धलङ्घ्यरूपं हि नस्ति एवंभर्तारं पोषयितारं यो विहिं नस्ति सेनापतिराजानं प्रशास्तारममात्यं धर्मपा
ठकं वा समहामोहं प्रकरोतीति तस्मिन्नेव बहुजनदुःस्थता भवतीति पंचदशं १५ यो नायकं वा प्रभुराश्वस्य राष्ट्रमहत्तरादिकमिति भावः नेतारं प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु
निगमस्य वाणिजकसमूहस्य कंशेष्ठिनं श्रीदेवताद्वितपट्टबद्धांकितभूतं बहुवरवंभूरिगच्छं प्रभुतरयशसमित्यर्थः इत्वा महामोहम्यकुसुते इति षोडशं १६ बहुजनस्य पंच
पादीनां लोकानां नेतारं नायकं द्वीपद्विपः संसारसागरगतानामाश्वसस्थानं अथवा द्वीपद्विपः ज्ञानांधकाराहतबुद्धिदृष्टिप्रसराणां शरीरिणां हेयोपादे
यवस्तुस्तोमप्रकाशकत्वात् तं अतएव चाणमापद्रुघणं प्राणिनां एतादृशं यादृशागणधरादयो भवंति नरं प्रावचनिकादिपुरुषं इत्वा महामोहम्यकरोतीति सप्तदश

॥ टीका ॥

वृद्ध ॥ १७ ॥ सप्पीजहाश्रुं ऊढं । जह्त्तारं जोविहिंसड ॥ सेणावडपसत्यारं । महामोहंपकुवृद्ध ॥ १८ ॥
जेनायगंचरठस्स । नेयारं निगमस्सवा ॥ सेठियं ऊरवंहंता । महामोहंपकुवृद्ध ॥ १९ ॥ वज्जजणस्सनेयारं ।
दीवंताणंचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामोहंपकुवृद्ध ॥ २० ॥ उवठियं पणिविरयं । जेज्जिस्कंजगजीवणं ॥

॥ मूल ॥

ना ईण्डानापुट समूह इहेमारं । तिम पोताना भर्तार पोषकने इहेमारं सेनापतिये राजार्ये प्रशस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने इहेमारं ते महामोहनीय कर्म
करे १५ । जेकोइ राश्वना देशना नायकने तथा निगम वणिकसमूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा श्रेष्ठ नगरमुख्य लक्ष्मीअंकित पट्टबद्ध तथा घणायशना
धणी एहवाने इहेमारं ते महामोहनीय कर्मकरे १६ । बहुजननो घणालोकनो नेता नायकहोइ एहवाने तथा द्वीपसरीखा संसारसागरमां आश्रयभृत
आपदायकी रक्षक एहवा प्राणीने इहे ते महामोहनीय कर्मकरे १७ । प्रव्रज्यानेविषे उपस्थित सावधान थयोक्के तथा सर्वसावद थकी निवर्त्त्यो जे कोइ

॥ भाषा ॥

१७ उपस्थितप्रव्रज्यायांप्रविज्जिषुमित्यर्थः प्रतिविरतं सावद्ययोगेभ्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः संयतंसाधुंस्तपस्विनं तपांसिकृतवतंशोभनंवातपः श्रितमाश्रितं क्वचित् जेमिक्खुंजगज्जीवयन्तिपाठः तत्रजगन्ति जंगमानि अहिंसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्तं विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्माच्छ्रुतचारित्र्यलक्षणाद्भ्रंशयतियः समहामोहम्यकरोतीति अष्टादशं १८ यथैवप्राक्तनं मोहनौयस्थानं तथैवेदमपि अनंतज्ञानिनां ज्ञानस्यानंतविषयत्वेन अक्षयत्वेनवाजिमानामर्हतां वरदग्निनां चायिकदर्शनत्वात् तेषां येज्ञानाद्यनेकातिशयसंपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अवस्सवंअवर्णवादीवक्तव्यत्वेनयस्यास्तिसो ऽवर्णवान् यथानास्तिकवान् सर्वज्ञोच्चेयस्यानंतत्वात् उक्तंच अज्जविधावइनाणं अज्जवियअणंतओअलोगावि अज्जविनकोइविउहं पावंतिसब्बसुयंजीवो अहपावतितोसंभोहोइ अलोउनवेयमठंतित्ति अद्रूषणंचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञानं युगपसोकालौकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकांतर्वर्त्तिदौपकशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमादिति बालोऽज्ञोमहामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितमं १९ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रान्तस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मांचपथस्यदुष्टोद्दिष्टोवा ऽपकरोति

॥ टीका ॥

कम्मधम्मानुजंसेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २१ ॥ तहेवाणंतणाणीणं । जिणाणंवरदंसिणं ॥ तेसिंअवस्सवंवाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ २२ ॥ नेअइअस्समग्गस्स । दुठेअवयरईवज्जं ॥ तंतप्पियंतोजासेइ । महामोहंप

॥ मूल ॥

भिषु जगज्जीवन अहिंसादि धर्मे जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलात्कारे धर्मयकी भंसे पाडे तेमहामोहनौय कर्मकरे १८। तिमज पूर्वनोपरो अनंतज्ञानो अनंत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्तना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते महामोहनौय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनो दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे घणो तथा ते मार्गने निंदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

॥ भाषा ॥

अपकारं करोतीति बहुअर्थपाठांतरेणापहरति बहुजनं विपरिणमयतीति भावः तं मार्गं तिष्ठत्यतीति निन्दन् भावयति निन्दया द्वेषेण वा वासयति आत्मानं परं
चयः समहामोहं प्रकरोतीति विंशतितमं २० आचार्योपाध्यायैर्यैः श्रुतं स्वाध्यायं विनयं च चारित्र्यं ग्राहितः शिष्यः तेनैव खिंसति निन्दति अल्पश्रुता एते इत्यादि
ज्ञानतः अन्यतीर्थिकसंसर्गकारिण इत्यादि दर्शनतः मन्दधर्माणः पार्श्वस्थादिस्थानवर्तिनः इत्यादि चारित्र्यतः यः स एव भूतो बालो महामोहं प्रकरोतीत्येकविंश
तितमं २१ आचार्यादीन् श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिभिस्तर्पितवतः उपकृतवतः सम्यक् कृतान् प्रति तर्पयति विनयाहारोपध्यादिभिर्न प्रत्युपकरोतीति
तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथा स्तब्धो मानवान् समहामोहं प्रकरोतीति द्वाविंशतितमं २२ अबहुश्रुतश्च यः कश्चिद्भुतेन प्रविकथ्यते आत्मानं श्लाघते श्रुत
वानहमनयोगधरोहमित्येवं अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचको वेति पृच्छति प्रतिभणति आत्मनः स्वाध्यायवादं वदति विशुद्धपाठको ह मित्यादिकथं स

कुर्वइ ॥ २३ ॥ श्रायरिय उवज्जाएहिं । सुयं विणयं च गाहिण ॥ ते च यखिंसईयाले । महामोहं पकुवई ॥ २४ ॥
श्रायरिय उवज्जायाणं । सम्मनोपफितप्पइ ॥ अप्पफिपूयएयठे । महामोहं पकुवई ॥ २५ ॥ अयज्जस्सुएयजे

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणे आचार्ये उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र्य ग्रन्थिवाद्यो मिखाद्यो तेहीज आचार्यने खीसे निदे बाल अज्ञानी ते महामो
हनीय कर्मकरे २१ । जेकोइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिक्राना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्पेनही उपरांठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी
पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमान्यो ते महामोहनीय कर्मकरे २२ । अबहुश्रुत अपंडितथको जेकोइ श्रुतं करी शास्त्रं करी आत्माने प्रविकथे श्लाघयेहुं शु
तवंतहुं एम कहें वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनोहुं पाठकहुं एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थको जेकोइ तपे करी पोताना आत्माने

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

महामोहं श्रुतालाभहेतुं प्रकरोतीति त्रयोविंशतितमं २३ सुगमं पूर्वाहं पूर्ववत् नवरम् सर्वलोकात् सर्वजनात् सकाशात्परः प्रकष्टस्तेनः चोरो भावचौरत्वात्
पकुब्बइ अतपस्विनोहेतुं प्रकरोतीति चतुर्विंशतितमं २४ साधारणार्थं मुपकारार्थं यः कश्चित् आचार्यादि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासन्नीभूते प्रभुः समर्थ उ
पदेशनीषधादिदानेन च स्वतो न्यतश्चोपकारं न करोति कृतमुपेक्षते इत्यर्थः केनाभिप्रायेणत्याह ममाप्येष न करोति किंचनापि कृत्यम् समर्थोपि सन्निवृत्तेषां सम
र्थोवाज्यं बालत्वादिना किञ्कृतेनान्यपुनरुपकर्तुमशक्तत्वादितिलोभनेति शठः कैतवयुक्तः शक्तिलोपनात् निकृतिर्मायातद्विषये प्रज्ञानं यस्य तथा ग्लानः प्रतिचर
णीया माभवत्विति ग्लानवेषमहंकरोमीति विकल्पवानित्यर्थः अतएव कलुषाकुलचेताः आत्मनश्चाबोधको भवांतरा प्राप्तव्यं जिनधर्मलाभाप्रतिजागरेणाज्ञो

॥ टीका ॥

केई । सुएणंपविकल्पइ ॥ सज्जायवायंवयइ । महामोहंपकुब्बइ ॥ २६ ॥ अतवस्सीएउजेकेई । तवेणपवि
कल्पइ ॥ सव्वलोयपरेत्तेणे । महामोहंपकुब्बइ ॥ २७ ॥ साहारणठाजेकेई । गिलाणम्मिउवठिए ॥ पन्नूणकुणई
किच्चं । मज्जंएसेनकुब्बइ ॥ २८ ॥ सढेनियइपप्पाने । कलुसाउलचेयसा ॥ अप्पणोयअवोहीए । महामोहंप

॥ मूल ॥

विकथे आधाकरे हुंतपस्वी कुं एमकहे ते सर्वलोकथकी परमस्तेन चोरहे ते महामोहनीय कर्मकरे २४ । साधारणने अर्थे उपकारने अर्थे जेकोइ आचार्या
दिकने ग्लानपणे तथा रोगीपणे उपस्थित ठुंकहो आथो निकट आव्यो तेहने उपदेश औषधादि दानेकरी उपकार करवामां समर्थके पणि मुभने एह
न करतोहुतो एंमाटेहुं कांइक नकरुं एह शठधूर्त निकृति मायातेहनेविषे चतुरथइ ग्लानीनूं हुं औषधोपचार करुहुं एहजी कल्पनायेकरी कलुषितके चित्त
जेहनो आपणा आत्मानो अबोधक भवांतरं धर्मेनो अर्थीनथी ते महामोहनीय कर्मकरे २५ । जेकोइ कथा प्रबंध शास्त्र तद्रूप जे अधिकरण एतले प्राणिना

॥ भाषा ॥

विबोधना श्रमश्चात्यरेषां वाऽर्वाधिकः अविद्यमानो वांधोऽस्मादितिव्यत्यादनात् येहि तदीयं ग्लानाप्रतिचरणमुपलभ्य जिनधर्मपराङ्मुखा भवन्ति तेषामर्वा-
धिकस्तथेति सएवंभूतो महामोहमकरोतीति पञ्चविंशतितमं २५ यः कथावाक्यप्रबंधः शास्त्रमित्यर्थः स्तद्वृत्त्याधिकरणानि कथाधिकरणानि कौटिल्यशास्त्रा-
दीनि प्राण्युपमर्दनप्रवर्तकत्वेन तेषामात्मदुर्गतावधिकारित्वकरणात् कथया वा चेत्त्राणि कथयत गानमसूयतेत्यादि तथा अधिकरणानि तथाविधप्रवृत्तिरू-
पाणि अथवा कथा राजकथादिका अधिकरणानि च यंत्रादीनिकलहा वा कथाधिकरणानितानि संप्रयुक्ते पुनः पुनरेवं सर्वतीर्थानां भेदाय संसारसागरतरण-
कारणत्वात् तीर्थानि ज्ञानादीनि तेषां सर्वथानाशायप्रवर्तमानः समहामोहप्रकरोतीति षड्विंशतितमं २६ । कंठ्यं नवरं अधार्मिकायोगानिमित्तवशीकरणा-
दिप्रयोगः किमर्थं श्लाघाहेतोः सखिहेतोर्भिन्ननिमित्तमित्यर्थः इति सप्तविंशतितमं २७ । यच्च मानुषकान् भोगान् अथवा पारलौकिकान् तैस्ति विभक्तिपरिणामः

॥ टीका ॥

कुष्ठइ ॥ २९ ॥ जेकहाहिगरणाइं । सपउंजेपुणोपुणो ॥ सव्वतित्याणजेयाणं । महामोहंपकुष्ठइ ॥ ३० ॥
जेष्ण्हमिणोएजोए । संपउंजेपुणोपुणो ॥ साहाहेउंसहीहेउ । महामोहंपकुष्ठइ ॥ ३१ ॥ जेष्ण्माणुस्सएजोए ।

॥ मूल ॥

उपमर्दहेतु आत्माने दुर्गतीमां हि अधिकार कारी एमाटे अधिकरण कौटिल्यशास्त्र तेहने वली वली प्रयुंजे विस्तारे ते सर्वतीर्थ ज्ञानादिकना सर्वथा नाशे
प्रवर्तमान महामोहनीय कर्मकरे २६ । जेकोइ अधार्मिक प्रयोग निमित्त वशीकरणादिक प्रयोगप्रते श्लाघाने अर्थे वली मित्रने अर्थे संप्रयुंजे वली वली व्या-
पारे ते महामोहनीय कर्मकरे २७ । जेकोइ मनुष्य संबंधी अथवा परलोक संबंधी भोग विषयादिकने विषे अट्टमहुओथको भोगप्रते आस्वादे अभिलासे आश्र-
यणकरे ते महामोहनीय कर्मकरे २८ । जेकोइ बाल अधर्मी कृदि विमानादिकनी संपत् द्युति शरीराभरणनीदीप्ति यशकीर्ति वर्ण शृङ्गादि शरीर संबंधी

॥ भाषा ॥

तेषुवा अलप्यत्तमिमगच्छत् आस्वादते अभिलषति आश्रयतिवा समहामोहं प्रकरोतीति अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिर्विमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभर
णदीप्तिः यशःकीर्तिः वर्षः शुक्लादिः शरीरसंवन्धौ देवानां वंमानिकानां बलं शरीरं वीर्यं जीवप्रभवं अस्यत्यध्याहारः तेषामिह अपेक्ष्यमानत्वात् तेषामपि देवाना
मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अस्माकाकारौ अथवा अवर्णवान् केनोक्तापेन देवानां ऋद्धिर्देवानां द्युतिरित्यादिका काव्यास्थेयं न किंचिद्देवानामुच्चादि
कमस्तीत्यवर्णवादवाक्यभावार्थः य एवंभूतः समहामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितमं २९ । अपश्यन् यो ब्रूते पश्यामि देवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्यैव पूजाम
र्थयतेयः स जिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामोहं प्रकरोतीति विंशतितमं ३० । रौद्रादयो मुहूर्त्ताद्यादित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एतेषां च मध्ये मध्यमाः षट्

॥ टीका ॥

शुद्धवापारलोडए ॥ तेतिप्पयंनोअमयड । महामोहंपकुवड ॥ ३२ ॥ डहीजुईजसोवन्नो । देवाणंवलवी
रियं ॥ तेसिंअवस्सवंवाले । महामोहंपकुवड ॥ ३३ ॥ अपस्समाणोपरुसामि । देवेजरकेयगुज्जगे ॥ अस्माणो
जिणपूयठो । महामोहंपकुवड ॥ ३४ ॥ धरेणंमंफियपुत्ते तीसंवासाइंसामस्सपरियायंपाउणित्ता सिधे वुधे

॥ मूल ॥

देवतानो बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यच्चने व्यंतर विशेषने गुह्यकने अ
नादरतो यको हं आदरुं एमकहे तेस्वरूपयो अज्ञानी केवल जिननी अरिहंतनी पूजानी अर्थोक्ते गोशालानीपरे ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३०
मोहनीय स्थानकज्ञा । स्वविर मंडितपुत्र छठो गणधर तीस वर्षतगे सामान्य पर्याय दीक्षा पालीने मिद्वययो । कृतार्थययो तत्त्वनो जाणकारथयो यावत्

॥ भाषा ॥

जावमहदुरकप्पहीणे एगमेगेणं अहोरत्ते तीसंमुज्जत्ते मुज्जत्तेगेणं ० एएसिणंतीसाएमुज्जत्ताणं तीसंनामधेज्जा
 प० तं० रोद्धे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए अज्जिचंदे माहिंदे पलंवे वंजे सज्जे अणंदे विजए विस्ससेणे पाया
 वज्जे उवसमे ईसाणे नठे जाविअण्णया वेसमणे वरुणे सतरिसज्जे गंधवे अग्निवेसायणे आतवे आवत्ते नठवे
 भूमहे रिसज्जे सव्वठसिद्धे रक्कसे ३० । अरेणंअरहा तीसंधणु उहंउज्जत्तेणं होत्या सहस्सारस्सणं देविंदस्स दे
 वरस्सो तीसं सामाणियसाहस्सीनु प० पासेणंअरहा तीनंवासाहुं आगारवासमज्जे वसित्ता आगारानु अण
 गारियं पव्वइए समणेज्जगवं महावीरे तीसंवासाहुं आगारवासमज्जे वसित्ता आगारानु अणगारियं पव्वइए

॥ मूल ॥

गर्देकरे कर्मथकी मूक्काणां सर्वदुःखथकी प्रज्जीवयन्ती । तस्मात्क अर्च्योगात्र श्रीम सहतेनी होय । ते श्रीममुद्धर्तना श्रीसनामधेयनामकद्या । तेकहेके । रौद्र १
 शक्त २ । मित्र ३ । वायु ४ । सुपीत ५ । अजिचंद्र ६ । माहिंद्र ७ । प्रलव ८ । वज्र ९ । सत्य १० । आनंद ११ । विजय १२ । विस्वसेन १३ । प्राजापत्य १४ ।
 उपशम १५ । ईशान १६ । नष्ट १७ । भाविताका १८ । वैद्यमण १९ । वरुण २० । शतश्रुषभ २१ । गांधर्व २२ । अग्निवैश्यायन २३ । आतप २४ । आवर्त्त
 २५ । नष्टवान् २६ । भूमहान् २७ । श्रुषभ २८ । सर्वार्थसिद्ध २९ । राजस ३० । अरनाथ अठारमा तीर्थंकर श्रीम धनुष ऊंचपणेथया । सहस्सार नामा आठ
 मा देवेद्रना श्रीम हजार सामानिक देवताकद्या । पार्श्वनाथ अरिहंत श्रीम वर्षलगे गृहस्थावास मांदि वसीने गृहस्थथकी अनगारपणी यतीपणी पाय्या
 अमण भगवंत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास क्वांडीने यतीपणी पाय्या । रत्नप्रभा पृथिवीना श्रीम लाख नरकावास कद्या । एणीयं र

॥ भाषा ॥

रयणप्यज्ञाणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्यज्ञाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइ
 याणं तीसंपलिनुवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प०
 असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं तीसंपलिनुवमाइं ठिई प० उवरिमउवरिमगेवेज्जायाणं देवाणं जहन्तेणं
 तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्जिमगेवेज्जाएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं
 उक्कासेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा तीसाए अठ्ठमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससं
 तिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहिं आहारठे समुप्यज्जइ संतेगइया जवसिद्धियाजी
 वा जे तीसाए जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिह्वाइस्संति सव्वदुरकाणमंतं करि

वप्रभा पृथिवीने विपे केतलाएक नारकौनी त्रीस पत्थोपमनी आउखोकह्यो । हेठे सातमी पृथिवीये केतलाएक नारकौनी त्रीस सागरोपमनी स्थितिकही
 केतलाएक असुरकुमार देवतानी त्रीस पत्थोपमनी स्थितिकही । उपरिम उपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयक विमाने देवतानी जवन्य त्रीस सागरोपम
 नी स्थिति कही । जे देवता उपरिम मध्यम ग्रैवेयके आठमे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाके ते देवतानी उक्कठी त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही । ते देव
 ता त्रीमे पखवाडे स्वासोस्वास घणाले जंचाले नीचो मूके ते देवताने त्रीसवर्ष सहस्रगये आहारनो अर्थ उपजे । के केतलाएक भयजीव जे त्रीसभवने आंत

કદાચિદ્દિનેઽન્તર્ભવંતિ કદાચિદ્રાત્રાવિતિ ॥ ૩૦ ॥ એકચિંશત્તમંસ્થાનકં સુગમં નવરં સિદ્ધાનામાદૌ મિહત્વપ્રથમએવસમયેગુણાસ્તેવાભિનિબોધિકા

॥ ટીકા ॥

સ્સંતિ ॥ ૩૦ ॥ એકૃતીસંસિદ્ધાદ્ગુણા પ૦ તંજહા સ્ત્રીણે ષ્ણાન્નિણિયોહિયણાણાવરણે સ્ત્રીણે
સુયણાણાવરણે સ્ત્રીણે નુહિણાણાવરણે સ્ત્રીણે મણપજ્જવનાણાવરણે સ્ત્રીણે કેવલનાણાવરણે સ્ત્રીણે ચચ્ચુદંસ
ણાવરણે સ્ત્રીણે અચ્ચુદંસણાવરણે સ્ત્રીણે નુહિદંસણાવરણે સ્ત્રીણે કેવલદંસણાવરણે સ્ત્રીણે નિદ્દા નિદ્દાનિદ્દા
સ્ત્રીણે પયલા પયલાપયલા સ્ત્રીણે થીણહી સ્ત્રીણે સાયાવેણિજ્જે સ્ત્રીણે અસાયાવેયણિજ્જે સ્ત્રીણે દંસણમો

॥ મૂલ ॥

રે સૌમ્યસ્યે વૃક્ષસ્યે મંકાસ્યે સર્વદુઃખનો અંત કરિસ્યે મોક્ષજાસ્યે ॥ ઇતિ ત્રીસમો સમવાય સંપૂર્ણ ॥ ૩૦ ॥ હિવે એકત્રીસમો સમવાય લિખે છે ।
એકત્રીસ સિદ્ધના આદિગુણ પ્રથમસમયમાંડી કપના જે ગુણ તે સિદ્ધાદિગુણ કહ્યા ॥ તે કહે છે । ત્રીણ થયો છે આભિનિબોધિક જ્ઞાનનો આવરણ એતલે સર્વ
થાપિ મતિજ્ઞાનાવરણ ક્ષય ગયો છે જેહનો ૧ । ત્રીણથયો છે શ્રુતજ્ઞાનાવરણ ૨ । વલી અવધિજ્ઞાનાવરણ ક્ષય ૩ । મનઃપર્યવજ્ઞાનાવરણ ક્ષય ૪ । કેવલ
જ્ઞાનાવરણક્ષય ૫ । ચચ્ચુદર્શનાવરણક્ષય ૬ । અચ્ચુદર્શનાવરણક્ષય એતલે આંખટાલી વીજા ચારદંદ્રિય અચ્ચુ તેહના આવરણનો ક્ષય ૭ । અવધિદર્શના
વરણક્ષય ૮ । કેવલદર્શનાવરણ ક્ષય ૯ । સુખેજાગે તે નિદ્રા તેહનોક્ષય ૧૦ । દુઃખેજાગે તે નિદ્રાનિદ્રા તેહનો ક્ષય ૧૧ । વૈઠાંઝમાં આવે તે પ્રચલા તેહનોક્ષ
ય ૧૨ । ચાલતાં આવે તે પ્રચલાપ્રચલા તેહનોક્ષય ૧૩ । થીણહી અર્હવાસુદેવનો વલ તેહનોક્ષય ૧૪ । સાતાવેદનીયકર્મક્ષય ૧૫ । અસાતાવેદનીયકર્મક્ષય ૧૬

॥ ભાષા ॥

वरणादिचयस्वरूपाइति मन्दरोमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कंभइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणोभवतीति जयाणंसूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशी
त्यधिकमण्डलगतंभवति मण्डलचञ्चोतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजंवृद्धीपस्यांतराशीत्यधिकेयोजनगते पंचषष्ठि सूर्यमण्डलानिभवन्ति तथालवणसमुद्रं त्रीणिचिं

हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइञ्चाउए खीणे तिरिञ्चाउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए
खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुज्जनामे खीणे असुज्जनामे खीणे दाणंतराए खीणे लाभांतराए
खीणे भोगांतराए खीणे उवभोगांतराए खीणे वीरिञ्चंतराए ३१ मंदरेणंपव्वए धरणितले एकतीसंजोय
णसहस्साइं ठञ्जेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवेणं प० जयाणं सूरिए सव्ववाहिरियमंफलं उव

दर्शनमोहनोय एतले सम्पत्त मोहनोय चय १७ । चरित्तमोहनोय चय १८ । नरकायुचय १९ । तिर्यंचायुचय २० । मनुष्यायु चय २१ । देवायु चय २२ ।
उच्चैर्गोत्रचय २३ । नीचैर्गोत्र चय २४ शुभनाम चय २५ । अशुभनाम चय २६ । दानांतराय चय २७ लाभांतरायचय २८ । भोगांतराय चय २९ बीर्यांतराय
चय ३० । उपभोगांतरायचय ३१ । मेरुपर्वत भूमितले एकतीसहजार छसे त्रैवीस योजन कांडक न्यून परिधीये कह्यो । मेरुपर्वत भूमिने ऊपरें दसहजार
योजन पिडुल पण्हे तेहनो परिधी त्रिगुणित एतले एकतीस हजार छसे त्रैतीस योजन कह्यो । सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला
पहिलो एतले सर्वाभ्यंतर मंडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन के । अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसो ओगणीस मांडला
के । सर्वमिली जंवृद्धीप मांहि एकसो चौरासी मंडल के तेमांहि सर्ववाह्यमंडलें उपसंक्रमी आवीने सूर्य मकर संक्रांतिदिने भ्रमण करे । तेणें दिने भरतक्षे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

सूर्यमण्डलगतं भवति तत्र च सर्वत्राद्यं समुद्रांतर्गतमंडलानां पर्यतिमं तस्य चायामविष्कम्भो लक्षषट्शतानि
चयोजनानां पञ्चदशिकाणि परिधिसुवृत्तचक्रगणितन्यायेन त्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानि पंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावच्चक्रमादित्योऽ
होरात्रहयेन गच्छति तत्र च पष्ठिमुहूर्त्ता भवन्ति पञ्चाभागापहारं यत्कथं तत्तद्भूतगस्यैव प्रमाणं भवति तच्च पंचसहस्राणि त्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५ ।
१५ । ६० मुहूर्त्ते एतच्चदिवसार्धेन गुण्यते यदा च सर्वत्राद्ये मंडले सूर्यश्चरति तदा दिनप्रमाणं द्वादशमुहूर्त्ताः तदहंचपट् अतः पट्भिर्मुहूर्त्तैर्गुणितं मुहूर्त्तगतिप्रमाणं
चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणं भवति एकविंशत्सहस्राणि अष्टौचक्रतान्येकविंशदधिकानि त्रिंशच्चयोजनद्विपट्टिभागाः ३१८३१ । ३० अभिवर्धितमासोऽभिवर्धितसंवत्सर

॥ टीका ॥

संकमिता चारंचरइ तथाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एकूतीसाए जायणसहस्सेहिं अठहिअएकूतीसेहिं
जायणसएहिं तीसाएसठिजागे जायणस्स सूरिएचस्कुफानं हव्वागच्छइ अजिअहिणं मासे एकूतीसं

॥ मूल ॥

अगत मनुष्येने एकतोसहजार आउसे एकतोस योजन ऊपर एकयोजनना माठिया पंचत्रोसभाग अधिक वेगलोथको सूर्य चक्षुस्पर्शे शीघ्र आवे । एतलेपो
सो पूनिमे मकर संक्रांतिदिने एकतोसहजार आउसे एकतोस योजन ऊपर योजनना माठिया तीसभाग वेगलो होय सूर्य लवणसमुद्र मांदि तिवारे इहां
नां मनुष्येने दृष्टिगोचर आवे । अभिवर्धितमास त्रोजे वर्षे आवे तेरहमासनां वर्षे होय । ते कालिके रास एकत्रोस रात्रिदिवस प्रमाणे सातिरेक कांड एक भां
भेरोजांणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकत्रोस रात्रिदिवस परिमाणे पूरोथाय । जेणे काले सूर्य राशिभोगवे ते आदित्यमास सूर्यमा

॥ भाषा ॥

स्य चतुष्टवारिंशदहोत्रद्विषष्टिभागाधिकव्यशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य ३८३ । ४४ द्वादशोभागोऽभिवर्द्धितसंवत्सरस्यासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचंद्र
मासात्मकत्वाच्चन्द्रमासश्च एकोनविंशतादिनानां द्वात्रिंशताचदिनद्विषष्टिभागानांभवतीति साइरेगाइंति अहोरात्रस्यच चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानामेकविंशत्यु

॥ टीका ॥

सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० अइच्चेणं मासे एकूतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइं
दियग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एकूतीसं पलिनुवमाइं ठिई प०
अहेसत्तमाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एकूतीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अ
त्येगइयाणं एकूतीसंपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मसीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एकूतीसंपलिनुव
माइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिययाणं देवाणं जहस्सेणं एकूतीसंपलिनुवमाइं ठिई प० जे

॥ मूल ॥

स कहिये एकत्रीसरात्रिदिवस काइंक विशेषाधिक ऊणा ओक्का अहोरात्रिअर्हे ऊणा एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणे पूरो कह्यो । एणीयें रत्नप्रभा पहिली
नरक पृथिवी यें केतलाएक नारकीनो एकत्रीस पत्थोपमनीस्थितिकही । हेठिम सातमीनरक पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो एकत्रीससागरोपम आउखो
कह्यो । केतलाएक असुरकुमार देवतानी एकत्रीस पत्थोपमनीस्थिति कही । सौधर्मइशाने कलें केतलएक देवतानी एकत्रीस पत्थोपम आउखोकह्यो ॥ पृ
र्वदिशायकोमांडीकरीने विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एचार अनुत्तरविमाननादेवतानी जघन्यएकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । जेदेवता
उपरिमउपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकविमाने देवतापणेउपनाकतेहदेवतानीउत्कृष्टी एकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता एकत्रीसें पखवाडे

॥ भाषा ॥

॥ ८९ ॥

काययसायुतेनवा व्यक्ताः व्यक्तासु येवयःश्रुताभ्यापरिणताः स्थानानिपरिहाराः सेव्यतेसचाययवस्तूनि व्रतपट्कं महाव्रतानि रात्रिभाजनावेतिथि कायपट्
कं पृथिवीकायादि अकल्पोऽल्पनीस्य पिंडशय्या वस्त्रपात्र रूपपदार्थः गृहभाजनं स्थान्यादिः पल्यंकंखट्वादि निषद्या स्थियासहासनं । स्नानंशरीरचालनं

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

सयंमणेणंसेवइ नोविश्रुतंमनेणंसेववाइ मणेणंसेवतंविश्रुतंनसमणुजाणइ दिव्वेकामजोगे नेवसयंवायाएसे
वइ नाविश्रुतंवायाएसेवावेइ वायाएसेवतंवि श्रुतंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामजोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोवि
श्रुतंकाएणंसेवावेइ काएणंसेवतंविश्रुतंनसमणुजाणाइ अरहतोणंअरिठनेमिस्स अठारससमणसाहस्सीउ
उक्कोसया समणसंपयाहोत्या समणेणं जगवयामहावीरेणं समणाणंविग्गंथाणं सरकुम्भयवियत्ताणं अठारस
ठाणा प० तं० वयठक्कं कायठक्कं अकप्पोगिहिजाणयं पलियंकनिसेज्जाय सिणाणं सोज्जवज्जाणं आयारस्सणंज

॥ भाषा ॥

नेरा प्रतिसेवतांशकां अनुमोदनाकरे ८ । देवांगनासंबंधी कामभोगस्वयंपोतेसेवेनही १० । अनेरानेमनेकरी सेवाडेनही ११ । मनेसेवतां आगिलाने पिस
अनुमोदेनही १२ दिव्वेसेकहतां कामभोग देवांगनासंबंधी वचनेसेवेनही १३ अनेरानेवचनेकरी सेवावेनही १४ वचनेसेवतां प्रतिबीजाने अनुमोदेनही १५
देवांगनासंबंधी कामभोगकायाएसेवेनही १६ अनेरापाहिकायाएसेवावेनही १७ कायएसेवतांशकां अनुमोदेनही १८ अरिहंत अरिठनेमी बावीसमातीर्थक
ने अठारसमणसहस्रनी उत्कृष्टीसाधूनी संपदाहुई । समणनेतपस्वीने निग्रयने बाह्याभ्यंतर गांठीरहितने दुद्रव्यक्तसाधेजह तेसदुद्रव्यक्तएतले दुद्रवोत्तिकथ्य
तेवयकरी वडोतयायुतेकरीप्रसिद्ध तेहने अठारस्थानकपरिहारसेवाययविशेष कांदककांडवो कांदकभादरवो तेकईके । व्रतपट्क पंचमहाव्रत कठोरावि

शोभावर्जनं प्रतीतं तथा आचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तस्य पिण्डेष्णाद्याः पंचचूलाः द्वितीयश्रुतस्कंधाभिकाः सचनवव्रज्जचर्याभिधाना
 ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतस्कंध रूपस्तस्यैव चेदं पदप्रमाणं नचूलानां यदाह । नवबंधचेरमईओ अठारसपयसहस्रीओ । हवइसपंचचूला बहुबहुतरओपयगेणंति
 यच्च सचूलिकाकस्येति विशेषणं तत्तस्य चूलिकासत्रा प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नंदीटीकाकृता अठारसपयसहस्राणि पुष्पपठमसुय
 खंधस्सनवबंधचेरमइयस्स पमाखं विवित्तयाणोय सुत्ताणि गुरुवणं सवोतेसिं अथो जाणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं पदोयेति पदपरिमाणे
 नेति तथा बंधिस्ति ब्राह्मीआदिदेवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रितेनैव यादग्निताक्षरलेखनप्रक्रिया सा ब्राह्मीलिपिरतस्तस्या

गवतो सचूलिआगस्स अठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० बंजीएणं लिखीए अठारसविहलेस्कविहाणे प० तं०

भोजनविरति एमकायघट्क पांचप्रावरअनेछुओ उत्तमकाय एम १२ अकल्पो अकल्पनीयपिण्डशय्यावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४ । पत्यंकोमां
 चादिक १५ । निषद्यासिंहासन १६ । स्नानशरीरधोहो १७ । शोभावर्जन शरीरशृंगाररचना १८ । आचारांग प्रथमअंगने पहिले श्रुतस्कंधे नवअध्ययनछे
 तहनां पूज्यनांबोजे श्रुतस्कंधे पांचचूलिकाछे तेपांचचूलिकांही १६ अध्ययन अवताराछे तो तेपांचचूलिकासहितना अठारपदसंहस्रजेतले अर्थनीसमा
 ति तेहपदक होए । पदार्थेसर्वसंस्थाएकछा आचारांगी प्रथमश्रुतस्कंधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंस्था १८ सहस्रपद परंचूलिकाछे । पांचबीजेश्रु
 तस्कंधे १८ सहस्रपदमांहीनही उक्तां च । नवबंधचेरमईओ अठारसपयसहस्रीओ । हवइसपंचचूला बहुबहुतरओपयगेणंति । अनेसूत्रमांहि चूलिकापहीछे ते
 एकसूत्रनासंबंधीमाटे परंतेहनीप्रमाण १८ पदमांहीनखेवो । ब्राह्मीओआदिनाथ भगवंतनीपुत्री तेहने अठारप्रकारे लेखविधान लिखिवानाभेदकछा ।

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ सूत्र ॥

॥ भाषा ॥

ब्राह्मलिपेर्षमित्यलंकारे सखाखन तस्याविधानमदा लंकाविधानं प्रथमं तद्यथा एतत्स्वरूपं नदृष्टमिति नदर्शितम् । तथायत्नोक्तं यथास्ति यथावाना
स्ति अथवास्वादादाभिप्रायस्तत्तदेवास्तिनास्तिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वतस्य । तथा धूमप्रभापंचमी । अष्टादशोत्तर सष्टादशयोजनसह
स्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिंडेन पोसासाढेत्यादि रेव्योजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्रातावित्यर्थः चत्वार्षोत्वार्षतोऽष्टादशमुहूर्तोदिवस

यंजी जवणालिया दोसऊरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चतरिया अरकरपुलिया जोगययत्ता
वेयणतिया णिरहइया अंकलिवि गणिअलवि गंधवुलिवि आदरसलिवि माहेसरलिवि दामिलिवि बोलिदि
लिवि अत्यिनत्यिप्पवायस्सणं पुवस्सअठारसवत्थू प० धूमप्पजाणं पुढवीए अठारसुत्तरंजोयण सयसह
स्सं वाहत्तेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अठारसमुज्जातादिवसेजवइ सइउक्कोसेणं अठारस

तेकहेहे । ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदेकरी लिपिअक्षरस्थापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १ । जवनलिपि २ । दोषऊपरिका ३ । वरोहियाप्रभृति विग्रहइयापर्यंत
नामविशेषजाणिवा ११ । अंकलिपि १२ गणितलिपि १३ । गांधर्वलिपि १४ । आदर्शलिपि १५ । माहेखरलिपि १६ । दामलिपि १७ । बोलिदिलिपि १८ ।
आस्तिनास्तिलोएससएविअसासएवि एहवो स्वादादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकर्षपक्षे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचचतुर्थपूर्व तेहना १८ वस्तु अधि
कारविशेषकज्ञा । धूमप्रभापंचमीपृथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहुल्यपणे जाडपणेकही । पोसाआसाढमासेसकृदिति एकदाचत्तत्पक्षे अ
ठारसुहूर्तोदिवसइए एतत्कर्क संक्रातिं आसाढीपुनौमे अठारमुहूर्तोदिवसइए सतिस्ति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहूर्ती रात्रिइए । एषीए रत्नप्र

मुक्तसारात्तीजवद् इमीसेणंरयणप्यज्ञाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठारसपलिनुवमाइं ठिई प०
 ठठीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइया
 णं अठारसपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं अठारसपलिनुवमाइं ठिई
 प० सहस्सारेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० आणएकप्पेसु देवाणं अत्येगइयाणं
 जहन्नेणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिठिसालं समाणं दुमं म
 हादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्भं कुमुदं कुमुदगुम्भं नलिणं नलिणगुम्भं पुंफुरीअं पुंफुरीयगुम्भं सह
 स्सारवहिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं अठा

भा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो अठारपमल्योपम आजखोकह्यो छट्ठीतमा पृथिवीये केतलाएकनारकीनो अठारसागरोपम आजखोकह्यो । असुरकु
 मारदेवतनो केतलाएकनो अठारपल्योपम आजखोकह्यो । सौधर्मइशानकल्ये केतलाएकदेवतानो अठारपल्योपम आजखोकह्यो । सहस्रारआठमेदेवलोके
 केतलाएकनोजवन्थो अठारसागरोपम आजखोकह्यो । आठमेदेवलोके जेदेवता काल १ । सुकाल २ । महाकाल ३ । अंजन ४ । रिष्ट ५ । साल ६ । समान
 ७ । दुम ८ । महादुम ९ । विशाल १० । सुसाल ११ । पदम १२ । पदमगुल्ल १३ । कुमुद १४ । कुमुदगुल्ल १५ । नलिन १६ । नलिनगुल्ल १७ । पौंडरीक
 १८ । पौंडरीकगुल्ल १९ । सहस्रारावतंसक २० ॥ एम वीसविमाने देवतापणेंउपनाछे । तेहदेवतानो अठारसागरोपम आजखोकह्यो । तेहदेवता अठार

भवति षत्रिंशद्वटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांती रात्रिरेवंविधेति कालमुकालादीनि विंशतिर्विमाननामानि ॥ १८ ॥
अथैकोनविंशतितमस्थानं तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टान्ता स्तत्रातिपादकान्यध्ययनानि षष्ठ्यां प्रथमश्रुतस्त्वध्वर्त्तानि उक्त्वि

रसेहिं अष्टमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊरुससंतिवा नीरुससंति तेषिणं देवाणं अष्टारसवासं सहस्से
हिं आहारठेसमुप्यज्जइ संतेगइया जवसिद्धिया जेअष्टारसहिं जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चि
स्संति परनिष्ठाइस्संति सव्वदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणयीसणायज्जयणा प० तं० ।

उरिक्तत्तणाए संधाठे अंठेकुम्मेअ सेलए तुंवेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्वे उंदगणाए मंहुक्को ते

वर्षमासे पखवाडे स्वासोस्वासले षणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमंके तेहदेवतनो अठारहर्षसहस्से आहारनो अर्धउपजे । केतलाएकभयजीव अठारभवनेअतिरे
सौभस्से बूभस्से मंजास्से सर्वदुःखनोअंतकरिस्से मोचजास्से ॥ इति अठारमंठाणूं सम्यत्तम् ॥ १८ ॥ हिवेइगुणवीसनो अधिकारलिखियेहे ।
ज्ञाताकठोअंग तेहने प्रथमश्रुतस्त्वध्वे १८ ज्ञायरूपनीतेमार्ग सूचकअध्यनकद्धा । तेकहेहे यथाक्रमे । उत्तिमज्ञाय जेहाथीए पगउपाखी पगहेठिशशलोराखी
तेहमेवकुमारहुयो १ । धनावहसेठीमो संधाडकज्ञाय २ । बीजोमोरडीनाईडानो ३ । चउथोकाकवानो ४ । पांचमो सेलकाचार्यनो ५ । छठोठकडानो ६
सातमो रोहिणीलघुवह्नो ७ । आठमोमल्लिकुमारीनो ८ । माकंदीसुतजिनरत्तेजिनपालक ९ । दशमोचंद्रमानो १० । इय्यारमोदापद्वनामहचमो ११ । वा
रमोदइकधीयजितशु सुबुद्धिमंथीनो १२ । मंहुकडेडकानो नंदमणीयारनो १३ चौदमोतेतलीपुत्रमुहुतानो १४ । पनरमोनंदिफलनो १५ । सोसमो अमरकांका

॥ टीका

॥ सूत्र

॥ भाषा

सित्वादि सार्वभौमप्रकाशमिदं च वृष्टाभाधिगमावसेवमिति । तथा जंबूद्वीपेण इत्यादौ भावजातयः स्वस्वानादुपरिबीजने शततपतोऽधस्तादृशं शतानि । तत्र च समभूतलेऽष्टौ भवन्ति दशपापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्वीपापरविदेहेहि निम्नीभवक्षेत्रमन्तिमविजयद्वयस्थदेशे अधोलोकदेशे सहस्रमिति द्वीपांतरसूर्या स्पर्धयन्तमधोऽष्टयतानि क्षेत्रस्वसमत्वादिति तथा शुक्रसूत्रेन क्वत्ता इति विभक्तिपरिणामाच्च वैः समंसहचारंचरणं चरित्वा विधेयेति तथा कलाभोक्ति पं

॥ टीका ॥

तलीइश्च नन्दिफले अवरकंका आइस्से सुंसमाइश्च अवरेश्च पोंठरीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्वीपेणंदीवे सूरिश्चा उक्कोसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उहंमहातवयइ सुक्कोणंमहग्गहेअवरेणं उइश्चसमणे एकूणवीसंणस्कत्ताइं स मंचारंचरित्ता अवरणं अत्यमणं उवागच्छइ जंबूद्वीवरस्सणंदीवरस्स कलानं एगूणवीसंठेअणानं प० एगूणवीसं

॥ मूल ॥

राजधानीनो द्वुपदीनो १६ । सतरमो आकीर्णघोडानो १७ । अठारमो सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८ । अपरअनेरो पुंडरीक कुंडरीकनो न्यायउगणीसमे १९ जंबूद्वीपनेविषे सूर्यउत्कृष्टो इगुणवीस योजणसत उपरिहंठि मिलीनेतपे एतले पोंतानाविमानथी एकसोयोजन ऊंचोतपे प्रकासे अनेसमेभूतलेगइ आठसे योजन नीचोतपे वलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे केहली विजयछे जिहां तिहां मेरुनी अपेक्षा एकसहस्रयोजन भुईजंहीछे तिहां प्रकाशे एतले एक सो आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहंठि प्रकाशे । शुक्रमहायह पश्चिमदिसें जगोथको उगणवीस नक्षत्रसाथे चारचरीने भ्रमणकरीने पश्चिमदिसें अस्तमनप्रति पामे जंबूद्वीपद्वीपनीकला उगणीसछेदना भागरूपएतले भरथवेच ५२६ योजन अनेउपरि छकलातेह एकयोजनना १९ छेदनाभा

॥ भाषा ॥

॥ टीका

॥ मूल

॥ भाषा

असएह्वीसे छक्कलावित्युभरहवासमित्वादिषु अंबूदोपगणितेषु याः कलाउच्यंते ताथोजनस्येकोनविंशतिभागश्चेदना एकोनविंशतिभागरूपा इतिभावः
आगारमज्जेवसित्ति अगारंगेहं अस्येकोनविंशति विरकालंराज्यपरिपालनतः आमर्यादायदीक्षां वसित्वाउधित्वा तत्रावासंविधायेति अध्येष्टप्रवृजिताः ये
षास्तुपंच कुमारभावएवेत्याह । वीरंअरिहनेमिं पासंमज्जिंचवासपुज्जं । एएमोत्तूणजिणे अवसेयाआसिरायाणोत्ति ॥ १८ ॥ अथविंशति तमस्था

तित्ययरा अगारवासमज्जेवसित्ता मुंठेनविह्माणं आगारानुअणगारिअंपव्वइअ्था इमीसेणं रयणप्पजाए पुढ
वीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिनुवमाइं ठिई प० ठठीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं
एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं एगूणवीसपलिनुवमाइं ठिई प०
सोहममीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एगूणवीसपलिनुवमाइं ठिई प० आणयकप्पे उक्कोसेणं एगू

गरूप एतलेभाग करी एह्वी छक्कला प्रप्ताकही । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पाखंनाथ ३ । मज्जिनाथ ४ । वासुपूज ५ । एपांचतौर्थंकरविना वीजा
उगणीसतौर्थंकर गृहस्थात्रमेवसीने मुंठपणूपास्या द्रव्यमुंडलोचादिकभावमुंड तेकषायत्याग गृहस्थात्रमथकी अनगारपणाथकी प्रवृज्याधरनथी जेहनेते
अनगारीतेहपणूपास्या । एषी एरत्तप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो उगणीसपखोपम आउखोकझो । छट्ठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक
नारकीनी उगणीसपखोपम आउखोकझो । असुरकुरमार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपखोपम आउखोकझो । सौधर्मईशानकस्ये केतलाएक
देवतानोउगणीस पखोपम आउखोकझो । आनतनवमेकरूपेउत्तुष्टो उगणीससागरोपम आउखोकझो । प्राणतदयमे करूपे केतला एकदेवतानो

णवीससागरोवमाइं ठिई प० पाणएकप्ये अत्थेगइयाणं देवाणं जहन्तेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प०
 जेदेवा अणतं पाणतं णतं विणतं पणं सुसिरं इंदं इंदकंतं इंदुत्तरवहंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि
 णंदेवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एगूणवीसाए अण्णमासाणं अणमंतिवा पा
 णमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणवीसाए वास्ससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संते
 गइया नवसिद्धियाजीवा जेएगूणवीसाए नवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइ
 स्संति सव्वदुरकाणं अंतंकरिस्संति ॥ ११ ॥ वीसंअसमाहिठाणा प० तं० । दवदवचारिअ

जघन्यो उगणीससारोपम आउखोकह्यो । जेदेवता आनत १ । प्राणत २ । नत ३ । विनत ४ । पणक ५ । सुषिर ६ । इन्द ७ । इन्द्रकां
 त ८ । इन्द्रोत्तरावतंसक ९ । विमाने देवतापणेउपनाहे । तेहदेवतानोउत्कथ्यो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवतानो उगणीसे अ
 मासे पखवाडे स्वासोखाले घणाले ऊंचोले नीचोमूके तेहदेवतानो उगणीसवर्षसहस्त्रेण आहारनीच्छाउपजे केतला एकभव्यजीव उगणीसभवने
 आंतरे सीभस्से बूभस्से मंकास्से सर्वदुःखना अंतकरीसे मोक्षजासे ॥ इति उगणीसमूठाणं सम्मत्तम् ॥ १८ ॥ हिवे वीसनो अधिकारलिखिये
 हे । वीस असमाधिस्थानककथा । तेसूचित्तामिराखिवं मोक्षमार्गेरहिवो तेसमाधि नहीसमाधि तेअधिकार तेहनास्थानकभेद तेअसमाधिस्थान तेकहेहे
 अनुक्रमे । दवदवउतावली चालतो अथचित्तपणेघणा जीवनेहणे तेमाटे संयमने अवाधाउपजावेअनेपडेतो आत्माने असमाधिउपजावे १ । अणपूज्येचालेअर्थ

ने किंचित्स्थिते । तत्र स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सप्तसूत्राणि तत्रैवमाधानं समाधिश्चेतसः स्वास्थं मोक्षमार्गं वस्थानमित्यर्थः न समाधिरसमाधिस्तस्याः स्थानान्वा-
यभेदा पर्याया वा असमाधिस्थानानि तत्र दवदवचारित्ति योहिद्रुतंचरतिगच्छति सोऽनुकरणशब्दतोदवदवचारीलुच्यते वापीत्युत्तरासमाधिस्थानापेक्षया
समुच्छयार्था भवतीति सिद्धम् । सचद्रुतं २ संयमात्मनिरपेक्षेवृजन्नात्मानं प्रपतनादिभिरसमाधौ योजयति अन्यांससत्त्वान् घ्नन्ऽसमाधौ योजयति सत्वबधजनि
तेन च कर्माणां परलोकेष्व्यात्मानमसमाधौ योजयत्यतोद्भुतगंतव्यं मसमाधिकारणत्वादसमाधिकं स्थानं मेव मन्यत्रापि यथायोगमवसेयं १ तथा अप्रमार्जितचारी २
दुप्रमार्जितचारी ३ स्थाननिषीदनत्वग्वर्त्तनादिष्वाम्नादिविराधनां लभते तथा अतिरिक्ता अतिप्रमाणाश्रय्यावसतिरासनानि च पीठकादीनि यस्य सन्ति सोतिरि-
क्त श्रय्यासनिकः सचातिरिक्तश्रय्या सनिकरः सचातिरिक्तायां श्रय्यायां घंघशलादिरूपाया मन्येपि कौटिकादय आवसयन्ति इतितैः सहाधिकारणत्वादसमा-
धिस्थानमेव मन्यत्रापि यथायोगमवसेयं तथा अप्रमार्जितचारी दुप्रमार्जितचारी च संभवादात्मापरेचासमाधौ योजयतीति एवमासनाधिक्येपि वाच्यमिति ४

विज्ञवद् अप्रमज्जिश्चचारिश्चाविज्ञवद् दुप्पमज्जियचारिश्चाविज्ञवद् अतिरिक्तसज्जासणिण् रातिणिश्चप

पूर्वनीपरी २ । भुंङ्गीपरी पूज्जीचालेमर्यादायकी अधिकश्रय्यापाटीपाटला आसनादिकसेवे ३ । अधिकउपाययराखे तिहं योगीसंन्यासी आवीउतरे तेसाथेवाह-
करवोपडे आत्मानेसमाधिउपजे ४ । राचिकपरिभाषी आचार्यादिकाणं सान्धोबोले तथापराभवे एमकरतो आत्माने असमाधिउपजे ५ । थविरतेगुर्वादिकतेहने
उवघातीमारं तेखविरोपघाती ६ । एमभूतएकेन्द्रियादि तेहनेहणेतेभूतोपघाती ७ । चणचणक्रोधकरेतेसंज्वलन ८ । अनंतक्रोधांधहुए तेक्रोधन ९ । परपूठिपा-
रकोधवर्षवादेबोलेतेपुष्टिमांस १० । अभीक्ष्मवधारयिता वलीवलीशंकितअर्थने निःशंकितथकोकहे तथापारकागुच्छमीसकेनही नवां अधिकारकलहतथा

॥ जू

॥ भाषा

राजनोतिपरीभावी आचार्यादिषु परिभवकारौ सञ्चालनमन्यांश्चासमाधौ योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरवः तानाचारदोषेषु शीलदीक्षिषु च प्रा-
नादिभिर्वावहतीत्येवशीलः स एव चेति स्थविरोपघातिकः ६ तथाभूतान्येकैन्द्रियांस्तानमर्थत उपहंतीति भूतोपघातिकः ७ तथासंज्वलतीति संज्वलनः प्रतिपक्षं
रोषणः ८ तथाक्रोधनः सकृत्क्रुद्धोऽत्यंतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्टिमांसिकः पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकरी १० अभिमुखं २ ओहारयित्ति अभौक्ष्यमभौक्ष्य
मवधारयिताशंकितस्याप्यर्थस्य निशंकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवक्ता अथवा अवहारयितापरगुणानां मवहारकरी यथाअदासादिकमपि प-
रंभणति दासस्वंचौरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणनां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराणांति पुरातनानां कलहानां क्षमितव्यमुपशमितनां
क्षमितत्वेनोपशान्तानां पुनरुद्वीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादौ यः सचेतनादिरजोगुण्डितेनहस्तेन दीयमानांभिर्चांग्यद्वाति तथायोऽस्थंडिलादेः
स्थंडिलादौ संक्रामन्नपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधेकारणे सचित्तादिपृथिव्यां कल्पाविना अनंतरिताया मासनादिकरांति ससरजस्कपाणिपादइति १४ त-

रिज्ञासी थेरोवघाइए जूनवघाइए संजलणे कोहणे पिठिमंसए अजिरकणं उहारइत्ताजवइ णवाणंअधिक
रणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्ताजवइ पौराणाणंअधिकरणाणं स्वामिअविजं सविअणंपुणोदीरेत्ताजवइ ससर

गाडलादिकं तेषुपूर्वेअनुत्पन्नके उपनानथी तेहउपजावेके १२ । पुरातनजूनानेकलहाने खभाविवापणे उपशमाव्याके तेहनेपुनरपिवली उदारकहुएदारे १३ ।
सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजखरणाएंहायेभिन्नदेतन्ति अथवासचित्त अचित्त स्थंडिलजेपमनपूजे १४ । अकालेस्वाध्यायकरे पहिले प्रहरेअने पाखिले प्रह-
रे कालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकने अषेचौदप्रहरलगे उक्तादिक दशवै कालिक नभणे १५ । अकालेभयतांदेवतादिकनोउकलहोर्थे । कलहकरे १६ । शब्दकोरे

था अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथा कलहकरः कलहकरो हेतुभूतकर्त्तृकारो १६ तथा शब्दकरः रात्रौ महता शब्देनोक्तापः स्वाध्यायादिकारको गृहस्थ
भाषाभाषको वा १७ । तथा भंभाकरोत्येवं येन गणस्य भेदो भवति तत्तत्कारो येन च गणस्य मनोदुःखं समुत्पद्यत्यतो भंभा १८ तथा सूरप्रमाणाभोजी सूर्योदयादस्तम
यं यावद्दशनपानाद्यभ्यवहारो १९ एषणा असमितश्चापि अनेषणानैव परिहृति प्रेरितश्चासौ साधुभिः कलहायते तथा अनेषणीयं मपरिहरन् जीवो कोपराधो
वर्त्तते एवं चात्मपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिदं विंशतितममिति २० तथा घनोदधयः सप्तमपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिकाः इन्द्रसमानह
यः साहस्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतो बन्धसमयादारभ्य बन्धस्थितिः क्षितिर्बन्ध इत्यर्थः प्रत्याख्याननामकं पूर्ववन्धं सातादौ निचैकविंशतिर्विमानानीति ॥

रूपपाणिपाण् शुक्लसज्जायकारण् शुचिजड् कलहकरे सद्गकरे ऊँऊँकरे सूर्यप्रमाणान्नोई एसणासमिते शु
चिजड् मुणिसुव्रणं श्रहा वीसधणूडं उहं उच्चतेणं होत्या सवेविष्णुणं घणोदही वीसंजोयणसहस्साइं वाह
त्वेणं प० पाणयस्सणं देविंदस्सदेवरस्सोवीसं सामाणिष्साहस्सीनु प० नपुंसयेष्णिज्जस्सणं कम्मस्सवीसं

रात्रिमाटे सादेसज्जायकरे गृहस्थनेपरौ उपडो बोले १७ । भंभाकार जेणे करी गळुनो भेद होय एहवोकरे १८ । सूरप्रमाणाभोजी सूर्यआथमे तिहांलगेन जिमे
१९ । एषणाऽसमित असूभूतो भातपाणीले बीजोयती इसीषदेतां कलहकरे २० । एहवीसअसमाधिस्थानकक्षा २० । मुनिसुव्रत वीसमातीर्थंकर वीसधनुष
उंचाऊंचपणेथया । सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनोदधि कठिनसलाभूतपाणी तेघनोदधि । वीसयोजनसहस्र जाडपणेकक्षी । प्राणतदेव
लोकदशमो तेहनोइन्द्र तेहनादेवतानो इन्द्र तेदेवेद्र तेहना देवतानो राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकक्षा । नपुंसकवेदनीयकर्म अर्थात् नपुंसककर्म

॥ टीका

॥ मूल

॥ भाषा

सागरोवमोकोठाकोठीनु बंधनु बंधठिई प० पञ्चस्काणंपुष्पस्सवीसंवत्सू उस्सप्पिणिमंजले वीसंसागरोवम
 कोठाकोठीनुकालो प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंपलिनुवमाइं ठिई
 प० ठ्ठाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ
 याणं वीसंपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिनुवमाइं ठिई प०
 पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीससारोवमाइं ठिई प० आरणेकप्पेसु देवाणं जहन्तेणं वीससागरोवमा
 इं ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धत्थं उप्पलं त्रित्तिलं तिगिच्छं दिसा सोवत्थियं पलं रुइलं पुष्पं सुपु

मौ वीससागरोपम कोडीबंधसमयथकोमांडी बंधनी स्थितिकही । प्रत्यास्थान नवमापूर्वनावीसवस्तु अधिकारविशेषकह्या । उत्सर्पिणी अवससपिणीमंड
 लनेविषे कालचक्रनेविषे वीसकोडीकालकह्यो । एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालकह्यो । एणी ए
 रद्वप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीसपत्थोपम आउखोकह्यो । छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीससागरोपम आउखोक
 ह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो वीसपत्थोपमआउखोकह्यो सौधर्मइशान देवलोके केतलाएक देवतानो वीसपत्थोपम आउखोकह्यो प्राणतदशमेक
 ल्ये देवनोउत्कष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो । आरणइयारमेकल्ये देवनो जघन्योवीससागरोपमआउखोकह्यो दशमेकल्ये जेदेवता । सात १ । विसात २
 सिद्धार्थ ३ । उत्पल ४ । भित्तिल ५ । तिगिच्छा ६ । दिसा ७ । सौवस्तिक ८ । पल ९ । रुचिर १० । पुष्प ११ । सुपुष्प १२ । पुष्पावर्त १३ । पुष्पप्रभ १४ ।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानकं तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसुत्रैर्विनासुगमनानिच नवरंशबलसंकर्षुरं चारिचयः क्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला स्त
योगाक्षाधर्षापिते एवतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेषं कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शबलोभवत्येकः १ एवमैथुनप्रतिसेवनानि क्रमादिभिस्त्रिभिः प्रकारैः २

पुष्पं पुष्पावतं पुष्पपत्रं पुष्पकतं पुष्पवस्त्रं पुष्पलेसं पुष्पज्जयं पुष्पसिंगं पुष्पसिद्धं पुष्पुत्तरवह्निंसगं विमा
णं देवप्ताए उववन्ता तेषिणं देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइं प० तेणंदेवा वीसाए अरुमासाणं अ
णमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिया नीस्ससंतिया तेषिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं अाहारठेसमु
प्यज्जइ संतेगइया नवसिद्धियाजीया जेवीसाए नवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परि
निह्वाइस्संति सव्वदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एकवीसंसवला पन्नता तंजहा ।

पुष्पकांत १५ । पुष्पवर्ण १६ । पुष्पलेश १७ । पुष्पध्वज १८ । पुष्पगृह १९ । पुष्पसिद्ध २० । पुष्पोत्तरावतंसक २१ । एहविमाने देवतापणे उपनाहे तेह देव
तानो उक्कटो वीससागरोपम आउखोक्कटो । तेदेवता वीसअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमंके तेहदेवतानो वीससहस्रवर्षे
आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेअंतरे सीभस्ये बुभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्स्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिवीसमं ठाणूं सग्वत्तम् ॥

॥ २० ॥ हिंवे एकवीसमो अधिकार लिखियेहे ॥ एकवीस सबलाकड्या जेजिकरी शबल चारिच करबुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकर
तोयको साधुपणी शबलकड्यो तेकहेहे । हस्तकर्ममुष्टिजापकरतो शबलकड्यो । १ । मैथुनप्रते सेवतोयको शबल २ । रात्रिभोजन करतोयको ३ । आवाक

॥ टीका

॥ मूल

॥ भाषा

तथारात्रिभोजनं दिवागृहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिस्तु भिन्नभगवत् रतिक्रमादिभिस्तु भुजानः ३ आधाकर्म ४ सागारिकः स्थानदातातत्पिंडं ५ जेहशिकं क्री-
तमाहृत्यदीयमानं भुजानः उपलक्ष्यत्वात् पामिच्छेच्छाद्यानि सृष्टग्रहणमपीह दृश्यमिति ६ यावत्करणोपात्तपदान्येवमर्थतोऽवगन्तव्यानि अभीक्ष्णं प्रत्याख्यायाऽ-
शनादिभुजानः ७ अन्तः षष्ठां मासानामेकतो गणाद्ग्रहणमन्यसंक्रामन् ८ अंतर्मासस्य त्रीनृदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ९ अंत-
र्मासस्य त्रीणि मायास्थानानि स्थानमिति भेदः १० राजपिंडं भुजानः ११ आकुट्याप्राणातिपातं कुर्वन् उपेत्य पृथिव्यादिकं हिंसन्नित्यर्थः १२ आकुट्यामृषावादं व-

हृत्य कर्म करेमाणे सबले मेज्जणं पण्डिसेवमाणे सबले राइजोअणं जुंजमाणे सबले आहाकम्मं जुंजमाणे सबले
सागारियं पिंडं जुंजमाणे सबले उद्देसियं क्रीयं आहृदिज्जमाणं जुंजमाणे सबले अजिरकणं अजिरकणं
पण्डियाइरकेत्ताणं जुंजमाणे सबले अंतोठसं मासाणं गणानं गणसंक्कम्ममाणे सबले अंतोमासस्स तनुदगले
वेकरेमाणे सबले अंतोमासस्स तनुमाईठाणे सेवमाणे सबले रायपिंडं जुंजमाणे सबले आउहियाए पाणाइवायं -

र्माभोजनं भुजतोषको ४ । जेहनो उपासरोडुयो तेगृहस्थाना घरनीपिंड आहारं भुजतोषको ५ । उद्देसकतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणिकरे तेउद्देश-
कतथा क्रीतवेचातो आस्थो आहृतसमाहृतआस्थो आहारते तोषबल ६ । अभीक्ष्णं बलीबली अशनादिक पञ्चक्खीने जीमतो ७ । जेहले क्खमासमांहि गच्छ-
पालटवको शबल ८ । एकमासमांहि त्रिणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ९ । मासमांहि त्रिणिठाण सेवतोषको १० । राजपिंडं भुज-
तो ११ । आकुटीए प्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकनेइत्थतो १२ । आकुटि एमृषावाद वदतो १३ । आकुटीए अदत्तादान प्रतिलेतोको १४ । आकुटीए

॥ मूल

॥ मूल

॥ भाषा

दन् १३ अदत्तादानं गृह्णन् १४ आकुट्यवानंतर्हितायां पृथिव्यां स्थानं वानेधिविवाचेत् यत्कायोत्सर्गं स्वाध्यायभूमिं वा कुर्वन्नित्यर्थः १५ एवमाकुट्या सस्निग्धसरज
स्कायां पृथिव्यां विस्तारवत्यां सचित्तवत्यां गिलायां लेष्टौ वा कोलावासेदारुणि कोलाघुणाः तेषामावासः १६ अन्यस्मिंश्च तथा प्रकारे सप्राणेषु बीजादौ स्थाना

करेमाणे सवले आउहियाए मुसावायं वदमाणे सवले आउहियाए अदिस्माणं गिरहमाणे सवले आउहियाए
अणंतरहियाए पुढवीएठाणं वानिसिहियं वा वेलिमाणे सवले एवं आउहिया चित्तमं ताए पुढवीए एवं आउहि
या चित्तमं ताए सलाए कुलावासंतिवादारुएठाणं वा सहियं वा चेतमाणे सवले जीवपइठिए सपाणे सवीए सहरीए
सउत्तंगे पणंगदगमही मक्कांठासंताणए तहपगारंठाणं वासिज्जं वानिसिहियं वा चेतमाणे सवले आउहियाए
मूलजोअणं वा कंदजोयणं वा तयाजोयणं वा पवालजोयणं वा पुप्फजोयणं वा फलजोयणं वा हरियजोयणं वा

सचित्तं पृथिवीजपरि बैसतो अथवा सूवतो वा स्वाध्याकरतो १५ । सचित्तगिला तथा पाषाण पृथिवी सचित्तउपरि धुणसहितकाष्ठ उपरि बैसतो सूवतो
अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरतो १६ । जीवप्रतिष्ठित एहवो सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतो यको एकेंद्रिय वेदन्द्रिय तेन्द्रिय चउरिन्द्रिय इत्यादिक जीवविराधना
करतो अथवा उपरिसूतो सज्जायकरतो १७ । आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कंदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन
वल्लीफलभोजन हरियभोजन करतो यको १८ । एकवर्षमांहि दसदगलेपकरतो सवल १९ । वर्षमांहि दसमायाठाण सेवतो यको २० । अभीक्ष्णम् वलीवली यातो

॥ टीका

॥ मूल

॥ भाषा

दिक्कुर्वन् १७ आकुक्ष्यामूलकंदादिभुञ्जानः १८ अंतः संवत्सरस्य दशोदकलेपान् कुर्वन् १९ तथातः संवत्सरस्य दशमायास्थानानि च २० तथा अभौक्ष्यं पीनः पुन्येन श
तोदकलक्षणं यद्विकटं वतं तेन व्यापारितो व्याप्तोयः पाणिर्हस्तः स तथा ते अशनं प्रगृह्य भुञ्जानः श्वला इत्येकविंशतितमः २१ तथा हि निवृत्तिबादरस्यापूर्वकार
णस्याष्टमगुणस्थानकवर्त्तिन इत्यर्थः संवाक्यालंकारे क्षीणसप्तक मनंतानुबंधि चतुष्टयदर्शनत्रयलक्षणं यस्य स तथा तस्य मोहयनीत्येकमर्थः एकविंशतिकर्माणां अ
प्रत्यास्थानादिकषाय द्वादशनोकषायनवकरूपा उत्तरप्रकृतयः सत्कर्मसत्तावस्थं कर्मप्रज्ञप्तमिति तथा श्रीवत्सम् श्रीदाम कांडं मात्यकृष्टिं चापोवतं आरणावतं

॥ टीका

॥ मूल ॥

जुंजमाणे सवले अंतोसंवच्छरस्स दसदगले वकरेमाणे सवले अंतोसंवच्छरस्स दसमाईठाणाइं सेवमाणे सवले
अज्जिखणं सीतोदयवेयफुवग्घारियपाणिणा असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिगाहिता जुंजमाणे
सवले णिअहिवादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कावीसकम्मंसासंतकम्मा प० त० अपच्च
स्काणकसाएकोहे अपच्चस्काणकसाएमाणे अपच्चस्काणकसाएलोत्ते पच्चस्काणावरणकसाएकोहे पच्चस्काणाव

दकलक्षणं जे विकटजल तेणे करी व्यारीयति व्यापास्यो तथा व्याप्यो भीनो पाणिहाथ जेहनो तेणे करि असनपाणि खादिमसादिम पडिगाहेले तथा सचित्त
पाणीभीने हाथे करि जीमतो शबल २१ निवृत्तिबादर अपूर्वकरण आठमे तिहांवर्तताने तथा खपाव्योहे जेणें सप्तकचारअनंतानुबंधी कषाय अने त्रिणिदंसण
मोहनी एम ७ प्रकृति जे खपाव्योहे तेहने मोहनीयना कर्मना एकवीस कर्मना अंश उत्तरकर्म प्रकृति संतकश्चित् सत्तकर्मसत्तावस्था एकस्मात्ते कहेहे ।
अप्रत्यास्थानाव कषायक्रोध १ । अप्रत्यास्थानमान २ । अप्रत्यास्थानमाया ३ । अप्रत्यास्थानलोभ ४ । प्रत्यास्थानावरणी जीजो कषायक्रोध ५ । प्रत्यास्थानावर

॥ भाष्य

रणकसाएमाणे पञ्चरक्ताणावरणकसाएमाया पञ्चरक्ताणावरणकसाएलोने संजलणकसाएकोहे संजलणकसाए
माणे संजलणकसाएमाया संजलणकसाएलोने इत्यिवेदे पुंवेदे णपुंसगवेदे हासे अरति रति जय सोक दु
गच्छा एक्कमेक्काएणंउस्सप्पिणी पंचमठठानंसमान एक्कवीस एक्कवीस वाससहस्साइंकालेणं प० तं० दूसमा
दूसम दूसमाएगमे गाएणंउस्सप्पिणीए पढमत्रितिअनंसमान एक्कवीस एक्कवीससहस्साइंकालेणं प० तं०
दुसम दुसमाए दूसमायए इमीसेणं रयणप्पज्जाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीस पलिनंवमाइं

ण कषायमान ६ । प्रत्यास्थानावरण कषायमाया ७ । प्रत्यास्थानावरण कषायलोभ ८ । संज्वलचौथो कषायक्रोध ९ । संज्वलकषायमान १० । संज्वलनक
षायमाया ११ । संज्वलनकषायलोभ १२ । स्त्रीवेद १३ । पुरुषवेद १४ । नपुंसकवेद १५ । हास्य १६ । अरति १७ । रति १८ । भय १९ । शोक २० । दुगच्छा
२१ । एकेकीए अवसर्पिणीए पडते अरे पांचमोअरो अने छठोअरो समयकाल एवेवेनो एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे । दुखमअरो
पांचमो २१ हजारवर्षनो दुखम दुखमअरो बिलवासीनो छठो २१ वर्षसहस्रनो एकेकी उत्तर्पिणीए चडेते आरेपहिलो आरो बिलवासीनो अने बीजो
आरो मनुष्यनो समयकाल एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे । उत्तर्पिणीनो दुखम दुखमापहिलो आरो २१ वर्षसहस्रनो दुखमा बी
जो आरो २१ वर्षसहस्रनो । दुखमाबीजो आरो २१ सहस्रवर्ष । एणीए रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकवीसपत्थोपम आउछोकह्यो । छठौत
मापृथिवीए केतलाएक नारकीनो एकवीस सागरोपम आउछोकह्यो । असरकुमार देवतानो केतलाएकनो एकवीस पत्थोपम आउछोकह्यो । सौधर्म इंधा

॥ मूला

॥ भाषा

ठिई प० ठठीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं
 अत्येगइयाणं एगवीस पलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एकवीसंपलि
 नुवमाइं ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीसंसागरोवमाइं ठिई प० अञ्जुतेकप्पे देवाणं जहन्ने
 णं एकवीस सागरो वमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छं सिरिदामं कंठं मल्लकिहं चावोस्सतं अरस्सवप्पिं
 सगं विमाणं देवत्ताए उववत्ता तेसिणं देवाणं एकवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एकवीसाए अ
 रुमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवा एकवीसाए वाससहरस्सेहिं अ
 हारठे समुप्पज्जइ संतेगइया जवसिद्धियाजीवा जेएकवीसाए जवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मु

नकल्पे केतलाएक देवतानो एगवीस पत्थोपम आउखोकद्धो । आरण इग्यारमेकल्पे देवतानो उक्कथो एकवीस सागरोपम आउखोकद्धो । अच्युते बारमेक
 ल्पे देवतानो जवन्यो एकवीस सागरोपम आउखोकद्धो । इग्यारमे देवलोके जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ कांडं ३ माव्यकठ ४ चापोवत्तं ५ आरणावत्तंसक
 ६ एहळ विमाने देवतापडे उपनाडे तेहदेवतानो एकवीस सागरोपम आउखोकद्धो । तेहदेवतानो एकवीसे अरुमासे पखवाडे स्वातोस्सांस घणीले उंचोले
 जीवोमंके तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सीभस्से वूभस्से मूकास्से सर्वदुःखनो अंतकरीस्से

सुरशतेनाधिकानीति आदित्यमासोयेनकालेनादित्योराशिभुक्ते किंचिविसेसूणादिति अहोरात्रार्धेनन्यूनानीति ॥ ३१ ॥ हात्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तं ।
नवरं । युज्यते इतियोगा मनोवाकायव्यापारास्तेचेहप्रशस्ताएवंविवक्षितास्तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिनाप्रकारेणसंग्रहणानि संग्रहाः
प्रशस्तयोगसंग्रहाः प्रशस्तयोगसंग्रहनिमित्तत्वाद्दालोचनादय एवतथोचन्ते । तेचद्वात्रिंशद्भवन्ति तदुपदर्शकंश्लोकपंचकं आलायणेत्यादयस्यगमनिका तत्रआलोय

॥ टीका ॥

देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ता तेसिणं देवा ँ उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं
ठिई प० तेणंदेवा एक्कतीसाए अष्टमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं
देवाणं एक्कतीसं वाससहस्सेहिं आहारठे समुपज्जइ संतेगइया जवसिधियाजीवा जे एक्कतीसेहिं जवग्गह
णेहिं सिज्जिस्संति युज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिह्वाइस्संति सव्वदुरकाणमंतं करिस्संति ॥ ३१ ॥
वत्तीसं जोगसंगहा प० तंजहा आलायण निरवलावे आवई सुदढधम्मया । अणिस्सिउवहाणेय सिरका

॥ मूल ॥

स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नोचामंके ते देवताने एकत्रीस वर्षसहस्रगये आहारनी इच्छाउपजे । के केतलाएक भव्यजीव जेएकत्रीस भवने आंतरें सीभस्ये
बूभस्ये मूकास्ये कृतकर्मना पढल टालवायकी ठाढायास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिएकत्रीसमं समवाय संपूर्ण ॥ ३१ ॥ हिवे
बत्रीसमो समवाय लिखेके । बत्रीस योग संग्रह मन वचन कायानायोग तेहनो संग्रह शिष्ये आलायणालेवो गुरुये कहौआगली नक्कहिवो इत्यादि प्रकारें
संग्रह करिवो प्रशस्त योगना कारण ते योगसंग्रह ते कहेके । मोक्षसाधक योगसंग्रहभणी शिष्ये आचार्यभणी आलायणकहौ १ । आचार्यभणी आलायण

॥ भाषा ॥

णति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालोचनादत्ता १ निरवलावेत्ति आचार्योपिमोक्षसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या
 नान्यस्मैकथयेदित्यर्थः २ आवर्त्तसुदृढधम्मयत्ति प्रशस्तयोगसंग्रहाय नाहुनाऽऽपत्सुद्रव्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि
 स्मिओवहाणेयत्ति शुभयोगसंग्रहायैवानिश्चितं च तदग्यनिरपेक्षमुपधानं परमाहाय्यानपेक्ष्यंतपोविधेयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसंग्रहायशिचासेवितव्या सा
 चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षायासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निष्पट्टिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्यविधेया ६ अन्नाययत्ति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू
 जादर्थित्वेनाऽप्रकाशयद्भि स्तपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभेयत्ति अलोभता विधेया ८ तितिक्खत्ति तितिक्षापरीषदादिजयः ९ अज्जवेत्ति अर्जवः ऋजुभावः १०
 सुइत्तिशुचिः सत्यंसंयमइत्यर्थः ११ सम्मदिठ्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाविशचेतः स्वास्थ्यं १३ आयारविणओवएत्ति द्वारद्वयं तत्रा

॥ टीका ॥

निष्पट्टिकम्मया ॥ १ ॥ शुणायया शुलोत्तेय । तितिक्का अज्जवे सुइ ॥ सम्मदिठ्ठी समाहीय । आयारे

॥ मूल ॥

कहो अनेराआगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणी यतनि आपदा आख्यांयके दृढधर्म करिवो ३ । अनिशये अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ ।
 सूत्रार्थ ग्रहण रूप शिचानी सेवा ५ । शरीरनी निष्प्रतिकर्मता करवो एतले सुश्रूषानकरवो ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोषको तपकरे ७ अलोभताकरवो
 ८ । तितिक्षा परीषहनी जयकरिवो ९ । अर्जव सरल स्वभाव १० सत्यमनियम ११ । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनं स्वस्थपणं १३ । आचार सहित धर्मेने
 मायानकरे १४ । विनय युक्त होय मायानकरे १५ । अदीनपणं १६ । संबेग संसारथांभय अथवा मोक्षनी इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

॥ भाषा ॥

पारोपगतः स्यात् समायांकुर्यादित्यर्थः १७ विनयोपगतो भवेत्तसायां कुर्यादित्यर्थः १८ विस्महेयति धृतिप्रधानासति धृतिमतिरदैव्यं १९ संवेगात्ति संवेगः संसा
 रादयर्मोक्षानिलाघोषा २० पणिहिति प्रणिप्रिर्मायाशब्दं नकादमित्यर्थः २१ सुविहि सदनुष्ठानं २२ सवयश्चाथवनिरोधः २३ अतदोसोवसंहरेति स्वकीयदोष
 स्थनिरोधः २४ सव्वकामविरत्तयति समस्तविषयवेमुत्थं २५ पञ्चक्वाणैति प्रत्याख्यानं मूलगुणविषयं २६ उत्तरगुणविषयं च २७ विउसगैति व्युत्सर्गोद्वेगभावमे
 वमित्रः २८ अप्पमाणति प्रसादवर्जितं २९ लवालवैति कालोपलक्षणं तेन ज्ञेयं ३० सामाचार्येन नुष्ठानकार्यं ३१ भाणसंवरजोगेति ध्यानमेव संवरयोगो ध्यान
 संवरयोगः ३२ उदणमारणतिणति मारणांतिकेपि वेदनादनेनोपशान्तिकार्यः ३३ संगणयपरिणति संगणयपरिणतिप्रत्याख्यादपरिणतिभेदमिन्द्रापरिज्ञाकार्यं

॥ टीका ।

विणनुवए ॥ २ ॥ विडंमडं य संवेगे । पणिहीमुचिहिसंवरं ॥ अतदोसोवसंहारे । सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥

॥ मूल ॥

पञ्चरकाणे विउसग्गे । अप्पमादलवालवे ॥ ज्जाणे संवरजोगेय । उदणमारणतिण ॥ ४ ॥ संगणयपरिस्मा

॥ भाषा ।

शून्यं अनुष्ठानं करिष्ये १८ । संवर आश्रयनिरोध २० पतिताना दोषानां निरोधं रोकित्यर्थः २१ । सर्वविषयशून्यं विमुखपणो २२ । पञ्चक्वाणो करिष्ये २३ ।
 व्युत्सर्गोद्वेगको उपशान्तो त्यागभावयको विणमोखनो त्याग २४ । प्रसादं दासिष्ये २५ । विनयानां कालं समाचरिष्ये २६ । धर्मव्यानादि करिष्ये २७ ।
 संवरनो योग २८ । मारणांतिक वेदना उपशान्ते मनसि शान्तिं न करिष्ये २९ । संगणनी परिज्ञा स्वजनादिक संगणनी पञ्चक्वो ३० । प्रायश्चित्तनो करिष्ये ३१ ।
 आराधना करी मरे ३२ । एह बन्धोस योग समग्रं जासिवा ॥ बन्धोस देवेन्द्र कदा ते कहे हे । चमरेन्द्र १ । वलेन्द्र २ । धरणेन्द्र ३ । भूतानेन्द्र ४ । विणुदेव ५ ।

१० पच्छित्तकरणेइति प्रायश्चित्तकरणचकार्यं ३१ आराहणायमरणंते मरणरूपोन्तो मरणांतः सूत्रेत्यतोद्वात्रिंशद्योगसंग्रहाइति ३२ इन्द्रसूत्रेयावत्करणहेण
 देववेणुदाली हरिकंते हरिस्महे अग्निमीहे अग्निमाणवे पुष्पे वमिहे जलकंते जलप्पहे अमियगइ अमियवाहणे वेलंवे पंजणे घोसे महाघोसे इतिदृश्यभूमया
 वत्करणात् माहिदेवंभेलंतएसुक्के सहस्रारिंतिद्रष्टव्यमिदं षोडशानां व्यन्तरेन्द्राणां षोडशानामिव वा अणपण्यकादीन्द्राणामर्पेन्द्रकत्वेनाविवक्षितत्वात्संख्याताना
 मपिचंद्रसूर्याणां जातिषड्गणेनद्वयोरेवविवक्षितत्वाद्वात्रिंशदुक्ताइति। कुंदुनाथस्यद्वात्रिंशदधिकानि द्वात्रिंशच्चकेवलिशताग्यभूवन्द्वात्रिंशद्विधं नाक्यमभिनयविषय

॥ टीका ।

॥ सूत्र ।

या । पच्छित्तकरणेविय ॥ आराहणायमरणंते । वत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ वत्तीसं देविंदा प० तं० चमरे
 बली धरणे नृणाणंदे जाव महाघोसे चंदे सूर सक्ते ईसाणे सणंकुमारि जाव पाणए अण्णुए कुंथुस्सणंणुरहन
 यत्तीसं जिणसया होत्या सोहम्मोकप्पे वत्तीसं विमाणयाससहससाणं प० रेवइणरक्ते वत्तीसइतारे प०

वेणुदाली ६ । हरिकांत ७ । हरिगिख ८ । अग्निगिख ९ । अग्निमाणव १० । पूर्ण ११ । वगिड १२ । जलकान्त १३ । जलप्रभ १४ । अमितगति १५ ।
 अमित वाहन १६ । वेलंब १७ । प्रभंजन १८ । घोष १९ । महाघोष २० । चंद्रमा २१ । सूर्य २२ । शक्तेद्र २३ । ईशानेन्द्र २४ । सनत्कुमारिंद्र २५ । माहिंद्र
 २६ । ब्रह्मेन्द्र २७ । लांतकेन्द्र २८ । शक्तेद्र २९ । सहस्रारिंद्र ३० । प्राणतेन्द्र ३१ । अच्युतेन्द्र ३२ । भवनपती ना इन्द्र ३० । सौधर्मिंद्रादिक इन्द्र १० । ज्योतिषी
 मा २ एम ३२ यद्यपि ३० व्यसरेन्द्र के पणिते अल्पच्छहिया तेमाटे न लख्या ज्योतिषी चंद्र सूर्य असंख्याता के पणि जातिषाची लख्या कुंदुनाथ १७
 मां अहिंत ने ३२ से जिन केवली थया । सौधर्म पदिले कप्पे वत्तीस विमान रूप आवासी विमान वाम शत सहस्र कक्षा । एतले ३२ साख विमान

॥ भाषा ।

યત્તીસતિવિહેળદે પ૦ ઇમીસેળં રયળપ્પજાણ પુઢવીણ અત્યેગહયાણં નેરહયાણં યત્તીસંપલિનંવમાહં ઠિહં
 પ૦ અહેસત્તમાણ પુઢવીણ અત્યેગહયાણં નેરહયાણં યત્તીસંસાગરોવમાહં ઠિહં પ૦ અસુરકુમારાણં દેવાણં અ
 ત્યેગહયાણં યત્તીસંપલિનંવમાહં ઠિહં પ૦ સંહમ્મીસાણેસુ કપ્પેસુ દેવાણં અત્યેગહયાણં યત્તીસંપલિનંવ
 ઠિહં પ૦ જેદેવા વિજય વેજયંત જયંત અપરાજિયવિમાણેસુ દેવત્તાણ ઉવવન્ના તેસિણં દેવાણં અત્યે
 યાણં યત્તીસં સાગરોવમાહં ઠિહં પ૦ તેણંદેવા યત્તીનાણ અપ્પમાસેહિં આણમંતિવા પાણમંતિવા ઇ સસં
 તિવા નિસ્સસંતિવા તેસિણં દેવાણં યત્તીસં વામસહસ્સેહિં આહારઠે સમુપ્પજ્જહ સંતેગહયા જવસિદ્ધિયા, જીવા
 જેયત્તીસાણ જવગ્ગહણેહિં સિજ્જિસ્સંતિ યુજ્જિસ્સંતિ મુચ્ચિસ્સંતિ પરિનિહ્વાહસ્સંતિ સહ્વદુસ્કાણાં અંતં કરિ

॥ મૂલ ॥

॥ ભાષા ॥

કહ્યા । રેવતી નક્ષત્રના વચ્ચેમ તારાકહ્યા । વચ્ચેમભેદ નાટકના કહ્યા તેરાયપમેળાયકી જાણવા । ણીયં રત્નપ્રભા પૃથિવીયં કેતલાએક નારકીની વચ્ચેમ
 પન્થોપમનોસ્થિતિકહી । હેઠંસાતમીપૃથિવીયંકેતલાએકનારકીની વચ્ચેમ સાગરોપમનોસ્થિતિકહી । કેતલાએક અસુરકુમારની વચ્ચેમ
 પન્થોપમનોસ્થિતિકહી । સૌધર્મ ઇશાને કલ્પે કેતલાએક દેવતાની વચ્ચેમ પન્થોપમનોસ્થિતિકહી । જે દેવતા વિજય ૧ । વૈજયંત ૨ । જયંત ૩ । અપરાજિત ૪ । એહચિહુંઅનુત્ત
 રવિમાને દેવતાપણેઉપનાહી તેહદેવતાનીવચ્ચેમસાગરોપમનોસ્થિતિકહી । તેદેવતા વચ્ચેમમે પાવવાહે થોડોસ્વામલે ઘણોસ્વામલે ડાંચોસ્વામલે નોંચોસ્વામલે
 તેહદેવતાને વચ્ચેમસર્વમહસ્ત્રેઆહારનીવાંછાઉપજે । કેકેતલાએકમધ્યજોવ જે વચ્ચેમભવને આંતરે સૌભસ્યે વૃક્ષસ્યે મંકાસ્યે સર્વદુઃખનો અંતકરિસ્યેમોક્ષજાસ્યે ॥

वस्तुभेदाद्यथाराजप्रत्यकृताभिधान द्वितीयोपांग इतिसम्भाव्यते द्वाविंशत्तादप्रतिबद्धमितिकेचित् ॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानकं तत्र आर्यः
मम्यग्दर्शनाद्यवामिलक्षणस्तस्यशातनाः खण्डनानिमक्तादाशातनास्तत्र शैक्षोऽल्पपर्यायोरात्रिकस्य बहुपर्यायस्य आसन्नमासन्ति र्यथारजीचलादिस्तस्यलगति
तथागन्ताभवतौत्येवमाशातनांशैक्षस्ये त्येवंसर्वत्र पुरश्चोत्ति अग्रतोऽगन्ताभवति सपक्वति सन्नानपक्षं समपार्श्वयथाभवति समश्रेण्यागच्छतीत्यर्थः विवृतिस्था
ताग्रामिताभवति यावत्करण इशाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्याडचद्रष्टव्यास्ताश्चैवमर्थतः आसन्नपुरः पार्श्वतःस्थानेन तिस्रोऽद्विनिपीदनेनचतिस्रः तथाविचारभूमौ

॥ टीका ॥

स्सन्ति ॥ ३२ ॥ तत्तीसंश्रयासायणाञ्च प० तं० । सेहेराइणिश्चस्स पुरनु गन्तान्नवइ श्रयासाय
णासेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्कगन्तान्नवइ श्रयासायणासेहस्स २ सेहेराइणियस्स श्रयासन्नगन्तान्नवइ
श्रयासायणासेहस्स ३ एवंएणंश्चन्नित्तावेणं सेहेराइणियस्स पुरनुचिठित्तान्नवइ श्रयासायणासेहस्स ४ सेहेरा
इणियस्स सपक्कचिठित्तान्नवइ श्रयासायणासेहस्स ५ सेहेराइणियस्स श्रयासन्नचिठित्तान्नवइ श्रयासायणासेह

॥ मूल ॥

इति वक्त्रोत्तमोत्तमवाय ययो ॥ ३२ ॥ हिरेतेत्रोत्तममवाय सिद्धियेहे । तेत्रोत्त आशातना । ज्ञानदर्शनचारित्र्यप्राप्तिनो सातवो खण्डवो तेआ
शातना कहो तेकहेहे । मिथ्यग्रन्थकालीनदौजानोभण्णो रात्रिकघणो दौजानोभण्णो तेहने आसन्नो ढंकाहोगन्ताहीय चालेएहपहिलीतेआशातमा शिष्यजे १ । रा
त्रिकवडानेआगल्लयकीगन्ताहीयचालेतेआशातनामिथ्यने २ । रात्रिकने सपक्ककहतांदरावरीचालदीते आशातनामिथ्यने ३ । इम एणे अभिलापे मिथ्यवडाने
आगल्लजभोरहे तेआशातना मिथ्यने ४ । मिथ्यगुरुनेआगल्ल जंभोरहेतेआशातनामिथ्यने ५ । मिथ्यगुरुने वरावरजभोरहे तेआशातना मिथ्यने ६ । मिथ्यगुरु

॥ भाषा ॥

मतयोः पूर्वतरमाचमतः शतस्याशातना १० एवं पूर्वगमनागमनमालोचयतः ११ तथा रात्रौ कोजागर्तीतिष्ठे रात्रिकेन तद्वचनमप्रतिशृण्वतः १२ रात्रिकस्या

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

स्स ६ सेहेराडणियस्स पुरननिसीडत्ताजवड आसायणासेहस्स ७ सेहेराडणियस्स सपरकंनिसीडत्ताजवड
आसायणासेहस्स ८ सेहेराडणियस्स आससंनिसीडत्ताजवड आसायणासेहस्स ९ एवंएणंअज्जिलावेणं
सेहेराडणिएणंसंविहिया विहारममिनिरुं समाणे तत्थपुत्तामेवसीहतराएणालोएड
यणासेहस्स १० सेहेराडणिएणंसंविहिया विहारममिनिरुं समाणे तत्थपुत्तामेवसीहतराएणालोएड
पच्छाराडणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराडणियस्सरानुवाविआलेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरेत
त्यसेहेजागरमाणेराडणियस्स अप्पफिसुणंत्ताजवड आसायणासेहस्स १२ सेहेराडणियस्स पुत्तं संलवत्तए तंपु

॥ भाषा ॥

ने आशालयकोवेसे तेआशातनामिथ्यने ७ । मिथ्यगुरूने वरावर्ग वेसे तेआशातनामिथ्यने ८ । मिथ्यग्राशमकहतां दुंकडोयकोवेसे तेआशातनामिथ्यने ९ । एवंएणं
आनिलापे ९ । आशातना । मिथ्यगुरूवेहंफेगयायकां तिहंमिथ्यपहिलेआचमनलेइ जलशुचि करे तेआशातनामिथ्यने १० । मिथ्यगुरूसायं वहिर्भूमिदंडिले
चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकायं जातंयकां पहिलेमिथ्य इयिावही पडिकने पछेगुरूपडिकने तेआशातना मिथ्यने ११ । मिथ्यगुरूनेपहिलेहोज आवणहा
रमाडे गुरु बोआविना बोले तेआशातना मिथ्यने १२ । मिथ्य प्रतं गुरूये पूछो कवण रात्रियेसूतोके अथवा कवण जागोके एहवं पूछेयके मिथ्य जागतो य

पूर्वमालपनीयं कंचनअवमस्यपूर्वतरमालपतः १३ अशनादिलक्ष्मपरस्य पूर्वमालोचयतः १४ एवमन्यस्योपदर्शयतः १५ एवंनिमंचयतः १६ रात्रिकमनापृच्छा
न्यस्मैभक्तादिददतः १७ स्वयंप्रधानतरं भुंजानस्य १८ क्वचित्प्रयोजनेष्याहरतो रात्रिकस्यचवाप्रतिशृण्वतः १९ रात्रिकम्रतितत्समचतावृहताशब्देन बहुधा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

हामेवसीहतराए आलवइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १३ सेहे० असणंवापाणंवाखाइमंवासाइमंवा
पणिगाहिता तंपुहामेवसीहतराएगिहस्सआलोएइ पच्छाराइणियस्स आसायणासेहस्स १४ सेहेअसणंवा४
पणिगाहितापुहामेवसीहतराएगिहस्सपणिदंसेइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १५ सेहेअसणंवा४पणिगा
हिता पुहामेवसीहतराएअन्नस्स उवणिमंतेइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १६ सेहेराइणिणंसंठिअस
णंवा४पणिगाहितातराइणियं अणापुच्छिता जस्सजस्सइच्छइ तस्सतस्सखद्धं२दययइ आसायणासेहस्स १७

को उत्तर न दे तेआशातना शिष्ये १३ । शिष्यअशनपान खादिम स्वादिमविहरीने ते पहिले बीजाआगलआलोईनेपळे गुरूनेआगलआलोवे तेआशातना
शिष्ये १४ । शिष्यअशनपान खादिमस्वादिम विहरीनेपेहिले बीजासाधूने देखाडेपळे गुरूने देखाडे तेआशातना शिष्ये १५ । शिष्य अशनपान खादिम
स्वादिम विहरीने पहिले बीजासाधूने निमंचणादे पळे गुरूने निमंचे तेआशातना शिष्ये १६ । शिष्यगुरू साथे अशन पान खादिम स्वादिम विहरीने गुरू
ने अण पळे थके जेजे साधुबांहे तेह तेइने आपे तेआशातनाशिष्ये १७ । शिष्य गुरूने साथे असनपान खादिम स्वादिम विहरीने मनोममनोमं स्निग्धमि

॥ भाषा ॥

भाषमाणस्य २० व्याहृतेनमस्तुकेनवन्दे इतिवक्तव्येकिञ्चणसौतिवृणस्य २१ प्रेरयतिगच्छि कस्त्वेरणायामितिबदतः २२ आचार्यग्लानंकिंनप्रतिचरसीत्या
द्युक्ते त्वंकिंनतंप्रतिचरसीत्यादिभणतः २३ धर्मंअर्थयतिगुरावन्यमनस्कतां भजतोऽनुमोदयतइत्यर्थः २४ कथयतिगुरौनस्मरसीतिवदतः २५ धर्मकथामाच्छिदतः

सेहेराइणिणंसद्धिंअसणंवा ४ आहारेमाणे तत्थसेहे रक्कं रक्कं णायं णायं रसियं रसियं उसठं उसठं मणुसं
मणुसं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्कं लुक्कं आहारित्ता जवड आसायणासेहस्स १८ सेहेराइणियस्स वाह
रमाणस्सअप्पहिसुणिताजवड आसायणासेहस्स १९ सेहेरायणियं खद्धं खद्धं वत्ताजवड आसायणासेहस्स
२० सेहेराइणियं किंइत्ताजवड आसायणासेहस्स २१ सेहेराइणियंतुमंडइवत्ताजवड आसायणासेहस्स
२२ सेहेरायणियं तज्जाएणं तज्जायंपहिज्जणिताजवड आसायणा ० २३ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसु

अथ रुचरुच आप भोजनकरे ते आशातना शिष्यने १८ । शिष्य गुरुये बोलाव्याथको वलतो उत्तर न आपे ते आशातना शिष्यने १९ । शिष्य गुरुये बोलाव्या
थको ठामे बेठायको उत्तरदे ते आशातना शिष्यने २० । शिष्य गुरुये बोलाव्याथको मत्थेण वंदामि एहने स्थाने श्यंकहोको एहवुं बोले ते आशातना शिष्यने
२१ । वहाये प्रेरणाकरतां कांईक कार्यनी आज्ञा देतांथकां तूं कांण प्रेरणा करणहार एहवो बोले ते आशातना शिष्यने २२ । शिष्यप्रते वडाये स्नान आचा
र्यनी पर्युपासना केमनथी करतो एम कहतांथकां तूं केमनथी करतो एहवुं बोले ते आशातना शिष्यने २३ । गुरुये धर्मापदेश करतांथकां अन्यचित्त होय
तेणे जे शिष्य अनुमोदे ते आशातना शिष्यने २४ । शिष्य गुरुये काइएक वार्ता कहतांथकां तम्हे भूलो गयाको एमनथी एमके एहवो बोले ते आशातना

॥ टीका ॥

॥ सूत्र ॥

॥ भाषा ॥

१६ भिक्षावेलावर्त्तते इत्यादि वचनतः पर्वदंभिदानस्य २७ गुरुपर्वदंभेदानुश्रितायास्तथैव व्यवस्थिताया धर्मकथयतः २८ गुरोः संस्तारकंपादेन घट्टयतः २९ गुरोः संस्तारके निषीदतः ३० उच्चासने निषीदतः ३१ समासने षेवं ३२ त्रयस्त्रिंशत्तमासूचीक्ताच रात्रि कस्यालपतस्तत्र गत एवासनादि स्थित एव प्रतिशृणोति

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

मिणेन्नवइ आसायणासेहस्स २४ सेहेराडणियस्स कहं कहेमाणस्स नोसरसि एवं वत्तान्नवइ आसायणा ० २५ सेहेराडणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं आच्छिदित्तान्नवइ आसायणासेहस्स २६ सेहेराडणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसंजित्तान्नवइ आसायणासेहस्स २७ सेहेराडणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसंयपरिसाए अणुठिआए अजिन्नाए अत्रोच्छिन्नाए अत्रोगळाए हांअपितअपि ताभेव कहं कहेत्तान्नवइ आसायणासेहस्स २८ सेहेराडणियस्स सेज्जासंथारगंपाएगं संवहित्ता हत्थेणं अणुसंवेत्तागच्छइ आसा ० २९ सेहेराडणियस्स सेज्जासंथारए चिठित्ता वा निसीइत्ता तुयहित्तावा आसा ० ३० सेहेराडणियस्स उच्चासणंसिवा ३१ समासणंसिवा चिठित्तावा निसीइत्तावा तुयहित्तावा न्नवइ आसायणासेहस्स ३२ सेहेराडणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

श्रियने २४ । जे श्रिय गुरुये धर्मकथा कहतां थकां धर्मकथानां छेदन करे ते आशातना श्रियने २६ । श्रिय गुरु अभाये बैठा थकां भिक्षानी विलाघई इत्यादि कहोने पर्वदानो भेदकरे ते आशातना श्रियने २७ । श्रिय गुरु सभाये बैठा थकां पर्वदाइति धर्मोपदेश करे ते आशातना श्रियने २८ । श्रिय गुरुना आपनप्रते पांथकी संघट्टकरे ते आशातना श्रियने २९ । श्रिय गुरुने आसने बैस ते आशातना श्रियने ३० । श्रिय गुरु थकी जचे आसने बैसे ३१ ।

॥ भाषा ॥

आगत्यहिप्रत्युत्तरं देयमिति शस्त्रस्यागातनेति ३३ तत्तौसंभोमन्ति भौमानिनगराकाराणि विगिष्टस्थानानीत्यन्ये तथाजयाणंमूर्तिपट्याद इहसूर्यस्यमण्डलया
 रंतरं द्वे द्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्टिभागाः एतद्विगुणं पंचयोजनानि पंचत्रिगुणं चैकषष्टिभागा एतावताहीनविष्कम्भं सर्ववाह्यमण्डलाद्वितीयं मण्डलं भवति
 ततश्चतुत्तरेपरिधितः न्यायेनपरिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टविंशताचैकषष्टिभागैर्न्यूनं द्वितीयमंडलं सर्ववाह्यमंडलाद्भवति एतद्विगुणं महीनं भ
 वति तथाहि तद्विष्कम्भत एकादशभिर्योजनैर्नवभिर्यैकषष्टिभागैः पर्यन्तिमाहीनं भवति परिधितस्तु पंचत्रिंशतायोजनैः पंचदशभिर्यैकषष्टिभागैर्न्यूनं भवति तच्च
 त्रीणि लक्षाणि अष्टादशमहस्ताणि द्वे गत एकांशानीत्युत्तराः पट्चत्वारिंशच्चैकषष्टिभागा इति तथान्तिनमंडलासंख्येः द्वाभ्यामुहर्तस्यैकषष्टिभागाभ्यां दिनवृद्धिर्भ

॥ मूल ॥

चेवपद्मिसुणित्ताजवड आसायणासेहस्म ३३ चमरस्मणं असुरिंदस्स असुररस्सो चमरचंचाएरायहाणीए एक
 मेक्खवाराएतेत्तीसं २ जोमा प० महाविदेहेण वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साडं साडुरेगाइं विस्संजेणं प० जयाणंसू
 रिए वाहिराणंतरं तच्च मंडलं उयसंकमित्ताणं चारंचरड तथाणं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्से

॥ भाषा ॥

गुरुने समान आसने वैसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुने कांडेक वार्ता पूछां यकां आमने बैठाइ उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एह तेत्तीस आशा
 तना कहौ ३३ ॥ असुरेन्द्र असुर कुमारनो राजा एहवा चमरेदनी चमरचंचा राजधानीने विधे एकैको वारे तेत्तीस तेत्तीस नगरने आकारे भला स्थानक
 कह्या । जंबूद्वीप संबन्धी महाविदेहचेव तेत्तीस हजार योजन आंभेरो पिडुलपणे कह्यो । जिवारे सूर्य सर्ववाह्य मंडल यकी चीजे मंडले आवीने भ्रमणकरे
 तिवारे भरतजेवगत मनुष्यने तेत्तीस हजार योजनयकी दृष्टिगांचर आवे । ते पांसी पूनिमे मकर संक्राति पखें माह बदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायणे

॥ ए ॥

वति तथाचतृतीयेमंडलेयदा सूर्यश्चरति तदाद्वादशमुहूर्त्ताश्चत्वारश्चैकषष्ठिभागा मुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणम्भवति तद्विंशैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टषष्ठ्याधिकं शतत्र
यलक्षणं स्थूलगणितस्यविवक्षितत्वात् परित्यक्तांशः ३१८२२८ तृतीयमंडलपरिधौगुणितेति एकषष्ठ्याचषष्ठिगुणितया भागीहतेयन्नभ्यते तत्तृतीयमंडलेच
तुः सूर्यप्रमाणंभवति तच्चद्विंशत्सहस्राण्येकोत्तराणि ३२००१ अंशानामेकषष्ठ्याभागलब्धाय एकोनपंचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४८ । ६० त्रयोविंशतिश्चैक
षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३ । ६१ एतत्तृतीयमंडले चतुःसूर्यस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इह यदुक्तं त्रयस्त्रिंशत्किंचिन्नूना तत्रसातिरेकस्ययोज
नस्यापिन्यूनमहस्रता विवक्षितेतिस्मभ्यते चतुर्दशमंडलेपुनरिदं यद्योक्तमेवप्रमाणंभवति प्रतिमंडलंयोजनचतुरशीत्याः साधिकायाः प्रथममंडलमानेप्रक्षेप

॥ टीका ॥

हिं किंचिद्विसेसूणेहिं चक्रुफासं हव्रमागच्छइ इमीसेणं रयणप्यन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं
तेत्तीसं पलिनुवमाइं ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं
तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई अप्पइठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प०

॥ मूल ॥

चार्या निप्रथ पर्वत भणो तिवारे वीजे मांडले तेवोस हजार भांकिरो दृष्टिगोचर आवे । वीजे मंडले सूर्य चारकरे तिवारे वारे मुहूर्त्त एक मुहूर्त्तना एकम
डिया चार भाग प्रमाणे दिवस होय । अने सर्वबाह्य मंडले सूर्य होय तिवारे अकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगले थके इहां
नां माणमने दृष्टिगोचर आवे । एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये केतला एक नारकीनी तेवोस पल्लोपमनी आउखी कच्छी । हेठे सातमी पृथिवीये पूर्वादिक दिस
यकोमांडो काल १ । महाकाल २ । रुरुक ३ । महारुरुक ४ । एह चिह्नं नरकावासाना नारकीनी उक्कट तेवोस सागरोपमनी स्थिति कहो । विचले

॥ भाषा ॥

णादिति ॥

३३

॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धादिसंति बुद्धानां तीर्थकृतामप्यतिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषाः अवस्थितमवृद्धि

॥ मूल

असुराणं अत्येगडयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मोसाणेसु अत्येगडयाणं देवाणं तेत्तीसं
पलिनुवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई
प० जेदेवा सव्वठसिद्धे महाविमाणे देवताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरो
वमाइं ठिई प० तेणं देवा तेत्तीसाए अठ्ठमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा
तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगडया जवसिद्धिया जीवा जे तेत्तीसजवग्गह
णेहिं सिज्जिस्संति वुज्जिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुरक्काणमंतं करिस्संति ॥ ३३ ॥ चात्तीसंवुछाड

॥ भाषा

अप्पइडाण नरके नारकीनी जवन्य स्थिति नथी उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपमनी स्थिति कहौ । केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्तीस पल्लोपमनी स्थिति
कहौ । सौधर्म ईशान देवलीकें केतलाएक देवतानी तेत्तीस पल्लोपमनी स्थिति कहौ । विजय १ वैजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्तीस
सागरोपमनी स्थितिकहौ । जेदेवता विचले सर्वार्थमिदं महाविमाने देवतापण उपनाछे ते देवतानी जवन्य स्थितिनथी उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपमनी स्थिति
कहौ । ते देवता तेत्तीस पखवाडे गयेयकें स्वामोस्वासले घणोले उंचोले नीचो मंके तेह देवतानें तेत्तीस सहस्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे । के केतला
एक भयजीव जे तेत्तीस भवने आंतरे सौभस्ये वृक्षस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोच जास्ये । इति तेत्तीसमो समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

स्वभावकेशाद्यशिरोजाः स्मशूणिचकूर्चरोमाणिचशेषशरीरलोमानि नखाश्चप्रतीताइतिद्वन्द्वैकत्वमित्येकः १ निरामया नीरोगानिरुपलेपानिर्मला गान्धयष्टिस्त
 गुलतेतिद्वितीयः २ गोक्षीरपाण्डुरंमांसंशोणितमितितृतीयः ३ तथापद्मचकमलगंधद्रव्यविशेषावा यत्पद्मकमितिकूठं उत्पलंच नीलोत्पलमुत्पलकुण्डंवा गंधद्रव्य
 विशेषस्तयोर्गंधः सयच्चास्ति तत्तथोच्छ्वासनिःश्वासमितिचतुर्थः ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हारं अभ्यवहरणमूत्रपुरीषोत्सर्गौ प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यंमंसच
 क्षुप्तानपुनरवद्व्यादिलोचनेन इतिपंचमं ५ एतच्चद्वितीयादिकमतिशयचतुष्कंजन्मप्रत्ययं आकाशकेचक्रंपष्ठं तथाआगाशगतंव्योमवर्ति आकाशकंवा प्रकाशमि

॥ टीका ॥

सेसा प० तं० अष्टाष्टिणु केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुपलेवा गायलठी २ गोस्कीरपंढुरे मंससोणिणु ३
 पउमुप्पलगंधिणु उरुसासनिस्सासे ४ पच्छन्ते आहारनीहार अदिस्से मंसचक्रुणा ५ आगासगयं चक्रं ६

॥ मूल ॥

हिवे चौचीममो समवाय लिखि छे ॥ चौचीम बुद्ध कहतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनो अपेक्षाये अधिक पणो कक्षा तेकहेछे ।
 वधेनहोमस्तकनाकेग श्मशूडाढीमंछ शरीरनारोम । नीरोगवलीनिर्मलगरीर २ । गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३ । पद्मकमलतेहनागंधसरीखो स्वा
 सोस्वास नां गंध ४ । अदृश्यदोमेनही मांस चक्षुयेकरी येतले चर्मचक्षुयेकरी एहवीप्रच्छन्नगुतआहार जीमणनीविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनोत्याग ५ । एणी
 येछुश्रव्यदृष्टीये येपांचअतिशयथया । तमांहिपहिलो मूकीबीजायकीपंचमालगें चारअतिशय जन्मथकी माडी ने होय ५ । जेहनोआकाशगत धर्मचक्रचा
 ले ६ । आकाशगत कृत्र ७ । आकाशगतवर प्रधान खेतचामर ८ । आकाशनीपरें अत्यंत निर्मल एहवास्तिकरदमयीपादपीठसहितसिंहासन ९ । आका

॥ भाषा ॥

त्यर्थः चक्रधर्मचक्रमितिषष्ठः ६ आकाशकेचक्रमिति सप्तमः एवमाकाशगङ्गचक्रचक्रमितिषष्ठः ७ आकाशकेप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकोणेकंदित्यष्टमः ८ आगा
सफालियामयति आकाशमिवयदत्यंत मच्छंस्फटिकं तन्मयं सिंहासनसहपादपीठमिति नवमः ९ आगामगओत्ति आकाशगतोऽत्यर्थतुल्यमितिषष्ठः कुडिभित्तिस्त
द्युपताकाः संभाव्यन्ते तत्सहस्रैः परिमंडितश्चासावभिरामश्चातिरमणीय इतिविग्रहः इंदुज्ज्वलति शेषध्वजापेक्षयातिमहत्वादिंद्रयासीध्वजश्च इन्द्रध्वजइति
पुरओत्ति जिनस्याग्रतो गच्छतीति दशमः १० चिह्नितवानि सीयंतिवेत्ति तिष्ठति गतिनिवृत्त्यानिपीदंत्युपविशति तत्तुल्यदेवति तत्तुल्यमेवाकालहीनमितिषष्ठः
पत्रैः संच्छिन्नइति वक्तव्ये प्राकृतत्वात् संच्छिन्नपत्रइत्युक्तं सचामीपुष्पपद्मवसमाकुलश्चेति विग्रहः पद्मवा अंकुराः सुच्छत्रः सध्वजः सघंटः सपताकोऽशोकवरपादप

॥ टीका ॥

आगासगयं ठत्तं ७ आगासगयानु सेयवरचामरानु ८ आगासफालियामयं सपायपीठं सीहासनं ९ आगा
सगनं कुङ्कुमीसहस्रपरिमंक्रियाजिरामो इंदुज्ज्वलं पुरनं गच्छुड १० जल्य जल्य वियणं अग्रहंताजगवंताचिह्नं
तिवा निसीयंतिवा तल्य तल्य वियणं तरुणादेव संठन्नपत्तपुष्पपद्मवसमाकुलं सठत्तो सज्जुनं सघंठो सपद्मा

॥ मूल ॥

अत एतले अत्यंतजंघी लघुपताकाना सहस्रकरी परिमंडित मनोहर एहवीइन्द्रध्वज अन्यध्वजनी अपेक्षाये मोटो तेमहेन्द्रध्वजजिनने आगलथकी चाले १० ।
जिहां जिहः अग्रहंत भगवंत ऊभारहे अथवा वैसे तिहांतिहां तत्काल पत्रं करीछायो अने फूलपद्मवंकरी सर्वतः व्याप्त ध्वजामहित घंटापताका सहित
वर प्रधान अशोकवृक्ष ऊपर छायाकरं ११ । वेगलो थोडोपूठं मस्तकने प्रदेशं तेजमंडल भामंडल होय तेभामंडल अंधकारने दसोदिते नसाडे १२ । जिहां

॥ भाषा ॥

त्येकादशः ११ ईमिति ईषदक्षं पिठ्ठाति पृष्ठतः पश्चाद्भागं मउड्ढाणमिति मस्तकप्रदेशेतेजोमण्डलं प्रभापटलमितिद्वादशः १२ बहुसमरमणीयोभूमिभाग इतित्रयोदशः १३ अहोमिरति अधोमुखाः कंठका भवन्तीति चतुर्दशः १४ ऋतवोविपरीताः कथमित्याह मुखस्पर्शभवन्तीति पंचदशः १५ योजनयावत् क्षेत्र शुद्धिः संवर्त्तकवातेने पिंडशः १६ जुक्तफुमिएणति उचितविन्दुपातेनेति निहययरेणुयंति वातोत्खातमाकाशवर्त्तिरजो भूवर्त्तिरुरेणुगिति गंधोदकवर्षाभिधानः सप्तदशः १७ जलस्थलजं यज्ञास्वरं प्रभूतं च कुसुमं तेन हृतस्थापिता ऊर्ध्वमुखेन दशार्ध्ववर्णेन पंचवर्णेन जानुनोरुत्सेधस्य उच्चत्वस्य यत्प्रमाणं यस्य स जानूत्सेधप्रमाणमा

॥ टीका

गोत्रसोगवरपायवे अग्निसंजायइ ११ ईसिंपिठन मउड्ढाणमि तेयमंढलं अग्निसंजायइ अंधकारे वियणं दसदिसानं पन्नासेइ ११ वज्रसमरमणिजे नूमिजागे १३ अहोसिरा कंठया जायंति १४ उऊविवरीया सुहफासा नवंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरज्जिणामारुणं जोयणपरिमंढलं सव्वनं समंता संपमज्जिज्ज

॥ मूल ॥

तीर्थंकर विहारकरे तिहां घणोमम रमणीक भूमिभाग होय १३ । जेणे मार्गे तीर्थंकर विहारकरे कांटा ऊर्ध्वमस्तकेहोय १४ । ऋतु विपरीत एतले उक्ता लाये शीयालानां भाव शीयालाये उक्तालानां भाव तमाटे मुखरूपस्पर्शहोय १५ । शीतल मुखस्पर्श मृगंधि ठाढो मंद गंधयुक्त एहवा संवर्त्तवायरेकरी एकयोजनमंडललगे मगली दिमाविदिमा प्रमाजे १६ । जेणे मार्गे तीर्थंकर विहारकरे तेहमार्गेमेव आकाशवर्त्तिरज भूमिवर्त्तिरेणु गंधजलनापरिमित सूक्ष्मसूक्ष्म विंदु ये करीनसाडे १७ । स्थल कुसुम तेचंपाजार्द्रप्रमुख जलकुसुम तेकमलादिक भास्वर तेजवंत प्रभूतघणा नीचाळेवीट जेहना एतले ऊर्ध्वमुखे पांचवर्ण फूलं करीटी

॥ भाषा

चः पुष्पोपचारः पुष्पप्रकरइत्यष्टादशः १८ तथा कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्वयाभिरामि भवदनि कालागुरुगंधद्रव्यविशेषः प्रवरकुंदरुक्कचचीडा
 मिधानं गंधद्रव्यंतुरुक्कचगिज्जकाभिधानं गंधद्रव्यमिति द्वंद्वस्ततंणतल्लज्जणी योधूपस्तस्यमघमघायमानो बहुलमीरभ्यो योगंधउडुतउडुतस्तेनाभिराममभिरमणी
 यंयत्तत्तथा स्थानंनिषीदनस्थान मितिप्रक्रमइत्येकोनविंशतितमः १९ तथा उभयोपासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवेजक्काकडयतुडियथंभियभुयाचामरुक्खेव
 णं करंतित्ति कट्ठकानिप्रकोटाभरणविशेषासुठितानि वाच्चाभरणविशेषास्तेरतिवहुत्वेनस्तंभिताविवस्तंभितोभुजीययांस्तो तथायच्चोदेवाविति विंशतितमः २०
 वृहद्वाचनायामनंतरोक्तप्रतिगयद्वयंनार्थीयते अतस्तस्यांपूर्वेष्टादशैव असनोज्ञानांशब्दादीनामपकर्षाभावाइत्येकोनविंशतितमः १९ मनोज्ञानांप्रादुर्भावइति
 विंशतितमः २० पञ्चाहरांति प्रव्याहरतां व्याकुर्वतां भगवतः हिययगमणीउत्ति हृदयंगमः जायणनीहारीत्ति योजनातिक्रमी स्वरइत्येकविंशः २१ अद्वमाग

॥ टीका ॥

इ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पक्किज्जइ १७ जलथलयन्नासुरपन्नूतेणं विंठ्ठावियदससुवन्तेणं
 कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारं किज्जइ १८ अमणुन्नाणं सहफरिसरसरुवगंधाणं अण्वकरिसो
 नवइ मणुन्नाणं सहफरिसरसरुवगंधाणं पाउप्पावो नवइ १९ उज्जु पासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवे

॥ मूल ॥

चणना जंचप्रमाणमात्रं फूलनीपूजा फूलपगरकरे १८ । खोटा शब्दस्पर्शरसरूप गंधनो अभाव होय १९ । मनोहर शब्दस्पर्शरसरूपगंधनो प्रादुर्भाव होय
 भिद्वांत मूलमतोयं वलीवाचनांतरं कृष्णागुरुप्रमुख धूपउखेवे विहंपासे वेयवज्जभा चामरउखेवे २० । वखाण करतां भगवंतनो हृदयंगम अनेसोहामणीयोज

॥ भाषा ॥

हीयन्ति प्राकृतादीनां षष्ठां भाषाविशेषाणां मध्येयमागधीनामभाषा रसोलसोमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा असमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणार्द्धमागधीत्युच्यते
 तथा धर्ममाख्याति तस्या एवातिकोमलत्वादिति द्वाविंशः २२ भामिज्जमाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणंति आर्यानार्य देशोत्पन्नानां द्विपदा
 मनुष्याद्यतुष्यदागवादयः सृगाश्चाटव्याः पशवोग्राम्याः पक्षिणः प्रतीताः सरीसृपा उरःपरिसर्पाभुजपरिसर्पाश्चेति तेषां किमात्मन आत्मा तथा आत्मीययेत्यर्थः
 भाषा तथा भाषाभावेन परिणमतीति संबन्धः किंभूतासौ भाषित्वांह हितमभ्युदयः गिवं नोत्तः सुखं यवणकालोद्भवमानंदन्ददातीति हितमिव सुखदेति त्रयोविंशः
 २३ पूर्वभवांतरेनादिकालेवा जातिप्रत्ययवद् निकाचितं वैरमन्निवभावोपेपातेतथा तेपिच आसतांमध्ये देवा वैमानिका असुरानागाश्च भवनपतिविशेषाः

जरका कळग तुळिय थं जिय जुया चामरुस्केवणं करंति २० पद्माहरणं धियणं हिय यगमणीनं जोयण नीहारी
 सरो २१ जगवंचणं अण्णमागहीए ज्ञासाए धम्ममाडुस्सइ २२ सावियणं अण्णमागहीज्ञासा ज्ञासिज्जमाणी
 तेसिं सहेसिं अणारियमणारियाणं दुप्पयचउप्पयमियपसुपरिक्खसरीसिवाणं अण्णप्यणोहियसिवसुहदायज्ञास

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नलगे विस्तरतो गच्छंताय २१ । भगवंतं ह्य भाषासां हि अर्द्धमागधीभाषायेकगौ धर्मप्रतिं कहे २२ । तद्दीजयणि अर्द्धमागधीभाषा सगला आर्य अनार्य देशनां उप
 नाने द्विपदमनुष्येन चतुष्पदगवादिकेन सृगाश्चाटवोजीव पशुग्रामसंवधी ढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहना आत्माने हित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनंदतेहने
 देण्णदी भाषायेण परिणमे २३ । भवांतरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकवदनिकाचितं वैरं बांध्या जेणे एहवादेव भावैनिक १ । असुरनागकुमार एहभवनप
 तीदेव सुगणे मोहनवर्णपितेत ज्योतिषो यज्ञ राजस क्रिन्नर किशुरप एह चारव्यं २ । विशेष गरुडलां कृत्तवणाद्यकी सौपर्णकुमार भवनपति विशेष गंधर्वमहोर

सुवर्णाःशोभनवर्णा एतेचर्ज्यातिक्तायक्षराक्षसकिन्नराःकिंपुरुषाःव्यंतरभेदाःगुरुडागुरुदलांक्षनत्वात् सुपर्णाकुमाराभवनपतिविशेषाःगन्धर्वामहोरगाद्यव्यंतरविशेषाएव एतेषांद्वंद्वः पसंतचित्तमाणसा प्रशांतानिसमझतानिचित्राणि रागद्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्यंतःकरणानियेषांते प्रशांतचित्तमानसा धर्मेनिशामयन्ति इतिचतुर्विंशः २४ वृद्धवादतयाइदमन्यदतिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपिचणं वंदंतोभगवंतमितिगम्यते इतिपंचविंशः २५ आगताः संतोर्जतः पादमूले निःप्रतिवचनाभवन्ति इतिषड्विंशः २६ जज्ञोज्ञावियणति यत्रयत्रापिचदेशे तत्रो २ त्ति तत्रतत्रापिच पंचविंशती योजनेषु इतिर्याध्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगणइतिभसविंशः २७ मारिर्जनमरकडल्यटाविंशः २८ स्वचक्रं स्वकीयराजसैन्यं तदुपद्रवका

॥ टीका ॥

त्ताए परिणमड २३ पुत्र्यध्वेरावियणं देवासुरनागसुव्रस्रजरकररकलकिंनरकिंपुरिसगरुलगंधवृमहोरगाश्चरहन् पायमूले पसंतचित्रमाणसा धम्मं निशामन्ति २४ शुद्धउच्छ्रियपावयणिद्या वियणमागया वंदन्ति २५ आगया समाणा चरहन् पायमूले निष्पन्निवयणाहवन्ति २६ जनु जनु वियणं चरहन्तो जगवन्तो विहरन्ति तनु तनु

॥ मूल ॥

गव्यंतरविशेष एहसगला वैरभावकांडौने अरिहंतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशांतयथांके चित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवाधर्मप्रति सांभले २४ । अन्यतीर्थीअन्ययूथिकाकपिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वगास्त्वनावणीतेहीपणिआव्याथकाभगवंतप्रति वदिं २५ । तेहअन्यशास्त्वनावादीप्रतिवादीआव्याथका अरिहंतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थयया २६ । जेणेप्रदेशे अरिहंत भगवंतविहर विचरे तिहां योजन पंचवीसलगे इति धान्यादिउपद्रवकारी प्रचुर मूषकादिक न होय २७ । मारी लोगमरकौनहोय २८ । स्वचक्र स्वदेशी कटक उपद्रवनकर २९ । परचक्र परदेशी कटकनो भयनहोय ३० ।

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ एए ॥

रिनभवतीति एकोनविंशः २८ एवंपरचक्रं परराजसैग्यमिति विंशः ३० अतिवृष्टिरधिकवर्षइत्येकविंशः ३१ अनावृष्टिर्वर्षणाभावइति द्वाविंशः ३२ दुर्भिक्षदुः
कालइति त्रयस्त्रिंशः ३३ उप्पाडयावाहित्ति उत्पाताअनिष्टसूचका रुधिरवृद्ध्यादयस्तद्देतुकाये ऽनर्थास्तेऽप्युत्पातिका स्तथाव्याधयोऽज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावइति
चतुस्त्रिंशत्तमः ३४ अन्यच्च पञ्चाहरादित आरभ्ययेभिहितास्ते प्रभामंडलंचकर्मक्षयकृताः शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृताइति एतेचयदन्यथापि दृश्यंते तस्मतांतर
मेवमंतव्यमिति चक्रवटिविजयति चक्रवर्त्ति विजेतव्यानिचेत्रखण्डानि उक्तासेणं एएचोत्तीसं तित्यगरासमुपज्जंति तिसमुत्पद्यन्ते सम्भवन्तीत्यर्थः नत्वेकसमदेजा

वियणं जोयणपणवीसाणं इती नजवइ २७ मारी नजवइ २८ सचक्रं न जवइ २९ परचक्रं न जव
इ ३० अण्डवुठ्ठी न जवइ ३१ अण्णावुठ्ठी न जवइ ३२ दुप्पिस्कं न जवइ ३३ पुत्तुप्पन्तावियणं उप्पाडया

अतिवृष्टि अधिक वृष्टिनहोय ३१ । अनावृष्टि अवर्षणनहोय ३२ । दुर्भिक्षकालनहोय ३३ । पूर्वे उपना पिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृद्ध्यादिक तथा
व्याधि ज्वरादिक तत्कालेही उपशमे ३४ । एह एकवीसमायकीमांडी चौत्रीसमालगे अनेप्रभामंडल एतला अतिशय कर्मक्षययकीहोय शेषवीजाभवप्रत्यय
थको बीजादेवकृतके मतांतरे अन्यथा पणिके । एहचौत्रीस अतिशयकह्या ॥ जंबूद्वीपनेविषे चौत्रीस चक्रवर्त्तीये जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य चेत्रखं
ड तेचक्रवर्त्तिविजय कह्या तेकहंके । मेरुथकी पूर्वापर महाविदेहेमिली ३२ विजय एकभरत एकऐरवत एवंसर्वमिली विजयखंड ३४ जंबूद्वीपनेविषे ३४ ।
ना २ एवं ३४ एकंसमंजसआश्रीचारहाय शीताशीतोदाने विहुंकांडे एकसमये वेवेहोय अनेवर्त्ता ३४ कह्या । महाविदेहेरात्रीयेतिवारे भरतऐरवत

यस्ते चतुर्णामेवैकदा जन्मसंभवास्तथाहि मेरुपूर्वापरशिलातलयोर्द्वेद्वेसिंहासनभक्तोऽतो द्वावेवद्वावेवाभिषिच्येतेऽतोद्वयोर्द्वयोरिवजन्मेति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो
स्तदानींदिवससद्भावा बभरतैरावतयोजिनोत्पत्तिरर्द्धरात्रयजिनोत्पत्तिरिति पठन्त्यादि प्रथमायां पृथिव्यां त्रिंशत्नरकवामानांल चाणि पंचम्यां त्रीणिषष्ठ्यां पंचो
नलक्षं सप्तम्यां पंचनरका एवं सर्व मौलने चतुस्त्रिंशत्क्षेत्राणि भवन्तीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशयां आगमे

वाही खिप्पामेव उवसमंति ३४ जंबूद्वीवेणंद्वीवे चउत्तीसं चक्षुवद्विविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो
जरहेरवए जंबूद्वीवेणंद्वीवे चोत्तीसंदीहवेयद्वा प० जंबूद्वीवेणंद्वीवे उक्कोसपएचोत्तीसं तिल्यकरा समुप्पज्जांति
चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्तो चोत्तीसं जवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमठ्ठीसत्तमासु चउसु
पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प०

होय अनेइहारात्रिहोय तिवारे तिहां दिवसहोय । तीर्थंकरनो जन्म अर्द्धरात्रीयें होय तेमाटे चौत्तीसनो जन्मसमकालेनकह्यो । मेरुनी पूर्वपश्चिम शिलात
लने उपर दोयदोय सिंहासनके एहथी वेवेनो हीज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये वेवे तीर्थंकरनो जन्म कहिवो । असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र
पसुरेन्द्रना चउत्तीसभवनवास शतसहस्र एतलेचउत्तीसलाख भवनकह्यो । पहिली नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख छट्ठीयें पांचजंणा
एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिली चौत्तीसलाखनरकावासकह्यो इतिचौत्तीसमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिंवे पैत्तीसमो
समवायलिखेके पैत्तीस सत्यवचनना अतिशयकह्यो । संस्कारवचन संस्कृतलक्षणवंतपणो १ । उदात्तत्व ऊंचेस्वरेंबोलवो २ । उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबोल

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ १०० ॥

न दृष्टा एतेतुग्रंथांतरेदृष्टाः संभावितवचनंहिगुणवहक्तव्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारोपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७ महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्त्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६ अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविडं २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदारं २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उपगतश्लाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादिताच्छिद्रकोतूहलम् २६ अद्भुतं २७ अनतिविलंबितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ मत्वपरिग्रहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति । वचनम् महानुभावैर्वक्तव्यमिति तत्रसंस्कारवत्त्वसंस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्हृत्तिता २ उपचारोपेतत्वमग्रास्यता ३ गंभीरशब्दमेघस्यैव ४ अनुनादित्वं प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वंसरलत्वम् ६ उपनीतरागत्वं मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षाअतिशयाः अन्येत्यर्थान्यास्तत्रमहार्थत्वम् वृहदभिधेयता ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वम् पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वंअभिमतमिद्वांतोक्तार्थता वक्तुःशिष्टतामूचकत्वं वा १० असंदिग्धत्वं असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परदूषणाविषयता १२ हृदयग्राहित्वम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्त्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

॥ टीका ॥

॥ टीका ॥

॥ भाषा ॥

बो ३ । गंभीर ऊँडेस्वर्गबोलवो ४ । बोलतां प्रतिशब्दहीय ५ । सरसवचनबोलवो ६ । मालकोसादि राग सहित स्वरें बोलवो ७ । थोडेवचनें अर्थघणोएहवूं बोलवो ८ । पूर्वापर विरोध रहित ९ । सिद्धान्तनो प्रतिपादक १० । संदेह रहित ११ । अनरावादीना वचने पराभवे नही १२ । सांभलहारनो मनहरे १३ । दे

मृतत्वम् सुसंबंधस्यमतः प्रसरणं अथवाऽसंबन्धाधिकारित्वातिविस्तरयोगभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परिण पदानां वाक्यानां वासापेक्षता १७ अभि
 जातत्वंचक्षुः प्रतिपाद्यस्यैवभूमिकानुसारिता १८ अतिसिग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मदेधित्वम् परममर्मानुदघटनस्वरूपत्वम् २० अ
 र्थधर्माभ्यामानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वंअभिधेयार्थस्यातुच्छत्वगुणविशेषत्वा २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतश्चा
 घत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तश्चाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिङ्गादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेक्षता २५ उत्पादिताच्छिन्नकीटूहलत्वम् स्वविषयेथोदृ
 णां जनितमप्रिच्छिन्नं कीटुकं येनतत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २६ अद्रुतत्वमनतिविलंबितत्वचप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तृ
 मनसोभ्रांतता विक्षेपस्तस्यैवानिधेयार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिंचितंगोपभयाभिलाषादिभावानां युगपदानुकूलकरणमादिशब्दात्मनोदोषांतरपरिग्रहस्तैर्विमुक्तं
 यत्तत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २९ अनेकजातिसंययादिचित्रत्वम् इहजातयोर्वर्णनीयवस्त्ररूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनांतरापेक्षयादीकितविशेषता ३१ सा
 शकाले उचितवचनबोलवो १४ अतिविस्तरकरी अणमिलतानहोय १५ । कहिवाने वस्तुने अनुमार्गहोय १६ । पहिलापदने पाछिलंपद सापेक्षपणेबोलवो १७
 प्रत्यक्ष समभवायोग्य बात कहिवो १८ । घृतगुडनोपरे मधुर अनुभवे १९ । अनेगना मननेव्यथा नकर एहवो २० । अर्थ धर्म सहित बोलवो २१ । उत्कट
 पर्यन्तं कथक २२ । परनिंदा आत्मस्तुति रहित २३ । प्रसंभा करवा योग्य २४ । कारक काल वचन लिगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चित्तने चमत्कारकर २६
 बोलतां उतावलीनहोय २७ । रही रहो ने अक्षर उच्चारण करव एहदोषरहित २८ । भ्रांतिरहित कहिवायोग्य वस्तुये संबद्ध क्रोधभयादि रहित बोल
 वो २९ । जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहिवो ३० । वचन कहतां वचनांतरनीअपेक्षायें बोलवो ३१ । वेगला वेगला पदकरी अन्वय रूपेबोलवो ३२ ।

॥ टीका ॥

॥ भाषा ॥

कारत्वम् विच्छिन्नवर्णपदवाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम् ३२ सत्त्वपरिगृहीतत्वं साहसोपेतता ३३ अपरिखेदितत्वं अनायाससंभवः ३४ अब्युच्छेदित्वं विवक्षितार्थसम्यक्
 सिद्धिं यावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयतेति ३५ तथा दत्तः सप्तमवासुदेवः नन्दनः सप्तमबलदेवः एतयोश्चावश्यकभिप्रायेण षड्विंशतिर्हनुषामुच्चत्वभवति सुबोधतत् य
 तोऽरनाथमस्मिन्नामिनोरन्तरेतावभिहितौ यतोवाचि अरमन्निअन्तरेदोषिकेसवा पुरिसपुंडरीयदत्तत्ति अरनाथमस्मिन्नाथयोश्चोच्छेयेण त्रिंशत्पंचविंशतिश्च धनु
 पामुच्चत्वमेतदंतरालवर्त्तिनोश्चवासुदेवयोः षष्टसप्तमयोरेकौ न त्रिंशत्षड्विंशतिश्च धनुषां युज्यत इति इहोक्तानुपंचविंशत्यदिदत्तनन्दनौ कुंथुनाथतीर्थकालेभवतो
 नचैतदेवजिनांतरेवधीयत इति दुरवबोधमिदमिति सौधर्मकल्पे सौधर्मावतंसकादिषु विमानेषु सर्वेषु पंचसभा भवन्ति सुधर्मसभा १ उपपातसभा २ अभिषेक
 सभा ३ अलंकारसभा ४ व्यवसायसभा ५ तत्र सुधर्ममध्यभागमणिपौठिकोपरि षष्ठियोजनमानोमाणवकोनामचैत्यस्तभोस्ति तत्र वइरामएसुत्ति वज्रमयेषु
 कुंधूणं झुरहापणतीसं धणूडं उहं उच्चत्तेणं होत्या दत्तेणं वासुदेवे पणतीसं धणूडं उहं उच्चत्तेणं होत्या नंदणेणं
 बलदेवे पणतीसं धणूडं उहं उच्चत्तेणं होत्या सोहम्मे कप्पे सज्जाए सुहम्माए माणवएचेइयरकंजे हेठाउव

साहस सहित बोलवो ३३ । अनायासे बोलवो ३४ । कहिवानो विषय समाप्त नहोय त्यांलगे वचननो विच्छेदन नहोय ३५ । एह भगवंतनो वाणीनागुण
 जाणिवा एह पैत्रीस वचनातिशय कह्या ॥ कुंथुनाथ सतरमा अरिहंत ३५ धनुष ऊंचपणे हुया । दत्तनामा सातमो वासुदेव अरनाथनेवारे संभूमचक्रवर्त्ति
 पकेहुवोते ३५ । धनुष ऊंच पणे हुआ । नंदननामा सातमो बलदेव ३५ । धनुष ऊंचपणे कह्या । सौधर्मकल्पे शभा सुधर्माने विषे साठियोजनप्रमाणमाणवक
 नाम चैत्यस्तंभनेविषे हेठे अने उपरि अहं एतले साढावारह योजन वर्जिने मध्यने विषे पैत्रीस योजने वज्रमय गोल वाटला समुद्रकछा तेहने विषे जिन

तथा गानवहत्ता वंत्तुलाय समुद्रकाभाजनविशेषास्तेषु । जिणसकहाउत्ति जिनसकथीनि तीर्थकराणां मनुजलोकनिर्वृतानां सक्ताण्यस्थीनि प्रज्ञप्तानीति वीयचउत्थी
त्यादि द्वितीयपृथिव्यां पंचविंशतिर्नरकलक्षाणि चतुर्थ्यास्तु दशेति पंचविंशत्तानीति ॥ ३५ ॥ षट्त्रिंशस्थानकं षष्टमेव नवरं चैत्राश्वयुजोर्मासयोः

॥ टीका ॥

रिंच अष्टतेरसअष्टतेरसजोयणाणि वज्जेत्ता मज्जे पणतीसजोयणेसु वड्डरामएसु गोलवहसमुग्गएसु जिणस
कहानु प० वितियचउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३५ ॥ ठत्ती
संउत्तरज्जयणा प० तं० । विणयसुयं १ परीसहा २ चाउरंगिज्जं ३ असंखयं ४ अकामसकाममरणिज्जं ५
पुरिसविज्जा ६ उरज्जिज्जं ७ काविलियं ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तयं १० वज्जसुयपुज्जा ११ हरिएसिज्जं
१२ चित्तसंनूयं १३ उसुयारिज्जं १४ सत्तिरकुगं १५ समाहिठ्ठाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८

॥ मूल ॥

योत्तरागनी दाढा कहो वीजोपृथिवी अने चौथी नरक पृथिवी विहुंनामिली ३५ । नरकावासा शतसहस्र कह्या एतले वीजोये २५ । लाख नरकावासा
चौथी ये १० लाख नरकावास कह्या ॥ एह पैत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३५ ॥ हिवे छत्रीसमो समवाय लिखेके । छत्रीस उत्तराध्ययनना अध्
यन कह्या तेकहेके । पहिलो अध्ययन विनयश्रुत १ । परीसहाध्ययन २ । चउरंगीयो ३ । असंखयं ४ । अकाम सकाम मरणाय ५ । अविद्यावंतपुरुषनो ६
उरभिकबोकाडानो ७ । कपिलकेवलीनो ८ । नमिप्रवज्ज्यानमिराजानो ९ । द्रुमपत्रकनो १० । बहुश्रुतपूजानो ११ । हरिकेशीबलनो १२ । चित्रसंभूतिनो १३
इषुकारियराजानो १४ । भिक्षु अध्ययन १५ । समाधिस्थानक १६ । पापश्रमणनो १७ । संयतीराजानो १८ । नृगापुत्रनो १९ । वलीअनाथीनो २० । समुद्र

॥ भाषा ॥

मकृदेकदापूर्णमायामिति व्यवहारो निश्चयतस्तु मेघसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशदंगुलिकां पदत्रयमाना माहच चित्तासोऽपुमासेसुतिपया

॥ टीका ॥

मियाचारिया १९ अण्णाहपवृज्जा २० समुद्रपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीउ
२४ जन्नतिज्जं २५ सामायारी २६ खलुकेज्जं २७ मोस्कमग्गई २८ अप्पमानु २९ तवोमग्गी ३० च
रणविही ३१ पमायठाणाइं ३२ कम्मपयणी ३३ लेसज्जयणं ३४ अण्णगारमग्गे ३५ जीवाजीवविज्जत्तीय
३६ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरग्गो सत्तासुहम्मा ठत्तीसंजोयणाइं उहंउच्चत्तेणं होल्या समणस्सणं अर
हणं महावीरस्स ठत्तीसं अज्जाणंसाहस्साणं होल्या चित्तासोऽपुमासीसु सइठत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसी

॥ मूल ॥

पालनो २१ । रय नेमोनो २२ गौतम गणधर केभीअण्णगारनो २३ । सुमति गुतिनो २४ । जयवीप विजयवीपनो २५ । समाचारोनो २६ । खलुकीयं गर्गा
चार्यनो २७ । मोक्ष मार्गनो २८ । अप्रमादोनो २९ । तप मार्गनो ३० । चरण विविनो ३१ । प्रमादस्थानकनो । ३२ । कर्मप्रकृतिनो ३३ । लेश्याध्ययन ३४ ।
अण्णगारमार्गनो ३५ । जीवा जीव विभक्तिनो ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरन्दनीसभा सुधर्मा कृत्तीस योजन ऊंची कही । अमण तपस्वी भगवंत चा
नवंत महावीरने कृत्तीस आर्याना सहस्र यया । एतले कृत्तीस महस्र साधवी हई । चैवअने आर्भोज मासे सतिति सकृत् पुनिमदिने कृत्तीसे अंगुले सूर्य
पोरुवी छाया निवर्तावे एतले चित्तासोऽपुमासेसुतिपया हाइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाणे टण्णी छाया मापीये ३६ अंगुल छाया त्रिणनी होय

॥ भाषा ॥

॥ १०२ ॥

होइपोरमोति' ॥

३६

॥

सप्तविंशत्यानकम् पच्यकम् नवरम् कुटुनायस्येहमतविग्रहणधराउक्ता आवश्यकेतुपद्विंशत् इतिमतांतरम् तथाहैमव
तादिजीवयोरुक्तप्रमाणसम्बादगाथा सत्ततीसहस्सा छत्रमयाजोयणाणचउमयरा हेमवयवामजीवा किचूणाभोलमकलायति कलाएकीनविंशतिभागोयो
जनस्येति तत्राविजयादीनिपूर्वादीनिजंघ्वीपद्वाराणि तत्रायकाभतत्रामतोदिवास्तिपांराजधान्यस्तत्रामिकाएव पूर्वादिदक्षिणोऽसंख्ययतमे जंघ्वीपइति क्षुद्रि

ठायनिवृत्तइ ॥

३६

॥

कुंयुस्सणंअरहन सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्या हैमवयएरन्न
वयानुणं जीवानु सत्ततीसं जोयणसहस्साइं ठच्चउमत्तरं जोयणसए सोलसय एगूणयीसइजाए जोयणस्स
किंचिचिसेसूणाणु आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारं पौरुषी होय । इति छत्रोसमो समवाय संपूर्ण ॥

३७

॥

इति सैत्रीसमो समवाय विधि छे ॥ कुंयुनाय अतिहंत ने सैत्रीस गच्छ । अने सै
त्रीसगणधरकह्या । आवश्यके पैत्रीस सांभलियेछे तेमतांतरछे । हिमवंत जिव १ । एरवत २ । एहवेहु पलत्रेवनो जीवा सैत्रीस सैत्रीस योजन सहस्र छ से चि
इत्तरियांजन ३७६७४ । १८ कला ऊपरि १६ भाग उगुणीसभाग हाइआ एक योजनना कांडक विग्रिपजणी लांवपण कही । सगलाइं जंघ्वीप ना पूर्वादि
दिशे चार पालोना धणी विजयादिकदेव तेहनो पूर्वे विजय दतिणे वैजयंत पश्चिमे जयंत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विधिं प्राकार गढ सैत्रीस योजन
जंघ पण कह्यो । क्षुद्रिकायें लड्डोयें विमान प्रविभक्तो कालिकयुत विधिं पहिले वंगे सैत्रीस उद्दिग्गकाल अध्ययनदीउ उद्दिगाना काल कहतां अवसरकह्या । आ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ १०३ ॥

कायां विमानप्रविभक्तौ कालिकयुतविशेषस्तत्र किल बहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मका भवन्ति तत्र प्रथमे वर्गे प्रत्यध्ययनमुद्देशस्यैकालादिति यद्यस्य युजः पौर्णमा
स्यापट्विंशदंगुलिका पौरुषीच्छाया भवति तदा कार्तिकस्य कृष्णसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धितत्वात् सप्तविंशदंगुलिका भवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टविंशस्थानकं व्य
क्तमेव नवरंधणुपिठं जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तत्रेवस्य हैमवत ऐरवताभ्यां द्वितीयपष्ठवर्षाभ्यामवाच्छन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारे परिधिखण्डे धनुः पृष्ठे उच्यते
तत्पर्यंतभूते सरल प्रदेशं क्लीतुं जीवेद्ब्रवीदिति एतत्तमूत्रमवादिगाथा च चत्तालामत्तसया अठतीस सहस्रदसकलाय धनुः पृष्ठे उच्यते अस्तीमेरुयतस्तेनां

॥ टीका ॥

तृतीसं सत्ततीसं जोयणाङ्गं उद्दुञ्चत्तेणं प० खुम्भियाएणं विमाणपविन्नत्तीए पट्टमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण
काला प० कत्तियवज्जलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीलायं निव्वत्तडत्ता णं चारंचरइ ॥

॥ मूल ॥

३७ ॥ पासस्सणं अरहणं पुरिसादानीयरस एट्टनीसं अज्जियासाहरसीनं उक्कोसिया अज्जियासंप

सोजोपूनिमे हन्त प्रमाणं तृणनी छाया मापीये ३६ अंगुलं पौरुषी छाया अने अंगुलं सत्तरेणं सातेदिने एकेकं अंगुलं छाया वधारिये तिवारं कार्तिक कृष्ण
सातमी दिने सूर्य मैत्रीम अंगुलं पौरुषी छाया प्रते निवर्तविकरीने चारप्रते करि । इति मैत्रीमनो समवायं संपूर्णं ॥ ३७ ॥ द्विजे अठतीसमो सम
वायं लिखेके । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमां हि महा मोभागी तेहने अठतीस आधीना सहस्र उत्कल आर्या साध्वीनी संपदा हुइ । जंबूद्वीपल
क्षण वृत्तत्रेव ने हैमवत ऐरवत वीजं अने कट्टे त्रेव करी सत्तित ने आरोपित प्रत्यंघा धनुष पृष्ठाकारे परिधिखण्डे धनुः पृष्ठकक्षीये अने तेहने पर्यंत भूत सरल सूक्ष्म प्र
देशं पंक्तिते जीवा सरीखी जीवा कक्षीये तेह धनुः पृष्ठ अठतीस सहस्र सातने चालीस योजन । ३८०० । १६ । १० । कला दश भाग उगुणीसहाइया ए

॥ भाषा ॥

तरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टविंशत्योजनसहस्राखुद्रतत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुविपष्टिसहस्राण्य
दाह मेरुस्सतित्रिकंडा पुढवीवलवइरसकरापटमं रयण्यजायस्व अतिकलिहयवीयंतु एकागारंतइयंतपुणजसूण्यमयंहोइ १ जोयणसहस्रपटमंवाहलेचवी
यंतु २ तेवडिसहस्रातइयं कत्तीसंजोयणसहस्रा मेरुनुवरिचूलाओ द्विहोजोयणदुवीमंति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानवं व्यक्तमेव न्नवरं अहोहि
यति नियतत्तेचविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपच्ययत्ति जेचमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादनिदन्वनानि भवन्तीती

या होत्या हेमयण्यरन्नवईयाणं जीवा णं धणूपिठे अठतीसं जोयणसहस्साइं सन्नयचन्नाले जोयणसण दस —
एगूणवीसइजागे जोयणस्स किंचिविमंसूणा परिसक्खेणं प० अत्यस्स णं पण्यरन्ना विनिएकंठे अठतीसं
जोयणसहस्साइं उहंउच्चतेणं होत्या खुम्मियएणं विमाणपविनत्तीए विनिएवग्गं अठतीसंउद्देशणकाला प०
॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहणं एगूणचत्तालीसं अहोहियसया हांत्या समयखंत्तं एगूणचत्ताली

क योजना कांडेएक विमेष जंणा परिवेषे परिविये कहो । जेणये अंतगित आच्छादो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरुपर्वत सकलपर्वतनो राजा
तेहनो बीजो कांड अठवीस सहस्र योजन जंचपणे कइयो । मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कइयो । बुद्धि कायें लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अ
ठवीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवशर कइयो ॥ इतिअठवीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीममो समवाय लिखियेके
नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवधिते नियत जेव तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३८ । इया एतले ३८ । से अवधिज्ञानी इया । समय

॥ टीका

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

॥ १०३ ॥

कायां विमानप्रविभक्तौकालिकयुतविशेषस्तत्रकिलबहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गप्रत्यध्ययनमुद्देशस्यैकालादिति यद्यश्चयुजः पौर्णमा
स्यांपट्त्रिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्तिकस्यकृष्णसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धिद्वतत्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशस्थानकंव्य
क्तमेव नवरंधणपिठंति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तत्रेवस्य हैमवतऐरखवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवाच्छत्रस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डेधनुःपृष्ठेउच्यते
तत्पर्यंतभृतेसरलप्रदेशपंक्तीतु जीवेद्वज्जीवेद्विति एतत्सूत्रसंवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अष्टतीससहस्रदसकलायधनुति तथाअत्यस्सत्ति अस्तोमेरुयतस्तेनां

॥ टीका

तृतीसं सत्ततीसं जोयणाइं उहंउच्चत्तेणं प० खुम्भियाएणं विमाणपविज्जत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण
काला प० कत्तियत्रज्जलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीत्तायं निहत्तइत्ता णं चारंचरइ ॥

॥ मूल ।

३७ ॥ पासस्सणं अरहणं पुरिसादानीयरस अट्टनीसं अज्जियासाहरसीनं उक्कोसिया अज्जियासंप

सोजोपूनिमे हस्त प्रमाण दण्णो छाया मापीये ३६ अंगुले पौरुषो होय अने अंगुल सत्तरेणं सातेदिने एकेक अंगुल छाया वधारिये तिवारे कार्तिक कृष्ण
सातमी दिने सूर्य सैत्रीम अंगुल पौरुषी छाया प्रते निवर्तावीकरीने चारयते करे । इतिसैत्रीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिचेअष्टतीसमो सम
वाय लिखेके । पार्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमांहि महा सीभागी तेहने अठदीन आयोगा सहस्र उत्कृष्टआर्या साध्वीनी संपदा हुइ । जंबूद्वीपल
क्षण हस्तत्रेव ने हैमवंत ऐरवत वीजे अने कठे त्रेवे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखंड ते धनुष पृष्ठ कह्ये अने तेहने पर्यंत भृत सरल सूक्ष्मप्र
देश पंक्तिते जीवा सरीखी जीवा कह्ये तेह धनुष पृष्ठ अठतीस सहस्र सातसे चालीस योजन । ३८०० । १६ । १० । कला दश भाग उगुणीसहाइया । ए

॥ भाषा

तरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टविंशद्योजनसहस्राख्यव्रतत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिपठिसहस्राण्य
दाह मेरुस्सतित्रिकंडा पुढवीवलवइरसकरापटमं रयएयजायरुवे अंतेरुलिहयदीयंतु एकागारंतइयंतंपुणजसूणयमयंहोइ १ जांयणसहस्रपटमंवाहणेचची
यंतु २ तेवडिसहस्रातइयं कत्तीसंजोयणसहस्रा मेरुसुवरिचूलाओ द्विठोजोयणदुवीसंति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानवं व्यक्तमेव नवरं अहोहि
यत्ति नियतत्वेचविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्ययत्ति क्षेत्रमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादनिदन्यनानि भवन्तीती

॥ टीका ।

या होत्या हेमवएयरन्नवईया णं जीवा णं धणूपिठे अठतीसं जोयणसहस्साइं सत्तयचत्तालेजोयणसए दस
एगूणवीसइजागे जोयणस्स किंचिविसंसूणा परिरुक्खेणं प० अत्यस्स णं पण्यरन्नो वित्तिएकंठे अठतीसं
जांयणसहस्साइं उट्ठंउच्चत्तेणं होत्या खुम्मियएणं विमाणपविन्नत्तीए वित्तिएवग्गे अठतीसंउद्देसणकाला प०
॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहणं एगूणचत्तालीसं अहोहियसया होत्या समयखंत्तं एगूणचत्ताली

॥ मूल ॥

क योजनना कांईएक विशेष जंणा परिक्षेपे परिखियेकही । जेणोये अंतरित आच्छादो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरुपर्वत सकलपर्वतनो राजा
तेहनो बीजो कांड अठवीस सहस्र योजन जंचपणे कइयो । मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कइयो । जुद्धिकाये लहुडिये विमान प्रविभक्तिये बीजे वर्गे अ
ठवीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवशर कइया ॥ इतिअठवीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमां समवाय लिखियेके
नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवधिते नियत क्षेत्र तेहने जाणि ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३८ । हुया एतले ३८ । से अवधिज्ञानी हुया । समय

॥ भाषा ।

॥ १०४ ॥

इतरूपमाकृता तत्रवर्षधरास्त्रिंश ज्ज्वड्दीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषष्ठांभावात् मन्दराः पंचेषुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयोः
पूर्वतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दोषेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति शतुर्थ्यां दश पचम्यांचीणि षष्ठ्यांपंचोनलक्षं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त
संस्थानारकाणामिति । नाणावरणिज्जेत्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनोयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्य द्वे आयुषश्चतस्र इत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३८ ॥

सं कुलपत्न्या प० तं० तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोन्न चतुत्य पंचम ठठ सत्तमासु णं
पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्रस्स अण
उयस्स एयासिणं चउराहं कम्मपगग्गीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगग्गीणं प० ॥ ३९ ॥ अरहन

चेत्र अठाई द्वीप तेमांही ३८ । कुल पर्वत चेवना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कक्षा लोकमांहि पणि कुलते लोक मर्यादाना कारणे तेकहेछे । ज्वे
द्वीप मांही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखंडमांहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्ध मांहि पणि १२ एवं ३० वर्षधर यथा इषुकार चार
पर्वत वेधातकी खंड मांहि वेगुष्करार्द्धे मांहि एवं ४ । मेरू ५ । ज्वड्दीप मांहि एक मेरू धातकीखंडमांहि २ मेरू पुष्करार्द्धमांहि २ मेरू एवं ५ मेरू स
र्वनि लोकुल पर्वत ३८ यथा । बोजो नरक पृथिवी ये २५ लाख नरकावासा चउयी ये १० लाख पांचमी ये ३ लाख छठ्ठीये पांचे ऊणा १ लाखसातमी
यं १ नरकावासा सर्वेनिजो ३८ । लाख नरकावासा कथा । ज्ञानावरणीय कर्मेनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनोयनो २८ । गोत्रनो २ आउखानो ४ एहचारकर्मनी
प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कहो ॥ इति ३८ भांसमवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ द्विवे चालीसमो समवाय लिखे छे । अरिष्टनेमी

॥ टीका

॥ मूल

॥ भाषा

चत्वारिंशत्स्थानकं नवरं वदसाहस्रमासिणीएति यत्केषुचित् पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाऽः फगुणपुत्रिमासिणीएति अत्राध्येयङ्गुयमुच्यते पोसेमासेचउपया
इतववता १ पोपोपूर्णमासामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासामभवति ततोमाघेचत्वारिंशदंगुलानिपतितानीत्येवं फागुनपौर्णमास्यांचत्वारिंशदंगुल
कापौरुषीच्छायाभवति कार्तिक्यामध्येवमेव यतः चेत्तामोएमुमासेसुतिपयाहोडपोरिसी त्युक्तं ततः पदत्रयस्यषड्विंशदंगुलप्रमाणस्य कार्तिकमासातिक्रमे

॥ टीका

णं अरिष्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीउ होत्या मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उहंउच्चत्तेणं प०
संती अरहा चत्तालीसं धणूइंउहं उच्चत्तेणं होत्या जूयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं जवणावाससयसह
स्सा प० खुम्मियाएणं विमाणपविज्जहीए तइएवग्गं चत्तालीसं उद्देशणकाला प० फगुणपुसिमासिणीएणं सू

॥ मूल

अरिष्ठने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार मास्वीनो संपदायडे । मेरुपर्वत जंचो एक लाखयोजनके ऊपरथी पिहुलो एक सहस्रयोजन ते
त्रिचे चूलिका चोटीनो परि जागइ मेरुनो चूलिका चालीस योजन जंचो कहो । शंतिनाथ मोलमा अरिष्ठं चालीस धनुष जंचा थया उत्तरेंद्र नागराजा
भूतानेंद्रना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या । एतले चालीस लाख भवन कह्या । क्षुद्रिका ये लहुडीये विमान प्रविभक्तिये एतले बीजे वर्गे ४० उद्देश
नकाला अध्ययनना उद्देशाना अवसर कह्या । एतले जेला उद्देशनकाला ततला अध्ययन कह्या । फागुणनो पूर्णिमे सूर्यहस्त प्रमाणे लणनो काया मावीये
तेहनो ४० अंगुल प्रमाणे पोरसो काया प्रते निवर्तावीने चार भ्रमण को । कार्तिकी पूर्णिमे पणि एमज ४० अंगुल प्रमाणे पोरसो हुये पछे साते २ दिवसे

॥ भाषा

॥ १०५ ॥

चतुरंगुलवृद्धौ चत्वारिंशदंगुलिकासाभवतीति ॥

४०

॥ एकवत्वारिंशस्थानकंसुगमं नवरं चउसुद्वयादि क्रमेणसूचीक्तासुचतसृषु प्रथमचतुर्थ

॥ टीका ॥

षट्सप्तमोषुष्ट्रिवीषु त्रिंशतोदशानांचनरकलक्षाणां पंचोनस्यचैकस्यपंचानांचनरकाणां भावाद्वयोक्तसंख्यास्तेभवतीति ॥ ४१ ॥ द्विचत्वारिंशस्था

॥ मूल ॥

रिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीढायं निवृत्तइत्ता णं चारंचरइ एवं कत्तियाएविपुस्सिमाए महासुक्को कप्पे चत्ता

लीसं विमाणावाससहस्सा प० ॥ २० ॥ नमिस्स णं अरहनं एकचत्तालीसं अज्जियासाह

स्सीनं हांत्था चउसुपुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० तं० रयणप्पन्नाए पंकप्पन्नाए तमाए

तमतमाए महालियाणं विमाणपविज्जत्तीए पढमेवग्गे एकचत्तालीसं उद्देशणकाला प० ॥ ४१ ॥

एकेक अंगुल वधारिये मासे ४ अंगुल वधे तिवारे कार्तिक पूनिमे ४० अंगुल वधे तिवारे कार्तिक पूनिमे ४० अंगुल थायपौरुषी । महाशुक्र सातमे देव

॥ भाषा ॥

लोकि ४० महस्स विमान कद्धा । इति ४० मो समवाय संपूर्णे ॥ ४० ॥ द्विवे इगतालीसमो समवाय लिखेके । नमिनाय अरिहंतने ४१ । आर्याना

सहस्स थया एतलेसाध्वोना सहस्स हया । चार नरक पृथिवीये ४१ लाख नरकावासा कद्धा । ने कर्त्तके । इत्युत्तरे ३० लाख पंकप्पन्नाये २० लाख तमाये

पांच जंणा १ लाख तमतमाये ५ एवं सर्वमिली ४१ लाख नरकावासा कद्धा । वडोये विमानप्रविभक्तिय पहिले वर्गे ४१ लाख उद्देशनकाल अध्ययन अध्ययदी

ठ उद्देशना अवसर कद्धाके । इति ४१ मो समवाय ॥ ४१ ॥ द्विवे वेयालीसमो समवाय लिखेके । अमण भगवंत ज्ञानवंत श्रीमहावीर देव

वेयालीस वर्ष भांभेरे छयस्य पर्याये १२ वर्ष ६ मास १५ दिन केवल पर्याय कांडिक न्यून ३० वर्ष सर्वमिली ४२ वर्ष सामान्य पर्याय पाली सिद्ध थया । याव

नकं व्यक्तमेव नवरं बायालीसन्ति छद्मस्थपर्यायेहादशवर्षाणि प्रणमासाहेमासाहेति केवलपर्यायसुदेशानानि त्रिंशद्वर्षाणीति पर्यपूर्णकल्पेद्विचत्वारिंशदेव
 र्षाणि महावीरपर्यायानिहित इह तु साधिक उक्त स्तत्र पर्यपूर्णकल्पे यदल्पमधिकं तत्रविवक्षितमिति सम्भाव्यतइति जावत्तिकरणात् बुद्धेमुत्तेयंतगडे परि
 निञ्जुडेसञ्जदुकवप्यहीणन्ति दृश्यं जम्बूद्वीपस्थेत्यादि पुरत्यिमिह्नात्राचरिस्तात्रोत्ति जगतीवाह्य परिधेरपसृत्य गोस्तूभस्यावासपर्वतस्य वेलंधरनगराजसंबंधि
 नः पाशाल्यसीमांतश्चरमविभागीवा यावतांतरणभवति एसणन्ति एतदंतरं द्विचारिंशत्तुयोजनमहस्वाणिप्रज्ञप्त मंतरशब्देन विशेषोप्यलिधीयते इत्यतआह अ

समणेजगवंमहावीरे वायालीसं वासाइं साहियाइं सामसपरियागं पाउणिता सिद्धे जावसहदुरकप्पहीणे —
 जंबूद्वीवस्स णं द्वीवस्स पुरत्यिमिह्नां चरमंतानं गोथूजस्सणं आवासपह्यस्स पन्नत्यिमिह्नेचरमंते एसणं
 वायालीसं जोयणसहस्साइं आहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगजासे संखो दयसीमेय कालोएणंस

त् शब्दे करो बुद्ध थया मुक्त थया सर्वदुःख थकी मुक्तथया अजरामर थया । जंबूद्वीपनां केहल्या प्रदेश थकी जगतीना वाह्यप्रदेशथकी मांडी गोस्तूभनाम
 वेलंधर नागराजानो आवास पर्वत तेहनो पश्चिमनो चरमांत केहल्या प्रदेश एतलो जगती थकी मांडी गोस्तूभ पर्वतनो पश्चिमांत एतलाविच ४२ सहस्र
 योजन आवाधा विचे आंतरो कह्यो । एम चिहुंदिसे दक्षिण जंबूद्वीपनो जगती थकी मांडी ४२ योजन सहस्रे दक्षिण समुद्रमांडीज दगभास पर्वत वे
 लंधर नागराजानो एम पश्चिम जगती थकी मांडी पश्चिम समुद्र मांडि ४२ योजन सहस्र शंख पर्वत एम उत्तरे दगसीम । पर्वत कालोदधि समुद्रे ४२ चंद्र
 मा ४२ सूर्य उद्योत करेछे । समूर्च्छिम भुजपर सर्पनो जंदर गोह नोलियादिकनो उल्लूठो ४२ वर्ष सहस्र प्रमाणे आउखूं कह्यं । नाम कर्म क्खोति ४२ भेदे कह्यो

॥ टीका

॥ मूल ॥

॥ भाषा

बाह्यएति व्यवधानापेक्षयायदंतरंतदित्यर्थः कालोयणोति धानकौखण्डपरिविष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गङ्गनामेत्यादि गतिनामयदुदयाद्वारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेर्केन्द्रियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकशरीरंकरोति यदुदगादंगानांशिरः प्रभृतीनांउपांगानांचांगुल्यादीनांविभा गोभवति तच्छरीरोपांगनाम बध्यमानानांच संबंधकारणं शरीरोपांगनाम तथाऔदारिकादिशरीरपुद्गलानां पूर्वबद्धानां बध्यमानानांच संबंधकारणंशरीर बन्धनाम तथाऔदारिकादि शरीरपुद्गलानांगृहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसंघातनाम तथास्नायतस्तथाविधशक्तिनिमित्तभूतोरचनावि शेषोभवति तत्संहनननाम संस्थानसमचतुरस्त्राणिलक्षणभवति तत्संस्थाननाम तथायदुदयाद्वर्णादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

मुद्रे वायालीसं चंदाजोइंसुवा जोइंतिवा जांडस्मंतिवा वायालीसंसूरियापत्तासिंसुवा १ समुच्छिमन्नुयपरि सप्पाणं उक्कोसेणं वायालीसंवाससहस्साडं ठिडं प० नामकम्मे वायालीसविहे प० तं० गङ्गनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरवंगनामे सरीरोवंधणनामे सगीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे वन्ननामे गंधनामे -

तेकहेहे । नरकादिक नौगतिपामत्री जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जातिपामिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पामिये ते शरीर नाम ३ एमजेकमेने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अंगोपांग अंगते अगुलोनखादिते अंग उपांग ४ औदारिकादिक पांच शरीरनो बंधनो करवो ते शरीर बंधननाम ५ औदारिकादि पांचशरीरनांपुद्गल ग्रही ने रचनानो करिवो ते शरीरसं घातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचना ना विशेषतेसंह नननाम ७ संघात समचतुरस्त्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गङ्ग सुगंधादिक सुगंधि गंध दुरभिगंध १० रस मधुरादिक पांच

॥ टीका ।

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

दृगुरुलघु स्वयंशरीरं जीवानां भवति तदगुरुलघुनाम तथायतोऽंगवयवः प्रतिजिहिकादिरात्मोपघातको जायते तदुपघातनाम तथायतागावयव एवावयव
कोदंष्ट्रान्वगाहि परेषामुपघातको भवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतराले गती जीवो याति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छ्वासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छ्वास

रसनामे फासनामे अगुरुलघुनामे उवघायनामे पराघायनामे श्वाणुपुष्पीनामे उरसासनामे श्वायव
नामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुज्जमनामे वायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे
साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुज्जनामे असुज्जनामे सुज्जगनामे दुप्पगनामे

जाणिवा ११ स्वर्ग गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनां शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरु लघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखे करी आत्माने
उपवाते ते उपवात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे ते परावात १५ अंगाल गतिये जीव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उच्छ्वास नीसासलीजे ते जसा
स नाम १७ । जेह कर्मने उदे शरीर तापवंत होय ते आतप नाम १८ । जेह कर्मने उदे शरीर उद्योतवंत होय ते उद्योत नाम कर्म १९ । जेह कर्मने उ
दये भली भंडो गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २० । जेह कर्मना उदय थकी जीव चाले ते वस नाम २१ । जेह कर्मना उदय थो जीव स्थिर
रहे ते स्थावर नाम कर्म २२ । जेह कर्मना उदय थो दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३ । जेह कर्मना उदय थो जीव दृष्टि गोचर होय ते बादर ना
म कर्म २४ । पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५ । पूरी पर्याप्ति न करे ते अपर्याप्ति नाम २६ । जेह कर्मने उदये अनंता जीवनां एक शरीर पामिये ते
साधारण नाम २७ । जेह कर्मने उदये एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहे जेहथी ते स्थिर नाम २९ । अंगोपांग तास्थायकां तूटे ते

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ १०७ ॥

नाम तथायदुदयाज्जीवस्तापवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यविंशत्यधिवीकाधिकानां तथायतोतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायतः शुभे
तरगमनयुक्तोभवति तद्विहार्योगतिनाम त्रसनामादीन्यष्टौप्रतीतार्थानि तथायतः स्थिराणां दन्ताद्यवयवानां निष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम यतश्च भूजिज्ञादीनाम
स्थिराणां निष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवं शिरः प्रभृतीनां शुभानां तच्छुभनाम पापादीनाम शुभनाम इति शेषाणि प्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातो जीवदेहेषु स्थिता
दिलिङ्गाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमानं निर्माणनामेति पंचमच्छृङ्गोसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचेत्यर्थः पटमवीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

॥ टीका ॥

सुस्सरनामे दुस्सरनामे अणुजनामे अणुनाम जसोकिर्तिनामे अजसोकिर्तिनामे निम्माणनामे
तित्यकरनामे लवणे णं समुद्दे वायालीसं नागसाहस्सीनु अष्टिंतरियंवेलं धारंति महालियाएणं विमाण
पविन्नत्तीए वित्तिएवग्गे वायालीसं उद्देसणकालाप० एगमेण एउसप्पिणीए पंचमठ्ठीनुसमानं वायालीसं

॥ मूल ॥

अस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१। अशुभनाम ३२। जेह कर्मने उदये सहने वदभ होय ते सुभगनाम ३३। जेह कर्मथी सहने अनिट होय ते दुर्भग नाम ३४
जेह कर्मने उदये कंडभलो होय ते सुखर नाम ३५। भंडो कंड होय ते दुस्वर नाम ३६ जेह कर्म थो वचन सहने मान्यथाय ते अनादेयनाम ३७। वचनकोई न माने
ते अनादेय नाम ३८। यशकीर्ति वाधे ते जसोकिर्तिनाम ३९। यश कीर्ति वचन ते जसो कीर्ति नाम ४०। उगरीं दास जंगी रंगनी रचिदी ते निर्मा
ण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी सहने पूज्यथाय ते तोयंकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बंतालोस हजार नागदेवता जंवुहोप तरफनी पाणौ
नी बेला प्रते धरेके। वडो विमान प्रविभक्तीये वीजेवर्गे ४२ उद्देशनकाल कच्चा अध्ययन कच्चा। एकैक अवसर्पिणी कालि पडते कालि पांचमो छत्रो दुःखमा

॥ भाषा ॥

ति ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशस्थानकेपि किंचिद्विस्थिते कर्मविवागज्जयणतिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्य फलं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि कर्मविपाकाध्य-
यनानि एतानि च एकादशांगद्वितीयांगयोः सम्भाव्यन्त इति जंबूद्वीपस्तण्डिल्यादि जंबूद्वीपपारस्थांताद्गोस्तुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणितद्विक्कम्भस्य
सहस्रतदधिकाया द्वाविंशतेरत्यत्वेना विवक्षणा देवं त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणि भवन्तीति एवं च उद्दिशि पिति उक्तदिगन्तर्भावेन चतस्रो दिश उक्ता अन्यथा एवंति

॥ टीका ॥

वाससहस्साङ्गं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमवीयानु समानु वायालीसं वाससहस्साङ्गं कालेणं
प० ॥ ४२ ॥ तेयालीसं कम्मविवागज्जयणा प० । पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं
निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्वीपस्सणं द्वीवस्स पुरत्थिमिल्लानु चरमंतानु गोथूजस्सणं अयावासपव्वयस्स
पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साङ्गं अयाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिशिपि दग्गजासे

॥ मूल ॥

दुखम दुखमा वेहुं मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमो आरो २१ हजार वर्षनो क्खं २१ हजार वर्षनो वेहुं मिली ४२ सहस्र प्रमाणे क्खं
एकेक उत्तर्पिणी काले चढतेकाले पहिलो आरो अने दूजो आरो वेहुं मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाणे क्खं ॥ इति वैतालीसमो समवाय संपूर्ण
॥ ४२ ॥ हि वे तेतालीसमो समवाय लिखेके ॥ तेयालीस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म वि-
पाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एवं ४३ अध्ययन क्खं । पहिली ये ३० लाख चौथीये १० लाख पांच
मीये ३ लाख एवं पहिली चौथी पांचमी नरक पृथिवी नां मिली तेयालीसलाख नरकावासा क्खं । जंबूद्वीप नामा द्वीपनी जगतीना केहल्या प्रदेश

॥ भाष्य ॥

इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि अणुपिठुत्ति आनपूर्व्या अणुबंधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनृबंधेन सातत्येन सिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाद् मुत्ताद् सव्वदुक्ख
पणीणाइंतिदृश्यं महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थेवर्गे चतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकालाः प्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानके त्विदं लिख्यते समयेति
कालोपलक्षितत्वेन मनुष्येनैवमित्यर्थः सीमंतएणंति प्रथमदृष्टिआं प्रथमप्रस्तटे मध्यभागवतीवृत्तानरकेंद्रः सीमंतइति उद्दविमाणेति सीधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

॥ टीका ॥

सजुगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पणीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरस्सो चायालीसं जवणावाससयस
हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चायालीसं उद्देशनकाला प० ॥ ४४ ॥
समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविस्संजेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण
सयसहस्साइं आयामविस्संजे णं प० एवंउद्दुविमाणेवि ईसिपप्पाराणं पुढवी एवंचेव धम्मएणंअरहा पणयालीसं

॥ मूल ॥

णदिशे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चौतालीस लाख भवनावास कक्षा । बढी विमान प्रविभक्तिये चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष
कक्षा ॥ इति चौतालीसमां समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेंतालीसमां लिखेके । पेंतालीसलाख योजन प्रमाणे पहिली पृथिवीये पहिले पाथ
डे मध्यभागवती नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासी पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कक्षा । एमज सीधर्म ईशाननां प्रथमप्रस्तट विमान
माहि मध्यभागवती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कक्षा ईशानागारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लांब

॥ भाषा ॥

दिसिंपित्तिवाचंस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्वीपस्त्रणं दीवस्सदाहिणिल्लाओदओभासस्त्रणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणं तेयालीसंजोयणसहस्सा
इं अवाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वयं नवरं पश्चिमायांसंखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिस्थिते
चतुश्चत्वारिंशतं इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालीयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोक
चुताभासितानिक्कचित्पाठः देवलीयभुयाणं चोयालीसंइसिभासियज्जयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइति पुरुषः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा
संखोदयमीमे महालियाएणं विमाणपविन्नत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देशणकाला प० ॥ ४३ ॥

चायालीसं अज्जयणा इसिजासिया दियालोगचुयाजासिया प० विमलस्सणं अरहणं चउअलीसंपुरि

थी माडोने गोस्तूभ नाम नागराजानां आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत केहल्लो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आवाधाये अंतर कच्छो एतले जगती थ
को ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतके तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पण्हे एवं ४३ सहस्र योजन थया । एम चिहुंदिशे दक्षिण जगतीथकी मांडी
दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडो विमान प्रविभक्तिये चीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कछा ॥
इति तेयालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिंवे चौतालीसमो लिखेके । चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकेहवाके
देव लोक थी चव्वा जेह पके ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कछा । विमलनाथ अरिहंतना चौतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमे आवा काल विशे
षनो परे अनुक्रमे साधर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुष्ठे सौधा निरंतर पणे ४३ पाट मोत्ते गया यावत् शब्दे करौ सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया । दक्षि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि अणुपिठ्ति आनुपूर्व्या अणुबंधंति पाठांतरे ततोयादर्शनादनृबंधेन सातत्येन सिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाद् मुक्ताद् सव्वदुक्ख
 प्पहीणाइतिदृश्यं महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थेवर्गेचतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकालाः प्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानके त्विदं लिख्यते समयरेत्तेति
 कालोपलक्षितत्वेन मन्युक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणंति प्रथमद्विध्यां प्रथमप्रस्तटे मध्यभागवतीवृत्तानरकेंद्रः सीमंतइति उद्धविमाणेति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

॥ टीका ॥

सजुगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरस्सो चोयालीसं जवणावाससयस
 हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवर्गे चोयालीसं उद्देशनकाला प० ॥ ४४ ॥
 समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविस्कंजेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण
 सयसहस्साइं आयामविस्कंजे णं प० एवंउद्धुविमाणेवि ईसिपप्पाराणं पुढवो एवंचेव धम्मणंअरहा पणयालीसं

॥ मूल ॥

णदिशे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चौतालीस लाख भवनावास कक्षा । बडी विमान प्रविभक्तिये चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष
 कक्षा ॥ इति चौतालीसमां समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेंतालीसमां लिखेके । पेंतालीसलाख योजन प्रमाणे पहिली पृथिवीये पहिले पाथ
 डे मध्यभागवतीं नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासो पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कक्षो । एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान
 माहि मध्यभागवतीं विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कक्षो ईशानागभारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लांब

॥ भाषा ॥

टवर्त्तिश्चतसृणांविमानावलिकानां मध्यभागवर्त्तिहत्तंविमानकेन्द्रकमुहुविमानमिति ईसिंपम्भारत्ति सिद्धिपृथिवी मंदरस्तरं पव्वयस्तेत्यादिसूत्रे लवणसमुद्रान
न्तरम्परिध्वपेक्षांतरंद्रष्टव्यमिति सव्वेविणमित्यादि चन्द्रस्यत्रिंशन्मुहूर्त्ताभाग्यंनक्षत्रेण समक्षेणमुच्यते तदेवसाईंद्वाद्वितीयमर्द्धमस्येतिद्वाद्वि मित्येवंच्युत्पादना
त्तथाविधंक्षेत्रंयेषामस्ति तानिद्वाद्विचक्राणि नक्षत्राणि अतएवपञ्चद्वारिंशन्मुहूर्त्ताक्षेत्रेण साईंयोगःसम्बन्धोयोजितवन्ति तिन्नेवगाहा त्रीण्युत्तराणि उक्त

धणूइं उहंउच्चत्तेणं होल्या मंदरस्स णं पण्यस्स चउदिसिंपि पणयालीसं २ जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे
प० सव्वेविणं दिवहखेत्तिया नक्कत्ता पणयालीसं मुज्झत्ते चंदेण सद्धिंजोगंजोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा
तिन्नेवउत्तराइं पुणवसूराहिणीविसाहाय एणउत्तकत्ता पणयालमुज्झत्तसंजोसा ॥ महालियाएणं विमाणपवि

पणें पिहलपणें कही । एमज धर्मनाथ अरिहंत पेंतालीस धनुष प्रमाण जं चपणें हुआ । मेरू पर्वत ने चिंहुदिशें पेंतालीस पेंतालीस हजार योजननो अवा
धायें आंतरो कही । लवण समुद्रनो अभ्यंतर परिधी ने विचे आंतरो कही । महाविदेह क्षेत्रनो जीया लाख योजन लांबपणेंके तेमांथी दसहजार योजन
नो मेरू काटिये तां नेज लाख जबस्या तेहनो अडे मेरूयकी पूर्वनो जगती ४५ हजार योजन थाय । एम चिंहुदिशे । चंद्रमाने ३० मुहूर्त पर्यंत भोग्य जे
नक्षत्रक्षेत्र ते समक्षेत्र कहिये तेहीज क्षेत्र सार्दे कीजिये एतने ३० मुहूर्त मांहि १५ घातिये तो ४५ मुहूर्तनो क्षेत्रथाय ते ४५ मुहूर्तिया नक्षत्र सार्दे क्षेत्र
या कहिये एणें कारणें ते नक्षत्र पेंतालीस मुहूर्त लगें चंद्रमाने साथे योगकरे । करता हुआ करस्यें । तेकिहा नक्षत्रके तेकहैके । उत्तराफाल्गुनी १ उत्त
राषाढ २ उत्तराभाद्रपद ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ एह ६ नक्षत्र पेंतालीस मुहूर्त लगें चंद्रमाने साथे योग करे । वडी विमान प्रविभक्तिये पां

राफाल्गुन्यु त्तराषाढी त्तराभद्रपदाश्च ॥ ४५ ॥ अथ षट्चत्वारिंशत्स्थानके किञ्चिन्निबध्यते । दिष्टिवायस्सत्ति दादशांगस्य माउयापयत्ति सकल
 वाङ्मयस्य अकारादिमाटकाः पदानीव दृष्टिवादायप्रशवनिबंधनत्वेनमाटकापदानि उत्पादविगमघ्नौचलक्षणानि तानिच श्रेणिमनुष्यश्रेण्यादिनाविषयभेदे
 नकश्चमपि भिद्यमानानि षट्चत्वारिंशद्वन्तीतिसम्भाव्यते । तथावंभौएणं लिवीएत्ति लेख्यविधौ षट्चत्वारिंशत्माटकाक्षराणि तानिचककारादौनिहकारां
 तानि सन्नकाराणि ऋऋलृऌइत्येवं तदक्षरपञ्चकवर्जितानिसम्भाव्यन्ते तथापभंजणस्सत्ति औदीच्यामस्येति ॥ ४६ ॥ अथसप्तचत्वारिंशत्स्थानके किमप्युच्यते

॥ टीका ॥

जन्नीए पंचमेवगगे पणयालीसं उद्देशणकाला प० ॥ ४५ ॥ दिष्टिवायस्स णं ठायालीसं
 माउयापया प० वंज्नीए णं लिवीए ठायालीसं माउयस्करा प० पन्नंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स ठायाली
 सं जवणावाससयसहस्सा प० ॥ ४६ ॥ जयाणंसूरिए सवृष्णिंतरमंळलं उवसंकमिहा णं चारंचरइ

॥ मूल ॥

चमे वर्गे पेंतालीस उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कथा । इति पेंतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४५ ॥ हिंदे केतालीसमो लिखेके ॥ दृष्टिवाट पूर्व
 ना केतालीस माटकापद कथा सकल शास्त्रने अकारादि केतालीस अक्षर माटकापद दृष्टिवादायप्रते प्रसववाना कारणद्वयी मातासरीखा कथाके ।
 ब्राह्मी लिपीने विधि केतालीस माटका अक्षर कथा । अकारादिक हकारांत क्षकारे सहित ५२ । मांहीथी ऋ ऋ लृ लृ ऌ एह ५ अक्षर वर्जित बीजे ४६
 जगरे प्रभंजन अठारमो भवनपती बातकुमारिंद तेहनां ४६ लाख भवनावास कथा । इति केतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ जिदारे सूर्य

॥ भाषा ॥

॥ ११० ॥

॥ टीका ॥

ते जयाणमित्यादि इहलक्षप्रमाणस्य जंबूद्वीपस्याभयतो ऽशीत्युत्तरेयोजनशते ३६० ऽपनीते सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्कम्भोभवति तत्परिधिस्त्रीणिलक्षाणि पञ्चदशसहस्राणि एकोननवत्यधिकानि ३१५०८८ एतच्चसूर्योमुहूर्त्तानांषष्ठ्यागच्छतीति षष्ठ्याऽस्यभागहारेमुहूर्त्त गतिर्लभ्यते साचपञ्चयोजनसहस्राणि द्वैचैकपञ्चाशद् उत्तरेयोजनशते एकोनत्रिंशच्चषष्ठिभागायोजनस्य ५२५१ । २८ यदाचाभ्यंतरमण्डले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तादिवसप्रमाणं तदर्धेननवभिर्मुहूर्त्तैः मुहूर्त्त गतिर्गुण्यते ततश्चयथोक्तं चक्षुः स्पर्श प्रमाणमागच्छतीति अग्निभूति वीरनाथस्य द्वितीयोगणधरस्तस्यचेह सप्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवासउक्तः आवश्यकेतुषट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासंपूर्णत्वादविवक्षा इहत्वसंपूर्णस्यापि पूर्णविवचेतिसम्भावनयानविरोधइति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशस्थानके

तयाणं इहगयस्स मणूस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवठ्ठहिं जोयणसएहिं एक्कावीसाए यसठ्ठिजागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्कुफासं हव्वमागच्छइ थरेणं अग्निज्जूई सत्तचत्तालीसंवासाइं अगारमप्पेव सित्ता मुंठेज्जवित्ता अगारानु अणगारियं पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सणं रत्तो चाउरंतचक्का

॥ मूल ॥

सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढो पूनिमे कर्क संक्रांतिये निषध पर्वतने ऊपरि ६५ मांडलाके तेमांहिथी पहिले मांडले उपसंक्रमीने भ्रमणकरे तिवारेइहां भर तक्षेत्रगत मनुष्य ने सेतालीस हजार बेमे चैसऽ योजन अने १ योजनना ६० हिया २१ भाग एतनो वेगलो थके दृष्टिगोचर आवे । स्थविर बढा वयपर्या यश्रुतेकरो अग्निभूति वीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मंड थईने गृहस्थाश्रमथी साधुपणा पाय्या । इति सेतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिंवे अठतालीसमो समवाय लिखेके ॥ एकेक चिहुदिशिनां अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अठतालीस हजार पाटण कक्षा ।

॥ भाषा ॥

किमपिलिख्यते । पट्टणंति विविधदेशपणान्यागत्यवपतंति तत्पत्तनंनगरविशेषः पत्तनंरत्नभूमिरित्याहुर्गैके धम्मस्सत्ति पंचदशमतौर्यंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्
 णागणधराशोक्ता आवश्यकेतुत्रिचत्वारिंशत्पठ्यंते तदिदं मतांतरमिति सूरमंडलेति सूर्यमिमानं येषांभागानामेकषष्ठ्यायोजनंभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयो
 दशभिस्तैर्यूनंयोजनमिचयेः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपंचाशस्यानकेलिख्यते । मत्तमत्तमियाणं सप्तसप्तमानिदिनानियस्यांसासप्त २ दिनानिभवन्ति सप्तसु
 सप्तकेषुअतः सासप्तकेषु अतः सासप्तदिनसप्तकमयत्वा देकोनपंचाशतावादिनैर्भवेतीति पडिमत्ति अभिग्रहः कुट्टउणंभिक्षासएणंति प्रथमेदिनसप्तकेप्रतिदि
 नमेकोत्तरयाभिचावृद्धा अष्टविंशतिभिन्नाभवति एवञ्चसप्तस्वपिषस्रवतिभिन्नाशतभवति अथवा प्रतिसप्तक मेकोत्तरयावृद्धायथोक्तं भिन्नामानंभवति तथा

वटिस्स अण्णयालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणंअुरहनु अण्णयालीसंगणा अण्णयालीसं गणहरा होत्या सूर
 मंडलेणं अण्णयालीसं एकसठिन्नागे जोयणस्स विस्संजेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं जि

धर्मनाथ अरिहंत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया । आवश्यके ४३ पणि लख्याके तेमतांतरके । सूर्यनो मंडल एक योजन ना एकसठि
 या ४८ भागप्रमाणे विष्कंभपणे अने पिडुलपणे कह्यो । एक योजनना एकसठ भाग करिये ते मांथी १३ भाग आंको सूर्य मंडलके ॥ इति अठतालीसमां
 समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिंवे एकूनपंचासमो लिखेके ॥ सातदिन सात गुणाके जेहने विषे एहवी भिक्षुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते
 सप्तसप्तमिका भिक्षुनीप्रतिमा उगुणपंचास रात्रि दिवसे अहोरात्रायें पूरीधाय । एकमां कुट्टूं १८६ भिक्षाये करी यथासूत्रोक्त विधियें सिद्धांतोक्तमार्गे आरा
 धी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ बीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७। एम बीजे सप्तके पहिले दिन २ बीजेदिन ४ बीजेदिन ६ एमसातमेदिन १४। एम

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ १११ ॥

हि प्रथमे सप्तके प्रतिदिनमेकैकभिन्नाग्रहणात् सप्तभिन्नाभवन्ति द्वौतीयेद्वयो २ ग्रहणाच्चतुर्दश एवं सप्तमे सप्तानां ग्रहणा देकोनपंचाशदित्येवं सर्वभौलनेयथोक्त
मानभवतीति अहासुत्तंति यथामूत्रं यथागमं सम्यङ्न्यायेन स्पष्टाभवन्तीति शेषोद्घट्यः संपन्नजीव्णान्भवन्ति न मातापितृपरिपालनामपेक्षत इत्यर्थः ठिदत्ति
आयुष्कं ॥ ४८ ॥ तत्रपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवामुदेवोऽनंतजिज्जिनकालभावी तथाकंचणत्ति उत्तरकुरुषुनीलवदादीनां पञ्चानामानुपूर्वीव्यवस्थिता

॥ टीका ॥

रकुपणिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं ठन्नऊयत्तिस्कासएणं अहासुत्तं अणाराहिया नवइ देवकुरुउत्तरकुरा
सुणं मणुया एगूणपन्तराइंदिएहिं संपन्नजीव्णान्भवन्ति तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्तराइंदिया ठिई
प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्सणं अरहणं पंचासं अज्जियासाहस्सीनु होत्या अणंतेणं अरहा पन्ना

॥ मूल ॥

त्रीजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ बीजेदिन ८ एम सातमेदिन २१ । एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ बीजेदिन १० एम सातमेदिन २८ । एम
पांचमे सप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० बीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५ । एम षष्ठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ बीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२
एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ बीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४८ । एम सर्वमिलौ १८६ भिन्नाग्रहं । देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे युगलिया
मनुष्य ४८ रात्रि दिवसे ४८ अहोरात्रिये संप्राप्त यौवन होय एतले ४८ दिनलगे माइत पालना करे पछे भाई बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्ते । तेइ
द्रिय जीवनो उक्कृष्टो ४८ रात्रि दिवसनो आउखो कह्यो । इति ४८ समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे ५० मो समवाय लिखे । मुनिसुव्वत बीस

॥ भाषा ॥

नामहाङ्गदानां पूर्वापरपार्श्वयोः प्रत्येकं दशकांचनपर्वताभवन्ति तेच सर्वेशतं एवं देवकुरुषुनिषधादीनां महाङ्गदानां पार्श्वतः शतम्भवति सर्वएतेजंबूद्वीपेहि शतमानाभवन्ति ते योजनशतोच्छिताः शतमूलविष्कम्भा स्तनामकदेवनिवासभूतभवनालंकृतशिखरतलाः ॥ ५० ॥ अथैकपंचाशस्थानकं । तत्र

सं धणूडं उहं उच्चतेणं होत्या पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धणूडं उहं उच्चतेणं होत्या सवेविणं दीहवैयह्वा
मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विस्कंतेणं प० लंतएकप्ये पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सव्वानुणं तिमिस्स
गुहा खंणगप्पवानुं गुहानुं पन्नासं २ जोयणाडं आयामेणं प० सवेविणं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं २

मा अरिहंतने पंचास आर्यानी साध्वीनी संपदाना सहस्र थया । अनंतनाथ तेरमा अरिहंत पंचास धनुष जंचा जंचपणे थया । अनंतनाथने वारें पुरुषोत्त
म नामा चौथो वासुदेव पंचास धनुष जंचो जंचपणे हुयो । सगलाई दीर्घ वैताळ्य ३४ जंबूद्वीपना ६८ धातकीखंडना ६८ पुष्कराईना एवं १७० दीर्घ वैताळ्य
मूलने विषे पंचास पंचास योजन विष्कम्भपणे पिहलपणे कह्या । लांतक छठे देवलोके पंचास सहस्र विमानावास कह्या । सगला जंबूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ
वैताळ्य पर्वत के एकेक वैताळ्य बेवे गुफा के तेमांहि तिमियागुफा पैसारानी खंडप्रपात गुफा नौसारानी एविहुं गुफा पंचास पंचास योजन आयामपणे
कही । उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याके ते एकेक ऋदने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश कांचन पर्वतके तेसर्वमिली एम
ज देव कुरुने विषे १०० सर्वमिली २०० कांचनगिरि हुआ । ते सगला कांचनगिरि शिखर तलने विषे पंचास योजन पिहलपणे कह्या एकसो योजन जं

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

बंभचेराणं आचाराः प्रथम श्रुतस्कन्धाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमे सप्तोद्देशिका इति सप्तैवोद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चत्वारः चत्वारः एवं पंच अष्टौ चत्वारः षट् सप्तैवमेकपञ्चाशदिति सुष्यहेत्ति चतुर्थो बलदेव अनंतजिज्जिननाथकालभावी तस्यैकपंचाशद्वर्षलक्षायाः पुनरुक्तमावश्यकेतु पंचपंचाशदुच्यते तदिदं मतांतरमिति एकावन्तं उत्तरपगडी अंति दर्शनावरणस्य नव नाम्नां द्विचत्वारिंशदित्येकपंचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथ द्विपंचाश

जोयणाइं विरकंजेणं प० ॥ ५० ॥ नवरहं वंजचेराणं एकावन्तं उद्देशनकाला प० चमरस्सणं
असुरिंदस्स असुररन्तो सज्जासुधममा एकावन्तखंजसयसंनिविष्ठा प० एवंचेववलस्सवि सुष्यजेणं बलदेवे
एकावन्तं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसत्तुदुरकप्पहीणे ढंसणावरणनामाणं दोरहंक

चाहे । इति ५० समवाय संपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मा समवाय लिखेहे । आचारांगे प्रथमश्रुतस्कन्धे नव वद्वचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक ते
हना ५१ उद्देशनाकाल कद्या । प्रथमाध्ययने ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पंचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्वमिली ५१
उद्देशनकाला कद्या । बीजो विचार २५ ठाणें जाणियो सही । चमरेंद्र असुरराजानी सुधर्मासभा एकावन्त से स्तंभेकरी संनिविष्ट सहित कही । बलेंद्र अ
सुरेंद्रनी असुरराजानी सभा सुधर्मा ५१ से स्तंभेकरी सन्निविष्ट कही । अनंतनाथने वारे सुप्रभनामा चौथा बलदेव ५१ लाख वर्षनी उत्कृष्ट आउखो पालीने
सिद्धबुद्धयो सर्वदुःखयकी प्रक्षीणययो मोक्षययो । आवश्यके ५० लाखवर्षकद्या तेमतांतर । बीजाकर्म दर्शनावरणीय तेहनी उत्तरप्रकृति ८ छठोनामकर्म तेहनी

स्थानकं ॥ तत्र मोहणिज्जस्स कस्स सति । इह मोहनोयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्षु क्रोधादिकषायेषु मोहनोयमुपचर्यावयवसमुदायोपचारन्यायेन मोहनोयस्येत्युक्तं तथा
पिकषायसमुदायापेक्षया द्विपञ्चाशन्नामधेयानि न पुनरेकैकस्य कषायमात्रस्यैवेति तत्र क्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चंडिकेति चांडिकं तथा
मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्कोसेति आत्मोत्कर्षः उक्कोसेति उत्कर्षः उन्नतं उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णूमेति

म्माणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगणीतं प० ॥ ५१ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स वायन्तं नामधे
ज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलने कलहे चण्डिके जंढणे विवाए । माणे मदे दप्पे वंजे
अणुक्कोसे गह्वे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे । माया उवही नियन्ती वलए गहणे णूमे कक्को
कुरुए दंजे कूडे जिम्मे किल्लिसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे । लोभे इच्छा मुच्छा

उत्तरप्रकृति ४२ विहकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकहौ । इति ५१ समवायययो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखे । मोहनोय चौथो कर्म तेहना ५२
नामधेयकक्षा । मोहनोयकर्ममाहि ४ कषाय अवतस्याहे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकक्षा तेकहेहे । क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अक्षमा ५ संज्वलन ६
कलह ७ चाण्डिक्य ८ भंडण ९ विवाद १० । मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ थंभ ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९
उन्नत १० उन्नाम ११ ॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपवि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूननीचो ६ कल्क ७ कुरुक ८ दंभ ९ कूड १० जिह्वा ११ किल्लि
षिक १२ आत्तरणता १३ गूहनता १४ वंचनता १५ परिकुंचनता १६ सातियोग १७ । लोभाश्रितनाम १४ । लोभ १ इच्छा २ मूर्च्छा ३ कांक्षा ४ गृहि ५

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

व्यवमे कक्केति कक्कं कुरुएति कुलकं भिमेति जह्मं तथालोभादीनि चतुर्दश लोभकषायस्य भिक्खाअभिक्कति अभिध्यानमभिधेत्यस्य पिधानमित्यादा विष वैकल्पिके अकारलोपे भिध्यावेति शब्दभेदान्नामयमिति गोथूमेत्यादि गोस्तूभस्य प्राच्यालवणसमुद्र मध्यवर्त्तिनो बेलंधरनागराज निवास भूतपर्वतस्य पौरस्याश्चरमांतादपस्त्य बडवामुखस्य महापाताल कलशस्य पाश्चात्यश्चरमांतोयेन भवतीति गम्यते एसणंति एदतन्तरमध्ये बाधया व्यवधानलक्षणमित्यर्थः द्विपंचागद्योजनसहस्राणि भवन्तीत्यचरवटना भावार्थस्त्वयं इह लवणसमुद्रं पंचनवतियोजनसहस्राण्यवगाह्य पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारः क्रमेण बडवामुखकेतु

कंखा गेही तिगहा जिजा अजिजा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे । गोथून्नस्सणं अण
वासपह्यस्स पुरत्थिमिल्लानु चरमंतानु वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं वावन्नं

तृणा ६ भिध्या ७ अभिध्या ८ कामाशा ९ भोगाशा १० जीविताशा ११ मरणाशा १२ नंदी १३ रागी १४ । सर्वमिल्ली ५२ यथा । पूर्व लवण समुद्रमांहि गोस्तूभ नाम बेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांत थकी केहलाप्रदेश थकी मांडी बडवामुख महा पातालकलशनो पश्चिमनो चरिमांत केहलो प्रदेश एह वावन सहस्र योजन आवाधा विचाले आंतरो कह्यो । जंबूद्वीपनी जगती थकी मांडी चिहुंदिसे ८५ सहस्र योजन लगे समुद्र अवगाहीये तिहां पूर्वादिक चिहुंदिसि क्रमे बडवामुख १ केतु २ यूप ३ ईसर ४ एह चार पातालकलश पामीये तथा जंबूद्वीप पर्यंत थकी ४२ सहस्र योजने समुद्र मांहि जई तिहां चिहुंदिसे ४ बेलंधरनां पर्वत गोस्तूभादिककेते सहस्रना पिडुलाके सर्वमिल्ली ४३ हजार योजन प्रमाण थया तो ८५ सहस्र माहिथी ४३ सहस्र योजन काढीये तो पूठे गोस्तूभ पर्वतनो बडवा मुख महापाताल कलशनो ५२ सहस्र योजन आंतरोउगरे एमज चिहुंदिसि एम दक्षिणे

॥ टीका

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

कजूरकेखराभिधाना महापातालकलशा भवन्ति तथा जम्बूद्वीपपर्यन्ता द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्राण्यवगाह्य सहस्रविष्कम्भा श्वत्वारण्य वेलंधरनागराजपर्वता गोमुभादयो भवन्ति ततश्च पञ्चनवत्या स्त्रिचत्वारिंशत्यपकर्षितायां द्विपञ्चाशत्सहस्राण्यन्तरं भवति सौधर्मं त्रिंशद्विमानानां लक्षाणि सनत्कुमारिद्वादश माहिंद्रे चाष्टाविंशतिः सर्वाणि द्विपञ्चाशत् ॥ ५२ ॥ त्रिपञ्चाशस्थानके लिख्यते महाहिमवन्तेत्यादि सूत्रे संवादगाथा । तेवन्नसहस्राद् नवयसएजीयणाणि द्वागतीसे

॥ टीका ॥

जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवं दगनामस्मणं केउगस्म संगस्म जगस्म दगसीमस्म ईसरस्म नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतसिण तिरहं कम्मपगणीणं वावन्तं उत्तरपयणीजं प० सोहम्म स णंकुमार माहिंदेसु तिसुकप्पेसु वावन्तं विमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥ देवकुरुउत्तरकुरु

॥ मूल ॥

दगभास पर्वतनां पूर्वांत थकी मांडी। केतुक पाताल कलश विचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो कक्षो । पश्चिमें शंख पर्वतना पूर्वांत थकी मांडी यूपनाम् पाताल कलशनो पश्चिमांत विचे ५२ सहस्र योजन । उत्तर समुद्रमाहि दगसीम पर्वतना पूर्वांत थी मांडी ईसरनाम पाताल कलशनो पश्चिमांत विचाल ५२ सहस्र योजन आंतरो । ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति ५ नाम कर्मनी ४२ प्रकृति अंतरायनी प्रकृति ५ एहत्तिहुंकर्मनी ५२ उत्तर प्रकृति कही । सौधर्म कल्पे ३२ लाख विमान । सत्कुमारें १२ लाख विमान माहिंद्रे ८ लाख विमान । एमत्तिण देवलोकना मिली ५२ लाख विमानावास शतसहस्र कक्षा एतले ५२ लाख विमानावास कक्षा । इति ५२ मो समवाय पूर्णथयो ॥ ५२ ॥ हिले ५२ समवाय लिखेके । देवकुरु उत्तरकुरु संबधिनी

॥ भषा ॥

जीवामहाहिमवन्त्रो अहकलाककलाओति ॥ १ ॥ संवच्छरपरियागति संवच्छरमेकं यायत् पर्यायः प्रवज्यालक्षणी येषां ते संवत्सरपर्यायाः महइमहालएसु
महाविमाणसुति महांतिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया स्वात्यंतमुत्तवाययभूतानि महांतिमहालया स्तेषु महांतिचतानिप्रशस्तानि विमानानिचेति
विग्रहः एतेचाप्रतोता अनुत्तरोपपातिकांगितु ये धीयंते तत्र त्रयस्त्रिंशत् बहुवर्षपर्याया चेति ॥ ५३ ॥ चतुःपंचाशस्थानके लिख्यते । पाठान्तित्ति प्राप्य

॥ टीका ॥

यानुणं जीवानु तेवन्तं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं प० महाहिमवंतरूपीणं वासहरपह्याणं
जीवानु तेवन्तंजोयणसहस्साइं नवयएगतीसे जायणसए ठन्नएगूणवीसइजाए जोयणस्स आयामेणं प०
समणस्सणं जगवन्महावीरस्स तेवन्तं अणगारासंवच्छरपरियाया पंचसुअणुत्तरेसु महइमहालएसु महा
विमाणेसु देवत्ताए उववन्ता समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्तंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥

॥ मूल ॥

जीवा प्रत्यंचारूप त्रेपनत्रेपन योजन सहस्र भांभेरी लांब पणे कहो । महाहिमवंत बीजो वर्षधर एह बिहुं वर्षधरनो जीवा प्रत्यंचा त्रेपन २ सहस्र योजन
प्रमाणे उपरि नवसे एकत्रोस योजन एक योजन नाउगुण महाइ ककला । ५३६३१ योजन १६ । ६ कला आयामे लांब पणे कह्या । अमण भगवंतमहावीर
ना ५३ अणगारयती संवच्छर पर्याया एकवर्षनो पर्याय दीक्षा जेहने एहवा ५३ हुया । पळे संयारोकरो अनुत्तर विजयादिक अतिमोटो घणो विस्तीर्ण
महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समूच्छिम उरपर सर्पनो उत्कृष्टो त्रेपन वर्ष सहस्रनो आउखो कह्यो ॥ इति ५३ मो समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३

॥ भाषा ॥

एगण्डिसेज्ज्वा रति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणादंति व्याक्रियंते अभिधीयंते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापादमानाः पदार्थाः वागरिच्छन्ति
व्याकृतवांस्तानि चा प्रतीतानि अनंतनाथस्येह चतुःपंचागद्वया गणधरा योक्ताः आवल्लकेतु पंचांगदुक्ता स्तदिदं मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचांगत्

॥ टीका ॥

जरहेरवएसुणं वासेसु एगमेगाएउसप्पिणीए उंसप्पिणीए चउवन्तं २ उत्तमपुरिसा उपपजिंसुवा ३ तं० चउवीसं
तित्यकराबारसचक्कवही नयवलदेवा नयवासुदेवा अरहोणं अरिहनेमी चउवन्तराइंदियाइं ठउमत्यपरिया
यंपाउणिन्ना जिणेजाए केवली सव्वन्तू सव्वदरिसी समणेत्तगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्ना
इं वागरणाइं वागरित्था अणंतस्सणं अरहन्तं चउपन्नं गणहरा होत्था ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणंअरह

॥ मूल ॥

श्रिवे ५४ मो समवाय लिखेछे । भरत ऐरवत सेवने विषे एककीयें अवसर्पिस्त्रोयें एककीयें उत्कर्षणीयें चौपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे । उपजस्ये
ते कहेंछे । २४ तीर्थंकर । १२ चक्रवर्ती । ८ बलदेव । ८ वासुदेव । सर्वमिलौ ५४ थया । अरिहंत अरिहनेमौ ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पाली
ने जिन हुया केवली । सर्व जाणे ते सर्वज्ञ सर्वसज्जन संसारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया । अमण भगवंत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्या
ये एके आसणे बैठे ५४ । व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवंत कहता हुया । अनंतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया । इति चौपनमो समवाय थयो ॥

॥ भाषा ॥

५४ ॥ श्रिवे ५५ मोसमवाय लिखेछे । मल्लिनाथ अरिहंत पंचावम वर्षसहस्रलगे उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धयदा बुद्धयया यावत् यश्चे सर्वदुःख थकी

स्थानकेत्विदं लिख्यते। मंदरस्ये त्वादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो विश्वभूमध्यभागात् पञ्चाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविश्वभूम्यस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपाद्वै पञ्चसहस्रक्षेपेण पञ्चपञ्चाशदेव भवतीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमांतं द्रव्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां ह्यन्ते पूर्यमाणत्वात् जम्बूद्वीपजगतीविश्वभूमे च सह जम्बूद्वीपलक्षणपूरणीय लक्षणसमुद्र जगतीविश्वभूमे च लक्षद्वयं मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना जगतीमाने पृथग्भूमे मनुष्यक्षेत्रपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पञ्चचत्वारिंशत्क्षेत्रप्रमाणक्षेत्रापेक्षया भिधीयते ततश्चैव मतिरिक्ता स्यादिति अथचेह किञ्चिदूनापि पञ्चपञ्चाशत्

उपणपन्नं त्राससहस्साङ्गं परमाङ्गं पालइत्ता सिद्धेयुद्धे जावप्यहीणे मंदरस्सणं पण्यस्स पञ्चत्थिमिल्लान् चरमंता
उ विजयदारस्स पञ्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पणपन्नं जोयणसहस्साङ्गं अवाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिंपि वि
जयवेजयंतजयंतअपराजियंति समणेनगवंमहावीरे अतिमराइयंसि पणपन्नं अज्जयणाङ्गं कल्लाणफलविवा

प्रक्षीण रहित थया । मेरु पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थकी केहली प्रदेश थकी जम्बूद्वीपनो पूर्वनोद्वार विजयनाम तेहनो पश्चिमनो चरिमांत केहली प्रदेश ५५ योजन सहस्र आवाधा विचाले आंतरो कल्लो । मेरुथकी विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते मांहि दश सहस्रनो मेरुघालिये एतले सर्दमिलो ५५ सहस्र योजन थया । इहां यद्यपि विजय द्वारनो पश्चिमांत ग्रहोक्ते परंजगतोनो पूर्वांत लीजे तो पूरा ५५ सहस्र योजन थया । एमज चिहुंदिसे मेरु पर्वतमांहि घालतां मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयंत द्वारनो पश्चिमे जयंतनो उत्तरे अपराजितनो आंतरो जाणिवो । अमण भगवंत महावीर केहलीरा

॥ टीका ॥

॥ मूल ।

॥ भाषा ।

पूर्णतया विवक्षितेति अंतिमरायंसिस्ति सर्वायुः कालपर्यवसानरात्रौ रात्रेरन्तिमे भागे पापायां मध्यमायां नगयां हस्तिपालस्य रात्रःकरणसभायां कार्त्तिकमासाभावास्यायां स्नातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्यूषसि पर्यंकासनेनिषण्णः पंचपंचाशदध्ययनानि कल्याणफलविवागादिति कल्याणस्य पुण्यस्य कर्मणः फलं कार्यं विपाच्यते व्यक्तीक्रियन्ते ये स्तानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याकृत्य प्रतिपाद्य सिद्धोबुद्धः यावत्करणात् मुक्ते अंतकडे परिनिबुद्धे सर्वदुःखण्णीणेति दृश्यं पठमेत्यादि प्रथमायां विंशत्तरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशति रिति पंचपंचाशत् दंसणेत्यादि दर्शनावरणी

॥ टीका ॥

गाइं पणपत्तं अज्जयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमविइयासु दोसु पुढवीसु पणपत्तं निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जन्तमाउवाणं निरुहं कम्मपगणीणं पणपत्तं उत्तरपगणीणं प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्वीपेणंदोवं उप्पत्त नरकत्वाचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

॥ मूल ॥

विंशं कार्त्तिकवदौ अभावसनी रात्रिये पालडीवाली बंठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीमें हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनोफल कार्यं विपाचीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाण्णिवा । पाप फल विपाक मृगायुवादि कना कक्षा सिद्धां तनेविषे सिंह थया बुद्धयया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी प्रचीणथया । पहिलीये ३० लाख नरकावासाकक्षा बीजीये २५ लाख बिहुं नरक पृथिवीना मिली ५५ लाख नरकावासा कक्षा । दर्शनावरणीय प्रकृति ८ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमचीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही । इति ५५ मो समवाययो ॥ ५५ ॥ द्विजे ५६ मोसमवाय लिखेके । जंबूद्वीप द्वीपने विषे ५६ नक्षत्र चंद्रमा साथे योग संबंध योजना करता हुया संबंध करेके संबंध

॥ भाषा ॥

॥ ११६ ॥

यस्य नव प्रकृतयो नास्ती द्विवत्वारिंशत् आयुषश्चतस्र इत्येवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथ षट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते । अंबूहीवेत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते भावात् षट्पंचाशच्चत्वारिंशति भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा श्लोकाः आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदं मतांतरमिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणपिटकानि तेषां आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमांगस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधानमाचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कन्धे नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश निशेषाध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नेहानाश्रयणात् षोडशानां मध्ये एकस्याचारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पंचदश सूचकते

श्ररहन्तं लप्पन्नं गणा गणहरा होत्या ॥ ५६ ॥ तिरहं गणिपिडगाणं श्यायारचूलियाव
जाग सत्तावन्तं श्रुज्जयणा प० तं० श्यायारे सूयगङ्गे ठाणे गोथूनस्सणं श्यावासपह्वयस्स पुरात्थिमिल्लानु

कारस्ये एतले जंबूडोपमांदि २ चंद्रमाके एकेक चंद्रमाने परिवारे २८ नक्षत्र होइ त्रिहं चंद्रमानां मिली ५६ नक्षत्र होय । विमलनाथ अरिहंतना ५६ गणधर सूत्रे कथा आवश्यके ५० गणधर कथाके मतांतर के । इति ५६ समवाय संपूर्ण ॥ ५६ ॥ हिवे ५७ समवाय लिखेके । त्रिण गणी कदिये आचार्य तेह ने पेटोरद्वभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूचना आचारांग प्रथम श्रुत स्कन्धे ८ अध्ययन बीजे १६ अध्ययनके । तेमांहीवी केहल्या अध्ययन विमुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटाली बीजा १५ अध्ययन लीजे तो २४ अध्ययन आचारांग सूयगङ्गांग पहिले श्रुतस्कन्धे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्वमिली २३ ठावांगे १० अध्ययन सर्वमिली ५७ अध्ययन कथा । तेसूत्रनानाम कहेके अनुक्रमे आचारांग १ सूयगङ्गांग २ ठावांग ३ । अगतीथकी ४२ सहस्र बीजने समुद्र

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

द्वितीयांगी प्रथमश्रुतस्त्वन्धेपोडशद्वितीयेसप्त स्थानांगी दशै त्वत्वं सप्तपंचाशदिति गोयूभेत्यादौ भावार्थोयं द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वैदिका गोस्तुभपर्वतयो रंतरं
सहस्रं गोस्तुभस्य विष्कम्भः द्विपंचाशद्गोस्तुभवडवामुखयो रंतरं दशसहस्रमानत्वा बडवामुखविष्कम्भस्य तदर्हं पंचेति ततो द्विपंचाशतः पंचानां च मीलने सप्त
पंचाशदिति जीवाणंधणुपिठुति मण्डलं खण्डाकारं क्षेत्रं इह सूत्रे सम्बादगाथाहं सत्तावन्नसहस्रा धनुपिठेणउयदुसयदसकलति ॥ ५७ ॥

॥ टीका ॥

चरमंतातु वलयामुहस्स महापायालस्स वज्रमज्जेदसन्नाए एसणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे
प० एवं दगन्नासस्स केउस्सय संखस्स य जूयस्सय दग्गसीलस्स डंसरस्सय मत्तिस्सणं अरहणं सत्तावन्नं
मणपज्जवनाणिसया होत्था महाहिमवंतवज्जीणंवासरहरपत्तयाणं धनुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

॥ मूल ॥

मांदि पूर्वदिशि गोस्तुभनामां वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमंतथकी छेहत्था प्रदेशथकी बडवामुख महापाताल कलशनी बहुमध्य
देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आवाधाये विचाले आंतरो कट्टो एतले गोस्तुभ पर्वतथकी शुद्ध पूर्व ५३ सहस्र योजने बडवामुख पाताल कलशकी अने ते
बडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनी मध्यभाग ५ सहस्रनो ५२ सहस्र भेला करतां ५७ सहस्र योजन थया । एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला
प्रदेशथकी मांडो केतुज पाताल कलशनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । एमज पश्चिमे शंखनामा वेलंधरथकी मांडो यूपकनामा पाताल कलशनी मध्यभाग
५७ सहस्र योजने । उत्तरे दगसीम वेलंधर थकी इम्बरनाम पाताल कलशनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । मत्तिनाथ अरिहंतने ५७ मन पर्यवन्नानी ५७००
थया । जंघुलीप लक्ष्म मंडलचेन तेमांही हिमवंत बीजो वर्षधर रूपी पांचमो एहबीहुं वर्षधर पर्वतनी धनुपिठि ५७ योजन सहस्र बली विसय अने चाणो

॥ भाषा ॥

॥ ११७ ॥

अष्टपञ्चाशत्स्थानकापि लिख्यते । पढमेत्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशत्तरकलक्षाणि द्वितीयायां पञ्चविंशतिः पञ्चम्यां त्रीणीति सर्वास्त्यष्टपञ्चाशदिति नाणेत्यादि तत्र ज्ञानावरणस्य पञ्च वेदनीयस्य द्वे आयुष्यतस्तो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् अंतरायस्य पञ्चेति सर्वा अष्टपञ्चाशदुत्तर प्रकृतयः गोधूमस्तेत्यादि अस्य च भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणा वसेयः एवंचउद्दिशिपि नेयव्वति अनेन सूत्रेत्वयमतिदिष्टं तच्चैवं दशोभासस्मरणं आवासपव्वयस्स उत्तरिस्माओ चरमंताओ वेउगस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभागे एसणं अष्टावन्नं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे पव्वते एवं संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिस्माओ चरिमंताओज्यूगस्स महा

दोन्नियतेणउए जोयणसए दसयएगूणवीसइत्ताए जोयणस्स परिक्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ पढमदो
सुपंचमासु तिसुपुठवीसु अष्टावन्नंनिरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स वेयणिय आउय नाम अंत
राइयस्स एएसिणंपंचराहंक्रमपगणीणं अष्टावन्नं उत्तरपगणीणं प० गोधूजस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमि

योजन दसभाग उगुणीस हाइया एक योजनना ५७२६३ योजनना एगुणीस हाइया भाग १० कलापरिच्छेपे परित्रि कही ॥ इति ५७ नोसमवाय संपूर्ण ॥
५७ ॥ हिंवे अष्टावन मो समवाय लिखेके । पहिलीये ३० लाख नरकावासा बीजीये २५ लाख पांचमीये ३ लाख एमत्रिणना मिली अष्टावन नरका
वासा सतसहस्र एतजे ५८ लाख नरकावासा कइया । नाणावरणीय ५ प्रकृति वेदनीयनो २ आज्ञाखानो ४ नामकर्मनो ४२ अंतरायनो ५ एह ५ कर्मनो उ
त्तर प्रकृति अष्टावन कही । समुद्र मांहि पूर्वदिशें गोस्तूभ नामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत के तेहनां पश्चिम चरमांतथी केहला प्रदेशयकी मांडी
बडवासुख महापाताल कलशनी बहुमध्यदेशभाग एह ५८ सहस्र योजन आबाधायें विचाले आंतरो कइयो । जंवूहीपनी पूर्व जगतीयकी मांडी ४२ सह

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

पातालस्य एवंदगसीमस्य आवासंपव्ययस्यदाहिणित्ताग्रो चरमंताग्रो ईसरस्य महापायालस्यत्ति ॥ ५८ ॥ अथैकोनषष्ठिस्थानके लिख्यते ।
चंद्रस्यमिच्छादि संबत्सरो ज्ञानेकविधः स्थानांगादिषु क्त स्तत्र य चंद्रगति मंगीकृत्य संबत्सरो विवक्ष्यते स चंद्र एव तत्र च द्वादशमासाः षट्चक्रतवो भवन्ति
तत्रचैकैकचतु रेकोनषष्ठिरात्रिदिवायेण भवति कथं एकोनविंशद्वाविंशच्च द्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्ये त्वेवं प्रमाणः कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीपरिनि

ज्ञानं चरमंतां वलयामुहस्स महापायालस्स वज्रमज्जदेसनाए एसणं अण्ठावत्तं जोयणसहस्साइं अवाहा
ए अंतरे प० एवंचउदिसंपि नेयव्वं ॥ ५८ ॥ चंद्रस्सणं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसाठि

सू योजन गोस्तूभ पर्वतके ते एकसहस्रनो पिहुलो के ते एकसहस्र योजन हायलीजे अने गोस्तूभ घी ५२ सहस्र योजन बडवामुख कलशके । तो गोस्तूभसं
बंधो एक सहस्र ५२ सहस्र मांही घालिये तो ५३ सहस्रथाय अने वडवामुख १० सहस्र पिहुलोके तेहनो मध्य भाग पांच सहस्रनो ते ५३ सहस्र मांही
घालिये एतले ५८ सहस्र योजन एतलो आंतरो जाणियो । एम विहुंदिशि ना वेलंधर पर्वत अने चिहुं पाताल कलशनो आंतो जाणिवो दगभास पर्वत
दक्षिण समुद्र मांही तेहनां उत्तर चरिमांतघी मांडी केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५८ सहस्र योजन आंतरो कचो । पश्चिमे शंखपर्वतनां पूर्वचरिमांत
अने यूप कलशनो मध्यभाग ५८ सहस्र योजनकी आंतरो कचो । एतले दक्षिण चरिमांत ईसर पाताल कलश ५८ सहस्रनो । इति ५८
समवाय पूर्णथयो ॥ ५८ ॥ हिंवे ५ - मोसमवाय लिखेके । चंद्रमानी गतिन अंगीकार करीने जे संबत्सर विचारिये ते चंद्रसंबत्सर कहौये ।
चंद्र संबत्सर १२ मासनो चतु ६ होय । एकेक चतु तेमां उगुणसाठि रात्रि दिवस के तिहां एहवो रात्रि दिवाये ५८ अहोरात्रि प्रमाणे कचो तो विहुं

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

ष्टितचंद्रमासी भवति द्वाभ्यां च ताभ्यां ऋतुर्भवति तत एकोनषष्टिअहोरात्राख्यसी भवति यच्चेहद्विषष्टि भागद्वयमधिकं तत्रविवक्षितं । सन्भवस्यैकोनषष्टिः पूर्वं
सत्ताणि गृहस्थपर्याय इहोक्तः आवश्यकते तु चतुःपूर्वांगाऽधिकासोक्तिरिति ॥ ५८ ॥ अथषष्टिस्थानकं तत्र एगमेगेत्यादि चतुरशीत्यधिकशतसंख्या

राइंदियाइं राइंदियग्गेगं प० संज्ञवेणं अरहा एगूणसठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्जे वसित्ता मुंठे जाव
पव्वडए मत्तिस्सणं अरहन एगूणसठिं उहिनाणिसया होत्या ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंठले
सूरिए सठिए सठिए मुज्जेहिं संधाइए लयणस्सणं रुमुहस्स सठिनागसाहस्सीनु अग्गोदयं धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तीसतीस दिहाडा जोइये तो विहुं मासना ६० दिन जोइये तो ५८ किम कह्या । कृष्ण पक्षनो पखवाडा थी मांडी
पूनिमे मात पूरो घाय एके मासे दिन २८ अने एक दिनना वासडिया दत्तीस भाग होय एह २८ दिन बेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनो १ दिन बे भाग
घाय ते पाइला ५८ दिन मांहि घालिये एतले ५८ दिननो ऋतु होय उपरि २ भाग उगस्या ते अल्पमाटे न लेख्या जाणिया । संभवनाथ अरिहंत बीजा
चगुणसठो पूर्व लाख लगे गृहस्थाश्रम मांहि बसीने मुंड डख्य भावभेदे होय आगाराओ अणगारियं गृहस्थाश्रम थकी अणगारितायती पणुंपास्या । अ
वेय्यके चार पूर्वांग लगे गृहस्थाश्रम कह्यो के । मत्तिनाथ अरिहंतने उगणसठिसे अवधि जानी थया ॥ इति ५८ समवाय घयो ॥ ५८ ॥ हिंवे
६० मोसमवाय लिखेके । सूर्यना १८० मांडला के एकेक मांडले सूर्य साठ साठ मुहूर्त्ते बेअहोरात्रियेजगे । लवण समुद्रनी अघोदक मिखानो पाणी साठ
हजार नागदेवता धरे के एतले सोले हजार योजन ऊंची पाणीनो वेल तेऊपर २ कोस पाणीवटे बधे ते अघोदक सीमा कहिए । विमलनाथ अरिहंत

॥ टीका ।

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

नां सूर्यमंडलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ठ्याषष्ठ्यासुहर्तौ द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावार्थः एक
स्मिन्नष्टिचस्थाने उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अगोदयति षोडशसहस्रोद्धिताया विलायायदुपरिगव्यतद्वयमानं दृष्टिहानिस्वभा
वंतद्गोदकं वृत्तिमिति ओदोच्यते असुरकुमार निकायराजस्य भवनं वंभरसति ब्रह्मलोकाभिधानं पंचमदेवलोकेन्द्रस्य सठ्ठि सौधर्मद्वान्निर्देशानेचाष्टा
वंयतिमानं लक्षाणोतिक्त्वा षठ्ठिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषठ्ठिस्थानकं तत्रपंचेत्यादि पंचभिः सम्यक्त्वरैर्निवृत्तमिति पंचसांदत्तरिकं तस्यणमि
त्यलङ्कारे यगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषठ्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचायं भावार्थः युगं हि पंचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

॥ टीका ॥

लेणं चरहा सठ्ठिधणूडं उहं उच्चतेणं होत्या वलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सठ्ठिं सामाणियसाहस्सीनं प०
वंजस्स णं देविंदस्स देवरत्तो सठ्ठिं सामाणियसाहस्सीनं प० सोहम्मीसाणेसु दासुकप्पेसु सठ्ठिं विमाणा
याससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवच्चरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इग

॥ मूल ॥

साठ धनुष जंचा जंचपणे हुया । वलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कह्या । ब्रह्मनामा ५
मां देवेंद्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या । सौधर्म देवलोक ३२ लाख विमान ईशाने २२ लाख विमान बेहुं देवलोकनां मिली साठलाख
विमानावास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मो लिखेते । चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच
वर्षनो १ युगवाय ते ऋतुमासे करी मीयमानके चंद्रमासनोमान २८ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपक्षनी पडिवा थी पौर्ण

॥ भाषा ॥

॥ ११५ ॥

तद्यथा चंद्रसंद्रोऽभिवर्द्धितसंद्रोऽभिवर्द्धितश्चेति तत्रएकोनविंशदहोरात्राणि द्वाविंशच्चद्विषष्टिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २८ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदामा-
रभ्य पौर्णमासीनिष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाणे चन्द्रसंवत्सरस्तस्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यङ्कांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्टिभागा
दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकविंशत्युत्तरचतुर्विंशत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ ।
१२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धितसंवत्सरोभवति सचप्रमाणेन त्रीणिशतान्यङ्कांश्चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ ।
६२ तदेवंत्रयाणांचन्द्रसंवत्सराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसंवत्सरयो रेकीकरणेजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासस्य
त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारेलब्धा एकषष्टिः ऋतुमासा इति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो द्विधाविभक्तस्तत्रप्रथमोभाग
सठिं उज्जमासा प० मंदरस्सणं पञ्चयस्स पठमेकं एगसठिजोयणसहस्साइं उहं उच्चत्तेणं प० चंदमंरुले

मासीये पूरो थाय एहमास मान १२ गुणोकोजे तिवारे वर्षनोमान ३५४ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे
तिवारे १०६२ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धित मासनो मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाइय
१२१ भाग प्रमाणे थाय तेहने १२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्द्धितवर्षनोमान ३८३ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने वेगुणोकोजे ७६७
सातसे सडसठ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थाय तेहने पहिले ३ चंद्र वर्षका मानमांहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु
मासनो मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० ने ३० भागे हरियेतो १ युगनेविषे ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनो पहिलोकांड ६१ हजार योजन जंचपा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

एकषष्ठिः सहस्राण्युक्तः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदिति प्रोक्तः क्षेत्रसमासे तु कन्देन सह लक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्तं स्तत्र प्रथमकाण्डं सहस्रं द्वितीयं त्रिषष्ठिं तृतीयं षट्त्रिंशदिति । चन्द्रमण्डले चन्द्रविमानं नमित्यलंकृतो एगसठित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षट्पंचाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितं विभागैर्व्यवस्थापिते समांशं समविभागं प्रज्ञप्तम् विषमांशं योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पंचाशद्भागप्रमाणात्वा तस्य च भागभागस्या विद्यमानत्वादिति । एवं सूर्यस्य अपि मण्डलं वाच्यम् अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमात्रम् हितवचापरमं शांतरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथ द्विषष्ठिस्थानकं पंचेत्यादि तत्र युगे त्रयश्चंद्रसंवत्सरा भवन्ति तेषु षट्त्रिंशत् पौर्णमास्यो भवन्ति द्वाचाभिर्वर्द्धितं संवत्सरौ भवत स्तत्र चाभिव र्द्धितं संवत्सर स्वयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण

॥ टीका ।

एगसठिं विज्ञागविज्ञाद्वै समंसे प० एवं सूरस्सवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिणं जुगे वावठिं पुन्निमानं वावठिं अमावसानं प० वासुपुज्जस्स णं अरहणं वासठिं गणा वासठिं गणहरा होत्या सुक्कपरक

॥ मूल ॥

कक्षो । मेरु पर्वत ८८ हजार योजन ऊंचोके तेहना विभाग कीजे तेहमा पहिलो भाग ६१ हजार योजन नो बीजो ३८ हजार योजन नो कक्षो क्षेत्रसमासमेतो कंदसहित मेरु येकलाख योजन प्रमाण के तेहना तीनभाग कीधाके पहिलो १ हजार योजन नो बीजो ६३ हजार योजन नो बीजो ३६ हजार योजन नो चंद्रमानो मंडल चंद्र विमान १ योजन नो ६१ हाइया ५६ कृष्णभाग प्रमाणे व्यवस्थापितके तेमाटे समांस समभाग कक्षाके । चंद्रमाना मंडलमां हिथी ५ विषमांस नौकल्या तोरह्या ५६ समांस एणे परे सूर्यमंडल मांथी १३ विषमांस नौकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ ॥ मासमवायसंपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिवे ६२ मां लिखेके । पांच संवत्सरनो युगहोय तेमां हि ६२ पूनिम अने ६२ अमावास्या कहौ १ युगमाहि ३ चंद्रवर्ष होय तेमां हि मास ३६ वारे त्रिक ३६ पूर्णिमा अने ३६

॥ भषा ॥

मास इत्येवं द्विषष्टिस्ताभवन्ति इत्येवममावास्याप्रपीति वामपूज्येह द्विषष्टिर्गणगणधराद्योक्ता आवश्यकेतु षट्षष्टिरुक्तेति मतांतरमिदमपीति । सुक्लपक्व
रमेचादि सुक्लपक्वस्य संबन्धीचन्द्रोद्विषष्टिभागान् प्रतिदिनं वर्धते एवं कृष्णपक्षे चंद्रः परिहीयते अयं भावार्थः सूर्यप्रक्षयामप्युक्तस्तथाहि किण्वं राहुविमाणं निशं
चंद्रेण होइ अतिरिद्धिं च उरंगुलमयं न हेडा चंद्रसत्तं चरइ ॥ १ ॥ बावठिं बावठिं दिवसे २ उ सुक्लपक्वस्य जं परिवट्ठइ चंदो खवेइ तंचेवकालेण ॥ २ ॥ पन्नरसयभागेणय
चंदं पन्नरसमेव तंचरइ पन्नरसयभागेणय पुणो वितंचेवक्कमइ ॥ ३ ॥ एवं वट्ठइ चंदो परिहाणी एव होइ चंद्रस्य कालो वा जोणहावा एयणु भावेण चंद्रस्य ॥ ४ ॥ तथा तचैवो
क्कं सोलसभागा काऊण उडुवइं हाय एय पन्नरस तत्तियमेत्ते नागे पुणो पि परिवट्ठण जोणहन्ति ॥ १ ॥ तदेवं भणितइयानुसारिणानुमीयते यथा चंद्रमण्डलस्य एकत्रिं
शदुत्तरनवशतभागविकल्पितस्य एकांशो वस्थित एवास्ते शेषाः प्रतिदिवसं षट्षष्टिकृत्या वर्धन्ते ततः पंचदशे चंद्रदिने सर्वे समुदिता भवन्ति पुनस्तथैव हीयन्ते पंचद
शे दिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यलभ्यं व्याख्यानमेतत् जीवामिभमेतु बावठिं २ गाहा तथा पन्नरसति भारिण गाथा एतेमाथे एवं व्याख्याते

स्सणं चंदे वासठिं वासठिं जागे दिवसे दिवसे परिवट्ठइ तंचेवक्कलपक्के दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

अमावास्या होय युगमांदि अभिवर्धितवर्ष २ तेहनां मास २६ होय तेमाटेपूनिम २६ अमावास्या २६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अने ६२ अमावास्या
होय । वामपूज्य अतिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्वनो चंद्रमा प्रतिदिवसे ६२ वासठ भागे बढे एतले चंद्रमंडलनां ६२ भाग कल्पनाय
कोजेपक्के १५ तिथि भागे हरिये तिवारे भाभेरा चार चार भाग आवे तो पनरे दिन लगे राहुविमान भाभेरा चार २ भाग चंद्रमाने मूके चंद्रज्योत्स्नावधे
पनरे दिने ६२ भाग थाय तिमज कृष्णपक्षे राहुविमाने भाभेरा चार २ भाग दिवसे चंद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसे मिली भाभेरा चार २ भाग करतां

मावलिं २ इत्यत्र द्विषष्टि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यहं मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्धते चन्द्रश्चतुरंशाधिकान् द्विषष्टिभागान् क्षपयन्ति तदेव कालेनै तदेवाह पक्षरसइत्यादिना चंद्रविमानं द्विषष्टिभागान् क्रियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते ततश्चत्वारो भागाः समधिका द्विषष्टिभागानां पंचदशभागेन लभ्यन्ते अत उच्यते पंचदशभागेन चोक्तलक्षणैः चंद्रमण्डित्य पंचदशैवदिवसां स्तद्राहुविमानश्चरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति अत्रास्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुतैर्निर्णयः कार्य इति सोहस्रौत्यादि तत्र सौधर्मेशानयो र्वयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनत्कुमारमाहेन्द्रयो र्दश ब्रह्मलोके षट् लांतके पंच शुक्रे चत्वार एवं सहस्रारे आनत प्राणतयो चत्वार एव मारणाच्युतयोः त्रैवेयके अधस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे ष्वे कश्चि द्विषष्टि स्ते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येकं सुदुविमानादिकाः सर्वाश्चेसिद्धविमानांता वृत्तविमानरूपा द्विषष्टिरेव विमानेन्द्रका भवन्ति तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्रयस्त्रचतुरस्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेवं सौधर्मेशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तन इत्यर्थः पठमावलियाएति प्रथमा उत्तरोत्तरावलिकापेक्षया आद्या अतस्मादवलिकायाम्निन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमान्मूलभूता विमानेन्द्रकादारभ्य या चा

ममीसाणेसु कप्पेसु पढमेपत्यन्ते पढमावलियाए एनमेगाए दिसाए वासठिं विमाणा प० सहे वेमाणियाणं

६२ भाग होय वासठिया चार चार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म ईशाने देवलोके १२ प्रतराके तेमांहि पहिले प्रतरे पहिली आवलिकाये श्रेणीये ४ श्रेणीमां डिये जिहां पहिली श्रेणियें पूर्वादिक् वेकेकें दिशि आवलिकाये ६२ वासठ विमान घणां मोटा कढ्या । १२ देवलोके ८ त्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली वतानां ६२ विमान प्रस्तर प्रस्तराप्र परिमाणे कढ्या सौधर्म ईशाननां १२ सनत्कुमार माहेन्द्र १२ ब्रह्मे ६ लांतके ५ शुक्रे ४ सहस्रारे ४ आनत प्राणत

वलिका विमानानुपूर्वी तथा अथोत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यांदिशि या प्रथमाश्चाद्यावलिका तस्यां षट्मावलियत्ति पाठांतरे तु उत्तरोत्तरावलिका पेक्षया एकैकस्यां दिशि प्रथमावलिका सा द्विषष्टिविमानप्रमाणा प्रमाणेन प्रज्ञप्तेति एगमेगाएत्ति उडुविमानाभिधानदेवेंद्रकापेक्षया एकैकस्यां पूर्वादिका यां दिशि द्विषष्टिर्विमानानि प्रज्ञप्तानि द्वितीयादिषु पुनः प्रस्तटेषु एकैकहान्या विमानानि भवन्ति यावद्विषष्टितमेऽनुत्तरे प्रस्तटे सर्वार्थसिद्धदेवेंद्रकपार्श्वे तदेकैकमेव भवतीति तथा सवेत्ति सर्ववैमानिकानां देवविशेषाणां सख्यविमो द्विषष्टिर्विमानप्रतराः प्रस्तटायिणे प्रस्तटपरिमाणेन प्रज्ञप्ता इति ॥ ६२

अथत्रिषष्टिस्थानकं तत्र संपत्तजोव्वणत्ति मातापितृपरिपालनापेक्षा इत्यर्थः निसहेणमित्यादि किलसूर्यमण्डलानां चतुरशीत्यधिक शतसंख्यानां मध्ये

वासष्ठिविमाणपत्यक्षा पत्यङ्गगेणं प० ॥ ६२ ॥ उसन्नेणं श्रहाकोसलिए तेसठिं पुव्वसयस

हस्साइं महारायमज्जे वसित्ता मुंढेजवित्ता आगाराणं अणगारियं पव्वइए हरियासरम्मयवासेसु णं मणुस्सा

मिली ४ आरण अच्युतनां ४ सर्व १२ देवलोकनां ५२ प्रतर नव ग्रैवेयकं ८ पांच अनुत्तरनो १ एवं सर्वमिली जई लोके ६२ प्रतर थया प्रतर २ दीठविचें एकैक विनानखस्सविमानेद्रनो आणिवो । इति ६२ सम्पूर्ण ॥ ६२ ॥ हिवे ६३ लिखेछे ॥ ऋषभनाथ अरिहंत कोशल देशना जपना तेह ६३ लाख पूर्वलगे महाराज्य वासमांहि वसोने मुंडपणो पामो गृहस्थाश्रमथको अनगारतापणो यतीपणो पाम्या दीक्षा ग्रहण करी एतले २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व महाराजपणे १ लाख पूर्व चारित्रपालन कियो एवं सर्व ८४ लाख पूर्वनो आउखो थयो हरिवर्षतोजोत्तेत्र रम्यकपांचमो जेत्र तेह युगल जेत्रने विषे माणस ६३ रात्रि दिवसे संप्राप्तयोवन घाय एतले ६३ अहोरात्रिलगे माइतपालना करे । देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे सदैव पहिलो आरो होय । हरिवर्ष रम्यक

॥ टीका

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

जम्बूद्वीपस्य पर्यन्तिमे अशीत्युत्तरे योजनशते पञ्चषष्ठिर्भवन्ति तत्र च निषधवर्षधर पर्वतस्योपरि नीलवर्षधरपर्वतस्योपरि च त्रिषष्टिः सूर्योदयस्थानानि
सूर्यमण्डलानीत्यर्थः तदन्ये तु द्वे जगत्या उपरि शेषाणि तु लवणे त्रिषु त्रिंशदधिकेषु योजनशतेषु भवन्तीति भावार्थः ॥ ६३ ॥ अथ चतुःषष्टि
स्थानकं षष्ठ्यादि अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यां साष्टाष्टमिका यस्यां हि अष्टौ दिनाष्टकानि भवन्ति तस्यामष्टावष्टमानि भवन्त्येवेति भिक्षुप्रतिमा अभिग्रहवि

तेवठीए राइंदिएहिं संपत्तजोव्णणा ज्वंति निसठेणं पव्णएतेवठिं सूर्योदया प० एवं नीलवंतेवि ॥ ६३ ॥
अठ्ठमियाणं निरकुपफिमा चउसठोए राइंदिएहिं दोहियअठासीएहिं निरकासएहिं अहासुत्तं जावन्नवइ-

चेत्रे बीजोभारोहोय । हिमवंत एरख्यवंतचेत्रे तीजोहोय । महाविदेहे चौथोभारोहोय । देवकुरु उत्तरकुरु ना युगलियां ने ४८ दिननी अपत्यपालनाके ।
आरादीठ १५ दिननी वृद्धि अपत्यपालनामें के । एम करतां ४८ मांहि १५ दिन वधारिये तिवारे हरिवर्ष रम्यक चेत्रे ६४ दिन थाय । इहां सूत्रमांहि ६३
दिन आंख्यां तेकिममिले जनमदिन नगिणिये एह उत्तर जाणिवो । सूर्यना मंडल १८४ सगलाईके तमांहि निषधपर्वतने माथे १८० योजनमांही तेवठी
तेवठी सूर्योदयस्थानरूपमांडला बेबे मांडला जगती उपरि शेषथाकता ३३० योजन लवण समुद्रमांहि ११८ सर्वमिली १८४ एवं नीलवंत पर्वत नेपणि एम
जाणिवो एरवत चेत्र संबंधी सूर्यनां जगवानां मांडला ६५ नीलवंतपर्वत जगती मिलीने बीजा ११८ पक्खिम समुद्रमांहि जाणिवो ॥ इति ६३ मोसमवाय
पूर्णथयो ॥ ६३ ॥ हिवे ६४ समवाय लिखेके । आठ दिहाडा आठगुणांके जेहनेविषे तेभिन्नु प्रतिमा अभिग्रह विशेष आठुंआठी चौसठदिनहोय
जिहां तेअठ्ठमिया भिक्षु प्रतिमा चौसठि रात्रिदिवसे समापिये । पहिलेदिने एक भिक्षा बीजेदिने २ बीजे दिने ३ एम आठदिन एकेक भिक्षा वधारियेती

शेषः अष्टावष्टकानियतो सौ भवत्यतः चतुः षष्ठा रात्रिदिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमेष्टके प्रतिदिनमेकैका भिक्षा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टा
वष्टानिति संकलनया दैश्यते भिक्षाणामष्टाशीत्यविक्रे भवतीति उक्तं वाच्यं चेत्तादि दावत्कारणात् अहाकप्यं अहामग्नं फासिया पालिया सोहिया तीरिया
क्रितिया सग्नं आणए आराहियावि भवतीति दृश्यम् मन्नेति भिक्षादि उक्तो अष्टमे मन्दीश्वरस्थे द्वीपे पूर्वाद्विद्विद्वि चत्वारोजनकपर्वतः भवन्ति तेषां चः
प्रत्येकं चतसृषुदक्षु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति तासां च मध्यभागेषु प्रत्येकं दधिमुखपर्वता भवन्ति ते च षोडशपत्र्यंक संस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क
शेन मूलादिषु दशसहस्रं विष्कम्भत्वा तेषां क्वचित्तु विष्कम्भुस्सेहेणति पाठः स्तत्रतृतीयैकवचनलोपदर्शना द्विष्कम्भेनेति व्याख्येयं तथा उत्सर्धेनो चत्वेन चतु

॥ टीका ।

चउसठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रत्तो चउसठिं सामाणियसाहस्सीन प० सत्तेविणं
दधिमुहापत्तया पत्तासंठाणसंठिया सत्तयसमा विष्कंनुस्सेहेणं चउसठिंचउसठिं जोयणसहस्साइं प०

॥ मूल ॥

आठेदिने ३२ भिक्षायाय एम करतायकां आठ अष्टकलगे ३६ भिक्षालीजे एतले सर्वमिली २८८ भिक्षाये यथामार्ग आराधोहोय पालोहोयने असुरनिकाय
नां २ इन्द्र चमरेंद्र बलेंद्र २ दक्षिण दिशे चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरे बली तेहने ३० लाख भुवन बिहुं भवन मिली असुर कुमारेंद्रना ६४ लाख
आवास भवन कक्षा । चमरेंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कक्षा । जंझूडीपथको आठमूं नंदीश्वरद्वीप तेहनेविषे चिहुंदिशे ४ अंज
नगिरिछे एके ३ अंजन गिरिने चौफेर चार २ पुष्करिणी बायी छे ते बावौने मध्यभागे प्रत्येकें दधिमुख पर्वतछे एतले बिहुं । पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन
तेहने संठाण्ये आकारे संस्थित छे । सगले समान मूले विष्कम्भ पण्ये पिडुलपण्ये दससहस्र योजन परिमाण जाणवा । उत्सर्धे ऊंचपण्ये चउसठि २ हजार यो

॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

षष्ठिरिति सोहमेत्यादि सौधर्मेद्वाविंशदीयाने ऽष्टाविंशतिः ब्रह्मलोके च चत्वारि विमानलक्षाणि सर्वाणि चतुःषष्ठिरिति चउसठिलठीएत्ति चतुःषष्ठिलेष्ठ
नांशराणांयस्मिन्नसौचतुः षष्ठिलेष्ठिकः मुक्तामणिमयेत्ति मुक्ताश्चमुक्ताफलानि मणयश्चंद्रकांतादिरत्रविशेषाः मुक्तारूपावामणयोरत्रानिमुक्तामणयस्तद्विकारो
मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्ठिस्थानकं तदमोरियपुत्तेणंति और्द्वपुत्रो भगवतोमहाजीरस्य सप्तमोगणधरः तस्यपञ्चषष्ठवर्षाणि गृहस्थ
पर्याय आवश्यकप्येवमेवोक्तो नवरमेतस्यैव यो बृहत्तरोभ्राता मण्डितपत्राभिधानः षष्ठोगणधरः तद्दीक्षादिन एवप्रव्रजित स्तस्यावश्यके त्रिपंचाशद्वर्षाणि गृह
स्थपर्यायउक्तो नचबोधविषयमुरगच्छति यतोबृहत्तरस्य पञ्चषष्ठिर्युज्यते लघुतरस्यत्रिपंचाशदिति सोहमेत्यादि सौधर्मावतंसकं विमान सौधर्मदेवलोकस्यम्

॥ मूल ॥

सोहम्मीसाणेषु बंजलोएय तिसुकप्पेषु चउसठिं विमाणावाससयसहस्सा प० सव्वस्सवियणं रत्तोचाउरंत
चक्कावटिस्स चउसठिलठीए महग्घेमुक्तामणिहारं प० ॥ ६४ ॥ जंबूद्वीवे पणसठिं सूरमंठ
ला प० थरेणंमोरियपुत्तं पणसठिवासाइं अगारमज्जे वसित्ता मुंठेनविता आगारानुअणगारियं पव्वइए

॥ भाषा ।

जब प्रमाण कक्षा । सौधर्मे ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतोन देवलोकै चौसठिलाख एतला विमानावास कक्षा
सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुंदिशिना अंतना धणीने चउसठिलठि कहतां शरी के तिहां ते चतुष्षष्टि कहिये एतले ६४ शरी महग्घो महार्घ्य
बहुमूय मोती मुक्ताफल मणि चंद्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकह्यो । ॥ इति ६४ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पैसठमो समवाय
लिखेके । जंबूद्वीपने विषे १८० सूर्यमंडलके निषधमाथे ६३ जगती उपरि २ सर्वमिली ६५ कक्षा । स्थविर वयश्रुत पर्याये वडा मौर्यपुत्र सातमा गणधर

ध्वभागर्त्तिशक्रनिवासभूतं एगमेगाएत्ति एकैकस्यादिशिप्राकाराभ्यर्णवर्त्तीनि भौमानि नगराकाराणिविशिष्टस्थानानीत्येके ॥ ६५ ॥ अथषट्षष्टिस्था
नकं तत्रदाहिणेत्यादि मनुष्यक्षेत्रस्यार्धमर्धमनुष्यक्षेत्रं दक्षिणं च तत्रेति दक्षिणार्धमनुष्यक्षेत्रं तत्रभवादक्षिणार्धमनुष्यक्षेत्राणि मनुष्यक्षेत्राणि पणसठिं पणसठिं पणसठिं पणसठिं पणसठिं पणसठिं
गतः प्रभासनीयं अथवा तिष्ठत्यथाहविशानियानि मनुष्यक्षेत्राणामर्धमर्धमनुष्यक्षेत्राणि पणसठिं पणसठिं पणसठिं पणसठिं पणसठिं पणसठिं
वन्त स्तेष्वेवं जंबूद्वीपेचंद्रौचत्वारोलवणसमुद्रे द्वादशधातकीखंडे द्विचत्वारिंशत्कालोदधिसमुद्रे द्विसप्ततिश्वपुष्करार्धे सर्वेचैतद्वात्रिंशदधिकं यत्तं एतदर्धषट्षष्टि

॥ टीका ॥

सोहम्मवर्त्तिसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए वाहाए पणसठिं पणसठिं ज्ञोमा प० ॥ ६५ ॥
दाहिणह्मा माणुस्सखेत्ताणं ठावठिं चंदापजासिंसुवा ३ ठावठिं सूरिया तविंसुवा ३ उत्तरह्माणुस्सखेत्ताणं

॥ मूल ॥

६५ वर्ष लगे गृहस्थाश्रम मांहि वसीने मुंड द्रव्यभावभेदे यद्वेने अगार गृहस्थाश्रमयुक्ती अणगार पणं साधूपणं पाय्या एतले ६५ वर्षगृहवास १४ वर्ष छद्मस्थप
णे १६ केवलपर्याय सर्वायुवर्ष ८५ जाणिवा । सौधर्म देवलोके मध्यवर्त्ति सौधर्मावतंसकविमान शक्रेन्द्रनोनिवासभूत तेह महाविमानने एकेकीये वाहाये एके
की दिशेगढने समीपवर्ती ६५ भोमा नगराकारे विशिष्टस्थानक कक्षा । इति पेंसठमो समवाय संपूर्ण ॥ ६५ ॥ हिवे ६६ मो लिखे छे । मनु
ष्यक्षेत्रे वाखीअठी द्वीप २ समुद्र मिलीने ते मांहि दक्षिणार्ध मनुष्यक्षेत्र मांहि ६६ चंद्रमा प्रभासता हुया उद्योत कन्ता हुया प्रभासेछे प्रभासिस्थे । एतले
जंबूद्वीप मांहि २ सूर्य २ चंद्रमा लवणसमुद्र मांहि ४ सूर्य ४ चंद्रमा धातकीखंड मांहि १२ सूर्य १२ चंद्रमा कालोदधि मांहि ४२ सूर्य ४२ चंद्रमा पुष्करार्ध
मांही ७२ सूर्य ७२ चंद्रमा सर्वमिली १३२ सूर्य १३२ चंद्रमाधया । सुदर्शण मेरुयुक्ती चारपंक्ति चिहंदिसे मांछिये मेरुयुक्ती दक्षिणदिशे मानुसोत्तर पर्वत

॥ भाषा ॥

ठिर्दक्षिणपंक्तौ स्थिता षट्पठिउद्योरात्तरपंक्तौ यदाचोत्तरपंक्तिः पूर्वस्यांगच्छति तदा दक्षिणापश्चिमायामित्येवं सूर्यसूत्रमप्यवसेयमिति छावठिंगणसि आवश्यकोत्
 षट्सप्ततिरभिहितेतौ दक्षतांतरमिति छावठिंगसागरोपमादंठिद्वसि यच्चातिरिक्तं तदिह न विवक्षितं यत एवमिदमन्यत्रोच्यते दोवारे विजयाद्रसु गयस्यति त्रिषु ए

॥ टीका ॥

छावठिचंदापजासिंसुवा ३ छावठिसूरियातविंसुवा ३ सेजंसस्सणं अरहणं छावठिंगणा छावठिंगणहरा

॥ मूल ॥

लगे रात्रिये ६६ चंद्रमा प्रकाश करे एतले मनुष्यक्षेत्र मांदि १३२ चंद्रमाछे। तेहनो अर्ह ६६ होय ते ६६ चंद्रमा जंबूद्वीप संबंधी हरिवर्ष १ हिमवत २ भरत
 क्षेत्र ३ एवं दक्षिण धातकी खंडे ३ क्षेत्र एमज दक्षिण पुष्करार्द्ध एहीज त्रिहूक्षेत्रे रात्रिकरे मेरुधकी उत्तर दिशे जंबूद्वीप संबंधी रम्यक १ ऐरव्यवत २ ऐर
 वत ३ धातकी खंडना एहीज ३ पुष्करार्द्धना एहीज ३ क्षेत्र ६६ चंद्रमा प्रकाश करे तिवारे जंबूद्वीप संबंधी पूर्वविदेह १ धातकी खंड पूर्वविदेह २ पुष्करार्द्ध
 पूर्वविदेह ३ तिहां ६६ सूर्यतपे पश्चिम जंबूद्वीप विदेह १ धातकी खंड पश्चिम विदेह २ पुष्करार्द्ध पश्चिम विदेह ६६ सूर्य तपे दिवस करे। अने जिवारे मेरु
 धकी दक्षिण पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे तिवारे मेरुधकी उत्तर पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे। जिवारे मेरुधकी पूर्वपुष्करार्द्ध लगे ६६ चंद्रमा रात्रि
 करे तिवारे पश्चिम पुष्करार्द्धलगे ६६ चंद्रमा रात्रिकरे एम १३२ सूर्य १३२ चंद्रमा कक्षा। अयांस ग्यारमा अरिहंतने ६६ गणधरहुआ। आवश्यको ७६ गण
 धर कक्षाछे तेमतांतरछे। आभिनिशो विक्रान एतले मतिज्ञाननो ६६ सागरोपम भांभेरालगे स्थितिकही। यदाह दोवारे विजयाद्रसु गयसाति त्रिषु एअ
 हवताई अदरेगनरभवौअं नावाजीवाचसिहंति। विजयविमाने मतिज्ञाननो दोबेलाजाय तिहांतेतीस सागर २ बेलाउत्कृष्टो आउखो भोगेती तेनीसदूणा

॥ भाषा ॥

अहवताइं अहरेगंनरभवोयंनानाजीवाणसञ्चडंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसप्तषष्ठिस्थानके किंचिद्विव्रियते तत्रपंचसंवहरेत्यादि नक्षत्रमासोये
नकालेन चंद्रोनक्षत्रमण्डलंभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति आहोरात्रस्यसप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणं चाष्टादशशतानि त्रिंशदधि
कानोति प्राक्दधितम् १८३० तदेवंनक्षत्रमासस्योक्त प्रमाणराशिनादिनसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणराशिः
सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकलचंहाविंशतिः सहस्राणिषट्शतानिदशचैत्येवं रूपोविभज्यमानःसप्तषष्ठिनक्षत्रमासप्रमाणो भवतीति बाह्याओत्ति लघुहिम

॥ टीका ॥

होत्या आग्निणिघोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं तावठिं सागरोयमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसं
वच्छुरियस्सणंजुगस्स नरकत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसठिं नरकत्तमासा प० हेमवयएरन्नवयानुणं वाहान

॥ मूल ॥

६६ सागर आउखो । तथा अच्युतदेवलोगे त्रीण बेलाजाय तिहां उक्कृष्टो २२ सागरआउखो वाईतो ६६ सागरहोय । विचेमनुथनोभव करेते भांभेरा मांद्दि
गणिये इति ६६ समवाय संपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय तिखेहे । पचसंवत्सरे युग १ पूरोथाप । तेयुग नक्षत्रमासेमावीये ६७ नक्षत्रमासहोय जेणे
काले चंद्रमा नक्षत्र मंडलनेभोगवे तेनक्षत्रमासकहिये तेनक्षत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहोय । पुर्वे ६१ भैठाणे एक
१८३० दिनक्रयाकृते ६७ गुणांकरिये तिवारे एकलाख बाईस हजारकसे दसभागहोय तेसडसठभागें एकअहोरात्रि वाविये २७ अहोरात्रियें सडसठिया एक
बोसभागे एकनक्षत्रमासहोय एहवे ६७ नक्षत्रमासे एकनक्षत्र युगपूराय । लघु हिमवंतपर्वतनो जीवाश्चको पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेहिमवंतक्षेत्रनी प्रदेशपं

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वज्रोवायाः पूर्वापरभागतो येप्रवर्धमानश्चप्रदेशपंक्तौ हैमवतवर्षजीवांयावत्ते हैमवतबाह्वुच्येते एवमैरण्यवतबाह्वपिभावनीयौ इहप्रमाणसंवादः बाहासत्त
द्विसहस्रपद्मेतिवियकलाश्रोति कलाएकोनविंशतिभागः एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनुःपृष्ठात् चत्तालासत्तसया अडतीससहस्र दसकलायधणुति ॥ एवं
लक्षणात् ३८०४० । १० । १८ हिमवतधनुःपृष्ठे धणुष्विष्टकलचउक्कं पणवौससहस्रदुसयतोसहियति एवंलक्षणे २५२३० । ४ । १८ । अपनीतेयच्छेषंतदर्श
कृतंसङ्गवतीति आयामेनदैर्घ्येति मदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वांताज्जंबूद्वीपोपरस्यांदिगि जगतीबाह्यांतपर्यवसानः पंचपंचाशद्योजनसहस्राणितावदस्ति ततः
परंद्वादशयोजनसहस्राण्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये गौतमद्वीपाभिधानांद्वीपोस्ति तमश्चिक्त्यसूत्रार्थः सम्भवति पंचपंचाशतोद्वाद्दशानांच सप्तषष्टित्वभावात्

॥ मल ॥

सत्तठिं सप्तठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिस्रियन्नागाजोयणस्स आयामेणं प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पु
रत्थिमिल्लान् चरमंतान् गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसठिं जोयणसहस्साइं अब्बाहाए

॥ भाषा ।

क्तिके हिमवंतक्षेत्रनो जोवालगे तेहिमवंतक्षेत्रनो बाहुसरोखीवाहुके । एम गिखरीनो जोवायकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्धमान जेऐरण्यवंतक्षेत्रनो प्रदेशपंक्तिछे ऐर
ण्यवंतक्षेत्रनो जोवालगे ते ऐरण्यवंतक्षेत्रनो बाहुकहिये । जेहिमवंत ऐरण्यवंतक्षेत्रनोबाहु६७से ५५ योजन एकयोजननाउगणीसहाय्यात्रिणिकला ६७५५ ।
३ १८ योजनना ३ भाग लांबपणे कहौ । मेरूपर्वतना पूर्वचरिमांतथकोमांडो लवणसमुद्रमांडो पश्चिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे ल
वणसमुद्राधिपति तेहनो निवासभूत गौतम द्वीपके तद्वीपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो । मेरूप
र्वत १० हजार योजन विष्कंभलीजे अने तिहांथी ४५ हजार पश्चिम जगती तिहांथी १२ हजार गौतम द्वीप सबमिली ६७ हजार योजन आंतरो थयो

यद्यपि सूत्रपुस्तकेषु गौतमशब्देन दृश्यते तथाप्यसौ दृश्यः जीवाभिगमादिषु लवससमुद्रे गौतमचंद्रविहीपात्विनाहीपांतरस्याश्रयमाश्रवादिति सव्येसिंपिणमि
 त्वादि सर्वेषामपि समित्यलंकारे नक्षत्राणां सीमाविष्कम्भः पूर्वापरतश्चंद्रस्य नक्षत्रभुक्तिचेत्रविस्तारः नक्षत्रेणाहोरात्रभोग्यचेत्रस्य सप्तषष्ठ्याभागेर्भाजितो विभक्तः
 समांसः समच्छेदः प्रथमतः भागांतरेण तु भज्यमानस्य नक्षत्रसीमाविष्कम्भस्य विषमच्छेदनाभवति भागांतरेण नवक्तुंशक्यते इत्यर्थः तथाहि नक्षत्रेणाहोरात्रगम्य
 स्य चेत्रस्य सप्तषष्ठिभागीकृतस्य चेत्रस्यैकविंशतिर्भागा अभिजिन्नक्षत्रस्य चेत्रतः सीमाविष्कम्भो भवति ॥ एतावति चेत्रे चंद्रेण सह तस्य योगोऽप्यपदिश्यते इत्यर्थः
 तथा तस्मात्सर्वेकविंशती विंशत्युद्भूतत्वादहोरात्रस्य विंशता गुणितायां ६३० सप्तषष्ठ्याद्वतभागायां यत्नव्यम् तत्कालसीमा भवति चंद्रेण सह तस्य योगकाल इ
 त्यर्थः साचनवमुद्भूताः सप्तविंशतिश्च सप्तषष्ठिभागाः ८ । २७ । ६७ आह च अभिदक्षचंद्रजोगो सत्तद्वीखंडि ए अहोरात्रे भागा ओ एकवीसं ह्येति हि गानवमुद्भूता
 यति चेत्रतः कालतस्तथा शतभिषग्भरण्यार्द्राश्लेषास्वातिज्येष्ठानां त्रयस्त्रिंशत्सप्तषष्ठिभागास्तद्भागाद्वं च चेत्रसीमाविष्कम्भो भवति तस्यामेव सार्द्धत्रयस्त्रिंशतिः विंश
 तागुणितायां १००५ सप्तषष्ठ्याद्वतभागायां यत्नव्यम् तदेषां कालसीमा तच्च पंचदशमुद्भूताः आह च सयभि सया भरणी ओ अहा अरसे ससा इज्जुय ए एछन क्वत्त
 पवरसमुद्भूत संजोगति ॥ १ ॥ तथोत्तरात्रयः पुनर्वसुरोहिणी विशाखानां सप्तषष्ठिभागानां शतं तद्भागाद्वं च चेत्रविष्कम्भः सीमा भवति तथा तस्मिन्नेव विंशद्गुणि

श्रुंतरे प० सव्येसिं पिणं नरकत्ताणं सीमाविस्कंजेणं सत्तठिजागज्जइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

सगला नक्षत्रनौ सीमा विष्कंभपणे पिहलपणें सतसठ भागें विभजिये बिहचेथके समोअंश चेत्रनौ भागआवे एम कछी नक्षत्रें अहोरात्रीयें जेचेत्रनी सी
 मा चेचवकी विष्कंभपणी होय । एतले चेत्रे चंद्रमा साथें तेअभौचनो योग संबंध कह्ये वीजा नक्षत्रनौ वार्ता सर्वटीकाथकी जाणिवी ॥ इति ६७ समवा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

ते ३०१५ तथैव हतभागेयत्नम् तदेषां कालसीमा भवति सा च पंचचत्वारिंशमुहूर्ता इति आह च तत्रैव उत्तराहं पञ्चसूरोहिणी विसाहाय एएकवक्त्रता पी
न्यालमुहूर्तसंजोगति ॥ १ ॥ शेषाणां पंचदशानां नक्षत्राणां सप्तषष्टिभागानां क्षेत्रसीमा विष्कम्भो भवति तस्याश्च तथैव गुणितायां २०१० हतभागायां च यत्नम्
तत्कालसीमा तच्च त्रिंशमुहूर्ता आह च अवसेसानकवक्त्रता पञ्चरसविहृति तीस्रमुहूर्ता चंदस्मृते हिंजोगोसमासत्रोएसवक्त्रतामि ॥ ३ ॥ एवं चैकस्य षष्ठां २ पंचद
शानां चेत्येयमष्टाविंशतेर्नक्षत्राणामष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानि सप्तषष्टिभागानां मेतदेव द्विगुणं षट्पंचाशतो नक्षत्राणां भवति तच्च सहस्रत्रयं षड्दशतानि ष
ष्ट्यधिकानि ३६६० ॥ ६७ ॥ अथाष्टमषष्टिस्थानके किंचित् लिख्यते धायइसंढेत्यादि इहयदुक्तम् एवं चक्षवद्वी बलदेवावासुदेवति तत्रयद्यपि चक्रवर्त्ति
नां वासुदेवानां नैकदा अष्टषष्टिः संभवति यतो जघन्यतोऽप्येकैकस्मिन् महाविदेहे चतुर्णां तीर्थकरादीनामावश्यं भावः स्थानां गादिष्वभिहितः न चैकक्षेत्रे चक्रवर्त्ति
वासुदेवश्चैकदा भवतोऽतः अष्टषष्टिरेवोत्कर्षतश्चक्रवर्त्तिनां वासुदेवानां चाष्टषष्ट्यां विजयेषु भवति तथा पीहसूत्रे एकसमयेनेत्यविशेषणात् भवति कालभेदभा

॥ मूल ॥

धायइसंढेणं दीवे अरुसठिं चक्र वट्टिविजया अरुसठिं रायहाणीन प० उक्कोसपए अरुसठिं अरहंता स

॥ भषा ॥

य पुरोधयो ॥ ६७ ॥ हिवे ६= मो लिखेके । पूर्व पश्चिम धातको खंडे ६= चक्रवर्त्तनी विजय चक्रवर्तिये जीपिवा यांग्य क्षेत्रना खंड कक्षा ।
एतले पञ्चधातको खंडे ३२ विजय विदेहमां हि अने भरत ऐरवत मिली २ एवं ३४ विजय पश्चिम धातको खंडे पणि ३४ सर्वमिली ६= विजय होय । वि
जयदीठ राजधानी एकेक होय तेमाटे पूर्वापरधातको खंडे ६= राजधानी के जिहाराजा राज्यकरे तेराजधानी कहिये । उत्कृष्ट पदे पूर्वापरधातको खंडे
६= अरिहंत उपजताहुया उपजेके उपजसे । एतले एकेक विजयदीठ एकेक अरिहंत उपजे । एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव जाणिया । यद्यपि वर्त्तमान

विनाचक्रवर्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलिख्यते च जंबूद्वीपप्रद्व्यां भारतकच्छाद्यभिलापेन चक्रवर्त्तिन इति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसप्ततिस्था नकेकिञ्चिद्विद्व्यते समएत्यादिमंदरवर्जाभिरुवर्जाः वर्षाणि च भरतादिचैवाणि वर्षधरपर्वताद्यहिमवदादयस्सुक्तीमाकारिणी वर्षधरपर्वताः समुदिता एकोन सप्ततिः प्रज्ञप्ताः कथंपंचसुमेरुषु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पंचात्रिंशद्वर्षाणि तथा प्रतिमेरुषट्षट् हिमवदादयो वर्षधरास्त्रिंशत्तथा चत्वार एवेषुका

॥ टीका ॥

मुप्यजिंसुया ३ एवं चक्रवर्ती बलदेवा वासुदेवा पुष्करवरदीवहेणं अरुसठिं विजया एवं चैव जाववा सुदेवा विमलस्सणं अरहणं अरुसठिं समणसाहस्सीणं उक्कोसिया समणसंपया होत्या ॥ ६८ ॥

॥ मूल ॥

समयखित्तेणं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासावासाधरपट्टया प० तं० पणतीसंवासा तीसंवासहरा चत्तारिउ

काले वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिन होय ६८ वासुदेव न होय अने एकेक विदेहे जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थंकरादि उत्पन्न होय । एकेछे चक्रवर्त्ति वासुदेव न होय । बत्तीस विजयनेविषे उत्कृष्टपदे २८ चक्रवर्त्ति होय ४ वासुदेव होय अने २८ वासुदेव होय तिवारे ४ चक्रवर्त्ति होय तो ६८ किममिले सूत्रमां हि एकेसमि एहवा पाठनथी तेमाटे कालभेदे पाठके ६८ होय विजयने भेदे तेमाटे विरुद्ध नथी । धातकीखंडनीपरे पुष्करादूर्ध्व द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी कहवी । उत्कृष्ट पदे ६८ अरिहंत कहिवा एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव कहिवा । विमलनाथ अरिहंत ने अडसठ हजार अमण्यती हुय उत्कृष्ट अमण संपदा थई ॥ ६८ ॥ हिचे ६८ मां लिखे छे । काले करी आसखाया ३ जेने समयचेव कहिये ते छेव अथाई द्वीपने विष मेरु वर्जो ने ६८ छेव अने वर्षधर कुलगिरि हिमवतादिक छेवनो सोमानां करणहार कछा । ते कहेछे अठाई द्वीपे ५ मेरु छे एक मेरुने पासे सातसात

॥ भाषा ॥

राइति सर्वसंख्येकोनसप्ततिरिति। मंदरस्येत्यादि लवणसमुद्रं पश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राख्यवगाद्य द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमुद्राधिपतेर्भवेनालंकातोगौतमद्वीपोनामद्वीपोऽस्तितस्यचपश्चिमांतोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवन्ति पंचचत्वारिंशतो जंबूद्वीपसंबंधिनां द्वादशानामन्तरसंबंधिनां द्वादशानामेव द्वीपत्रिंशत्सहस्रं भूषणं च मोलनादिति। मोहनोयवर्जानां कर्मणा मेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयो भवन्तीति कथं ज्ञानावरणस्य पंच दर्शनावरणस्य नव वेदनोयस्य द्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नो द्विचत्वारिंशद्गोत्रस्य द्वे अंतरायस्य पंचेति ॥ ६८ ॥ अथ सप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते समेत्यादि वर्षा

॥ टीका ॥

सुयारा मंदरस्सपत्न्यस्सपत्न्यमित्थान् चरमंतान् गोयमद्वीवरस्स पत्न्यमित्थे चरमन्ते एसणं एगूणसत्तरिं
जोयणसहस्साइं अथाहाएअंतरे प० मोहणिज्जवज्जाणं सत्तरहं कम्मपगग्गीणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगग्गीणं

॥ मूल ॥

भरत हिमवन्तादिक क्षेत्रके ते पांचसतां पेत्रीस थाय एकेक मेरुके पांचे स्थितं महाद्विपं तादिक ६।६। वर्षधर के कुप्रंच त्रीस वर्षधर यथा धात की खंड मांहि २ द्रुपकार पर्वतके पुष्करार्ध मांहि २ एवं ४ द्रुपकार पर्वतयथा सर्व मिली उगुणहत्तरि वर्षधर यथा ६८ मेरुनां पश्चिम चरमांत थी गौतम द्वीपनो पश्चिम चरमांत एहने ६८ हजार योजन नो विचाले आंतरो कछो। एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनो जगती के तेह थकी १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत के ते १२ हजार योजननो पिहलो के ते सर्व एकी करिये तिवारे ६८ हजार योजन थाय। मोहनोय कर्म वर्जो ने सात कर्मनो ६८ उत्तर प्रकृतिकहो। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ८ वेदनोय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिला उगुणहत्तरि प्रकृति धई इति ६८ समवाय संपूर्ण ॥ ६८ ॥ हिवे ७० मो लिखे के। अमण भगवान महावीर देव चार मास प्रमाण वर्षाकाल

॥ भाषा ॥

षां चतुर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्य सविंशतिदिवसाधिके मासे व्यति तांते पंचाशतिदिने चतीति धित्यर्थः सप्तत्यां चरां चिदिनेषु शेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः
वर्षास्वावासो वर्षावासः वर्षावस्थानं पञ्जोसवेदिति पत्रिसति सर्वथा करोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषु दिवसेषु तथा विधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति
अतिभाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां तु वृक्षमूलादा वपि निवसतीति हृदयमिति पुरिसादाणीयति पुरुषाणामादानोपपादेयः पुरुषादानीयः अवाह्णिया कम्पद्धि
ई कम्पणिसेगेपणस्तेति इह किलात्मा अविगिष्टमेव कर्मपुहलोपादानं कृत्वा उत्तरकालं ज्ञानावरणीयादिकर्मणां स्वस्वमवाधाकालं मुक्ता ज्ञानावरणीयादिप्र

॥ टीका ॥

प० ॥ ६१ ॥ समणे जगवं महावीरे वासाणं सवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिण्हिं राइंदिण्हिं
सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ पासेणं एरहा पुरिसादाणीए सत्तरिवासाइं वज्जपप्पि पुज्जाइं सामन्नपरियागं
पाउणिक्का सिद्धेयुद्धे जावप्पहीणे वासुपुज्जेणं एरहा सत्तरिंधणूइं उहं उच्चत्तेणं होत्था मोहणिज्जस्स णं

॥ मूल ॥

नो ते मां हि २० रात्रिये अधिक मास वीतेयके एतले आयादो पुनिम यक्को पंचासमे दिहाडे भादों सुदि ५ दिने संवच्छरी करी पक्के शेष थाकतो ७ रा
त्रिये वर्षाकाल रद्दो पज्जोसवेइ सर्वथापि करे । पाखं नाथ अरिहंत पुरुषां मां हि अष्ट प्रतिपूर्णं ७० वर्षं लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धयया सर्वदुःखयक्को
प्रचीणयया एतले ३० वर्षं गृहवासे ७० वर्षं चारित्रि सर्व मिली १०० वर्षनो आयु जाणिवो । वासुपूज्य बारहमां अरिहंत ७० धनुष जंचपणे हुया । मोह
नीय कर्मनो स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अवाधायें ७ हजार वर्षे उणी ज्ञानावरणी यादि कर्मदल भोगविवाने अर्थे रचना पूर्वे जे बांध्योहे
ते उदयकाले आणिवो एतले उत्कृष्टो ७० कोडाकोड सागरोपमनो जेणे समये मोहनीय कर्मनो बंधपाय्यो ते बंधकालथी मांडी ७ हजार वर्ष लगे ते कर्म

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

कृतिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्येणोदयसहितं तद्वलिकं निषिञ्चति उदययोग्यं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवरूपा
पाच यतः स्थितिरवस्थानं तेनभावेनाप्राप्यवनं तत्र कर्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति
तत्र अबाहति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणितं तावत्कर्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोन्तरसमये कर्मदलिकं पूर्वनिषि
क्तं उदये प्रवेष्टयति निषेकोनाम ज्ञानावरणादिकर्मदलिकस्या अनुभवनायं रचना तच्च प्रथमसमये बहुकं निषिञ्चति द्वितीयसमये विशेषहीनं तृतीयसमये
विशेषहीनं मेवयावदुत्कृष्टस्थितिकर्मदलिकं तावद्विशेषहीनं निषिञ्चति तथाचोक्तं मुत्तूणसंगवाहुं पटमाण्डिईएवहुतरंदव्व सेसेविसेसहीणंजावुक्कोसंतिसब्बेसिं
ति बाधलोडने, बाधत इति बाधा कर्मणोदयइत्यर्थः नवाधाअबाधा अन्तरं कर्मोदयस्येत्यर्थः तथा जनिका आबाधोनिका कर्मस्थितिः कर्मनिषेकोभवती
त्येवमेकेप्राहु रन्येपुनराहु रवाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनोना कर्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तेति सागरोपमकोटाकोटीलक्षणः कर्मनिषेको भवतिसच
क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित् । चउत्थस्सेत्यादि इहभावार्थोयं युगेहि पञ्चसम्ब

॥ मूल ॥

कम्मस्स सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीनु अवाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स
देवरत्तो सत्तरिसामाणियसाहस्सीनु प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

॥ भाषा ॥

उदयेनात्र ते माटे ७० कोडाकोड सागर मांदि थो ७ हजार वर्ष जंणा कीजे एतत्ती स्थिति मोहनौय कर्मनी कोइक कहेके सात हजार वर्ष अधिक ७०
कोडाकोडि सागर सचच कर्म निसेक होय । माहेद्र चौथा देवलोकना राजाने ७० हजार सामानिक देवता कक्षा इति ७० समवाय संपूर्ण ॥ ७०

क्षरा भवन्ति तत्राथौ चन्द्रसम्बत्सरो तृतीयोभिवर्द्धितसम्बत्सर चतुर्थचन्द्रसम्बत्सरस्तृतीयोभिवर्द्धितसम्बत्सर एव तत्रच एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचद्विष-
 टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति अथ द्वादशगुणः चन्द्रसम्बत्सरो भवति त्रयोदशगुणश्चायमेवा भिवर्द्धितो भवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिवर्द्धितलक्षणे सम्बत्सरत्रयेर्दि-
 नानांसहस्रं दिनवतिः षट्षष्टिभागभवन्ति १०८२।६।६२ तथा आदित्यसम्बत्सरे दिनानांशतत्रयं षट्षष्टिभवंति तत्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिक
 भवति इहचक्रिलचन्द्रयुगमादित्ययुगं चाषाढ्या मेकंपूर्यते ऽपरश्चावणकृष्णप्रतिपदिअरभ्यते एवंचादित्ययुगसम्बत्सरत्रयापेक्षयाचन्द्रयुगसम्बत्सरत्रयं पंचभिदि-
 नैःषट्पंचाशताचदिनद्विषष्टिभागैरूनंभवतीतिक्त्वा आदित्ययुगसम्बत्सरत्रयं आवणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्केसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसम्बत्सरत्रयंत्वाषाढ्यां तत

सत्तरीए राइंदिएहिं वीक्कंतेहिं सव्वाहिरान मंळान सूरिएआउहिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

द्विगे ७१ मो लिखेछे । १ युग मांहि ५ संबच्छर होय ते चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चंद्र संबच्छर एकेको चंद्र
 मास २८ अहोरात्रि १ अहोरात्रना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कौधां चंद्र संबत्थाय तेहनां ३५४ दिन भांभेरा थाय २८।३२।६२ अहोरात्रि १२
 गुणाकरिये तो अभिवर्द्धित वर्षथाय तोदोय चंद्र संबत् १ अभिवर्द्धित संबत्ना येकसहस्र बाणूंदिन बासठिया ६ भागहोय अने आदित्य संबत्सरना त्रिण
 से कासठियाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूंदिन थाय एतले चंद्रयुग अने सूर्ययुग येके आपाढी पूनिमदिने पूराथाय वीजोयुग आवण बदी प
 डिवाये प्रारंभिये एम आदित्ययुग संबत्सरनी अपेक्षायें चंद्रसंबत्सरत्रिण पांच दिहाडे साठिया छप्पन्न भागें जंणं करिये । आदित्ययुग संबच्छर ३ आवण
 बदी पक्षना चंद्र दिन थकी छहे दिने अधिक पूराय चंद्रयुग संबच्छर ३ आपाढी पूनिमें पूरे तिकोरपक्की सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायने

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

अथावणकृष्णपञ्चमसप्तमदिनादारभ्य दक्षिणायने नादित्य चरन् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्त्तिक्यां द्वाद
 शोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीनां चतुर्णां हेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोदिसप्त
 तितमे दिने माघमासे बहुलपक्षत्रयोदशीलक्षणे सूर्यप्रावृत्तिं करोति दक्षिणायनाविहृत्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसुयुगसम्बत्स
 रेशूत्तरायणतिययः क्रमेणैवं यदुतबहुलसप्तमीए १ सूर्योदयस्ततोचउत्थीए २ बहुलसप्तमपाडिवए ३ बहुलसप्तयतेरसीदिवसे ४ सुदसप्तयदसमीए ५ पवत्तएपं
 चमोउआवट्टी एयाआउट्टीओसव्वाओमाघमासंमिति दक्षिणायनदिनानिचैवं पठमाबहुलपडिवए १ वीयाबहुलसप्ततेरसीदिवसे २ सुदसप्तयदसमीए ३ बहुल
 सप्तयसप्तमीए ४ सुदसप्तचउत्थीए पवत्तएपंचमोउआवट्टी एयाआउट्टीओ सव्वाओसावणेमामेति वौरियपुव्वससति तृतीयपूर्वस्य पाहुडत्ति प्राभूतमधिकारवि
 शेषः । अजित्वादि तस्यहि अष्टादशपूर्वलक्षाणि कुमारत्वं त्रिपञ्चाशच्चैकपूर्वांगाविकाराज्यमित्येकसप्तति रिहच पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न विवक्षित मिति

॥ टीका ॥

एकसत्तरिंपाऊना प० अजितेणं अरहा एकसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अंगारमज्जे वसित्ता मुंढेनवित्ता जा

॥ मूल ॥

सूर्ये चालतोयको चउथा चंद्र युगना चउथा मासमांहि अंतर्भूतके एकमो अठारमा दिन कार्त्तिकीये येकसो बारमां पोतानां मंडलमांहि सूर्यचार करे
 तिबारपके सोआला संबंधी मागशिरादिक मासमांहि एकत्तर मांडला सूर्ये चरे पडे वृहत्तरिमे दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमांहिला सर्वदाह्यमां
 उला यको सूर्य प्रावृत्तिकरे प्रदक्षिणावर्तकरे उत्तरायणे सूर्य क्रिरे ॥ वीर्य प्रवाद बीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभूतका अधिकार विशेष कथा । अजितनाथ

॥ भाषा ॥

५ सगरोद्वितीयचक्रवर्ती अजितस्वामिकालीनः ॥ ७१ ॥ अथद्विसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते सुवर्णकुमाराणां द्विसप्ततिर्लक्षाणि भवनानि कथं दक्षिणनिकाये अष्टत्रिंशदुत्तरनिकाये तु चतुस्त्रिंशदिति नागमाहस्त्रीश्रोति नागकुमारदेवसहस्राणि वेलां षोडशसहस्रप्रमाणामुत्सेधतो विष्कम्भतश्च दशसहस्रमानां लवणजखधिशिखावाद्यां धातकी खण्डोपादिमुडो महावीरो द्विसप्ततिवर्षाण्यायुः पालयित्वा सिद्धः कथं विग्रहस्तथाभावे द्वादशसार्धानि पञ्च

व पञ्चइए एवं सगरेवि रायाचाउरंतचक्रवर्ती एकसत्तरिं पुष्टजावपञ्चइए ॥ ७१ ॥ बावत्तरिं
सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा प० लवणस्स समुद्रस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीन बाहिरियं वेलां धारंति समणेन

अरिहंत अठार पूर्व लाख लगे कुमारपणे अने एक पूर्वांगाविक ५२ लाख पूर्व लगे राज्यपालीने एवं ७१ लाख पूर्व लगे गृहवासमां वसौने मुंडवया । गृह
स्थाश्रमथकी यतीपणं पांम्यां एम १ पूर्व लाख चारित्रपालीसर्वायु ७२ लाख पूर्व जाणिवा । एमज अजितनथ स्वामी कालीन सगरपणे बीजोमहाराजा चा
तुरंत चक्रवर्ती एकहत्तर लाखपूर्व लगे गृहवासमां द्विसप्ततीने राज्यपालीने मुंडवणी गृहस्थथकी यतीपणो पांम्या ॥ इति ७१ मो संपूर्ण ॥ ७१ ॥
द्विजे ७२ मो लिखे छे । भवनपतीनीं तोजौनिकाय सुवर्ण कुमार देवता तेहना द्वाविंश ने ३८ लाख भवनावास उत्तरेइ ने ३४ लाख भवनावास अंहुंमि
ली ७२ लाख भवनावास कछा । ७२ हजार देवता लवण समुद्रनी बाहिरली धातकी खंड तरफनी पांशीनीवेला प्रते धरेछे । एतले १६ हजार योजन
ऊपरि २ कोयनी वेलावटे तिवारे चाटूये करो पाणो उपराठी मारेछे । अमण भगवंत महावीर स्वामी ७२ वर्ष लगे सर्वायु पालन कियो । एतले ३० वर्ष गृह
वासे १२ वर्ष मास ६ दिन १५ छप्पस्थभावे देशीन ३० वर्ष केवल पर्याय एवं ७२ वर्ष लगे सर्वायु पालीने सिद्ध थया सर्व दुःखथकी प्रक्षीण थया । स्वविर

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

छद्मस्थभावे देशानानिचिंशकेवलित्वे इति द्विसप्ततिः अयलभायति अचलोमहावीरस्य नवमो गणधरः तस्यायुः द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्गृहस्थत्वे
षादशछद्मस्थतायां चतुर्दशकेवलित्वे इति पुष्कराद्विसप्ततिः चंद्रास्तत्रैकस्यां पंक्तौ षट्त्रिंशदन्यस्यां तावन्त एवेति बावत्तरिकलाश्रीति कलाविज्ञानानीत्यर्थः
तासु कलनोयभेदा द्विसप्ततिर्भवन्ति तत्रलेखनं लेखो अक्षरविन्यासः तद्विषया कला विज्ञानं लेख एवोच्यते एवं सर्वत्र सच लेखो द्विधा लिपिविषयभेदात् तत्र
लिपि रष्टादशस्थानकोक्ता अथवा लाटादिदेशभेदस्तथा पत्रादि विविधवित्तोपाविभेदतोवा अनेकविधेति तथाहि पत्रं वल्ककाष्टदन्तलोहताम्ररजतादयो
अक्षराणामाधारस्तथा लेखनोक्तीर्णनसूतयूतक्षिन्नभिन्नदण्डसंक्रांतितो अक्षराणि भवन्तीति विषयापेक्षयाप्यनेकधा स्वामिभृत्यपितृपुत्रगुरुशिष्यभायापति

॥ टीका ॥

गवंमहावीरे बावत्तरिं वासाइं सद्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थरेणं अयलजाया बावत्तरिं वासाइं
सद्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे अश्रितरपुस्करणेणं बावत्तरिं चंदापजासिंसु ३ बावत्तरिंसूरिया
तविंसुवा ३ एगमेगस्सणं रत्तो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिपुरवरसाहस्सीउ प० बावत्तरिकलानु प० तं०

॥ मूल ॥

महावीरना नवमा गणधर अचलभ्राता ७२ वर्ष लगे सर्वायुपालीने यतीपणं पामी सिद्ध थया सर्वदुःखयको प्रचीण थया । गृहस्थपणे ४६ वर्ष छद्मस्थभा
वे १२ वर्ष केवलि पर्याये १४ वर्ष एवं ७२ वर्षपालीने सिद्ध थया । पुंकरवरदोष १६ लाखनोक्के तमांहि ८ लाख मानुषोत्तर पर्वतमांहिते अब्भितर पुष्क
रार्थ कहिये तिहां ७२ चंद्रमा ७२ मूर्य प्रभासता हुया प्रभासेक्के प्रभासस्ये पहिली पंक्तिये ३६ दूजी ३६ एवं ७२ थया । तपता हुया तपेक्के तपस्ये एकेक
चातुरंत चक्रवर्ती ने ७२ पुरवर मोटा औ नगरना सहस्र कक्षा । पुरषनी ७२ कला कह्यो ते कह्ये । लिखवो अक्षरनी स्थापिवो तेहीजकलाते लेख क

॥ भाषा ॥

यन्त्रमित्रादीनां लेखविषयाचामप्यनेकत्वा तथाविधप्रयोजनभेदाच्च अक्षरदोषा शैते अतिकार्यमतिस्थीत्यं वैषम्यम्यंतिवक्रता अतुल्यानांचसादृश्य मभागोऽव
यवेषुचेति ॥ १ ॥ तथा गणितं संख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेद म्पाटीप्रसिद्धं २ रूपं लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्माणं ३ नाट्यकला भरतमार्ग
श्छलिकलास्यविधान मित्यादिभेदादष्टधा नाट्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा स्वरूपं चात्रभरत
शास्त्रादवसेयं ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्गं श्लिकमार्गं भिन्नमार्गभेदात्त्रिधा तत्र सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्च्छनाएकविंशतिः तानाएकोनपञ्चाशत्समा
संस्वरमण्डजं द्वयञ्च त्रिशाखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वाद्ययन्त्रं वाद्यकला साच तत वितत शुभिर घन वाद्यानां चतुः पञ्चत्रयेक प्रकारतया त्रयोदशधा
४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकमास्त्रेभ्यो ऽवसेयः इहच द्विसप्तति रिति कलासंख्योक्ता बहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का

लेहं १ गणियं २ रूपं ३ नहं ४ गायं ५ वाद्यं ६ सगरयं ७ पुष्करगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११
पोरकञ्चं १२ अष्टावयं १३ दगमहियं १४ अन्तविही १५ पाणविही १६ वल्यविही १७ सयणविही १८

ला १८ भेदे कहीछे । १। गणित अंकनोकला २ । विचाम करिवो ३ नाटकनोकला ४ गानकरिवानोकला ५ बाजित्र वजावानोकला ६ । कंड संबंधी स्वर
ने ओलखिशानोकला ७ । बाजित्रनोगतिनोजाणवो ८ । ताल देवानोकला ९ । ज्वारमबानोकला १० । लोगथी आलाप संलापनी कला ११ नगररक्षा
दिकनो कला १२ । सारपासारमबानो कला १३ । पाणीअनेमाटी एकठौकौधांअमुकयोग होय तेकला १४ । अन्ननीपजाविवा रांधिवानोकला १५ । पाणी
नोपजावानो विधि १६ । बस्त्र नोपजाविवारंगवानो पहिरवानोविधि १७ । सोवानोविधि १८ । आर्या संस्कृतनोबंध तेहनो जाणियो १९ । प्रहेलिका

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

अजं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्यं २५ आजरण
 यिही २६ तरुणी पफिकम्मं २७ इत्योलस्कणं २८ पुरिसलस्कणं २९ हयलस्कणं ३० गयलस्कणं ३१
 गोणलस्कणं ३२ कुक्कुललस्कणं ३३ मिठयलस्कणं ३४ चक्रलस्कणं ३५ वत्तलस्कणं ३६ दंठलस्कणं ३७
 अंसिलस्कणं ३८ मणिलस्कणं ३९ कागणिलस्कणं ४० चम्मलस्कणं चंदलस्कणं सूरचरियं राज्ञचरियं गृह
 चरियं सोजागकरं दोजागकरं विजागयं मंतगयं रहस्सगयं ४१ सजासंचारं ४२ बूहं ४३ खंधावा

॥ मूल ॥

नीकला २० । मगधदेशसंबंधीगाथानीकला २१ । प्राकृतबंध गाथानी जाणपणं २२ । श्लोक रचवानी कला २३ । गंध नया अबीरादिकनीयुक्ति २४ । मधु
 रादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५ । आभरण घडवानी जडवानी पहरवानी कला २६ । तरुणी स्त्रोजातिने प्रति क्रम क्रियाकलापनीसिखाविवो २७ ।
 स्त्रोनालक्षण जाणिवानी कला २८ । पुरुषनां बत्तीस लक्षणजाणिवानी कला २९ । घोडानां लक्षण जाणिवानी कला ३० । हाथीनां लक्षण जाणिवानीक
 ला ३१ । वृषभ लक्षण कला ३२ कुक्कुडाना लक्षण कला ३३ । मीढानां लक्षण । ३४ । चक्रना लक्षण ३५ । कुंठना लक्षण ३६ । दंडवंशलक्ष्मीनालक्षण ३७ ।
 खड्गना लक्षण ३८ । मणिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९ । कार्किणीरत्न विशेषना लक्षण ४० । चर्मनोगुण अवगुण जाणिवो चंद्रनाग्रहणादिकनो जाणिवो सूर्य
 नो चरित्र एहवो जम्बोतो एमघास्से एम जाणिवो राहुनो चरित्रजाणिवो ग्रहनो चरित्र जाणिवो सौभाग्यनोकारण जाणिवो दौर्भाग्यनोकारण जाणिवो
 विद्या प्रवृत्ति रोहिणी तद्वत विचार मंच आराधे हरिश्चमेषीआवे । रहस्सगति प्रवृत्त वस्तुनो जाणिवो सद्भाव वस्तु मात्रना प्रयोग चार कटक मानो च

॥ भाषा ॥

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वस्तुमाणं ६४ खंघनिवेशं ४७ वस्तुनिवेशं ४८ नगरनिवेशं ४९ ईसत्यं
 त्ररूप्यवायं ५० आससिरकं ५१ हत्यसिरकं ५२ धनुष्येयं ५३ हिरण्यपागं ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६
 धातुपागं ५७ बांजजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ मुठिजुद्धं ६० जुद्धं ६१ निजुद्धं ६२ जुद्धाडजुद्धं ६३ सुतखेनं
 ६४ वहखेनं ३५ नालियखेनं ६६ चम्मखेनं ६७ पत्तखेनं ६८ कङ्कगखेनं ६९ सजीवं ७० निजीवं ७१

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तरिवो ४१ । शुद्ध कटक नी रचना ४२ । खंघार कटक उताखिवानो प्रमाण जाणिवो ४३ । नगरवाखिवानोमान ४४ वस्तुनामान गजतोलादिक ४५ । खंघा
 रकटकनो निवासस्थापन ४६ । नगर निवेशनो वासवो ४७ । वस्तुनीस्थापनास्तुनिवेश ४८ । ईषदर्थ थोडानं घणं घणानं थोडं करवूं ४९ । त्ररूप्यद्रुमिटित
 या चुरप्रवाण तद्रत निवारनो जाणिवो ५० । घोडानो गति शिखाडवो ५१ । हाथीनो गति शिखाडवो ५२ । धनुर्वद धनुर्धारी द्वावं ५३ । हिरण्य
 रूपानोपाक पचाववो ५४ । सुवर्णनो पचाविवो ५५ । नगिरत्नादिकनो पाक ५६ । धातुतांदादिकनो पाक ५७ । युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाण
 वो ५८ । नियुद्ध अतिगय युद्ध जाणिवो ५९ । युद्धनेअति क्रम करीने जूझवो ६० । मुठियें जूझवो ६१ । लताबेलडोयेजूझवो ६२ । वाइथो जूझवो तेवा
 ह युद्ध ६३ । सूवनो खेडवोवेझनो मांडो सूवनो छेदिवो ६४ । वर्त वाटलो खेडं मांडोने जूझवो ६५ । नालिकाकमल डांडो तेहनो खंडवो बेभूमांडोने वे
 धवूं ६६ । चर्म खेडू वेडूं मांडोवेधिवो ६७ पचमानडानो छेदिवो ६८ । कडग सुवर्णादिकनाचूडो कंडलादिकनो छेदिवो ६९ । मंयामनुष्यतिर्यचने मंत्रशक्ति क
 रो सजीव करिवो ७० । जीवतानीनसचांपोने निजीव करिवो ७१ । शकुन पक्षीकाका दकना खरभेदनो जाणिवो ७२ । एकताथई । सन्मुखिम खेचर

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

सुवि दंस्तर्भावोऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथ त्रिसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते । हविर्वासेति अत्र सम्वादगाथा ॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि
मेवजोयणसहस्रा जीवासत्तरसकलायन्नदकलाचेवहरिवासेति तथा विजयो द्वितीयोऽवलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिर्वर्षलक्षण्यायु रक्त मावश्यकेतु पंचसप्तति
रितोदमपिमतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित्लिख्यते । तत्रानिभूतिरिति महावीरस्यद्वितीयोगणधरःगणनायकस्तस्येह चतुः

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिस्क्रजोगियाणं उक्कोसेणं वावत्तरिंवाससहस्साइं ठिई प०
॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयानु णं जीवानु तेवत्तरिं २ जोयणसहस्साइं नवयएगुत्तरं जो
यणसए सत्तरसयएगूणवीसइन्नागे जोयणस्स अण्णनागंच आयामेणं प० विजएणंवलदेवे तेवत्तरिं वाससय
सहस्साइं सत्ताउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ धरेणंअग्गिज्जूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

पक्षीनो पचेद्वियतिर्यचनो उक्कृष्टो ७२ हजार वर्षनो स्थिति कही ॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मो लिखेके । हरेवर्ष अने रम्यक
एगुगल चेचसंबंधी जीवा णिणचरूप तेइत्तरी २ हजार योजन जाणवी । नवसे एक योजन ७३८०१ योजन । एक योजनना उगणीसहाइयर सत्तर भाग
एकयोजननो वली उपरि अर्धभाग आयामपरे लांअपणेक हो । विजय वोजो बलदेव ७३ लाख वर्षलगे पूरो आउखंपाक्षीने सिद्धयया सर्वदुःखवकी प्रचीण
बया । आवस्यके ७५ लाख वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धयया ते मतांतर के ॥ इति ७३ मो संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मो लिखेके । सुविर व

सप्ततिवर्षास्त्राय रश्चायंविभागः षट्चत्वारिंशद्वर्षाणि गृहस्थपर्यायः द्वादश कृद्गस्थपर्यायः षोडशकेवलपर्यायइति निसहाग्रोभित्वादि अस्थभावार्यः
 क्लिलनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टौशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयंचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाद्दः सहस्रद्वयविष्कम्भ
 चतुःसहस्रायाम् स्तदेवंपर्वतविष्कम्भादस्य द्वादविष्कम्भाह्ननन्यूनतायां शीतोदामहानद्याः पर्वतस्योपरि चतुःसप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येवं प्र
 वाहो भवति वइरामयाएजिभियाएत्ति वज्रमय्याजिद्विकया प्रणालस्थमकरमुखजिद्विकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुंडेत्ति नि
 षधपर्वतस्याधोवर्त्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवीभवनाध्यासितमस्तकेन तद्दीपेनालंकृतमध्यभागे

साइं सहाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे निसहानुणं वासहरपत्तयानु तिगिच्छिदहानु सीतोयामहानदीनु
 चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवाहत्ता वइरामयाए जिप्पियाए चउजोयणायामाए पन्ना

डा अग्निभूति श्रीमहावीरना वीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धयया सर्वदुःख रहित यया । तेकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष कृद्गस्थपर्याय १६
 केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु । निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊंचो उपरि १६ हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुलो तेहनां मध्यभागेते
 गङ्गी महा द्रह्मेते २ हजार योजन पिहुलो ४ हजार योजन लांवांके । निषध वर्षधर पर्वतयको तेगङ्गीद्रह्यको निकली एहवी सीतोदामहानदी ७४ से
 ११ योजन साधिक एक कला एतले प्रवाहें पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमइंजीभीयें ४०० योजन लांबी ५० योजन पिहुली वहीने जायके । नि
 षध पर्वतने हेंठे वज्रमयी भूमिकाके जेहनी एहवी ४८० योजन पिहुली १० योजन ऊंडो सीतोदा देवीयें अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुंडे मइया मो

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

श्रीतोदापप्रातर्द्वे महयन्ति महाप्रमाणेन यत्पुनः दुहर्घात्तिकचित्दृश्यते तदपपाठइति मन्यते घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्तित स्तेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धो हारस्तस्य यत्संस्थानं तेन संस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वता अपतज्जलसमूह स्तेन महाध्वनिना प्रपतति एवं श्रीतापि नवरं नीलवर्णं वराहद्विणाभिमुखी प्रपततीति चउल्यवज्ज्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशत् द्वितीयायां पंचविंशतिः तृतीयायां पञ्चदश पंचम्यां त्रीणि लक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चानं लक्षं सप्तम्यां पंचेत्येतानि मौलितानि चतुःसप्तति भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पंचसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते । सुविधे नवमतीर्थकरस्य ना

॥ मूल ॥

सजोयणविस्कंजाए वडरतले कुंठे महयाघरुमुहपवत्तिएणं मुक्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्देणं पवणइएवंसीतावि दरिगणमुहीजाणियव्वा चउल्यवज्जासु ठसु पुढवीसु चोवत्तरिं नरयावाससयसहस्सा प०

॥ भाषा ॥

टो प्रमाणे घडाना मुखधकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखयी प्रवर्त्यो निकल्यो एहवो मुक्तावली हारने संठाणें संस्थित एहवे प्रपातें पर्वतधकी पाणी नो समूह मोटे सद्धे पडेहे । एम नीलवंत पर्वत उपरि केसरीद्रव्यकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्तीहुती श्रीता महानदी नीलवंत पर्वत हेंठे श्रीताप्रपात कुंडनेविषे पडेहे । सर्व श्रीतोदा नदीनी परे जाणिवो । चौथी नरक पृथिवी टालीने शेष छ नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकड्या पहिलीये ३० लाख बीजीये २५ लाख बीजीये १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठ्ठीये पांच जंणा १ लाख सातमीये ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कड्या इति ७४ मो संपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिचे ७५ मो लिखेहे । नवमा सुविधिनाथ पुण्यदंत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया । सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगे

मातरतः पुण्ड्रस्त्येति तथाशीतलस्य पंचसप्ततिपूर्वसहस्राणि गृहवासि कथं चविंशतिः कुमारत्वे पंचाशच्चराज्य इति तथाश्रान्तिः पंचसप्ततिवर्षसहस्रा
 षि गृहवासमध्युष्य प्रव्रजितः कथं पंचविंशतिः कुमारत्वे पंचविंशतिः मांढ्रिकत्वे पंचविंशतिः चक्रवर्तित्व इति ॥ ७५ ॥ अथषट्सप्ततिस्तान्के
 लिख्यते किंवित् । तत्र विद्युत्कुमाराणां भवनावसलक्ष्याणि दक्षिणस्यां चत्वारिंशदुत्तरस्यांतु षट्त्रिंशदिति षट्सप्ततिरिति एवमिति इदमेवभवनमानं शेषा

॥ टीका ॥

॥ ७४ ॥ सुविहिस्सणं पुष्कदंतस्स अरुहन् पन्नत्तरि जिगसया होत्या सीतलेणं अरहा पन्न
 त्तरि पुहसयसहस्साइं अगारवासमज्जेवसित्ता मुंठे जावपवुइए संतीणंअरहापन्नत्तरिवाससहस्साइं अगा
 रवासमज्जे वसित्ता मुंठेनविह्ता अगारानं अगगारियं पवुइए ॥ ७५ ॥ ठावत्तरिंविज्जुकुमा
 रावाससयसहस्सा प० एवं दीवदिसाउदहीणं विज्जुहुनारिदयणियमग्गीणं ठरहंपिजुगलयाणं ठावत्तरिस

॥ मूल ॥

गृहवात मांढ्रिकोनेमंडयया यतोपणंपाम्या । २५ हजार पूर्व कुमारपणे ५० हजार पूर्व राज्याश्रमे एम ७५ हजार पूर्वयया २५ हजार पूर्व दीक्षा सर्वायु
 १ लाख पूर्व जाणिवो । श्रान्तिनाथ अरिहंत ७५ हजार वर्षलग्गे गृहाश्रम मांढ्रिकोने मंडयया गृहस्थयको यतोपणूं पाम्या । २५ हजार वर्ष कुमारपणे
 २५ हजार वर्ष मंडलोक राज्यपणे २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पणेंवसीने प्रव्रज्या पाम्या । २५ हजार वर्ष दीक्षा सर्वायु १ लाख वर्ष । इति ७५ मो संपूर्ण
 ॥ ७५ ॥ हिंवे ८६ मो लिखेहे । विद्युत्कुमार भवन पतिना दक्षिणदिगे ४० लाख भवन उत्तरदिसे ३६ लाख भवन एवं ७६ लाख भवन कक्षा
 एमज हीप कुसार १ दिक्कुमार २ उदधि कुमार ३ विद्युत्कुमार ४ रुन्ति कुमार ५ अग्नि कुमार ६ एकेकना बेबे इंद्र करतां १२ थया । एहना क्वहंतर

॥ भाषा ॥

षां ह्योपकुमारादि भवनपतिनिकायानां निश्चयं गद्या दीवित्यादि युगलानामिति दक्षिणोत्तरनिकायभेदेन युगलं निकायेभवतीति ॥ ७६ ॥

अथसप्तसप्ततिस्थानके निव्रियते किंवित्तत्र भरतचक्रवर्त्ती ऋषभस्वामिनः षट्सु पूर्वलक्षेस्वतीतेषुजात स्वाशीतितमेचतवातीतेभगवतिचप्रव्रजिते राजासंहतः ततश्चन्द्रग्रीव्याः षट्सु निर्वर्त्तिषु सप्तसप्ततिस्तस्यकुमारवासोभवतीति अंगवंशींगराजसन्तानस्य संबन्धिनः सप्तसप्ततिराजानः प्रव्रजिताः गद्दतोयेत्यादि ब्रह्मलोकस्थाधोवर्त्तिनोषट्सासु कृष्णराजिष्वष्टौ सारस्वतादयो लोकांतिकानिधाना देवनिकाया भवन्ति तत्र गर्दतोयानांतुप्रितन्नांच देवानां मुभयपरिवार

यसहस्साइं १ ॥ ७६ ॥ नरहेरायाचाउरंतचक्रवर्ती सप्तहत्तरि पुत्रसयसहस्साइं कुमारवासम
ज्जेयसिन्ना महारायान्निसेयंसंपत्ते अंगवंसानुगं सप्तहत्तरि रायाणामुंठे जावपवइया गद्दतोयतुसियाणं

१ लाख भवन कद्या दक्षिण उत्तर नामिलीने । इति ७६ मो संपूर्ण ॥ ७६ ॥ द्वि ७७ मो लिखेके । श्री आदिनाथने ६ लाख पूर्व गये थके भरत चक्रवर्ती जन्म पास्या । ८३ लाख पूर्वमांहीथी ६ लाख पूर्व काटिथके ७७ लाख पूर्व उगस्यातोभरत चातुरंत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्व कुमार दासमहि वसीने महाराज्याभिषेक चक्रवर्त्तपद्मोनीअभिषेक पास्या । एतले ७७ लाख पूर्व कुमारपण ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पण १ लाख पूर्व दीक्षापण सर्दायु च । रासी लाख पूर्व जाणिवी । अंगराजाना संतान संबन्धी अंगवंशना ७७ राजा मुंड थडंने गृहस्थकी अणगार पण पास्या । पांचमो द्रष्टृलोक तेहने विषे अधोवर्ती ८ कृष्णराजी विमान ने विषे सारस्वतादिक ८ लोकांतिक देवताके तेमांहि गर्दतोय १ तुसित २ एविहं देवतानो ७७ हजार देवतानो परिवार कद्या । एके के मुहूर्ते ७७ खवकाल विशेष लवाय परिमाणे कद्या । इति ७७ मो संपूर्ण ॥ ७७ ॥ द्वि ७८ मो लिखेके । शक्रेंद्र देवेंद्र देवरा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

संख्यामौलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैकैकोमुहूर्तः सप्तसप्ततिर्लवान् लवाग्रेणलवपरिमाणेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते इदं स्तुतं नवगम
 स्तुतं निरवकिं ह्यजंतुषो एगेजसासनोसासे एसपाणुत्तिबुद्धे १ सत्तपाणुणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणंसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहियत्ति ॥

७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानके लिख्यते । सक्कस्सेत्यादि वेसमणे महारायत्ति सोमयमवरुण वैश्रमणाभिधानानां लोकपालानां चतुर्थउत्तर दिक्पाल
 संहिवैश्रमणदेवनिकायिकानां सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीनां व्यंतरव्यंतरौणां चाधिपत्यं करोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ
 करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासशंतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणां दक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनलक्षाणि द्वीपकुमाराणां च चत्वारिंश
 दित्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नट्युत्त इहूक्त मितिमतांतरमिदं आह्वेवच्चंति आधिपत्यमधिपतिकर्म पोरेवच्चंति पुरोवत्तित्व

देवाणं सत्तहत्तरिं देवसहस्स परिवारा प० एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवेलवगणेणं प० ॥ ७७ ॥

सक्कस्सणं देविंदस्स देवरत्तो वेसमणे महाराया अठहत्तरीए सुवन्तकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साणं
 आह्वेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं नटित्तं महारायत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ थरेणं अकं

जानो वैश्रमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानो धणी । दक्षिणदिशे सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवेइंद्रना ७८ लाख भव
 नके तेहनो आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भर्तृपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहेकरावतो थको आत्मानोपरे पाल
 तोथको रइके । स्वविर श्री महावीर नो ८ मो अकंपित गणधर अठहोत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धयया सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणे ४८ वर्ष कइ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

मयगामित्व प्रित्यर्थः भट्टितंति भट्टित्वं पोषकत्वं सामित्तांत स्वात्मत्व स्वाननापत्त नरा रात्र तात नरा रात्र तात नरा रात्र तात
 आज्ञाप्रधानसेनानायकत्वं कारेमाणेति अनुनायकैः सेवकानां कारयन् पालिमाणेति आत्मनापि शालयन् विहरइति आस्ते अकंपितः स्वविरोमहावीरस्या
 ष्मोगणधर स्तस्य चाष्टसप्ततिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् कृद्गस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियद्वेणंति
 उत्तरायणादुत्तरदिग्गमना विवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरिेति आदित्यः पठमाओमंडलाओति दक्षिणदिशंगच्छती रणे र्यत्प्रथम
 न्तस्मा ननु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तालीसइमेति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यन्तरमण्डलापेक्षयातु चत्वारिंशे
 अउत्तरिति अष्टसप्तति एगसठ्ठि भाएति मुहूर्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्यति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः निवुद्वेत्तति निर्वद्धाहापयित्वेत्य
 र्थः तथारयणिखेत्तस्यति रजन्याएव अभिनिवुद्वेत्तति अभिनिवद्धाच वद्धेत्यर्थः चारंचरइति भ्राम्यतीत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञप्तिवाक्यैरुपदर्श्यते

पिए अष्टहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जात्रप्पहीणे उत्तरायणनियद्वेणं सूरिएपठमानं मंळलानं एगू

॥ मूल ॥

स्वपणे ८ वर्ष केवलीपणे २१ वर्ष सर्वमिली ७८ थया । उत्तरदिग् गमन यक्ती निवर्त्यो प्रारंभ्यो कै दक्षिणायन पणो जेणे एहयो सूर्य पहिला मांडला थकी
 एकोन चालीसमें मांडले एक मुहूर्तना अठहोत्तरि एकसठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्द्धीने घटाडीने रजनो लक्षण क्षेत्रने
 रात्रिने अभिवर्द्धावौधारीने चार चरेके एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मंडले १८ मुहूर्त दिवसहोय तिवारे पळे दक्षिणायने सूर्यथयो तिवारे एक मुहूर्त

॥ भाषा ।

जंबूद्वीपेयदेतीसूरीसर्वाभ्यन्तरमण्डलमुपसंक्रम्य चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्चत्वारिंशदधिकानि योजनशतान्यन्योन्यमन्तरं कृत्वा चरत
 एतच्च जंबूद्वीपेयौ युत्तरं योजनशतं प्रविश्याभ्यन्तरं मण्डलमभवति एतस्मिंश्च द्विगुणे जंबूद्वीपप्रमाणादपकर्षिते यथोक्तमन्तरमभवतीति तथा तत्रतयो चरतो कृत्वा
 ष्टो ष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्यकाच द्वादशमुहूर्त्तरात्रिर्भवति ततोभ्यन्तरमण्डलान्निष्क्रम्य प्रथमेऽहोरात्रे भ्यन्तरानन्तरं मण्डलमुपसंक्रम्य यदा
 चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्पंचचत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि पंचत्रिंशच्च एकषष्ठिभागयोजनस्यान्तरं कृत्वा चारंचरत स्तदा च।
 ष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागाभ्यामन्यूनः द्वादशमुहूर्त्ताचरात्रिर्भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तैकषष्ठिभागभ्यामधिकेत्येवं दक्षिणायनस्य
 ितोयादिषु मण्डलेऽहोरात्रेषु चान्योन्यान्तरं प्रमाणस्य पंचभिः पंचमिर्योजनैः पंचत्रिंशताचैकषष्ठिभागै र्योजनस्य द्वाविंशत्या द्वाभ्यांच मुहूर्त्तैकषष्ठिभागा
 भ्यां दिनहानौ रात्रिर्दृश्येति एवंच एकोनचत्वारिंशत्तमे मंडले सूर्ययोरन्तरं नवनवतिसहस्राण्यष्टशतानि सप्तपंचाशच्च योजनानां त्रयोविंशतिश्चैक ष
 ष्ठीभागा दिनप्रमाणं चाष्टादशानां मुहूर्त्तानां मध्या देकषष्ठिभागानां मष्टसप्तत्यां पातितायां षोडशमुहूर्त्ताश्चतुश्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागामुहूर्त्तस्य रात्रे

णचत्वालीसद्विमे मंडले अष्टहत्तरिं एगसठिज्ञाः दिवसखेत्तस्स निबुहेत्ता रयणिखेत्तस्स अग्निनिबुहेत्ता णं चा

नाएकसठ भाग करी एहवा वैवेभान प्रतिदिन दिनघटाडिये रात्रिवधारिये एकमासे २ घडी दिवसघटाडीये तो ३६ मे मंडले एक योजनना एकस
 ठीया ७८ भाग दिवस घट्यो रात्रौवधौ। एमज सर्ववाद्य मंडलथको दक्षिणायनथको सूर्यनिवर्त्यो षाकोचात्यो उत्तराभिमुखथयो तिवारे ३६ मे मंडले सूर्य
 गयो एक मुहूर्त्तना एकसठिया ७८ भाग कथा । दिवस वधारिये रात्रिघटाडिये दक्षिणायननौपरिभागघटाडीये वधारिये । इति ७८ संपूर्ण

अष्टसप्तत्यां विप्तायां चयोदशमुहूर्ता सप्तदशैकत्रिंशतिभागाश्चेति एवंदक्षिणायननियतेति यथोक्तरायणनिवृत्तएकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले अष्टसप्तति मेकत्रिंशतिभागान् हापयति वर्धयतिच एवंदक्षिणायननिवृत्तावपि सूर्यस्तान्हापयति वर्धयतिच केवलं दक्षिणायने दिनभागान् हापयति रात्रिभागां च वर्धयति इह तु दिनभागान् वर्धयति रात्रिभागांश्च हापयति ॥ ७८ ॥ अथैकोनाशौतितमे स्थानके किंचिद्विद्यते । तत्र बलयामुहस्सति बड वामुष्ठातिधानस्व पूर्वदिग्भवस्थितस्व पायालस्सति महापातालकलयस्याधस्तनचरमांता द्रवप्रभापृथ्वीचरमान्त् एकोनाशौत्यासहस्रेषु भवति कथंरत्नप्रभा हि अशौतिउहस्त्राधिकं योजनानां लक्षम्बाहृतो भवति तस्याश्चैकं समुद्रावगाह सहस्रं परिहृत्या धोलचप्रमाणावगाहो बलयामुखपातालकलयो भवति ततः सप्तचरमांतात् पृथिवी चरमांतो यथोक्तांतरमेव भवति एवमन्येपित्रयो वाचा इति छद्मीत्यादि अस्यभावार्थः षष्ठपृथिवीहि वाहृतो योजनानां लक्षं

॥ टीका ॥

रंचरई एवं दक्षिणायण नियतेति ॥

७८

॥ बलयामुहस्सणं पायालस्स हिठिल्लानं चरमंतानं

॥ मूल ॥

॥ ७८ ॥ हिचे ७२ मो लिखेके । पूर्व समुद्र मांहि पाताल कलय बडवामुखनो हेठिलो चरिमांत भाग तेहथकी एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी मो हेठिलो चरिमांत एह ७८ हजार योजन आवाधायें विचाले आंतरो कक्षो । रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख ८० हजार योजन जाडपणेके तेमांहीथी एक सहस्र योजन समुद्र जंजोते काठीने । लाख योजन पाताल कलयो के तेकाढो तेहनो हेठलो विभाग लोजे तो पृष्ठे ७२ हजार योजन उगरा जणिया । एमळ दक्षिण समुद्रे केतु पाताल कलय १ पछिमे यूप २ उत्तरे ईसर कलय ४ एह सगलानो हेठलोभाग अने रत्नप्रभानो हेठिलोचरमांत एह विचाले ७२

॥ भाषा ॥

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधयः सु यद्यपि सप्तापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्युः स्तथाप्येतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठ्या मसावेकविंशतिः संभाष्यते तदेवं ष
 षट्पृथिवीबाह्व्याहर्मष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाणं चैकविंशति रित्येव मेकोनाशीति भवति ग्रंथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रबाह्व्यत्वा
 त्पञ्चमीमात्रित्येदं सूत्रमवसेयं यतः स्तद्बाह्व्यमष्टादशोत्तरं लक्षमुक्तं यतश्चाह पटमाशीद्वसहस्रा १ वत्तीसा २ अठ्ठवीस ३ वीसाय ३ अठ्ठार ५ सोल ६ अ
 द्दश ७ सहस्रलक्षोवरिकुञ्जति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राविकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकत्वाद्बहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या श्रुत्वा
 रिद्वाराणि विजयवैजयंतजयंतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविक्षम्भानि गव्यूतपृथुलद्वारशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचद्वा

इमीसे रयणप्यजाए पुढवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवं केउ
 स्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि ठठीए पुढवीए वज्जमज्जंदेसजायानु ठठस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं
 एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० जंबूद्वीवस्सणं द्वीवस्स वारस्सय वारस्सय एसणं एगूणा

हजार योजन अंतरो जंणिबो । कठ्ठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागयक्को एतले कठ्ठीनो जाडपणो १ लाख १६ हजार योजनके तेहनो मध्यभाग ५८
 हजार योजन कठ्ठी पृथिवीनो घनोदधि यद्यपि २० हजारनो के तोही पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७५ हजार योजन आवाधाये विचा
 से आंतरो कठ्ठी । एतले कठ्ठीनो मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिली जे एह ग्रंथने मते एतले तेहनो हेठिल्लो चरमांत ७५ हजार
 योजन यथो । एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण कह्यो । तेएहने मते कठ्ठीयेज कहिवो अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्यं मित्यर्थः एसणंति एतदेकीनाशीतियोजनसहस्राणि सातिरेकाणी त्वेवंलक्षण मवाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मित्यर्थान्तर अज्ञसं कथं ज
ज्वूदीपपरिधिः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनंभि १२८ अंगुलानि १३ सार्धानीत्येवं लक्षणस्यापंकर्तितद्वारशाखाविक्रमस्य चतुर्विभक्तस्यै वफलत्वादिति ॥

७८ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिद्विख्यते । अथासएकादशोजिन त्रिष्टुष्टः अथासजिनकालभावीप्रथमवासुदेवः अचलः प्रथमबलदेवोपि तथा त्रिष्टुष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अवाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणू
इं उहंउच्चत्तेणं होत्या तिविठेणं वासुदेवे असीइंधणूइं उहंउच्चत्तेणं होत्या अयलेणं बलदेवे असीइंधणूइं उहं
उच्चत्तेणं होत्या तिविठेणं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्या आउवज्जले कंठे असीइजोय

योजन कहिवो । जंजूशोप नो जगतोना ४ द्वारके पूर्वादिके विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एकेक दरवाजा चार २ योजन पिहुलोके । चार
दरवाजानो परस्पर अंतर कांडक अविक ७८ हजार योजननोके । जंजूदीपनोपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाज १२८ धनुष १३ अंगुल एतला मांहीयी
४ दरवाजानो पिहुलपणो काढीये पूठे उगरया योजन चिहुं भागदीजेतो दरवाजानो आंतरो पामिये । इति ७८ मो संपूर्ण ॥ ७८ ॥ हिवे
८० मो लिखेहे । अथास इग्यारमा अरिहंत ८० धनुष जंचा जंचपणे हुया । अथास जिननेवारे त्रिष्टुष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष जंचो जंच पणे थयो ।
पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष जंचो जंच पणे थयो । त्रिष्टुष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगे महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव
साये सर्वायु ८४ लाखवर्ष जाणिवो । रत्नप्रभा पहिलो पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेके तेहनां ३ कांडके । प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ १३७ ॥

सुदेवस्य चतुरशीतिवर्षस्य चाबिसर्वायुरिति चत्वारिंशत्तुल्यकुमारत्वे शेषंतुमहारान्येति आउबहुइत्यादि किलरत्नप्रभाया अशीत्युत्तरयोजनलक्षबाह्ययाया स्कोषिकांशानि भवन्ति तत्र प्रथमं रत्नकांडं पीडय विधरत्नमयं पीडय सहस्रबाह्यं द्वितीयं पंककांडं चतुरशीतिसहस्रमानं तृतीयं मब्बहुलकांडं मशीतिर्यो जनसहस्राश्चैति जंबूद्वीपेणमित्यादि आगाहित्ति प्रविश्य उत्तरकठोवगयति उत्तरां काष्ठांदिशं मुपगत उत्तरकाष्ठोपगतः प्रथममुदयं करोति सर्वाभ्यन्तरमंडले उदेतीत्यर्थः ॥ ८० ॥ अथैकाशीतिस्थानके किंविदुच्यते । नवनवमिका इति नवनवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवमिका भवति नव सु नवकेषु नवनवमदिनानि तस्यांच भिक्षुप्रतिमाया मेकाशीति रात्रिदिनानि भवत्येवं नवानां नवकानां मेकाशीतिरूपत्वा तथा प्रथमेनवके प्रतिदिनमेकै

णसहस्रसाइं याहत्वेणं प० ईसाणस्सदेविंदस्स देवरत्नो असीइसामाणियसाहस्सोत्तं प० जंबूद्वीपेणं द्वीपे असी उत्तरं जोयणसयं उगाहेत्ता सूरिए उत्तरकठोवगए पढमं उदयं करेई ॥ ८० ॥ नवनवमियाणं

जाडपणे । सोत्तेभेदे रत्नमय १ बीजो पंक कांड ८४ हजार योजन । बीजो अप बहुलकांड ८० हजार योजन जाडपणेकच्छो । ईशानेइ बीजो इन्द्र देवतानो राजा तेइमा ८० हजार सामानिकदेवता आपणिसारिखा कथा । जंदिनी जयतीने मांहीडे पासे एकसो असी योजनलगे अवगाहीने प्रवेशकरीने सूर्य उत्तरदिशि भसी अभिसुख थयोथको सर्वाभ्यन्तर मांडले आगडा पूनिम दिने निषध पवतने माथे प्रथम उदय करे । इति ८० ठाणूं संपूर्ण ॥ ८० ॥ द्वि ८१ मोठाणूं लिखेहे । पहिला नवदिनलगे एकेको भिक्षा बीजा २ दिन लगे २ भिक्षा एमनवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारीये नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा एकासो दिने पूरीयाव । नवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारतां ८१ दिने मिली चार से पांच अधिक भिक्षाये दातेकरी यथासूच क

॥ काटा ॥

॥ मूष ॥

॥ भाषा ।

वाभिचा एवमेकोत्तरया वृद्धा नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिन्नाश्रयतानि भवन्तीत्यतस्तं चउहियेत्यादि इहच भिन्नाश्रयन
इतिरभिप्रेता अहासुसंति यथासूत्रं सूत्राख्यतिक्रमेण जावत्तिकरणा दद्याकल्पं यथामार्गयथातत्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तौलिता के तिेता
पात्रया राधिते तिदृष्ट्यं विवाहपन्नतीति व्याख्याप्रज्ञया मेकाशीति म्हायुग्मशतानि प्रज्ञतानि इहच शतशब्देना ध्ययना न्युच्यन्ते तानि कृतयुग्मा
इतिचचराशिविशेषविचाररूपाणि अवांतराध्ययनस्वभावानि तदवगमावगम्यानीति ॥ ८१ ॥ अथद्व्यशीतिस्थानके किमपिलिख्यते । तत्र ज
म्बूद्वीपे द्व्यशीतिद्व्यशीत्वधिकंमण्डलशतम् सूर्यस्य मार्गशतं तद्वत्तीति वाक्यशेषः किम्भूतं यत् सूर्योऽङ्गिकृत्वो द्वीवारौ संक्रम्य प्रविश्य चारंचरति तदयानि

निरकुपदिमा एकासीइराइंदिएहिं चउहियपंचुत्तेरेहिं निरकासएहिं अहासुत्तं जाव अराहियाकुंधुस्सणं
अरहणं एकासीतिं मणपज्जवनानिसया होत्या विवाहपन्नतीए एकासीतिंमहाजुम्मसया प० ॥ ८१ ॥
जंबू द्वीवेद्वीवे वासीयं मण्डलसयं जंसूरिए दुरकुत्तो संक्रमित्ताणं चारंचरई तं० निरक्रममाणेय पविसमाणेय

इहे सूत्रोक्त विविमार्गे आराधी होय । कुंधुनाथ सतरमा अहिंत्तने ८१ शत मनपर्यवशानी थया । व्यवहार पन्नतीने विषे ८१ शत महायुग्म कद्या । इहां
शत शब्दे अध्ययन कद्याके युग्मशब्दे गणितराशि विशेष एतले ८१ ठाणूं संपूर्ण ॥ ८१ ॥ द्वि ८२ ठाणो लिखेके । जंबूद्वीप ने विषे १८२ मां
डला सूर्यनाके यद्यपि जंबूद्वीप मांहौ ६५ मांडलाके परं बाह्य मांडले पणि जंबूद्वीप संबंधी सूर्यनो चार के तेमाटे जंबूद्वीप बाहिरला ११८ मांडला पणि
जंबूद्वीपका कद्या । जे १८२ मांडला सूर्य ने वेला संक्रमी प्रवेश करी चारचरे अमे एतले १४८ मांडलाके तेमांहि निषध ऊपरलो सर्वाभ्यंतर मांडलो अने

आमं जंबूद्वीपात् प्रविश्य जंबूद्वीप एवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलगतं भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेव संक्रामति शेषाणि तु द्वौवाराविति इह च द्वाशीतिविवक्षयै वेदं द्वाशीतिस्थानके ऽधीत मिति भावनीयं यद्यपि जंबूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मंडलानां भवति तथापि जंबूद्वीपादिकसूर्य चारविंशत्युक्तं जंबूद्वीपेन विशेषितानीति समणे इत्यादि आषाढस्य शुक्लपक्षषष्ठ्या आरभ्य द्वाशीत्यां रात्रिदिवेष्वतिक्रान्तेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने अश्वयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया देवानंदात्राह्मणो कुक्षित इत्यर्थः गर्भं त्रिशलानिधानचक्रियाकुक्षिं संहृतो नीतो देवेन्द्रवचनकारिणा हरिणगमेयनिधानदेवेनेति इदं च सूत्रे द्वाशीतिरात्रिदिवान्यविकृत्य द्वाशीतिस्थानके ऽधीयते त्र्यशीतितमं रात्रिदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति महा

॥ टीका ॥

समणेन गवं महावीरे वासी एराइं दि एहिं वीइक्कं तेहिं गप्पानु गप्पं साहरि ए महाहिमवंतस्सणं वासहरपड्यस्स उवरिल्लानु चरमंतानु सोगंधियस्स कंठस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं वासीइं जोयणसयाइं अवाहा ए अंतरेप०

॥ मूल ॥

समुद्रमांहीलो केहिलो सर्वाभ्यन्तर मांडलो सूर्य एकवेला चरिसे एक कर्क संक्रान्तियें शेष थाकता १८२ मांडला बेबेलाफिरस्ये सर्वाभ्यन्तर मांडलाथकी जंबूद्वीपे निकलतो एकवेलां जंबूद्वीप मांही पैसतो एम बेबेला १८२ मांडला सूर्यचरे भ्रमे गगने फिरे। अमण भगवंत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी थकी मांडो ८२ रात्रिदिवस व्यतिक्रमे थके ८२ मीरात्री वर्तते थके आशोजवदो १३ नीरात्रीयें देवानंदानी कूखथकी गर्भ त्रिशला देवीनी कूखविषे हरिणगमे षी देवतायें साहस्यो पहुंचाव्यो ॥ महाहिमवंत बीजो वर्षधर पर्वत २०० दोजन जंघो के ते सलदियंजनी उपरलो चरमांत केहिल्यो प्रदेश तेह थकी मांडो रत्नप्रभाना सौगंधिक कांडनी हेठिलो चरमांत एह ८२ यत दोजन आवाधायें बिचाले आंतरीकह्यो। कांड दूजो अपबहुल ३ तेमांही पहिलो कांड

॥ भाषा ॥

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उवरिक्षाश्रान्ति उपरिमा चरमांतात् सौगन्धिककांडस्या धस्तनचरमान्तो दृश्यतीतिर्योजनशतानि
 वाचं रत्नप्रभापृथिव्यां हि चोणि कांडानि खरकांडं पंककांडमब्जुलकांडं चेति तत्र प्रथमं काण्डं षोडशविधं तद्यथा रत्नकांडं १ वज्रकांडं २ एवंवैडूर्य ३ लो
 हिताक्ष ४ मसारगज ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ रिष्टकांडश्च
 ति १६ एतानि च प्रत्येकं सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगन्धिककांडस्या दृष्टत्वा दृशीति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येवं व्यशीतिशतानीति
 एवं रक्षिणो पि पञ्चमवर्षधरस्य वाचं महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ व्यशीतितमस्थानके किमपि लिख्यते । इह शीतलजिन
 स्य व्यशीतिर्गणा स्वयशीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकत्वेकाशीतिरिति मतांतरमिदमिति तथा स्यविरोमंडितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य चतुर्व्यशीतिवर्षा

॥ टीका ॥

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेज्जगवंमहावारे वासीइ राइंदिएहिं वीडक्कंतेहिं तेयासीए
 राइंदिए वहमाणे गप्पाउ गप्पं साहरिए सीयलस्सणं श्ररहनु तेसीइगणा तेसीइगणहरा होस्या थरेणं मंढि

॥ मूल ॥

१६ भदे रत्नकांड १ वज्रकांड २ एम वैडूर्य कांड ३ लोहिताक्ष ४ मसारगज ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११
 रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ मसारगज १६ एह १६ कांड प्रत्येकं १ सहस्र योजन प्रमाणे तोसौगन्धिक कांड आठमो तो आठ कांड मि
 लीते ८० शत योजनयथा अने बेसे योजन महाहिमवंत जंचोके सर्वएकठा करतां ८२ शत योजनयथा । इति ८२ मो ठाणोययो ॥ ८२ ॥ हिंवे
 ८१ मो लिखेहे । अमच भगवंत महावीर ८२ राचीदिवस गयेथके ८३ मो अहोरात्रि वर्त्ततां अकां देवानंदाना गर्भ अकी चिंशलाने गर्भे साहस्या हरिणे

॥ भाषा ॥

वि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश कृद्गृहस्थपर्याये षोडश केवलित्वइत्येवं त्यशीतिरिति तथा कोशलएत्ति कोशलदेशेभवः कौशलिकः तेसीइति
विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्ठिराज्ये इत्येवं त्यशीतिः तथा भरतश्चक्रवर्ती सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्यशीतिमगारवासम
भ्युज्जिनोजातः राज्यावस्थस्यैव रागादित्रयात्केवली संपूर्णसहायविशुद्धज्ञानादित्रययोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्त्वर्षभावदर्शी सामान्यबोधात्ततः पूर्वलक्षं

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

यपुत्रे तेसीइंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसन्नेणं अरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहस्सा
इं अगारमज्जे वसित्ता मुंठेनवित्ता णं जावपव्वइए जरहेणं राया चाउरंतचक्कवही तेसीइपुव्वसयसहस्साइं
अगारमज्जे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नु सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

॥ भाषा ॥

गमिसीये पङ्कचाद्या । शीतलनाथ दशमा अरिहंत ने ८३ गणधर आवग्गके ८२ कक्षा ये मतांतरके । स्थविर मंडित पुत्र कृष्टो महावीरनो गणधर ८३ वर्षल
गे सर्वायुपालीने सिद्धययो सर्वदुःख रहित थया ५३ वर्षे गृहस्थपणे १४ वर्षे कृद्गृहस्थपणे १६ केवलीपर्याये सर्वमिली ८३ वर्षे थया । ऋषभ आदिनाथ अरि
हंत कोसल देशना उपना ८३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांही वसीने द्रव्यभावभेदे मुंडययीने अगार गृहस्थयकी अणगारी यतीपणूं पाय्या । २० लाख
पूर्व कुमारपणे ३६ लाख पूर्व राज्याश्रमं एवं ८३ लाख पूर्व वर्ष । भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अंतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख
पूर्व कुमारपणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे एवं ८३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपणे जिनथया । राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञान
जेहनेहेते केवली विशेष जाणे ते सर्वसामान्य बोधयकी सर्वभावदर्शी थया । इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ मो समवायलिखेके ।

प्रव्रज्याय हषपूर्वकं केवलित्वेन विद्वत् सिद्ध इति ॥ ८३ ॥

चतुरशीतिस्थानके किमपि लिख्यते। चतुरशीति नरकलक्षणासुमा विभागेन तौसा यपक्षवीसा २ पक्षरस ३ दसेव ४ तिविय ५ हवति पंचूणसयसहस्रं पंचेव ७ अनुत्तरानिरयति ॥ १ ॥ श्रेयांस एकादशस्तौर्धकरः एकविंशतिवर्षलक्षणाणि कुमारत्वे तावन्त्येव प्रव्रज्यायां द्वित्वारिंशद्राज्ये इत्येवं चतुरशीतिनायुः पालयित्वा सिद्धः तथा तिविडुत्ति प्रथमवासुदेवः श्रेयांसजिनकालभावीति अप्रतिष्ठा

सयसहस्सा प० उसन्नेणं श्ररहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं नरहो वाऊअली वंजी सुंदरी सिज्जंसेणं श्ररहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइठ्ठाणे नरए नेरइ

साते नरक मिली ८४ लाख नरकावासा कइया। पहिलीये ३० बीजीये २५ बीजीये १५ चौथीये १० पांचमीये ३ छठीये ५ जंणा १ लाख सातमीये ५ एवं ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देयना ऊपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो आऊखोपालीने सर्वदुःख प्रचीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थंकर पणे एवं ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरतचक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमंगला जातक बाहुबली नंदाजातक आदीश्वर नो पुत्र ब्राह्मी सुमंगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपाली सिद्ध थया। श्रेयांस ११ मा अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणे ४२ लाख वर्ष राज्यपणे २१ लाख वर्ष दीक्षा एवं ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयुपाली सिद्ध थया। सर्वदुःखी प्रचीण थया

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

भी नरकः सप्तमष्टविधां पद्मानां मध्यम इति तथा समाणियन्ति समानर्द्धवः तथा बाहिरयन्ति जंबूद्वीपकमेकव्यतिरिक्ता सत्वारो मन्दरा सत्तुरशीतिः सह
स्त्राणि प्रपन्ताः अंजनपर्वयन्ति जंबूद्वीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारो जनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि
प्रासेत्यादि चत्वारि भागजोयणयन्ति एकोनविंशतिभागा इहार्थेगाथार्धं धनुषिष्ठकलचउक्तं तुलसीइसहस्रसोलसहियन्ति तथा पंकबहुलकाण्डं द्वितीयं

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

यज्ञाणु उवयन्ते सक्तास्सणं देविंदस्स देवरत्नो च उरासीइसामाणियसाहस्सोउ प० सव्वेविणं वाहिरया मंद
रा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उहं उच्चतेणं प० सव्वेविणं धणुपिठा चोरासी चोरासी जोयणसहस्साइं सो
लसजोयणाइं चत्वारियन्तागा जोयणस्स परिकेवेणं प० पंकवज्जलस्सणं कंठस्स उवरित्ताउ चरमंताउ

॥ भाषा ॥

त्रिपृष्ठ पहिलो वासुदेव त्रेयांस जिन काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा के तेमांही बिचले अपइहाण नरकावासेनारकी
पणे उपनो । पहिला देवलोकनो राजा अक्रेंद्र देवेंद्र देवराजाना ८४ सहस्रसामानिक देवता कछा । जंबूद्वीप संबंधी सुदर्शन मेरुटाली बीजासमलाधातकी
खंडना २ पुष्करार्धना २ मेरु चोरासी चोरासी हजारयोजन जंचा जंच पणे कछा । १ सहस्र योजन ऊं डा के सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जंबूद्वी
पथकी पाठमे नन्दीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागे पूर्वादिक चिहंदिशि ४ अंजनक पर्वत के चारोअंजनक पर्वत चोरासी २ सहस्र योजन ऊंचा ऊंचपणे
कछा । १ सहस्र योजन ऊं डा सर्वमिली ८५ हजारना । हरिवर्षबीजो रम्यकपांचमी तेहनो धनुवर्ती प्रत्यंचा चोरासी चोरासी सहस्र योजन उपरि
खोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिचेपे परिधीये कही । रत्नप्रभाये त्रिणकांडके तेमांही पंकबहुल बीजोकांडतेहनो उपरलो चरमांत केहलो

तस्यच बाह्व्यं चतुरशीतिः सहस्राशीति यथोक्त सूत्रार्थ इति तथा व्याख्याप्रज्ञायां भगवत्त्वां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेण पदपरिमाणेन इहच यथार्थोपलब्धि स्तत्पदं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्विगुणद्विगुणत्वाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञप्तिर्द्वैलक्ष्ये अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानांभवन्तीति तथा चतुरशीतिर्नागकुमारा वासलक्षाणि चतुश्चत्वारिंशतो दक्षिणायां चत्वारिंशच्चोत्तराया आवादिति चतुरशीतिर्योन्योजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराण्योनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लक्षाणि यानिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदगत्रगणिमाकथ्य एकेकेसत्त जोणिलक्खाग्नो वणपत्तेयअणंते दसचउदसजोणिलक्खाग्नो विगलिंदिएसुदोदो चउरोचउरोयनारयसुरैसु तिरिएसुहोतिचउरो चोइसलक्खाउमणएसुत्ति २

हेठिल्ले चरमंते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० विवाहपन्नत्तीए णं जगवतीए
चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह

प्रदेश तेहथकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकच्छो । पांचमोअंग विवाहपन्नती भगवती सूत्रने विषे ८४ पदनां सहस्र के पदाग्रे पदने प रिमाणे जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहीये मतांतरे आचारांगना १८ सहस्र पदके पके आगल्ये २ अंगे वेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अंगे २ ला ख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दक्षिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वमिली नागकुमारावासा ८४ लाख कच्छा । ८४सहस्र पदका यतीना कीधा ग्रंथविशेष कच्छा । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजके प्रमुखद्वार जिहां ७ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असंख्यातके पणि समान बर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकही । पूर्वके आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका आंक पर्यवसान केह

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

इहचजीवोत्पत्तिस्थानानामसंख्येत्येवपि समानवर्णं गन्धरसस्पर्शानां तेषामेकत्वविवक्षणा त्रयथोक्त योनिसंख्याव्यभिचारोमन्तव्य इति पुष्पाइयाणमित्यादि
 पूर्वमादिर्येषांतानि पूर्वादिकानि तेषां शीर्षप्रहेलिकापर्यवसाने येषान्तानि शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषांस्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्या
 स्थानस्योत्पत्तिस्थानात् संख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि अनन्तरस्थानान्यव्यवहितसंख्याविशेषा गुणकारनिष्पन्ना येषु तानि स्वस्थान
 स्थानान्तराणि क्रमव्यवहितसंख्यानविशेषा इत्यर्थः अथवा स्वस्थानानिच पूर्वस्थानानि स्थानान्तराणिच अनन्तरस्थानानि स्वस्थानस्थानान्तराणि अथवास्वस्थाना
 त् पूर्वाङ्गलक्षणात् स्थानान्तराणि विलक्षणस्थानानि स्वस्थानस्थानान्तराणि तेषां चतुरशीत्यालक्षै रितिशेषः गुणकारोभ्यासरतिः प्रज्ञप्तः तथाहि किल
 चतुरशीत्यालक्षैः पूर्वाङ्गभवतीति स्वस्थानान्तरादेवचतुरशीत्यालक्षै र्गुणितं पूर्वमच्यते तच्च स्थानान्तरमिति एवं पूर्वस्वस्थानान्तरादेव चतुरशीत्यालक्षै र्गुणित
 मनन्तरस्थानं त्रुटिताङ्गाभिधानं भवतीति इहसंग्रहगाथे पुष्पतुडियाडडावहु जहुयतहउप्लेयपउमेय नलिणथिनिउरअउय नउएपउएयनायव्वो ॥ १ ॥ च
 लियसीसपहेलिय चोइसनामाउअंगसंजुत्ता अठावीसंठाणा चउणउयंहोइठाणसयंति ॥२॥ अभिलापाक्षेपां पूर्वाङ्गं स्पूवं त्रुटितांगं त्रुटित मित्यादि रिति चउ
 रासीतिमित्यादि इहविभागोयं बत्तीसअठ्ठवीसा वारसअठचउरोसयसहस्सा आरेणवंभलोगो विमाणसंख्याभवेएसा १ पंचासचत्तइच्चेव सहस्सालंतसुकसहस्सारे

स्साइं प० चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा प० पुष्पाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सठाणठाणंत

हे हे स्वस्थानक थकी स्थानांतरे १ चोरासी आंके गुणाकार करतां छेहडे शीर्षप्रहेलिका आवे पङ्गिलूं स्वस्थानक पोतानूंस्थानक पूर्वांगतेह ८४ लाख वर्ष
 होय । ते ८४ लाख गुणोक्तीये स्थानांतरे तिवारे त्रुटितांग होय । इहां संग्रह गाथा । पुष्पतुडियाडडावहु जहुयतहउप्लेयपउमेय । नलिणथिनिउरअनु

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

सयचउरोभाषय पाणएसुतिषारणश्रुयो ॥ एकारसुत्तरंहे ठिमेसुसुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणत्ति ॥ भवंतीति मक्खायंति एतानि विमानान्येवभवन्ति इतिहेतो राख्यातानि भगवता सर्वज्ञत्वात् सत्यवादित्वा चेति ॥ ८४ ॥ अथ पञ्चाशीति स्थानके किञ्चिन्निश्चयते । तत्राचारस्य

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

राणं चोरासीए गुणकारे प० उसजस्सणं अरहणं कोसलियस्स चउरासीइगणा चउरासीइगणहरा होत्या उसजस्सणं अरहणं कोसलियस्स उसजसेण पामोरकानु चउरासीइ समणसाहस्सीणं होत्या सत्तेविचउरा सीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा जवंतीतिमक्कायं ॥ ८४ ॥

॥ भाषा ॥

रानउपपडएयनायब्बो । चूलियसीसपहेलिय चोइसनामाउअंग संजुत्ता । अट्ठावीसंठाणा चउणउयं होइठाणसयं ॥ एम चौदेठामे ८४ लाख ८४ लाख गुणाकरे करतां करतां केहडे शीर्ष प्रहेलिका आवे तिहां १८४ आंक आवे । आदिनाथ अरिहंतने ८४ गणधर ८४ गच्छ हुआ । कोसलदेसना उपना आदिनाथ अरिहंतने ऋषभसेन प्रमुख ८४ अमणयतीनी संपदा हुई । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशान देवलोके ३८ लाख बीजे १२ चौथे ८ पाचमें ४ लाख छठे ५० सहस्र सातमें ४० हजारआठमे ६० सहस्र नोमेंदसमे मिली ४०० इग्यारमेबारमें मिली ३०० ग्रैवेयक पहिलेत्रिके १११ मध्यत्रिके १०७ उपरिलेत्रिके १०० विमान । पांचे अनुत्तरविमाने ५ । १२ देवलोक ८ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरविमान मिली ८४ लाख ८७ हजार उपरि २३ विमान भगवंते कइया । इति ८४ समवाय बयो ॥ ८४ ॥ इति ८५ मोलिखेके । आचारांग सूत्रना चूलिका सहितना ८५ उद्देशण काल कइया प्रथम श्रुतस्कंधे ८ अध्यायन के पहिले

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्कन्धरूपस्य सचूलियागस्त्येति द्वितीयेहि तस्यश्रुतस्कन्धे पञ्चचूलिका स्तासुच पञ्चमी निशीथास्ये ह नगृह्यते भिन्नप्र-
स्थानरूपत्वात्तस्या स्तदन्या खतस्त स्तासुच प्रथमद्वितीयेसप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थ्यां चैकैकाध्ययनात्मिके तदेवं सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलि-
काक स्तस्यपञ्चाशीति रुद्देशनकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययनं उद्देशनकालाना मेतावत्संख्यत्वा त्थाहि प्रथमश्रुतस्कन्धे नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वार-
सत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्कन्धेतु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश त्रय स्रयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयायां सप्तैकस-
राणि अध्ययनान्येवं तृतीयेकाध्ययनात्मिका एवं चतुर्थ्यपीति सर्वमौलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकौखण्डमन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राण्यु च्छि-
ताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वांगेण भवतः पुष्करार्द्धमन्दरावप्येवं नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सूत्रगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

॥ टीका ॥

ध्यायारस्सणं जगवन् सचूलियागस्स पंचासीइ उद्देशणकाला प० धायइखंरस्सणं मंदरस्स पंचासीइजोयण

॥ मूल ॥

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पांचमे ६ छठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्कन्धे ५१ उद्देशा । बीजे श्रुतस्कन्धे ५ चूलिका-
तेमांहि पांचमी निशीथ नामे ते इहां नग्रही बीजौ ४ ग्रही तेमांहीली बीजौ चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमांहीपहिली चूलिकाना साते अ-
ध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिह्नं अध्ययने वेवे उद्देशा एवं उद्देशा २५ पहिली चूलिकायें अने बीजौ चूलिकायें सातएकसराअध्ययन त्रीजौ चौथी चू-
लिकायें एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्देशण कालाथया । ८५ उद्देशानोधडो पूरो २५ मे समवायांगे मेत्योक्ते । पूर्वापरधातकौ खंडे वेमेरुपर्वतके ते-
वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाङ्गे सर्वपरिमाणिकया एकसहस्र योजनजंहा ८४ सहस्र जंचा सर्वमिली ८५ सहस्रथया । एम पुष्करार्द्धे पणिकया ।

॥ भाषा ॥

दशहोपास्तर्गतः प्राकाराकृतोरुचकद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्वच सहस्रमवगाढ इतरशोतिवर्षित
इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वापेक्षेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छितायां प्रथममेखलायां व्यवस्थितस्या धस्याश्चरमांतात् सौगंधिककाण्ड
स्य रत्नप्रभापृथिव्याः स्वरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवान्तरकाण्डभूतस्याष्टमस्य सौगंधिकाभिधानरत्नमयस्य सौगंधिककाण्डस्याधस्त्यश्चरमांतः पञ्चाशी
तिर्योजनशताग्यंतरमाश्रित्य भवति कथं स्पष्टशतानि मेरोः सम्प्रभ्योनि प्रत्येकं सहस्रप्रमाणत्वादपान्तरकाण्डानां महमकाण्डमशीतिशतानीति ॥ ८५

सहस्साइं सवृग्गेणं प० रुयएणं मंरुलियपव्वए पंचासीइजोयणसहस्साइं सवृग्गेणं प० नंदणवणस्सणं
हेठिल्लानु चरमंतानु सौगंधियस्स कंरुस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं पंचासीइ जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प०

रुचकनामापर्वत तेरमाद्वीप मांही गढने आकारे मंडलाकारेके तेमाटे मंडलीकपर्वत १ हजार योजन ऊंडो ८४ हजार योजन ऊंचो सर्वमिली ८५ हजार
योजन सर्वांगे सर्वपरिमाणे कष्टो । भूमिथकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ऊंचोचढीये तिहां प्रथममेखलानेविषे नंदन वन के तेहनां हेठिला चरमांतथी
रत्नप्रभानो आठमी सौगंधिक कांड तेहनी हेठिलो चरमांत एह ८५ से योजन अवाधाये बिचाले आंतरो कष्टो । रत्नप्रभाये ३ कांड के पहिलो १६ हजारनो
कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमी सौगंधिक कांडके तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया । नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन थया
इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ द्विवे ८६ मो समवाय लिखेके । नवमा सुविधिनाथ बीजनाम पुण्यदंत अरिहंतने ८६ गणधर हुआ आवश्यक

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ १४३ ॥

अथ षड्यौतिस्थानके किमपि लिख्यते । तत्र सुविधे नवमर्जनस्थेह षड्यौतिर्गणधराद्योक्ता आवश्यकं त्वष्टाश्रीति रिति मतांतरमिदं तथा द्वितीयाष्ट
विश्वीशर्करप्रभा साच बाह्व्यतो द्वाविंशत्सहस्राधिकलक्षमाना तदहं षट्षष्टिः सहस्राणि घनोदधिश्च तदधोवर्त्ती द्वितीयपृथिवीसम्बद्धित्वात् द्वितीयो विंश
तिहस्राणि बाह्व्यत इति षड्यौति र्यथोक्तमनार अवतीति ॥ ८६ ॥ अथ सप्ताश्रीति स्थानके किञ्चिद्विख्यते मन्दरेत्यादिमेरोः पौरस्थांतात्
जम्बूद्वीपांतः पञ्चचत्वारिंशत्सहस्राणि द्विचत्वारिंशत्सहस्राणि लवणजलधिमवगाह्य गोसुंभो वेलन्धरनागराजावासपर्वतः प्राच्यांदिशि भवत्येवं सूत्रोक्तमंतर

॥ टीका ॥

॥ ८५ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहणं ठलसीइगणा ठलसीइगणहरा होत्या सुपासस्स
णं अरहणं ठलसीइ वाइसया होत्या दोच्चाएणं पुढवीए वज्जमज्जेसज्जागणं दोच्चेस्स घणोदहिस्स हेठि
त्वे चरमंते एसणं ठलसीइ जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० ॥ ८६ ॥ मंदरस्सणं पव्वय
स्स पुरत्थिमिल्लानं चरमंतानं गोथुज्जस्स अवासापव्वयस्स पञ्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणस

॥ मूल ॥

८८ गणधर तेमतांतरच्छे सातमा सुपाश अरिहंतने ८६ से वादीनीसंपदा हुडे । वीजी शर्करप्रभा पृथिवी १ लाख ३२ हजार योजन जाटपेछे तेह बीजी
पृथिवीना बहु मध्यभागथकी मांडी एतले १ लाख ३२ हजारनो अर्द्ध ६६ हजार योजन ते साथे लीजे वीजीनोघनोदधि २० हजार नो तेहनो हेठिलो च
रमांत ८६ हजार योजन अवाधायें विचाले आंतरो कछो ॥ इति ८६ समवाय थयो ॥ ८६ ॥ हिवे ८७ मो लिखेछे । मेरुपर्वतना पूर्व चरमांत
थकी वेलन्धर नागराजा वास गोस्तूभ नामापर्वत तेहनो पश्चिम चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायें विचाले आंतरो कछो । मेरुपर्वतथकी पूर्वनी जगती

॥ भाष ।

अवतीति एवमेवेषां त्रयाणां मंतरमवसेयमिति तथा पक्षां कर्मप्रकृतीनां मादिमोपरिमवर्जानां, ज्ञानावरणांतरायरहितानां दर्शनावरणवेदनीयमोहनो
यायुक्ताम गोत्रसंज्ञितानामित्यर्थः सप्ताशीतिरुत्तरप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथं दर्शनावरणादीनांषष्ठां क्रमेणनव द्वे अष्टाविंशतिः चतस्रो द्विचत्वारिंश द्वे चेत्यत

॥ टीका ॥

हस्साइं अवाहाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स दक्खिणिह्वानं चरमंतानं दग्गसासस्स अवासापव्वयस्स
उत्तरिह्वे चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिह्वानं चरमं
तानं संखस्स वा पुरत्थिमिह्वे चरमंते एवं चैव मंदरस्स उत्तरिह्वानं चरमंतानं दग्गसीमस्स अवासापव्वय
स्स दाहिणिह्वे चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० ठराहं कम्मपगलीणं आइम

॥ मूल ॥

४५ हजार योजन तिहांशकी ४२ हजार योजने गोस्तूभ पर्वत सर्वमिली ८७ हजार योजन धरा । दक्षिण चरमांतयकी दक्षिण समुद्रमांडी दग्गसास पर्व
त तेहनो उत्तर चरमांत ८७ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतनो परे अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एमज मेरुपर्वतना पश्चिमचरमांत यकीमांडी पश्चिमे श
ङ्गनामा आवासनो पूर्वचरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एमज मेरुपर्वतना उत्तर चरमांतयकी उत्तर समुद्रमांडि दग्गसीम
आवासपर्वतनो दक्षिण चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । आठैकर्मनो प्रकृति मांडी धी आदिकर्म ज्ञानावरणीनी पांच प्रकृति
उपरिम कर्मअंतराय तेहनो ५ प्रकृति एवं १० प्रकृतिटाली शेष छ कर्मनो ८७ उत्तर प्रकृतिकही दर्शनावरणी ८ वेदनीय २ मोहनोय २८ आ जखो ४ ना

॥ भाषा ॥

॥ १४४ ॥

स्वासां मौलने सूत्रोक्त संख्यास्यादिति महाहिमवंतेत्यादि महाहिमवति द्वितीयवर्षधरपर्वते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति
तानि पञ्चशतोच्छ्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वेष्टते महाहिमवद्वर्षधरोच्छ्रयस्य अशीतिशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धि
ककाण्डावसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावात्तरकाण्डानां मित्येवं मौलिते सप्ताशीति रत्नरभवतीति एवं रुपिकूटस्यवित्ति रुक्मिणिपञ्चमवर्षधरे यद्वितीयं रु
क्मिकूटाभिधानं कूटं तस्याप्यन्तर महाहिमवत्कूटस्येववाच्यं समानप्रमाणत्वा द्वयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानके किञ्चिद्विप्रियते ॥

॥ टीका ॥

उवरिल्लवज्जाणं सत्तासीइ उत्तरपगळीनुं प० महाहिमवंतकूटस्सणं उवरिमंतानुं सोगांधयस्स कंठस्स
हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं शुवाहाए अंतरे प० एवं रुपिकूटस्सवि ॥ ८७ ॥

॥ मूल ॥

मकर्म ४२ गोच २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई । महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह जंचो वेसत योजन तेह उपरि महाहिमवंत कूटछेते ५०० योजन
जंचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया । तेमहाहिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाये ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६
हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमांहि सौगंधिककांड आठमो तेहनो हेठिलो चरमांत एतले आठो कांडना ८० से यो
जन थया अने महाहिमवंतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अवाधाये बिचाले आंतरो कट्टो । महाहिमवंत कूटनी परें पांचमोरूपीवर्षधर प
र्वतनो रूपी नामकूट अने सौगंधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ द्विवे ८८ मो लिखे छे । चंद्रमा सूर्य असंख्या

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाससूर्यश्चन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्यइत्यर्थः अष्टाशीतिर्भङ्गागृहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारो ऽन्यत्र
 श्रूयते तथापि सूर्यस्यापीन्द्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिष्टिवाएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पञ्च
 प्रकारस्य सूत्रा इति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवन्ति जहानंदीएति अतिदेशतः सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्मेत्यादि मेरोः
 पूर्वास्तात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा तस्यच सहस्रत्रिंशत्भवा य
 योक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्ब्यवस्थितान् दकावभाससंखदकसीमास्थान् वेलम्बरनागराजनिवासपर्वतानाश्चित्य वाच्यमतएवाह

॥ मूल ॥

एगमेगरस्सणं चंदिमसूरियस्स अथासीइ अथासीइ महग्गहा परिवारो प० दिठ्ठिवायस्सणं अथासीइसु
 ताइं प० तं० उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अथासीइसुत्ताणि जाणियव्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स
 पुरत्थिमिल्लान् चरमंतान् गोथुजस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणंअथासीइं जोयणसहस्साइं

॥ भाषा ॥

ताहे तेसहुने प्रत्येके अथासी २ महाग्रह भीमादिक अथासीनो परिवार कछो। यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चंद्रमानोके तोहीपणि सूर्य इंद्रेके तेहनो
 पिणएतलो ग्रहनो परिवार जाणिवो। दृष्टिवाद पूर्व वारमोअंग तेहना ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व
 कछा तेहना सूत्रा इति बीजो सूत्र पूर्व तेहना ८८ सूत्रके तेकहेके। ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिवो। जिममंदीसूत्रे कछोके तेम जाणिवो। मेरु
 पर्वतकको पूर्वनो जगती ४५ हजार योजनके तिहायको पूर्वसमुद्रमांदि ४२ सहस्र योजन गोस्तुभपर्वतके ते १ हजारपिण्डलोके सर्वमिली ८८ हजार मेरुपर्वत

एवं चउसुविदिसासुनेयमिति बाहिराश्रीणि मित्यादि बाह्यायाः सर्वाभ्यन्तरमण्डलरूपाया उत्तरस्याः काष्ठायाः क्वचित् बाहिराश्रीति न दृश्यते सूर्यः प्रथ
मंषण्मासं दक्षिणायनलक्षणं दक्षिणायनादित्वात् सम्बत्सरस्य अयमाणेति आयात् प्रागच्छन् चतुश्चत्वारिंशत्तममण्डलगतो घटाशीतिमेकषष्ठिभागान् दिवस
खेत्तस्सति दिवसस्यैव निवृत्तेति निवर्द्धाहापयित्वा रयणिखेत्तस्सति रजन्यासु अभिवर्द्धा सूरिएचारंचरइति भ्राम्यतीति इहच भावनैव अतिमण्डलं न्दिन
स्यमुहूर्त्तैकषष्ठिभागद्वयहाने दक्षिणायनापेक्षया चतुश्चत्वारिंशत्तमे अष्टाशीतिभागा हीयन्ते रात्रेसु तत्र वर्द्धत इति दिः सूर्यगृहणं चेह दिनरात्र्याश्रितवा
क्यद्वयभेदकल्पनया न पुनरुक्तं भवसेयमिति इदंच सूत्रमण्डलसप्ततिस्थानकसूत्रवद्भावनोयमिति दक्षिणाश्रीदित्यादि सूत्रं पूर्वसूत्रवदवगन्तव्यं नवर मिह दिनवृद्धौ

॥ टीका ॥

अवाहाए अंतरे प० एवं चउसुविदिसासुनेयं बाहिरान् उत्तरानुणं कठान् सूरिए पढमं ठम्मासं अय
माणे चीयालीसइमे मण्डलगते अष्टासीति एगसठिनागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवृद्धेत्ता रयणिखेत्तस्स

॥ मूल ॥

ना चरमांतथकी नागराज वेलंधरनो गोस्तूभ आवासपर्वतनो चरमांत ८८ हजारयोजनययो अवाधायें विचाले आंतरोकद्धी । एम चिहुंदिसि जा
णिबो दक्षिणे दगभास पश्चिमें शंख उत्तरे दगसीम एसर्वना आंतरा जणिवा । निषधपर्वत संबंधी सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी सूर्य पहिलो छम्मास
दक्षिणायन लक्षण तेहप्रते अयमान दक्षिणायने आवतो अंजालीसमे मांडले गयोदको एकसठिया ८८ भाग १ मुहूर्तना दिवसनो चेच दिवसने
घटाडो रजनीनोचेच रात्री तेहने वधारीने सूर्य चारचरेभमे । सर्वाभ्यंतर मांडले ३६ सो दिहाडो २४ रात्रीकरी निषधपर्वतथकी सर्वाभ्यंतर मं
डलथकी दक्षिणायने सूर्य चालतोदको दिनप्रते एकमुहूर्तना एकसठिया वे भाग दिवस घटाडोये रात्रिवधारिये एकेमासे एकमुहूर्तबाधीये वली ३१ मां

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

रात्रिहानिषं भावनीयेति ॥ ८८ ॥ अथैकोननवतिस्थानके किंचिद्विचार्यते । तद्व्याससमाएत्ति सुखमदुःखमाभिधानाया एकोननवत्यामर्हमासेषु
त्रिषु वर्षेषु अर्धनवसु च मासेषु सतिखतिगम्यते जावत्तिकरणात् अंतगडे भिडे बुडे मुत्ते त्तिट्ठयं हरिषेणचक्रवर्त्तीदशम स्तस्यच दशवर्षसहस्राणि सर्वायु स्त

अग्निनियुहेत्ता सूरिए चारंचरइ दरिगणकठानुणं सूरिए दोच्चं ठम्मासं अयमाणे चोयालीसतिमे मंळलग
ते अठ्ठासीइ इगसठिजागे मुज्जत्तस्स रयणिखेत्तस्स नियुहेत्ता दिवसखेत्तस्स अग्निनियुहत्ताणं सूरिए चारं
चरइ ॥ ८८ ॥ उसत्तेणं अरहाकोसलिए इमीसे उसप्पिणीए ततियाए सुसमदुसमाए समा

मांडलायकी एकसठिया दिनप्रतें बेबे भाग दिवस घटाडे रात्रिवधारता ४४ मे मांडले ८८ भाग वधेरात्रि । दिवस घटे । समुद्र माहिली १८४ मों
सर्ववाद्य मंडले मकर संक्रांतिये सूर्य जगो दक्षिण दिशि थको सूर्य बीजे कुम्भामे उत्तर दिशिभणी आवतो थको ४४ में मांडले गयो थको १ सुहर्त्तना
एकसठिया ८८ भाग रात्रि घटाडी दिवस वधारी सूर्य चार करे सर्ववाद्य मांडले दिवसमान २४ रात्रिमान ३६ करीउत्तरायणं चालतो १ सुहर्त्तना

एकसठिया बे बे भाग रात्रि घटतां ३० मे मांडले १ सुहर्त्त रात्रि घटे दिवस वटै इमकरतां ४४ मे मांडले ८८ भाग रात्रि घटे दिन वटै इति ८८ थयो ॥
८८ ॥ हिवे ८८ लिखेके । श्रीआदिनाथ अहिंत कोशलदेसना उपना एणी अवसर्पिणी ने बीजा समाने सुखम दुखम नामने पाछिले
भागे ८८ पर्वमासे एतले ८८ पखवाडे बीजा आरा मांहि शेष थाकते आखे बीजे आरे अतिक्रमे गये थके सिद्धयया सर्वदुःख प्रक्षीण थया । आदिनाथने
मोच पहता पक्षी बीजवर्ष साठा आठ मास एतले ८८ पखवाडा बीजी आरो रघो पक्षे चौथो आरो लाग्यो एह भाव । अमण भगवंत महाकीर एणी

॥ १४६ ॥

नव शतानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषास्थिकादश शतानि कुमारत्वमाख्यलिकत्वाऽनगारत्वेऽप्यवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकोननवतिरार्यिकासहस्राण्यु
क्ताऽन्यावश्यमेवेकषड्विंशतिः सहस्राणि शतानि च षडभिर्वीर्यत इति मतांतरमेतदिति ॥ ८८ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते । तथा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

ए पच्छिमेजागे एगूणणउए अरुमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसवदुक्कप्पहीणे समणे ३ इमीसे उस
प्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेजागे एगूणणउइए अरुमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव
दुक्कप्पहीणे हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कावही एगूणणउइवाससयाइं महाराया होत्या संतिस्सणं अरहन्
एगूणणउइ अजासाहस्सीन् उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्या ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

॥ भाषा ॥

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाइले भागे ८८ पखवाडे शेष थाकतां चौथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमे गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख
प्रक्षीण थया । एतले श्रीमहावीर मोक्ष मये पछो ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८८ पखवाडे गये थके चौथो आरो उत्तरी पांचमो आरो लाम्यो एह भाव
जाणिवो । नमिनाथने बारे हरिषेण राजा दशमो चक्रवर्त्ती ८८ वर्षलगे एकसौवर्ष ऊणो नव हजार वर्षलगे महाराज चक्रवर्त्ती हुआ । शेष थाकतां ११००
वर्ष मांदि कुमार पणे मंडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणूं पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया । शान्तिनाथ परिहंतने ८८ हजार साध्वी
एके ऊणो हुई एतले ८८ सहस्र ८८८ उत्कृष्टी आर्यासाध्वीनी संपदा हुई इति ८८ मो समवाय थयो ॥ ८८ ॥ इति १० लिखेके । शीतलनाथ

जितनाथस्य शान्तिनाथस्य चेह नवतिर्गणगणधराश्चोक्ता आवश्यकते पंचनवतिरजितस्य षट्त्रिंशत् शान्तिरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयंभूतीय
वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजयः पृथिवीसाधनव्यापारः सञ्जिप्तमित्यादि सर्वेषां विंशतेरपि वर्तुलवैताल्यानां शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छ्रित
त्वात् सौगन्धिककाण्डचरमान्तस्य चाष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा न्नवसु सहस्रेषु नवतेः शताना आवात् सूत्रोक्तमन्तरमनवद्यमिति ॥ ६० ॥

॥ टीका ॥

नउइं धणूइं उहं उच्चतेणं होल्या अजियस्सगं अरहणं नउइंगणा नउइगणहरा होल्या एवंसंतिस्सविसयंनु
स्सणं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होल्या सञ्जिप्तं वट्ठेयहपह्याणं उवरिल्लानुं सिहरतलानुं सौगंधिय
कंठस्स हेठिल्लेचरमंते एसणं नउइजोयणसयाइं अयाहाए अंतरे प० ॥ १० ॥ एकाणउइ

॥ मूल ॥

दशमा अरिहंत ६० धनुष जंवा जंच पणे हुया । अजितनाथ बीजा अरिहंतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुया । आवश्यके ६५ गणधर कछ्छा एमतांतर । शां
तिनाथ १६ अरिहंतने ६० गणधर हुया । आवश्यके ३६ कछ्छा ते मतांतर के । विमलनाथकालीन स्वयंभू श्रीजो वासुदेव तेहने ६० वर्ष लगे विजय पृथिवी
साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ६० वर्ष लाग्या एभाय । मगलाई वृत्त वैताळ २० जंजुमांहि हिमवंत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरखवत ४ ए चिंहं चेत्रे
शब्दापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताळ के धातकीखंड मांहि एणेजेने आठके पुकरावे आठ सर्वमिली २० वृत्त वैताळके सगला १ सहस्र योजन जंचा के सग
लाई वृत्त वैताळ पर्वतना उपरिला मिखरतला थकी रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड के तेहनो हेठिलो चरिमांत ६० से योजन अयाधाये
विशाले आंतरो कछ्छो । एतले वृत्त वैताळ १००० योजन जंचा सौगंधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिली ६० से योजन थया ॥ इति ६० समवाय

॥ शाखा ॥

अथैकनवतिस्थानके किञ्चिदित्यते । तत्र परेषामात्मव्यतिरिक्तानां वैयाह्यकर्मणि भक्तपानादिभि रुपष्टभक्रिया स्तद्विषयाः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः परवैयाह्यकर्मप्रतिमा एतानिच प्रतिमात्वेनाभिहितानि क्वचिदपिनोपलब्धानि केवलं विनयवैयाह्यभेदा एते सन्ति तथाहि दर्शनगुणाधिकेषु सत्कारादिदशधा विनयः आहच सत्कार १ भुङ्गाणे २ सम्पाणा ३ समणभिग्रहो ४ तहय आसण अणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलि गहोय ७ ॥ १ ॥ इतस्सणुगच्छण्या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छंताणुवययं १० एसोसुस्सणुविणओत्ति तत्र सत्कारोवन्दनस्तदनादि अभ्युथानमासनत्यागः सन्नानोवस्सादिपूजनां आसनाभिग्रहः तिष्ठतएवासनानयनपूर्वकमुपविशताचेतिभणननिति आसनानुप्रदानमासनस्य स्थानात् स्थानान्तरसञ्चारणं कृतिकर्मादीनि प्रकटानि तथा तीर्थंकरादीना म्चंदशाना म्दाना मनाशातनादि पदचतुष्टयगुणितत्वे षष्टिविधो ज्ञाशातनादिविनयो भवति तथाहि तित्थयर १ धम्म २ आयरि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

परवेयावच्चकम्मपद्दिमानं प० कालोयेणं समुद्धे एकाणउइजोयगसयसहस्साइं साहियाइं परिस्केवेणं प०

थयो ॥ ८० ॥ इति ८१ मो समवाय लिखेहे । ८१ भेदे वेयावच्च कर्म प्रतिमा परतो वेयावच्च कर्म भक्तपानादिके उपष्टभक्रिया तेहनेविषे प्रतिमा अभिग्रह विशेष ते पर वेयावच्च कर्म प्रतिमा कहो । दर्शन गुणाधिक ने विषे सत्कारादिक १० भेदे विनय आहच सत्कार १ भुङ्गाणे २ सम्पाणा ३ समणभिग्रहो तहय ४ आसण अणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलिगहोय ७ तस्सअणुगच्छण्या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणा ९ भणिया गच्छंताणुवययण एह दशे प्रकारे विनय कहो तथा तित्थयर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ घेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोगीय ९ किरिया १० । मतिज्ञानादिक ५ ज्ञान एवं १५ बोलने विषे बोल लगाहो एह १५ नो आसातना टालवो १ भक्ति २ बहुमान ३ गुणवर्णवोये ४ तोपनरचोके साठिथया पक्के ७ लोकोपचार विनय अ

य १ वायगे ४ घेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोदय ९ किरियाए १० मइनाणाईणयतहेव ॥ १ ॥ अत्रभावना तीर्थकराणामनाशातना तीर्थकराणाशातना तीर्थकरप्रज्ञसस्य धर्मस्य अनाशातना एवं सर्वत्र कायव्यापुणभत्ती बहुमाणोतहयवस्सवाओय अरहंतंमादयाणं केवलणाणावसाणाणंति ॥ २ ॥ तथोपचारि कविनयः सप्तधा यदाह अभ्यासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिइंतहय ३ कारियनिमित्तकरणं ४ दुक्खत्तगवेसणातहय ॥ १ ॥ तहदेसकालजाणस स व्यथेसुतहयअणुमईभणिया ७ उवचारिओउविणओ एसोभणिओसमासेणंति ॥ २ ॥ अभ्यासासनं उपचरणीयस्यास्तिके ऽवस्थानं छन्दानुवर्तनमभिप्रा यानुवृत्तिः कृतप्रतिकृतिनाम प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादिदास्यन्ति ननाम निर्जगति मन्यमानस्याहारादिदानं पदकारितनिमित्तकरणं सम्यक्शास्त्रपदम ध्यायितस्य विशेषेण विनयेवर्तनं तदर्थानुष्ठानं च शेषाणि प्रसिद्धानि तथा वैवाच्यं दग्धा यदाह आयसियउवज्झाए धेरतवस्सोगिलाणसेहाणं । साहभिय कुलगणसंघ संगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ तत्र प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुदेस ४ वाचना ५ चार्यभेदादाचार्यस्य पंचनिधत्वा तदेवं चतुर्दशधेत्येकनवति विनयभेदा एते एव अभिगृहविषयीभूताः प्रतिमाउच्यन्त इति तथा कालोयणेत्ति कालोदः समुद्रः सचैकनवतिर्लक्षाणि साधिकानि परिक्षेपेण आविश्य

॥ टीका ॥

अभ्यासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिइंतहय ३ कारियनिमित्तकरणं ४ दुःखत्तगवेसणा ५ तहय तह देशकाल जा ण्ण ६ रव्यथेसुतहयअणुमईभणिया ७ एह सात लोकोपचार विनय तथा दर्शननी वेवावच्च करो आयसिय १ उवज्झाय २ घेर ३ तवस्सो ४ गिलाण ५ सेहाणं ६ साहभिय ७ कुल ८ गण ९ संघ १० संगयंतमिहकायव्वं ११ आचार्य ५ भेदे प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुदेस ४ वाचनाचार्य ५ एह पांच आचार्य टाली विनय १ पळे उपाध्याया दिक्क मवने पांच १४ एवे सात लोकोपचार विनय भेद ६० तीर्थकरादिकनी आशातना दस विनय सत्कारादिक सर्व मिसी ६१ बोखबया ३ काखोदधि की

॥ भाषा ॥

सप्तत्यासहस्रैः शब्दभिः शतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पञ्चदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाङ्गुलैः साधिकैरिति आहोहियत्ति नियतक्षेत्रविषयावधयः प्रायु
 गौचवर्जानां षष्ठांमिति ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीयनामास्तरायानां क्रमेण पञ्च नव द्वाष्टाविंशति द्विचत्वारिंशद्वं भेदानामिति ॥
 ८१ ॥ अथ दिनवतिस्थानके किमप्यभिधीयते । दिनवतिः प्रतिमा अग्निगृहविशेषाः ताश्च दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दर्शयन्ते तत्र किल पञ्च प्र
 तिमाउक्ता स्तद्यथा समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ प्रतिसंलीनता प्रतिमा ४ एकविहारप्रतिमाचेति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा शु

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

कुंथुस्सणं अरहणं एकाणउइ आहोहियसया होत्या आउयगोयवज्जाणं वराहं कम्मपगणीणं एकाणउइ उत्त
 रपगणीणं प० ॥ ११ ॥ वाणउइपणिमानु प० थरेणं इंदनूती वाणउइवासाइं सव्वाउयं पाल

॥ भाषा ॥

जोसमुद्र ८१ लाख योजन साधिक भांभेरो ते कहेंके ७० सहस्र ६ से ५ योजन पनरसे धनुष ८७ अंगुल एतलो परिक्षेप परिधि कह्यो । कुंथुनाथ अरिहंत
 ने ८१०० अवधि ज्ञानी नियतक्षेत्र संबंधी अवधि ज्ञानी हुआ । चउथो आऊखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टाली शेष थाकता छ कर्मनी उत्तर
 प्रकृति ८१ ज्ञानावरणीयनी ५ दर्शनावरणणीनी ८ वेदनी २ मोहनी २८ नाम कर्म ४२ अंतराय ५ सर्व मिली ८१ उत्तर प्रकृति कह्यो । इति ८१ समवाय
 थयो ॥ ८१ ॥ द्विवे ८२ लिखेके । ८२ भेदे प्रतिमा अग्निगृह विशेष पहिलो ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३
 प्रतिसंलीनप्रतिमा ४ एक विहार प्रतिमा ५ पहिली समाधिप्रतिमाना २ भेद श्रुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२
 भेद आचारांगे प्रथमश्रुतस्कन्धे ५ बीजे ३७ ठाणांगे १६ व्यवहारे ४ सर्वमिली ६२ भेदयथा । उपधान प्रतिमा २३ यतिनी १२ श्रावकनी ११ एवं ३३ विवेकको

तत्समाधिप्रतिमा चारित्र्यसमाधिप्रतिमा च दर्शनं ज्ञानान्तर्गतमिति न भिन्नादर्शनप्रतिमा विवक्षिता तत्र श्रुतसमाधिप्रतिमा द्विषष्टिभेदा कथं आचारे प्रथ
मे श्रुतशब्दे पञ्च द्वितीये सप्तत्रिंशत् स्थानांगे षोडश व्यवहारे चतस्र इत्येता द्विषष्टि एताश्च चारित्र्यस्वभावा अपि विशिष्ट श्रुतवता भवन्तीति श्रुतप्रधानं त
या श्रुतसमाधिप्रतिमात्वेनोपदिष्टा इतिसम्भावयामः पञ्चसामायिकच्छेदोपस्थापनीयाया चारित्र्यसमाधिप्रतिमा उपधानप्रतिमा द्विविधा भिक्षुश्रावकभेदा
त्तत्र भिक्षुप्रतिमा मासाईसत्तता इत्यादिना निहितस्वरूपा द्वादश उपासकप्रतिमानाम् दंशणवण इत्यादिना निहितस्वरूपा एकादशेति सर्वास्त्रयोविंशति
र्विवेकप्रतिमा त्वेका क्रोधादेराभ्यन्तरस्य गणशरीरोपधिभक्तपानादे वाह्यस्य विवेचनीयस्यानेकत्वे प्येकत्वविवक्षणादिति प्रतिसंलीनताप्रतिमाप्येकैव इन्द्रि
यस्वरूपस्य पञ्चविधस्य नोद्न्द्रियस्वभावस्य च योगकषायविविक्तशयनासनभेदत स्त्रिविधस्य प्रतिसंलीनताविषयस्य भेदेनाविवक्षणादिति पञ्चम्येकविहारप्र
तिमैकैव नचेह सा भेदेन विवक्षिता भिक्षुप्रतिमास्त्रन्तर्भावितत्वादित्येदं द्विषष्टिः पञ्च त्रयोविंशति रेका एकाच द्विनवति स्ता भवन्तीति स्थविरइन्द्रभूति महा
वीरस्य प्रथमगणनायकः सच गृहस्थपर्यायं पञ्चाशतं वर्षाणि त्रिंशतिं कृद्गस्त्य पर्यायं द्वादशश्च केवलित्व म्मालयित्वा सिद्धइति सर्वाणि द्विनवतिरिति मंदर

इत्ता सिद्धे बुधे मंदरस्सणं पद्मयस्स वज्रनज्जदेसजागानु गोथुनस्स आवासपद्मयस्स पद्मत्थिमिल्लेचरमंते

धादिकनो त्वाग एकभेद प्रतिसंलीन तायं इन्द्रियनो गोपिवो एकभेद एकविहार प्रतिमा भेद १ एवं ६२ पांच त्रैवीस एकएक सर्वमिली ६२ भेद प्रतिमाना
थया। स्थविर इन्द्रभूति महावीरनो प्रथम गणवर गृहाश्रमे ५० वर्ष कृद्गस्त्य पर्याये ३० वर्ष १२ वर्ष केवल पर्याये सगलो ६२ वर्षनो आउखोपालीने सिद्धथया
मोक्षपहुंता तत्त्वना ज्ञानीथया। मरुपर्वतनो बहुमध्यदेशभाग ५ सहस्र योजन तेहथकी ५ हजार योजननी जगतीहुई तेहथकी वेलंधर नागराजानो आ

श्लेष्वादि भावार्थः मेरुमध्यभागात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चाशत्सहस्राणि ततो हिचत्वारिंशत् सहस्राण्यतिक्रम्य गोसुभपर्वतः इति सूचीकृतमन्तर भवतीति एवं शेषा
 षामपि ॥ ८२ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमपि वितन्यते । तेणउड्मंडलेत्यादि तत्र अतिवर्त्तमानोवा सर्ववाद्यात् सर्वाभ्यन्तरमति गच्छन् नि
 वर्त्तमानोवा सर्वाभ्यन्तरात् सर्ववाद्यान्ति गच्छन् व्यत्ययोवा व्याख्येयः सममहोरात्रं विप्रमं करोतीत्यर्थः अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रं तयोः समता तदा भवति
 यदापञ्चदशमुहूर्त्ता उभयोरपि भवन्ति तत्र सर्वाभ्यन्तरमण्डले अष्टादश मुहूर्त्तमह भवति रात्रिश्च द्वादशमुहूर्त्ता सर्ववाद्ये तु व्यत्ययः तथा त्वयौत्वविक्रमण
 लयते द्वौवावेकषष्टिभागौ वर्द्धते द्वीयेतेच यदाच दिनवृद्धिस्तदा रात्रिहानिः रात्रिवृद्धिश्च दिनहानिरिति तत्र त्रिनवतितमे मण्डले त्रिनवतिलं मुहूर्त्तकप्र

एसणं वाणउड्मं जोयणसहस्साड्मं अत्राहाएअंतरे प० एवंचउरहंविआवासपह्याणं ॥ ९२ ॥

चंदप्पहस्सणं अरहणं तेणउड्मगणा तेणउड्मगणहरा होत्या संतिस्सणं अरहणं तेणउड्म चउड्मपुद्धिसया

वास गोसुभपर्वत पूर्वसमुद्र मांदि ४२ हजार योजनद्वयो तो मेरुनामध्यभागयक्ती गोसुभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांत ८२ हजार योजन आवाधाये
 विचाले आंतरो कट्थो । मेरु पर्वतना दक्षिण पासना चरमांत दगभास पर्वतनो उत्तरपासनो केडलो भाग ८२ हजार योजन आवाधायि विचाले आंतरो
 कट्थो । मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतनो शंखआवास पर्वतनो पूर्वाभिमुख चरमांत ८२ सहस्र योजन आवाधायि विचाले आंतरोकट्थो । मेरुपर्वतना उत्तराभि
 मुख चरमांतनो दगसीम आवास पर्वतना दक्षिण दिशगो चरमांत ८२ सहस्रयोजन आवाधायि विचाले आंतरो कट्थो । इति ८२ समवायवयो ॥ ८२ ॥
 इति ८२ मोल्लिखेके । चंद्रप्रभ आठमा अरिहंतना ८३ गच्छ ८३ गणधरद्वया । शान्तिनाथ सोलमा अरिहंतने ८३ से चौदहपूर्वधर द्वा । सूर्यनो एकादोची

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

ष्टिभागद्वयवृद्धा चयोमुहूर्त्ता एकेनैकषष्टिभागेनाधिकाः वर्द्धन्ते वा हीयन्ते वा तेषुच द्वादशमुहूर्त्तेषु मध्येक्षितेषु षष्टादशभ्यो पसारितेषु वा पञ्चदशमुहूर्त्ता उभयचैकेनैकषष्टिभागेनाधिका हीनावा भवन्त्यतो दिनवतितममण्डलस्यार्धे समाहोरात्रता तस्यैवचांते विषमाहोरात्रता भवति दिनवतितममण्डलं चादित आरभ्य त्रिनवतितममण्डले यथोक्तसूत्रार्थ इति ॥ ८३ ॥ अथ चतुर्नवतिस्थानके किञ्चिद्विहित्यते । निसर्गत्यादि द्वादशादीना सम्वादगाथा

होत्या तेणउड्मंफलगतेणं सूरिए अणिवहमाणे विनिवहमाणे वा समंअहोरत्तं विसमंकरेइ ॥ ९३ ॥

राशिमी मांडली समुद्रमांदि तेसर्ववाह्य मंडलतेह्यकी सूर्यअनिवर्त्तमान सर्वाभ्यंतर मंडलभणी उत्तरादणी जातो तथा विषधमाथे सर्वाभ्यंतर मंडल तेह्य की दक्षिणायन सर्ववाह्य मांडलाप्रति जायके तेवारे ८३ मे मंडले सूर्य गयो थकी दिवसने रात्रिने विषमकरे एतले अष्टाडो पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मंडले विषधमाथे सूर्यउगे तेवारे दिवस ३६ रात्रि चौबीसो पळे आवणवदो १ दिने बीजेमांडले सूर्यआवे तेवारे एकमुहूर्त्तना ६२ भाग करीये तेहवा प्रतिमांडले प्रतिदिन बे बे भाग दिवस घटाडो रात्रो वधारी दक्षिणायने चालतां ३२ मेमांडले एक मुहूर्त्त दिवसघटे रात्रिघटे । वली तेमज एकसडिया बेवेभाग दिवस घटाडो एमकरतां ८२ मांडलेजाय तिवारे आसोजीउनिमें ३० दिवस ३० रात्रि समदिवस समरात्रिकरेपळे ८३ मेमांडले सूर्य जाय तेवारे दिवसघटे रात्रि वळे तेमाटे दिनरात्रि विषमकरे अने सूर्य सर्ववाह्यमांडले दिवस २४ रात्रि ३६ पोसोपूनिमंकरो उत्तरायणभणी चाखी तोही एक मुहूर्त्तना एकसडिया २ भाग प्रतिदिवस दिनवधारे रात्रिघटाडे ८२ मेमांडले चौबीपूनिमे सम दिवसरात्रि ३० दिवस ३० रात्रिकरी ८३ मांडले दिवसरात्रि विषमकरे दिवस वळे रात्रिघटे एभावार्थ जाणिवो । इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिचे ८४ लिखेके । बीजोवर्षधर निषध पर्वत चौथो नीलवंत एवेधनी जो

चउणउइसहस्राइं कृष्णद्विद्वयसयंकलादीय जीवानिसहस्सेसत्ति ॥ ८४ ॥

८४

॥

अथ पंचनवतिस्थानके किंचिल्लिख्यते । लवणसमुद्रस्योभयपार्श्वतोपि

पंचनवतिः २ प्रदेशाउद्बोधोत्सेधपरिहानिभ्यांविषये प्रज्ञप्ताः अयमत्रभावार्थः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्रिकत्वेचस्य समधरणीतलापेक्षया सहस्रमुद्बोधउद्बलत्वमित्यर्थः तदनन्तरं पंचनवतिम्प्रदेशानतिक्रम्योद्बोधस्य प्रदेशाहीयन्ते ततोपिपंचनवतिं प्रदेशान् गत्वा उद्बोधस्य प्रदेशाः परिहीयन्ते एवं पंचनवति २ प्रदेशाति क्रमे प्रदेशमात्रस्योद्बोधस्य हान्या पंचनवत्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्बोधतः सहस्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः समभूतलत्वभवतीति तथा समुद्रमध्यभागापेक्षया तत्तटस्य साहस्रिकउत्सेधोभवति उत्सेधश्चोच्चत्वं तत्र समधरणीतलरूपा तत्तटा त्वंचनवतिम्प्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य

निसह नीलवंतियानुणं जीवानु चउणउइ जोयणसहस्साइं एक्कं ठप्पन्तं जोयणसयं दोन्निय एगूणवीसइ
जागे जोयणस्स आयामेणं प० अजियस्सणं अरहणं चउणउइ उहिनाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥
सुपासस्सणं अरहणं पंचाणउइगणा पंचाणउइगणहरा होत्था जंबूद्वीवस्स णं द्वीवस्स चरमंतानु चउइ

वा ८४ हजार योजन एकसोऽकृष्ण योजन उपरि वे उगुणीसहाइया भाग एकयोजनना ८४१५६ योजन १८ कला आयामपणे लांबपणेकही । अजितनाथ अरिहंतने ८४ से अवधिज्ञानी हुआ । इति ८४ मो समवाय थयो ॥ ८४ ॥ द्विवे ८५ मो लिखेके । सुपार्श्व सातमा अरिहंतने ८५ गच्छ ८५ गणधर हुआ । जंबूद्वीपना चरमांतयकी पूर्वादिक चिह्नादिशि लवण समुद्रमांदि ८५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलश कक्षा । तेकडेके । पूर्व मुद्रमांदि बहवामुख । दक्षिणे केतुक । पश्चिमे यूपक । उत्तरे ईसर । धातकीखंडयकी समुद्रमांदि उरहामध्यभाग भणी ८५ सहस्र

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

परिहानिर्भवति ततोपि पंचनवतिप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिकी चोत्सेधहानि भवति एवं पंचनवतिपंचनवतिप्रदेशातिक्रमेणैवप्रादेशिक्या उत्सेधहान्या पंचनव
त्यांयोजनसहस्रैश्चतिकांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवंसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्देशता भवति लवणस्सेत्ति अथचोद्देशा
र्थं योत्सेधपरिहानिस्तस्यांपंचनवतिः प्रदेशाः प्रज्ञप्ता स्तेष्वतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशेहान्यामुद्देशः प्रादेशिको भवतीति तथा कुंधुनाथस्य समदशतीर्थकरस्य
कुमारत्वमांडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगरत्वेषु प्रत्येकं त्रयोविंशते वर्षसहस्राणा मर्द्धाष्टमवर्धशतानां च भावात्सर्वायुः पंचनवतिवर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

सिं लवणसमुद्रं पंचाणउड पंचाणउड जोयणसहस्साइं उगाहिना चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० बल
या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्रस्स उन्नन पासंपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसानं उव्वेऊस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपयकी परहा १५ हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जईयेतो विहं १५ मिली १ लाख १० हजार योजन थया विचाले दस स
हस्र योजन लगे समोपीठिकानेरूपे पाणीके तिहां पृथ्वी तलनी अपेचाये १ हजार योजननी जंडी खाड पडोके १ हजार योजन लगे जंबोपाणी चक्यां
पके पिहला १० हजार योजन लगेके तेहने दगमालकहिये तांते मध्यपिंड १० हजार योजनलगे दगमालयकी उभयपासे धातकी खंड भणीजाय । त
था जंबूद्वीप भणी उरहाआवीयेतोही १५ आंगुले एकअंगुल तथा १५ हाते १ हात १५ योजने १ योजन एम १५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशे २
मात्राये २ उद्देशपणी जंडपणीघटाढीये एमकरतां १५ सहस्र योजन अतिक्रमेयके समुद्रनोपाणी अनेभूमिबराबरीथाय जंडपण सगलोटले तथा समुद्रतट
यकी १५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनो उत्सेधनो जंचपणी प्रदेशे २ मात्राये २ हानिकरी भूमिजंडीकरतांजईये एमकरतां

मौर्यपुत्रो महावीरस्य सप्तमगणधरस्तस्य पञ्चनवतिवर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्वं कृद्वास्थत्वं केवलित्वेषुकमेण पञ्चषष्टिचतुदशषोडशानां वर्षाणां भावादिति ॥
 ८५ ॥ अथ षष्ठवतिस्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणां षष्ठवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पञ्चाशत् उत्तरस्यां च षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव
 हारि एति व्यावहारिको येन गव्यतादिप्रमाणं चिंत्यते अव्यावहारिको लघुदीर्घो वा भवत्युक्तप्रमाणात् दंडो हि चतुःकर उक्तः करश्चतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्विं

॥ टीका ॥

णीए प० कुंथूणं श्ररहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थरेणं मोरि
 यपुत्ते पंचाणउइवासाइं सत्ताउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ १५ ॥ एगमेगस्सणं
 रत्तो चाउरंतचक्कावहिरस्स तस्सउइं तस्सउइं गामकोप्पेत्तं होत्था वायुकुमाराणं तस्सउइं नवणावाससयसह

॥ मूल ॥

८५ हजार योजन अतिक्रमेथके तटभूमिनोजंचपणो हजार योजननोटले १ हजारनो जंडपणो समुद्रनोथाय एतलो । कुन्थुनाथ अरिहंतर ३ सहस्र अने ७५०
 वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाज वर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ८५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टा आजखोपालीने
 सिद्धयया तत्त्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया । स्थविर मौर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर ८५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धयया । गृहाश्रमे ६५ कृद्वास्थपणे
 १४ केवलो पणे १६ सर्बमिली ८५ वर्षथया । इति ८५ मो समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिंवे ८६ समवाय लिखेछे । एकेक चातुरंतचक्रवर्तीने ८६ कोडी
 गाम थया । वायुकुमार भवनपतीने ८६ लाख भवनावासा कछा । दक्षिणदिशे ५० लाख उत्तरदिशे ४६ लाख बिहुंमिली ८६ लाख थया । व्यवहारिक दंड

॥ भाषा ॥

शतौ चतुर्गुणितायां षष्ठवतिः स्यादेवेति अभंतराश्री इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्तः षष्ठवत्यंगुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावायः
 सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयत्रदिने सूर्यसरति तस्य दिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तोद्वादशांगुलमानं शंकुमाश्रित्य षष्ठवत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्त्त प्रमाण
 भवतीति मुहूर्त्तोद्वादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रियया क्तेदेनाष्टादश लक्षणेन द्वादशांगुलः शंकुगुण्यत इति ततोद्देशे शते षोडशोत्तरे भवतः
 २१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तरं शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ पनीते षष्ठवतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ८६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानके

॥ टीका ॥

रसा प० व्यवहारिणं दंढे षष्ठउद्वांगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अरके मुसलेवि अङ्गितरुं अष्ट
 मुहूर्त्ते षष्ठउद्वांगुलच्छाए प० ॥ १६ ॥ मंदरस्सणं पद्मयस्स पद्मत्थिमिल्लानं चरमंतानं

॥ मूल ॥

तेजेणे गाउकोस चिंतवीये अथवहारिक नान्होपणि होय मोटोपणि होय ते व्यवहारिक दंड ८६ अंगुल प्रमाणे कह्यो २४ अंगुल नोहाथहोय चिहुंहाथे १
 दंड होय एम करतां ८६ अंगुल कह्या । एम ८६ अंगुलनोधनुषनालिका यूप भूमरो अक्ष मंशलएहसर्व ८६ । ८६ अंगुलनो होय । निपधने माथे सर्वाभ्यं
 तर मांडले दिवस अठारह मुहूर्तनो होय तो सर्वाभ्यंतर मंडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ८६ अंगुल छाया प्रमाणे होय १२ अंगुलनो दणजभोकरोये
 तेहनी छाया ८६ अंगुल होय तिवारे कर्क संक्रांतिनो पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ८६ अंगुल २ घडो दिवस कहिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अं
 गुल दण निगुण कीजे एतले १८ बार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनी अर्ध १०८ एह आंकमां हि दण प्रमाण अंगुल १२ काटो पूठी ८६ अंगुल उगरे ॥
 इति ८६ मो संपूर्ण ॥ ८६ ॥ हिचे ८७ मो लिखेके । मेरु पर्वत १० सहस्र पिहलो तेहथकी पूर्वनी जमती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

॥ भाषा ॥

किञ्चिदभिधीयते । मंदरेत्यादि भावार्थोयं मेरोः पश्चिमान्तात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशतो गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तर मिति
हरिषेणो दशमचक्रवर्ती देशोनानि सप्तनवतिस्वर्षशतानि गृहमधुषित स्त्रीणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्रत्वा तदायुष्कस्येति ॥

६७ ॥ अष्टाष्टनवतिस्थानके किञ्चिदभिधीयते नंदनवनेत्यादि भावार्थोयं नन्दनवन मेरोः पंचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पंचयोजनशतोच्छ्रि

॥ १५२ ॥

गोथुन्नस्सणं आवासपव्वयस्स पञ्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प०
एवं चउदिसिंपि अठ्ठण्हं कम्मपगळीणं सत्ताणउइ उत्तरपगळीणं प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कावही दे
सूणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्जे वसिन्ता मुंठे जवित्ताणं जाव पव्वइए ॥ १७ ॥
नंदणवणस्सणं उवरिल्लानु चरमंतानु पंठयवणस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं अठ्ठाणउइजोयणसहस्साइं अवा

स्रयोजन गोस्तुभपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथकी वेलंधर नागराजानो गोस्तुभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ६७ सहस्र योजन आवाधाये
विचाले आंतरो कच्छो । एमज चिंहुदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरोकच्छो आठे कर्मनी ६७ उत्तर
प्रकृति कहो नाणावरणी ५ दरसनावरणी ६ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली ६७ उत्तरप्रकृति इइ । नमिनाथ
अरिहंतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देशोन कांदकऊणां ६७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुंडथईने अगारथकी साधुपणूं पाम्यो ३०० वर्षभांभेरा
दीचापालो १० हजारवर्ष सर्वायुपालो सीधोमोक्षपहुंतो ॥ इति ६७ मोसमवायथयो ॥ ६७ ॥ हिवे ६८ मोलिखेके । मेरुनो नंदनवनपहिली मेख

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तं तद्वतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्गृहणेन ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितं तो नवनवत्यामेरो रुचैस्त्वस्य आद्ये सहस्रे अपकृष्टे यथोक्तमन्तरं भवतीति गोस्तुभसूत्रभावर्यः पूर्ववत् अवरं गोस्तुभविष्कम्भसहस्रे क्षिप्ते यथाक्तमन्तरं भवतीति वेद्यदृष्टान्तमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः सम्यक्पाठं चायं दाहिणभरहदृष्टान्तं धनुषिष्ठे अष्टाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पश्यते इति यतोऽन्यत्रोक्तं नवचेवसहस्राइं छावठाइं सयाइं सप्तभवे सविसेसकलाचेगा दाहिणभरहधनुषपठंति वैताव्यधनुः पृष्ठं त्वेवमुक्तं मन्यत्र दसचेवसहस्राइं सत्तेवसयाहवंतितेयाला धनुषपठंवेद्यदृष्टे कलायपस्सर

हाए अंतरे प० मंदरस्सणं पण्यस्स पञ्चत्थिमिह्वानं चरमंतानं गोथुजस्स पुरत्थिमिह्वे चरमंते एसणं अष्टाणउइजोयणसहस्साइं अथाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणन्नरहस्सणं वणुप्पिठे अष्टाणउइजोयण

लाये भूमिथकी ५०० योजन ऊंचोके तेमांहि ५०० योनना कूटऊंचाके तोभूमौथकी तेकूटनां शिखर १ सहस्रयोजनऊंचा तिहांलगे नंदनवनकहीये मेरुपर्वत लाख योजनऊंचो तेमांहि १ हजार योजन भूमिमांहि १ सहस्रनो नंदनवन एवं २ सहस्रनीकल्या लाखमांहियौ तेमाटे नंदनवननो उपरिलो चरमांत मेरुने माथे पण्डकवनके तेहनो हठिलो चरमांत एह ८८ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकद्धो। मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती हुइंते थकी पूर्व समुद्रमांहि गोस्तुभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोके। मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोके तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी वेलंवर नाग राजानो आवास गोस्तुभ पर्वत पूर्वसमुद्रमांहि ८८ हजार योजन अवाधाये विचाले आंतरोकद्धो। एमचिहुंदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शंख उत्तरसमुद्रमांहि दगसौम एहचिहुंनो आंतरोगोस्तुभनीपरेजाणवो दक्षिणाई भरतचेवनो धनुपृष्ठ ८८।

॥ टीका ॥

॥ भाषा ॥

सहवन्ति उत्तराश्लेषमित्यादि भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणावसेयः नवर मिह एकत्तालीसइमे इति केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः एगूणपंचासइमेति एको

सयाइं किंचूणाइं श्यायामेणं प० उत्तरानु कठानु सूरिए पढमं ठम्मासं श्ययमाणे एगूणपन्नासतिमे मंळल
गते श्यठाणउइ एंक्सठिजागे मुज्जत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुहेत्ता रयणिखेत्तस्स श्यज्जिनिवुहिन्नाणं सूरिए
चारं चरइ दक्खिणानुणं कठानु सूरिए दोच्चं ठम्मासं श्ययमाणे एगूणपन्नासइमे मंळलगते श्यठाणउइ एक

से योजन कांइ ओहो लांअपणे कछो । उत्तर दिसयको सर्वाभ्यंतर मांडलायको सर्वाभ्यंतर मांडले निषधने माथे आषाढी पूनिमे अठारह मुहूर्तनोदिवस
१२ मुहूर्तनी रात्रिहुये पछे आवण बदी १ दिने सूर्य उत्तर दिगिथको दक्षिणायने चाल्यो तिवारे बीजे मांडले जायो तेवारे १ मुहूर्तना ६१ या भाग
कीजे एहवा प्रतिदिन मांडले वेवेभाग दिवस घटाडे रात्रिवधारे चोसमे मांडले जाय तेवारे १ मुहूर्त दिवस घटे पात्रे बधे एमज सर्वबाह्य मंडला लगे
कीजे सर्वबाह्य मंडले दिवस १२ मुहूर्त रात्रि १८ मुहूर्त वलौफरी मांडो उत्तरायणे सूर्य चाल्यो तिवारे बीजामांडलायको मुहूर्तना ६१ या वेवे भाग प्रति
दिन दिवस वधारे रात्रि घटाडे साठि भागे मुहूर्त एक बांधोये सर्वाभ्यंतर मंडल लगे पछे सर्वाभ्यंतर मंडले १८ मुहूर्त दिवस १२ मुहूर्तरात्री हुये सूर्य प
हिले छम्मासे दक्षिणायन भणी आवतोथको एकोनपंचासे मांडले गयोथको १८ एकसठिया भाग एक मुहूर्तना दिवसनो चेत्र दिवसे घटाडो रात्रीनू चेत्र
रात्रियेवधारी सूर्य चारचरे । सर्वबाह्य मंडल यको दक्षिणायनयको सूर्य बीजे छम्मासे उत्तरायनभणी आवतोथको एकोनपंचासमे मंडले गयोथको १८ एक
सठिया भाग एक मुहूर्तना रजनीना चेत्रने घटाडोने दिवसनोचेत्रने वधारीने सूर्य चारचरे एतले उत्तरायणे रात्रि घटे दिवस बधे दक्षिणायने रात्रि बधे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नपंचाशतो विगुणत्वे अष्टनवतिर्भवति इयगुणनंच प्रतिमण्डलं मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयवृद्धे दिनस्यरात्रे वेति । रेवईत्यादि रेवतिः प्रथमायेषां तानि रेवतिप्रथमानि तथाज्येष्ठापर्यवसानानीति तानिचतानिचेति कश्मंधारयः तेषामेकोनविंशतेर्नक्षत्राणामष्टनवतिस्तारा स्तारापरिमाणेन प्रज्ञप्तास्तथाहिरेवतिनक्षत्रं चात्रिंशत्तारं अश्विनोत्रितारं कृत्तिकाषट्त्तारं रोहिणीपंचतारं मृगशिरस्त्रितारं आर्द्राएकतारं पुनर्वसुः पंचतारं पुष्यस्त्रितारं अश्लेषा षट्त्तारं मघा सप्ततारं पूर्वाफाल्गुनीद्वितारं उत्तराफाल्गुनीद्वितारं हस्तः पंचतारं चित्राएकतारं स्वातिरेकतारं विशाखापंचतारं अनुराधाचतुस्तारं ज्येष्ठात्रितारमित्येवं सर्वतारामी सने यथोक्तं ताराग्रमेकोन ग्रंथांतराभिप्रायेण भवति अधिकृतग्रंथाभिप्रायेण त्वेषामेकतरस्य एकताराधिकत्वम् सम्भाव्यते ततो यथोक्ता स्तारसंख्याभवतीति ॥

॥ टीका ॥

सठिनाए मुजुत्तस्स रयणिस्सिक्कित्तस्स बुद्धेत्ता दिवसखेत्तस्स अज्जिनिबुद्धित्ता णं सूरिए चारं चरइ रेवईप
ढम जेष्ठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नरकत्ताणं अठ्ठाणउडितारानु तारग्गेणं प० ॥ १८ ॥

॥ मूल ॥

दिवस घटे प्रतिदिवस १ मुहूर्तना ६१ या बेबेभाग प्रति मंडले घटाडीये वधारिये । रेवतीनक्षत्रके पहिलो ज्येष्ठानक्षत्रके पर्यवसान केहडो जेहने एहवा उ गणोसनक्षत्र ने ८८ तारा तारायेणंतारापरिमाणे कश्चा । रेवतीनक्षत्रना ३२ तारा । अश्विनोना ३ तारा । भरणीना ३ । कृत्तिकाना ६ । रोहिणीना ५ । मृगशिरना ३ । आर्द्रानो १ । पुनर्वसुना ५ । पुष्यना ३ । अश्लेषाना ६ । मघाना ७ । पूर्वाफाल्गुनीना २ । उत्तराफाल्गुनीना २ । हस्तना ५ । चित्रानो १ । स्वाती १ । विशाखाना ५ । अनुराधाना ४ । जेष्ठाना ३ । एह १८ नां सर्वमिली ८८ तारावया । इति ८८ मो वयो ॥ ८८ ॥ हिरे ८८ मो लिखेहे

॥ भाषा ॥

॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते । नन्दनवनेत्यादि अस्य भावार्थः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेतु नवनवतिर्योजनशतानि चतुःपञ्चाशच्चयोजनानि षट्पञ्चयोजनैकादशभागा बाह्यगिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति शतानि चतुःपञ्चाशदधिकानि षट्चैकादशभागा स्तथा पञ्चशतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कम्भो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भसमीलितो यथोक्तमन्तर आयोभवति पठमसूरिय

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

मन्दरेणं पञ्चएणवणउड्जोयणसहस्साइं उहं उच्चतेणं प० नन्दणवणस्सणं पुरत्थिमिह्वानं चरमंताणं पञ्चत्थि
मिल्ले चरमंते एसणं नवनउड्जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० एवं दक्खिणानं चरमंताणं उत्तरिल्लेचरमंते
एसणंणवणउड्जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० उत्तरे पठमसूरियमंठले नवणउड्जोयणसहस्साइं

॥ भाषा ॥

मेरुपर्वत ८८ सहस्र योजन ऊँची ऊँचपणे कश्चो । भूमियक्को ५०० योजन मेरुने विषे ऊँचा चढोये पहिली मेखला तिहां नन्दनवन पामीये तेह नन्दन
वन ५०० योजन पिहुलो छे नन्दनवननो पूर्व चरमांत तेहथो पश्चिम चरमांत लगे ८८०० से योजन आवाधाये बिचाले आंतरो कश्चो । मेरुनो विष्कम्भ मू
ले १०००० योजन नन्दनवन स्थाने बाह्य गिरि विष्कम्भ ८८०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नन्दनवन मांहि मेरुनो विष्कम्भपणो ८८ से योजन ५४
योजने ११ हिया ६ भाग नन्दनवन ५०० योजन पिहुलोते दुगणोलो जे अने मेरुनो अभ्यन्तर विष्कम्भपणो लोजेतो ८८०० योजन आंतरो हुयो । एमज नन्दनवननां
दक्षिण चरमानथक्को नन्दनवननो उत्तर चरमांतनो आंतरो ८८०० से योजन थयो । निषधने माथे सर्वाभ्यन्तर मांडलो छे तेहपूर्व दिशनो तेहीज कंकणने

મંડલેત્તિ રહજમ્બૂહીપ્રમાણસ્થાશીત્યુત્તરશતે દિગુણિતે અપદ્ધતે યોરાશિઃ સપ્રથમમણ્ડલસ્યાયામવિષ્કંભઃ સચ નવનવતિસહસ્રાણિ ષટ્ચ શતાનિ ચત્વારિંશદ
વિકાનિ દિતીયન્તુ નવનવતિઃ સહસ્રાણિ ષટ્શતાનિ પંચચત્વારિંશચ યોજનાનિ યોજનસ્યચ પંચત્રિંશદેકષટિભાગાઃ કથં મણ્ડલસ્યમણ્ડલસ્યચાન્તરં દેદેયોજ
ને સૂર્યવિમાનવિષ્કંભ ષાષ્ટચત્વારિંશદેકષટિભાગાઃ એતદ્દિગુણિતં પંચયોજનાનિ પંચત્રિંશદેકષટિભાગાશ્વેતિ જાતમેતચ્ચ પૂર્વમણ્ડલવિષ્કંભે ત્રિપ્તં જાતમુક્તપ્ર

સાદરેગાઈં ણ્યાયામવિસ્કંનેણં પ૦ દોષ્ટ્રે સૂરિયમંઠલે નવનઉડ્ડોયણસહસ્સાઈં સાહિયાઈં ણ્યાયામવિસ્કં

॥ ટીકા ॥

॥ સૂલ ॥

॥ ભાષા ॥

આકારે ફિરતો પશ્ચિમનોનીલવંત ને માથે તે સર્વામ્યંતર માંડલો જમ્બૂહીપમાંહી ૧૮૦ યોજનછે પૂર્વદિશિનો અને પશ્ચિમનો પણ એતલોજ છે તો જમ્બૂહીપન
જીવા લાંબપણે લાખ યોજનછે તે માંહિ થો ૩૬૦ યોજન માંડલો ભૂમિમાંકાઠો લાખ યોજનમાંહિ થો પૂઠે પૂર્વસર્વામ્યંતર મંડલ અને પશ્ચિમ સર્વા
મ્યંતર મંડલને ૮૮૪૦ યોજન આંતરો થયો । પહિલો સર્વામ્યંતર સૂર્યનો માંડલો ૮૮ સહમ્ર યોજન સાતિરેક આંખેરોતે ૬૪૦ યોજન આયામ પશ્ચિમે લાંબ
પણે દક્ષિણ ઉત્તરે વિષ્કંભપિહુલપણે આંતરો જાણિયો લાખ યોજન માંહિથો ૩૬૦ યોજન કાઠો પૂઠે ૮૮૬૪૦ યોજન ઝગરે પહિલે માંડલે પૂર્વનો બીજો
માંડલો અને પશ્ચિમનો બીજો માંડલો ૮૮૬૪૫ યોજન ૧ યોજનના ૬૧ યા ભાગ ૩૫ લાંબપણે પિહુલપણે આંતરો । તેકેમ પહિલા માંડલાથી વીજો માંડ
લો ૨ યોજન અને માંડલાનું પિહુલપણું ૧ યોજનના ૬૧ યા ૪૮ ભાગ પશ્ચિમનો પણ એતલોજવિહદિશમિલી પહિલા વીજામાંડલાનાં આંતરાના યોજન
મંડલ પિહુલપણો મિલી ૫ યોજન ભાગ ૩૫ એહ સર્વામ્યંતર માંડલાના પ્રથમના આંકમાંહિ ઘાતિયે એતલે ૮૮૬૪૦ યોજન માંહી ૫ યોજન ૬૧ યાપેત્રીસ
ભાગ ઘાતિયે તિવારે ૮૮૬૪૫ ૧ યોજન ૬૧ યા ૩૫ ભાગ આંતરોવીજામાંડલાનો હુવે હિવેસૂર્યનો પૂર્વ પશ્ચિમનો વીજો માંડલો ૮૮૬૫૧ યોજન ૬૧ । ૨

॥ १५५ ॥

माणमिति तृतीयमण्डलविष्कम्भोप्येवमेवावसेयः सच नवनवतिसहस्राणि षट्शतानि एकपञ्चाशत्तुयोजनानि नवैकषष्टिभागाश्चेति इमोसेणमित्यादि भावा
र्थीयं अञ्जनकाण्डं दशमं तत्रच रत्नप्रभोपरिमांताच्छतं शतानां भवति प्रथमकाण्डे प्रथमशतेच व्यन्तरनगराणि सन्तीति तस्मिन्नपसारिते नवनवतिशतान्य
न्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ८८ ॥ अथ शतस्थानके किञ्चिद्विस्थिते । तत्र दशदशमदिनानि यस्यां सा दशदशमिका याहि दिनानां दशदशका

॥ टीका

ज्ञेयं प० तद्दुसूरियमंफले नवनउड्जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविस्कंनेणं प० इमोसेणं रयणप्य
जाए पुढवीए अंजणस्स कंफस्स हेठिल्लानं चरमंतानं वाणमंतरजोमेज्जाविहारणं उवरिमंते एसणं नव
नउड्जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० ॥ ११ ॥ दसदसमियाणं जिस्कुपफिमा एगेणं रा

॥ मूल ॥

भाग पूर्व अने पश्चिमनां मंडलने आंतरो दक्षिणने उत्तर मंडले आंतरो तेहीपिण वीजामांडलानीपरि ५ योजन भाग ३५ त्रीजेमांडलेवधारिये ८८६४५ यो
जन भाग ३५ माहिघातिये तिवारे ८८६५१ योजन ६१ । ८ भाग आंतरो थाय । त्रीजो मांडलो आयाम लांबपणे विस्कंभ पिह्लपणे कच्चो । एणीये रत्न
प्रभा पृथिवी ये ३ कांड माहिपहिलोकांड १६ हजारनो १६ जाति रत्ननो तेकांडप्रत्येके १ सहस्रनोके तो रत्नप्रभानो दशमो अंजन कांड तेहनो हेठिलो
चरमांत समभूतलथी १० हजारयोजनके तिहांथकीमांडी उपरि रत्नप्रभाना १०० योजन मंहीवानअंतरनाभूमि संबंधी विहार क्रीडा नगरके तेहनोउ
परिलो चरमांत ८८०० से योजनआवाधाये विचाले आंतरो कच्चो । एतले १० हजार योजन मांहिथी व्यंतर संबंधी १०० योजन बाहिर काठीये तिवारे
८८ से योजन उगरे । इति ८८ मोसमवाय थयो ॥ ८८ ॥ द्विवे १०० मोलिखेके । पहिला दस दिहाडा लगे एकेकी भिच्चा दातीले पके बीजे

॥ भाषा

नि भवन्ति तत्रभवन्ति दशदशमदिनानि शतस्र दिनाना मतउच्यते एकेनरात्रिदिवसशतेने ति यस्यांच प्रथमेदशके प्रतिदिनमेकैकाभिषा द्वितीयेद्वे एवं
यायदशमेदशदशेत्येवं सर्वभिषासंकलने सूत्रोक्तसंख्याभवत्येव इति पार्षनाथ स्त्रिंशद्वर्षाणि कुमारत्वं सप्ततिचानगारत्वमित्येवं शतमायुः पालयित्वा सिद्धः
एवं धेरेविअजसुहमेति आर्यसुधर्मा महावीरस्य पंचमोगणधरः सोपि वर्षशतं सर्वायुः पालयित्वा सिद्धस्तथाच तस्यागारवासः पंचाशद्वर्षाणि कृद्वास्थपर्याय।

॥ टीका ॥

इंदियसतेणं अष्टवठेहिं जिस्कासतेहिं अहासुत्तं जावअराहियाविजवइ सयहिस्सिया नरकत्ते एकासय
तारे प० सुविहीपुष्पदंतं अरहा एगंधणुसयं उहं उच्चत्तेणं होत्या पासेणंअरहापुरिसादाणीए एकांवा
ससयं सहाउयं पालइत्ता सिद्धेजावप्पहीणे एवं धेरेवि अजसुहम्मे सहेविणं दीहवेयहपव्याएगमेगं गा

॥ मूल ॥

दशके वे वे भिषा एम दस दसक लगे एकेक भिषावधारीयेते प्रतिमा दश दशमिका कहौये। तेप्रतिमा दश दशमिका भिषा प्रतिमा एकरात्रि दिवस
सते एतले १०० अहोरात्रिये अने साढे पांच से भिषाये करी यथा सूत्रोक्त प्रकारे यथा मार्गे आराधी होय एणे प्रकारे। शतभिषा नचवना एक सो
तारा कक्षा। नवम सुविधिनाथ बीजोनाम पुष्पदंत अरिहंत १०० धनुष जंचा जंच पणे हुया पार्षनाथ अरिहंत पुरुषादानीय महासोभागी ३० वर्ष गृ
हाश्रमे कुमारपणे ७० वर्ष यतिपणे १०० वर्ष सगलो आउखोपालीने सिद्ध थया समस्तदुःखथको प्रक्षीणथया। एमज श्री महावीरनो पांचमो गणधर
आर्य सुधर्म स्वामी गृहाश्रमे ५० वर्ष कृद्वास्थपणे ४१ वर्ष केवलीपणे ८ वर्ष सर्वमिली १०० आउखोपालीने सिद्धथया। जंबूद्वीप मांदि ३२ विजयना ३२ भ

॥ भाषा ॥

द्विचत्वारिंश लोवलपद्यायोष्टौभवति चैतद्राशिप्रयमौलने वर्षशतमिति वैताव्यादिषूचत्वम् चतुर्थांशउद्देशः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पंचानां महाइदानी मुभयतो दृश्यव्यवस्थिता स्तेच जंबूद्वीपे शतद्वयसंख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकोत्तरस्थानवृद्धा सूचरचनां परित्यज्य

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

उयसयं उहं उच्चत्तेणं प० सहेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपट्टया एगमेगंजोयणसयं उहंउत्तेणं प०
एगमेगं गाउयसयं उहेहेणं प० सहेविणं कंचणगपट्टया एगमेगं जोयणसयं उहं उच्चत्तेणं प० एगमेगं
गाउयसयं उहेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूले त्रिस्कंजेणं प० ॥ १०० ॥ चंदप्पत्तेणं अरहा

॥ १५६ ॥

रत ऐरवतनां २ एवं ३४ दीर्घवैताव्य एह बेगुणा धात की खंड पुष्कराई मांहि तो सगला दीर्घ वैताव्य पर्वत एकेक सो गाऊ ऊंचपणें कट्टा । एतले वैताव्य पर्वत ३५ योजन ऊंचा तेहनागाऊ १०० हुया अने ऊंचपणानो चौथो भाग भूमि मांहिहोय । सगलाही अढीद्वीप मांहिला चुल्ल लघु हिमवंत वर्षधर पर्वत वर्ष कहतां चेततेहमो मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊंचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाऊ उद्देशपणे भूमि मांहि ऊंडपणें कट्टा । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिक ५ द्रहके एकेक द्रहने विहंपासे दस दस कांचन गिरिके सर्वमिली १०० थया । देवकुरुमां हि निषधादिक ५ द्रहके एकेक द्रहने विहंपासे दस दस कांचनगिरिके सर्वमिली १०० योजन देवकुरु उत्तरकुरु मिली २०० कांचनगिरि के । जंबूद्वीप मांहि बेगुणा धातकी खंड पुष्कराईमांही तेसगलाई सो सो योजन ऊंचा कट्टा । एकेकसो गाऊ उद्देशे भूमि मांहि ऊंडा एकेकसो योजन मूले एतला पिडुला कट्टा । इति १०० मो समवाय थयो ॥ १०० ॥ हिचे १५० मो समवाय लिखेके । चंद्रप्रभ आठमा अरिहंत १५० धनुष ऊंचा ऊं

॥ भाषा ॥

पञ्चाशच्छतादि वृद्धा तां कुर्वन्नाह चंदंयहेत्यादि सुगमश्च सर्वमाहादशाङ्गणिपिटकसूत्रा अवतरं ॥ १५० ॥ २०० ॥ पासायवडिसयत्ति अवतंसकाः शिखरकाः कर्ण
पूराणिवा अवतंसकाः प्रधाना इत्यर्थः प्रासादाश्च ते अवतंसकाः प्रासादानाम्वा मध्ये अवतंसकाः प्रासादावतंसकाः ॥ २५० ॥ तथा पंचधणुसतियस्सणमित्यादि

॥ टीका ॥

दिवहं धणुसयं उहं उच्चत्तेणं होत्या शरणे कप्पे दिवहं विमाणावाससयं प० एवं अञ्जुएवि ॥ १५० ॥
सुपासेणं श्ररहा दाधणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या सत्तेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्या दो दो जोय
णसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० दोदोगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० जंबूद्वीवेणं द्वीवे दोकंचणपव्यसया प० पउ
मप्पत्तेणं श्ररहा अह्माइज्जाइं धणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिसगा अह्मा
इज्जाइं जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० ॥ २५० ॥ सुमईणं श्ररहा तिसि धणुसयाइं उहं

॥ मल ॥

चपणें हुया । इग्यारमा शरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कक्षा । वारमेअच्युतकल्पे १५० विमान विहंमिली ३०० विमानके । इति १५० नो
थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखेके । सातमा सुपाखे अरिहंत २०० धनुष जं चा ऊंच पणें थया । सगला महाहिमवंत पांच रूपी वर्षध
र अठाई दोप मांहिला बेबेसो योजन जं चा ऊंच पणें हुया । बेबेसे गाऊ उडेवपणे भूमिमांहि ऊंच पणें कक्षा । जंबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्वत
ते पूठें कक्षाके ॥ इति २०० मो थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मो लिखेके । कक्षा पद्मप्रभ अरिहंत २५० धनुष जं चा ऊंच पणें हुया । असुरकु
मार ते भवनपति देवतानां प्रासादावतंसक मोटाप्रासाद २५० योजन उंचाऊंच पणें कक्षा ॥ इति २५० मो थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

॥ भाषा ॥

पञ्चधनुः शतप्रमाणस्य अंतिमसारीरियस्सत्ति चरमशरीरस्य सिद्धिद्वयस्य सातिरेकाणि त्रीणिशतानि धनुषा जीवप्रदेशावगाहना प्रज्ञप्ता यतोसौ शैलेशीकर
वसमये शरीररन्ध्रपूरणेन देहविभाग म्विमुच्य घनप्रदेशाभूत्वा देहविभागद्वयावगाहनः सिद्धिमुपगच्छति सातिरेकत्वञ्चैवं तिस्रिसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोय

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

उच्चत्तेणं होत्या अरिष्ठनेमीणं अरहा तिस्रिवाससयाइं कुमारवासमज्जे वसित्ता मुंठे जविता जाव पव
इए वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिस्रि तिस्रि जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० समणस्स जगवत्त
महावीरस्स तिस्रिसयाणि चोदसपुत्रीणं होत्या पंचधणुसइयस्सणं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स साति
रेगाणि तिस्रिधणुसयाणि जीवप्यदेशोगाहणा प० ॥ ३०० ॥ पासस्सणं अरहत्त पुरिसादा

मो लिखेके । पांचमा सुमतिनाथ अरिहंत ३०० धनुष ऊंचा ऊंच पणेंहुया । बावीसमा अरिष्ठनेमी अरिहंत ३०० वर्ष कुमारपणें वसी मुंडथया ७०० वर्ष
दीक्षापाली सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया । वैमानिक देवताना विमाननाप्राकार गढ ३०० योजनउंचा उंचपणें कछा । अमण भगवंत श्री महावीरने
३०० चौदह पूर्वधरहुया । ५०० धनुष जेहनूं शरीर होय अंतिम शरीरी होय चरमशरीरी होय चरम सिद्धियें पहुतो होय तेहने सिद्धिने विषे ३०० धनुष
भाभेरा तेउपरि ३३ धनुष जीवप्रदेशनी अवगाहणाकही । केवलीनोजेतलो शरीर होय उंचपणें तेहनां ३०० भाग करीये त्रीजे भागे नासिका कर्णादिक
ना शरीरांतर्गत पीलार पूरीये पछे २ भाग जीव सिद्धिउपर योजनने २४ मे भागे आकाश प्रदेश छाईनेरहेतो ५०० धनुष विभागोक्त शरीरना ३३३ ध
नुषभावे एतका सिद्धना जीवनी अवगाहणा जीव प्रदेश समान इति ३०० मो समवायथयो ॥ ३०० ॥ हिवे ३५० मो लिखेके पार्श्वनाथ अरिहंत पुरु

॥ भाषा ॥

होइबोधव्यां एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोभाहणाभणियत्ति ॥१॥ ३०० ॥ ३५० ॥ सव्वेविणं वक्कारपव्वएत्थादि वच्चस्कारपर्वता एकमेरुप्रतिवद्धाविंशति स्तेच वर्षधरा

॥ टाका ॥

॥ मूत्र ॥

णीयस्सं अणुठसयाइं चोदसपुव्वीणं होत्था अग्निनंदणेणं अरहा अणुठाइं धणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्था
॥ ३५० ॥ संजवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं णिसहनीलवं
तावासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे
विणं वक्कार पव्वयाणिसहनीलवंत वासहरपव्वयाणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं चत्तारि
चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेणं प० आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारिविमाणसया प० समणस्सणं जगवन्त

॥ भाषा ॥

षादानो महा सोभागी तेहना ३५० चौदह पूर्वधर हुया । चौथा अभिनंदन अरिहंत ३५० धनुष उंचा उंच पणे कछा । इति ३५० नो थयो ॥ ३५० ॥
हिचे ४०० नो लिखे के । बीजा संभवनाथ अरिहंत ४०० धनुष उंचा उंच पणे हुया । सगलाही अठाई द्वीप मांजिला ५ निषध ५ नीलवंतवर्षधरपर्वत
चेच मर्यादा कारी चार चार से योजन उंचा उंच पणे हुया । चार चार से गाउ उदध पणे उंडपणे कछा । जव्वुद्वीप मांजि सगलाइं बीस वच्चस्कार पर्व
त के ते किम महाविदेह मांजि ३२ विजय १२ अंतर नदी १६ वच्चस्कार ४ गजदंत के तो १६ वच्चस्कार अने ४ गजदंत के तो १६ वच्चस्कार अने ४
गजदंत मिली २० वच्चस्कार पर्वत कछा । निषध नीलवंत वर्षधर एह पर्वत चार चार से योजन उंचा उंच पणे कछा । सीता नदीने पासे मेरुने पासे
५०० योजन उंचा के चार चार से गाउ उदध पणे भूमि मांजि उंड पणे कछा । आनत प्राणत नवमा दशमा देवलोकने विषे ४०० विमान कछा ।

॥ १५८ ॥

सत्तो चतुःचतुशतोच्चाः ॥ ४०० ॥ ४५० ॥ शीतादिनदीप्रत्यासत्तो मेरुप्रत्यासत्तो च पञ्चशतोच्चा इति तथा सव्वेविणं वक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य

॥ टीका ॥

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्या ॥ ४०० ॥ अजितेणं अरहा अष्टपंचमाइं धणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या सागरेणं

॥ मूल ॥

रायाचाउरंतचक्कवही अष्टपंचमाइं धणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या ॥ ४५० ॥ सव्वेविणं वक्कारपट्टयासीअा सीअोअानु महानइंनु मंदरेणं वापवणुणं पंच पंच जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विणं वासहरकूळा पंच पंच जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच

अमण तपस्सो भगवंत श्रीमहावीरने ४०० वादीनी संपदा हुई । ते वादी केहवा छे । देवतायें करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने त्रिषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उक्कट्टी वादीनी संपदा हुई । इति ४०० नो समवाय संपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे । अजितनाथ अरिहंत अई पंचम साढा चार से धनुष उंचा उंच पणे हुया । सगर बीजो चक्रवर्ती राजा चिंहु दिशना अंतनो धणी ते ४५० धनुष उंचा उंच पणे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे । महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वक्कार पर्वत अने ४ गजदंत एवं २० वक्कार निषध नीलवंतने पासे उंचा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे यो जम उंचा उंच पणे ते २० वक्कार निषध नीलवंतने पासे ४०० गाउ उंडा भूमि मांहि अने मेरुने पासे ५०० सेगाउ उडिध पणे उंड पणे कछा । वर्षधर

॥ भाषा ॥

धिकं कथं लघुहिमवनि सहे एकारसमष्टमव्यकूडाइं नीलाइसुतिमुनवगं अठ्ठेकारसजहासंखं एतेषां म्यच्चगुणत्वात् वच्चस्कारकूटानि त्वशीत्यधिकचतुः शतीसंख्या
नि कथं विष्णुपञ्चमालवंते नवनवसेमेससत्तसत्तेव सोलसवक्कारेमुं चउरीचउरीयकूडाइं एतेषां म्यच्चगुणत्वात् पंचगुणत्वं जम्बूद्वीपादिमेरुपलक्षितक्षेत्राणां पंच

॥ टीका ॥

जोयणसयाइं त्रिस्कन्धेणं प० उसन्नेणं अरहा कोसलिए पंचधनुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या जरहेणं राया
चाउरंतचक्रवर्ती पंचधनुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या सोमणसगंधमादणविज्जुप्पजमालवंताणं वक्कारप
सुयाणं मंदरपस्यंतेणं पंच २ जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उच्चत्तेणं प० सत्तेविणं व
क्कारपस्यकूटा हरिहरिस्सहकूटवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं

॥ मूल ॥

र कहिये हिमवंतादिक ६ कुलगिरी तेह उपरि कूट किहां ईक ११ छे किहां ईक ८ छे तो सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पांच पांच से योजन उंचा
मूले पांच पांचसे योजन विष्कंभपणे पिहल पणे कइया । आदिनाथ अरिहंत कोमल देसना उपना ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया । भरत राजा चातुरत
चक्रवर्ती ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया । मेरु पर्वत थकी विदिग्धि थकी नीकल्या ४ गजदंत एहवा कइया सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवंत
४ एह चार वच्चस्कार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पांच पांच से योजन उंचा उंच पणे पांच पांच से गाउ उधेध पणे भूमि मांछि उंचपणे कइया । सगलाइ
वच्चस्कार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जी ने एतले एह २ कूट । गजदंत संबंधीकूट सहस्र योजन उंचा छे । ते माटे एह २ टालीने बीज
कूट पांच से योजन उंचा उंच पणे कइया । मूलने विषे पांच पांच से योजन लांब पणे पिहल पणे कइया । सगलाइ नंदनवनना कूट पणि दलकूट वर्जीने

॥ भाषा ॥

आ सर्वांस्तेतानि पंचशतोच्छ्रितानि एवंमानुषोत्तरादिष्वपि वैताश्चकूटानितु सक्तीशषट्थोजनोच्छ्रयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्वष्टयोजनोच्छ्रितानोति
हरिकूट हरिसहकूट वर्जनं त्विह तयोः सहस्रोच्छ्रयत्वा दाहच विज्ज्पः हरिकूटो हरिसहोमालयंतवक्वरो तहनंदणवणकूटो सविहाजोयणसहस्रंति ॥

॥ टीका ॥

५०० ॥ चुल्लहिमवंत कूटस्थेत्यादि इह भावार्थो हिमवान् योजनशतांश्चित स्तत्कूट अष्टशतोच्छ्रितं इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति अभिचंदेणकुलकरेत्ति

॥ मूल ॥

श्यायामविस्कंजेणं प० सत्त्वेविणं नंदणकूटावलकूटवजापंच २ जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं मूले पंच २
जोयणसयाइं श्यायामविस्कंजेणं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० ॥

५०० ॥ सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा षजोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूट
स्स णं उवरिल्लानु चरमंतानु चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितलेएसणं षजोयणसयाइं अत्रा
हाए अंतरे प० एवं सिहरीकूटस्सत्रि पात्तस्सणं अरहनु षसयावाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अप
राजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्या अजिचंदेणं कुलगरे षधणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या वासुपुज्जेणं

एतले बलकूट ते सहस्र योजन उंचा के मोटाई टालीने बीजा सातकूट पांच पांच से योजन उंचा उंच पणे मूलने विधि ५ से योजन सांवपणे पिहुलपणे
कह्या । सोधर्म ईशान पहिले बीजे कप्पे विमान पांच पांच से योजन प्रमाणे उंचा उंच पणे कह्या । इति ५ से नो समवाय बयो ॥ ५०० ॥
हिचे ६ से नो लिखेहे । समकुमार माईन्द्र कप्पे बीजा चौथा देवलोके विमान ६ से योजन उंचा उंचपणे कह्या । सप्त हिमवंत कूटनी उपरिलो चरमांत

॥ भाषा ॥

॥ १५९ ॥

अभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्मामवसर्पिण्यां सप्तानां कुलकराणां चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्पनुःशतानि पञ्चाशदधिकानि । ६०० ॥ अमणस्य भगवतोम
हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलियतानोत्तर्यः तथा अमणस्य भगवतोमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलक्ष्मिनाधुशतानोत्तर्यः अरिष्टेत्यादि देसूणाइति

अरहा ठहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंठे जवित्रा अगारानु अणगारियं पवइए ॥ ६०० ॥
यंजलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं जगवतु महावीरस्स
सत्तजिणसया होत्था समणस्स जगवतु महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होत्था अरिठ्ठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवंतपर्वधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिगाग ६ स्से योजन आवाधायें विचाले आंतरो कड्डो । एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछे उप
रि पांचसेनोकूटछे सर्वमिलौ ६ स्से योजन थया । वलौएमज छुहा शिखरि पर्वत ने उपरि कूटछे तेहनो उपरिलोभाग तेहयको पृथ्वीतल ६ स्से योजन थ
यो । पार्श्वनाथ अरिहंतने ६ स्से वादीयया तेकेहवा । देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो चिहुंभुवन लक्ष्मण लोकतेहने विषे
अपराजित जीत्वानजाय एहवा वादीनो उत्कृष्टो संपदा हुई । एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांदि चौथो कुलकर अनिचंद्रनामा ६ स्से
धनुष ऊंचा ऊंच पसे हुया । वारमा वासु पूज्य अरिहंत ६ स्से पुरुष साधे मुंडछई गृहाश्रमयको अनगार पखी पाय्या ॥ इति ६ स्से मो समवाय थयो
॥ ६०० ॥ हिंवे ७ से नो लिखेछे । ब्रह्मसांतक पांचमे छे देवलोके विमान सातसे योजन ऊंचा ऊंचपसे कड्डा । अमण तपस्वी भगवंत महा
वीरमा सातवे जिन केवलो थया । अमण भगवंत महावीरने ७ से वैक्रिय लक्ष्मिनाधखी हुया । वावोसमा अरिठ्ठनेमो अरिहंत १ से वर्ष कुमारपसे ७ से

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

चतुःपञ्चशतादिनामाम्भूतानि तत्प्रमायत्वाश्च स्यकालस्वेति महाहिमवंतत्वाद्दी भावार्थोयं हिमवान् बीजनशतद्वयोच्छ्रितस्तत्कूटं पञ्चशतोच्छ्रितमिति

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

वाससयाइं देसूणाइं केयलपरियागं पाउणिता सिधे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवंतकूटस्स णं उवरिल्लान्
चरमंतांन् महाहिमवंतस्स वासहरपट्टयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प०
एवं रुपिकूटस्सयि ॥ ७०० ॥ महासुकसहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अठजोयणस
याइं उहुं उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पजाए पुठवीए पढमेकंठे अठसु जोयणसएसु वाणमंतरन्नोमेज्ज

॥ भाषा ॥

वर्ष देशोन ५४ दिन ऊषा केवली पर्याय चारित्रपालीने संपूर्ण १ हजार वर्ष आऊखोपालीने सिद्धयया बुद्धतत्वना जाणयया सर्वदुःखयको प्रचीण थया ।
महाहिमवंतवर्षधर २ से योजन ऊंचोके ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवंत कूटके सर्वमिली भूमि लगे ७ से योजन महाहिमवंत कूटनो उपरिलो चर
मांत तेहथकी महाहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणो तल भूमिभाग ७ से योजन आवाधायें विचाले आंतरो कछो । एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊंची
रूपी पर्वत २ से योजन ऊंची सर्वमिली ७ से योजन थया ॥ इति ७ से नो थयो ॥ ७०० ॥ हिमे ८ से नोलिखेके । महा शुक्र-सहस्वार सात
से आठमे देवलोके विमान ८ से योजन उंचा उंच पणे कछा । एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड के ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ बिभाग तेह
नो पहिलो रत्नकांड १ हजार योजन पिंड के । ते मांहि १ सो योजन हठे मूंकिए १ सो योजन उपर मूंकिये विचाले ८ से योजन ते मांहि काल पिशा
चादिक वान अंतर कछा । ते केहवा के भौम कहतां भूमि संबंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यंतर देवता ते माटे वान व्यंतर भौमियक विहार

सूचीतमन्तरभवतीति ॥ ७१० ॥ इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्डं खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तच्च योजनसहस्रप्रमाणे अधश्चरिच योजनशतद्वयं त्रिमुष्ट्यान्वेष्टसु योजनशतेषु वनेषु भवा वाना स्तेच ते व्यन्तरास्य तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्वौमेयका स्तेच ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेविति विहाराश्च नगराणि वानव्यन्तरमौमेयकविहारा इति षष्ठस्यति अष्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणं देवाणंति देवे भूत्पत्यमानत्वा देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति देवगति लक्षणा कल्याणं येषान्ते गतिकल्याणा स्तेषामेवस्थिति स्वयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याणं येषान्ते

॥ टीका ॥

विहारा प० समणस्स णं जगवन् महावीरस्स अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकत्ताणाणं ठिइ कत्ताणाणं आगमेसिज्जाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्था इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए

॥ मूल ॥

कक्षा है । अमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यती अनुत्तर विमाने उपपात ऊपजवो के जेहनो एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण के जेहनो स्थिति कल्याण के जेहनो । आगामिये काले एक भवने आंतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण के जेहने उत्कृष्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी संपदा हुई । एसीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवी नो चणी समरमण्यौक भूमि भाग तेह थकी ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थकी ७ से नेच योजने तारा मंडल के तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिश्री ८ सो योजन थया । अरिहंत अरिष्टनेमी बावौसमा तीर्थंकर ने ८ सो वादीनी संपदा हुई ते माझी केहवा के देवताये करी सहित मनुष्यवली असुर भवनपत्थादिक लोक एतले त्रिहुं भुवने वादने विषे अपराजित जीत्यान जाय एहवी

॥ भाषा ॥

500

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ २६१ ॥

600

॥ भाषा ॥

निसहकूटसर्वमित्वादि इहायथावः निषधकूटस्यचतुर्विंशतं निषधचतुर्विंशतइति यथोक्तमन्तरभवतीति ॥ ८०० ॥ सर्व्वेविषंजमगेत्यादि
उत्तरकुक्षु नौलवर्षधरस्य दक्षिणतः शोतायामहानद्या उभयोः कूलयो र्ध्वं यमकानिधानौ पर्वतौस्तः तेषु पंचस्रप्युत्तरकुक्षु द्वयोर्ध्वोर्भावाद्दृश्य एवं चित्त

॥ टीका ॥

णिज्जानु नूमिजागानु नवहिंजोयणसण्हिं सवुवरिमे तारारूवे चारंचरइ निसठस्सणं वासहरपट्टयस्स उवरि
स्वानु सिहरतलानु इमीसेणं रयणप्पजाण पुढवीण पढमस्सकंठस्स वज्जमज्जदंसजाण एसणं नवजोयणसयाइं

॥ मूल ॥

ने दस योजन उपरि सूर्य चरे छे तेह उपर अस्सी योजने चंद्रमा चरे छे तेह थी ४ योजने २८ नक्षत्र छे तेह थी ४ योजने बुधनो तारोछे । तेह थी ३
योजने शुक नो तारो छे तेह थी ३ योजन बृहस्पति नो तारो छे तेहने ३ योजन उपर मंगल नो तारो छे तेहथी ३ योजन उपर शनैश्वर नो तारो छे
एवं नौ सै योजन बया । निषध वर्षधर पर्वतना उपरला शिखरना तलथकी रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो पहिलो कांडनो बहुमध्य देश भाग एह ८ सै यो
जन आवाधाये बिचाले आंतरो कछो । एतले निषध पर्वत ४ सै योजन ऊंचो अने रत्नप्रभानो पहिलो कांड हजार योजन तेहनो अर्ध ५ सै योजननो
एवं ८ सै योजन बया । एमज नौलवंतना शिखरतल थी रत्नप्रभाना रत्नकांड ना मध्यभाग ८ सै योजन जाणिवो ॥ इति ८ सै नो समवाय थयो ॥

॥ भाषा ॥

८०० ॥ इहे हजार नो समवाय लिखे छे । सगलाई ८ पैवेयक ना बिमान ३१८ छे ते हजार योजन ऊंचा ऊंच पथे कछा । सगलाई यमक
पर्वत उत्तर कुक्षुने विवे नौलवंत पर्वत नो दक्षिण पासे शोता नदी ने बिहु पासे २ यमक पर्वत छे मेरुदौठ से से करता ५ मेरुने पासे दस घाय ते दृश्य

विचित्रकूटा इति पंचसुदेवकुक्षु यमकवत्तत्वावात्पंचचित्रकूटाः पंच विचित्रकूटा इति सञ्ज्वेविणमित्यादि सर्वेपिहत्ता वैताब्द्या विंशतिः शब्दापात्यादयः सञ्ज्वेविणहरीत्यादि हरिकूट भिद्युग्रभाभिधानेगजदन्ताकारवत्तत्कारपर्वते हरिसहकूटन्तुमात्यवत्तत्कारेतानिच पंचस्वपि मन्दरेषुभावात् पञ्चपञ्चभवन्ति

॥ टीका ॥

अथाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ १०० ॥ सञ्ज्वेविणं गेवेज्जाविमाणे दस दस जोय
णसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० सञ्ज्वेविणं जमगपह्या दस दस जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउ
यसयाइं उव्वेहेणं प० मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्कंनेणं प० एवं चित्तविचित्रकूटावि जाणि
यह्वा सञ्ज्वेविणं वह्वेयह्वपह्या दस दस जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प०

॥ मूल ॥

योजन उंचा उंच पणे कट्ठा । दश दश सै कोस उद्वेध पणे भूमि मांहि दश दश सै योजन लगे आयाम विक्कंभ पणे लांबपणे पिडुलपणे कट्ठा । एमज ५
देवकुरुने विषे निवध थको उत्तरदिशि शीतोदा महानदीने विहंपासे सर्वमिलौ दशविच विचित्रकूट यमक पर्वतनी परे जाणिबा । सगलाई वृत्त वैताब्द्य
बीस के तेकिम जंबूद्वीप मांहि हिमवंत क्षेत्र मांहि रम्यक क्षेत्र ऐरवण्यत क्षेत्र मिलौ बीस एवं ४ वृत्त वैताब्द्य थया । ८ धातकौ खंडमांहि ८ पुष्करार्हमां
हि सर्वमिलौ बीस शब्दापाती प्रमुख दश दश सै योजन उंचा उंच पणे कट्ठा । दश दश सै कोस उद्वेधपणे भूमिमांहि उंडपणे मूलने विषे हजार योज
न पिडुलपणे । सगलाई समा गुर्जरदेश मांहि धानभरिवानी पालो तेहने संस्थाने संस्थित के । १ हजार योजन आयाम विक्कंभपणे कट्ठा । मेरु पर्वत ने

॥ भाषा ॥

सहस्रोच्छ्रितानि वक्खारकूडवज्जत्ति शेषवच्चस्कारकूटेष्वेव मुच्चत्वं नास्त्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवं बलकूडाविति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या
न्दिशि बलकूटाभिधानं कूटमस्ति ततः पंचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नन्दनकूडवज्जत्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिग्विदिग्व्यवस्थितानि चत्वारिंश

॥ टीका ॥

मूले दसेवजोयणसयाइं विस्कंजेणं प० सव्वत्थसमा पल्लयमंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहरिस्सहकूणावस्कार
पल्लयकूणवज्जा दस दस जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विस्कंजेणं एवं बलकूणावि
नंदणकूणवज्जा अरहाविअरिठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसव्वदुरकप्पहीणे पा
सस्सणं अरहणं दससयाइं जिणाणं होत्या पासस्सणं अरहणं दस अंतवासीसयाइं कालगयाइं जावस

॥ मूल ॥

विहंपासे चार गजदंत के आकारे पर्वतछे तेमांहि त्रिद्युप्रभ गजदंतने उपर हरिकूटछे । माल्यवंत ने उपर हरिस्सहकूटछे । एहकूट पांचसै योजननांछे
मेरु पर्वत मिलो १ हजार योजन उंचा उंच पणे कछ्छा । मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वच्चस्कार कूट वर्जो ने वच्चस्कार कूट
हजार योजन उंचा नथी तेहथी ते वर्जो ने कछ्छा । एमज ५ मेरुने त्रिषे ५ नंदन वन छे । दिग्घि विदिग्घि ने त्रिषे प्रत्येकें बलकूट नामें करी कूट छे । त
५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नंदन वन कूट वर्जो ने नंदन वनने दिषे पूर्वादिक दिग्घे विदिग्घे ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथी ए माटे
छोडीने कछ्छा । अरिहंत अरिष्टनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीक्षा एवं हजार वर्षनी सगली आयु पालीने सिद्ध थया तत्त्वना जाण थया सर्वदुः
ख प्रचीन थया । पार्श्वनाथ अरिहंतने १ हजार केवलीनी संपदा थई । पार्श्वनाथ अरिहंतना १ हजार शिष्य कालगत थकी सीधा यावत् गच्छं करी स

॥ भाषा ॥

संस्थानि नन्दनकूटानि वर्जयित्वा तानि साहसिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंतेत्यादि कुमारत्वे त्रीणिवर्षशता न्यनगारत्वे सप्तत्येवं दशशतानि पञ्चमहपुंडरी
बहवस्ति पद्मद्रुहः श्रीदेवीनिवासो हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकद्रुहो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म

॥ टीका ॥

सुदुरकम्पहीणाइं पञ्चमहपुंडरीयद्रुहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥
अनुत्तरोवत्राड्याणं देवाणं विमाणा एक्कारसजोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० पासस्सणं अरहं इक्कारस
सयाइं वेनुवियाणं होत्या ॥ ११०० ॥ महापञ्चमहापुंडरीयद्रुहाणं दो दो जोयणसह

॥ मूल ॥

वदुःख प्रक्षीण थया । लघुहिमवंत पर्वत उपर पद्मद्रुह के शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रुह के एह बिहुं द्रुह थी अने लक्ष्मी देवीना निवास भूत के ते १
हजार योजन लांबपणे कक्षा इति १ हजार नो समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे के । अनुत्तरोपपातिक देवताना विमान
इग्यारह से योजन उंचा उंच पणे कक्षा । पार्श्वनाथ अरिहंतने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवंत थया इति इग्यारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥
हिवे २ हजार नो लिखे के । महाहिमवंत उपर महापद्मद्रुह के रूपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रुह के ते क्री बुद्धि देवीना निवास भूत के ते बे हजार
योजन लांबपणे कक्षा । इति बे हजार नो समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे के । रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकांडना उपरला
चरमांत थी खोदिताच कांडनो हेठिको चरमांत तेह तीन हजार योजन अवाधायें विचाले आंतरो कक्षा । इति तीन हजार नो समवाय थयो ॥

॥ भाषा ॥

हापद्ममहापुष्परीकद्भौ महाहिमवद्भूमिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ क्रीबुद्धिदेव्योर्निवासभूताविति ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणेत्यादि अथमिहभावार्थः रत्नप्र
भापृथिव्याः प्रथमस्य षोडशविभागस्य स्वरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्डं नामरत्नकाण्डं द्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहिताक्षकाण्डं चतुर्थं तानिच प्रत्येकं
साहस्रिकाणीति त्रयाणां यथोक्तमन्तरभवतीति ॥ ३००० ॥ त्रिगिच्छिकेसरिद्रहौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिर्कोर्त्तिदेवौ निवासाविति
४००० ॥ धरणितलेइत्यादि धरणीतले धरण्यांसमेभूभागइत्यर्थः रुययनाभीर्गच्छति अष्टपणसौरुयगो तिरियंलोगस्समज्जयारंमि एसपहवोदिसाणं एसे

॥ टीका ॥

स्साइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पज्ञाए पुठवीए वयरकंठस्सउवरि
स्सानु चरमंतानु लोहियरककंठस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरं प० ॥
३००० ॥ त्रिगिच्छिकेसरिद्रहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ४००० ॥
धरणितलेमंदरस्सणं पव्वयस्स वज्जमज्जेदसज्ञाए रुययनाभीनु चउदिसि पंच २ जोयणसहस्साइं अवाहाए

॥ मूल ॥

३००० ॥ द्विवे ४ हजार नो लिखे हे । त्रिगिच्छिद्रह निषधने उपर नीलवंतने उपर केसरौद्रह ए बिहुं धृति देवौ कोर्त्ति देवौ ना निवास भूत
हे ते ४ हजारयोजन लांब पणे कक्षा इति ४ हजार नो समवाय थयो ॥ ४००० ॥ १ × १ × १ + १ × १ ×
द्विवे ५ हजार नो लिखेहे । धरणीनेविषे मेरु पर्वतनो मधुमध्य देश भाग रुचक तेहीज नाभिचक्र तुंबानी परे आठ प्रदेशौ रुचक नाभि कक्षा नाभिधकौ
चिहुदिशि विदिशिपांच पांच सहस्र योजन अवाधाये विचाले आतरो कक्षो । मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो हे तेमाटे मध्यभाग थकौ चिहुदिशि

॥ भाषा ॥

वभवेन्ननुदिसांति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंबमिवेति रुचकनाभि स्ततश्चतस्रपिदिङ्ग पंचसहस्राणि मेरु स्तस्य दशसहस्रविष्कम्भत्वादिति ॥ ५०००
००० ॥ इमीसेषमित्यादि रत्नकाण्डप्रथमं पुलककांडसप्तममिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहार्थे गाथार्धं हरिवासेइग

॥ मैका ॥

मंदरपद्मए प० ॥ ५०० ॥ सहस्सारे कप्पे ठविमाणावाससहस्सा प० ॥ ६००० ॥
इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए रयणस्स कंठस्स उवरिल्लानं चरमंतानं पुलगस्स कंठस्स हेठिल्ले चरमंते
एसणं सत्तजोयणसहस्साइं अत्राहाए अंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अठ
जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणहुत्तरहस्स पं जीवा पाईण

॥ मूल ॥

पांच पांच हजार योजन पामीये । इति पांच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे के । सहस्सार आठमे देव लोके ६ हजार वि
मान कक्षा इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखेके । एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिलो रत्नकांड तेहनो
उपरिलो चरमांत तेहथको पुलककांड सातमो तेहने हेठिलो चरमांत सातहजार योजन लगे आवाधाये बिचाले आंतरो कक्षो ॥ इति सात हजार नो
थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखेके । एह प्रत्येक हजार योजन के तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासचेव ८ सहस्र
योजन सातिरेक भांकेरा एतले एकत्रौस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कक्षा ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

॥ भाषा ॥

वीसा तुलसीबसयाकलायएकायति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणोभागे भरतस्येति दक्षिणाईभरतं तस्य जीवेवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन मूर्ध्वतः प्रतीचीन पश्चिमत आयता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहन्तीति उभयतः पूर्वापरपार्श्वयोरित्यर्थः समुद्रं लवणसमुद्रं सृष्टा शुभवतो नवसहस्राण्ययामत इहोक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽयं नवसहस्राणि सप्तशतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिहादशच कला इति ॥ ८००० ॥ १०००० ॥

॥ टीका ॥

पन्नीणायया दुहन्त समुद्रं पुष्ठा नवजोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ मंदरेणं प० ॥ १००० ॥ धरणीतले दसजोयणसहस्साइं विस्कंजेणं प० ॥ १००० ॥ जंबूद्वीवेणं द्वीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविस्कंजेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्रे दोजोयणसयसहस्साइं

॥ मूल ॥

हिवे नवहजार नो लिखेके । दक्षिणाई भरतनी जीवा मरल समा प्राचीन पूर्वथकी मांडी प्रतीचीन पश्चिमें आयत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगे सरीकिते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकही इति ८ हजारनोथयो ॥ ८००० ॥ हिवे दश हजार नो लिखेके । मरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिडुलपणे कही इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ हिवे लाख नो लिखेके । असंख्यात द्वीप मांहि मध्य जंबूद्वीप यंतस हस्र एतले लाख योजन लांबपणे पिडुलपणे कही इति लाखनो थयो ॥ १००००० ॥ हिवे बे लाखनो लिखेके । लवण समुद्र पहिला बे लाख योजन पिडुल पणे चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने बीटी रह्यो के ॥ इति बे लाख नो थयो ॥ १००००० ॥ हिवे त्रिण लाख नो लिखे के ।

॥ भाषा ॥

१००००० ॥ २००००० ॥ ३००००० ॥ ४००००० ॥ सवनेत्यादि तत्र जम्बूद्वीपस्य लक्षं चत्वारिच लवणस्येति पञ्च ॥ ५००००० ॥

॥ टीका ॥

चक्रवाल विस्कन्धेणं प० ॥ २००००० ॥ पासस्सणं अरहणं तिस्रसयसाहस्सीणं सत्तावी
संचसहस्साइं उक्कोसिया सात्रियासंपया होत्या ॥ ३००००० ॥ धायइखंणेणं दीवे चत्तारि
जोयणसयसहस्साइं चक्रवालविस्कन्धेणं प० ॥ ४००००० ॥ लवणस्स णं समुद्रस्स पुरत्थिमिल्लान
चरमंतानु पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पंचजोयणसयसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० ॥ ५००००० ॥
जरहेणं राया चाउरंतचक्रवट्टी ठपुवसयसहस्साइं रज्जमज्जे वसित्ता मुंठे नवित्ता अगाराणु अणगारियं

॥ मूल ॥

पार्श्वनाथ अरिहंतने त्रिण लाख उपरि वली सत्तावीस हजार उत्कृष्टी आविकानी संपदा हुई ॥ इति त्रिण लाखनो थयो ॥ ३००००० ॥

॥ भाषा ॥

हिंवे चार लाखनो लिखे के। बीजो धातकी खंड द्वीप चार लाख योजन चक्रवाल विष्कंभपणें पिहलपणें कछो ॥ इति चार लाख नो थयो
॥ ४००००० ॥ हिंवे पांच लाखनो लिखेके। लवण समुद्र ना पूर्व चरमांत थकी पश्चिम चरमांत पांच लाख योजन अवाधाये विचाले आं
तरो कछो ॥ पूर्व लवण समुद्र ना बेलाल लीजे अने पश्चिम समुद्र लवणपणि बेलाल त्रिचे जंबूद्वीप लाख सर्वमिली पांच लाख योजन थया ॥ इति पांच
लाखनो थयो ॥ ५००००० ॥ हिंवे छ लाखनो लिखेके। श्री आदोखरनो बृह पुत्र भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती सतहुत्तरी पूर्व लाख वर्ष कु
मारपणें रक्षा छ लाख पूर्व महाराज पणें वसीने मुंड थया अगर थकी अनगारी थया। एतले यतीपणो पाम्या। इति छ लाखनो थयो ॥ ६००००० ॥

६००००० ॥ जंबूद्वीपस्येत्यादि तत्रैव जंबूद्वीपस्य द्वे लवणस्य चत्वारिधातकी खण्डस्येति सप्तलक्षाण्यन्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ७००००० ॥

८००००० ॥ अजितस्यार्हतः सातिरेकाणि नवावधिज्ञानि सहस्राण्यतिरेकश्च चत्वारिंशत्तानि इदं सहस्रस्थानकमपि सप्तलक्षस्थानकाधिकारे यदधी

पञ्चदश ॥ ६००००० ॥ जंबूद्वीपस्सणं द्वीपस्स पुरत्यिमिल्लानु वेइयंतानु धायइखंरुचक्काया
लस्स पञ्चत्यिमिल्ले चरमंते सत्तजोयणसयसहस्साइं अत्राहाए अंतरे प० ॥ ७००००० ॥ मा
हिंदेणं कप्पे अठविमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ८००००० ॥ अजियस्सणं अरहनु साइरेगा
इं नवनुहिनाणिसहस्साइं होत्या ॥ ९००० ॥ पुरिससीहेणं वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं

हिंवे सात लाखनो लिखेहे । जंबूद्वीपना पूर्वदिशिना वेदिकानां प्रांतयकौमांडी धातकी खंड चक्रवालरूप तेहनो पश्चिम चरमांत सातलाख योजन आवा
धायें विचाले प्रांतरो कछो तेकेम । जंबूद्वीप १ लाख योजन लवण समुद्र २ लाख धातकीखंड ४ लाख सर्वमिली ७ लाख योजन थया । इति ७ लाखनो
थयो ॥ ७००००० ॥ हिंवे ८ लाखनो लिखेहे । माहेंद्र चौधे कल्पे ८ लाख विमान कछा ॥ इति ८ लाख नो थयो ॥ ८००००० ॥
हिंवे ९ हजार नो लिखेहे । अजितनाथ अरिहंतना सातिरेके ४० अधिक ८ सहस्र अवधि ज्ञानी हुआ । लाख लगे संस्था कह वली उपराठा ८ सहस्र
कछा ते सूचनी गति विविध हे एही अववा लेखकने प्रमाद थो जाणिवे ॥ इति ९ हजारनो थयो ॥ ९००० ॥ हिंवे दस लाखनो लिखे हे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तत्तत् सहस्रशब्दसाधर्म्या द्विचित्रत्वाद्वा सूत्रगते लेखकदोषादिति ॥ १००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ सम
 शेत्यादि किल भगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिस्त्रयज्या म्यालितवानित्येकोभवः ततो देवोभूदिति द्वितीय स्तनीनन्दनाभिधानो राज
 सूनुः कृत्वायनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासक्षपणेन तप स्तप्त्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभव
 दिति चतुर्थः सप्तो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुक्ष्यावुत्पन्न इति पञ्चम स्तत स्यशौतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्ड
 ग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुक्ष्याविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेति नाम्ना देवेन संहृत स्तौर्यकरतया च जातइति षष्ठः उक्तभव

॥ टीका ॥

सह्याउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ते ॥ १००००००० ॥ सम
 णेज्जगवंमहावीरे तित्यगरज्जवग्गहणान् ठंठं पोहिलज्जवग्गहणे एगं वासकोट्ठिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता

॥ मूल ॥

धर्मेनाथ कालीन पुरुषसिंह पांच मो वासुदेव दश लाख वर्ष लगे सगलो आउखो पालीने पांचमो धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणे ऊपनोछे ॥ इतिदश
 लाख नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे । अमण भगवंत महावीर तीर्थंकर पणो उपाज्जीं ते भवनायणहथकी एतले तेभवथकी
 पाटिलाना भवयहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दोजापालीने आठमें देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणे ऊपना ते छठो भव केम श्रीमहावीर
 नो जीव पूर्व भवे पोटिलनाम राजा हुआ ओ एक भव १ तिहां कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ ओ बीजो भव
 तिहां थो बीजे भवे कृत्वाय नगरीये नंद राजा हुआ तिहां गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या । पछे १ लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ६ से ४५

॥ भाषा ।

ग्रहणं हि विना नान्यद्भवग्रहणं षष्ठं श्रूयते भगवत इत्येतदेव षष्ठभयग्रहणतया व्याख्यातं यस्माच्च भवग्रहणादिदं षष्ठं तदप्येतस्मात्षष्ठमेवेति सुष्टूच्यते तीर्थक
रभवग्रहणात्षष्ठे षोडशभवग्रहणे इति ॥ १००००००० ॥ उसभेत्यादि उसभसिरिस्सत्ति प्राकृतत्वेनश्रीऋषभ इति वाच्येव्यत्ययेननिर्देशः कृतः
एकसागरापमकोटाकोटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः किञ्चिक्ताधिकैरुनाप्यप्यत्वा द्विपस्या विशेषितोक्तेति ॥ + ॥ इहयएतेअनंतरं संख्याक्रमस
म्बन्धमात्रेण सम्बन्धविविधा वस्तुविशेषाउक्ता स्तएवविशिष्टतरसम्बन्ध संवडा हादशांगे प्ररूप्यन्तइति हादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल
संगेइत्यादि अथ चोत्तरोत्तरसंख्याक्रमसंवडार्थं प्ररूपणमनन्तरमकारि साप्रतंसंख्यामात्रसंवडपदार्थं प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसंगेइत्यादि तच्चश्रुतपरमपुरुष

॥ टीका ॥

सहस्सारे कप्ये सवठ विमाणे देवत्ताए उववन्ते ॥ १०००००००० ॥ उसन्नस्स जगवन्
महावीरस्स य एगासागरोवमकांठाकोठी अवाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिठए

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

मास क्षमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुया । तिहां थकी पांचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदेव ब्राह्मणनी भार्या देवानंदाने कूखेंजप
ना ५ तिहां थकी ८३ मे दिने खत्रीयकुंड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आजाये हरिणे गमेथी देवे त्रिशला देवीनी कूखें अवतस्या एह छठो भव
जाणवो इति एक कोटी नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिंवे सागरापमनो लिखे छे । श्री आदिनाथ भगवंतने छेहला श्रीमहावीरने वैयालीस
सहस्र ऊणी एक सागरापम कोडा कोडी आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो । एकदकी मांडी कोडा कोडीनी संख्या कह्यो ॥ ॥ हिंवे हादशांग

स्वांगानौ वाङ्मानि द्वादशाङ्गानि आचारादौनि यस्मिंस्तद्वादशांगं गुणानांगणोऽस्यास्तीतिगणी आचार्यस्तस्यपिटकमिवपिटकं सर्वस्वभाजनं गणपिटकं अथ वा गणिशब्दः परिच्छेदवचनं स्तथाचोक्तम् आचारमिच्छहीर जंनाओहीइसमणधम्मोउ तम्हाआचारधरो भस्सइपढमंगणिठ्ठाणं परिच्छेदस्थानमित्यर्थः ततश्च परिच्छेदसमूहो गणपिटकमन्त्रचैवंपदघटना यदेतन्नपिटकं तत्तद्वादशांगं प्रश्नसम् तद्यथा आचारः सूत्रकृतइत्यादि सेकितमित्यादि अथ कितदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचारः आचरणमाचारः आचार्यत इति वा आचारः साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थः एतत्प्रतिपादकोऽग्न्योप्याचारएवोच्यते आचार्येणंति अनेनाचारेण करणभूतेन अमणानामाचारोऽव्याख्यायत इति योगः अथवा चारेधिकरण भूते णमितिवाक्यालंकारे अमणानां तपःश्रीसमालिं

॥ टीका ॥

प० तं० आचार्ये सूयगळे ठाणे समवाए विवाहपन्नती पायाधम्मकहान उवासगदसान् अंतगळदसान्

॥ मूल ॥

अणुत्तरोववाइयदसान् परहावागरणाइं विवागसुए दिठ्ठिवाए सेकितं आचार्ये आचार्येणं समणाणं निग्गं

नो वर्णनं करे हे । इग्यारह अंग बारमो पूर्व एवं श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अंगसरीखाअंग वली केहवाहे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखी दर्शन चारिच तेहनो स्थान कह्यो । तेकहेहे । आचारांग १ सूयगळांग २ ठाणांग ३ समवाय ४ विवाहपन्नती एतले भगवतोसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपास कदशा ७ अंतगडदशांग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ स्युंते आचार वस्तु अथवा कोण ते आचार । आचरवो ते आचार । अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनविधि तेहनो प्रतिपादक ग्रंथ पणि आचार कहिये ते आचारांगने विधे अमण तपस्वीतेह निग्रंथ वाञ्छाभ्यंतर ग्रंथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिच्चा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनोफलकर्मच

॥ भाषा ।

गितानां निर्घन्यानां सवाद्याभ्यन्तरगुणरहितानां अमणा निर्घन्याएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं मुक्तश्च निगन्धसङ्कतावस
 गेरुयभाजीवपंचहासमणति तत्राचारो ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरोभिच्चाग्रहणविविलक्षणी विनयोज्ञानादिविनयः वैनिधिकं तत्फलं कर्मचयादिस्थानं
 कायोत्कर्णोपवेशनशयनभेदा स्त्रिरूपं गमनं विहारभूम्यादिषु गतिचक्रमणमुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरणं प्रमाणं भक्तपानाभ्यवहारोपध्या
 देर्मानं नियोजनं स्वाध्यायप्रत्युपेक्षणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन आधासंयतस्य भाषासत्याऽसत्या मृषारूपाः समितयैर्यासमित्याद्याः पञ्च गुप्तयोमनोगुप्या
 द्यस्त्रिसुः तथाच शय्याचवसतिरूपविषय वस्त्रादिकोभक्तं चाशनादिपानं चोष्णोदकादौतिद्वंद्वं स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लक्षणानां दोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग
 मोत्पादनैषणा विशुद्धिस्ततः शय्यादीनामुद्गमादि विशुद्धाशुदानां तथा विधकारणे ऽशुदानांचग्रहणं शय्यादिग्रहणं तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु

॥ टीका ॥

थाणं श्यायारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंक्रमणपमाणजोगजुंजणज्ञासासमितिगुह्रीसेज्जोवहिजत्तपाणउ

॥ मूल ॥

य स्थापना कायोत्कर्णं गमनं विहारं भूमिचालनो । चंक्रमणं उपाश्रयांतरे उपाध्यायादिकने अर्थे भूमिवो । प्रमाणं भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग
 योजनं प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजनो व्यापारिवो । भाषासंयतं मिश्रं मृषाभाषात्यागरूपं समिति र्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । शय्यावसतिउप
 धि वस्त्रादिक । भात अशनादिक पान उश्रादिक पाणो उद्गमदोष १६ उत्पादनदोष १६ एषणा गवेशणा लक्षण दोषनो विशोधी अभाव । शुद्धभक्तपानादि
 कनो ग्रहिवो । तथा कारणे अशुद्धनो शय्यादिकनो ग्रहिवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधानं ते १२ वारे भेदे तप । एहसर्वं सुप्रशस्तभलो
 जेह आचारां न विषे कस्सो जायहे । ते आचार संक्षेपे करी पांच प्रकारे कस्सो । तेकहंहे । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका

॥ भाषा ॥

चास्तपउपधानं द्वादशविधतपः तत आचारश्च गोचरश्चेत्यादि यावद्भुक्तयश्च शय्यादिगृहणं चतुरतानिच नियमाश्च तपउपधानं चेति समाहारद्वंद्वं स्तुतत्सुप्रश-
स्तं चेति कर्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिद्यते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्र क्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधानं तत्सर्वंतत्प्राधान्यस्यापनार्थमेवेत्यवसेय-
मिति सेसमासइत्यादि स आचरोयमधिकृत्य ग्रन्थस्याचारइतिसंज्ञाप्रयत्नते समासतः संक्षेपतः पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तयथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्र ज्ञानाचारः शु-
तज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्ववतांव्यवहारो निःशंकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि-
त्यादि पालनात्मको व्यवहारः तपः आचारो द्वादशविधतपोविशेषानुष्ठितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषु वीर्यस्यागोपनमिति आचारंति आचारग्रन्थस्य ण-
मित्यलङ्कारे परित्तासंख्येया आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ताभवन्तीत्यर्थः कावाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा अवसर्पिण्युत्सर्पिणीकालं वा प्रतीत्यपरीतेति संख्येयान्यनु-

॥ टीका ॥

गमउप्यायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धगृहणवयणियमतत्रोवहाणसुप्यसत्यमाहिजाइसे समासतु पंचविहो प०
तं० णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे श्यायारस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुनंगदारा
संखेज्जानुपणिवत्तीनु संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जानुनिज्जुत्तीनु सेणंअंगठयाए पढमेअंगेदो

॥ मूल ॥

रे १ दर्शनाचार निःशंकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदे तपनो करिवो ४ वीर्या-
चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारांगग्रन्थना संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्या तेह नो
द्वार उपक्रमादिक । संख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मत्तांतर तेप्रतिपत्ति । संख्यातावेढा छंद विशेषर संख्याता श्लोक अनुष्ठुप आदिक । संख्याता

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामैव संख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगोचरत्वाच्च संख्येज्जाओपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मत्तान्तराणीत्यर्थः
प्रतिमाद्यभिगृहविशेषा वा संख्येजावेदत्ति वेष्टकाश्चन्द्रोविशेषा एकार्थप्रतिवडवचनसंकलिकेत्यन्ये संख्येज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दांसि संख्यातानिर्यु
क्तयः निर्युक्तानां सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थानां युक्ति घटनाविशिष्टाया योजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिंश्चवाचे युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एताश्च निचे
पनिर्युक्त्याद्याः संख्येया इति सेणमित्यादि स आचारोणमित्यलङ्कारे अंगार्थतया अङ्गलक्षणवस्तुत्वेन प्रथममंगं स्थापनामधिकृत्य रचनापेक्षया तु द्वादशमंगं प्रथमं
पूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वक्रियमाणत्वादिति द्वौ श्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलक्षणौ पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्यपरिष्ठा १ लीग विजओ २ सौओसणिज्ज
सम्मत्तं ४ आवन्ति ५ धुयविमोहो ७ महापरिष्ठा ८ वहाणसुयं ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडेसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उ
ग्गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्तो १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्धः एवमेतानि निगोश्ववर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देश
नकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्याध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवंशस्त्रपरिज्ञादिषु पञ्चविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सप्त १

सुयस्कंधापणवीसंञ्जयणा पंचासीइं उद्देशगकालापंचासी समुद्देशगकाला अष्टारसपदसहस्साइं पदग्गे

॥ मूल ॥

निर्युक्ति सूत्रे विषे क्वहिवा पणियाप्या अर्थनो जोडिवोते युक्ति विशिष्ट घटनाये योजवो तेनिर्युक्ति । ते आचारांग अंगार्थपणे अंगलक्षण वस्तुपणे । पहिले
पणे वेश्रुतस्कंधे पंचवीस अध्ययनके तेकेहा सत्यपरिष्ठा १ लीग विजय २ सिओसणिज्जं ३ सम्मत्तं ४ आवन्ति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिष्ठा ८ वहाण
सुयन्ति ९ इति प्रथम स्कंध ॥ पिंडेसण १ सिद्धि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्ति १६ इति

॥ भाषा ॥

षट् २ चतु ३ चतुः ४ षट् ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ रेकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ संख्याता उद्देशनकालाः षोडशस्वध्ययने
 शु श्रेषेषु नवसु नवैवेति इह संग्रहगाथा सत्तयकृच्चउचउरो कृपंचअष्टेवसत्तचउरोय एकारातिदिदो दोदोसत्तेकएकीयत्ति एवंसमुद्देशनकाला अपिभणितव्याः
 अष्टादशपदसहस्राणि पदाग्रेणप्रज्ञप्तः इहयत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं ननुयदि द्वौश्रुतस्कन्धौ पंचविंशतिरध्ययनान्यष्टादश पदसहस्राणि पदाग्रेणभवन्ति ततो
 यद्गणितं नवबंभचेरगुत्तीभो अठारसपदसहस्रिभोवेओत्ति तत्कथं नविरुध्यते उच्यते यत्तद्विंशतस्कन्धावित्वादि तदाचारस्य प्रमाणं अणितं यत्पुनरष्टादश
 पदसहस्राणि तत्रवन्नवचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाणं विशेषार्थबद्धानिचसूत्राणि गुरुपदेशतस्तेषामर्थोवसेय इति संख्येयानि अक्षराणि वे
 ष्टकादीनां संख्येयत्वात् अनन्तागमाः इहगमा अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदादित्यर्थः तेचानन्ताः एकस्मादेवसूत्रात्तद्वर्गविशिष्टानंतधर्मात्मकवस्तुप्रतिपत्तेः

॥ टीका ॥

णासंरकेज्जाश्रकरा श्रुणंतागमा श्रुणंतापज्ञवा परिज्ञातसाश्रुणंताथावरा सासयाकळानिवष्टाणिकाड्या

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

द्वितीयश्रुतस्कंध ॥ ८५ शास्त्र परिज्ञादिक २५ अध्ययनने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ षट् २ चतुः ३ चतुः ४ षट् ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ एकादश
 १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ एतले पहिले २श्रुतस्कंधना ८ अध्ययनना ४४ उद्देशा नवमो अध्ययन उद्देशा १६ विच्छेदयथा । एवं ६० उद्दे
 शा पहिले श्रुतस्कंधे अने बीजे २५ सर्व मिली ८५ उद्देशा थया । कालते अवसर जेतला उद्देशाना काल अवसर तेतला समुद्देशाना अवसर कळ्या । अठारह
 सहस्रपद पदाग्रे पदने परिमाणे जिहां सूत्रार्थनो समाप्ति होय तेपदकहिये ते प्रथम श्रुतस्कंधे नव अध्ययनना १८ सहस्र पद । संख्याता अक्षर लिपिन्यास
 अनन्तागमाअर्थपरिच्छेद । अनन्तापर्यव अक्षर पदार्थना पर्याय भेद जिहां परित्ता एतले अनन्ता नही एहवाचसजीववेरिंद्रियादिक कहीये । अनंतस्थावर

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

अन्येतुष्याचक्षते अभिधानाभिधेयवशतोंगमाभवन्ति तेचानन्ताः अनन्ताः पर्यायाः स्वपरभेदभिन्ना अक्षरपदार्थपर्याया इत्यर्थः परीतास्त्रसाग्राख्ययन्त इति योगः असन्तीति असाहीन्द्रियादयस्तेच परीतानानन्ता एवरूपत्वादेव तेषां अनन्ताः स्यावरावनस्पतिकांयसहिताः किंभूताएतेसासयाकडानिवद्धा निकाइयत्ति शास्वताः द्रव्यार्थतया अविच्छेदेन प्रवृत्तेः कृताः पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथाभावाप्ते निवद्धाः सूत्रएवग्रथिता निकाचिताः निर्युक्तिसंग्रहणि हेतुदाहरणादिभिः प्रतिष्ठिताजिनैः प्रज्ञप्ता भावाः पदार्था अन्येष्वजीवादयः आधविज्जंतिति प्राकृतगैत्याग्राख्यायन्ते सामान्यविशेषाभ्यां कथ्यन्तइत्यर्थः प्रज्ञाप्यन्तेनामादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते नामादिस्वरूपकथनेन यथापज्जायाणभिधेयमित्यादि दर्श्यन्ते उपमामात्रतः यथागौर्गवयस्तथा इत्यादि निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टान्तोपग्यासेन उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यांसकलनयाभिप्रायतोवेति सांप्रतमाचाराङ्गग्रहणफलप्रतिपादनायाह सेएवमित्यादि सद्व्याचारांगग्राहको

जिणपस्सत्ताजावा आधविज्जंति पस्सविज्जंतिपरूविज्जंति नंदिस्संति उवदंसिज्जा सेएवंगाए एवंविस्साए ए .

वनस्पति सहित एह भाव । केहवाहे द्रव्यार्थनये करी अविच्छेदपणे शास्वताहे वली केहवाहे कडाकहतां पर्यायार्थपणे प्रतिसमें अन्यथापणिहोय निवद्धासू च थकी गूंथा । निर्युक्ति संग्रहणी हेतु उदाहरणे करी निकाचित निविड पणे प्रतिध्या । जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कद्धा । एहवा भाव पदार्थ अनेरापणि अजीव पदार्थ जिहां सामान्यविशेष पणे कहिये । नामादिक भेदना कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये । उपमाने करी देखाडिये । यथा गोस्त वागवय हेतु दृष्टान्तोपग्यासे करी निर्देसियेदेखाडिये । उपनय निगमने करी सकलनये करी उपदेसिये । ते आचारांग एहवोके । एम एहभणी ने ज्ञाता

॥ टीका ॥

॥ १७० ॥

गृह्यत एवं प्रायति अस्मिन्भावतः सम्यगधीते सत्येवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाच्चतिरेकात् स एव भवतीत्यर्थः इदंच सूत्रं पुस्तकेषु न दृष्टं न द्यां तु दृश्यते
इतीह व्याख्यातमिति एवं क्रियासारमेव ज्ञानमिति व्यापनार्थं क्रियापरिणाममभिधाया धुना ज्ञानमधिकृत्याह एवं प्रायति इदमधीत्य एवं ज्ञाता भवति
यथैवेहोक्तमिति एवं विनायति विविधो विशिष्टो वा ज्ञाता विज्ञाता एवं विज्ञाता भवति तत्रांतरोपपत्त्या ज्ञाता भवति तत्रांतरोपपत्त्या ज्ञाता भवति प्रधानतर इत्यर्थः एवमित्यादि
निगमनवाक्यं एवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्ररूपणता आख्यायते इति चरणं व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधं करणं पिण्ड
विशुद्धिं समित्याद्यनेकविधं तयोः प्ररूपणता प्ररूपणैव आख्यायते इत्यादि पूर्ववदिति सेतुं आचार्येति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारोयः पूर्वदृष्ट इति
१ ॥ सेकितं सूयगडे सूचायां सूचनात् सूत्रं सूत्रेण कृतं सूत्रकृतमिति सुश्रूयते सूयगडेणंति सूत्रकृतेन सूत्रकृते वा स्वसमयाः सूच्यंते इत्यादिकं तं तथा

वंचरणकरणपरूवणया श्लाघविजंति परूविजंति नंदिसिजंति उयदंसिजंति सेतुं आचार्यो ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

सेकितं सूयगडे सूयगडेणं ससमयासूडजंति परसमयासूडजंति ससमयपरसमयासूडजंति जीवासूड

॥ भाषा ॥

जाण होय । एवं विस्मतेति विज्ञाता होय अन्यथाशन शास्त्रना जाणते ह्यथको पिण्ड घणो जाण होय । एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा
येकरो चरण श्रमण धर्म करण पिण्डविशुद्धि तेहनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये प्ररूपिये निर्देशीये उपदेशिये पूर्ववत् । एह आचारांगकहो ॥ १ ॥
अथ सूत्रे सूत्रजतांग । सूत्रसूचवाथको सूत्रेकोयो ते सूत्रकृत जेणे सूयगडांग स्वसमयजिनमत सूचविये कहिये परसमयपरमत सूचवीये कहिये जीवपदार्थ सूचवी
ये चेतनालक्षण जीव एहवो कहिये । अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहां मूचवीये जीव अजीव विहंपदार्थ जिहां कहिये पंचास्तिकायमयस्तिकमूचविये

स्वकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जराबंधमोक्षावसानाः पदार्थाः सूच्यन्ते तथा समणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमयः स्थाप्य
तदतिवाक्यार्थः तत्र श्रमणानां किंभूतानां मच्चिरकालप्रव्रजितानां चिरप्रव्रजिताहि निर्मलमतयोर्भवत्यहर्निशशान्तिपरिचया हृदयुतसंपर्काच्चेति पुनः किंभू
तानां कुसमयमोहमद् मोहियाणंति कुक्षितः समयः निहन्तायेषांति कुसमयाः कुतार्थिकास्तेषांमोहः पदार्थेष्वयथावबोधः कुसमयमोहस्तस्माद्योमोहः श्रोत्र
मनोमूढता तेनमतिर्मोहिता मूढतांनोता येषांति कुसमयमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयाः कुमिहतास्तेषांमोहः संघो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमो
होमूढतातेनमतिर्मोहिता येषांति कुसमयोघमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयानां कुतार्थिकानां मोघोमोघोवा शुभफलापेक्षया निष्फलोयोमोहस्तेनमति
र्मोहिता येषांति कुसमयमोघमोहमतिर्मोहिताः कुसमयमोहमतिर्मोहितावा तेषांतथासंदेहा वस्तुतत्त्वमतिशयसयाः कुसमयमोह २ मतिर्मोहितानामि

ज्जांति अजीवासूडज्जांति जीवाजीवासूडज्जांति लोगेसूडज्जांति अलोगेसूडज्जांति लोगालोगेसूडज्जांति सूअ
गळेणं जीवाजीवे पुण्यपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोक्षावसाणापयत्यासूडज्जांति समणानां अचिरकालपह
इयाणं कुसमयमोहमद्मोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाणं पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

पंचास्तिकायरहितअलोक सूचयिजे लोकालोक बोहंसू उवोये स्यगडांगसूत्रे चेतनावंतजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते
पाप ४ कर्मनोसंचिओ तेष्वाअत्र ५ कमेनिरोध तेसंवर ६ कमेनो निर्जरवो वेमलोकखिवो तेनिजर ७ नवोक्कर्म उपार्जवो तेबंध ८ सकलकर्मयकी मूक्काविओ
ते मोच ९ मोचके अवसानकेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये । श्रमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थे स्वसमय स्थापिये ते श्रमण केहवाळे । अचिरकाल

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तिविशेषणसाविध्यात् कुसमयेभ्यः सकाशात् येषान्ते सन्देहजाताः तथासहजा त्वभावसम्पन्ना अकुसमयश्रवणसम्पन्ना बुद्धिपरिणामात्मनिस्वभावात् संश-
 योजातो येषान्ते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिताः सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संशयिताश्च ये ते तथा तेषां श्रमणानामिति प्रक्रमः किमतश्चाह पाप-
 करो विपर्ययशंसयात्मकत्वेन कुक्षितप्रवृत्तिनिबन्धनत्वादशुभकर्महेतु रतएव च मलिनः स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्मलोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना-
 यनिर्मलत्वाधानाय पापकर्मलिनमतिगुणविशोधनार्थं असीयस्सकिरियावाइयसयस्सत्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावाइयतस्य व्यूहं कृत्वा स्वसमयः स्थाप्यत-
 इतियोगः एवं शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तत्र न कर्त्तारंविना क्रियासम्भवतीति ता मात्मसमयवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिनः ते पुन-
 राभास्यस्त्वितिपतिलक्षणा अमुनोपायेनाशीत्यधिकस्य गतस्य संख्याविज्ञेयाः जीवाजीवाश्रवणसम्बरनिर्जरापुण्यापुण्यमोक्षादयान्नवपदार्थान् विरचय्य-
 परिपाठ्या जीवपदार्थस्याधः स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरधो नित्यानित्यभेदौ तयोरप्यधः कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदाः पञ्च न्यसनीयाः पुन रित्यं वि-
 कल्पाः कर्त्तव्या अस्तिजीवः स्वतोनित्यः कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थश्चायं विद्यते खल्व्वात्मास्वेनरूपेण नित्यश्च कालवादिनः उक्तेनैवाभिलापेन द्विती-

असीयस्सकिरियावाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तठीए अस्माणियवाईणं वत्तीसाए वेणइय

गौ थोडाकालनौके प्रवज्या जेहनौ एतले नवदोदितके वलौ तेथमणकेहवाके कुक्षितके समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतेहनौ मोह सत्य भावना
 ये विषे अयथार्थांश बोध तेहथको ऊपनो मोह मूढता तेणेकरी मति मोहित के जेहनौ एहवाके । कुक्षितशास्त्र श्रवणथकी सन्देह ऊपनोके । तथा सहज
 स्वभावनौ बुद्धिमति तेहनोपरिणामतेहथको संशयऊपनोके जेहने एहवा नवदोदोत श्रमण साधुके तेहने एहवो कहे । पापनो करणहार मइलो जे म

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

बोविकल्प ईश्वरकारिणिकल्प द्वितीयः आत्मवादिनश्चतुर्थो नियतिवादिनः पञ्चमः स्वभाववादिनः एवं स्वत इत्यपरित्यजता सत्त्वाः पञ्चविकल्पाः परत इत्यनेनापि पञ्च संभ्यगते नित्यत्वापरित्यागेन चैते दश विकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैवेत्येकत्र विंशतिर्जीवपदार्थेन सत्त्वा अजीवादिष्वप्यष्टास्त्रैवमेव प्रतिपदं विंशतिविकल्पानां मतोविंशतिर्नवगुणा शतमशौत्युत्तरक्रियावादिनामिति चउरासीए अकिरियवाईणंति एतेषांच स्वरूपं यथा नंद्यादिषु तथावाच्यं नवरमेतद्वास्याने पुण्यापुण्यवर्जाः सप्तपदार्था स्थाप्यन्ते तदधः स्वतः परतश्चेति पदद्वयं तदधः कालादीनांषष्टीयदृच्छा न्यस्यते ततश्च नास्तिजीवः स्वतः कालत इत्येको विकल्प एवमेते चतुरशोतिर्भवंति सत्तद्गोएअन्नाणियवाईणंति एतेपि तथैव नवरं जीवादी अवपदार्था नुत्पत्ति दशमा नुपरि व्यवस्थाप्याधः सप्तसदादयः स्थाप्याः तद्यथा सत्त्व मसत्त्वं सदसत्त्व मवाच्यत्वं सदवाच्यत्व मसद्वाच्यत्वं सदसदवाच्यत्वमिति तत्र कोजानाति जीवस्य सत्त्व मित्येकोविकल्पः एवमसत्त्वमित्यादि तत एते सप्तनवका स्त्रिषष्टिरुत्पत्ते स्वाद्याएव चत्वारोवाच्या इत्येवं सप्तषष्टिरिति तथावत्तीमाएवेणद्वयवाईणंति एतेचैवं सुरमृपतिज्ञातियति स्थविराधममाटपितृणांमत्येकं कायवाचनोदानैश्चतुर्नां विनयः कार्य इत्यभ्युपगमवन्तोद्वात्रिंशदिति एवं चैतेषां चतुर्णां वादिप्रकाराणां मूलने त्रीणि त्रिषष्ट्यधिकानि अन्यदृष्टितानि भवंत्यत उच्यते तिषष्टमित्यादि वृहंकिञ्चित्ति प्रतिक्षेपं कृत्वा स्वसमयो जैनसिद्धान्तः स्थाप्यते यतएवं सूत्रकृतेन विधीयते अतस्तत्सूत्रार्थयोः स्वरूपमाह नाणेत्यादि नाना अनेकविधा बहुभिः प्रकारै रित्यर्थः दिङ्मतवयणनिस्सारंति स्याद्वादिना पूर्वपक्षीकृतानां प्रवादिना स्वपक्षस्थापनाय

॥ टीका ॥

ति गुण बुद्धि पर्याय तेहने विशोधिवाने अर्थ पापकरे मलिन मने विशोधनार्थ अशीअधिक १०० क्रियावादी तेहने ब्रूहकरीने स्वसमय स्थापीये एहक्रिया पद आगलि समजे लेवो कर्ताविना क्रिया पण्यपापरूप नहोय तथा एहवो जेवदे तेक्रियावादी जीवने क्रिया पुण्यपापरूप नही लागती ते अक्रियावादी

॥ भाषा ॥

यानि दृष्टान्तवचना ग्युपलक्ष्यत्वा हेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्यं परेषां मतमिति गम्यते सुष्ठुपुनरपि प्रतिषेधणीयत्वेन दर्शयन्ती प्रकटयन्ती
 तथा विविधसाक्षी सत्पदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तरानुगमनीयानेकजीवादितत्वानां विस्तरप्रतिपादनं विविधविस्तरानुगमः तथा परमस
 ज्ञावो त्वंतसत्यता वस्तूना मैरुम्यमित्यर्थं स्तावेव गुणौ ताभ्यां विशिष्टौ विविधविस्तरानुगमपरमसद्भावगुणविशिष्टौ मोक्षपहोयारगति मोक्षपथावतारको
 सम्यग्दर्शनादिषुपाणिनाम्प्रवर्तका वित्यर्थः उदाररति उदारौ सकलसूत्रार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा ऽज्ञानमेव तमोधकारमात्यन्ति
 कांधकार मयवा प्रकृष्टमज्ञानमज्ञानतमं तदेवांधकार अज्ञानतमोधकारम्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वमार्गेष्विति गम्यते दीवभूयस्ति प्रकाश

वाङ्मणं तिरहंते सठाणं अणदिष्ठियसयाणं बूढकिञ्चा ससमएठाविज्जंति णाणादिष्ठंतवयणणिस्सारंसुष्ठुदरिसयं
 ता विविहवित्थराणुगमपरमसद्भावगुणविसिष्ठा मोक्षपहोयारगाउदारा अस्माणतमंधकारदुग्गेसुदीवन्नूय्वा

एतले नास्तिकमतौ ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्मानेअजाणपणो ते येय एहवो जेवदे तेअज्ञानवादो तेहनामत ६७ तेहनो । मनुष्यपशुपंखी सङ्गनोविनय
 करिवोजे वदेतेविनयवादो तेहना ३२ भेद तेहनो । त्रिषेत्तेसठप्रविज्ज अन्यदृष्टि मित्यादृष्टिना शत सईकडां तेहनोब्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनम
 तने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टांतवचन तेणेकौ पारमतनेनिःसार असारकरीनेस्थापे । सुष्ठुभलो आदरिवापणे दरिसयंति प्रगटता अनेकप्रकारसत्प
 दप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तरानुगम जीवादितत्वनां विस्तर प्रतिपादवो तेविविध विस्तरानुगम । तथा परमसद्भाव अत्यंतवस्तु
 नोसत्यपणे तेहोजद्विगुण तेणेकौ विशिष्ट विविध विस्तरानुगम परम सद्भाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यक्दर्शननेविधे प्राणीनेप्रवर्तक सकल

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

कारित्वा हौपोपमौ सोपाणाचेवसि सोपानानौव उन्नतारोहणमार्गविशेषाद्व सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सु
गतिश्च सुदेवत्वसंमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती तल्लक्षणं यद्गृहाणामुत्तमं गृहोत्तमं वरप्रासादश्च स्तस्य सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्या रोहण इतिगम्यते निक्खोभ
निष्पत्तिं निक्खोभौ वादिना बोधवितुमशक्यत्वात् निःप्रकंपी स्वरूपतोषोषद्वयमिचारलक्षणकम्पाभावात् कावित्याह सूत्रार्थौ सूत्रचार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

॥ टीका ॥

सोपाणाचेवसिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य निस्कोजनिष्पत्तिं सुत्तल्या सूयगहस्सणं परित्रावायणासंखेज्जा अणु
नगदारा संखेज्जानुपप्पिक्खीनु संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जानुनिजुत्तीनु सेणंअंगठयाए दोच्चे
अंगे दोसुयस्कंधा तेवीसंअज्जयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला वत्तीसंपदसहस्साइं पयग्गेणं
प० संखेज्जाअरकरा अणंतागमा अणंतापज्जा परित्रातसा अणंताथावरा सासयाकफाणिवत्ता णिकाइ

॥ मूल ॥

सूत्रार्थदोषरहितपक्षे उदारप्रधानहे सूत्रार्थजेहनेविषेअज्ञान तेहीज तमअंधकार तेणैकरीदुग्गह दुरधिगम दुःखसाध्य जेमच्चमार्ग तेहनेविषे जेनूत्रार्थ टीवा
भूत प्रकाशकारी हे अज्ञानांधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान हे । सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणघर मंदिर उत्तम प्रधानहे ते
हने चाडियाने अर्थ सोपान पाउडोया रूपसूत्रार्थहे । बादोपुरुषे निक्खोभ चालिवाअशक्य निष्पत्तिं योडोईकोईएक पावीसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहा सू
यगडांग सूत्रां परित्ता संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोगहार उपक्रमादिक जाणिवा । संख्यातो प्रतिपत्ति वादीद्वय मतांतरते प्रति
पत्ति संख्यातावेढा छंदविशेष संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद संख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनो योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अंगार्थपक्ष

॥ भाषा ॥

संयहविहतिचूर्षिपंजिकादिरूपइति सूत्रार्थौ शेषकळं यावत् सेत्तसूयगहेति नवरंचयस्त्रिचंशदुद्देशनकालाः चउतियचउरोदोदो एकारसचेवहुंतिएकसरा स
 तेवमहज्जयणा एगसरावीयस्यसुखे इत्यतोगाथातो वसेया इति ॥ २ ॥ सेकितंठाणे इत्यादि अथकिन्तत् स्थानं तिष्ठंत्यस्मिन्प्रतिपाद्यतया
 जीवादय इतिस्थानं तथाचाह ठाणेणमित्यादि स्थानेन स्थानेवा जीवाः स्थाप्यंते यथावस्थितस्वरूपप्रतिपादनायेति हृदयं शेषं प्रायोनिगदसिद्धमेव नवरं

जिणपसुत्ताजावा आघविज्जांति पसुविज्जांति परुविज्जांति निदंसिज्जांति उवदंसिज्जांति सेणणाए एवंघि
 साए एवंचरणकरण परुवणया आघविज्जांति परुविज्जांति निदंसिज्जांति उवदंसिज्जांति सेत्तसूयगहे ॥ २
 सेकितंठाणे ठाणेणंससमयाठाविज्जांति परसमयाठाविज्जांतिससमयपरसमयाठाविज्जांतिजीवाठाविज्जांति अजी

अंगलक्षण वसुपणे । बीजे अंगे वेद्युतस्कंध तेवीसअध्ययन तेवीसउद्देशनकाल उद्देशनाअवसर तेवीस समुद्देशनकाल जेतला उद्देशतेतला समुद्देश । ३६ सहस्र
 पद सूत्रार्थ नो समाप्ति जिहंते पद पद परिमाणे कक्षा । संख्याता अक्षर तिमज पूर्वनी परे परित्ता । अनंता नही । अस वेदन्द्रियादिक अनंता स्थाव
 र वनस्पतिविशेष द्रव्यार्थनयेकरी शास्त्रता छे एह सूयगडांगने विषे एहवा भाव कक्षा । तेकेहवा पर्यायार्थपणे कृताकीधा निवद्धा सूत्रार्थ पणे गूंथ्या । नि
 काविता तेहने उदाहरणे करो प्रतिष्ठा जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कक्षा । भाव पदार्थ आख्यायते कहियेके । तेमज पूर्वनी परेजाणीवा । निर्देशिये उपदेशि
 ये पूर्ववत् तेसूयगडांग एहवी छे । एवं एम एहभणीने ज्ञाता जाणहोय एम विज्ञाता घणोजाण होय । एम चरण ते अमणव्रत करण ते पिंडविशुद्धा
 दिक् तेहनी प्ररूपणां जिहा आख्यायते कहिये निर्देशिये उपदेशिये ते सूयगडांग बीजोअंग ॥ २ ॥ अथ स्थं ते ठाणांग । जीवादिकपदार्थ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

ठाणेण इत्यस्य पुनस्तथापि सामान्येनैव पूर्वोक्तस्येव स्थापनाय विशेषप्रतिपादनाय च वाक्यांतरमिति ज्ञापनार्थं तत्र द्रव्यगुणखेत्तकालपञ्चवृत्ति प्रथमा बहुवच
नलोपा द्रव्यगुणखेत्तकालपर्यवाः पदार्थानां जीवादीनां स्थाने स्थाप्यन्ते इति प्रक्रमः तत्र द्रव्यं द्रव्यार्थतया यथा जीवास्तिकायो ऽनन्तानि द्रव्याणि गुणः स्वभा
वो यथोपयोगस्वभावो जीवः क्षेत्रं यथा संख्येयप्रदेशावगाहनो ऽसौ कालो यथा अनाद्यपर्यवसितः पर्यवाः कालकृता अवस्था यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो
वेति सेला इत्यादि गाथाविशेष स्तत्र शैलाहिमवदादिपर्वता स्थाप्यन्ते स्थानेनेति योगः सर्वत्र सलिलाय गङ्गाद्यामहानद्यः समुद्रालवणादयः सुराः आदित्वा
भवान्यसुरादीनां विमानानि चन्द्रादीनां आकाराः सुवर्णाद्युत्पत्तिभूमयो नद्यः सामान्यामहीकोसौ प्रभृतयो निधयश्चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नैसर्ग्यादयो नव
पुरिसजायन्ति पुरुषप्रकारा उन्नतप्रणतादिभेदाः पाठांतरेण पुंस्त्वज्जयति उपलक्ष्यत्वा तुष्ठादिनक्षत्राणां चन्द्रेण सह पश्चिमाग्निमीभयप्रमर्द्दकादियोगाः स्व

॥ टीका ॥

वाठा विज्जन्ति जीवा जीवा लोगा अलोगा लोगा लोगा वा ठा विज्जन्ति ठाणेणं द्रव्यगुणखेत्तकालपञ्चवृत्तपयत्याणं
सेलसलिलाय समुद्रसूरजवणविमाण आगराणदीनुप्पिहीनु पुरिसजाय सरायगोत्ताय जोइ संचाले एकविहवत्तल्ल

॥ मल ॥

जिहां तिष्ठे रहे ते ठाणांग । स्वसमयं जिनमतं थापिये परसमयं अन्यमतं उथापीये स्वसमयं थापीये परसमयं उथापिये । जीवपदार्थं थापिये अजीवनी
अजीवपणीं स्थापिये । जीहां जीवा जीव विहं स्थापिये लोकं थापिये अलोकं थापिये लोकालोकं विहं स्थापिये । ठाणांगे द्रव्यं गुणं क्षेत्रं कालं पर्यवा जीवा
दिक पदार्थना ठाणांगे स्थापिया द्रव्यं ते द्रव्यादिकार्थं पणे जीवास्तिकाय अने द्रव्यं हे गुणं ते स्वभावं यथा उपयोग स्वभाव जीव प्रति क्षेत्रं असंख्यं प्रदेशाव
गाही जीव काल ते अनादि अपर्यवसित पर्यव ते कालकृतावस्था बालकपणादिक । तथा नारकपणादिक पदार्थं ने ठाणांगे स्थापिये । शैलाहिमवतादिक

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

राच षड्जादयः सप्त गोत्राणि च काश्यपादीनि एकोनपञ्चाशत् जीवसंचालयन्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य संचालनानि तिहिंठाण्येहिं तारारूपे चलेज्जा इत्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेतिप्रक्रमः तथा एकविधश्च तद्वक्तव्यश्च तदभिधेयमित्येकविधवक्तव्यकं प्रथमेऽध्ययने स्थाप्यत इतियोगः एवं द्विविधवक्तव्यकं द्वितीयेऽध्ययने एवं तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यकं दशमेऽध्ययने तथा जीवानां पुद्गलानां च प्ररूपणताख्यायत इतियोगः तथा लोग्नाइंचणंति लोकस्थायिनां च धर्मास्तिकायादीनां प्ररूपणता प्रज्ञापना शेष माचरसूत्रव्याख्यानादवसेयं नवर मेकविंशति रुद्देशनकालाः कथं द्वितीयतृतीयचतुर्थेऽध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार उद्देशकाः पचमे चय इत्येते पंचदश शेषास्तु षट् षष्ठ्यामध्ययनानां षट् उद्देशनकालत्वादिति बावत्तरिपदमहस्साइंति अष्टादशपदसहस्रमानादाचारादिगुण

यंदुविहजावदसविहवत्तत्तुयंजीवाणपोगलाणयलोगठाइंचणंपरूवणयाश्याघविज्जांतिठाणस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुनुगदारा संखेज्जानुपफिवत्तीनु संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जानुसंगहणीनु सेणंअंगठ याए तइएअंगेपणसुयस्कंधे दसअज्जयणा एक्कावीसउद्देसणकाला बावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाअ

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक मूर सूर्य भवनते असुरना विमान चंद्रमादिकना आगर सुवर्णीत्यत्तिभूमी नदी सामान्यनदी निधी ते नै सर्पादिक निधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गोत्र काश्यपादिक ४८ ज्योतिष तारारूप तेहना संचालन तिहिंठाण्येहिं । तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानांगे घापिये । एक विधिनो कहिवो विविधिनो जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो । जीवनी पुद्गलनी प्ररूप णाठाणांगे करी । लोकस्थापीये धर्मास्तिकायनी प्ररूपणा ठाणांगे कही । वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूपं कही अनुयोगहार उपक्रमादिक संख्याती प्रतिपत्ति

त्वात् सूचकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ ३ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ कोसी समवायः सूत्रेण प्राकृतत्वेन वकारलोपात् समाये इत्युक्तं समवायनं समवायः सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थः तदेतच्च ग्रन्थापि समवाय स्तथाचाह समवायेन समवायेवा स्वसमयाः सूच्यन्ते इत्यादिकं तत्र तथा समवायेन समवायेवा एगाइयाणंति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कोटाकोट्यन्तानां वा एगत्याणंति एकेचते अर्थास्येत्येकार्था स्तेषां अयमर्थः एकेषां केषाञ्चि न सर्वेषां

रकराश्रुणंतागमा श्रुणंतापञ्जया परिज्ञातसा श्रुणंताथावरा सासयाकला णिवन्ता णिकाइया जिणपसत्ताजा वाश्राघविज्जांति पसविज्जांति परूविज्जांति निदंसिज्जांति उवदंसिज्जांति सेणंगाए एवंविस्साए एवंचरणकरणपरू वणयाश्राघविज्जांति सेत्तंठाणे ॥ ३ ॥ सेकिंतंसमवाए समवाएणं ससमयासूइज्जांति परसमयासूइज्जां

वादीइयमतांतरप्रतिपत्ति । संख्याता वेटा छंदविशेष । संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद । संख्यातो संग्रहणी । ते अंगार्थपणे चौत्तेश्रंगे एक श्रुतस्कंधना दस अभ्ययन एकवीस उद्देशन काल उद्देशना अवसर । बहुत्तरि सहस्रपद पदने परिमाणं कक्षा संख्याता अक्षर तिमज पूर्वनीपरे परिता अनंतानही अस वेइन्द्रियादिक अनंतास्थावर वनस्पत्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी सास्वताछे । पर्यायार्थपणे कौधा सूत्रार्थपणे गूण्या । उदाहरणे करी प्रतिध्या । वीतरागे कक्षा भाव पदार्थ कहिये छे । नामादिकभेदनो कहियो तेषेकरी प्ररूपिये । सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये । तेठाणांग एहवोछे । एहभणीने जाण एम घणोजाण होय । एम चरण साधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा कहौजाय तेठाणांग ॥ ३ ॥ अथ स्यं तेसमवाय । सम्यकप्रकारे जाणिवो तेसमवाय समवायांगसूचे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे । एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी । एकछे प्रथम जेहने एहवावे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

निखिलानां स्वस्वमश्वत्वादर्थानां जीवादीनां मेगुत्तरियन्ति एकउत्तरोयस्यांसा एकोत्तरा सैव एकोत्तरिका इह प्राकृतत्वात् स्वत्व स्वरिवुद्धियन्ति परिवृद्धि
 चेति समनुगीयते समवायेनेति योगः तत्रच परिवर्द्धनं संख्यायाः समवसेयं चशब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्रशतं यावदेकोत्त
 रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य पल्लवमन्ति पर्यवपरिमाणं अभिधेयादि तद्वर्मसंख्यानं यथा परिज्ञातसादृत्यादि पर्यवशब्द
 स्यच पल्लवन्ति निर्देशः प्राकृतत्वात् पर्यंकः पश्यंक इत्यादिवदिति अथवा पल्लवा इव पल्लवाः अवयवा स्तत्परिमाणं समणुगाइज्जन्ति समनुगीयते प्रतिपाद्यते
 पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगसयस्सन्ति स्थानकशतस्यैकादीनां शतानां संख्यास्थानानां न्तद्विशेषितात्मादिपदार्थानामित्यर्थः तथा द्वाद
 शविधो विस्तरो यस्याचारादिभेदेन तत्त्वादशविधविस्तरं तस्य श्रुतज्ञानस्य जिनप्रवचनस्य किम्भूतस्य जगज्जीवहितस्य भगवतः श्रुतातिशययुक्तस्य समा

ति ससमयपरसमयासूइज्जन्ति समवाणुणं एकाइयाणं एगुठाणं एगुत्तरियंपरियुद्धीए दुवालसंगस्सयगणिपिठ
 गस्स पल्लवगगेसमणुगाइज्जइ ठाणगसयस्सयवारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सजगवउ समसे

त्रिणचार आदि कोटिलगे एकअर्थे जीवादिक पदार्थनो इकेक आगलि २ परे वधारिवो ते समवायांग कहिये । द्वादशांग केहवो के । गणी आचार्य तेह
 ने पिटकरल्लकरंहीया सरीखो के तेहनो पल्लव अवयव तेहनो परिमाण जिहां कहिये स्थानक शत एक आदि सो के केहडे जेहने एहवो संख्या स्थानक
 तेहनो बारे प्रकारे विस्तारवो एहवो श्रुतज्ञानके । ते श्रुतज्ञान केहवो के । ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपके । बली पूज्यके । एहवा श्रुतज्ञाननो
 संधिपे समाचार स्थानक २ प्रति अंग अंग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिये के । ते समवायांग ने विषे नाना विध जीव अजीव

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

संक्षेपेण समाचारः प्रतिस्थानं प्रत्यक्षं विविधाभिधेयाभिधायकत्वलक्षणो व्यवहारः आहिज्जइति आख्यायते अद्यसमाचाराभिधानानन्तरं तत्र यदुक्तं तदभिधातुमाह तत्तयेत्यादि तत्तयत्ति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा ह्येकेन्द्रियादिभेदेन पंचप्रकारा जीवाः पुनरेकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायत्ति जीवाअजीवाश्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसम्भरणे अपरेपिच बहुविधा विशेषा जीवाजीवधर्मावर्णिता इतियोगः तानेवलेयतमाह नरयेत्यादि नरयत्ति निवासनिवासिनामभेदापचारा द्वारका स्ततश्च नारकतिर्यग्मनुजसुरगणानां स स्वस्थिन आहारादय स्तत्र आहारभोज आहारादि राभोगिकानाभोगिकस्वरूपानेकधा उत्स्वासाऽनुसमयादिकालभेदेनानेकधा लेशाकृणादिकाषोढा आवाससंख्या यथा नारकावासामां चतुरशीतिलक्षणीत्यादिका आयतप्रमाणनावासानामेवसंख्यातासंख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विश्वभवाहृत्य परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः अवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

णं समाचारे आहिज्जतितत्ययणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवस्मियावित्यरेण अ्वरेविअ्व वज्जविहाविसेसा नरगतिरियमणुअ्सुरगणाणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखआययप्पमाण उववायचवणउग्गहणोवहिवेय

पदार्थं वर्णय्या विस्तारेकरी । अनेरापि घणप्रकारे विशेष जीवाजीव पदार्थं वर्णय्या । नरकमति विविधं मनुज देवता गण संवर्धीना आहार आभोगिक अनाभोगिक भोजलोमादिक भेदे करी अनेक प्रकार । तथा उत्स्वासाश्वास लेशा कृणादिक आवास संख्या नारकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम विश्वंभ परिधि प्रमाण । उपपात एकेसमे केतसा एक नारकादिक जीव ऊपजे । एके केतसा मरे । एवे अवगाहसा शरीरनोप्रमाण अवधि पंगुलने च

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

मरणं अवगाहना शरीरप्रमाणमङ्गुलासंख्येयभागादि अवधि रंगुलासंख्येयभागश्च विषयादि वेदना शुभाशुभस्वभावा विधानानिभेदा यथा सप्तविधा नार
का इत्यादि उपयोग आभिनिबोधिकादि द्वादशविधः योगः पञ्चदशविध इन्द्रियाणि पञ्च द्रव्यादिभेदात् विंशतिर्वा श्रोत्रादिच्छिद्राद्यपेक्षयाष्टौवा कषायाः
क्रोधादयः आहारसोष्णसंख्येयादिद्वन्द्वस्ततः कषायशब्दा अथमाबहुवचनलोपोदृष्टव्यः तथा विविधाच जीवयोनिः सचित्तादिकं जीवानां तथा विष्कम्भो
त्सेधपरिचयः प्रमाणं विधिविशेषाश्च मन्दरादीनां महीधराणामिति तत्र विष्कम्भो विस्तारउत्सेधउच्चत्वं परिरयः परिधिः विधिविशेषा इति योगः तथा
वर्षाणांविधयो भेदा यथा मन्दरा जम्बूद्वीपीयधातकीखण्डीयपौष्करादिकभेदा त्रिधा तद्विशेषस्तु जंबूद्वीपको लघोश्चः शेषास्तु पंचाशीतिसहस्रोच्छ्रिता इ
त्येवमन्येष्वपि भावनीयं तथा कुलकरतीर्थंकरगणधराणां तथा समस्तभरताधिपानां चक्रिणांचैव तथा चक्रधरहलधराणां च विधिविशेषा इतियोगः तथा

णाविहाणउवनुगजोगा इंदियकसायत्रिविहायजीवजोणी विस्कंजुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसायमंदरा
दीणं महीधराणं कुलगरतित्यगरगणहराणं समस्तभरहाहिवाणचक्कीणंचेव चक्काहरहलहराणय वासाणयनि

संख्येयभागश्च विषयादि वेदना शुभाशुभ स्वभावानो विधान भेद उपयोग मतिज्ञानादिक १२ भेदे योग १५ भेदे इन्द्रिय ५ कषाय क्रोधादिक विविध अ
नेक प्रकार जीवायोनि जीवोत्पत्तिस्थानक विष्कम्भ पिङ्गल पणो । उत्सेध जंचपणो । परिधिप्रमाण विधि विशेष विखंभ उत्सेध परिधि इत्यादिक भेदे
मंदरादिक पर्वतानो कुलगर विमलवाहनादिक तीर्थंकर ऋषभादिक गणधर गौतमादिकानो सगलाई भरत चक्रवर्तीनो चक्रधर वासुदेव हलधर बलदेव

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

भाषा ॥

वर्षाणाञ्च भरतादिवेद्याणां निर्गमाः पूर्वैः उत्तरेषामाधिक्यानि समायन्ति समवाये चतुर्थेऽङ्के वर्णिता इति प्रक्रमः अथैतन्निगमयन्नाह एतेषोक्ताः पदार्था
अग्येचघनतनुवातादयः पदार्था एवमादयः एवं प्रकाराः अत्र समवाये विस्तरेणार्थाः समायीयन्ते अविपरीतस्वरूपगुणभूषिता बुद्धांगीक्रियन्त इत्यर्थः अथवा
समस्यन्ते कुप्ररूपणाभ्यः सम्यक्प्ररूपणायां क्षिप्यन्ते शेषं निगदसिद्धमानिगमनादिति ॥ ४ ॥ सेकितं वियाहे इत्यादि अथ केयं व्याख्या व्याख्या

॥ टीका

गमायसमाए एणश्याणये एवमाइत्यवित्यरेणं श्रुत्या समाहिज्जति समवायस्सणं परिहावायणाजावसेणं श्रु
गठयाए चउत्येश्रंगे एगेश्रज्जयणे एगेसुयस्कंधे एगेउद्देशणकाले एगेसमुद्देशणकाले एगेचउयाले पदसहस्से
पदग्गेणंप० संखेज्जाणिश्रस्कराणि जावचरणकरणपरूवणया श्राघविज्जंति सेत्तंसमवाए ॥ ४ ॥

॥ मूल ॥

नो वर्ष वेचनो नैर्गमा पहिराथकी अगिलानो अधिकारपणे समवायांग पणे । चौथे अंगे एह पूर्वोक्त पदार्थ वर्णव्या एह पूर्वे कच्चा तेअनेरापणि पदार्थ
घन तनु वातादिक समवायांगे विस्तारपणे पदार्थ आश्रये । समवायांगनो वाचना सूचार्थ दानरूप । यावत् शब्दे वेढालगे जाणवो श्लोक संख्याता
इत्यादिक आचारांगनो परे सर्व कहिवो तेअंगार्थपणे चौथे अंगे एक अध्ययन एकश्रुतस्कंध एक एक उद्देशनकाल एक एक समुद्देशनकाल एकला
ख ४४ इत्थार पद पदपरिमाणे कच्चा । संख्यात अक्षर जाव यावत् शब्दे एमचरणसाधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्धादिकनी प्ररूपणा कहियेके । तेसमवा
यांग चौथो ॥ ४ ॥ अथ स्यं एह व्याख्या बख्खाषिये अर्थ जेहने विषे तेव्याख्या भगवतीये सूत्रे स्वसमय जिनमत कहियेके । परमत कहियेके

॥ भाषा

यन्ते अर्था यस्यां सा व्याख्या वियाहेति च पुनरिदं निदेशः प्राकृतत्वात् वियाहेणंति व्याख्याया व्याख्यायां वा ससमया इत्यादौ नि नवपदानि सूत्रकृतवर्णकव्या
ख्यातत्वा दिहकपठ्यानि वियाहेणंति व्याख्यामित्यादि नानाविधैः सुरैः नरेन्द्रैः राजऋषिभिश्च विविहसंसदयन्ति विविधसंशयवद्भिः पृष्ठानि यानितानि तथा
तेषां नानाविधसुरेन्द्रराज ऋषिविविधसंशयितपृष्ठानां व्याकरणानां षट्त्रिंशत्सहस्राणां दर्शनात् श्रुतार्था व्याख्यायन्तइति पूर्वापरेण वाक्यसम्बन्धः पुनः कि

से किं तं वियाहे वियाहेणं ससमयावि आहिजांति परसमयावि आहिजांति ससमय परसमयावि आ
हिजांति जीवाविआहिजांति अजीवाविआहिजांति जीवाजीवाविआहिजांति लोगेविआहिजांति अलो
गेविआहिजांति लोगालोगेविआहिजांति वियाहेणं नाणाविहसुरनरिंदरायरिसिनिविहसंशय
जिणाणं वित्यरेण आसियाणं दह्वगुणखेत्तकालपञ्चव पदेसपरिणाम जहल्यिअजावअणुगमनिर्कवणयप्य

स्वमत परमत विहं कहियेके । जीव कहियेके अजीव कहिये के जीवा जीव विहं कहियेके । लोक कहियेके अलोक कहियेके लांकालोक विहं कहियेके ए
णी व्याख्याये भगवती अनेक प्रकारे सुर देवता नरेन्द्र राजऋषि तेषे विविध प्रकारे संशय पूछाके । ३६ सहस्र प्रश्न पूछाके । तेहने विषे जिनवीतरागे म
हाबोर स्वामोये विस्तरे करो भाषितके । जेह प्रश्न वली केहवा तेप्रश्न द्रव्य धर्मास्तिकायादिक गुणज्ञानवर्णादि क्षेत्राकाशादिक काल समयादिक पर्यव
स्वर भेद भिन्न धर्मा अथवा काल कृतावस्था नव पुराणादिक पर्याय प्रदेश ते विभागरहित परिणाम ते अवस्थाये जाणिवा जेणे प्रकारे अस्तिभाव कृताभा
व अनुगम संहितादि व्याख्यानप्रकाररूप निवेप नामस्थापना द्रव्य भावे करी थापवो नयते नैगमादिक प्रमाण प्रत्यक्षादिक मुनिगुण अति सूक्ष्म उपक

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

भूतानां जिज्ञेनेति भगवता महावीरेण वित्यरेणभासियाणं विस्तारेणभणितानामित्यर्थः पुनःकिंभूतानां द्रव्येत्यादि द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवप्रदेशपरिणामानां यथास्तिभावोऽनुगमनिक्षेपनयप्रमाणसुनिपुणोपक्रमैर्विविधप्रकारैः प्रकटः प्रदर्शितोयै व्याकरणे स्तानितथा तेषां तत्र द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि गुणा ज्ञानवर्णादयः क्षेत्रमाकाशं कालः समयादिः पर्यवाः स्वपरभेदभिन्नाधर्माः अथवा कालकृता अवस्था नवपुराणादयः पर्यवाः प्रदेशा निरंशावयवाः परिणामा अवस्थातीवस्थान्तरगमनानि यथा येनप्रकारेणास्तिभावोऽस्तित्वं सत्ता यथास्तिभावः अनुगमः संहिताद्रिव्याख्यानप्रकाररूपं उद्देशनिर्देशनिर्गमादिह्यारकलापात्मको वा निक्षेपो नामस्थापनाद्रव्यभावे वस्तुनोन्यासः नयप्रमाणं नया नैगमादयः सप्त द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात् ज्ञाननयक्रियानयभेदाद्वा द्वौ तेऽव तावेव वा प्रमाणं वस्तुत्वपरिच्छेदनं नयप्रमाणं तथासुनिपुणः सुसूक्ष्मः सुनिपुणोवा सुट्टुनिश्चितगुण उपक्रमः आनुपूर्व्यादि विविधप्रकारां ता चैषां भेदभणनत एवोपदर्शितेति पुनःकिंभूतानां व्याकरणानां लोकाः लोकौ प्रकाशितौ येषुतानि तथा संसारसमुद्भूतदुःखसंस्तरणसमस्याणंति संसारसमुद्रस्य विस्तीर्णस्य उत्तारणे तारणे समर्थानामित्यर्थः अतएव सुरपतिसम्पूजितानां प्रच्छन्ननिर्नायकपूजनात् सूक्तत्वेन श्लाघितत्वाद्वा तथा भवियजणपयहिययाभिणंदियाणंति

॥ टीका ।

माण सुनिउणोवक्कम विविहप्पकारवगळपयासियाणं लोंगालोणपयासियाणं संसारसमुद्भूतदुःखसंस्तरण सम
त्याणं सुरवड्संपूजियाणं नवियजणपयहिययाभिणंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिठ्ठदीवजूय ईहामति

॥ मूल ॥

म आनु पूर्वादि अनेकप्रकारे प्रकट पणें प्रकाश्याहे । बली प्रश्न केहवा हे लोकालोकनो हे प्रकाश जेहने विषे । बली केहवा संसार चतुर्गतिकतमचण ससुद्र बंद पतिविस्तीर्ण तेहने उतरवा समर्थहे । बली केहवा सुरपति इंद्र तेणे संपूजितके । भविकजनपदलोक तेहनो हृदय चित्त तेणेकरी अभि

॥ भाषा ।

भव्यजनानां भव्यप्राणिना अजालोको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदोवा तस्या स्तस्य वा हृदये चित्तरभिनन्दिताना मनुमोदिताना मिति विग्रहः तथा तमोरजं
 सी अज्ञानपातके विध्वंसयति नाशयति यत्तत्तमोरजोविध्वंसं तच्च तदज्ञानञ्च तमोरजोविध्वंसज्ञानं तेन सुष्टुष्टानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव
 तानिच तानि दोषभूतानि चेति अतएवच तानि ईहामतिबुद्धिवर्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वंसज्ञानसुष्टुष्टदोषभूते हामतिबुद्धिवर्धनाना गतत्र ईहा वितर्को
 मतिरवायो निश्चयइत्यर्थः बुद्धिरौत्पत्तिश्चादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वंसनानामिति पृथगेवपद म्पाठान्तरेण सुष्टुष्टदोषभूतानामितिच तथा छत्तीस
 सहस्रमणूण्याणांति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकराऽन्यथापादनिपातश्च प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरणाणंति व्याक्रियन्ते प्रश्ना
 नन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्णायकेन यानि तानि व्याकरणानि तेषां दर्शनात्प्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थः अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थः कइत्याह
 सुयत्यबहुविहप्पयारेत्ति श्रुतविषया अर्थाः श्रुतार्था अभिलाष्यार्थविशेषा इत्यर्थः श्रुतावा कर्मिता जिनसकाशे गरधरेण ये अर्था स्ते श्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति
 सूत्रं अर्था निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रहः श्रुतार्थानां वा बहुविधाः प्रकारा इति विग्रहः किमर्थं ते व्याख्यायन्त इत्याह शिष्या

बुद्धिवरुमाणानं छत्तीससहस्रमणूण्याणं वागरणाणं दंसणात् सुयत्यबहुविहप्पगारा सीसहियत्या गुण

नदित मनुमोद्याके । बली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनो विध्वंसक नाशक के रूडीपरें निर्णय कौधा एणे कारणेदोवारूप एणे कारणे
 ईहा वितर्क मतिरे अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते औत्पत्तिश्चादि चिहुं प्रकारे तेहने वधारेके एहवा छत्तीस हजार कणानही संपूर्ण प्रश्न ने देखाइता थ
 का सूचार्थपणें शिष्यने हितना अर्थ भणौ गुणरूप अर्थ प्रात्यादिक लक्षण हाथ सरीखो प्रधानहांथ । भगवती सूचना गणित वाचना । संख्याता अनुयोग

॥ टीका

॥ मूल ।

॥ भाषा

षां हितमनयंप्रतिष्ठातार्षप्राप्तिरूप त्त्वेवार्थः प्रार्थमानत्वा तस्य तस्मै इति किंभूतास्ते अत आह गुणहस्ता गुणएवार्थं प्रात्यादिसत्त्वो हस्तद्वयहस्तः प्रधा
नावयवो येषांते तथा वियाहस्सेत्यादितु निगमनांतं सूत्रसिद्धं नवरं शतमिहाध्ययनस्य संज्ञा चतुरश्रौतिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति समवायापेक्षया द्विगु

हत्या वियाहस्सणं परिष्ठावायणा संखेज्जा अणुनगदारा संखेज्जानुपक्रियत्तीनु संखेज्जावेढा संखेज्जा
सिलोगा संखेज्जानु निज्जुत्तीनु सेणं अंगठयाएपंचमे अंगे एगेसुयस्कंधे एगेसाइरेगे अज्जयणसते दसउ
द्देसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं ठत्तीसंवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयग्गेणं पस्सत्ता
संखेज्जाइं अस्कराइं अणंतागमा अणंतापज्जवापरिष्ठातसाअणंताथावरा सासयाकफ्फा णिवरूा णिकाइ
या जिणपस्सत्ता जाया आधविज्जंतिपस्सविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणणाए एवंवि

हार उपक्रमादिक । संख्याती प्रतिपत्तो । संख्यातावेडाइंदविशेष । संख्यातास्त्रोक अनुष्ठुपादिक । संख्याती निर्युक्ति । तेह अंगार्थपथे पांचमिअंगे ।
श्रुतस्त्वं १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा २६ हजार प्रश्न ८४ हजार पद समवायांगनी अपेक्षायें वेगुणाकीजे तो दोसा
ख ८८ हजार पदवाय । ते इहां नलेवा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । असवेइन्द्रियादिक । अनन्तास्यावर वनसती द्रव्यार्थे करी
शास्त्रताहे । पर्यायार्थ पथे कीधाहे । सूत्रार्थपथे गुण्या निकाचित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिष्ठा । जिन बीतरागे कफ्फा जे पदार्थ ते कहियेहे । नामादि
क भेदे करीपरूपियेहे । शुद्धभावे उपदेश करियेहे । ते भगवती सूत्रे विवे शास्त्रता कीधा शास्त्रतादिक पदनीत्याख्या आचारांगानाधिकारि कीधीहे जिहां

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

चताया इहानात्रयचा दन्यथा तद्दिगुचले हेलचे अष्टाशीतिःसहस्राणिचभवन्तीति ॥ ५ ॥ सेकितमित्यादि अथ का स्ता ज्ञाताधर्मकथा ज्ञाता
गुदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घत्वं संज्ञात्वात् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधे ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्तुत
च ज्ञातानिच धर्मकथाच ज्ञाताधर्मकथा स्तुत प्रथमव्युत्पत्त्यर्थं सूत्रकारो दर्शयन्नाह नायाधम्मकहासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेवकुमारादी
नां नगरादीन्याख्यायंते नगरादीनि द्वाविंशतिपदानि कंठ्यानिच नवर मुद्यानं पञ्चपुष्पफलच्छायेणरत्नपद्मोपशोभितं विविधविशोक्तमसानश्च बहुजनो यच्च
भोजनार्थं यातीति चैत्यं व्यंतरायतनं बनखंडो नेकजातीयेरुत्तमेर्हचैरुपशोभितमिति आघविज्जंति इहयावत्करणा दन्यानि पंचपदानि दृश्यानि यावदयंसूत्रा

स्साए एवं चरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तंविद्याहे ॥ ५ ॥ सेकितंणायाधम्मकहासु
णायाधम्मकहासुणं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंठा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं
धम्मायरिया धम्मकहासु इहलोइअ परलोइअइहीविसेसान्नोगपरिच्चाया पव्वज्जानं सुयपरिग्गहा तयोव

कगे । चरण अमण धर्मव्रत करण पिंडविशुद्धादिकनी प्ररूपणा ते भगवतीं सूत्र ने विषे कहिये ते व्याख्याभंग एतले भगवती अंगपांचमो जाणिबो
॥ ५ ॥ स्थंते ज्ञाता धर्मकथांग । ज्ञाता उदाहरण तत्प्रधान जेकथा ते ज्ञाताधर्मकथा अथवा पहिले श्रुतस्कंधे ज्ञाता मेवकुमारादिकना
नगर नाम । उद्यान पञ्च पुष्प फलेकरी शोभित चैत्य व्यंतरायतन । अनेक जाति ना वृक्षे करी शोभित बनखंड । राजा । माता । पिता । एहानानाम
समोसरण घणानो एकच मीलन । धर्माचार्यनाम । धर्मनी कथा । इहलोक मनुष्यलोक । परलोक देवगति तेहनी ऋषि विशेषनी भोग तेहनी त्या

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

वयवो यथा नायाधर्मोत्थादि तत्र ज्ञाताधर्मकथासु यमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्मविनयकरजिननाथसंबंधिनि शेषप्रव
चनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समणानां विनयकरणजिणसासणंमि पवरे किंभूतानां संयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सैव दुरधिगम्यत्वात् कात
रनरचोभकत्वा इभीरत्वाच्च पातालमिवपातालं तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा येषांते तथा पाठांतरेण संयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दु
र्बलाये ते तथा तेषां तत्र धृतिचित्तस्वास्थ्यं मतिर्बुद्धिव्यवसायो ऽनुष्ठानोक्ताहइति तथा तपसि नियमोअवश्यंकरणं तपोनियंत्रितं तपः सच तपउपधानंचाऽ

हाणाइं परियागा संलेहणानुं जत्तपच्चरकाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणवोहि
लान्णो अंतकिरियानुंय आघविज्जांति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे
संजमपइस्सापालणधिइमइववसायदुल्ललाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरज्जरज्जगयणिस्सहयणिसिंठाणं घो

ग । प्रव्रज्यादीक्षा । सूत्रो मेत्वो । तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो । पर्याय दीक्षानो काल । संलेखणानो करिवो । भात पाणीनो पचखवो ।
पादपोषममन छेदीधकोवचशाखा जिम हालेचाले नही तिम ते यती संधारो कस्वांपके हलोचाले नही । देवलोकनो जाइवो । उत्तम कुले अवतार ।
वसी बोधिलाभ धर्मनो प्राप्ति । अंतक्रिया संसारना अंतनो करिवो । एह सर्व वसु ज्ञाताविषे कहियेके । जिहां सगे ज्ञाताधर्म कथाने विषे प्रव्रजित यती
नो विनयनो करिवो तिहांलगे । जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषे संयमपालवाभणौ कीधी प्रतिज्ञानो पालवो । धृति चित्तनो जलपणी
मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषे उक्ताह तेहने विषे दुर्बल कातर बुद्धाहे तपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरबीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

निर्वचितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनिबन्धतपउपधाने तेएव रणश्च कातरजनसोभकत्वात् संग्रामो दुर्धरभरति अमकारत्वात् दुर्धरभरश्च दुर्वहलोहादि
 भार स्थाभ्यां भग्ना इति भग्नाः परासुखीभूता स्थाया निसहायस्ति निःसहा नितरामशक्तास्तएव निःसहका निवृष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ
 पधानरणदुर्धरभरभग्नकनिः सहकनिवृष्टाः पाठांतरेण निःसहकनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवरेष
 तथा घोरपरीषहैः पराजिता आसमर्थाः सन्तः प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकर्तुं रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धाः अस्तएव
 सिद्धान्तमार्गात् ज्ञानादेर्निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धान्तमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी
 षहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहैर्विशिष्टगुणश्रेणिमारोहंतः प्ररुद्धरुद्धाः अतिरुद्धा सिद्धान्तमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धान्त मा
 र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुरच्छेषु स्वरूपतः आशावशदोषेणमनोरथ पारतन्त्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना ये ते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू
 र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखेया महेच्छाः कस्यांचिदवस्थायां या चावस्थांतरे तुरच्छाशा तयोर्वशः पारतन्त्र्यं तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

रपरीसहपराजियाणं सहप्रारुद्धरुद्धसिद्धान्तमार्गनिर्गयाणं विसयसुहतुच्छाशावसदोसमुच्छ्रियाणं विरा

दुर्वह भार रण संग्राम तेषं करो भग्न उपराठा यथाके अत्यर्थ अशक्तके संग्राम मार्गे थाकाके बली घोर रुद्ध उपद्रव करो भागाके एहवा असह असम
 र्थके प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रुद्धाके । बली सिद्धान्तमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र्यकी नौकल्याके । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो
 षे करो वसवर्ध तेमूर्च्छित यथाके । विराधाके दर्शनज्ञानचारित्र्य । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निरसार तेषेकरी शून्य

सुखमहेच्छातुच्छायावशदोषमूर्च्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा
सारवर्जिता प्रलंजिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा द्ये ते तथेति पदत्रयस्य च कर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान
दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमत आह संसारे संसृती अपारदुःखा अनन्तलेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यञ्चु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवश्च
हृत्मानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासां प्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरंपरप्रपंचा आख्यायन्ते इति पूर्वेष्वयोग स्तथा धीरा
णां च महासत्त्वानां किंभूतानां जितपरीषहकषायरूग्णं यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उक्ताहो वीर्यं निश्चितो ऽव
श्यभावी येषां ते संयमोक्ताहनिश्चिताः ततः पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽतस्तेषां जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसंयमोक्ताहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन
चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशब्दो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्ध्यातीचारविमुक्तो यः सिंहालयश्च सिद्धिमार्गं स्वस्याभिमुखा येते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधार

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारश्चपारदुरकदुग्गइ जवविंविहपरंपरापवं
धा धीराणयजियपरीसहकसायसेस्सधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं चाराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

हे । एहवा भाव ज्ञाताने विषे कहिआहे । संसारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनी परंपरा संतति तेहना विस्तारने वि
षे जेधोर महासत्त्वनाधणी बली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती हे । तेहना प्रवन्ध ज्ञाताने विषे कहिदेहे । वली धृति जे मननो स्वस्थपणी तेहीजके
धन जेहने एतन्ने धृतिना स्वामी । तथा संयमनेविषे उक्ताह वीर्य निश्चित हे जेहना । जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायाम चाराधाहे । जे निःशब्द मिथ्यात्व

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

निर्वर्तितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनिबन्धतपउपधाने तेएव रणश्च कातरजनघोभकत्वात् संग्रामो दुर्हरभरति अमकारणत्वा दुर्धरभरश्च दुर्वहलोहादि
 भार स्थाभ्यां भग्ना इति भग्नाः पराशुखीभूता स्थाया निसहायन्ति निःसहा नितरामशक्तास्तएव निःसहका निवृष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ
 पधानरश्चदुर्धरभरभग्नाः सहकनिवृष्टाः पाठांतरेण निःसहकनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसे
 तथा घोरपरीषदः पराजिता चासमर्थाः सन्तः प्रारब्धाश्च परीषदैरेव वशीकर्तुं रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषदपराजिता सहप्रारब्धरुद्धाः अतएव
 सिद्धान्तमार्गात् ज्ञानादेर्निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषदपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धान्तमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी
 षदपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषदौ विंशतिगुणश्रेणिमारोहंतः प्ररुद्धरुद्धाः अतिरुद्धा सिद्धान्तमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धान्त मा
 र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपतः आशावशदोषेणमनोरथ पारतन्त्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना ये ते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू
 र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखेया महेच्छाः कस्यांचिदवस्थायां या चावस्थांतरे तुच्छाशा तयोर्वशः पारतन्त्र्यं तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

रपरीसहपराजियाणं सहप्रारब्धरुद्धसिद्धान्तमार्गनिर्गतायाणं विसयसुहृत्तुच्छाशावसदोसमुच्छ्रियाणं विरा

दुर्वह भार रण संग्राम तेषं करो भग्ना उपराठा यथाह्ये अत्यर्थ अशक्तके संयम मार्गे थाकाह्ये बली घोर रुद्ध उपद्रव करो भागाह्ये एहवा असह असम
 र्थके प्रारब्धा परीषद वसिक्करिवाने रुद्धाह्ये । बली सिद्धान्तमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र्य यको नौकस्याह्ये । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो
 षे करो वसयन्ते तेमूर्च्छित यथाह्ये । विराध्याह्ये दर्शनज्ञानचारित्र्य । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निरुसार तेषेकरी शून्य

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

सुखमहेच्छातुच्छायावयवदोषमूर्च्छितानां तथा विराधितामिचारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा
सारवर्जिता प्रसंज्ञिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदत्रयस्य च कर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान
दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतग्राह संसारे संसृती अपारदुःखा अनन्तलेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवश्च
हृत्थानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासां प्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवाविविधपरंपरप्रपंचा आख्यायन्ते इति पूर्ववर्णयोग स्तथा धीरा
णां महासत्वानां किंभूतानां जितंपरीषहकषायरूग्णं यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितोऽव
श्यंभावो येषां ते संयमोक्ताहनिश्चिताः ततः पदत्रयस्य कर्मधारयोऽतस्तेषां जितंपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसंयमोक्ताहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन
चारित्र्ययोगा यैस्ते तथा निःशब्दो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धयातीचारविमुक्तो यः सिंहालयश्च सिद्धिमार्गं स्वस्याभिमुखा येते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधार

॥ टीका ॥

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविधिहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुस्सकदुग्गइ जवविंविहपरंपरापवं
धा धीराणयजियपरीसहकसायसेस्सधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

॥ मूल ॥

हे । एहवा भाव ज्ञाताने विषे कहिदेहे । संसारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनी परंपरा संतति तेहना विस्तारने वि
षे जेधोर महासत्वनाधनी बली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती हे । तेहना प्रवन्ध ज्ञाताने विषे कहिदेहे । वली धृति जे मननो स्वास्थ्यो तेहीजहे
धन जेहने एतन्ने धृतिना स्वामी । तथा संयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित हे जेहना । जेणे ज्ञानदर्शन चारित्र्यायोग आराध्याहे । जे निःशब्द मिथ्यात्व

॥ भाषा ॥

य अतस्तेषामाराधिविज्ञानदर्शनचारिचयोगनिःशब्दशुद्धसिद्धान्तमार्गाभिमुखानां किमतश्चाह सुरभवने देवतयोत्पादे यानि विमानसौख्यानि तानि सुरभवन विमानसौख्यानि अनुपमानि ज्ञाताधर्मकथास्वाख्यायन्त इति प्रक्रम इह च भवनशब्देन भवनपतिभवनानि व्याख्याता न्यविराधितसंयमप्रव्रजितप्रस्तावात् तेहि भवनपतिषु नोत्पद्यन्त इति तथा भुक्ता चिर भोगान् मनोज्ञशब्दादीन् तथाविधान् दिव्यान् स्वर्गभवान् महार्हान् महत्तत्त्वात्मिकान् अर्हान् प्रशस्त तथा पूज्यानि तिभावः ततश्च देवलोकात् कालक्रमच्युतानां यथाच पुनर्लब्धसिद्धिमार्गाणां अनुजगता ववासज्ञानादीनां मत्सक्रिया मोक्षो भवति तथा ख्यायत इति प्रक्रमः तथा चलितानाञ्च कथञ्चित्कर्मवशतः परीषदादा वधीरतया संयमप्रतिज्ञायाः प्रव्रष्टानां सहदेवै र्यानुषाः सदेवमानुषा स्तेषां सम्बन्धी नि धीरकरणे धीरत्वोत्पादने यानि कारणानि ज्ञातानि तानि सदेवमानुषधीरकरणकारणानि आख्यायन्त इति प्रक्रमः इयमत्र भावना यथा आर्याषाढो देवे न धीरकृतो यथावा मेघकुमारो भगवता शैलकाचार्यो वा पात्यकसाधुना धीरकृत एवं धीरकरणकारणानि तत्राख्यायन्ते किञ्चित्तानि तानीत्याह बोधना

स्सप्तसुद्धसिद्धान्तमगमनिमुहाणं सुरजगत्त्रयविमाणसुरकाङ्क्षं शृणोवमाङ्क्षं नुत्तूणचिरञ्च जोगजोगाणि ताणि दिक्षाणि महारिहाणि ततोयकालक्रमच्युताणं जहयपुणो लक्षसिद्धिमग्गाणं श्रुतकिरिया चलियाणयसदेवमा

दर्शनादि रहित अतीचार रहित यको सिद्धिना मार्गने अभिमुख के तेहने देवताना भवने विषे विमानना अनुपम सुख ज्ञाताने विषे कहियेके । तेह मनोज्ञ शब्दादिक पंचेन्द्रियना विषय महर्घ्य देवतासंबन्धी चिरकाललगे भोगीने कालक्रमे देवलोकथीचव्यो तथा वलीपास्योके सिद्धिनी मार्ग जेणे । एह पूर्वोक्त सङ्गने अंतक्रिया ज्ञाताने विषे कहियेके । कोइक कर्मना वश्यबी जे चल्याके संयमनी प्रतिज्ञाथी अष्टथया के देवता सहित मनुष्य तत्संबन्धी धीर

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नुशासनानि बोधनानि मार्गभ्रष्टस्य मार्गसंस्थानानि अनुशासनानि दुःस्थस्य सुस्थतासम्पादनानि अथवा बोधनमामंभनं तत्पूर्वकान्यनुशासनानि बोधना
 नुशासनानि तथा गुणदोषदर्शनानि संयमाराधनायां गुणा इतरत्र दोषा भवन्तीत्येव न्दर्शनानि वरक्यान्त्याख्यायन्त इतियोगः तथा दृष्टान्तान् ज्ञातानि प्रत्य
 यांश्च बोधिकारणभूतानि वाक्यानि श्रुत्वा लोकमुनयः शुकपरिव्राजकादयो यथा येनप्रकारेण स्थिताः शासने जरामरणनाशनकरे जिनानांसम्बन्धिनीति
 भावः तथाख्यायन्तइतियोगः तथा आराहितसंजमत्ति एतएव लौकिकमुनयः संयमम्पालिताश्च जिनप्रवचनम्पद्माः पुनः परिपालितसंयमाश्च सुरलोक
 इत्वा चैते सुरलोकप्रतिनिवृत्ता उपयन्ति यथा शाश्वतं सदाभाविनं शिवमबाधकं सर्वदुःखमोक्ष निर्वाणमित्यर्थः एतेचोक्तलक्षणाः अन्येच एवमादय आदि

॥ टीका ॥

पुंसधीरकरणकारणाणि बोधणश्रुणुसासणाणि गुणदोषदरिसणाणि दिठन्ते पञ्चयसोऊणलोगमुणिणो जह
 ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे श्राराहिस्संजमाय सुरलोगपणिनियत्ता उवेत्ति जहसासयं सिवं सव्वदु

॥ मूल ॥

करिवाने अर्थे जेकारण उदाहरण ज्ञातानेविषे कइयाहे । जिम मेघकुमारने हाथीना उदाहरणथी थिरकीधो तथा बोधन जे मार्गधकी भ्रष्ट तेहने माग
 थापिवो तथा शिखा देवा । गुणवली दोषना देखाइवा । तथा प्रतिबोधना कारणभूत दृष्टान्त सुणीने लोकमुनी शुकपरिव्राजकादिक जेणे प्रकारे जरा
 मरणनी नाश करणहार एहवा जिन शासन ने विषे रक्षा । तेज्ञाताने विषे कइयाहे । आराध्याहे संयम जेणे एहवा एहीज लोकमुनी देवलोक पाय्या
 वसी देवलोक जो उपराठा आवे बलो धर्म आराधीने जिम शाश्वत सदाभावि बाधारहित सर्वदुःखमोक्ष एतले निर्वाण । इत्यादिक पूर्वे कइयाते अथवा

॥ भाषा ॥

शब्दस्य प्रकारार्थत्वा देवंप्रकारार्थाः पदार्थाः वित्यरेष्यन्ति विस्तरेण चशब्दात्कचित्केचित् संचेषेण आख्यायन्त इतिक्रियायोगः नायाधम्मकहासुणमित्था दि कंथमानिगमना चवर मेज्जुत्तसीसमन्वयन्ति प्रथमश्रुतस्कन्धे एकोनविंशतिद्वितीयेच दशेति दशधम्मकहाणंवग्गा इत्यादौ भावनेय मिहैकोनविंशतिज्ञा ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थज्ञापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकत्वा त्तानि प्रथमश्रुतस्कन्धे द्वितीयेत्वहिंसादिलक्षणस्य धम्मस्य कथा आख्यानकानी त्युक्तभवति तासां च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्ततथार्थाधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनान्येवं दशवर्गाद्रष्टव्या स्तत्रज्ञातेष्वदिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतेष्वआख्यायिकादिस

॥ टीका ॥

स्कमोरकं एए अस्सेय एवमाइत्यवित्यरेणय णायाधम्मकहासुणं परिज्ञावायणा संखेज्जा अणुनंगदाराजावसं खेज्जातु संगहणीतु सेणं अंगठयाए ठठे अंगेदोसुअरकंधा एगूणतीसं अज्जयणा ते समासतु दुविहा पसत्ता

॥ मूल ॥

अन्वभौ विस्तार यो तथा संचेष यो ज्ञाताने विधे कश्चाहे । ज्ञाताने विधे संख्यातो वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप । संख्याता अनुयोगहार उपक्रमादिक । या वत् संख्यातो संग्रहणी संगे जाणिवो सूत्र योडो अर्थ घणो ते संग्रहणी । तेह अंगार्थ पणे । एम इहे अंगे वे श्रुतस्कंध पहिले श्रुतस्कंधे उगणीस अध्ययन ते १८ ज्ञाताध्ययन संचेषथी वे प्रकारे कश्चा । ते कहेंहे । केइक अध्ययन मेवकुमारादिक चरित्ररूप । कईक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मौडके वा तकोधी । इत्यादिक । बीजे श्रुतस्कंधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहां एकेकीये धर्मकथाये अधिकारना समूहात्मकअध्ययन ते मांदि ज्ञातानेविधे पहिला दश वर्ग ज्ञाता उदाहरण रूपतेहने विधे आख्यायिकादिकनो संभवनथी शेष ८ ज्ञाताने विधे एकेक ज्ञातामांदि पैंतासीस २ अधिक आख्यायिकना सैंकडा

॥ भाषा ॥

भवः शेषाश्चिन्नवज्रातानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चसत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राद्यैकैकस्या माख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशता
नि तत्राद्यैकैकस्यामुपाख्यायिकायां पञ्चपञ्चाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि संश्लिष्टानि किंसङ्कातं द्वाव्वीसकोडिसयं लक्षापन्नासमेवबोधव्या
२१५०००००० एवंतिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा दशधम्मकहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाएधम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए
अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइ उवक्खाइ सदाइंति एवमेतानि संश्लिष्टानि किंसङ्कातं पणव्वीसकोडिसयं २५००
००००० एत्थयसमलक्खणाइयाजम्हा नपनाययसंबहा अक्खाइयमाइयातेणं ॥ १ ॥ तेसाहिज्जतिफुडं इमाउरासीउवेगलाणंतु पुणरुत्तवज्जिदाणं पमाणमेषं

॥ टीका ॥

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं
एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइ उवक्खाइ

॥ मूल ॥

कहेवा । तिहां एकेक आख्यायिकनेविषे पांच पांच सो उपाख्यायिक के । तिहां वली एकेक उपाख्यायिकनेविषे पांचपांच आख्यायिक उपाख्यायिकना
सेकडाके । तिहां आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां । द्वाव्वीसकोडिसयं लक्षापन्नासमेवबोधव्या । २१५०००००००
एवं तिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा । दश धम्मकहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाएधम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाएअक्खाइया
ए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइ उवक्खाइयासयाइंति । एसर्व एकठाकोधा तिवारे २५०००००००० पंचव्वीस कोटि थई
ते मांइव्वी पाइव्वी आंक एकव्वीस किरोड पंचास लाख पुनरुत्तपणामाटे बाहिर काठिये तो साठे ३ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेके । एव मेव सपूर्वा

॥ भाषा ॥

विशिष्टं ॥ २ ॥ सोधिते चैतस्मिन् सति अर्धचतुर्थांश एव कथानककोट्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेव सपुष्पावरेणंति भणितप्रकारेण गुणनशोधने कृते सतीत्युक्तं भवति अद्भुताश्चो अस्त्राद्याकोटौ भवन्तीति मरकायांति आख्यायिका कथानकानि एता एवमेतत्संख्या भवन्तीति कृत्वा आख्याता भगवता महावीरेणेति तथा संख्यातानि पदसयसहस्राणीति किल पञ्चलक्षाणि षट्सप्ततिश्च सहस्राणि पदाग्रेण अथवा सूत्रालापकपदाग्रेण संख्यातान्येव पदशतसहस्राणि भवन्तीत्येवं सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकितमित्यादि अथ का स्ता उपासकदशा उपासकाः आवका स्तद्वत्क्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

असयाइं एवामेव सपुष्पावरेणं अद्भुतान् अस्त्राड्यकोटौ भवन्तीति मरकायान् एगूणतीसं उद्देशणकाला एगूणतीसं समुद्देशणकाला संखेज्जाइं पयसहससाइं पयगगेणं पसुत्ता तंजहा संखेज्जा अस्करा जावचरणकर णपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं णायाधम्मकहान् ॥ ६ ॥ सेकितं उवासगदसान् उवासगदसासुणं

पर तेषु प्रकारे पहिलो गुणाकार करिये । पछे पाछला आंके आगलोआंक सोधिये तिवारे साटे ३ कोटिकथानी थाय । ते भगवान महावीर स्वामीये क ही । ज्ञाताने विषे उगुणचीस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कक्षा । उगुणचीस समुद्देशनकाल । संख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणे कक्षा । ते कहिछे । वली संख्याता अक्षर यावत् शब्देकरी संख्याता वेढा संख्याता श्लोक ज्ञाताने विषे चरण अमणधर्म करण पिंडविशुद्धादि कनी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा छठो अंग ॥ ६ ॥ स्युंते उपासक दशांग । उपासक आवकनी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनछे

अथनोपलक्षिता उपासकदशा स्तथाचाह उपासकदशासु उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अम्बापितरौ समवसरणानि धर्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋदिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधोपवासप्रतिपादनतास्तत्र शीलव्रतान्यष्टव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादित्यागः पौषधोपवासः ततोद्गहेसत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रहस्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाओत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः कायोत्कर्गावा उपसर्गादेवादिस्ततोपद्रवाः संलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोषगमनानि देवलोकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्वीधिलाभोऽन्तक्रिया

॥ टीका ॥

उवासयाणं नगराण्डं उज्जाणाण्डं चेइश्याण्डं वणखण्डा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाण्डं धम्मायरिया धम्म कहानु इहलोइयपरलोइयइहिविसेसा उवासयाणं शीलव्रयवेरमणगुणपञ्चरकाणपोसहोववासपणिवज्जि यानु सुयपरिगगहा तवोवहाणाण्डं पणिमानु उवसग्गा संलेहणानु जत्तपञ्चरकाणाण्डं पावोवगमणाण्डं देवलोग

॥ मल ॥

ते उपासक दशा कहिये । तेहने विषे आवकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम वनखण्डनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष । आवकना शील शुभाचार व्रत १२ अष्टव्रत रागादिकनौ विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवकारसौ प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिबो ते पौषधोपवासनो प्रतिपादवो कहिवो । श्रुतनो सांभलिवो । तथा बारि भेदे तपनो करिवो । प्रतिमा ११ आवकनौ उपसर्ग देवताना कोधा । संलेखना तपे करौ आत्माने कषाय दुर्बल करिवो । भातपाणीनो पचखवो । संथारो । देवलोक जाइवो

॥ भाषा ॥

आवयन्ते पूर्वोक्तमेव अतो विशेषत आह उवासगेत्यादि तत्र ऋद्विशेषा अनेककोटीसंख्यद्वयादिसम्यग्द्विषेष्टाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता
पितृपुत्रादिका ऽभ्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्म्यश्रवणानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्तस्य विशुद्ध
ता स्थिरत्वं सम्यक्तशुद्धिरेव मूलगुणोत्तरगुणा अणुवतादयः अतिचारा स्तेषामेव बधबन्धादितः खण्डनानि स्थितिविशेषा ओपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः
बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिगृह्णगृह्णानि तेषामेव च पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरूपसर्गोपसर्गाभावस्येत्यर्थः तपां

॥ टीका ॥

गमणां सुकुलपञ्चाया पुणोबोहिलाजो अंतक्रियानु आधविज्जंति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसे
सा परिसावित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाज अन्तिगमणे सम्तविमुद्धया थिरत्तं मूलगुणउत्तरगुणाइयारा
ठिईविसेसा बज्जविसेसा पणिमानिगगहग्गहणउवसग्गाहियासणणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलस्यगुणवेर

॥ मूल ॥

अने बल्लोसुकुले उपजवो । बल्लो बोधनो प्राप्ति । अंतक्रिया करिवो । एहसर्वं उपासक दशामं हि कहियेके । उपासक दशाने विषे आवकनो ऋद्विशेष
अनेक धन कोटि संख्या विशेष । परिषदा परिवारनो विस्तार । भगवन्त महावीरने पासे धर्मनो सांभलिवो । धर्मनो प्राप्ति । धर्मनो आदरिवो । सम्यक्त
नो विशुद्धता निर्मलता । धर्मने विषे स्थिरपणो । मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार बध बंधादिक । स्थिति विशेष । आवकपणां कालनो मर्यादा । सम्य
ग्दर्शन प्रतिमा अभिगृह्णो बहु विशेष कहिये बहुत भेदनो च्छिन्नो पालवो उपसर्गनो सहिवो । तथा निरूपसर्ग उपसर्ग विनापणि चित्त विचित्र अने

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

सिच विचाणिं शीलव्रतादयो ऽनन्तरोक्तरूपा अपश्चिमाः पञ्चात्कालभाविन्यः अकारस्त्वमङ्गलपरिहारार्थः मरणरूपे अन्ते भवा मारणांतिक्यः आत्मशरीर
स्व जीवस्यच संलेखनाः तपसा रोगादिजयेनच कृशीकरणानि आत्मनः संलेखनाः ततः पदत्रयस्य कर्मधारय स्तासां ओसणंति जोषणाः सेवनाः करणा
नौत्यर्थः तामिरपश्चिममारणान्तिकात्मसंलेखनाजोषणामि रात्मानं यथाच भावयित्वाबद्धनिभक्तानि अनशनतया च निर्भोजनतया च्छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उ
पपन्ना सृत्वेतिगम्यते केषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवन्ति सुरवरविमानानि वरपुंडरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्या
न्यनुपमानि क्रमेश भुक्तात्तमानि ततः आयुष्कक्षयेण श्रुताः सन्तो यथा जिनमते बोधिं लब्धा इतिविशेषः यथाच संयमोत्तम अधानं संयमं तमोरजश्रीघ

॥ मूल ॥

मण पञ्चस्काणपोसहोवयासा श्रुपच्छिममारणांतियाय संलेहणा ऊसणाहिं श्रुप्याणं जहय जावइत्ता वक्ष्णाणि
जन्ताणि श्रुणसणाए च्छेइत्ता उववसा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह श्रुणुज्वंति सुरवरविमाणवरपोंठरीएसु
सोस्काइं श्रुणोवमाइं कमेण नुत्तूण उत्तमाइं तन श्राउरकएचुआसमाणा जहजिणमयम्मि वोहिलछूणय सं

॥ भाषा ॥

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पौषधोपवास छेहले काले मरणांतिक संलेखना मरणरूप अं
तकाले होय एहवी संलेखना आत्माने कर्मधी हलुको करिवो । तेहनो जोषणी तेहनो सेविवो तेषे आपणा आत्माने भाविये जिमवणे प्रकारे अनसने
करी कर्मछेदीने उपनोछे प्रधान उत्तम देवलोक ने विषे सुख अनुभवेछे । देवता संबंधी प्रधान विमान प्रधान पुंडरीक कमलनौपरे उत्तम तेहने विषे
कज्ञान जाय एहवा अनुपम सुखप्रते क्रमे अनुक्रमे भोगवीने देवलोक यकी आयुक्षयधी चव्याधका जिम जिन मतने विषे बोधि श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति

विप्रमुक्ता अज्ञानकर्माप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अक्षयं अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोक्षं कर्माक्षयमित्यर्थः तथोपासकदशास्त्रादयान्त इतिप्रक्रमः एतेवान्ये चेत्यादि प्राक् सवरं संखेज्जाइ पयसहस्साइ पयगगेणंति किलैकादशलक्षाणि द्विपञ्चाशच्चसहस्राणि पदानामिति ॥ ७ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ

॥ टीका ॥

जमुत्तमं तमरयोधविप्पमुक्ता वेति जहश्रकयसहदुरकमोरकं एते अन्तेय एवमाइ उवासयदसासुणं परित्ता वायणा संखेज्जाअणुनगदारा जाव संखेज्जान संगहणीन सेणं अंगठयाए सत्तमे अंगे एगेसुयस्कंधे दसअ ज्जयणा दसउद्देशणकाला दससमुद्देशणकाला संखेज्जाइ पयसयसहस्साइ पयगगेणं प० संखेज्जाइ अरकरा इं जाव एवं चरण करणपरूवणा आधविज्जांति सेतं उवासगदसानु ॥ ७ ॥ सेकिंतं अंतग

॥ मूल ॥

होय बली उत्तम संयम आराधीने अज्ञानरूप अंधकार तल्लक्षण राजा तेहथी मुंकाणा जिम अक्षय अपुनरावृत्तिक सर्वदुःखक्षय लक्षण मोक्षपावे । इत्यादिक पूर्वोक्त तथा अनेरापिण पदार्थ उपासक दशाने विषे कहियेछे । परित्ता संख्याती वाचना । बली संख्याता अनुयोगद्वार । यावत् संख्याती संयहणी लगे जाणिवो । तेह अंगार्थपरिण सातमो अंग तेहने विषे १ अतस्संध आनन्दादिक १० आवकना १० अध्ययन । दश उद्देशनकाल बली १० समुद्देशन काल । संख्याता पदना सहस्र पदाये पद परिमाणे कद्धा । संख्याता अक्षर इहांथी चरण साधुव्रत करणपिंड विशुद्ध्यादिक इहांतक पूर्वी त पाठ कहिमां । ते उपासक दशा मांइ कहिये ते उपासकदशा सातमो अंग ॥ ७ ॥ स्थंते अंतगददशा संसारनो अंत कहिये नाश की

॥ भाषा ॥

का स्ता अन्तःकृद्दशाः तत्रान्तोविनाशः सच कर्मण स्तत्फलस्यवा संसारस्य कृतो यैस्ते अन्तकृता स्तेच तीर्थकरादय स्तेषां दशाः प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्संख्यया अन्तकृतदशा स्तथाचाह अंतगडदसासुणमित्यादि कण्ठं नवर दगरादीनि चतुर्दशपदानिषष्ठाङ्गवर्णकाभिहितान्येव तथा पङ्क्तिमाप्नोति द्वादश भिक्षुप्रतिमा मासिक्वादयो बहुविधाः तथा क्षमा मार्दवं आर्जवं च शौचञ्च सत्यसहितं तत्रशौचम्परद्रव्यापहारमालिग्याभावलक्षणं सप्तदशविधञ्च संयम उत्तमञ्च ब्रह्ममैथुनविरतिरूपं आकिंचणियत्ति आकिंचन्यं तप स्थागइति आगमोक्तं दानं समितयो गुप्तयश्चैव तथा अप्रमादयोगः स्वाध्यायध्यानयोश्च उत्त

ऋदसानु अंतगऋदसासुणं अंतगऋणं णगराडं उज्जाणचेइयवणरायाश्चम्मापियसमोसरणधम्माधम्मकहा इह लोइश्चपरलोइश्च इहिविसेसा जोगपरिच्चाया पव्वज्जाणु सुयपरिग्गहा तवोवहाणाडं पणिमानु वज्जविहानु खमाश्चजावं मद्दवंचसोश्च सच्चसहियं सत्तरसविहोयसंजमो उत्तमंचवंचं आकिंचिणया तवो किरियानु समि

धो जेणे ते अंतकृत तेहनो दशा जे संख्या जिम पहिले वर्गे दश अध्ययन इत्यादिक ते अंतकृद्दशा अंतकृद्दशाने विषे संसार अंतकारी जीवना नगर उद्यान चैत्य वनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा कहियेके । इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोग भोगीने पक्ष प्रव्रज्यादी चा लोधी । श्रुतनो भविषो तपनो करिवो १२ भिक्षुप्रतिमा अनेक प्रकारे । क्षमा क्रोधनोजीतवो । आर्जव मायानो द्वाडिवो । मार्दव माननो त्याग । शौच कर्ममलनोच्छाडिवो । सत्यकरो सहित । सतरह भेदे संयम जाणिवो । उत्तम ब्रह्मचर्यनो पालवो मैथुननो अभाव । आकिंचनता निद्रव्यपणी । तप

मयो ह्योरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्जाणपसत्यज्जाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अंतोमुहुत्तमित्तंचित्तावस्थाभेगवत्युमित्यादि
 व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोगः तथा प्राप्तानाञ्च संयमोत्तमं सर्वविरति जितपरीषहाणा चतुर्विधकर्मक्षये घातिक्षये सति यथा केवलस्य ज्ञानादेर्लाभः पर्या
 यः प्रवृत्त्यायाः लक्षणो यायांश्च यावद्वर्षादिप्रमाणो यथा येनतपोविशेषावयवणादिना प्रकारेण पात्रितो मुनिभिः पादपोषगमनञ्च पादपोषगमाभिधानमन
 शनं प्रतिपन्नो यो मुनि र्यत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावन्ति च भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा अनशनानां हि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो
 जात इति शेषः तमोरजग्नो घविप्रमुक्त एवंच सर्वेपि जेवकालादिविदेहिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरञ्च प्राप्ता व्याख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्ये चेत्यादि

इगुत्तानु चैव तह्यप्रप्यमायजोगो सज्जायज्जाणेणयउत्तमाणं दोरहंपि लस्कणाइं पत्ताणयसंजमुत्तमं जियपरी
 सहाणं चउत्तिहकम्मस्कयम्मि जहकेवलस्सलंजो परियानु जत्तिनुयजहपालिनु मुणीहिंपावोवगनुय जहिं ज
 त्तियाणिज्जाणि वेत्थइत्ता अंतगहोमुनिवरो तमरयोघविमुक्को मोस्कसुहमणंतरंचपत्ता एए अन्तेय एव

१२ भेदे । क्रिया अनुष्ठान । समितिगुप्ति । तिमज अप्रमादना योग । स्वाध्याय सिद्धांत नू भणवो । ध्यान धर्म ध्यानादि मुहूर्तं लगे चित्तनू एगाग्रपणोते
 स्वाध्यायध्यान । उत्तम एह बिहं नालक्षण अंतगडदशा मां हि कहिये छे । संयमप्रते जेह पास्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञानावरणीय १ दर्श
 नावरणीय २ मोहनौय ३ अंतराय ४ एहनोनाशकरे जिम केवल ज्ञाननो लाभहाय प्राप्तिहोय । पर्याय ते दीवानोकाल जेणे मुनीखरे जेतला जेतला
 वर्ष प्रमाणे संयम पाल्यो होय । पादपोष गमन अनशनादिक जेह जेणे प्रकारे जेतलाभात पाणी क्खेदीने अतकत् संसारना अंतकारक मुनिवर तम

• ॥ टीका

॥ मन्त्र ॥

॥ भण्ड

प्राप्यत् नवरं दृश्यमग्नयश्चिन्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते नन्वां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चैह पश्यते सत्तवग्नन्ति तत्र प्रथमवर्गादग्नयश्चार्पेक्षया यतोऽपि सर्वेष्वष्टवर्गानां यामपि तथोपठितत्वात् तददृष्टिर्भवेयं अष्टवग्नन्ति अष्टवर्गः समूहः सचान्तकृतानां मध्ययनानां वा सर्वाणि चैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभूतं च ह्यस्यैव कालादित्यादि इह च दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाशेषेति तानि च किल त्रयोविंशति सैद्याणि सत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकिंतमित्यादि नास्मादुत्तरो विद्यते इत्यनुत्तर उपपत्तनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधानः

मादृत्यवित्यरेणं परूवेई अंतगद्दसासुणं परिहावायणा संखेज्जाअणुनगदारा जावसंखेज्जानसंगहणीन
सेणंअंगठयाएअठमेश्शेगेएगेसुयस्कंधे दसअज्जयणा सत्तवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखे
ज्जाइं पयसहस्साइंपयग्गेणं पस्सत्ते संखेज्जाअस्करा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जांति सेत्तं अंतग

पंचकार अज्ञानरूप रजबी मूकाणो अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखप्रते पाय्यो । एह पूर्वे कक्षाते तथा अनेरापणि पदार्थ इहां अंतमछदशा मांदि कहिये
हे । प्रकृपियेहे । संख्याता वाचना । संख्याता अनुर्योगदार । जिह्वांलगे संख्याती संग्रहणी होय तिह्वांलगे जाणियो । अंगार्थपणे पाठमें अंगी एक श्रुतस्व
ध दश अध्यायन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेचाये बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह । दश उद्देशनकाल दश समुद्देशन काल । संख्याता पदना सत सहस्र
एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणे कथा । संख्याता अक्षर इहां धीमांडी चरण साधुव्रत करण पिंड विशुद्ध्यादिक खगे पूर्णनी परे पाठ कहि
ये । एतादिक पदार्थ जिहां कहिये ते अंतमछदशा ८ मो अंग ॥ ८ ॥ स्वते अक्षरारोववाई नथी उत्तर कहिये आबनि कथा खेवने तेइना

10

संसारं चत्वारः तथा विधेया भावादुपपातो येवागते तथा तेषां अनुत्तरोपपातिकाः तद्वत्त्वताप्रतिबद्धा दशाध्ययनोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा एता
 वाऽनुत्तरोपपातिकाश्च दशासु चमित्यादि तेषां अनुत्तरोपपातिकानामिति साधूनां नगरादीनि द्वाविंशतिः पदानि ज्ञाताधर्मकथाधर्मकोत्तानि यथा तथा एतेषां
 मेव च प्रपञ्चं रचयन्नाह अनुत्तरोपपातिकदशासु तीर्थंकरसमोसरणानि किंभूतानि परममङ्गलजगदितानि जिनातिशेषाश्च बहुविशेषाश्च देहविमलसुयंधमि

ऊदसान् ॥ ८ ॥ सेकिंतं अनुत्तरोपपातिकाश्च दशासु अनुत्तरोपपातिकासु अनुत्तरोपपातिकाणां न
 गराइं उज्जाणाइं चेडयाइं वणखंठा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहानं इहलोग
 परलोअइहि विसेसा जोगपरिच्चाया पव्वज्जानं सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागो पफिमानं संलेहणानं न
 त्तपाणपच्चस्काणाइं पानुवगमणाइं अनुत्तरोपपातिकासु सुकुलपच्चायापुणोवोहिलाहोअंतकिरियानं आघविज्जां
 ति अनुत्तरोपपातिकासु तित्थंकरसमोसरणाइं परममंगलजगदियाणि जिनातिसेसायवज्जाविसेसा जिण

दश अध्ययन प्रतिबद्ध दशाते अनुत्तरोपपातिक दशा । तेहने विषे अनुत्तर विमाने ऊपना जे साधु तेहनां नगर उद्यान चैत्य यज्ञायतन वनखंड राजा
 माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोगनो परित्याग दीक्षा श्रुतनो भणिवो । तप १२ भेद उपधान
 बली भिक्षुप्रतिमा संलेखना तेकिसी भातपाणीमा पच्चक्काण पादपोष गमन अनुत्तर विमाने ऊपनो बली सुकुल ने विषे अवतरिवो । बली बोधिलाभ
 जिम धर्मनो प्राप्ति । अंतक्रिया एतली वसु एहने विषे कहिये छे । वली तीर्थंकरना समोसरण ते समोसरण कहवो छे । परम मंगलीकपणें जगतने हित

त्वाद्य चतुस्त्रिंशदधिकतरावा तथा जिनशिष्याणांचैव गणधरादीनां किंभूताना मतप्राह अमणगणपवरगन्धहस्तिनां अमणोत्तमानामित्यर्थः तथाखिर
 यशसां तथा परीषहसैन्यमेवपरीषहहृन्दमेव रिपुबल म्परचक्रं तत्प्रमर्दनानां तथा दववहावाग्निरिव दीप्तान्धुज्वलानि पाठाक्षरेषु तपोदीप्तानि यानि चा
 रिचज्ञानसम्पत्तानि तैः साराः सफलाः विविधप्रकारविस्तारा अनेकविधप्रपञ्चाः प्रशस्ताश्च ये क्षमादयोगुणा स्तैः संयुतानां कचिद्गुणध्वजाना मितिपाठः
 तथा अनगाराश्च ते महर्षयस्तेत्यनगारमहर्षय स्तेषा मनगारगुणानां वर्णकः स्नाघा आख्यायत इतियोगः पुनः किंभूतानां जिनशिष्याणा मुत्तमाश्च ते ज्वा
 न्वादिनि वरतपस्य ते च ते विविष्टज्ञानयोगयुक्ताश्चै त्यत स्तेषा मुत्तमवरतपोविविष्टज्ञानयोगयुक्तानां किंचापरं यथा च जगद्वित भगवत इत्यत्र जिनस्यशा
 सनमितिगम्यते यादृशाश्च ऋद्विविशेषा देवासुरमानुषाणां रत्नोज्ज्वललक्षयोजनमानविमानरचनं सामानिकाद्यनेकदेवदेवीकोटिसमवायनं मणिखण्डमणि

सीसाणंचैव समणगणपवरगंधहृत्पीणं धिरजसाणं परिसहसेस्सरिउवलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्तणाणसम्म
 ससारविधिहप्यगारपसत्यगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाणवस्सु उत्तमवरतवविसिठणा

कारी है। जिनना प्रतिशय देहविमलसुगन्ध इत्यादिक चउत्तीस है जिनेंद्र ना शिष्य गणधरादिक ते केहवा है अमण समूह मांदि प्रधान वर गन्ध
 हावी ने समानहै। ते खिर जस निबल्लयशहै। परीषह सेनारूप शत्रुनी सेनाने प्रमर्दकहै। तपे करीदीप्त तेजवंत जे चारिच ज्ञान सम्पत्त तेहि
 करी सार सफल विविध अनेक प्रकार भसाजे गुणवंत लक्ष्य है ध्वजा जेहने तेहनो। अनगार एहवाजे महर्षिते अनगारमहर्षि तेहना एहवा जे
 अनगार तेहना जुष तेहनी वर्णक स्नाघा नीमे भंगे कहिये। वसी केहवाहै। ज्ञानादिके करी उत्तम प्रधान तपसाधवी विविष्ट ज्ञान बोधे करी जु

तबसे जेस जगतने विदे जिन प्राशन हितकारी छे । जेहवा ऋद्धिना विशेष छे । देव वैमानिक असुर ते भवन पत्थादिक तथा मनुष्य तेहनी करीब
 हा नी प्रादुर्भाव प्राबिबी उपासयंति पंचविध अभिगम ने करी सेवा करवी । जिनने समीपे सेवा करे । जिनवर लोक गुरु जिस देवता नर सुरा
 निधर्म कथा प्रती कहै । तेह जिनवरनी भाजित सांभलीने । खीर प्रायछे कर्म जेहना । बली विषयधी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिस धर्म उपास

नित धर्ममुदारे किञ्चिदप्य मतेषाह संवम नपचापि किञ्चूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बहूनि प्रेषाणि अशुचरिचिन्ता अनुचर्यमात्रेण संवम नपचे
 तिवर्तते तत चाराधितज्ञानदर्शनचारित्र्ययोगा स्तथा जिणवयणमणुगयमहिय भासियत्ति जिनवचन माचारादिप्रनुगतं सम्भवं नाईवितर्दमित्यर्थः अजित
 पूजितमधिक म्वा भावितं वै रध्यापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिनवचनमनुयत्नानुकूल्येन सुदुभाषितं यै स्ते जिनवचनानुगतिसुभाषिताः तथा जिणवस
 चहियएचमणुचेतत्ति इतिषष्ठौ द्वितीयाधे तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत् यावन्तिच भक्तानि शब्देयित्वा सत्त्वाच स
 माधि सुत्तमं ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तरं तस्यत्ति अनुत्तरविमानेषु विषय
 सुचं तथाख्यायन्ते तत्तोवत्ति अनुत्तरविमानेभ्यस्युताः क्रमेण करिष्यन्ति संयता यथाचान्तः क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशासित्तिप्रकृतमे

णि श्युण्णचरित्ता श्याराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहिय ज्ञासित्ता जिणयराण हिययेण
 मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि जत्ताणि वेत्थइत्ता लल्लूणयसमाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ता मुणिवरोत्त
 मा जह्मणुत्तरेसुपावन्ति जह्मणुत्तरं तस्यविसयसोरकं तनुयचुत्थाक्रमेण काहिंतिसंजया जहायत्थंतकिरियं

प्रधान संवम तप चर्चे प्रकारे सर्व विरति रूप । जिन घषा वर्ष लगे अशुचरी सेवीने चाराध्याये ज्ञान दर्शन चारित्र्य योग जेचे जिनवचन आचा
 राध्यादिने अनुमतसंमिक्षित महित पूजित भावित जेचे । जिन वरने हृदये करी मनंकरी अनुनीयधारने । जेह जिहां जेतसा भाव जेहीने संसा
 दि वासीने उत्तम आचरुण वरने उपपन्ना मुनिवर अनुत्तर विमानते विवे जिन प्रधान जित्त सुखपीयेने यथा अनुत्तर विमानतो अनुत्तरे । इति

तेषामेवेत्यानि पूर्ववत् नवरं दसअज्जयणातिन्निवग्गति इहाध्ययनसमूहो वर्गो वर्गेचदशाध्ययनानि वर्गस्य युगपदेवोद्दिश्यते इत्यत स्वयएवोद्देशनकाला भवन्ती
 त्वमेवेष नद्या मभिधीयन्ते इहतु दृश्यन्ते दशेत्यभिप्रायो नञायत् इति तथा संख्यातानि पदसयसहस्राइ पयग्गेणंति किल षट्चत्वारिंशत्तत्वाष्टौष
 ॥ १७८ ॥ ८ ॥ सेकिंतमित्यादि प्रश्नः प्रतीत स्तत्रिर्वचनं व्याकरणं प्रश्नानाञ्च व्याकरणानाञ्च योगात्प्रश्नव्याकरणानि तेषु अनुत्तरम्पसिणसयं

एण अन्तेय एवमाइत्य वित्यरेण अणुत्तरोववाइयदसासुणं परिन्नावायणा संखेज्जाअणुनगदारा संखेज्जान
 संगहणीनुसेणं अंगठयाए नवमेअंगे एगेसुयरकंधे दसअज्जयणातिन्निवग्गा दसउद्देशणकाला दससमुद्देशणका
 ला संखेज्जाइ पयसयसहस्साइ पयग्गेणं प० संखेज्जाणि अस्कराणि जावएवंचरणकरण परूवणया आधवि
 ज्जांति सेतं अणुत्तरोववाइय दसान् ॥ ९ ॥ सेकिंतं परहावागरणाणि परहावागरणेषु अनुत्तरं

खे मुनिवर अंतक्रिया । एह पूर्वेजे कज्जाते अनेरापणि एवमादिक पदार्थ इहां अनुत्तरोपपातिक दशामांहि कहियेके । एणेंसूचें परित्ता वाचना ।
 संख्याता अनुयोग द्वारउपक्रमादिक । यावत् संख्याती संग्रहणी लगे जाणवो । तेह अंगार्थपणे नवमे अंगे एक श्रुत स्कंधना दश अध्ययन त्रिण वर्ग
 वली दश उद्देशन काल । दश समुद्देशनकाल । संख्याता पदनां शत सहस्र ४६ लाख ८ हजार पदने परिमाणे कज्जो । संख्याता अक्षर थी जिहां ल
 गे चरणसाधुव्रतनौ प्ररूपया होय तिहां लगे कहिबो । इत्यादि पूर्वोक्त पदार्थ जिहां कहिये ते अनुत्तरोपपातिक दश नौमो अंग जाणिबो

॥ ८ ॥ अथ खं ते प्रश्न व्याकरण प्रश्नो व्याकरण कहिवांते प्रश्नव्याकरण प्रश्नव्याकरणे विषे अनुत्तर सर्वोत्तम प्रश्नानां अंगुष्ठबाहु प्र

॥ टीका ॥

॥ सूत्र ॥

॥ भाषा ॥

तथाङ्गुष्ठाहुप्रश्नादिका मंत्रविद्याः प्रश्ना याः पुनर्विधिनाजप्यमाना अष्टाष्टा एव शुभाशुभं कथयन्ति एतेः अप्रश्नाः तथाङ्गुष्ठादिप्रश्नभावं तदभावं च प्रतीत्य
या विद्याः शुभाशुभं कथयन्ति ताः प्रश्नाप्रश्ना विज्ञादस्यन्ति तथा अन्ये विद्यातिशयाः स्तम्भस्तोभवशीकरणविदेष्टीकरणोच्चाटनादयः नागसुपर्णैश्च सह भवन
पतिविशेषै रुपलक्षणत्वा द्यक्षादिभिश्च सह साधकस्येति गम्यते दिव्यास्तात्विकाः सम्वादाः शुभाशुभगताः संलापाः आख्यायन्ते एतदेव प्रायः प्रपञ्चयन्नाह
परहावागरणदसेत्यादि स्वसमयपरसमयप्रज्ञापका ये प्रत्येकबुद्धास्तैः करकण्डूादिसदृशैर्विविधार्थायकाभाषा गभीरेत्यर्थं स्तया भाषिता गदिताः स्वसमयप
रसमयप्रज्ञापकप्रत्येकबुद्धविविधार्थभाषाभाषिता स्तासां किमादर्शाङ्गुष्ठादीनां सम्बन्धिनीनाम्प्रश्नानाम्बिविधगुणमहार्थाः प्रश्नव्याकरणदशास्वाख्यायन्ते

पसिणसयं अष्टुत्तरं अपसिणसयं अष्टुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्ञादसया नागसुवन्तेहिं सद्भिर्दिह्यासंवाया
आधविज्ञांति परहावागरणदसासुणं ससमय परसमय पस्यत्रय पत्तेऽष्टुत्तरं विविहत्यन्नासाज्ञासियाणं अइस
यगुण उवसमणाणप्यगार आयरियन्नासियाणं वित्यरेण वीरमहेसीहिं विविह वित्यार ज्ञासियाणंच जगहि

आदिक मंत्र विद्यानां पाठांतरं अंगुष्ठादिक प्रश्न अठोत्तरसो तथा विधिपूर्वक जे विद्या जपोथकौ अष्टष्ट थई शुभाशुभ प्रश्न कहते अप्रश्नविद्या तेह
ना सेंकडा तथा अनेरापणि विद्यानां अतिशय धंभनी वशीकरणो उच्चाटना इत्यादिक । नाग सुपर्ण भवनपति विशेषने साथे दिव्यते तात्विक संवाद
शुभाशुभ संलापक प्रश्न व्याकरण दशाने विषे कहियेहे । प्रश्न व्याकरण दशाने विषे स्वसमय जिनमत परसमय परमतना प्रज्ञापक कथक जे प्र
त्येक बुद्ध करकण्डूादिक विविधार्थ अनेक प्रकारना अर्थ हे जेहना एहवी भाषायें कइया । अष्टष्ट अंगुष्ठादिक संबंधी भाषाना विविध गुण कहिये । ते

प्रतिपद्यन्ते विभूतानां चरुमगुणवत्समनाश्चकार आग्रहिभासियाचन्ति चतिप्रदायामर्षोऽध्यादवी नुचाय ज्ञानादय उपशमय सपरमेष्ठ पतना
 नापकाय वेनास्ते तथा तेच ते चाचार्याश्च ते भाविता वा स्ता तथा तासां कव चाविताना मित्याह विस्तरेचन्ति विस्तरेष महावचनसन्दर्भेष तथाक्षिरम
 शर्षिभिः पाठास्तरे वीरमहर्षिभिः विविहवित्थारभाषियाचन्ति विविधविस्तरेष भावितानाश्च चकारस्मृतीयप्रचायकभेदसमुच्चयार्थः पुनः कवभूतानां अ
 नानां जगद्वियाचं जगद्वितानां म्युक्त्यर्थोपयोगित्वात् त्रिसम्बन्धिनीना मित्याह अहागति आदर्शशाङ्कुष्टश्च बाह्यश्च अस्मिन् श्रीमन्च वस्त्रं आदित्यसेति
 दग्ध स्ते आदि येषां कुचयश्च घण्टादीनां ते तथा तेषां सम्बन्धिनीना अग्रविद्याभि रादर्शकादीना मावेशनात् किभूतानां प्रश्नाना मतयाह विविधम
 हाप्रश्नविद्याश्च वाचैव प्रश्नेसत्युत्तरदायिन्यः मनः प्रश्नविद्याश्च मनः प्रश्नार्थोत्तरदायिन्य स्तासां दैवतानि तदधिष्ठातृदेवता स्तेषां प्रयोगप्राधान्येन तद्वा

याणं श्रद्धागंगुठयाज्जसिमणिस्वोमश्चाइञ्जनासियाणं विविहमहापसिणविज्जमणपसिणविज्जा देवयंपयोग

प्रश्न वेदवाहे । चतिप्रय आमर्षोऽध्यादिक १ । गुण ज्ञानादिक २ । तथा उपशम पोताने परने उपशमाविबो ३ । एह नाना प्रकारके जेहने एहवासे
 आचार्य तेबे विस्तार करी कदाहे । वीर महर्षि मोटायतीये अनेक प्रकार जेविस्तार वचनसंदर्भ करी भाषाहे । वस्त्री जगतने हित रूपके । चास्ती
 सो समुष्ट बाह्य पद्म मखिरज इत्यादिक वस्त्री वस्त्र आदित्यसूर्य वस्त्रोशंख घंटादिक एहने आगलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवी पूर्वोक्त
 पदार्थ अधिष्ठान करीने उत्तरदे । तेमाटे ते प्रश्नविद्याये करी भाषित हे । विविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछे यके तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या
 चास्ती । महाप्रश्नविद्या मगनी चिंतित अर्थ कहे एहवासी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनी व्यापार प्रधानपदे विविधार्थनी प्रकाशक । तथा

पारप्रधानतया गुण स्विविधार्थं सम्पादलक्षणं अकारयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रशुद्धिदामनः प्रशुविद्यादैवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका
 स्तासां पुनः किंभूतानां प्रश्नानां समुद्भूतेन तात्विकेन द्विगुणेन उपलक्षणत्वा लौकिकप्रशुविद्याप्रभावापेक्षया बहुगुणेन पाठाग्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन
 माहात्मेन नरगणमतौमनुजसमुदयबुद्धौ विस्मयकार्यश्चमत्कारहेतवो याः प्रश्ना स्ताः समुद्भूतद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्यं स्तासां पुनः किंभूतानां तासां
 मतिसयमतौतकालसमयेति अतिशयेन यतौतः कालः समयः स तथा तत्र अनिव्यवहिते काले इत्यर्थः दमः शम स्तत्प्रधानं तीर्थकराणां दर्शनाग्नरशा
 स्तृणा मुत्तमो यः स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थकरोत्तमस्य स्थितिकरणं स्थापनं आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानाद्विगुणयुक्तः सकलप्रणायकशिरः शिखर
 कल्पः पुस्तप्रविशेषः एवंविधप्रश्नानां मन्ययानुपपत्तेरियेवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तया तासां पुनस्ताएव विगिनटि दुरभिगमं दुरवबोधं गम्भी
 रं सूक्ष्मायेत्वेन दुरवगाहं च दुःखाध्येयं सूत्रमनुवायतस्य सर्वेषां सर्वज्ञानां सम्मतनिष्ठं सर्वमवज्ञमस्मतं अथवा सर्वज्ञं तत्सर्वज्ञसम्मतञ्चेति सर्वसर्वज्ञसम्मतं अथ

॥ टीका ॥

पाहाणगुणप्यगासियाणं सप्रूयदुगुणप्यज्ञावनरगणमद्विन्ध्यकराणं शुद्धसयमईयकालदमसमतित्यकरुत्तम
 स्सठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्तुसम्मच्छस्स शुबुहजणवोहकरस्स पच्चरकयपच्चयकरा

॥ मूल ॥

सद्गुण तात्विकपणे द्विगुण लौकिक प्रशु विद्यानी अपेक्षाये घणोजे प्रभाव माहात्म्यं तेषां करौ मनुष्य समूहनी दुडिने विस्मय करेके चमत्कार उपजा
 वेके । अतिशये करौ अतीतकाल समय अत्यंत व्यवहित काले दम शम तेषां करौ महित तीर्थं करोत्तमनी स्थितिनो करण स्थापितो तेहना कारणके ।
 दुरभिगम दुःखे जाणिये । गम्भीर सूक्ष्मार्थ पणे दुरवगाह दुःखे ग्रहीसके । सर्व सर्वज्ञने मान्य । तथा अवुधजन मूर्ख जेनने प्रबोध ना कारण । प्रत्यक्ष प

॥ भाषा ।

चनतत्वमित्यर्थः तस्य अवधजनविबोधनकरस्य एकांतहितस्येतिभावः पञ्चक्षयपञ्चयकराणति प्रत्यक्षकेन ज्ञानेन साक्षादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वातिशयनिधानमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाद्यभिचारिचेदं जिनप्रवचन मित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यक्षेणैवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यक्षमिवेद मित्येवं प्रतीतिः प्रत्यक्षप्रत्यय स्तत् करणशीलाः प्रत्यक्षकप्रत्ययकार्यः प्रत्यक्षताप्रत्ययकार्येवा नामा स्पष्टक्षकप्रत्ययकारीणां प्रत्यक्षताप्रत्ययकारीणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्नविद्याना सुपलक्षणत्वा दन्यासाञ्च यासा मष्टोत्तरशतान्यादाप्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाश्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभाशुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किम्भूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आवविज्जंतिति आख्यायन्ते शेषमूर्ध्ववत् नवरं यद्यपौहाध्ययनानां दशत्वाद्दशैवोद्देशनकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापेक्षया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्धमिति संखेज्जाणिपयसयसहस्राणि पयग्गेणंति

पं परहाणंविविहगुणमहत्याजिणवरप्पणीया आघविज्जंति परहावागरणेसुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणु
उगदारा जावसंखेज्जानु संगहणीनु सेणंअंगठयाएदसमेअंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देशनकाला पणयाली
संसमुद्देशनकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्राणि पयग्गेणं प० संखेज्जाअरकरा अणंतागमा जावचरणकरण

ये प्रतीतना करणहार के एतले प्रत्यक्षपणे मानिवा योग्य के । एहवा प्रश्नाना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरप्रणीत भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न आकरणने विषे कहियेके । प्रश्न व्याकरणने विषे संख्याती बाचना । संख्याता अनुयोग द्वारधी यावत् संख्याती संगहणी लगे पाठ कहियो । तेणें अंगार्थपणें दशमें अंगे एक अतस्कंध तेने विषे ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना शत सहस्र एतले ८२

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

તાનિ ચ કિલ.દિનશતિ લેઢાણિ ષોઢશચ સહસ્રાશીતિ ॥ ૧૦

૧૦

॥ સેકિંતમિત્યાદિ વિપચ્ચંદ્રં વિપાકઃ શુભાશુભકર્મપરિણામ સ્તુતિપાદકં શ્રુત
સ્વિપાકશ્રુતં વિવાગસુણમિત્યાદિ કંઠ્યં નવરં ફલવિવાગેતિ ફલરૂપોવિપાકઃ ફલવિપાકઃ તથાનંગરગમણાદિ ભગવતો ગૌતમસ્ય ભિચ્ચાર્યં નગરપ્રવેશ

॥ ટીકા ॥

પરૂવણયા આઘવિજ્ઞાંતિ સેત્તંપરહાવાગરણાદં ॥ ૧૦

૧૦

॥ સેકિંતં વિવાગસુણં વિવાગસુણં સુક્કા

॥ મૂલ ॥

ઠદુક્કાઠાણં કમ્માણં ફલવિવાગે આઘવિજ્ઞાંતિ સેસમાસનં દુવિહે પસસત્તે તંજહા દુહવિવાગે સુહવિવાગેચેવ
તત્થણં દસદુહવિવાગાણિ દસસુહવિવાગાણિ સેકિંતં દુહવિવાગાણિ દુહવિવાગેસુણં દુહવિવાગાણં નગરાદં ઉ
જ્ઞાણાદં ચેદ્ધયાદં વણસ્વંઠા રાયાણો અમ્માપિયરો સમોસરણાદં ધમ્માયરિયા ધમ્મકહાનં ણગરગમણાદં

લાખ ૧૬ હજાર પદ પદને પરિમાણે કહ્યા । મંહ્યાતા અચર । અનંતા ગમા । અનંતા પર્યાય યાવત્ ચરણ કરણ અમણવ્રત પિંડવિશુદ્ધાદિક લગે
જાણિયો । इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्रुत्याकरण दशमोअंग ॥ १० ॥ अथसूतेविपाक श्रुत । विपाकजे शुभाशुभ कर्म
ना परिणाम तेहनो प्रतिपादक कथक जे श्रुत ते विपाक श्रुत । विपाक श्रुतने विषे शुभ अशुभ कर्मना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि
येछे । ते विपाक श्रुत संक्षेपे बेप्रकारनो कह्यो । तेकहेछे । दुख विपाक अने सुख विपाक । ते विहुंमांहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुबा
हु कुमारादिकना दश सुउ विपाक । अथ किशते दुःखविपाक । दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर । उद्यान । चैत्य । बनखंड ।
राजा माता । पिता । समोसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । नगर गमन । भगवंत गौतम भिचार्थे नगरमांहि प्रवेश करे । संसारनो प्रबंध बिस्तार । दः

॥ भाषा ॥

नानीति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेषुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणपरदारमैथुनैः सह ससंगयाण्यति यो ससङ्गता सपरिग्रह
ता तथा संचितानां कर्मणामितियोगः महातीव्रकषायैर्द्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायानां संचितानां कर्मणां पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये
फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केवामित्याह निरयगतौ तिर्यग्योनौच ये बहुविधव्यसनशतपरम्पराभिः प्रबद्धाः ते तथा तेषां जी

संसारपबंधे दुहपरंपरानुय श्लाघविज्जंति सेतुंदुहविवागाणि सेकितंसुहविवागाणि सुहविवागेषुणं सुहविवा
गाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणां अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहानु इह
लोय परलोय इहिविसेसा भोगपरिञ्चाया पव्वज्जानु सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पप्पिमानु संले
हणानु उत्तपच्चरकाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणवोहिलाहो अंतकिरियानु अण
घविज्जंति दुहविवागेषुणं पाणाइवायअलियवयणज्जोरिक्ककरणपरदारमैज्जणससंगयाए महतिव्वकसायइं

खनी अणो कहिये छे ते दुःख विपाक । अथ खूं ते सुखविपाक । सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुवाहु कुमारादिकना । नगर । उद्यान । चैत्य ।
वनखंड । राजा । माता । पिता । समोसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष । भोगनो परित्याग । दीक्षा । श्रुतनो भ
णवो । तपोपधान करिवो । पर्याय । प्रतिमा । संलेखना । भात पाणोनो पच्चक्खाण । पादपोपगमन । देवलोक उपजिवो । तिहां थकी चवी
ने सुकुलेउपजिवो । बली जिन धर्मनो प्राप्ति । अंतःक्रिया । एह जिहां कहिये ते सुख विपाक । दुःख विपाकने विषे । हिंसानो करिवो । अलीक वच

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

बाना मितिगम्यते तथा मणयत्तेति मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकादया स्ते तथा ते आख्यायन्ते
इतिप्रकृतं तथाहि बधो यस्यादिताडनं वृषणविनाशो वर्धितककरणं तथा नामयोश्च कर्मयोश्च आशुभवाङ्गुलानां अङ्गुष्ठानां च करयोश्च चरणयोश्च नखा
नां च यच्छेदनं तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अस्त्रनं तप्तायः शलाकया नेत्रयोः स्त्रक्षणं वा देहस्य चारतैलादिना कङ्गिदाहणंति कडानां विदलवंशादि
मयाना मग्निः कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहनं कटेन परिवेशितस्य बोधनमित्यर्थः तथा गजचलनमलनम्फलन खिदारणं उल्लम्बनं वृक्षशाखादावुद्धं

॥ टीका ॥

दियप्पमायपायप्पनुय असुहज्जवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावणुज्जागफलवियागाणि णरगति
रिस्कजोणियविविहविसणपरंपरावद्वाणं मणुयत्तेवि आगयाणंजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविया
गाणरगतिरिस्कजोणियविविहविसणविणासकन्नुठंगुठ करचरणनहत्तेयण जिप्पत्तेयण अंजणकङ्गिदाह

॥ मूल ॥

न मुखथी कूडा बोलवो । चोरोनो करिवो । परस्त्रो मैयुन संगमनो करिवो । परिग्रहो धारण करिवो । महातीव्रकषाय । इन्द्रिय प्रमाद । तथा । पाप
प्रयोग । पापशपार । एह थको ऊपनो अशुभ अशुभलाय तेज करो तथा पापकर्म कर्म तेहना पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय ।
दःख विपाक ने विषे कहिये । नरक तीर्यं च योनिने विषे अनेक प्रकार कटनो येणो तेणो कटो बंधाणा जेजीव तेहनो । तथा मनुष्यपणे पणि आव्या
थका जिम पापकर्म शेषेकरो पापीहोय । फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय । तथा नरकतीर्यंचयोनिने विषे अनेक प्रकारना कष्ट विनाश कान
ओठ अंगूठा हात पग नख एहना छेदन । तथा जिह्वा जीभ छेदन । तथा अंजन लाहनी शलाका नेत्रने विषे घालवो । तथा कट बांसनी बेफाड तेह

॥ भाषा ॥

मं तथा मूलेन सतया लकुटेन यस्याच भस्त्रनं गात्राणां तथा वपुषा धातुविशेषेण सौसकेणच तेनैव तप्तेन तैलेनच कलकलत्ति सशब्देना भिषेचनं तथा कुम्भ्यां भाजनविशेषे पाकः कुम्भीपाकः कम्पनं शीतलजलाच्छोटनादिना शीतकाले गात्रोत्कंपजननं तथा स्थिरबन्धनं निविडनियंत्रणं वेधः कुन्तादिना शस्त्रेण भेदनं पट्टकर्तनं त्वगुष्मोटनं प्रतिभयकर अभयजननं तत्करप्रदौपनञ्च वमनावेष्टितस्य तैलाभिविक्तस्य करयो रग्निप्रबोधनमिति कर्मधारयः ततश्च बधश्च वृषणविना शस्त्रेत्यादि यावत्प्रतिभयकरप्रदौपनं चेति दृग्द्वयः ततस्तानि आदि र्येषां दुःखानां तानिच तानि दारुणानि चेति कर्मधारयः कानीमाननीत्याह दुःखानि किंभूता न्यनुपमानि दुःखविपाकेष्वार्यायन्त इतिप्रक्रमः तथेदं माख्यायते बहुविविधपरम्पराभिः दुःखानामितिगम्यते अनुबद्धाः सन्ततमालिङ्गिता बहुविधपरम्परा अनुबद्धा जीवा इतिगम्यते नमुच्यन्ते तत्याज्यन्ते कयापापकर्मवश्या दुःखफलसम्पादिकया किमित्याह यतो ऽवेदयित्वा अननुभूयकर्मफलमितिगम्यते

गयचलणमलणफालणउल्लंघणसूललयालउडलछिन्नंजण तउसीसगतत्ततेल्लकलकलश्चहिसिंचण कुम्भिपागकंपण

थिरबंधणवेहवज्जकत्तण पतिजयकरपल्लीयणाइं दारुणाणि दुस्काणि शृणोवमाणि वज्जविविहपरंपराणुव

नौ अग्नीये करी बालिवो । तथा हाथीना पगने हेंठें मर्दिवो । कोहाडें करी बेफाड करिवो । वृक्षशाखाने विषे जंचो बांधिवो । शूलें करी सतायें करी लाकडो लठी लाठीये करी गात्रनो भांजिवो । तथा तातो सौसो कडकडायमान तेल तेणे करी स्नान करिवो । कुम्भी भाजनमाहि पचाविवो । शीतल जले करी शरीर छांटे तेहथकी जपनो कंप । निगड बंधन । भालादिकें करी वींधवो । चामडानो जोडिवो । भयोत्यादक तेलें करी भीनोवस्त्र शरीरमां सपेटो ने अग्निनो लुगाडिवो । इत्यादिक दारुण अनोपम एहवा दुःख विपाकने विषे कहिये । अनेक प्रकार दुःखनी श्रेणीयें करी निरंतर आलिंग्या

हुर्यस्मादर्थे नास्ति भवति मोक्षो विर्योगः कर्मणः सकाशात् जीवाना मितिगम्यते किं सर्वथाने त्याह तपसा अनशनादिना किंभूतेन धृतिश्चित्तसमाधानं
तद्रूपा धणियति अत्यर्थं वहा निःपौडिता कच्छावन्धविशेषो यत्र तत्तथा तेन धृतिवलयुक्तेनेत्यर्थः. शोधनमुपनयनं तस्य कर्मविशेषस्य याविति सम्भावना
यां होष्मा सम्पद्येत नाग्यो मोक्षोपायो स्तोति भावः एत्तोयेत्यादि इत आनन्तरं सुखविपाकेषु द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययनेष्वित्यर्थः यदास्थायते तदभिधीयत
इतिशेषः शीलं ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा संयमः प्राणातिपातविरति नियमा अभिग्रहविशेषाः गुणाः शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च तपो अनशनादि एतेषा मुपधानं
विधानं येषान्ते तथा अत स्तेषु शीलसंयमनियमगुणतपउपधानेषु केचित्त्याह साधुषु यतिषु किंभूतेषु सुदुविहित मनुष्ठितं येषान्ते सुविहिता स्तेषु भक्तादि
दत्वा यथा बोविलाभादि निवर्त्तयन्ति तथेहाख्यायत इतिसम्बन्धः इहच सम्प्रदाने सप्तमी नदुष्टा विषयस्य विवक्षणात् अनुकम्पा अनुक्रोश स्तत्रधान आश
य चित्तं तस्य प्रयोगो व्यावृत्ति रनुकंपाययाप्रयोग स्तेन तथा तिकालमतिचित्ति त्रिषु कालेषु या मति बुद्धि र्यदुत दास्यामीति परितोषोदीयमानेपरितोषो

॥ टीका ॥

छाणमुंचन्ति पावकम्मवल्लीयवेयइत्ता ऊणत्थिमोस्को तवेणधिइधणियवरुक्कणेण सोहणंतस्सवाविज्जजा
एत्तोयसुहविवागेसुणं सीलसंजमणियमसुयतवावहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पत्तंग तिकालमइ

॥ मूल ॥

यका नमंकाये न छूट्या । पापकर्म वल्ली दुख फलदायक वेलडोथी तेपापी जीवनछूटे । विना भोगे निश्चयधी मोक्ष नहोय । सर्वथापि छूटिवो नथी । एम
नही तो केम । तपेकरी तथा धृति चित्तनो समाधान तेणे करी अत्यंत बहकच्छ थईने शोधबो बेगलो थाईवो ते कर्मनो होय । इहां थकी वीजाश्रुत स्कंध
सुखविपाक ने विषे जे कहिये तेलिखेहे । शील संयम नियम श्रुत तपोपधान के जेहने । एहवा सुविहित साधूने विषे दयाभावे करी सहित जे चित्त

॥ भाषा ॥

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्तयाच यानि विशुद्धानि तानि यथा तानिचतानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाशयप्रयोगत्रिकालमतिविशुद्धभक्तपा-
नानि प्रदाये त्रिगोत्रः केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूरचेतसा हितो जनार्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुखः शुभावा नौसेसत्ति निःश्रेयसः कल्याण
करत्वात् तत्रः प्रकटः परिणामो ऽध्यवसान यस्यां सा तथा सा निश्चिता असंशया मति बुद्धि र्यथांते हतमुखनिःश्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतयः किं पय
च्छिज्जगन्ति प्रदाय किंभूतानि भक्तपानानि प्रयोगेषुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशंसादि दोषरहितानि ग्राहकगृहणव्यापारापेक्षया चोद्भवा
दिदोषवर्जितानि ततः किं यथाच येनच प्रकारेण पारंपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणैर्निवर्तयन्ति भव्याः जीवा इति गम्यते तृशब्दो भाषामात्रार्थः बोधिलानं

॥ टीका ॥

विसुद्धजन्तपाणां पययमणसाहियसुहनीसेसतिह्वपरिणामनिश्चियमदुपयत्यिज्जगं पयोगसुद्धां जहनिवृत्ते
तिच्छो बोहिलाजंजहयपरित्तीकरेति नरनरवतिरियसुरगमणविपुलपरियह चरतिजयविसायसोगमिच्छत

॥ मूल ॥

तेहनो व्यापार तेणेंकरी त्रिहंकोलने विधे विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे । देहेने आदर पुरितचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे । तथा सु-
खनां हेतु निश्रेयस कल्याणवंत एहवा तीव्र प्रकट परिणाम अध्यवसाय के जेहना एहवा निश्चय मति यंशय रहित बुद्धि के जेहनी तेह देहेने तेह
भातपाणी केहवा के प्रयोग शुद्ध के प्रयोगने विधे दायक दान व्यापारना अपेजाये शुद्ध के संशयादिक दूषण रहितके । जिम जेणे प्रकारे परंपरा ये
मोक्ष साधक लक्षणें निवर्तावे निपजावे बोधिलाम भव्यज व जिम परित्तीकरे संसार सागर धोढोकरे । तेसंसार सागर केहवाके । मनुष्य नरकर्तार्यच
देता एह चिहंनो गतिने विधे जीवना एहवा नजाइवा भ्रमिवा विपुल विस्तारण परिवर्तमत्स्यादिज्ञाना अनेक प्रकारे संचरण जिहां । अन्ति भय वि-

॥ भाषा ॥

धत्वायुः सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभीषः यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहेवन्ति तिर्यग्लोके नर
लोक मागताना माश्रुवर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यवृद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोगः तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुषः सकाशात् शुभत्वं दीर्घत्वं च
एवं वपुः शरीर न्तस्य स्थिरमंहननता वर्णस्यादारगौरत्वं रूपस्यातिमन्दरता जाते रुक्तमत्वं कुलस्याप्येवं जन्मनो विशिष्टत्रैककालनिराबाधत्वं आरोग्यस्य प्रक
र्षः बुद्धि रौत्पत्तिक्यादिका तस्याः प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेषः प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजनः सुहृलोकः स्वजनः पितृपितृव्यादिः धनधा
न्यरूपो यो विभवी लक्ष्मीः स धनधान्यविभव स्तया समृद्धिः पुरान्तः पुरकोशकोटागारबलवाहनरूपा याः सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषां

सोस्काणि शृणोवमाणि ततोयकालंतरचुश्राणं इहेवनरलोगमागयाणं श्राउवपुपुस्रहवजातिकुलजन्मश्रा
गवुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधणधस्रविजवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा वज्रविहकामजोगुप्लवाणसोस्का

पमादिक जेणं प्रकारे बांधे आउखी सुरगण ने विधे जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रते ते सुख केहवाछे अनोपम कछा न
जाव ते देवलोक थको कालांतर चय्या चवोने इहां मनुष्यलोक मांदि आब्या तेहनो पुरो आउखी उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पंचेद्रिय पूरा जा
तिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो माटपत्त कुल ते भलो पितृपत्त तिहां जन्म आरोग्यते निरोगपणो बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पंडिताई
मित्रजन सुहृलोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ अन्नादिलक्षण कछा विभव संपदा घणी समृद्धि ते पुरान्तःपुर कोठार बल
वाहनरूप समृद्धि संरदा सार प्रधान वस्तु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणो तथा घणे प्रकारे कछा । कामभोग तेहघो उपना सुख

यः समुदयः समूहः स तथा इत्येतेषां द्वंद्वं स्ततः एषां ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्यानां विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी
यं शुभविपाक उत्तमो. येषां ते शुभविपाकोत्तमा स्तेषु जीवेष्वितिगम्यं इहचेयं पश्येयं मत्तमो तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूनां मायुष्कादिविशेषाः
शुभविपाकाध्ययनेश्चाख्यायन्ते इतिप्रकृतं अथ प्रत्येकं शुतस्कन्धयो रभिधेये पुण्यपापविपाकरूपे प्रतिपाद्यतयोरेव योगगन्धेन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर
तत् अविच्छिन्ना ये परम्परानुवद्धा के विपाका इतियोगः केषां मशुभानां शुभानां च कर्मणां मध्यमद्वितायशुतस्कन्धयोः क्रमेणैवच भाषिताः उक्ता बहुविधा
विपाकाः विपाकश्रुते एकादशाङ्गे भगवता जिनवरेण संवेगकारणाद्याः संवेगहेतवोभावाः अन्येपिचैवमादिका आख्यायन्ते इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा
मा दोत्तरक्रियया योगः एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थं प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठं नवरं संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तत्र किल ए

॥ टीका ॥

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुवद्धा असुत्ताणचेवकम्भाणजासिष्णावज्जविवागा विवागसुयम्मि
जगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्या अन्तेवियण्वमाइयावज्जविहावित्यरेणं अत्यपरूवणया आद्यविज्जांति

॥ मूल ॥

ना विशेष ते सुखविपाक उत्तमने विषे कहिये । निरंतर परंपराये घणाभवलगे कांध्या । अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भाषाश्रुतस्कंधे क्रमे
कक्षा घषे प्रकारे विपाक ते कर्मकलोदय तेह विपाकश्रुत इत्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे संवेगकारणनाअर्थ संवेगनाहेतुनाभाव अनेरापणि एवंमा
दिक एषे अने घषे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये । विपाक श्रुतना परित्ता गणतीये वाचना सूत्रार्थनो देवो संख्याता अनुयोग

॥ भाषा ॥

कापदकोटी चतुरश्रैश्च सप्तविंशति सप्तसहस्राक्षैश्च ॥

११

॥ सेकितंदिठिवाएति दृष्टवो दर्शनानि वदनम्बादो दृष्टोवा म्बादादृष्टवा

दः दृष्टोनां वा पातो यथासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थः तथाचाह दिठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा
व्यायते सेसमासप्रोपंचविहेत्यादि सर्वमिदं प्रागे व्यवच्छिन्नं तथापि यथादृष्टं किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिगृहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्माणि

विवागसुश्रस्सणं परिहावायणा संखेज्जाअणुनगदारा जावसंखेज्जानु संगहणीनु सेणं अंगठयाए एक्कारसमे
अंगे वीसंअज्जयणा वीसंउद्देसणकाला वीसंसमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखे
ज्जाणिअरकराणि अणंतागमा अणंतापज्जवा जावएवंचरणकरणपरूवणया अघविज्जांति सेत्तंविवागसुए
॥ ११ ॥ सेकितंदिठिवाए दिठिवाएणं सत्तजावपरूवणया अघविज्जांतिसेसमासनु पंचविहे प० तं०

हार जाव संख्यात संपहणी तेह अंगार्थपणे इग्यारमे अंगे वीस अध्ययन दली २० उद्देशनकाला २० समुद्देशनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि
८४ लाख १२ हजार पदने परिमाणे कक्षा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्तापर्याय । जाव चरण ते साधुनां महाव्रत करण ते पिंड विशुद्ध्या
दिक्कनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये । तेह विपाकश्रुत इग्यारमो अंग ॥ ११ ॥ अथ स्युंते दृष्टिवाद् दृष्टिते दर्शन तेहनो वदवो कहिवांछे जि
हनेते दृष्टिवाद् सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनो प्ररूपणा पूर्वने विषे कहिये तेह पूर्व सन्नेप थकी पांच प्रकारे कक्षा ते कहे छे । परिकर्म १ सूच २

गणितपरिकर्षवत् तच्च परिकर्षायुतं सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्षमूलभेदतः सप्तविधं उत्तरभेदतः सु व्यंशौतिविध आतृकापदादि एतच्च सर्वं समूहोत्तरमे
दं सूत्रार्थतो व्यंशच्छिन्नं एतेषाञ्च परिकर्षणां षट् आदिमानि परिकर्षाणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्तिताजौविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुनः

परिकर्मं सुत्राहं पुष्टगयं शुणुनगो चूलिया सेकितंपरिकर्म्म परिकर्म्मसप्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकर्म्म
मणुस्ससेणियापरिकर्म्म पुष्टसेणियापरिकर्म्म नंगाहणसेणियापरिकर्म्म उवसंपज्जसेणियापरिकर्म्म विष्पजह
सेणियापरिकर्म्म चुष्पाचुष्पसेणियापरिकर्म्म सेकितंसिद्धसेणियापरिकर्म्म सिद्धसेणिष्पापरिकर्म्म चोद्दसविहे
प० तं० माउयापयाणि एगठियपयाणि पादोष्ठपयाणि आगासपयाणि केउन्नूयं रासियद्धं एगगुणं दुगुणं
तिगुणं केउन्नूए पफिग्गहे संसारपफिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावत्तं सेत्तंसिद्धसेणिष्पापरिकर्म्म सेकितंमणुस्ससेणिया

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ स्युते परिकर्म । परिकर्म पूर्व साते भेदे कश्चो । ते कहेछे । परिकर्म शब्दे गणतौ गणना विशेष सिद्ध श्रेणीनो परि
कर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनो गणना २ पृष्ट श्रेणीगणना ३ योगाहणश्रेणीगणना ४ उपसंपादन श्रेणी गणना ५ विष्पजहश्रेणी गणना ६ चुता च्युत श्रेणी
गणना ७ एहना अर्थ गुणभाग यको जातिवा । तिह श्रेणी परिकर्मना वली १४ भेद कश्चा । ते कहेछे । व्यासो भेदे माटका पद १ एक स्थितिपद २ पाद
अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशियद्ध ६ एकगुह ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावत्त १३ सिद्धावत्त १४
एह तिह श्रेणिका परिकर्म । अथ स्युते मनुष्य श्रेणी परिकर्म । मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कश्चो । ते कहेछे । माटकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्मासहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्मासु नयचिन्ता तत्र नेगमोदिविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च तत्र सांग्राहिकः संग्रहप्र
विष्टो ऽसांग्राहिकश्च व्यवहारं तस्मात्तु संग्रही व्यवहारस्तुसूत्रशब्दादयः शैकएवेत्येवं चत्वारो नया एतैश्चतुर्भिर्नयैः षट्स्वसामयिकानि परिकर्माणि
चिंत्यन्ते अतो भणितं क्वचउक्कनयाइति भवन्ति तएवचाजीविकास्वैराशिका भणिताः कस्मादुच्यते यस्मात्ते सर्वे त्यात्मकं इच्छन्ति तथा जीवो ऽजी
वो जीवाजीवः लोको ऽलोको लोकालोकः सत् असत् सदसत् इत्येवमादि नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छन्ति तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः
उभयार्थिकः अतोभणितं सत्ततेरासियत्ति सप्तपरिकर्माणि त्रैराशिकपाखण्डिका स्त्रिविधया नयचिन्तया नयांश्चिन्तयन्तीत्यर्थः सेत्तंपरिकर्मात्ति निगमनं

परिकर्म्मो मणुस्ससेणियापरिकर्म्मो चोइसविहे पस्सत्ते तंजहा ताइंचेव माउष्णापयाणि जावनंदावत्तं मणु
स्सवच्छं सेत्तंमणुस्ससेणियापरिकर्म्मो अण्वसेसपरिकर्म्माइं पुठाइयाइं एक्कारसविहाइं पन्नत्ता इच्चेयाइं सत्त
परिकर्म्माइं ससमइयाइं सत्तञ्चाजीवियाइं ठचउक्कणइयाइं सत्ततेरासियाइं एवामेव सपुद्गावरेणं सत्तप

र्थं पद ३ आगाशपद ४ केतुभूत ५ राशिवद्भव ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावर्त्त १३ मणुस्सवड १
तेह मनुष्यश्रेणोपरिकर्म्म । शेषयाकता परिकर्म्म पांच पुष्ठादिक इग्यारह भेदं कद्या । इत्यादिक सात परिकर्म्म माहि पहिला क्व परिकर्म्म स्वसमयप्रतिबद्ध
जिनमतानुयायी सात परिकर्म्म च्युताच्युतश्रेणो परिकर्म्म लगे आजोविक गोशालमतानुयायी जाण्णिवा । धुरना क्व परिकर्म्मचारनये करी सहितके संग्रह १
व्यवहार २ ऋजुसूत्र ३ शब्द ४ एहचारनय प्रतिबद्धके सात परिकर्म्म त्रैराशिक मतानुयायी जीव १ अजीव २ जीवाजीव एहत्रैराशिकना मतने विषे

सेकितंसुत्ताइमित्यादि तच्च सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थमूचनात्तन्वाणि अष्टाशीत्यपिच सूचार्थतो व्यवहिराणि तंथापि दृष्टानुसारतः किञ्चिद्विस्थिते एतानि किल ऋजुकादीनि द्वाविंशतिः सूत्राणि तान्येव विभागतो ऽष्टाशीति भवन्ति कथं मूच्यते इच्छेद्याइं बावीसंसुत्ताइं छिन्नकेयनईयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए त्ति इह योनयः सूत्रं च्छिन्नं केदेनेच्छति मच्छिन्न च्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कठमित्यादि श्लोकः सूचार्थतः प्रत्येकच्छेदनस्थितो न द्वितीयादिश्लोक मपेक्षते प्रत्येककल्पितपर्यन्त इत्यर्थः एतान्येव द्वाविंशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाद्या सूत्राणि स्थितानि तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिका न्या

रिकम्माइं ज्वंतीतिमस्कायाइं । सेत्तंपरिकम्माइं । सेकितं सुत्ताइं सुत्ताइं अष्टासीति ज्वंतीति मस्कायाइं तंजहा । उज्जंगं परिणयापरिणयं वज्जमंगियं विप्पच्चुडयं अणंतरं परंपरसमानं संजुहं जित्तं अहञ्जायं सो वत्थियं घटं णंदावत्तं वज्जलं पुठ्ठापुठं वियावत्तं एवंजुय दुञ्जावत्तं वत्तमाणुप्पयं समजिरुठं सव्वनंजदं पणु मं दुपफिग्गहं इच्छेयाइं बावीसंसुत्ताइं तिससठेअणइअणइं ससमयसुत्त परिवाडीए इच्छेयाइं बावीसंसुत्ताइं

सात परिकर्म एणोपरे आगली पाहली मिलो सात परिकर्मे हाय भगवंते कच्चा । ते पहिलो भेद पूर्वतो परिकर्म नाम कच्चा अथस्युते सूत्र । पूर्वतो वोजोभेद सूत्र तेहमा ८८ भेद होय । भगवंते कच्चा तेकहेके । ऋजुअंग १ परिणता परिणत २ बहुभंगिय ३ विप्रत्ययिक ४ अनन्तर ५ परंपरसमान ६ संयुध ७ भिन्न ८ यथात्थाग ९ सौवस्तिक १० घट ११ नंदावत्त १२ बहुल १३ पृष्ठापुष्ट १४ वियावत्त १५ एवंभूत १६ दिकावत्त १७ वत्तमानोत्पत्तक १८ समभिरु १९ सर्वतोभद्र २० प्रहामंत २१ दिप्रतिचइ २२ इत्यादिक बावीससूत्र केया केयं करो नय जिहां तेछिन्न च्छेदनयिक जिम् धम्मोमंगल इत्यादिक श्लोक

जीविकसूत्रपरिपाटीति अथमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धन्यामंगलमुक्कडमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोक न
पेक्षमाणी द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थः एतानि द्वाविंशति राजीविकगोशालकप्रवर्तितप्रमुखसूत्रपरिपाटीया अक्षररचनाविभागस्थिता
न्यप्यर्थतोऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्छेद्याइं इत्यादि सूत्रं तत्र तिकनइयाइंति नयत्रिकाभिप्रायतस्त्रित्यन्तइत्यर्थं स्वैराशिकायाजीविका एवोच्यन्ते
इति यथा इच्छेद्याइं इत्यादि सूत्रं ततः चउक्कणइयाइंति नयचतुष्काभिप्रायतस्त्रित्यन्त इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्रं एवञ्चतस्त्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्रपरिवाहीए इच्छेद्याइं बावीसंसुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्रपरिवाहीए इच्छेद्याइं बावी
संसुत्ताइं चउक्कणयससमयसुत्तपरिवाहीए एवामेवसपुद्गावरेणं अष्टासीयं सुत्ताइं जवंतीति मस्कायाइं ।

सूत्रार्थं यको प्रत्येक छेदको छेदो बीजा श्लोकनी अपेक्षा नकर ससमय जिनमतना सूत्रनी परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु अंगादिक २२ सू
त्र नथो छेद्या छेदेकरो नय जिहां ते अछिन्न छेदनयिक जिम धन्यामंगल मुक्कड इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस
सूत्र राजीविक गोशालमतनी परिपाटीये पामीये । इच्छेद्याइं एह २२ सूत्र त्रिण नय समेत जीव अजीव नोजीव एह त्रिणनय जिहां ते त्रिकनयिक त्रिरा
शिक पच्छंडोना सूत्रनी परिपाटीये पामीये । ऋजुअंग प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संग्रह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय समेत तेह स्वस
मय जिनमतनी सूत्र परिपाटीये पामिये । एस आगतो पाइलो मिली २२ चौका अठ्ठासी सूत्र होय ते भगवन्ते कस्मा । एह पूर्वनी बीजो भेद सूत्र कस्मो

वि भवन्ति सेप्तंसुताइति निगमनवाक्यं सेकिंतं पुष्टगणइत्यादि अथ किं तत्पूर्वगतमुच्यते यस्मा तौर्धकारः तौर्धप्रवर्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्रधारत्वेन
पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाचीति भवितानि गणधराः पुनः श्रुतरचनां त्रिदधाना आचारदिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्ति च मतान्तरेण तु पूर्वगतसू
त्रार्थः पूर्वमहता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वरचितं पश्चादाचारादि नत्वेवं यदाचारनिर्युक्त्य। मभिहितं सव्येसिं प्रायारोपटमो इत्यादि तत्कथ
मुच्यते तत्रं स्थापनामाश्रित्य तथोक्त मिहत्वचररचनां प्रतीत्य भवितं पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति तच्च पूर्वगतं चतुर्दशविधं प्रज्ञप्तं तद्यथा उपायेत्यादि तत्रोत्पा
दपूर्वं अक्षरं तच्च सर्वद्रव्याणां पर्यायवाणां चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाणं मेकाकांटी आग्रणीयं द्वितीयं तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणां
पर्यायवाणां जीवविशेषाणां चाग्रं परिमाणं वर्ण्यत इत्यग्रणीयं तस्य पदपरिमाणं पञ्चवतिपदशतमहस्राणि वीरियंति वीर्यप्रवादं तृतीयं तत्राप्यजीवानां जी
वानां च सङ्कर्मेतराणां वीर्यं प्रोच्यत इति वीर्यप्रवादं नत्स्यापि सप्ततिः पदशतमहस्राणि परिमाणं अस्ति नास्ति प्रवादं चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

सेप्तंसुताइ । सेकिंतं पुष्टगयं । पुष्टगयं चउद्दसविहे पन्नत्ते । तंजहा उप्पाय पुष्टं अग्रणीयं वीरियं अ

कङ्को । अथ खंते पूर्वनो चीजो भेद पूर्वगत । ते चौदह भेदे कङ्को तेकहेके उत्पाद पूर्व १ तौर्ध कर तौर्ध प्रवर्तना काले गणधरने पूर्व पहिलो सूत्रार्थ भाषो
तेमाटे पूर्व कङ्को । सर्व द्रव्य पर्यायनो उत्पादक भाव अंगीकार करौने जेकङ्को तेउत्पाद पूर्व इग्यारह कोटि पद परिमाणे १ वीजो अग्रणीय तेमांहि
सर्वद्रव्य पर्याय जीवो अग्र परिमाण पामिये तेहनो पद परिमाण ६६ लाख पद २ । चीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्यकङ्का । पदसंख्या ७० लाख
पद ३ । चीजो अस्ति नास्ति प्रवाद जिहां स्वादादाभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्ति नास्ति प्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४ । वाचर्मा ज्ञानप्रवाद

स्ति अथवा स्वाहादामिप्रायतः तदेवास्ति तदेवमास्तीत्येवं प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवाद अशितं तदपि पदपरिमाणतः षष्टिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद
 म्भ्रमं तन्मतिज्ञानादि पञ्चकस्य भेदप्ररूपणायस्मात् तत् ज्ञानप्रवादं तन्मिदपदपरिमाण मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवादं षष्ठं सत्यसंयमः सत्यवचनम्वा
 तद्यच्च सभेदं सप्रतिपक्षश्च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवादं तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीषट्चपदानीति आत्मप्रवादं सप्तमं आयत्ति आत्मा सोनेकधा यच्च
 नयदर्शने वर्ण्यते तदात्मप्रवादं तस्य पदपरिमाणं षट्विंशतिपदकोट्यः कर्मप्रवादमष्टमं ज्ञानावरणादिक मष्टविधं कर्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि
 र्भेदै रण्योत्तरोत्तरभेदै र्यच्चवर्ण्यते तत्कर्मप्रवादं तत्परिमाण मेकापदकोटीअष्टीतिषट्सहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवमं तच्चसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्बर्ण्यत
 इति प्रत्याख्यानप्रवादं तत्परिमाणं चतुरश्रीतिः पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवादं दशमं तच्चानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदको
 टी दशचपदशतसहस्राणीति अवंध्य मेकादशं बंध्यनाम निष्फलं नवंध्य मवंध्यं सफलमित्यर्थः तच्चहि सर्वज्ञानतपः संयमयोगाः शुभफलेन सफला व

त्यिणत्थिप्यत्रायं नाणप्यवायं सच्चप्यवायं ज्ञायप्यवायं कम्मप्यवायं पञ्चस्काणप्यवायं विज्जाणुप्यवायं अवंऊं

तिहांमत्यादि ५ । ज्ञान सबिस्तार पणे कक्षा पद संख्या एकूण एक कोडीपद ५ । छट्ठी मत्यप्रवाद तिहां सत्यसंयम तथा सत्य वचन सभेदे कक्षी ते सत्य
 प्रवाद पद संख्या एककोडी छ पद ६ । इति षट् पूर्व । सातमीं आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदे आत्मा वर्णव्यो ते आत्म प्रवाद पदसंख्या २६ कोडी पद ७
 आठमी कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनीप्ररूपणांकरी पद संख्या १ कोडी ८० हजार पद ८ । नौमीं प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानस्वरूप वर्णव्यो
 पदसंख्या ८४ लाखपद ९ । दशमी विद्यानुप्रवाद तिहां अनेक प्रकारनी अतिशायिनी विद्या वर्णव्योके पद संख्या १ कोडी १५ हजार पद १० । इग्यारह

अथैव प्रथमस्तथा प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ण्यन्ते अतोऽबन्धं तस्यच परिमाणं षट्विंशतिपदकोटयः प्राणायुर्द्वादश तत्राप्यायुः प्राणविधानं सर्वं स
भेद मध्ये प्राणार्थिता स्तत्परिमाणं मेकापदकोटीषट्पञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशालं त्रयोदशं तत्र कायिक्यादयः क्रिया विशालं सभेदाः
संयमक्रियाश्चक्रियाविधानानिच वर्ण्यन्ते इति क्रियाविशालं तत्पदपरिमाणं नवपदकोटयः लोकविन्दुसारं चतुर्दशं तत्रास्मिन्लोके श्रुतलोकेवा विन्दुरि
वाचरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाक्षरसन्निपातप्रतिष्ठितत्वेनच लोकविन्दुसारं अणितं तत्प्रमाणं मर्हत्रयोदशपदकोटयइति उपायपुत्रस्तेत्यादिकं नवरं वस्तुनिय
तार्थाधिकारप्रतिबद्धो अत्यविशेषो ध्वनवदिति तथाचूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थं संग्रहपरा ग्रंथपठतय चूडाइति सेतं

पाणानु किरियाविसालं लोगविन्दुसारं १४ उपायपुत्रस्सणं दसवत्थू चत्तारिचूलियावत्थू प० शुग्गणिय
स्सणंपुत्रस्स चोदसवत्थू वारसचूलियावत्थू प० । वीरियपुत्रस्सणंपुत्रस्स अठवत्थू अठचूलियावत्थू प० ।

॥ मू० ॥

॥ भाषा ॥

मो अबन्ध तिहां तप संयमना फल बन्धनथी अफलनथी एहवो वर्ण्यो पद संख्या २६ कोटी पद ११ । बारमो प्राणायु तिहां आउखानो भेद सर्व जीवो
कछो पद संख्या १ कोटी ५६ लाख पद १२ । तेरमो क्रियाविशाल तिहां कायिक्यादिक क्रिया सत्तर भेदे वर्ण्यो पद संख्या ८ कोटी पद १३ । चौदमो
लोक विन्दुसार लोकने विषे विन्दुसरीखो विन्दु सघलामांही उत्तम तेहनी पद संख्या साटी बारह कोटीपद १४ । एतले पूर्वनो बीजो भेद वर्ण्यो कछो ।
प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अश्वयन चार चूलिका वस्तु चूडा चोटली ते सरीखा तेहना वस्तु कछा । अथवी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु बार चूलिका वस्तु
कछा । बीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कछा । अस्तिनास्ति प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कछा ४ । ज्ञान प्रवाद

पुनर्गतेति निम्नमनं विधिनिमित्तादि अनुसूच्योदुक्खोवाचोवाचो नुदीनः सूत्रस्य निवेनाभिधेयेन सार्धमनुरूपः सम्बन्धस्त्वर्थः सच विधिः प्रज्ञप्तः तद्यथा सूत्र

॥ ३०० ॥
अत्यिणत्यिप्पवायस्सणंपुव्वस्स अठारसवत्थू दसचूलियावत्थू प० । नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू
प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थू प० । आयप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थू प० । कम्मप्पवायस्सणं पुव्व
स्स तीसंवत्थू प० । पच्चरकाणस्सणं पुव्वस्स वीसंवत्थू प० । विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थू प० ।
अवंगस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० । किरियाविसालस्सणं पुव्वस्सती
संवत्थू प० । लोगविंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० । सेत्तंपुव्वगयं । सेकिंतंअणुनगे । अणुनगे दु

पांचमा पूर्वनां बारह वस्तु कक्षा ५ । सत्य प्रवाद छठा पूर्वना चिह्नं वस्तु कक्षा ६ । आत्म प्रवाद सातमा पूर्वना १६ वस्तु कक्षा ७ । कर्म प्रवाद आठमा
पूर्वना २० वस्तु कक्षा ८ । प्रत्याख्यान नवमा पूर्वना २० वस्तु कक्षा ९ । विद्यानुप्रवाद दशमा पूर्वना १५ वस्तु १० । अबंध इग्यारहमा पूर्वना १२ वस्तु
कक्षा ११ । प्राणायु बारमा पूर्वना १२ वस्तु कक्षा १२ । क्रियाविशाल तेरमा पूर्वना ३० वस्तुकक्षा १३ । लोक विंदुसार चौदमा पूर्वना २५ वस्तुकक्षा १४ ।
दसचउहसअड्डा रसेववारसदुवेववत्थूणि सोलसतीसावीसा पसरसअणुप्पवायंति ॥ १ ॥ बारसएकारसमे बारसमेतेरसेववत्थूणि तीसापुणतेरसमे चउहसमे
पणवीसाभी ॥ २ ॥ अत्तारिदुवात्तस अड्डेवदसवेवचूलिवत्थूणि आइत्ताणचउहं सेसाणंचूलिआनत्थि ॥ ३ ॥ धुरना चिह्नं पूर्वनी चूलिका कही जाचिवी ।
शिव वाकता दश पूर्वनी चूलिका नही एह पूर्वगत बीजो भेद पूर्वनी कक्षो ॥ अथ स्यं ते अनुयोग चौथोभेद पूर्वनी । अनुरूप अनुकूल योग ते अनुयोग सूच

प्रथमानुयोग २ गंडिकानुयोगः सेकितंमित्यादि इहधर्मप्रवचनात् मूलं तावत्तीर्थकरा स्तेषां प्रथमसंस्थतावीप्सिलक्षणापूर्वभवादिगोचरी नुयोगो मूलप्रथ-
मानुयोग इत्याह सेकितं मूलपठमाणुयोगे इत्यादि सूचसिद्धं यावत् सेतंमूलपठमाणुयोगे सेकितमित्यादि इहैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयो न

विहे पन्तस्ते । तंजहा । मूलपठमाणुनगे गंडियाणुनगे सेकितंमूलपठमाणुनगे एत्यणं श्ररहंताणंजगवंताणं
पुष्टजवदेवलोगगमणाणि श्राउवयणाणि जम्मणाणिश्रश्रजिसेयरायवरसिरीन सीश्राश्रो पष्टज्जानं तवोयज
हाकेवलणाणुप्ययश्रा तित्यपवत्ताणाणिश्र संग्रयणसंठाणउच्चत्तश्राउवन्नविज्जागो सीसागणागणहराय श्रज्जा
पवत्तणीनं संघस्सचउच्चिहस्स जंवावि परिणामं जिणा मणपज्जायनहिनाणिसम्मत्तसुयनाणिणोय वाईश्रणुत्त

नेविधे अर्थने विधे सरीस्रो संबंध तेकहेहे । मूल प्रथमानुयोग १ गंडिकानुयोग । अथ स्युंते मूल प्रथमानुयोग । मूल प्रथमानुयोगने विधे इहां धर्मनाप्ररूपक
पणा वकी मूल ते तीर्थकर देव ते अरिहंत भगवंतनो प्रथम पहिलो पूर्वभव तप संयम सूचक अनुयोग व्याख्या ते मूल प्रथमानुयोग कहिये ते अनुयोग
बहु प्रकारे कीछो अरिहंतना पूर्व भव देवलोक गमन जाइवो । आठखो अवन जन्म राज्याभिषेक राज्यवर श्री जिमभोगवे शिविका दीक्षा दीक्षानीपाल
खी तपना भक्त बोधभक्त हठभक्त इत्यादि । केवल नाचनो उपजवो । तीर्थ चतुर्विध संघ तेहनो प्रवर्तावखो । संघयण वज्रकर्मभादिक । संस्थान समचतुर
स । यरीहो अचपखो । आठखो । वर्ष नीरादिक । तेहनो विभा कांति । शिख गच्छ गच्छ । गच्छधर ते प्रथम शिख । आर्षा साधवी प्रवर्तिनी वही सा
खी तेहनो नाम । संघ समुत्तिह हाथ काखी वाक्य वाकिका तेहनो जेहनो परिणाम आचार विचार । जिन केवलीनो संस्था । मनपर्यवत्रानी अवधि

टीका
मूल
भाव

गण्डिका उच्यते तासामनुयागोर्ध्वकथनविधि गण्डिकानुयोगः तंवाचाह गण्डियाणुयोगेप्रयोगेत्यादि तत्र कुलकरगण्डिकासु कुलकराणां विमलवाहनादीनां पूर्वजसाद्यभिधीयते इति एवं शेषास्तपि अभिधानवशतो भावनौयं यावच्चित्रान्तरगण्डिका नवरं दशार्हाः समुद्रविजयादयो दश वसुदेवान्ताः तथा चित्रा

रगइय जस्तियासिद्धापावोवगनुय जो जहिंजस्तियाइं नत्ताइं ठेअइत्ता अंतगणोमुणिवरुत्तमो तमरनुयवि
प्यमुक्तासिद्धिपहमणुत्तरंचपत्ता एए अन्तेय एवमाइया ज्ञावामूलपढमाणुनगकहिअा अघविज्जांति पस्सवि
जांति सेत्तमूलपढमाणुनगे सेकिंतगंफ्रियाणुनगे गंफ्रियाणुनगे अणेगविहे पस्सत्ते तंजहा कुलगरगंफ्रियानु
तित्यगरगंफ्रियानु गणहरगंफ्रियानु चक्काहरगंफ्रियानु दसारगंफ्रियानु वलदेवगंफ्रियानु हरिवंसगंफ्रियानु

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी । सम्यक् जे यती तिहां जइं जपना ते उपपात अनुत्तर विमान गतिये जाइं जपना तेहनो गतिनो कहिवो । जेतला २ यती
सिद्ध सकल कर्मघय करी मोक्ष गैया । पादपोपगमन । अनशन करिवानो अधिकार जेइयती जिहां २ जेणे २ ठामे जेतली २ भात छेदीने अंत छत सं
सारनो अंत कौधो । मुनिवर उत्तम । तम अज्ञान रूप रज पापरज थकी मूक्षाणा । सिद्धिपंथ मोक्षमार्ग अनुत्तर प्रधान तेह प्रते पास्या । एह पूर्व
कक्षा ते तथा अनेरा पणि । एवमादिक भाव पदार्थ प्रथमानुयोगने विषे कक्षा । ते जिहां चौथा पूर्वना भेद मांहि आख्यायते कहिये
प्रज्ञापिये जाणवीये तेह मूलप्रथमानुयोग पहिखो ॥ अथ स्युंते गण्डिकानुयोग । इहां एकवक्तव्यतार्थाधिकार तेहने अनुगतसरीखीं वाक्यपद्धति ते गण्डिका क
हिये तेहनो अनुयोग अर्थकहिवानो विधि ते गण्डिकानुयोग । ते गण्डिकानुयोग अनेक प्रकारे कक्षो । तेकहेके । कुलकर ते विमलवाहनादिक तेहनो गण्डि

टीका

मूल

भाषा

अनेकार्था अन्तरे अथभाजिततीर्थकरांतरे गण्डिका एकवत्तव्यतार्थाधिकारानुमता स्ततश्च चित्राश्च ता अन्तरगण्डिका च चित्रांतरगण्डिकाः इतदुक्तम्
 यति अथभाजिततीर्थकरांतरे तदंशजभूपतीनां शेषमतिगमनव्युदासेन शिवगमनानुत्तरोपपातप्राप्ति रितिप्रतिपादिका चित्रांतरगण्डिका इति ताश्च
 चोदयलब्धासिद्धा निर्वर्त्तयेन्नोयहोदसव्यङ्गे एवेकेकदृष्टे पुरिसजुगाहुतिसंखेज्ज्यादिना ग्रंथेन नन्दिटीकाया मन्निहिता स्तत एवावधार्या इह सूत्रगमनिका

अहयज्जगंक्रियानु तवोकम्मगंक्रियानु चित्रांतरगंक्रियानु उरसाप्पिणीगंक्रियानु ओसप्पिणीगंक्रियानु अमरनर
 तिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्ठणाणुनुगे एवमाडयानुगंक्रियानु आघविज्जांति पसविज्जांति पहाविज्जांति
 सेत्तगंक्रियाणुनुगे सेकिंतचूलियानु जंझाइत्थाणं चउरहंपुत्थाणंचूलियानु सेसाइंपुत्थाइं अचूलियाइं दिठ्ठिवा

का पूर्वजन्मादि संबधी जिहां कही ते कुलकरगंडिका । एमज सर्वत्र कहिवो । जिहांलगे चित्रांतरगंडिका आवे । तीर्थंकरना संबध गणधर संबध चक्रव
 र्तिसंबध । दस समुद्रविजयादिक दग्दशर तेहना प्रबंध । बलदेव बलभद्रादिकनासंबध । हरिवंश यदुवंशनी उत्पत्ति । भद्रकल्याण घणाजिम एह पाय्या ।
 केहडे जेहवा तपकर्मकौधा । तेचित्रांतरगंडिका चित्रअनेकार्था अंतरने आदिनाथ अने अजितनाथने आंतरे विचाले जिम आदीस्वरना पाट असंख्याता मो
 चपहुंता । तथा । सर्वार्थसिद्ध पहुंचता । तेसर्व भावना कहणहार तेचित्रांतरगंडिका । उत्सर्पिणी ते चढतोसमय तेहनाभाव । अवसर्पिणी तेघटतोकाल तेह
 नाभाव । देवतानागचसमूह । तबा नरमनुष्यतियेच नारकी एचिहूंनीगति जिहां विविध प्रकारे परिवर्तन संसारमांहि फिरवो तेहनी अनुयोग व्याख्यान
 प्रवसादिक गंडिका पर्वाधिकार । तिहां चौथा पूर्वना भेदने विवे कहिये गंडिका चौथो भेद पूर्वनी । अथ ते सूत्रचूल्कानुयोग । जे आदिना धुरना चार

संख्यायां परितापयणा संखेजाश्चतुर्गुणदारा संखेजातुपक्रिवर्तोत संखेजातुनिजुचीत संखेजावेडा संखे

जाविजोमा संखेजातुसंगहणीत सेणंश्रुंगठयाएयारसमेश्रुंगे एगेसुयखंधे चउद्दसपुद्दाइ संखेजायत्तू संखे

जायत्तू संखेजापाऊका संखेजापाऊकापाऊका संखेजातुपाऊक्रियात संखेजातु पाऊकापाऊक्रियात

संखेजाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ता संखेजाश्चक्ररा श्रुणंतागमा श्रुणंतापजावा परितालसा

श्रुणंतायायरा सासयाककाणिवरुणाणिकाइया जिणपसप्तान्नावा आघविजांति पसयिजांति पकयिजांति

पूर्व तेहमो चूकिका छे ते भूठे बहो छे । ग्रैव बाबता दम पूर्व चूकिका रहित छे ते चूकिका पूर्वमो पांचमो भेद इटिबाइ पूर्व तेहना परितो बबतो
माबता छे । संख्याता चतुर्वीज दार उपक्रमादिक । संख्यातो प्रवृत्ति । संख्याता वेडा । संख्याता डोक । संख्यातो संगुहची । संख्यातो विवृति रूपे चिपि
पर्यतो वीजवी । तेइ पदार्थ पचे पद पचे बारमे पंचे एक सुतस्त्रांधने विधि १४ पूर्व । संख्यातो २२५ वसु । संख्याता बानावसु १४ । संख्याता प्राकृतिक
मात्र विविध । संख्याता प्राकृतमात्रस अधिकार विविध । संख्यातो प्राकृतिका । संख्यातो प्राकृतप्राकृतिका । संख्याता यदनां कल्पसदृश साधन पदार्थ
विविध । संख्याता पदार्थ पचे । अमंतायना पदार्थ परिरुद्ध । अमंता पर्याय अंचर पदता भेद । परितो अमंतगही एतका १ कर्षण
परितो । अमंता यदनां कल्पसदृश साधन पदार्थ पचे । दह पूर्व जाहि मात्र पदार्थ माबता द्रव्याय पचे विरुद्ध रहित छे वसो पर्याय पचे समे २ प्रति

साम्प्रतं द्वादशाङ्गविराधनानिष्यन्नं कैकालिकं फलमुपदर्शयन्नाह इच्छेयमित्यादि इत्येतद् द्वादशाङ्गं गणिपिटकं मतीतकाले अनन्ताजीवा आश्रया विराध्य चतुरन्तं ॥ टीका ॥
 संसारकान्तारं अणुपरियट्टिसुत्तिअनुपरिवृत्तवन्तः इदं हि द्वादशाङ्गं सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं ततश्च आश्रया सूत्राश्रया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अ
 तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्तं संसारकान्तारं नारकतिर्यङ्मरामरविविधवृत्तजालदुस्तर भ्वाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवन्तो जमालिवत् अर्थाश्रया
 पुनरभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्ठामाहिलवत् उभयाश्रया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनी
 कश्च द्रव्यलिङ्ग आर्येनेकश्चमणवत् सूत्रार्थोभयै विराध्येत्यर्थः अथवा द्रव्यत्रैककालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठानमेवाज्ञाततया तदकरणेनेत्यर्थः इच्छेयमित्यादि गता

निदंसिज्जांति उवदंसिज्जांति एवंणाए एवं विस्साए एवं चरणकरणपरूवणया आधविज्जांति सेत्तंदिठ्ठिवाए ॥

सेत्तंदुवालसंगेगणिपिठगे ॥ १२ ॥ इच्छेइयं दुवालसंगंगणिपिठगं अतीतकाले अणन्ताजीवाश्रयाणए विरा

अन्यथा पणे कडा कीधा छे निवहा सूत्र थकी गूण्या छे । हेतुदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रज्ञाया जणाया भाव पदार्थ कहौजे । नान भेद जणावे
 करी । निर्देशीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाण्था । एम विशेष पणे जाण्था । चरण ते पांच महाव्रत रूप
 करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा । जिहां कहिये ते दृष्टिवाद बारमो अंग जाणिवो ॥ १२ ॥ एह वारे अंग केहवाछे । गणी कह
 तां आचार्य तेहने पेटो रत्नकरंड समानछे । इत्यादि द्वादशांग एहने आचार्यने पेटो समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आश्राने विराधी खंडी
 ने चार अंत केहडाछे नरकादिक लक्षण एहवो संसार कान्तार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिवृत्तवन्त भ्रमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिठगप्रते व

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

यमेव नवरं परित्ताजीवाइति संख्येयाजीवा वर्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां संख्येयत्वात् अणुपरियट्ठित्ति अनुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्छेयमित्यादि इदमपि भावितार्थं मेव नवरं मणुपरियट्ठित्ति अनुपरावर्त्तन्ते पर्यट्ठित्यतीत्यर्थः इच्छेयमित्यादि कंठ्यं नवरं विद्वयंसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्गतिक्संसारोक्तज्ञानेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एवं प्रत्युत्पन्नेपि नवरं मय म्विशेषः वीद्वयंसुत्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते प्येवं नवरं वीवद्वसन्ति त्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यन्तीत्यर्थः यदिदं मनिष्टेतरभेदभिन्नं फल अतिपादित मेतत्सदावस्थायित्वे सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसंगे इ

हिता चाउरंतसंसारकंतरं अणुपरियट्ठिसु इच्छेइयं दुवालसंगंगणिपिठगं पढुप्पसेकाले परिताजीवा अणाए विराहिता चाउरंतसंसारकंतरं अणुपरियट्ठिति इच्छेइयं दुवालसंगंगणिपिठगं अणागएकाले अणंताजीवा अणाए विराहिता चाउरंतसंसारकंतरं अणुपरियट्ठिसन्ति इच्छेइयं दुवालसंगंगणिपिठगं अतीतेकाले अणंताजीवा अणाए अराहिता चाउरंतसंसारकंतरं विद्वइंसु एवंपढुप्पसेवि अणागएवि दुवालसंगं

वर्तमानकाले परित्तासंख्याता जीव मनुष्य आज्ञाने विराधीने चातुरंत संसार कांतार प्रति अनुपरावर्त्ते भ्रमे के । एह द्वादशांग गणिपिठगने । अनागत भविष्यकाले अनंताजीव आज्ञाने विराधीने चातुरंत संसार कांतारप्रते भ्रमस्ये । एहवा द्वादशांग गणिपिठगप्रते अतीतकाले अनंताजीव आज्ञाने अराधीने चातुरंत संसार कांतारप्रते पार पामताहुआ । एम वर्तमानकाले पार पामे के । एम भविष्यकाले पार पामस्ये । एह द्वादशांग गणिपिठक । नही क दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथी एमनही । नही किवारे अतीतकाले नासीत् नहुती एमनही । तथा भविष्यकाले तिवारे नही होय एम नहीकेहडो

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

त्यादि द्वादशाङ्गं णमित्यलङ्कारे गणिपिटकं न कदाचिन्नासौ दनादित्वा न कदाचिन्नभवति सदैवभावात् न कदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किं तर्हि भु
विचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेदं त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुवं मेवादिवत् ध्रुवत्वादेव नियतं पञ्चास्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव
शास्वतं समयावलिकादिषु कालवचनवत् शास्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेऽप्य चयं गङ्गासिन्धुप्रवाहेऽपि पद्मद्रवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तरादहिः समु
द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्रमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रतं दृष्टान्तं मन्त्रार्थं आह सेजहानामएदित्यादि तद्यथा
नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास त्रित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकर्याजना निगदमिद्वेति एतन्णमित्यादि अत्र द्वादशाङ्गे

गणिपिट्ठं णकयाइणत्थि णकयाइणासी णकयाइणन्नविस्सइ जुवंच जयति जविस्सतिय धुवेणितिए
सासए श्रकए श्रवए श्रवठिए णिच्चे सेजहाणामए पंच श्रत्थिकाया णकयाइ णत्थासि णकयाइ णत्थी

नही तेभाटे हुतो तोसूं । एह द्वादशांग पूर्वहुंता हिबडा छे आगलि होस्ये एतले त्रिहुंकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव निखलछे वली नियतछे । सदाभावी
पंचास्तिकायनौपरे चयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शास्वतछे समयादिकालनौपरे वली अचय पद्मद्रवने विषे गंगासिंधुना प्रवाहनौपरे पंचा
स्तिकायनौपरे वली अवस्थित जंबूद्वीपनौपरें वली नित्य आकाशनौपरे सांप्रत दृष्टान्त देखाडीयेछे । तेयथानाम जिम पंचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा
रे अतीतकाले नही न हती एम वर्तमान काले किवारे नही एमनही । तथा भविष्यकाले किवारे नही हुस्ये एमनही । एह पंचास्तिकाय हुती अतीत
काले आगलिकाले होस्ये । वर्तमानकालेछे । ध्रुव नियत शास्वत नित्य । एह पदार्थ वखाण्याछे । एण्णे दृष्टान्ते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

गणिपिटके अनन्ताभावा आसयायन्त इतियोगः तच्चभवन्तीतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा त्तएवानन्ता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्भुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवात्मनाभावो ऽजीवात्मनाचाभावो ऽन्यथा ऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्मापेक्षया अनन्ताभावाः अनन्ताऽभावाः प्रतिवस्वस्त्वनास्तित्वाभ्या अतिबद्धा इति व्याचक्षन्ते तथा ऽनन्ताहेतवः तच्च हि

णकयाइ ण नविस्संति नुविं नवंतिय नविस्संतिय धुवा णितिया सासया अस्कया अन्नया अवधि
या णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिठगे णकयाइ ण आसि णकयाइणत्थी णकयाइणनविस्सइ नुविं
च नवति नविस्सइय धुवे जावअवधिए णिच्चे एत्थणं दुवालसंगे गणिपिठगे अणंतान्नावा अणंतान्ना
वा अणंतान्हेऊ अणंतान्हेऊ अणंतान्कारणा अणंतान्कारणा अणंतान्जीवा अणंतान्जीवा अणंतान्नव

हुतो एम नही । बर्तमानकाले किवारे नथी एमनही । भविष्यकाले किवारे नहोय एमनही । हुतो के होखे एतले त्रिकालभाव । ध्रुवादिक पद सचला क
हिवा जिहां लगे अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहांलगे कहिवी । एणे द्वादशांग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनन्ता
के । अनन्ता अभाव पोतानी अपेक्षाये आपणपो परने विषे नही एह अभाव तेही अनन्ता । हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामें ते हेतु व
स्तु पणे अनन्तके । तद्विशिष्ट अर्थपण अनन्तके । हेतुनालक्षणयो विपरीत अहेतु तेही अनन्त के । मृत्पिंडादिक जिम घटना कारण तेही अनन्त के । जिम
मृत्पिंडादिक घटना कारण तेपटना अकारण के तेही अनन्तके । जीव अनन्तके । अजीव स्थाणुकादिक पुद्गल तेही अनन्तके । भव्य जीव अनन्तके । अभव्य

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

नोति गमयति जिज्ञासितधर्माविशिष्टानर्थानिति हेतु स्तेचानगता वस्तुनो नन्तधर्मात्मकत्वात् तत्रतिवदधर्माविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्वगमपर्यायात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपक्षतो ऽनन्ता अहेतवस्तथाअनन्तानि कारणानि मृत्पिण्डतत्त्वादीनि घटपटादिनिवर्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकारणानामेव कार्यान्तराकारणत्वा बहिर्मृत्पिण्डः पटनिवर्तयतीति तथा अनन्ताजौवाः प्राणिन एवमजौवा ह्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्ठिता र्था इतरे संसारिण आघविज्जन्तो त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिहयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरा सीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद प्रज्ञापनाख्यं सर्वं न्तदक्षर मध्येतव्यं किमवसानमित्याह जावसेकितमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय म्विशेषः इहदुवेरासीपञ्चत्ता इत्यभिलाप स्तत्रतु दुविहापञ्चवणापञ्चत्ता जीवपञ्चवणा अजीवपञ्चवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

सिद्धिया अणन्ताअनवसिद्धिया अणन्तासिद्धा अणन्ताअसिद्धा आघविज्जन्ति पञ्चविज्जन्ति परुविज्जन्ति दंसिज्जन्ति निदंसिज्जन्ति उवदंसिज्जन्ति एवंदुवालसंगंगणिपिण्णं इति दुवेरासी पञ्चत्ता तंजहा जीवरासी अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पञ्चत्ता तंजहा रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासीय सेकितंअरूवी

जीव अनन्त है । सिद्ध अनन्त है । एहसर्वभाव पूर्वने विषे कहिये । जणावीये देखाडिये विशेषपणे देखाडोये । उपदेश करिये । द्वादशांग स्वरूप कहिने हिवे तेहीजमां बेराशी कहिहे तेकहेहे । जीव राशि अजीवराशि । अजीवराशि बेप्रकारे के तेकहेहे । रूपी अजीव राशि । अरूपी अजीवराशि । स्यूते अरूपी अजीवराशि अरूपी अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे हे । धर्मास्तिकाय स्कंध १ देश १ प्रदेश ३ । अधर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ आकाशा

चितुमशक्यत्वा दर्शयतस्तस्मै उपदर्शयते तत्राजीवराशि द्विविधो रूपरूपिभेदा तत्रारूप्यजीवराशिर्दशधा धर्मास्तिकाय स्तद्वेश स्तद्वेशश्चेत्येवधर्मास्तिका
याकाशास्तिकायावपि वाच्यवेव नव दशमोऽहा समय इति रूप्यजीवराशि चतुर्धा स्कंधा देशाः प्रदेशाः परमाणवश्चेति तेच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानभेदतः
पञ्चविधाः संयोगतो नेकविधा इति जीवराशि द्विविधः संसारसमापन्नो संसारसमापन्नश्च तत्राऽसंसारसमापन्ना जीवा द्विविधा अनन्तरपरम्परसिद्धभेदा
त् तत्रा नन्तरसिद्धाः पञ्चदशप्रकाराः परम्परसिद्धा स्वानंतप्रकारादिति संसारसमापन्नास्तु पञ्चधै केन्द्रियादिभेदेन तत्रै केन्द्रियाः पञ्चविधाः पृथिव्यादिभेदेन
पुनः प्रत्येकं द्विविधः सूक्ष्मबादरभेदेन पुनः पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विधा एवं द्विविचतुरिन्द्रिया अपि पञ्चेन्द्रिया चतुर्धा नारकादिभेदा तत्रनारकाः सप्तवि
धाः रत्नप्रभादिपृथ्वीभेदात् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च स्त्रिधा जलस्थलखचरभेदात् तत्र जलचराः पञ्चविधा मत्स्यकच्छपग्राहमकरसुंसुमारभेदात् पुन मत्स्या अनेक
धा अक्षमत्स्यादिभेदात् कच्छपा द्विधा अस्थिकच्छपमांसकच्छपभेदात् ग्राहाः पञ्चधा दिलिवेष्टकमद्गुपुलकसीमाकारभेदात् मकरामत्स्यविशेषा द्विधा श
ण्डामकरा करिमकराश्च सुंसुमारास्त्वेकविधा स्थलचराद्विधा चतुष्पदपरिसर्पभेदात् चतुष्पदाश्चतुर्धा एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदभेदात् क्रमेणचैते अश्व
गोहस्त्रिसिंहादयः परिसर्पाद्विधा उरःपरिसर्पभुजपरिसर्पभेदात् उरःपरिसर्पाश्चतुर्धा अष्टाजगरा शालिकमहोरगभेदात् तत्राहयोद्विधा दर्वीकरामुकुलि

॥ टीका ॥

अजीवरासी अरूवीअजीवरासी दसबिहा पन्नत्ता धम्मत्थिकाए जावअप्पासमए रूवीअजीवरासीअणे

॥ मूल ॥

स्तिकायस्कंध ३ देश २ प्रदेश ३ एवं ८ दशमो अहा समय काल एवं १० । एमजीवराशि २ प्रकार चस १ थादर २ । तेहो पणि सूक्ष्म बादर एम पर्याप्ता अपर्याप्ता एणे
विधिये बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय । पर्याप्ता अपर्याप्ता पंचेन्द्रिय नरकतिर्यंच मनुष्य देवता भवनपति व्यंतर ज्योतिषी बैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्ता. एम ति

॥ भाषा ॥

नखेति खचराक्षतुर्धा कर्मपक्षिणो लोमपक्षिणः समुद्रपक्षिणो विततपक्षिणश्च तत्राद्यौ द्वौ वल्गुलीहंसादिभेदा वितरौ द्वौ पान्तरेष्वेव स्तः सर्वेषु पञ्चेन्द्रियति
यश्चो मनुष्याश्च द्विधा संमूर्च्छिमा गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च तत्र संमूर्च्छिमाः नपुंसकाएव इतरेतु विलिङ्गाइति गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या स्त्रिधा कर्मभूमिजा अकर्म
भूमिजा अन्तरद्वीपजाश्चेति कर्मभूमिजा द्विविधा आर्या स्त्रेच्छाश्च आर्याश्चैधा ऋषिप्राप्ता इतरेच तत्र प्रथमा अर्हदादयः द्वितीया नवविधा जेजजातिकुलक
र्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यभेदात् देवाश्चतुर्विधा भवनवास्यादिभेदा इवनपतयोदशधा असुरनागादयः व्यन्तरा अष्टविधा पिशाचादयः स्योतिष्काः प
ञ्चधा चन्द्रादयः वैमानिका द्विधा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च कल्पोपगाद्वादशधा सौधर्मादिभेदात् कल्पातीता द्वेधा ग्रैवेयका अनुत्तरोपपातिकाश्च ग्रैवेयका
नवधा अनुत्तरोपपातिकाः पञ्चधेति एतत्समस्तं सूत्रकृतोक्तं जावसेकितं अणुत्तरेत्यादि पूर्वोक्तमेव जीवराशिं दण्डकक्रमेण द्विधा दर्शयन्नाह दुविहेत्यादि सु

गविहा ॥ जावसेकितं अणुत्तरोपपातिका अणुत्तरोपपातिका पञ्चविहा पन्नत्ता तंजहा विजय वेजयंत ज
यंत अपराजित सवृष्ठसिद्धिश्च सेतं अणुत्तरोपपातिका सेतं पंचेन्द्रियसंसारसमावस्य जीवरासी ॥ दुविहाणेर
इया पन्नत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय एवंदं ऊनुजाणियहो जाववेमाणियत्ति इमीसेणं रयणप्पजाए पुढ

हां लो अणुत्तर विमानभावे । स्थूते अनुत्तरोपपातिका । तेषांच प्रकारे कह्या तेकहेके । पूर्व दिशि विजय विमान । दक्षिणे वैजयंत । पश्चिमे जयंत । उ
त्तरे अपराजित । चिहुं विचे सर्वार्थ सिद्ध । एह पांच विमानना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ता । तेह अनुत्तरोपपातिक देवता । ते पंचेन्द्रिय संसार प्राप्त जीव
राशि एक भेद बीजो ते असंसार प्राप्त जीवराशि सिद्धनाजीव । ते प्रकारे नारकी कही ते कहे के । पर्याप्ता नारकीमांहि आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३

गमं नवरं दंडभोत्ति नेरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बैइंदियादओ ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदंडओएवं ॥ अथानंतरप्रज्ञप्ता
नां नारकादीना मर्याप्तापर्याप्तभेदानां स्थाननिरूपणायाह इमीसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्वं कंठं नवरं तेणनिरया इत्याद्यत्रच जीवाभिग
वीए केवइयंखेतंतुंगाहेत्ता केवइयाणिरयावासा पसत्ता गोयमा इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए असीउत्त
रजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एगंजोयणसहस्संतुंगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्संवज्जेत्ता मज्जे अठसत्त
रिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पजाए पुढवीए णेरइयाणंतीसं णिरयावाससयसहस्सा जवंतीतिमरकाया

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरौकरी ते पर्याप्ता । छ मांहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दंडकना जीव पर्याप्ता
अपर्याप्ता भणिवा जिहांलगे वैमानिकनो २४ मो दंडक आवे तेहदंडकनीगाथा नेरइया १ असुराई १० पुढवाइ ५ बैइंदिया ४ मणुया १ वंतर १ जोइस
वेमाणियाय १ अहदंडओ एवं एह ठाणांगे बीजे ठाणे जिम जीवनां भेद बेबे कछाके पणि इहां सर्व कहिवो । हिवे २४ दंडक मांहि पहिलो नारकीनोके
तेह नारकीने रहिवाना ठाम भगवंत आगलि गौतम स्वामी पूछेके एणीये हेभदंत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलो चेत्र ओगाहीने एतले अवगाहीने
वलो केतला नरकावासाकछा । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषे ८० हजार योजन उत्तरे आगलीके जेहने एहवो १ लाख योजन बाहुल्य
पणे जाडपणे पृथिवी पिंडके तेमांहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठे एक हजार योजन वर्जोने पके विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो
जन पृथिवी पिंड राखीये । इहां रत्नप्रभा पृथिवीये तेरेपाथडाके तेमांहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कछाके । तेनरकावासा मांहि वाटला बाहिर

મત્સ્યનુસારેણ લિખ્યતે કિલ દ્વિવિધા નરકા ભવન્તિ આવલિકાપ્રવિષ્ઠાઃ આવલિકાવાહ્યાશ્ચ તત્રાવલિકાપ્રવિષ્ઠા અષ્ટાસુ દિક્ષુ ભવન્તિ તેષામ્ વૃત્તત્યસ્રચતુર
સ્રક્રમેણ પ્રત્યવગગતગ્યાઃ એતેષાંચ મધ્યે દ્વન્દ્વકાઃ સીમન્તકાદયો ભવન્તિ આવલિકાવાહ્યાસુ પુષ્પાવકૌર્ણ દિગ્વિદિશામન્તરાલેષુ ભવન્તિ નાનાસંસ્થાનસંસ્થિ
તાહિતિ નિરયસંસ્થાનચવસ્યા તત્રચ બાહ્યમજ્જીકલ્યેદ મભિધીયતે અંતોવદ્યેત્યાદિ ઉક્તંચ સૂત્રકૃત્તિકૃતા નરકાઃ સીમન્તકાદિકાઃ બાહ્યમજ્જીકલ્યાંતમધ્યે
વૃત્તા બહિર્વપિ ચતુરશ્ચ અધઃ ચુરપ્રસંસ્થાનસંસ્થિતા એતચ્ચ સંસ્થાનં પુષ્પાવકૌર્ણકાનાશ્રિત્યુક્તં તેષામેવ પ્રચુરત્વાત્ આવલિકાપ્રવિષ્ઠા સ્તુ વૃત્તત્યસ્રચતુરસ્રસં
સ્થાનાભવન્તીતિ તત્રાંતર્વૃત્તા મધ્યે શુભિરમાશ્રિત્ય વહિચ્ચતુરસ્રાઃ કુદ્યપરિધિમાશ્રિત્ય યાવત્કરુણાદિદં દૃશ્યં યદુત અધઃ ચુરપ્રસંસ્થાનસંસ્થિતા ભૂતલમાશ્રિત્ય
ચુરપ્રાકારા સ્તૂત્તલસ્ય સંચારિમત્વપાદચ્છેદકત્વાત્ અન્યેત્વાહુ સ્તેષામધસ્તનાંશઃ ચુરપ્રવવાયે જગ્રે પ્રતલોવિસ્તીર્ણયેતિ ચુરપ્રસંસ્થાનતા તથા નિષ્કંધચારતમસા
વવગયગહચંદસૂરનકલતાજાંદસપ્પહામેયવસાપૂયરુહિરમંસચિકિત્સલિત્તાણુલેવણતલા અમુદ્વિસાપરમદુઃખિગંધાકાઞ્ઞગણિવસાભાકલ્લડફાસાદુરભિયાસ
હિતિ તત્ર નિત્યં સર્વદા અન્ધકારં અન્ધતાકારક સ્વહલવલાહકપટલાચ્છાદિતગગનમંડલામાવાસ્યાદેરાત્રાંધકારવ ત્તમસ્તમિયં યેષુ તે નિત્યાન્ધકારતમસઃ

તેણંણિરયાવાસા અંતોવદ્યા વાહિંચુરંસા જાવણ્ણસુજ્ઞાણિરયા અસુજ્ઞાણિરણસુવેયણાણં એવંસત્તવિજ્ઞાણિય

ચઉચ્છૂણા નરકાવાસા વેપ્રકારના છે. એક આવલિકા પ્રવિષ્ઠ બીજા આવલિકાવાહ્ય તેમાંહિ આવલિકા પ્રવિષ્ઠ તે આઠ દિગ્ગિને વિષે છે તે વૃત્ત ત્યસ્ર ચતુર
સ્ર ક્રમે જાણિવા. એમાંહિ દ્વન્દ્વક તે વાટલા સીમંતાદિક અને આવલિકાવાહ્ય તે પુષ્પાવકૌર્ણ દિગ્ગિ વિદિગ્ગિને અંતરાલે નાના સંસ્થાન સંસ્થિત છે.
જિહાંલગે મહા અશુભકે નારકો વેદના ભોગવે છે. એમજ સાતે નરક પૃથિવી ભણ્ણવી કહિવી જે વાહ્ય પશૂ નરકાવાસા પરિમાણ પૃથિવીયે જોડયે તેગાથા

॥ ટીકા ॥

॥ મૂલ ॥

॥ ભાષા ॥

अथवा नित्येनाम्बुकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थः तमसस्तमिश्ना नित्याम्बुकारतमसः जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थः कथमित्यत आह अप-
गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षण विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पृच्छति पथ-
शब्दो वायं व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयरुधिरमांसानि शरीरावयवा स्तेषां यच्चिक्खिक्खं कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलोपनेन सकृत्लिप्तस्य पुनः पुनर्लेपनेन
तल भूमिका येषां न्ते मेदोवसापूयरुधिरमांसचिक्खिलिप्तानुलेपनतला यद्यपि च तत्र मेदः प्रभृतीन्धोदारिकपंचेन्द्रियशरीरावयवरूपाणि न सन्ति वैक्रियश-
रीरत्वान्धारकाणां तथापि तदाकारा स्तदवयवा स्तत्र प्रोच्यन्ते इति अशुचयो मिश्नाः आमगन्धयः पूतिगन्धय इत्यर्थः अतएव परमदुरभिगन्धाकाजअगणिवस्मा
भक्ति कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषां न्ते कृष्णाग्निवर्णाभाः तथा कर्कशः स्पर्शो येषां ते कर्कशस्पर्शः अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढुं शक्यते
वेदना येषु ते दुरधिसन्नाः अतएवाशुभानरकाश्च शुभानरकेषु वेदना इति एवं सत्तविभागियव्वन्ति प्रथमा ममुच्चता सप्तइत्युक्तं जंजासुजुज्जइति यच्च यस्या स्पृथि-
व्यां वाहय्यस्य नरकाणां च परिमाणं युज्यते स्थानान्तरोक्तानुसारेण तच्च तस्यां वाच्यं तच्चेदं असौतंगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकयोजनलक्षं रत्नप्र-

घानं जंजासुजुज्जइ असीयंबत्तीसं अष्टात्रीसंतहेयवीसंच अठारससोलसगं अहुत्तरमेववाज्जलं ॥ १ ॥ तीसा

मांदि कहेके । पहिलोये १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पिंड । बीजीये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिंड । चौजीये १ लाख २८ हजार योज-
न पृथिवीपिंड । चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिंड । पांचमोये १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिंड । छठोये १ लाख १६ हजार योजन
पृथिवीपिंड । सातमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिंड । पहिलीये ३० लाख नरकावासा । बीजीये २५ लाख चौजीये १५ लाख । चौथीये १०

भायाम्बाहृत्मेवं शेषासुभावनीयं तथा त्रिंशत्तन्त्राणिप्रथमायां नरकावासानां मिल्येवं शेषास्त्रपिनेयमिति आवासपरिमाणं चासुरादीनां अपि दशानां सौ
धर्मादीनां च कल्पेतराणां सूत्रैर्वक्ष्यतीति तन्निवासपरिमाणसंग्रहः चउसठ्ठीइत्यादि गाथाः पंच एवंचेहसूत्राभिलाषोदृश्यः सकरपभाएणंपुढवीएकेवइयंयोगा

॥ टीका ॥

यपस्सवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिस्रंगंपंचूणं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठ्ठीअसुराणं चउ
रासीइंचहोइनागाणं वावत्तरिसुवन्नाणं वाउकुमाराणत्तस्सउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंद
धणियमग्गीणं त्तरहंपिजुवलयाणं वावत्तरिमोयसयसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा वारसअरुचउरोसयस

॥ मूल ॥

लाख । पांचमौये ३ लाख । छठ्ठोये ५ ऊणाएक लाख । सातमौये ५ नरकावासा जाण्णिवा ॥ २ ॥ चमरेद्रना भवन ३४ लाख वलींद्रना ३० लाख बिहुंमि
ली ६४ लाख असुरकुमारना भवन । तथा धरणेद्रना ४४ लाख भूतानेद्रना ४० लाख बिहुंमिली ८४ लाख भवन नागकुमारना । तथा वेणुदेवना ३८
लाख वेणुदालीनां ३४ लाख बिहुंमिली ७२ लाख भवन सुपर्ण कुमारना । तथा बेलंबना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख बिहुंमिली ८६ लाख
वायुकुमारना भवन । तथा पूर्णना ४० लाख विमिठ्ठना ३६ लाख बिहुंमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख । एक युगल । अमितगतिनां ४० लाख अमित
बाहमना ३६ बिहुंमिली ७६ लाख । दिसाकुमारना । बीजोयुगल । तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना । त्रीजं युगल । हरि
कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुंमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना । चौथो युगल । घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख बिहुंमिली
स्तनितकुमारना ७६ लाख । पांचमो युगल । अग्निमिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन । एह छठ्ठो युग

॥ भाषा ॥

हिता केवइयानिरया पञ्चत्ता गोयमा सक्करप्पभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्स वाहक्काए उवरिएगंजोयणसहस्स वज्जेत्तामज्जेतीसुत्तरे जोयणस
यसहस्सेएत्यणं सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपणवीसंनिरयावाससयसहस्साभवंतोति मक्खाया तेणंनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेणा न्येपि पञ्चालापकावाच्या
इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तंसुगमं नवरं गाहाहितिगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेणे त्थर्थाः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

॥ टीका ॥

हस्सा पस्साचत्तालीसा ठच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणञ्जुएतिन्नि । सत्तवि
माणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरंहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्जिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणु
त्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएणं पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए ठठीए पुढ

॥ मूल ॥

ल एणी विधिये एह पूर्वोक्त छ युगलना छोत्तर लाख भवन कच्चा । हिंवे १२ देवलोके ८ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मांहि सर्वविमान नी संख्या कहैके ।
सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशाने २८ लाख । सनत्कुमारें १२ लाख । माहेद्रे पलाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांत
के ५० हजार विमान । शुक्र ४० हजार । सहस्सारे ६ हजार विमान । सहस्सारलगे सहस्त्र कहिये । आनत प्राणत नोमे दशमे देवलोके ४ से विमान ।
आरण अच्युतमिली ३०० । नोमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुंदेवलोकमिली ७०० विमान । एकसोइग्यारहविमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने
विषे । मध्यमत्रिकमांहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकग्रैवेयके एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमान । सर्वमिली ८४ लाख ८७ हजार उपरि २३ । बीजी
शर्करप्रभा पृथिवीये बीजी बालुक्कप्रभा पृथिवीये चौथी पंकप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छठी तमप्रभा पृथिवीये सातमी तमतमा पृथिवीये

॥ भाषा ॥

क्रम स्तया वदेयंसायत्ति मध्यमोत्तः शेषास्त्यस्मा इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवद्व्यादिं सुगमं नवरं तानि भवनानि वह्नि हृत्तानि
 वीए सत्तमीए पुढवीए गाहाहिंजाणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गीयमा सत्तमाए पुढवीए अठुत्तरजो
 यणसयसहस्साइं वाहल्लाएउवरि अठुत्तेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविअठुत्तेवन्नं जोयणसहस्सा
 इं वज्जित्ता मज्जेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महा
 निरया पस्सत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वट्ठाय तंसा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानो संख्या पिक्काडो गाथामांहि कहीके तिम कहिवो । सातमी नरकपृथिवीनो स्वरूप पूछेके भगवंतआगलि । भग
 वंत कहेके । हेगौतम सातमी पृथिवीने विषे एकलाख अठुत्तर हजार योजन जाडपण तेमांहि उपरि अठेवपनहजार योजन एतले साढा वावन सहस्र
 योजन अजगाहीने ऊपर मूकोने वली हेठे पणि साढावेपन हजार योजन वर्जी ने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पायडो इहां सातमी
 तमत्तमा पृथिवीये मारकोना पांच अनुत्तर कहतां ते उत्तर आगले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणाज घणा मांटा महा नरका
 वासा कइया तेकहे के । पूर्वदिशे काल १ दक्षिणे महाकाल २ पश्चिमे रुचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमी विचे अप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला
 अयंस त्रिखूणिया एतले पांच नरकावासामांही अपइठ्ठाण ते वाटलो अने चिंङ्गदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाके अहेत्ति हेठे छुरप्र एतले
 छरपलाने संस्थाने संस्थितके । यावत् शब्दे चन्द्र सूर्य रहित कर्मभूत अशुभ घणो भूंडो नरक के । तथा अशुभ घणो भूंडो के नरकने विषे वेदना । वली

वृत्तप्राकारावृतनगरवत् अन्तः समचतुरस्राणि तदवकाशादेतस्य चतुरस्रत्वात् अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि पुष्करकर्णिकापद्ममध्यभागः साचोन्नत
समचित्रबिन्दुकिनौभवतीति तथा उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीर खातपरिखानि उत्कीर्णं भुवनमुत्कीर्य पालीरूपं कृतमन्तरमंतरालं ययोस्ते उत्कीर्णान्तरे ते वि

य अहेखुरुप्पसंठाणसंठिया जावअसुज्जानरगा । असुज्जानं वेयणानं केवइयाणंजंते असुरकुमारावासा
प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं
ओगाहेत्ता अठहत्तरिजोयणसहस्से एत्थणं रयणप्पजाए पुढवीए चउसठिं असुरकुमारावास सयसहस्सा
प० तेणंजवणायाहिंवहा अंतो चउरंसा अहो पोस्करकस्सिअा संठाणसंठिया उक्खिसंतर विउलगंजीरखाय

गौतम पूछे छे । हेभगवंत केतला असुर कुमार भवनपतिना आवास कइया । अनेकिहांछे । भगवंत कहेछे । हेगौतम । एणीयें रत्नप्रभा पहिली पृथिवी
यें ८० हजार उत्तर आगलि १ लाख योजन जाडपणनो केहडो तेमांहि उपरि १ हजार लगे अवगाहीने बली हेठेंपिण १ हजार योजन लगे वर्जी
ने मध्येबिचाले ७८ हजार योजन अधिक १ लाख योजनने विषे इहां रत्नप्रभा पृथिवीने विषे ६४ असुरकुमारना शत सहस्त्र एतले ६४ लाख भवना
वास कइया । ते भवन पतिना भवन घर बाहिर वाटला अंतो घरमांहि चोरंस । चोखूणिआ हेठें पुष्करकर्णिका कमलमांहिली कर्णिका डोडो तेहने
संस्थाने संस्थितके । उत्कीर्ण पालीरूप कीधो छे अंतराल जेहनो ते उत्कीर्णान्तर एहवो विपुल बिस्तीर्ण गंभीर जंडी खात परिखा खाईछे जेह भवन
ने उपरि बिशाल हेठें संकुचित ते विहूने अंतलगे बिचे पाकिले एहभाव । अट्टालक गढ उपरि आश्रयविशेष चरिका नगर अने गढने बिचाले ८ ।

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

पुलगभौरे खातपरिखे येषां तानि तत्र खातमधुचपरिच सम मरिखाउपरि विशाला अधः संकुचिता तयोरन्तरेषु पालीअस्तीतिभावः तथा अट्टालकाः प्रा
कारस्थो पर्याश्रयविशेषाः चरिकानगरपाकारयोरंतर मष्टहस्तोमार्गः पाठान्तरेण चतुरयन्ति चतुरक्राः सभाविविशेषाः ग्रामप्रसिद्धाः दारगोउरत्ति गोपुरद्वा
राणि प्रतीत्यो नगरस्थेव कपाटानि प्रतीतानि तोरणान्यपि तथैव प्रतिद्वाराणि अवांतरद्वाराणि तत एतेषां द्वंद्व एतानि देशलक्षणेभ्यो भागेषु येषांतानि
तथा इह देशोभागदानेकार्यं स्ततोन्त्योन्यमनयो विशिष्टविशेषणभावो दृश्यतइति तथा यंत्राणि पाषाणक्षेपणयंत्राणि मुशलानि प्रतीतानि भुसुंडयः प्रहरणवि
शेषाः शतपथः शतानामुपघातकारिण्यो महाकायाः काष्टशैलस्तम्भयष्टयः ताभिः परिवारयन्ति परिवारितानि परिकरितानीत्यर्थः तथा अयोधानि योध
यितुं संग्रामयितुं दुर्गतत्वाद्यक्यंते परबलै र्यानि तान्ययोधानि अविद्यमानावायोधाः परबलमुभटानि यानि प्रति तान्ययोधानि तथा अडयालकोठगरइय

॥ मूल ॥

फलहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाफ्तोरणपद्मिदुवारदेसनागा जंतमुसलमुसंढिसयग्धिपरिवारिया अउ
ज्जा अडयालकोठरइया अडयालकयवस्समाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणददरदिस्सपंचंगु

॥ भाषा ॥

हाथनो मार्ग गोपुरद्वार तेप्रतीली नगरी तेहना कमाड तेह आगली तोरणके तिमज प्रसिद्ध द्वार मांहिला द्वार एतला देशभागने विषे यथायोग्य
स्थान कहेके जेहने तथा यंत्रतेपाषाणनाखवाना तथा मुशल प्रतिड भुसुंडि तेप्रहरणविशेष तथा शतपथो ते सोमाणसनेमारे एहवीमोटी काष्टनी तथा पा
षाणस्तम्भरूप लाठी तेणे करी परिवारित सहितके जेहने एहवा । अयोध्या पर कटके जूभ्या नजाय न भागे एहवा ४८ कोठा बुरज तेणे करी रचित
के । तथा अडतालीस कौधाके वनमाल तथा अडयालकहिये शोभायमानके वनमाला पद्मवनोमाला जेहनेविषे जेहघरनीभूमि क्षाणेकरी लीपी ऊपरिलो

ति अष्टचत्वारिंशद्देभिर्विचित्रकन्दो गोपुररचितानि अन्येभ्योऽङ्गि अड्यालशब्दः किलप्रशंसावाचकः तथा अड्यालकयवस्यमालत्ति अष्टचत्वारिंशद्देभि
 वाः प्रशंसार्हाः कृता वनमाला वनस्पतिपल्लवस्रजो येषु तानि तथा लादयन्ति यद्भूमेष्कृगणादिनोपलेपनं उल्लोडयन्ति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सम्मृष्टीकरणं
 ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोडयन्ति महितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेतं यद्वक्तव्यं चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घना
 भ्यां दत्ताः पञ्चाङ्गुलयस्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः प
 ञ्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरससरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुः कृष्णागुरु गन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुन्दुरुक्क खीडा तुरुक्कः
 सिलहकं गन्धद्रव्यमेव एतानि च तानि डङ्कतित्ति दह्यमानानि चेतिविग्रहः तेषां योधूमो मघमघेतत्ति अनुकरणशब्दायं मघमघायमानो वहलगंधद्रव्यार्थः
 तेनोदराणि उत्कटानि तानि तथा तानि च तान्यभिरामाणि रमणीयानां तिममासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तेषां गन्ध आमीदी
 येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगन्धिकानि तथा गंधवर्त्ति गन्धद्रव्याणां गंधयुक्तिगन्धोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानीति गंधवर्त्तिभूतानि प्रव

लितला कालागुरुप्रवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कङ्कतंधूवमघमघेतगधुधुयान्तिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिन्नुया

भाग खडोये करी धोव्यो तेणे करी महित पूजित के जेह । गोशीर्षचन्दनविशेष रक्तचन्दन तेविहुं दर्दर निविडपणे दीधाके पंचागुलितला हाथा भींतिने विधि
 हाथा दीधा के । कृष्णागुरु प्रवर प्रधान चौड तुरुक्कसिलहारस एह पूर्वोक्त डङ्कतं दह्यमान दाभता तेहनो जे धूप मघमघायमान बहुल गंध तेणे करी
 उत्कट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिव। तथा सुगंधति सुगंध सुरभि वर प्रधान गंध तेणे करी गंधित के गंधवंत के तथा गंधनो वाती तेह समान

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

रगंधगुणानीत्यर्थः तथा अच्छानिभाकांशस्फटिकवत् सण्हति अस्थानि सूक्ष्मस्फुटलनिष्पन्नत्वात् अक्षदलनिष्पन्नपटवत् लण्हति मधुशानीत्यर्थः घुटितपटव
त् घटति घृष्टानीवघृष्टानि खुरशाययापाषाणप्रतिमावत् मठति मृष्टानीवमृष्टानि मुकुमारशाययापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकवेव अतएव
नीरयति नीरजांसि रजोरहितत्वात् निष्कलति निर्मलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विशुद्धति विशुद्धानि निष्कलङ्कत्वा सचन्द्रव
त् सकलंकानीत्यर्थः तथा सप्पहति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशंते चेति स्वप्रभाणि यतः समरीयति समरीचीनि स
किरणानि अतएव सउज्जोयति सहस्रोतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्त्ततइति सांख्योक्तानि पासादेवति प्रासादीयानि मनःप्रसन्निकराणि दरिसणिज्जति
दर्शनोयानि तानिहि पश्यं यत्तुषा नश्यमङ्गच्छतीतिभावः अभिरूवति अभिरूपाणि कमनीयानि पडिकवति प्रतिरूपाणि द्रष्टारंप्रति रमणीयानि नैकस्य
कस्यचिदेवेत्यर्थः एवमित्यादि यथा सुरकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमनिहित मेवाभेवमिति यथायज्ञवनादिपरिमाणं यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते

अच्छा सरहा लरहा घठा मठा नीरया णिममला वितिमिरा विसुद्धा सप्पन्ना समरीया सउज्जोय्या पासा

हे अच्छा आकाशनीपरें स्फटिकनीपरें । अक्ष सूक्ष्म पुद्गलं करी नीपनी छे । लण्हति मुकुमाल कीधा छे घंघ्या वस्तनी परें । घटति खुरशायेंकरौ पाषा
णप्रतिमानोपरें घस्याछे । मठति घणोसुकुमालशायेंकरौ पाषाणप्रतिमानो परें मठारयाछे एषे कारणे नीरज रजरहित निर्मल मलरहितछे । वितिमिरा
अंधकार रहित छे । निष्कलंकछे । प्रभाकांति तेषे सहितछे । यौशोभा तेषेकरौ सहितछे । उद्योत प्रकाश सहितछे । मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायो
ग्यछे । कमनीयछे देखणहारप्रतें रमणीकछे । एमज जेहनो जे जे मान प्रमाण मनोहरपणी असुरकुमार सृजने विषे कछांछे । जे जे भाव गात्रावें भख्यो ते

घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविधं तत्परिमाणमतआह जंजंगांहाहिं भणियं यद्यवगाथाभिः चउसठ्ठिअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तथावाच्यंतहेत्याह तहचेववस्सओत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवर्णकउक्त स्तथा सर्वेषामसौवाच्यइति तथाहि केवइयाणंभंते नागकुमारावासापस्सता गोय मा इमीसेणंरयणप्पभाए पुठवीए असौउत्तरजोयणसयसहस्सपमाणाएउप्पि एगंजोयणसहस्संओगाहेत्ताहेठ्ठाचेगंजोयणसहस्संवज्जेत्ता मज्जेअठ्ठहत्तरे जोय

इया दरिसणिज्जा अजिरूवा पफिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं जणियं तहचेववस्सनु केवइयाणं जंते पुठविकाइयावासा प० गोयमा असंखेज्जा पुठविकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सत्ति के वइयाणं जंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पजाए पुठवीए रयणामयस्स कंठस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं ओगाहेत्ता हेठ्ठाचेगंजोयणसयंवज्जेत्ता मज्जे अठ्ठसुजोयणसएसु एत्थ

तिमज वर्णनकरिवो । नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो । वली गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्वा पृथिवी रहिवानाठाम भगवंत कह्छे हेगौतम । असंख्याता पृथिवीकायिकावासा छे । एमज पाणो अग्नि वायु रहिवाना ठाम असंख्याताछे । एमज बेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरि न्द्रिय तिर्यंचपंचेन्द्रिय असंख्याता कहिवा मनुष्यना ठाम असंख्याता कहिवा एतले गर्भज मनुष्यसंख्याता कहिवा । अने समूर्च्छिम मनुष्य असंख्याता क हिवा । वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमंतरावासा व्यंतरनारहिवानाठाम । भगवंत कह्छे । हेगौतम एणीये रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकांडके तेमांहि पहि लो १६ सहस्संयोजन कांड तेमांहि पहिलो १ सहस्स योजन रत्नकांडके तेह रत्न कांडनो योजन सहस्सुनो वाहुल्यपणो तेहने विषे उपर एकसोयोजन

णसहस्रे एत्यणं रयणप्पभाएचुलसीइनांगकुमारावाससयसहस्रा पस्सत्ता तेणंभवणाइत्यादीनि केवइयाणंभंते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु
त्क्रान्तिकानां असंख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संमूर्च्छिमानां त्वसंख्येयत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाणं

॥ टीका ॥

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा ज्ञोमेज्जा नगरावाससयसहस्रा प० तेणंज्ञोमेज्जानगरा वाहिंवट्टा
अंतोचउरंसा एवंजहान्नयणवासीणं तहेवणेयत्ता णवरं पफ्फागमालाउला सुरम्मापासाईया दरिसणिज्जा अज्जि
रूवा पफ्फिरूवा । केवइयाणंभंते जोइसियाणं विमाणावासा प० । गोयमा इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवी
ए वज्जसमरमणिज्जानुं नूमिजागानुं सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उहं उप्पइत्ता एत्यणं दसुत्तरजोयणसय वा
हत्ते तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेणं जोइसियविमाणा

॥ मूल ॥

वर्जी ने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकौने मध्ये विचे आठसे योजन जगत्ता इहां वाणअंतर देवना तिरिक्का लोक मांहि असंख्यात भूमि
संबंधी नगरना आवासना लाख कछा । ते भौमेय नगरवासा बाहिर बाटला मांहि चउरंसा चौखूणा । एमज जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहां
पणि नवरं एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयंती तेहनौ माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्भ रमणीकछे । देखबायोग्यछे । वली
गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कछा । हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिलौ पृथिवीनो घणोज सम रमणीक भूमिभाग तेइथकी
सातसेनेजयोजन लगे ऊंचो उत्पतीने जईने इहां १० योजनना बाहुल्यपणां मांहि एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामांहि जोतिषीना विषयव्याप्यछे

॥ भाषा ॥

भतेजोइसियाचंविमानावासाइत्यादि अद्भुतमुसिवपहसियति अभ्युद्गता सञ्जाता उत्पत्ता प्रवर्ततया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दौसि स्तवा सिताः शुक्ला इत्यभ्युद्गतोत्पत्तप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय चन्द्रकान्तादयो रत्नानि कर्केतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि चित्राणि चवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्भूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तत्संस्चिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा विजयाइति वैजयन्तीनाम्यार्श्वकर्षिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयंत्य स्ताश्च तद्वर्जिताः पताकाश्च कृत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्भूतविजयवैजयन्तीपताकाकृत्रातिच्छत्रकलिता इति तुंगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहंतसिहरंति गगनतल मम्बरमनुलिखदभिलंघयच्छि
 वासा अद्भुतगयमुसियपहसिया विविहमणिरयणनत्तिचिन्ता वाउरुयविजयवैजयंतीपद्मागढत्ताइलत्तकलि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैसर भूमिथकी ७०० नेजयोजन तारामंडलके तेहथी १० योजने सूर्य ते उपरि ८० योजने चंद्रमा ते उपरि ४ योजन नक्षत्र ते उपरि ४ योजन बुध ते उपरि ३ योजन शुक्र ते उपरि ३ योजन वृहस्पति ते उपरि ३ योजन मंगल ते उपरि ३ योजन शनैसर के । तारा मंडलथकी शनैसर १०० योजन मांहि सर्व जोतिषीके । ज्योतिषीना देवता असंख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकक्षा । तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाके । अभ्युद्गत कहतां जपना चिहुंदिशि प्रसरौ पहति एहवी प्रभा दौति तेणेकरी शुक्र ऊजला जेहनौ एहवा । अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकान्तादि क रत्नते कर्केतनादिक तेहनौ भक्ति भांति तेणेकरी चित्रा चित्रवंत के । वली केहवा आश्चर्यवंत के । वायरें कंपावी विजय वैजयंती पताका ने उपरि कृत्र तेणे करीने कलितके । एतावता व्याप्तके । वली केहवाके । अति ऊंचाके गगनतल आकाश तेहने उलंघतके शिखर जेहना । घरनी भींतिने विषे जा

खरं येषाम्ने गगनतलाऽनुलिखच्छिखराः तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषाम्ने जालान्तररत्नाः इह प्रथमा बहुवचनलोपो द्रष्टव्यः जालकानि च भवनभित्तिषु लोके प्रतीताग्येव तदन्तरेषु च शोभार्थं रत्नानि सम्भवत्येवेति तथा पञ्जरोन्मीलिता इव पञ्जरबहिःकृता इव यथा किल किञ्चिदसुपञ्जरा हंसादिमयप्रच्छादनविशेषा बहिःकृतमत्स्यंतमविनष्टच्छायात्वाच्छोभते एवन्तेषूपीतिभावः तथा मणिकनकानां सम्बन्धिनो स्तूपिकाशिखरं येषां ते मणिकनकस्तूपिकाका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमया खये अर्धचन्द्रादारादिषु तैश्चित्रायेते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्धचन्द्रचित्रा स्तथा अन्तर्बहिश्च अक्ष्णा मसृणा इत्यर्थः तथा तपनीयं सुवर्णविशेष स्तम्भ्या बालुकायाः शिकतायाः प्रस्तटाः प्रतरोयेषु तत्तपनीयबालुकाप्रस्तटाः पाठान्तरे तु सगहशब्दस्य बालुकाविशेषणत्वात् अक्ष्णतपनीयबालुकाप्रस्तटा इति व्याख्येयं तथा सुखस्पर्शाः शुभस्पर्शा

॥ टीका ॥

या तुंगा गगनतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररणपंजरुम्मिलियत्तुमणिकणगत्यून्नियागा वियसियसयवत्त पुं
रुरीयतिलयररणचंद्रचित्रा अंतोवाहिंचसरहा तवणिज्जवालुष्णापत्यठा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया

॥ मूल ॥

लियां तेहना आंतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नकर्कतनादिक के । पांजरायको उन्मीलित बाहिर कीधा जेहवा तेजपुंजरु तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी यूमिका शिखर के जेहना । बली केहवाके विकसित जे शतपत्र कमल पुंडरीक के द्वार देशने विषे । तथा भीतिने विषे तिलक के । तथा रत्नमय अर्धचंद्र द्वारविभाग के तेथे करौ चित्रित के । अंतो घरमाहि तथा बाहिर अक्ष्ण सुकुमाल के । तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी बालुका तेह पाथरीके जेहने विषे । बली केहवाके । सुखस्पर्श सुकुमाल फरसके । शोभायमानके । रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहां । बली केहवाके । चित्तने प्रसन्नकरे बली देखिबा योग्यके ।

॥ भाषा ॥

वा तथा सश्रीकं सशोभंरूपमाकारोयेषां अथवा सश्रीकाणि शोभावन्ति रूपाणि नरयुग्मादीनि रूपकाणि येषुते सश्रीकरूपाः प्रासादीया दर्शनीयाः अभि
रूपाः प्रतिरूपार्शितपूर्ववत् केवइएत्यादि रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणिज्जाओभूमिभागाओत्ति बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य ऊर्ध्वं उपरि तथा चन्द्रमः
सूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणि णमित्यलंकारे वीइवइत्तत्ति व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्येत्यर्थः तारारूपाणि चेह तारका एवेति तथा बहूनीत्यादि किमित्याह
ऊर्ध्वं मुपरि दूरमत्यर्थं व्यतिव्रज्य चतुरशीति विमानलक्षाणि भवन्तीति संबंध इति मक्खायत्ति इति एवंप्रकारा अथवा यतो भवन्ति तत आख्याताः

दरिसणिज्जा केवइयाणंजंतेवेमाणियावासा प० । गायमा इमीसेणंरयणप्पज्जाएपुढवीएवज्जसमरमणिज्जान
भूमिज्जागानु उहं चंदिमसूरियग्रहगणनरक्कत्ततारारूपाणं वीइवइत्ता वल्लणिजोयणाणि वल्लणिजोयणसयाणि
वल्लणि जोयणसहस्साणि वल्लणिजोयण सयसहस्साणि जोयणकोफ्फोनु जोयणकोफ्फाकोफ्फोनु अस्संखेज्जान
जोयणकोफ्फाकोफ्फिनु उहं दूरं वीइवइत्ता एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मोसाणसणंकुमारमाहिंदवंजलंतग

बली गौतम पूछेके । केतला हेपूज्य वैमानिकावासा वैमानिक देवताना विमल निर्मल विमानरूप आवासा कख्या । हेगौतम एणीये रत्न प्रभा पहिली पृ
थिवीनो बली घणोसम रमणीक भूमिभाग थकीऊंचो चंद्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूपने व्यतिक्रमीने घणांयोजन घणांयोजननासेकडा घणांयोजन
नाहजार घणांयोजननांलाख घणांयोजननीकोडी घणीयोजननीकोडाकोडी असंख्यातायोजननीकोडाकोडीने ऊपरि दूरें उल्लंघीने इहां वैमानिकदेवतासौ
धर्म ईशान २ सगडाकार बरावरिके । तेऊपरि सनत्कुमार माहेंद्र बरावरिके । तेऊपरि ब्रह्म देवलोक । ते ऊपरि सांतक । तेऊपर शुक्र । ते ऊपर सह

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

सर्ववेदिनेति तेनानि तानि विमानानि णमिति वाक्यालंकारे अचिमालिप्यभक्ति अर्चिमाली आदित्य स्तव्यं भांति शोभन्ते यानि तान्यर्चिमालिप्रभाणि तथा भासानां प्रकाशानां राशि भासराशि रादित्य स्तस्य वर्णं स्तव्यदाभा छाया वर्णो येषां तानि भासराशिवर्णभानि तथा अरयन्ति अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् नोरयन्ति नीरजांसि आगंतुकरजोविरहात् निम्नलत्ति निर्मलानि कक्खडमलाभावात् वितिमिरत्ति वितिमिराणि अहा र्याभ्यकाररहितत्वात् विशुद्धानि स्वाभाविकतमोविरहात् कलदोषविरामाद्वा सर्वरत्नमयानि नदार्वादिदत्तमयानीत्यर्थः अहान्याकाशस्फटिकवत् श्लक्ष्णानि

सुकुसहस्सारं प्राणयपाणयश्चारणश्चुणुसु गेवेज्जगमणुत्तरं सुय चउरासीडं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताण उडंचसहस्सा तेवीसंचविमाणाज्वंतीतिमस्काया । तंणंविमाणा अचिमालिप्यज्जा नासरासिवस्साज्जा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्चासरहा लग्हा घठा मठा णिप्पंका णिक्कंकरुच्चा

स्वार । ते ऊपर आनत प्राणत लगडाकारेके । ते ऊपर आरण अच्युत । एवं १२ देवलोक यथा । ते ऊपर ८ ग्रैवेयक ऊपरां ऊपर ५ अनुत्तर विमान । ए के प्रतरे चिहुंपासे ४ विजयादिक विमानं विचे सर्वार्थसिद्ध । एवं १२ देवलोक ८ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मिलीने सगला ८४ लाख २७ हजार २३ विमानके ते भगवन्ते कह्याके । ते विमानके हवाके । अर्चिमाली सूर्यनी सरीखी प्रभाके जेहनी । प्रकाश दीप्तिराशि सरीखा वर्णके जेहनी । स्वाभाविक र जना अभावथी रज रहितके । कठिन मलना अभावथी निर्मलके । अंधकार रहितके । स्वाभाविक अंधकार रहितपणांथी विशुद्धके । बली सर्वरत्न मयी के । आकाशनी परे अच्छके । स्फटिकरत्ननी परे श्लक्ष्ण पुद्गलयी नौपनांके । सुकुमाल कीधाके । खरशाणं करी पाषाण प्रतिमानी परे घठास्याके । सकु

सूक्ष्मस्वर्णमयत्वात् पृष्ठानीवपृष्ठानि खरश्चाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्ठानीवमृष्ठानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपंकानि कलंकविकलत्वात्
 कर्हमविशेषरहितत्वाद्वा । निष्कंकटा निःकंचुका निरावरणा निरुपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति रेषां तानि निष्कंकटछायाणि सप्रभाणि प्रभावंति
 समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोद्योतानि वस्त्वन्तरप्रकाशनकारीणीत्यर्थः पासाइएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणंभते कप्येकेवइयाविमाणावासापञ्चत्ता गो
 यमा वत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पञ्चत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्यं एतदेवाह एवंइसाणाइसुत्ति एवं गाहाहिं भाणियब्बंति वत्तीसअठ्ठवीसा इत्यादि
 काभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्तदनुसारेणेत्यर्थः प्रतिकल्पं भिन्नपरिमाणाविमानावासा भणितव्या स्तद्वर्णकश्चवाचो जावतेणंविमाणेत्यादि यावत्पडिक्वा न

या सप्पन्ना सस्सिररीया उज्जोया पासाइया दरिसणिज्जा अजिरूवा पफिरूवा । सोहम्मेणंजंतेकप्ये केवइया
 विमाणावासा प० । गोयमा वत्तीसंविमाणावाससयसहस्सा प० । एवंइसाणाइसुअठ्ठावीस वारस अठ्ठ
 चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पस्सासं चत्तालीसं ठसहस्साइं चत्तारिसयाइं तिसिंसयाइं गाहाहिंजाणि

मार शार्णेकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याहे । कलंक रहित हे । बली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिहे । प्रभा सहितहे शोभायमानहे । उ
 द्योत सहितहे । बली समीप रही वस्तुने प्रकाशे चित्तने प्रसन्न करे एहवाहे । बली गीतमपूहेके । हेभदंत सौधर्म पहिले देवलोके जेतला विमानावास
 विमानलक्षण घर कछा । हेगीतम । वत्तीसलाख विमानावासा कछा । एम ईशाने अठ्ठावीस लाख । सनत्कुमारे १२ लाख माहेद्वे ८ लाख । ब्रह्मे ४ ला
 ख । लांतके ५० हजार । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार । आनत प्रानत मिली ४०० । आरण, अण्त् मिली ३०० विमान । एह सैकडां जिम प

वर मभिलापभेदोयं यथा ईसाखेभंते कषे केवइयाविमाणावासापक्षत्ता गोयमा अट्टावीसं विमाणावांस सयसहस्रा पक्षत्ता तेखंविमाणा जावपडिइवा
 एवं सर्वं पूर्वीक्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनंतरं नारकादिजीवनां स्थानान्युक्ता न्यथ तेषामेव स्थिति मुपदर्शयितु माह
 नेरइयाणंभंतेइत्यादि सुगमं नवरं स्थिति नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकालः अपज्जत्तयाणति नारकाः किल लब्धितः पर्याप्तका एव भवंति
 करणतस्सू पपातकाले अन्तर्मुहर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति ततः पर्याप्तका स्ततएपा मपर्याप्तकत्वेन स्थिति जघन्यतो घ्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहर्त्तमेव पर्याप्तका
 ना म्मुनरौघिक्खेव जघन्योत्कृष्टा चान्तर्मुहर्त्तोनाभवतीति अयं जेहपर्याप्तकापर्याप्तकविभागः नारयदेवातिरिमणय गम्भयाजेअसंखेज्जवासाज्ज एतेउअप्पज्ज
 त्ता उववाए चेवबोधव्वा। सेसायतिरियमणुया लहिंपप्पोववायकालेय। दुहओवियभइयव्वा पज्जत्तियेयजिणवयणंति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति विश्लेष
 त स्तामभिधातु मिदमाह इमीसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वप्रज्ञापनाप्रसिद्धं मित्यतिदिशन्नाह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक
 लक्षणेन गमत्रयेण नारकाणां नारकविशेषाणां तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिमुक्ता एवमिहापिवाच्या कियदूरं यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुसरसुराणा
 मोघिकपर्याप्तापर्याप्तकलक्षणं गमत्रयं यावदित्यर्थः इहचैव मतिदिष्टसूत्रास्थितो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा अदन्तकियतीतिस्थिति गौतम जघन्येन दय

॥ टीका ॥

यत्तु । नेरइयाणं जंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता । गोयमा जहन्तेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेहीसं

॥ मूल ॥

हिले गाथामांइ कहि आयाहे तिम कहिबो । हिवे २४ दंडकने धिवे जेजोव तेहना आजखानो स्वरूप पूढेहे । हेपूज्य नारकीनी केतला काल लगे
 स्थिति पाउखो कहो । हे गौतम सर्वथापि थोडोतो १० हजार वर्षनो स्थिति कहो । पहिली नरकनो अपेवाये उट्ठहोस्थिति तेचोस सागरोपमलगे क

॥ भाषा ॥

वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरद्वप्रभापृथिवीनारकाणां भदन्तं कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतमी भयथापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तकानां सामान्योक्त्यैवांतर्मुहूर्त्तनावाच्यैवशेषपृथिवीनारकाणां प्रत्येकदशानां मसुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरश्चाद्भर्भजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणां मष्टविधानां ज्योतिष्काणां मष्टप्रकाराणां सौधर्मादीनां वैमानिकानां च गमत्रयं स्वाच्यं इहच विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमान्युक्तानि गन्धह

॥ टीका ॥

सागरोवमाइं ठिई प० । अप्रजज्ञगाणं नेरइयाणं जंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्तेणं अंतोमुज्जत्तं उक्को सेणवि अंतोमुज्जत्तं । पज्जत्तगाणं जहन्तेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुज्जत्तूणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरो वमाइं अंतोमुज्जत्तूणाइं इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए एवंजावविजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं

॥ मूल ॥

ही । पणि ३३ सातमीनी अपेक्षाथी । वली पूछेछे । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थायें केतला काल लगे स्थिति कह्यी । हेगौतम जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्तं सत्कष्टपणे पणि अंतर्मुहूर्त्तं । पछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार वर्षनी पहिली नर कनी अपेक्षायें अंतर्मुहूर्त्तं जंणी । उत्कष्टी सातमीये अंतर्मुहूर्त्तं जंणी तेत्तीस सागरोपमनी । अंतर्मुहूर्त्तं अपर्याप्तावस्थानो जंणी जाणिवो । हे पूज्य एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें जघन्य आजखो केतली हेगौतम जघन्यतो १० हजार वर्षनी उत्कष्टी १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच भवन पती व्यंतर ज्योतिषी १२ देवलोक ८ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कष्टी आजखो ग्रंथांतरयकी कहिबो । अनुत्तर विमान पूछेछे । हे भगवंत विजय वैजयंत जयंत अपराजित विमाने केतली देवतांनी स्थिति कह्यी । गौतम जघन्यपणे ३२ सागरोपम उत्कष्टपणे ३३ सागरोपमनी कह्यो । ५ मेसर्वार्थ सिद्ध विमाने

॥ भाषा ॥

स्थादिष्वपि तथैव दृश्यते प्रज्ञापनायां त्वे कश्चिदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकापर्याप्तकगमद्वय मिह समूहमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमैर्वाच्येति अ
नन्तरं नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानींतच्छरीराणां भवगाहनाप्रतिपादनायाह कश्चाणंभन्तेइत्यादि कंठं नवर मेकेन्द्रियौदारिकशरीरमित्यादौ याव
त्तरणा द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकेन्द्रियजलचरादिपञ्चेन्द्रियभेदेन प्राक्प्रदर्शितजौवराशिक्रमेण वाच्यानि कियदूरमित्यादि गम्भवक्तुंतिइ

॥ टीका ॥

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्तेणं वत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं सव्वठे अ
जहस्समणुक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । कतिणं जंतेसरीरा प० । गोयमा । पंचसरीरा प०
तं० । उरालिए वेउव्विए आहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेणं जंतेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प०
तं० । एगिंदियउरालियसरीरे जावगप्पवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं जंते

॥ मूल ॥

जघन्य नथी उत्कष्ट ३३ सागरोपमनी कही । हिवे स्थितिहे ते शरीराधोनहे । तेमाटे शरीर नूं स्वरूप पूहेहे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श
रीर कह्या । ते कहेहे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कर्मण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्या । गौतम ५ प्रकारे । एकेंद्री
औदारिक शरीर १ एम वेइंद्री औदारिक शरीर २ तेइंद्री औदारिक ३ चोरिंद्री औदारिक शरीर ४ पंचेंद्री समूर्च्छिम तिर्यंच औदारिक शरीर गर्भज
पंचेन्द्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर समूर्च्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रांत मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिकशरीर ५ एह सर्वनो औदारिक शरीर
जाविओ । औदारिकशरीरनी केवही मोटी भवगाहनां कही, हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात से भाग पृथिवीनी अपेक्षाये । उत्कष्टसातिरेक भा

॥ भाषा ॥

त्वादि ओरालियशरीरस्त्रेत्वादि तत्रोदार अधानं तीर्थकरादिशरीराणि प्रतीत्य अथवीरालम्बिशालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि प्रतीत्य
अथवा उरालंस्त्रेत्वादिप्रदेशोपचितत्वात् ब्रह्मत्वाच्च भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्रायुवहं यच्छरीरं न्तत्समयपरिभाषया उरालमिति तच्च तच्छरीरश्चेति प्राकृत
त्वादौरालियंशरीरं तस्मादवगाहन्ते यस्यांसावगाहना आधारभूतकक्षेत्रं शरीराणां मयगाहना शरीरावगाहना अथ वीदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिक
शरीररूपावगाहना सा भद्रतः केमहालिया किञ्चिदती ॥ अन्ता तत्र जघन्येनाङ्गुलासंस्थेयभागंयावत् पृथिव्याद्यपेक्षया उत्कर्षेण सातिरेकं योजनसहस्रमिति
वादरवनस्पत्यपेक्षयेति एवंजावमणुस्तेति इहएवं यावत्करणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनैकविंशतितमपदाभिहितग्रन्थो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा
हि एकेंद्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनञ्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णां स्वादरसूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तानां जघन्यत उत्कृष्टतया ङ्गुलासंस्थेयभागो वनस्पतीनां
वादरपर्याप्तानां मुत्कर्षतः साधिकं योजनसहस्रं श्रेष्ठाणां त्वङ्गुलासंस्थेयभागएव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणां मर्याप्तानां मुत्कर्षतस्मानुक्रमेण द्वादशयोजनानि त्री
णिगव्यूतानि चत्वारिचेति पञ्चेन्द्रियतिरथां जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां संमूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्रं एवं स्थलचराणां चतुष्पदानां संमूर्च्छन
जानां मर्याप्तानां गव्यूतपृथक् गर्भव्युत्क्रान्तिकानां तेषां षट्गव्यूतानि उरःपरिसर्प्याणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां योजनसहस्रं एवामेव संमूर्च्छनजानां योजन

केमहालिया शरीरोगाहणा पन्तहा । गोयमा जहन्नेणं अंगुलश्चसंखेज्जातिजागं उक्कोसेणं साइरेगं जोय

भेरी योजन सहस्र वादर वनस्पतीनी अपेक्षार्थे । जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो । सर्व औदारिक वेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री पंचेन्द्री ति
र्थेचनो मान तिमज निरववेस समक्षपक्षे तरतमयोगे कहिवो जिहां लगे मनुष्य औदारिक शरीर नो मान उत्कृष्टो ३ गाऊ युगलियानी अपेक्षार्थे । हिवे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

पृथक् भुजपरिसर्प्याणां गर्भजानां गन्धूतपृथक्काम् संमूर्च्छनजानां धनुः पृथक् खचराणां गर्भजानां संमूर्च्छनजानां च धनुः पृथक्कामेव तथामनुष्याणां गर्भयुत्क्रान्ति-
 कानां गन्धूतचयं संमूर्च्छनजानां मङ्गलासंस्थेयभागः एषएव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्याप्तपदेचेति तथा कङ्कविहेणमित्यादि स्पष्टं नवरं विविधा विशिष्टावा-
 क्रियाविक्रियातस्या भव मैक्रिय म्विविध म्विशिष्ट म्वाकुर्वन्ति तदिति वैकुर्विकं नितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरं
 नारकादीनामेवं जावेत्यादेरतिदेशादिदं द्रष्टव्यं यदुत जइएगिंदियवेउच्चियसरीरेण क्रियाउकाइयएगिंदियवेउच्चियसरीरेण अवाउकाइयएगिंदियवेउच्चियश-
 रीरेण गोयमा वाउकाइयएगिंदियसरीरेण नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्धोदृश्यः यदिवायोः किंसूक्ष्मस्य वादरस्यवा वादरस्यैव यदि वादरस्य
 किमपर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पञ्चेन्द्रियस्य किंनारकस्य पञ्चेन्द्रियतिरश्चामनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वेषां तत्रनारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तक-
 स्ये तरस्यच यदितिरश्चः किं सम्पूर्णमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसंख्यातवर्षायुषण्वपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

णसहस्रं एवंजहा उगाहणसंठाणे नुरालियपमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति । उक्कोसेणंतिस्सिगाउ
 याइं । कङ्कविहेणं जंते वेउच्चियसरीरे प० । गोयमादुविहे प० । एगिंदियवेउच्चियसरीरेय पञ्चिंदियवेउ

वैक्रिय शरीरनो मान पूछे के । हे पूछ केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कझो । हे गौतम वे प्रकारे कझो । एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनी अपेचाये । बीजो
 पञ्चेन्द्रिय वैक्रिय शरीर तेह पञ्चेन्द्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने लुब्ध विधेये होय । भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती अंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

गर्भजस्यैव तस्यापि कर्मभूमिजस्यैव तस्यापि संख्यातवर्षायुषएवं पर्याप्तकस्यैव च तथा देवस्य भवनवास्यादेः तत्रा सुरादेर्दशविधस्य पर्याप्तकस्यैतरस्य च एवं व्यं-
 तस्याष्टविधस्य ज्योतिष्कस्य पञ्चविधस्य तथा यदि वैमानिकस्य किङ्कल्पोपपन्नस्य कल्पातीतस्य उभयस्यापि पर्याप्तस्या पर्याप्तस्य चेति तथा वैक्रियभदन्तकिंसंस्थि-
 तं उच्यते नानासंस्थितं तत्र वायोः पताकासंस्थितं नारकाणां भवधारणीयं मुत्तरवैक्रियञ्च हुंडसंस्थितं पंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणां नानासंस्थितं देवानां भवधा-
 रणीयं समचतुरस्रसंस्थानसंस्थितं मुत्तरवैक्रियं नानासंस्थितं केवलं कल्पातीतानां भवधारणीयमेव तथा वैक्रियसरीरावगाहना भदन्तकिंमहती गौतम जघ-
 न्यतीगुलाऽसंख्येयभाग मुत्कर्षतः सातिरेकं योजनलक्षं स्वायोरुभयथा अङ्गुलासंख्येयभाग एवं नारकस्य जघन्येन भवधारणीयं उत्कर्षतः पञ्चधनुः शतानि एषा-
 च सप्तम्यां षष्ठ्यादिषु त्वयमेवा र्द्धान् द्वौ हीनेति उत्तरवैक्रियात् जघन्यतः सर्वेषां मध्यङ्गुलासंख्येयभाग मुत्कर्षतः च नारकस्य भवधारणीयद्विगुणेति पंचेन्द्रियतिर-
 खां योजनशतपृथक् मुत्कर्षतः मनुष्याणां तूत्कर्षतः सातिरेकं योजनानां लक्षं देवानां तु लक्षमेवोत्तरवैक्रियं भवधारणीयं तु भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्म्मेशा-
 नानां सप्तहस्ताः सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः षट् ब्रह्मलान्तकयोः पञ्च महाशुकसहस्रारयोः शतवार आनतादिषु त्रयोः त्रैवेयकेषु द्वा वनुत्तरेष्वेक इति अनन्तरोक्तं

॥ टीका ॥

द्वियसरीरेषु । एवं जाय सणकुमारेष्वाढतं जावश्चणुत्तराजवधारणिजा जावतेसिं रयणीरयणीपरिहायइ ।

॥ मूल ॥

न लगे सात हाथनो होय । समत्कुमार थो मांडो अनुत्तर विमान लगे भवधारणीय शरीर । वे वे देवलोके एकेक हाथ घटाडिये । ते किम सनत्कुमार
 माहेन्द्रे ६ हाथनं । ब्रह्मलान्तके ५ हाथनी । शुकसहस्रारे ४ हाथनो । आनत प्राणत आरण अच्युते ३ हाथनो । नवग्यैवेयके २ हाथनो । पंचानुत्तरे १ हाथ

॥ भाषा ॥

सूत्रतएवाह एवंजावसणकुमारेत्यादि एवमिति दुविहेपन्नत्ते एगिंदियइत्यादिना पूर्वदर्शितक्रमेण प्रज्ञापनोक्तं वैक्रियावगाहनामानसूत्रं वाच्यं कियदूरमित्यादि यावत्तनत्कुमारेश्वरं भवधारणीयवैक्रियशरीरपरिहाणमितिगम्यं ततोपि यावदनुत्तराणि अनुत्तरसुरसम्बन्धीनि भवधारणीयानि शरीराणि यानिभवन्तितेषारंक्षी रन्निःपरिहीयतइति एतदर्थसूत्रभवेत्तावदिति पुस्तकान्तरेखि दम्बाक्य मन्यथापि दृश्यते तत्राप्यक्षरघटनै तदनुसारेणकार्येति आहारयेत्यादि सुगम श्वरं एवमिति यथापूर्वं आलापकः परिपूर्णं उच्चारितः एवमुत्तरत्रापि तथाहि जइमणुस्सत्तिजइमणुस्साहारगसरीरे किंमणुस्सत्तियणुमस्साहारगसरीरे समुच्छिममणुस्साहारगसरीरे गोयमा गम्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे नोममुच्छिममणुस्साहारगसरीरे जइगम्भवक्कंतियइत्यादि सर्वमृच्छं जावजइपमत्तसंजयअपमत्तसंजयसम्महिठ्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगम्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे किंइठ्ठिपत्तपमत्तसंजयसम्महिठ्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयक

॥ टीका ॥

आहारयसरीरेणं जंते कइविहे पन्नत्ते । गोयमा एगाकारे प० । जइएगाकारे प० । किंमणुस्सत्तियाहारयसरीरे अमणुस्सत्तियाहारयसरीरे । गोयमा मणुस्सत्तियाहारगसरीरेणोअमणुस्सत्तियाहारगसरीरे । एवंजइमणु

॥ मूल ॥

नो शरीर । बेहुं गतिना उत्तर वैक्रिय शरीरनो मानगाथाथी कइवो । नरदेवलक्खमहियं । तिरियाणंजोयणाणिनवसयाइं । दुगुणंतुनारयाणं उक्कोसवेउज्वियाभणिया ॥ १ ॥ अंतोमुहत्तनिरए मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु । देवेषु अइमासो उक्कोसवेउज्वियाकालो ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते पूर्वधर जिन ऋद्धिजोइवाने अथवा संदेहपूछिवाने तीर्थंकर पासे जाइवाने अर्थे करे १ हायनो शरीर अंतर्मुहत्त लगे रहै । ते १ प्रकारे छे । बली गौतम पूछे छे । हेपूज्य १ प्रकारे आहारक शरीर कइवो ते मनुष्य आहारक शरीर होय किंवा अमनुष्य आहारक शरीर होय । हे गौतम मनुष्यने आहारक शरीर होय । परं

॥ भाषा ॥

अभूमिगगम्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे अण्डिपत्तपमत्तसंजयसम्मादिपिप्पज्जसयसंखेज्जवासाउयकअभूमिगगम्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे गोयमा हि
 स्सआहारगसरीरे किंगप्पवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे गोयमा गप्पवक्कं
 तियमणुस्सआहारगसरीरे नोसमुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे । जइगप्पवक्कंतिया किंकम्मनूमिगा अकम्मनू
 मिगा गोयमा कम्मनूमिगा नोअकम्मनूमिगा । जइकम्मनूमिग किंसंखेज्जवासाउय अंसंखेज्जवासाउय । गो
 यमा नोअसंखेज्जवासाउय । जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया अपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्त
 या । जइपज्जत्तया किंसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्ममिच्छदिठी । गोयमा सम्मदिठी नोमिच्छदिठी नोस

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

अमनुष्यने आहारक नहोय । जोमनुष्यने होय तो गर्भ व्युक्तांतनेहोय वा सनूच्छिमने होय । हेगौतम गर्भजने होय सनूच्छिम ने नहोय । हेपूज्य गर्भजने
 होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा २० अकर्म भूमिगतने होय । हे गौतम कर्मभूमिगत मनुष्यने होय अकर्मभूमिगत मनुष्यने न होय । हे पूज्य क
 र्मभूमिगत मनुष्यने होय तो संख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असंख्यात वर्षायुष्कने होय । हे गौतम संख्यात वर्षायुष्कने होय पणि असंख्यात वर्षायुष्कने न
 होय । हे भदंत संख्यात वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्ताने होय किंवा अपर्याप्तने होय । हे गौतम पर्याप्ताने होय पणि अपर्याप्ताने न होय । हे भदंत पर्याप्ताने
 होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने । हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय परं मिथ्यादृष्टीने नही । सम्यग्मिथ्यादृष्टीने पणि नहोय । हेभदंत स
 म्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असंयत अविरतीलोक संयतासंयत आवकने होय । हेगौतम संयतीने होय । पणि असंयतीने नहोय । संय

तौयस्वनिषेधः प्रथमस्यचा मुञ्जा वाच्या एतदेवाह वयणाविभाणियव्वत्ति सूचितवचनान्यप्युक्तन्यायेनसंवाणिभणनीयानि विभागेनपूर्णान्युच्चारणीयानीत्यर्थः
आहारगत्तिआहारगशरीरस्सकेमहालियासरीरोगाहणापसत्तागोयमाइत्येतत्सूचितंजहन्नेणंदेसूणारंयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत स्तथा रभक
द्रव्यविशेषत स प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नहीहीदारिकादेरिवां गुलासंख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इतिभावः तेयासरीरेणंभंतेइत्यादि एवं यावत्कर

म्ममिच्छदिठ्ठी । जइसम्मदिठ्ठी किंसंजया अ्संजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअ्संजया नोसंजया
संजया । जइसंजया किंपमत्तसंजया अपमत्तसंजया । गोयमा पमत्तसंजया नोअ्पमत्तसंजया । जइपम
त्तसंजया किंइहिपत्ता अणिहिपत्ता गोयमा इहिपत्ता नोअ्णिहिपत्ता । वयणाविजाणियत्वा आहारयस
रीरे समचउरंससंठाणसंठिए । आहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेणं पण्णिपुस्सारयणी । तेअ्

ता संयतने पणि न होय । हेपूअ् संयतीनेहोय तो प्रमत्तसंयती ६ ढागुणठाणवालाने हांय किंवा अ्प्रमत्त संयतीने होय । हे गौतम ६ ढागुणठाणवासी
प्रमत्तसंयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय । पणि अ्प्रमत्तलब्धि फारवे नयी तेमाटे अ्प्रमत्त ने न होय । जो अ्प्रमत्तने होय तो ऋद्धिप्राप्तने हांय
किम्वा अर्द्धिप्राप्तने होय । हे गौतम शरीर करवानो लब्धिरूपऋद्धि पाईहांय ते ऋद्धिप्राप्तने होय । अर्द्धिप्राप्तने न हांय । उक्तन्याये कच्चा वचन सग
ला भणिवा । आहारकशरीर समचउरंस संस्थान संस्थित होय । आहारक शरीर जघन्य थोडां सर्वकाले देसूणा कांइकजंणा हाथ अने संपूर्ण होयतो
१ हाथहोय । हिवे चौथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे के । तेजस शरीर हे भदंत केतले प्रकारे कच्चा ॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कच्चा । एकेंद्रियतेज

चा अज्ञापनासत्कैकविंशतितमपदोक्ता तैजसशरीरवत्तव्यता इहवाच्या साचेय मर्थतः एगिंदियतेयगशरीरेणंभंतेकतिविहे गोयमा पंचविहेपण्णसे तंजहा पुढवीजावणस्रदकाइएगिंदियतेयगसरीरे एवं जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सव्वडसिद्धगअणुत्तरोववाइयकपातीतवेमाणियदेवपं चेदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणंभंते किंसंठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसंस्थानं तदेव तैजसस्य काम्मणस्यच तथा जीवस्य मारणान्तिकसमुद्घातगतस्य कियती तैजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भवाहल्याभ्या मायामतसु जवन्थेना ङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षत ऊर्ध्वमधश्च

सरीरेणं जंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे वित्तिचउपंचएवंजाव गेवेज्जा

स्सणं जंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

स १ वेइन्द्रीतेजस २ तेरिंद्री तेजस ३ चौरिंद्री तेजस ४ पंचेद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनी संठाण अनेक प्रकारनी । गौतम पहिले स्कंध बचने पूछेछे । मरणांतिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनी अवगाहनां केतली । भगवंत कहे छे । विष्कंभपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणे । जघन्य अंगुलनी असंख्येयभाग । उत्कट ऊंचो नीचो हेठिला लोकांतलगे । काम्मणशरीरनी पणि एमज अवगाहना एह एकेंद्रीय आश्रित जाणिवो । उत्पत्तिसमये वेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चौरिंद्रियना तेजस शरीरनी अवगाहना उत्कटलांबपणे तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दंडकना तेजसशरीरनी अवगाहना टीका यीजाणवी जिहां लगे ग्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते संमोहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतोहोय तिवारे देवतानी केवडीमोटी तेजस शरीरोगाहना कहिवो । हे गौतम शरीरप्रमाणे जाणवी । विष्कंभपणे पिडुलपणे बाहल्यपणे जाडपणे औदारिकशरीर प्रमाणे तेजस शरीरनी अवगाहना । आयामे

लोकान्ता लोकांतंयाव देकेन्द्रियस्य ततः स्वोत्पत्ति मङ्गलकृत्येतिभावः एवं सर्वेषामेवैकेन्द्रियाणां द्वौन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका लोकांतंयावत्याय
 स्तिर्यग्लोके द्वौन्द्रियादितिरयाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्रं कथं नारका त्पातालकलस्य सहस्रमानं कुक्ष्यभित्त्वा तत्र मत्स्यतयो त्यद्यमानस्य
 उत्कर्षेणतु अधः सप्तमीयावत् सप्तमपृष्ठीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्यद्यमान अतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमणयावत् ऊर्ध्वं मण्डकवनपुष्करिणीयावत् यतस्तयो
 नारक उत्पद्यते नपरतः मनुष्यस्य लोकान्तंयावत् भवनपतिश्चन्तरज्योतिष्कसौधमेशानदेवानां जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो
 त्पादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृष्ठीयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्तं ऊर्ध्वमौषध्याभारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादरेष्वेव पृथिव्यादिषू त्यद्यन्ते अतो
 नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथं पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थं मवतारे मृतस्य तत्रैव मत्स्यतयो त्यद्य
 मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनोम्वा मनुष्योपभुक्तस्त्रिय म्परिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भे समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधोयाव अहापातालकलसानां द्वितीयं स्त्रिभागं स्तत्र
 हि जलसङ्गावाभत्स्येषूत्यद्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रंयावत् ऊर्ध्वमच्युतंयाव तत्रहि सङ्गतिकदेवनिश्रयागतस्य मृत्वेहोत्पद्यमानत्वादिति आनता
 दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथं मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते मनुष्योपभुक्तस्त्रिय मप्यभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तेरिति उत्कर्षत
 स्वधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यग्ननुष्वेष्वे उर्ध्वं मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते इति भावनातथैवकार्या ग्निवेयकानुत्तरोपपातिदेवानां जघन्य

सरीरप्यमाणमेह्री विरक्जवाहलेणं श्रायामेणं जहन्तेणं जायविज्जाहरसेढीन उक्कोसेणं श्रहोलोइयग्गामा

सावपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेष्ठी समे । गैवेयक देवताना तैजसनौ अवगाहना एतलेमरतीवेला तिहांलगे तैजस कामर्षशरीरना प्रदेश विस्तारे उत्कष्टी

तो विद्याधरश्रेणीयावत् उत्कर्षतो ऽधोयाव दधोलोकग्रामान्' तिर्यङ्मनुष्यक्षेत्रं उर्ध्वं तद्विमानान्येवेति एवं कार्मणस्या अवगाहना दृश्या समानत्वा देवतयो
रिति उक्तार्थमेव सूत्रांशमाह । गेवेज्जगत्स्रणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा अवगाहना धर्मोक्तो ऽधुना त्ववधिधर्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा
तत्र भेदो वधेर्वक्तव्यो यथाद्विविधो वधि भवप्रत्ययः चायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणां चायोपशमिको मनुष्यतिरस्वामिति तथा विषयो गोचरी
ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्धा द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षतस्तु सर्वं मेकाणै

उ उहं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपिजा
णियह्वं । जेदेविसयसंठाणे ण्णितरेवाहिरेयदेसोही । उहिस्सयुद्धिहाणी पण्णिवाईचेवणुपण्णिवाई ॥ १ ॥ कति

हेठे जिहांलगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना तिहांलगे । ऊंचो जिहांलगे पोतानुंविमान । तिरहो मनुष्य क्षेत्र लगे ग्रैवेयकदेवनां तैजस शरीरनी
अवगाहना । एमजग्रैवेयकनीपरे अनुत्तर विमानवासो देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परे कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी
संठाण पण्णि तिमज जाणिवो । हिंवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना वेभेद एक भवप्रत्यय १ वीजो चायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय
अवधिज्ञान देवता मारकीने होय । चायोपसमिक मनुष्य तिर्यचने होय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ क्षेत्रतः २ कालतः ३
भावतः ४ तेमांहि द्रव्यको जघन्यपणे तैजस अने भाषाने अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणे । उत्कृष्ट सर्व एकादिअनन्ताणुकांत रूपीद्रव्यने जाणे । तथा क्षेत्रथी जघ
न्य अंगुलनी असंख्येयभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता अलोकने विषे लोकमात्र खंड जाणे । कालतः जघन्य आवलिकानो असंख्यातमोभाग अतीत अनाग

कायनन्ताणुकान्तं रूपिद्रव्यजातं जानाति चेन्न जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति कालं
जघन्यत आवलिकाया असंख्येयभागं मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः संख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्यं चतुरोवर्णादीन्
उत्कर्षतः प्रतिद्रव्यं मसंख्येयान् सर्वद्रव्यापेक्षया त्वनन्तानिति तथा संस्थानं भवधेर्वाच्यं यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पत्न्याकारो भवनपतीना म्पटहाका
रो व्यन्तराणां भक्त्यर्थाकृतिर्ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कन्यापपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचंगेर्याकारो ग्रैवेयकानां कन्याचोलकसंस्थानो ऽनुत्तरमुराणां
लोकनाल्याकृतिरित्यर्थः तिर्यग्मनुष्याणान्तु नानासंस्थानइति तथा अभ्यन्तरत्ति के अवधिप्रकाशितक्षेत्रस्या भ्यन्तरे वर्तन्ते इतिवाच्यस्तत्र नेरइयदेवतित्यंकरा
यः ओहिस्सवाहिराहुंतीत्यादि तथा बाहिरेयत्ति के वधिक्षेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा बाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

॥ टीका ॥

तज्जाणें । उत्कृष्ट असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाणें । भावथकी जघन्यतः द्रव्यं द्रव्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणें । उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति
संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेक्षायें अनन्ता वर्णादिकना भेदजाणें । चौजेवोले अवधिनी संठाण कहेंके । नारकीनी अवधि आपाने आकारें । एतले नावने आ
कारे । भवन पतिनी पत्न्यने आकारें । व्यंतरनी पडहाने आकारें । ज्योतिषीनी भालरने आकारें । वारेदेवलोकना देवतानी मादलने आकारें । ग्रैवेयक
देवतानी फूलचंगेरीने आकारें । अनुत्तर देवतानी लोकनालीने आकारें । एतले कन्यानी चोलीने आकारें । तिर्यंच मनुष्यनी अवधि नाना संस्थान ।
हिंवे कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने अभ्यन्तर वर्तेके । तिहां नेरइयदेवतित्यं कराय ओहिस्सवाहिराहुंति । इत्यादि । तथा बाहिरत्ति कोण अवधि प्रका
शित क्षेत्रने बाहिर होय । शेष आकता जीव बाह्य अने अभ्यन्तरपणि होय । देशोहित्ति अवधि प्रकाशित्वा योग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोइक

॥ भाषा ॥

तथा देशोद्दिष्टि अवधिः प्रकाशवस्तुनो देशप्रकाशौ अवधिर्देशावधिः स केषा भवतीति वाच्यम् तद्विपरीतसु सर्वावधि स्तत्र मनुष्याणां उभय मग्येषां देशावधिरेव यतः सर्वावधिः केवलज्ञानलाभप्रत्यासत्तावेवो त्यक्त इति तथा वधे हृद्विर्हानिश्च वाच्या योयेषाभवति तत्र तिर्यग्मनुष्याणां वर्द्धमानोहीय मानश्च भवति शेषाणामवस्थित एव तत्र वर्द्धमानो गुलासंख्येयभागादि दृष्ट्वा बहुबहुतर म्पश्यति विपरीतसु हीयमान इति तथा प्रतिपातीचा प्रतिपाती चावधिर्वाच्यः तत्रोत्कर्षतो लोकमात्रः प्रतिपात्यतः परमप्रतिपाती तत्र भवप्रत्ययः स्तं भव्यावन्न प्रतिपतति चायोपशमिकस्तूभयथेति एतदेवदर्शयति कइ विहेत्यादि अत्रावसरे प्रज्ञापनाया स्त्रयस्त्रिंशत्तम म्पदमग्यूनमध्येय मिति अनन्तर मुपयोगविशेषः चायोपशमिको जीवपर्यायः उक्तो धुना सएवौदयिकोवे

विहेणंतेनुही पन्नत्ता । गोयमा दुविहा पन्नत्ता । नवपञ्चइयखनुवसमिएय । एवं सल्लंनहिपदं ज्ञाणियल्लं ।

ने हीय । एहथी विपरीतते सर्वावधि । तिहां मनुष्यने देशावधि सर्वावधि एह विहुंहीय । बीजा सर्वने देशावधि हीय । केवलज्ञान टंकडोहीय तिवारे सर्वा वधि हीय । ओहिस्स बुद्धिहाणित्ति । अवधिनी वृद्धि अने हानि कहिवो । तिर्यंचने मनुष्यने हीयमान हीय वर्द्धमान पिण हीय । देवता नारकीने अव स्थित हीय घटे न बधे । वर्द्धमान ते अंगुलनो असंख्यातमोभाग देखीने घणं घणं देखे । एहथकी विपरीत तेहीयमान । प्रतिपाती उक्कटो लोकमात्र देखे । अलोकमांहि देखे तेअप्रतिपाती परमावधि । गौतम पूकेके हेभदंत केतले प्रकारे अवधिज्ञान कल्लो । गौतम बेप्रकारे कल्लो । एकभवप्रत्यय तेदेवता नार कीने पोताना भवने विषे उपजे जिहांथीमरसे तिहांलगे रइ । बीजो चायोपशमिक ते अनंतानुबंधी कपायना उदये उपजे । गर्भजतिर्यंच मनुष्य ने हीय । एम सर्वअवधिनीपद पन्नवणासूचयकी कहिवो । हिवे उपयोगविशेषचायोपशमिक जीवपर्यायकल्लो । हिवे तेहीजओदयिकवेदनालक्षणकहेके । शीता

दनालक्षणोभिधीयते ॥ सौयाइत्यादि द्वारगाथा तत्रसौयायति चशब्दोक्तसमुच्चये तेन विविधा वेदनां शीता उष्णा शीतोष्णाचेति तत्र शीतामुष्णांचवेदयन्ति नारकाः शेषास्त्रिविधामपि दव्वत्ति उपलक्षणत्वा चतुर्विधा वेदना द्रव्यादिभेदेन तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात् द्रव्यवेदना नारकाद्युपपातश्चेन्नसम्बन्धात् क्षेत्रवेदना नारकाद्यायुः कालसम्बन्धात् कालवेदना वेदनोयकर्मोदया ज्ञाववेदना तत्र नारकादयो वैमानिकान्ता चतुर्विधामपि वेदनां वेदयन्तीति तथा सारौरत्ति त्रिधा वेदना शारीरौ मानसौ शारीरमानसौच तत्र संक्षिपचेन्द्रियाः सर्वे त्रिविधामपि इतरेतु शारीरीमेवेति तथा सायत्ति त्रिधावेदना साताअसाता सातासाताचेति तत्र सर्वेजीवाः त्रिविधामपि वेदयन्तीति तद्वेयणाभवेदुक्त्वत्ति त्रिविधावेदना सुखा दुःखा सुखदुःखाचेति तत्र सर्वेपि त्रिविधामपि वेदयन्ति

सौयायदव्वसारीर सायातहवेयणाजवेदुस्कं । अप्पुवगमुवक्कमिया णीयाएचेवअणियाए ॥ १ ॥ नेरइया

दिकवेदना तीन प्रकारे शीता उष्णा शीतोष्णा तेमांहिनारकी शीतवेदना अने उष्णवेदना वेदे । दव्वत्ति द्रव्यादिकभेदे चारप्रकारे । तेमांहि पुद्गल द्रव्यसंबंधकी द्रव्यवेदना १ नारकादिक उपपातक्षेत्र संबंधकी क्षेत्रवेदना २ नारकादिआयुःकाल संबंधकी कालवेदना ३ वेदनोयनामकर्मना उदयथकी भाववेदना ४ तिहां नारकादि वैमानिकांतलगे चिंहं प्रकारनी वेदनावेदे । तथासारौरत्ति । तीनप्रकारेवेदना शारीरौ मानसौ शारीरमानसौ । इहांसंक्षीपंचेन्द्रिय त्रिणवेदनावेदे । वीजासगलाशारीरौ वेदनावेदे । तथासायत्ति । तीनप्रकारनीवेदना साता असाता सातासाता सगलाहीजीव त्रीहं प्रकारे वेदनावेदे । वेयणाभवेदुःखत्ति । त्रिप्रकारनीवेदना । सुखा दुःखा सुखदुःखा । सगलाही जीव त्रिणप्रकारे वेदनावेदे । साता असातामांहि अने सुखदुःखमांहिसुविशेष ।

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः सायं विशेषः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरेण उदीर्यमाणवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे
 येतथा अभुवगमुवक्कमियत्ति, द्विधावेदना अभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनब्रह्मचर्यादि
 कां द्वितीयांतु स्वयमुदोर्णस्यो दौरणाकरणेन चादय मुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्वीपक्रमिकी मेववेद
 यंत्येति तथाणीयाएचेव अणियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदयाआभोगत अनिदयात्वनाभोगत स्तत्र संज्ञिन उभयतो ऽसंज्ञिनस्त्व निदयेति एतत्तद्वारवि
 वरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चविंशत्तम म्वेदनाख्य म्पद मध्येयमिति अनन्तरं वेदनाप्ररूपिता साच लेख्यावत् एव भवतीति

पञ्चते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिणं वेयणं । सीतोसिणंवेयणं । गीयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंजाणियत्तुं ।

साता साततेअनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो । सुखदुःखते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो । तथा अभुवगमुवक्कमियत्ति । विहुं
 प्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका । पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले । जिमयतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे । बीजी सेउदी
 रणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे । तिहां तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य विहुं वेदना आगमीनेले जिमवेदनावेदे । तथा णीयाएत्ति । विहुं प्रकारे
 वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना । बीजी अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना । तिहांसंज्ञी पंचेन्द्रियणीयावेदनावेदे । असंज्ञीअणीयावेदनावे
 दे । हेपूज्यनारकी किम शीतवेदनावेदे । किंवाउष्णवेदनावेदे किंवाशीतोष्ण वेदनावेदे । गीतम नारकीनी वेदना एहपञ्चवणाना पैत्रीसमापदयकी भणिये

लेख्याप्ररूपणायाह कश्चिन्मते इत्यादि इहस्थाने प्रज्ञापनायाः सप्तदशं षडुद्देशकं लेख्याभिधानं पद मध्येत्यर्थं तस्मात्स्मिन् रतिबहुत्वा दर्थतोपि न लिखितमिति ततएवा वधारणीय मिति अनन्तरं लेख्या उक्ताः सालेख्याएवचाहारयंती त्याहारप्ररूपणाय अणंतरायेत्यादि द्वारश्लोकमाह तत्र अणंतराय आहारे त्ति अनन्तराद्याव्यवधानाद्याहारविषये अनन्तराहाराजीवा वाच्याइत्यर्थः तथा हारस्याभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच वाच्या तथा पुद्गला न जा नंत्येव एवकारा न पश्यंतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्त्व वाच्यमिति तत्राद्यद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनन्तराहारएत्ति उपपातचेनप्रा प्तिसमय एवा हारयंतीत्यर्थः ततोनिवृत्तणयाएइति ततः शरीरनिवृत्तिः ततोपरियाइयणयत्ति ततःपर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समग्ता त्यानमित्यर्थः ततोपरिणा

कतिगंजंतेलेसानु प० गोयमाठलेसानु प० तं० । क्रिगहा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदंजा णियत्तुं । अणंतरायआहारे आहारान्नोगणाइया पोम्मलानेवजाणंति अण्जवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ याणं जंते अणंतराहारा तनुनिवृत्तणया तनुपरियाइयणया तनुपरिणामणया तनुपरियारणया तनुपच्छा

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

हेभदंत केतला प्रकारनी लेख्याकही । गौतम ६ प्रकारनी कही । तेकहेके । कणलेख्या १ नीललेख्या २ कापांतलेख्या ३ तेजलेख्या ४ पद्मलेख्या ५ श कलेख्या ६ एम लेख्या पद सतरमो पद्मवणाथी भणिवो । हिवे आहारनी अधिकार पूछेके । जीव आंतरा रहित आहार करेके । आंतरे आंतरे तथा आहारनी आभोगपणी जाणीने ले तेआभोग । बीजो अनाभोग । आहारना पुद्गलने जाणके नजाणे । अध्यवसाय मनना परिणाम । तथा सम्यक्त्व । ए ह ५ पदकहिवा । नारकी जीव अनंतर आहार करेके । उपजिवाने छेजे जई उपनी तणे समये करे । तिवारे पछे शरीरनीपजावे । तिवारे पछे आ

मयति ततः शब्दादिविषयोपभोगइत्यर्थः ततोपच्छाविउच्छ्वयति ततः पश्चादिक्रिया नानारूपाइत्यर्थः हन्तागौतम एवमेतदितिभावः एवं सर्वेषां मयिन्द्रियाणां वक्तव्यं नवरं देवानां पूर्वम्विकुर्वणा पश्चात्परिचारणा शेषाणाम् पूर्वमपरिचारणा पश्चाद्विकुर्वणा एकेन्द्रियादीनामप्येव मयि निर्वचनेतु यत्र वैक्रियसम्भवो नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपयंभाणियव्वन्ति यथा द्यहारस्यप्रश्न उक्तं स्तथा तदुत्तरंशेषद्वाराणिच भण्डिः प्रज्ञापनाया चतुस्त्रिंशत्तममपरिचारणापदाख्य म्पदमिहभणितव्यमिति इदञ्चात्राहारविचारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगणाइयति एतस्य विवरणं नारकाणां किमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभयथापीति निर्वचनं मेवं सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणां मनाभोगनिवर्त्तित एवेति तथापीगलानेवजायन्ति अस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषां नपश्यन्ति चक्षुषापि लोमाहारत्वात् तेषां मेव मसुरादयस्त्वौन्द्रियांताः कथमेकेन्द्रिया अनाभोगाहारत्वा द्विबौन्द्रियाश्च मत्यज्ञानित्वा नजानन्ति चतुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति चतुरिन्द्रियासु चक्षुः सद्भावेपि मत्यज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहारं नजानन्ति चक्षुषानुपश्यन्ति तथा तत्त्वलोमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यन्तीति व्यपदिश्यते च क्षुषोविषयत्वात्तस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च केचिज्जानन्ति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहारं प्रक्षेपाहारश्च जानन्त्यवधिना नपश्यन्ति चक्षुषा तथा अन्ये न जानन्ति तत्र नजानन्ति प्रक्षेपाहारं मत्यज्ञानित्वा नपश्यन्ति चक्षुषा तथा अन्ये नजानन्ति नपश्यन्ति लोमाहारं निरतिशयत्वादिति व्यंतरज्योतिष्का नारकावत् वैमानिकासु ये सम्यग्दृष्टयस्ते जानन्ति विशिष्टावधित्वात् पश्यन्तीचक्षुषोपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयसु नजानन्ति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्षज्ञानयो स्तेषां मस्यदृष्ट्यादिति तथाअश्रवसाण्येति दारं नारकादीनां मशस्ता प्रशस्तान्यसंख्येयान्यध्ववसायानीति तथा संमत्तेति दारं तत्र नारकाः किं सम्यक्ताभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिनः सम्यक्तामिथ्यात्वाभिगमिनश्चेति विविधा अप्येवं सर्वेपि नवर मेकेन्द्रिया मिथ्यात्वाभिगमिन एवेति अनन्तर माहारप्रश्नः

पणा कृता हारणायुर्वन्धवता मेव भवतोत्यायुर्वन्धप्ररूप णायाह कइविहेत्यादि तत्रायुषो वन्धनिषेक आयुर्वन्धः निषेकप्रतिसमय खड्गहीनहीनतरस्य दं
लिकस्या मुभवनार्थं रचना निधत्तमपौह निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषिक्त मनुभवनार्थं वद्धल्याप्यतरक्रमेण
व्यवस्थापितमायुर्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थं ज्ञात्यादिनामकर्मणायुर्विशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जात्या
दिनामकर्मणा मुदयो भवति नारकादिभवीपग्राहकं चायुरेव यस्मा ह्यास्या प्रज्ञस्यामुक्तं नेरइएणंभंतेनेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय
मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तंभवति नारकायुः प्रथमसमयसंवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्तहचारिणाञ्च पञ्चेद्रिय
जात्यादिनामकर्मणा मप्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिनारकगत्यादि तत्तत्क्षणं नामकर्म तेनसह निषिक्तमायुर्गतिनामनिधत्तायुः तथा
ठिइकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति र्यथास्थातव्यं तेन भावेनायुर्दलिकस्य सैवनामपरिणामोधर्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजात्यादिकर्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुव्णया हंतागोयमाएवंआहारपदंजाणियहं । कइविहेणं जंते आनुगवंधेपन्नत्ते गोयमाठविहे पन्नत्ते

हारलोधोहोय तेषरीरने विषे परिणमावे । तिवारपक्के विषय सेविवानी इच्छा । तिवारपक्के विकुर्वणा करे । एहवो प्रअ पृच्छापक्के भगवंत कहहे ।
एमहीज हेगौतम जिमतूकहेहे तिमजहे । इहां पन्नवणानो चोत्रीसमो आहार पद भणिवो । केतले प्रकारे हेपूज्य अऊखानोबंध कइयो । हेगौतम ६ प्र
कारे । तेकहेहे । जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थे थाप्यो थोडो तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १ । एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे
थाप्यो बांध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २ । एम आजखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जात्यादि कर्मप्रकृति भेदेकरी जे स्थि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

चतुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेदः सत् स्थितिनाम तेन सह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुरिति पणसनामनिधत्तायुएत्ति प्रदेशानां अमितपरिणामानां मायुः कर्म दलिकानां नामः परिणामोदयः तथात्मप्रदेशेषु सम्बन्धनं स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्म्मणा स्वा यत्प्रदेशरूपं नामकर्म्म तत्प्रदेशनाम तेन सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्तायुएत्ति अनुभाग आयुः कर्म्मद्रव्याणां तीव्रादिभेदोरसः स एव तस्य वा नामः परिणामो नुभागनाम अथवा गत्यादीनां नामकर्म्मणा मनुभागबन्धरूपो भेदो ऽनुभागनाम तेन सह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा ओगाहणानामनिधत्तायुएत्ति अवगाहते जीवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविधं तत्कारणं कर्म्मप्यवगाहना तद्रूपनामकर्म्मा वगाहनानाम तेन सह निधत्तमायु रवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि स्पष्टं अनन्तरमायुर्वन्मुक्तो ऽधुनावद्यायुषां नारकादिगतिपूपपातो भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणायाम्

तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पणसनामनिहत्ताउए अणुजागनाम

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आऊखानादलनो परिमाण तेहने साथे बांध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयु कर्मद्रव्यनो तीव्रादिक भेदे जेरस तेअनुभाग तेहने साथे बांध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिहां तेअवगाहना औदारिकादि ५ भेदे तेहनो कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म्म अवगाहना ६ । नारकीनो हे पूज्य केतले प्रकारे आऊखानो बंध कहिवो । हे गौतम ६ प्रकारे नाकीनो आऊखानो बंध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागनाम निहत्तायु ५ । जिहांलगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदहोवे ६ । एम २४ दंडके ६ भेदे आऊखानो बंध कहिवो जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

निरयगतौषमित्यादि कण्ठं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसांश्चमुहूर्त्ता सत्तमहोरत्ततद्वयपन्नरसा मासोयदोयचउ-
रो कृष्णासाविरहकालो उपैति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवंप्रकारा यत्तिर्यङ्मनुष्यगत्योः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता
उक्ताः तद्भर्भ्युत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतीतु सामान्यतएव सिद्धिविज्जाउत्पद्यतेति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्तो विरहकाल उद्घर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूह

॥ टीका ॥

निहत्ताउए उगाहणानामनिहत्ताउए । नेरइयाणंजंते कइविहे आनुगबंधे पन्नत्ते गोयमा ठव्विहे पन्नत्ते ।
तंजहा । जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुजागनामअयोगाहणानाम एवंजायवेमाणियाणं निरयगईणं
जंते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्तेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं वारसमुज्जत्ते । एवंतिरियग
इ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगईणं जंते केवइयंकालं विरहिया सिज्जयणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्तेणं ए

॥ मूल ॥

द्विवे उपपात विरह च्यवन विरह आथी प्रश्न करेहे । नरक गतिमांहि हे पूज्य केतलो उपपात विरह । हे गौतम नारकीनो जवन्य उपपात विरह १ सम
य एक नारकीने उपनापक्खी बीजो १ समयने आंतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विपे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कथ्येहे यदाह । चौबीसायमुहूर्त्ता
सत्तमहोरत्ततद्वयपन्नरसा । मासोयदोयचउरो कृष्णासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोहो पिण सामान्यगति अपेक्षायै १२ मुहूर्त्त कक्षा । उत्कृष्टपण १२ मुहूर्त्त
अणुजा । एम तिर्यंचगति मनुष्यगति देवगति नोउपपात जाणिवो । द्विवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सौभवां कथ्यो । हेगौतम जघग्य १ समये
१ सिद्ध उपनापक्खे बीजो सिद्ध १ समयना अंतरायी उपजे । उत्कृष्ट ६ मासनो विरह । एम जिम उपपात विरह तिमहीज च्यवनविरह । एक चय्यां पक्खे

॥ भाषा ॥

र्त्तनैव नास्ति अपुनरावृत्तित्वा स्तेषामिति इमीसेणंरयणप्यभाएपुठवीए नेरइयाकेवइयंकालंविरहियाउववाएणं पण्यत्ता एवंउववायदंडओभाणियव्वोत्ति सचा यं गोयमा जहखेणंएकंसमयं उक्कोसेणंचउवीसंमुहुत्ताइं अनेनाभिलापेन शेषावाच्याः तथाहि सकरप्यभाए उक्कोसेणंसत्तराइंदियाणि वालुयप्यभाए अद्धमासं पंकप्यभाएमासं धूमप्यभाए दोमासा तमप्यभाए चउरोमासा अहेसत्तमाएकमासत्ति असुरकुमाराचउवीसइमुहुत्ता एवंजावथणियकुमारा पुढविकाइया अवि रहियाउववाएणं एवंसेसावि बेइंदिया अंतोमुहुत्तं एवंतेइंदियचउरिंदियसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख जोणियाविगम्भदकंतियतिरियमणयाय बारसमुहुत्ता समुच्छिमणुस्सा चउओसाइंमुहुत्ताविरहिया उववाएणं वंतरजोइसियाचउवीसं मुहुत्ताइं एवं सोहम्मोसाणेवि सणंकुमारे णवदिणाइं वीसायमुहुत्ता माहिं देबारसदिवसाइंदसमुहुत्ता बंभलोए अइतेवीसंराइंदियाइं लंतएपणयालीसं महासुक्केअमीइं सहस्सारेदिणसयं आणएसंखेज्जामासा एवंपाणएवि आरणे संखेज्जावासा एवंअशुएवि गेवेज्जपत्यडेसुतिसुकमेणसंखेज्जाइं वाससयाइं वाससहस्साइं वाससयसहस्साइं विजयाइसु असंखेज्जंकालं सव्वट्ठसिहे पलिओवम स्सासंखेज्जइभागंति एवंउव्वट्ठणाइंति उपपातउदत्तनाचायुर्बंधेएव भवती त्यायुर्बन्धविशेषप्ररूपणायाह नेरइएत्यादि कंठ्यं नवरं आकर्षोनाम कर्मपुद्गलोपा

॥ टीका ॥

क्कं समयं उक्कोसेणं ठम्मासे एवंसिद्धिवज्जा उवहणा । इमीसेणं जंतरेयणप्यप्ताए पुठवीए नेरइया केवइयं

॥ मूल ॥

वीओचवे । पिण सिद्धने उदत्तनां चवन नथी सिद्धयकी निकलयो नथी । हिवे रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी आश्री पूक्के । हेपूज्य एणीये रत्नप्रभाने वि षे केतलो नारकीनी उपपात विरह । जिम ओघबचने पूर्वे कह्यो तिमज कहिवो । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त एम २४ दंडकनो टीका तथा यं बांतर यकी आशिवो । रत्नप्रभाने विषे जिम उपपात विरह तिम इहां पणि कहिवो । चवन विरह पिण कहिवो । हेपूज्य नारकी जातिनाम निहत्तायु,

॥ भाषा ॥

दानं यथा गौःपुनोयन्मिवती भयेन पुनःपुनः आहं हति एवञ्जीवोपि तीव्रेणायुर्वन्धाध्यवसानेन सकृदेव जातिनामनिधत्तायुः प्रकरोति मन्देनहाभ्यामाकं
 र्पाभ्यामन्दतरेणचिभिर्भेदतमेन चतुर्भिः पञ्चभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्वानपुनर्नवभिरेवं शेषाण्यपि आउगणिति गतिनामनिधत्तायुरादौनिवाच्यानिय
 वद्वैमानिकाइति अयच्चैकाद्याकर्ष नियमोजाल्यादिना कर्माणां आयुर्वन्धकालएवबंधमानानां नशेषकालमायुर्वन्धपरिसमाप्तिरुत्तरकालमपि बन्धोस्त्येवैषां
 ध्रुवश्चिनीनाञ्च ज्ञानावरणादिप्रकृतीनां स्यतिसमयमेवबन्धनिवृत्तिर्भवत्येतास्तुपरावृत्त्यावध्यन्तइति अनन्तरञ्जीवानामायुर्वन्धप्रकार उक्तो ऽधुनातेषामेव
 संहननसंस्थानवेदप्रकारानाह कइविहेणमित्यादि दण्डकत्रयं कंठ्यम् नवरं संहनन मस्थिवन्धविशेषः मर्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयो रस्थि नाराचं ऋषभस्तु

॥ टीका ॥

कालं विरहिया उववाणं । एवं उववायदंरुनुजाणियव्वो । नुवट्टणादंरुनुय । नेरइयाणं जंते जातिनामनि
 हत्ताउगं कतिष्ठागरिसेहिं पगरंति सिय १ सिय २ ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । सियष्ठेहिं नोचेवणंनव

॥ मूल ॥

करेहे । आकर्षे करी कर्मपुद्गलनो अंगीकार करिवो जिम गाय पाणी पीतौथकी भयेकरी वलीवली हिंसारी करी पीवे तिम जीवपणि तीव्र आयुबंधाध्य
 वसायेकरी १ वेला जातिनाम निहत्तायु करे । स्यात्कदाचित् मन्दाध्यवसाये जातिनाम निहत्तायु करे तो बेआकर्षेकरे । मंदतरे करेतो त्रिहये करे । एम
 विहये । पांचे । छये । साते । आठे करे । णवत्ति शेष थाकता २३ दंडकनाजीवना नारकीनी परे आकर्षे कइवा जिहांलगे वैमानिक देवता आवे । हिवे
 पूर्वे आयुबंध कइतो तेसंघयणना धणीने होय तेमाटे संघयण कहेहे । केतले प्रकारे हेभदंत संघयण कइतो । हेगौतम ६ भेदे संघयणअस्थिवंधविशेष कइतो ।
 तेकहेहे । मर्कटनेठामे विहंपासे हाडते नाराच कहिये । ऋषभते पाटो वज्जते कीलिका एविणवाना जिहां होय तेवज्ज ऋषभनाराचसंघयण कहिये १ ।

॥ भाषा ॥

पट्टं वज्रं कीलिका वज्रश्च ऋषभश्च नाराचश्च यत्रास्ति तद्वज्रर्षभनाराचं संहननं मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्तः प्रथमो स्थिवन्धः मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्वितीयः मर्कटयुक्तस्तृतीयः मर्कटकैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्धश्चतुर्थः अङ्गुलिद्वयसंयुक्तस्य मध्य कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासंहननं स्पष्टं यत्रास्थौनि चर्मणा निकाचितानि केवलं तत्सेवार्त्तं स्नेहपानादीनां नित्यपरिश्रिलनामेवा तथा ऋतं प्राप्तं सेवार्त्तमितिषष्टं कृण्वं संधयणाणं असंधयणेति उक्तं पाणां घृणां संहननानामन्यतमस्याप्यभावेन संहननोऽस्थिसंचयरहिता अतएवाह नेवहो नैवास्थौनि तच्छरीरकेनेवच्छिरस्ति नैवशिराधमन्यः नैवगृहाउत्ति नैवस्नायूनीति कृत्वा संहननाभावः तत्सहितानां हि प्रचुरमपि दुःखव्याधाविधायिस्थात् नारकास्त्वत्यंत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीरं

॥ टीका ॥

ठीहिं एवं सेसाणविष्णानुगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं । कइविहेणं जंते संधयणे पन्तत्ते । गोयमा ठ विहे पन्तत्ते । तंजहा वइरोसज्जनारायसंधयणे रिसज्जनारायसंधयणे नारायसंधयणे अण्णनारायसंधयणे कीलियासंधयणे ठेवठसंधयणे । नेरइयाणं जंते किंसंधयणी । गोयमा ठरहंसंधयणाणंअसंधयणी । नेव

॥ मूल ॥

वीजो ऋषभनाराच ते मर्कट कीलिका सहित २ । वीजो नाराच संधयण मर्कट सहित ३ । चउथो अर्द्धनाराच एकेपासे मर्कटबंध वीजेपासेकीली ४ । पांचमो कीलिका अंगुलबेने संयुक्तने मांहि कीलिका १ जिहांदीधी ते कीलिका संधयण ५ । संवर्त्त तेजिहां हाडिकाचर्मवींटी छे छत तैलना सेचेंकरी पाम्यो ते सेवार्त्त संधयण ६ । हिवे नारको आथी संधयण पूछेके । हे भगवंत नारकोमांहि के संधयण पामिये । हे गौतम पूर्वोक्तकृण्वंमांहि १ छनपामिये हाडनही नाडीनही मोटीनमानथी जेनारकोना पुत्रलछे तेअनिष्ट अवज्जभ अकांत अप्रिय हेषकरवायोग्य अनादिय अशुभ प्रकृतिथीअसुंदर अमनोञ्ज

॥ भाषा ॥

नोपपद्यते स्तम्भवत्तदुपपत्तेः अतएवाहं जेपोगलेत्यादि येपुङ्गला अनिष्टा अवलम्भाः सदैवेषां सामान्येन तथा अकान्ता अकमनौयाः सदैव तद्भावेन तथा अ
 प्रिया द्वेष्याः सर्वेषामेव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया श्वित्तयापि तेएवभूताः पुङ्गला स्तेषां नारकाणां
 असंघयणत्ताएत्ति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कद्रविहेसंठाणेत्यादि तत्र मानोभानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गोपाङ्गानिच
 यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत्समचतुरस्रं संस्थानं तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणा ऽविसंवादिनो ऽधस्तु तदगुरुपयत्तद्भवति तद्यग्रोधं संस्थानं तथा
 नाभितोऽधः सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदगुरुपं नभवति तत्सादिसंस्थानं तथाग्रीवाहस्तपादाश्चसमचतुरस्रलक्षणयुक्ता
 यत्र संक्षिप्तं त्विक्ततश्च मध्ये कोष्ठं तत्कुञ्जं संस्थानं तथा यत्तदगुरुपं नभवति तत्सादिसंस्थानं तथाग्रीवाहस्तपादाश्चसमचतुरस्रलक्षणयुक्ता
 यत्र संक्षिप्तं त्विक्ततश्च मध्ये कोष्ठं तत्कुञ्जं संस्थानं तथा यत्तदगुरुपं नभवति तत्सादिसंस्थानं तथाग्रीवाहस्तपादाश्चसमचतुरस्रलक्षणयुक्ता

॥ टीका ॥

णेवच्छिरा णेवरहाऊ जेपोगलाअणिठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुजा अमणुस्सा अमणामा
 तेतेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमाराणं किंसंघयणा पत्तत्ता । गोयमा ठराहंसंघयणाणं असं
 घयणी णेवठ्ठी णेवच्छिरा णेवरहाऊ जेपोगला इठा कंता प्पिया मणुस्सा मणाजिरामा तेतेसिं असंघयण

॥ मूल ॥

अमनोरम । तेह नारकीने असंघयणपणे परिणमेके । अस्थिसंचयरहित शरीर परिणामं परिणमे । हेपूज्य असुर कुमार कोण संघयणे कद्धा ।
 हे गौतम ६ संघयण मांहि असंघयणी हाडनथी शिरानथी छोटीनशनथी बडोनशनथी असुर कुमारना जेह पुङ्गल पदार्थ के तेह इष्ट वल्लभ के कांतकम
 नौय प्रियमनोश्च मनोभिराम ते तेहने असंघयणपणे परिणमे । एम नागकुमार धकी मांढी जिहांलगे स्तनितकुमार दशमीनिकाय तिहांलगे असंघय

॥ भाषा ॥

ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्तत्ता । गोयमा ठेवठसंघयणी प० एवं
जावसमुच्छिम पंचिंदियतिरिस्कजोणियत्ति । गप्पवक्कंतिया ठव्हिहसंघयणी समुच्छिम मणुस्साणं ठेवठ सं
घयणी गप्पवक्कंतियमणुस्साणं ठव्हिहे संघयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणि
याय । कइविहेणं जंते संठाणे पन्तत्ते । गोयमा ठव्हिहे संठाणे प० तं० । समचउरंसे १ णिग्गोहे २ सा
इए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ ऊंढे ६ । णेरइयाणं जंते किंसंठाणी प० । गोयमा ऊंढसंठाणी प० । असुर

णी कहिवा । हिंवे पृथिवी आश्रीपूछेछे । हेपूज्य पृथिवीनो कोण संघयण हेगौतम छेवठो संघयण । एम ५ थावर ३ विकलेट्टी समूर्च्छिम पंचेद्रिय ति
र्यंच योनिया जोव सर्व छेवठे संघयणे कहिवा । गर्भ व्युत्क्रांत तिर्यचना ६ संघयण । समूर्च्छिम मनुष्यनो छेवठो संघयण । गर्भजना छहुं संघयण जाणिवा
जिम असुर कुमार असंघयणी कछा तिमज वाणअंतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिंवे संस्थान आश्री पूछेछे । हेभदंत संस्थान केतलाछे ।
हे गौतम संस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकार कछो । तेकहेछे । मान उन्मान प्रमाणोपेत ओछा अधिकानहो अंगोपांग जेहना तेसमचतुरस्र संस्थान १
तथा नाभि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र होय नाभिहेठे आकारमांठी होय ते न्यग्रोध परिमंडल २ । तथा नाभिथकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय
नाभि ऊपर मांठीहोय ते सादिसंस्थान ३ । तथा ग्रीवा हाथ पांव समचतुरस्रहोय मध्यकोठी मंक्षित होय नानूहोय ते कुज संस्थान ४ । तथा लक्ष्
णोपेत कोठाहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेकोटाहोय तेवामनसंस्थान ५ । तथा हस्त पादादिक अवयव अप्रमाणोपेत होय तेहुंडकसंस्थान ६ । नारकीन्धो

बहुप्राया प्रमाणविसम्वादिनश्च तदुण्डमित्युच्यते कइविहेवेदेत्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुंस्कामिता पुरुषवेदः स्त्रीकांमिता नपुंसकवेदः स्त्रीपुंस्कामितेति एतेच ॥ टीका ।

कुमाराकिंसंठाणी प० गोयमा समचउरंससंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा । पुढवी मसूरियसं
ठाणा प० । आनुथिवुयसंठाणा पन्नत्ता । तेनुसूइकलावसंठाणा पन्नत्ता । वाऊपफागसंठाणे पन्नत्ते । वण
स्सई नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता । वेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पंचेंदियतिरिस्काऊंसंठाणा प०
गप्पवक्कंतियाठविहसंठाणा । समुच्छिम मणुस्सऊंसंठाणसंठिया पन्नत्ता । गप्पवक्कंतियाणं मणुस्साणं ठ
विहासंठाणा पन्नत्ता । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । कइविहेणं जंतवेए प० । गो

॥ मूल ॥

हे पूज्य कोण संठाणकह्यो । हेगौतम हुंड संस्थान कह्यो । असुर कुमार देवता समचउरंस संस्थान संस्थित कह्यो । जिहां लगे दग्गमो निकायना स्तनि
त कुमार आवे । पृथिवी मसूर धान्य ने संस्थाने संस्थित कह्यो । पांणीनो संस्थान पाणीनोपपांटो कह्यो । अग्निनो संस्थान सूचीकलाप सूइना समूहने
संस्थानेकह्यो । वायुनो पताका संस्थान कह्यो । वनस्पती अनेक प्रकारे संस्थितकह्यो । वेइन्दो तेइन्दो चोइन्दो समूच्छिम पंचेंद्री तिर्यंचनो हुंड संस्थान क
ह्यो । गर्भज तिर्यंच ६ संस्थान संस्थित कह्यो । समूच्छिम मनुष्यनो हुंड संस्थान । गर्भजमनुष्य ६ संस्थान संस्थित कह्यो । जिम असुर कुमार समच
उरंस संस्थान संस्थित कह्यो तिमज वाण्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा । हे भदंत वेद केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ३ प्रकारे कह्यो । ते कहेछे ।

॥ भाषा ॥

पूर्वोदिता अर्थाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह । तेषामित्यादि इह णङ्कारौ वाक्यालङ्कारार्था वत स्ते इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्मेति कण्यस्य समोसरणं नेयव्यंति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स

यमा तिविहेवेए प० । इत्यीवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए । नेरइयाणं जंते किंइत्यीवेया पुरिसवेया णपुंसग वेया प० । गोयमा णोइत्यीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प० । असुरकुमाराणं जंते किं इत्यीपुरिस न पुंसगवेया । गोयमा इत्यीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया । जावथणियकुमारा । पुढवीअणुतेनवाऊवणस्स ई त्रित्तिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्कसमुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा । गप्पवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदिय तिरियायतिवेया जहाअसुरा तहायाणमंतरजोइसियवेमाणिया । तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्ससमोसर

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ।

स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुंसकवेद ३ । नारकौनो हे भदंत स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किंवा नपुंसकवेद । हे गौतम स्त्रीवेद नथो पुरुषवेद नथो नपुंस कवेदहोय । असुर कुमारने हे पूज्य किंस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद होय । गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुंसकवेद नहोय । एम जिहां लगे स्तनि तकुमार आवे तिहांलगे कहिवो । पृथ्व आऊ तेज वायू वनस्पत वेदन्द्ही तेदन्द्ही चोदन्द्ही समूर्च्छिम पंचेन्द्रियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंस कवेद । गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदो । जिम असुर कुमारमांहि पुंस्त्री वेवेद कह्या तिम.वाण व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक मांहि कहिवा । तेषे का ले चउथे आरे तेणें समये जेषे समये भगवंत विहार करे के तेणें अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमें अनुयायी समासरणनी वक्तव्यता कहिवी । वाचनातरे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

मवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकोक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरेतु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेण व्यभिहितं किंयद्गमिष्याह जावगणेशादि तत्र गणधरः पञ्चमः सुधर्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशिष्यसन्ततय इत्यर्थः वाञ्छिवन्ति मिहाइति तथाहि परिनिञ्जुयागणहरा जीवन्ते नायएनजणांशो इदंभूदसुहृन्मेय रायगिहेनिव्वएवौरेत्ति अयञ्च समवसरणनायकः कुलकरवंशोत्पन्नो महापुरुषश्चेति कुलकराणां म्वरपुरुषाणाञ्च वक्तव्यतामाह जंबूद्वीवेत्यादि सुगमं नवर स्पटमेयविमलवाहण चक्षुमजसमंचउत्थमभिचंदे तत्तोयपसेणद्वर मरुदेवेचेवनाभोयत्ति ॥ १ ॥ तथा चंदजमचंदकन्ता मुरुवपडिरुवचक्षुकांताय

णं जेयत्वं । जावगणहरा । सायञ्चा निरवञ्चा वाञ्छिस्सा । जंबूद्वीवेणंदीवे नारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी ए सत्तकुलगराहोत्या तं० । मित्रदामेसुदामेय सुपासेयसयंपत्ते विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेणंदीवे नारहेवासे तीयाए उस्सप्पिणीए दसकुलगराहोत्या तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत सेणय कज्जसेणेजीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दठरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्वीवेणंदीवे नारहेवासे इमी

पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेण जेकहोक्के स्थविरावलौने अधिकारे तेसर्ब कहिवो जिहांलगे पांचमो गणधर सुधर्मास्वामी संतान सहित एतले शिष्य प्रशिष्या दिके युक्त शेष वाक्यता १० गणधर निरपत्य शिष्यादि संपत्ति रहित हुया । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गर्ह उक्खर्पिणीये सात कुलकर हुया । मित्रदाम १ । सुपार्श्व २ । सुदाम ३ । स्वयंप्रभ ४ । वली विमलघोस ५ । सुवोस ६ । महाघोस ७ । सातमो १ । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गर्ह अवसर्पिणीये १० । कुलकर हुया । स्वयंजल १ । शतायु २ । अजितसेन ३ । अनंतसेन ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दठरथ ८ । दशर

॥ २२९ ॥

सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्नीणामाहंति ॥ २ ॥ तथा नाभीयजियसत्तूय जियारीसंवरेइय मेहेधरेपइठेय महसेण्यखत्तिए ॥ ३ ॥ सुग्गीवेदठरहेविण्ह
वसुपुज्जेयखत्तिए कयवम्मासीहसेणे भाणूयविस्ससेणिअ ॥ ४ ॥ सूरसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुहविजयेय रायायआससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्तिएत्ति ॥ ५ ॥

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

से नुसप्पिणीए समाए सत्तकुलगराहोत्था तंजहा । पढमेत्थविमलवाहण चरकुमजसमंचउत्थमज्जिचंदे । त
त्तोपसेणइए मरुदेवेचेयनाज्जीय ॥ ३ ॥ एतेसिणं सत्तरहंकुलगराणं सत्तजारिआहोत्था तंजहा । चंदजस
चंदकंता सरूयपण्डिरूवचरकुंकंताय । सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्नीणणामाहं ॥ ४ ॥ जंबूद्वीवेणंदीवे जारहे
वासे इमीसेणं नुसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरोहोत्था तंजहा । णाज्जीयजियसत्तूय जियारीसंवरे
विय मेहेधरेपइठेय महसेण्यखत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवेदठरहेविण्ह वसुपुज्जेयखत्तिये । कयवम्मासीहसेणे

॥ भाषा ॥

य १ । सतरथ १० ॥ २ ॥ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्पिणीये सात कुलकर थया । ते कहहेके । पहिला विमलवाहन १ । चक्षुआ २ । यशो
मान् ३ । चउथो अभिचंद्र ४ । प्रसेनजित् ५ । मरुदेव ६ । नाभी ७ ॥ ३ ॥ एह सात कुलकरांनी ७ स्त्री थई । तेकहेके । चंद्रयसा १ । चंद्रकांता २ । सुरूपा
प्रतिरूपा ४ । चक्षुकांता ५ ५ । सिरिकांता ६ । मरुदेवा ७ । एहकुलकरांनी स्त्रीनानाम जाण्णिवा ॥ ४ ॥ जंबूद्वीप संवंधी भरत क्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवस
र्पणीये चौवीस तोयंकरांना पिता थया तेकहेके । नाभि । १ । जितशत्रु २ । जितारि ३ । संवर ४ । मेव ५ । धर ६ । प्रतिष्ठ ७ । महसेन चत्रिय ८ ३
॥ ५ ॥ सुग्रीव ८ । दृढरथ १० । विष्णु ११ । वसुपूज्य १२ । कृतवर्मा १३ । सिंहसेन १४ । भानु १५ । विश्वसेन १६ । सूर १७ सुदर्शन १८ । कुंभ १९ । सु

तथा मरुदेवि विजयसेना सिद्ध्यामंगलासुसीमाय पुहवीलखणारामा नंदाविण्णजयासामा ॥ ६ ॥ सुजसासुव्यंअइरा मिरिआदेवीपभावइपउमा वप्पासिवा

॥ टीका ॥

॥ मल ॥

जाणूयविस्संसेणय ॥ ६ ॥ सूरसुदंसणेकुंजे सुमित्तविजएसमुद्धविजएयं । रायायआससेणेय सिद्धत्येच्चियस्सत्ति
ए ॥ ७ ॥ उदितोदियकुलवंसा । विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । एणपियरोजिणवराणं ॥ ८ ॥
जंबूद्वीवेणंदीवे नारहेवासे इमीसेनसप्पिणीए चउवीसंतित्थगराणं मायरोहोत्था तं० । मरुदेवि विजयसेना
सिद्ध्यामंगलासुसीमाय । पुहवीलखणारामा नंदाविण्णजयासामा ॥ ९ ॥ सुजसासुव्यंअइरा सिरियादेवी
पन्नावइपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलादेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ जंबूद्वीवेनारहेवासे चउवीसंतित्थग

॥ भाषा ॥

मित्र २० । विजय २१ । समुद्रविजय २२ । राजाअश्वसेन २३ । मिथार्ये चत्रिय २४ ॥ ६ ॥ एह २४ राजा केहवा हुवा उदय प्राप्त घणूं मांटावंश तेहना
विशुद्ध महा निर्दोष वंशके जेहना । राजानांगुणेकरी सहितके । तीर्थ धर्मतोयेना प्रवर्तक तीर्थकर जिनवीतरागना पिता कछा ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपने
विषे भरतनेत्रे एणी अवसर्पिणी ये २४ तीर्थकरानी मातायडे । ते कहैये । मरुदेवी १ । विजया २ सेना ३ । सिद्धार्या ४ । सुमंगला ५ । सुसीमा ६ ।
पृथिवी ७ । लक्ष्मणा ८ । रामा ९ । नंदा १० । विण्ण ११ । जया १२ । श्यामा १३ । सुयमा १४ । सुव्रता १५ । अचिरा १६ । औ १७ । देवी १८ । प्रभा
वती १९ । पद्मावती २० । वप्पा २१ । शिवा २२ । वामा २३ । त्रिशला २४ । एह जिनमाता २४ कहौ ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरतनेत्रे एणीये अवस
र्पिणीये चौबीस तीर्थकर देवहुया । ते कहैये । ऋषभ १ । अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सु

राहोत्या तंजहा । उसजअजियसंजव अजिणंदणसुमइ पउमप्यजसुपास चंदप्यज सुविहिपुष्पदंतसीयल
 सिज्जंसवासुपुज्ज विमलअणंत धम्मसंतिकुंथु अर मल्लिमुणिसुवयणमिणेमि पासवह्ममाणोय । एणसिंचउवी
 साएतित्यगराणं चउव्वीसं पुव्वजवया णामधेया होत्या तंजहा । पढमेत्यवइरणान्ने विमलेतहविमलवाहणे
 चेव । तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय ॥ ११ ॥ सुंदरवाकतहदीह । वाकजुगवाकलठ्ठवाकूय ।
 दिस्सेयडंददत्ते । सुंदरमाहिंदरेचेव ॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे । रूप्पीअसुदंसणेयवोधव्वा । तत्तोयनंदणेखलु ।
 सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे । सुदंसणेनंदणेयवोधव्वे । इमीसेनंसप्पिणीए एणतित्थि

विधि वीजोनाम पुष्पदंत ८ । शीतल १० । श्रेयांस ११ । वामपूज्य १२ । विमल । अनंत १४ । धर्म १५ । शांति १६ । कुंथु १७ । अर १८ । मल्लि १९ । सुनि
 सुव्रत २० । नमि २१ । नेमि २२ । पाखं २३ । वड्डमान २४ । एह २४ । तीर्थकरना पूर्व भवनानामधेय एतले । जेणे भेवे तीर्थकर नामकर्म उपाज्ज्यो । तेह
 भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथी । तेकहेके । प्रथम आदिनाथनो जोव महाविदेह जेवे ११ मेभवे बज्जनाभचक्रवत्तेथयो तिहां २० स्थानक आराधीने
 तीर्थ कर गोत्र उपार्जन कियो तिहांथो सर्वार्थ सिद्ध पहुंता तिहांथोचवो आदिनाथ थया एतले तीर्थकरना भवथी ३ भवमनुष्यनो तेपूर्व भवने क्रमे २४
 कहेके । पहिलो वज्जनाभ १ । विमल २ । तथा विमलवाहन ३ । ततः धर्मसिंह ४ । सुमित्र ५ । धर्ममित्र ६ । सुंदरबाहु ७ । तथादीर्घबाहु ८ । युगबाहु ९
 लब्धबाहु १० । दिव्य ११ । इन्द्रदत्त १२ । सुंदर १३ । माहिंद्र १४ । मिंहरथ १५ । मेघरथ १६ । रूपी १७ । सुदंमुण १८ । ततः नंदन १९ । सिंहगिरी २० ।

यवामा तिसंलादेवीयजिणमायति सर्वोउंगसुभाएकायाएत्ति सर्वत्तुकया सर्वेषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदायकायाययाप्रभया आतापभावलक्षणया वा युक्ता इति ॥ टीका ॥

कराणंतुपुव्वजया । एएसिंचउव्वीसाएतित्यकराणं चउव्वीसंसीयानुहोत्या तंजहा । सीयायसुदंसणासुप्प जाय
सिद्धत्यसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयंती जयंतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पजचंदप्पज । सूरप्पहअग्नि
सप्पजाचेव । विमलायपंचवस्सा । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अजयंकरानिबुडकरी । मणोरमामणोह
राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचंदप्पजातीय ॥ १६ ॥ एअनूसीअन । सव्वेसिंचेवजिणवरिंदाणं । सव्व
जगयच्छलाणं । सव्वोउयसुखयठायाए । पुव्विंनुखित्तामणु । रसेहिंसाहठरोमकूवेहिं । पच्छावहंतिसीयं । अ

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

अदीनशत्रू २१ । शंख २२ । सुदर्शन २३ । नंदन २४ । एहअनुक्रमे जाण्णिवा ॥ ८ ॥ एसी अवसरिणीये तीर्थंकरानां पूर्व भवनाम जाण्णिवा एह २४ तीर्थ
करानो २४ शिविका दीक्षानो पालखीके । तेकहेके । सुदर्शना १ । सुप्रभा २ । मिडार्या ३ । सुप्रमिडा ४ । विजया ५ । वैजयंती ६ । जयंती ८ । अपराजिता
८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चंद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयंकरा
१७ । निवृत्तिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चंद्रप्रभा २४ । एह शिविकामांविसीने दीक्षा लीधी
तेदीक्षा शिविका जाणवी । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी ऐसे जिनंदनी । शिविका केहवीके । सर्व शरदादिक ऋतु विधि सुखदायक काया
युक्त आतापना रहित के । तेह शिविका पहिले दर्श करी रोमकूप जेहना खुडा थया के एहवा मनुष्ये करी उपाडी पके तेह शिविका प्रते अमरेन्द्र चमरा

॥ २३१ ॥

शेषः तथा माहृरोमकूवेहंति साग्निका यस्यां जिनोभ्यारूढः हंटरोमकूपै रुद्रुषितरोमभि रित्यर्थः तथा चलचवलकुंडलधरति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति वाक्यं तथा स्वच्छन्देन स्वरुचा विकुर्वितानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयति येते तथा असुरेन्द्रादय इतियोगः गरुलति गरुडध्वजाः सुपर्णकुमारा इत्यर्थः तथा सव्वेविण्णदूसेण निगयाजिणवराचउत्तोसं नयणामन्नसलिंगे नयगिहलिंगेकुलिगेयत्ति दूसेणत्ति एकेनवस्वेणेंद्रसमर्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

सुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुंडलधरा । सत्यविकुर्वियाज्जरणधारी । सुरश्चसुरवंदश्चाणं । वहंति सीञ्चंजिणंदाणं ॥ १९ ॥ पुरउवहंतिदेवा । नागादुण्णदाहिणम्मिपासम्मि । पञ्चत्थिमेणञ्चसुरा । गरुलापुण उत्तरेपासे ॥ २० ॥ उसन्नोञ्चविणीयाण । वारवडंण्णरिठवरणेमी । ञ्चवसेसातित्ययरा । निस्कंताजम्मन्न मीसु ॥ २१ ॥ सव्वेविण्णदूसे । णणिगयाजिणवराचउत्तोसं । णयणामञ्चसलिंगे । णयगिहिलिंगेकुलिगे

॥ भाषा ॥

दिक् सुरेन्द्र सौधर्मादिक नागेंद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेन्द्र केहवा के चल हालता चपल जे कुंडल तेहना धरणहार के । स्वच्छन्द आपणी रुचीये करो विकुर्वा आभरण तेहना धरणहार के । सुर देवता असुर भवनपत्न्यादिके करो बींझा के । एहवा थईने जिनेंद्रनौ गिविकाने उपाडे ॥ १९ ॥ आगलि चाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडो असुरेन्द्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार बली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आ दिनाथे जिनोता नमरीये दीक्षा लीधो । द्वारिकाये अष्टिनेमरीये दीक्षा लीधो अने जाया सोरीपुरे । शेष २२ तीर्थकर जन्म भूमिये दीक्षा लीधो ॥ २१ ॥ सबलाई तीर्थकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दोधो तेणे सहित नोकया अन्य लिङ्गे नही तथा गृहस्थ लिङ्गे नही केवली तीर्थकरने लिङ्गे कुलिङ्गे शाक्या

ऋक्ता इत्यर्थः नवान्यलिङ्गे स्थविरकम्पिकादिलिङ्गे तीर्थकरलिङ्गादित्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एकोभगवंशीरो पासोमह्वीयतिहिंतिहिंसएहिं भय
वंपिवासुपुज्जो छहिंपुरिससएहिनिकंतं ॥ २ ॥ उगगाणंजोगाणं राइस्साणच खत्तियाणच चउसहस्सेहिंससभो सेसाओसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्यनिच्च
भसेण निमओवासुपुज्जजिणो चोत्थेणंपुणपासो महीविअइमेणमेभाओ ॥ ३ ॥ उठ्ठेणति सुमति रच नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थः तथा सम्बच्छरे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

वा ॥ २२ ॥ एक्कोजगवंशीरो । पासोमह्वीयतिहिंतिहिंसएहिं । जगवंपिवासुपुज्जो । छहिंपुरिससएहिंनि
रकंतो ॥ २३ ॥ उगगाणंजोगाणं । राइस्साणच खत्तियाणच । चउसहस्सेहिंससभो । सेसाउसहस्सपरिवारा
॥ १४ ॥ सुमइत्यनिच्चजत्ते । णणिग्गनुवासुपुज्जचोत्थेणं । पासोमह्वीयत्थ । मेणंसेसाउठ्ठेणं ॥ २५ ॥
एणसिणंचउट्ठीसाए तित्यगराणंचउट्ठीसं पढमज्जिस्कादायारोहोत्था तंजहा । सिजंसवंचदत्ते सुरिंददत्तेयइं

॥ भाषा ॥

दिक ने लिंगे नही ॥ ५ ॥ भगवंत महावीर स्वामो एकला दीक्षा लोधी । पार्खेनाथ अने मल्लिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीक्षा लोधी । १२ वासुपूज्य ६
से पुरुष साथे दीक्षा लोधी ॥ २३ ॥ उपव्रजता भोगव्रजता राजाता तथा मोटा चत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीक्षा लोधी । शेष १८ । तीर्थ
कर १००० पुरुष साथे दीक्षा लोधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथं नित्यभक्ते दीक्षा लोधी । वासुपूज्यं चउथ भक्त १ उपवासे दीक्षा लोधी । पार्खेनाथ मल्लिनाथ त्रि
हुं उपवासे दीक्षा लोधी । शेष २० तीर्थकरे छह भक्त २ उपवासे दीक्षा लोधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिक्षा दायक थया । ते कहे छे । श्रेयांश
१ । आदिनाथने श्रेयांशे पारखं करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्ददत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहिंद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

य भिक्षा लब्धाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंवीयदिवसे लब्धाउपढमभिक्षाओत्ति तथा उसभस्सपढमभिक्षा खोयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमस्सं अमिय
 ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुणवसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । तत्तो
 यधम्मजीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेअ ॥ २७ ॥ अपराजियविससेणे । वीसइमोहोइउसज्जसेणोय । दिस्सेव
 रदत्तधणे । वज्जलोतहअणुपुट्ठीए ॥ २८ ॥ एणविसुट्ठलेसा । जिणवरज्जतीइपंजलिउफ्फाउ । तंकाळंतंसमयं
 पफिलान्नेइजिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणजिस्का । लब्धाउसज्जेणलोयणाहेण । सेसेहिंवीयदिवसे । लब्धानं
 पढमजिस्कानं ॥ ३० ॥ उसज्जस्सपढमजिस्का । खोयरसोआसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमस्सं । अमियरस
 रसोवमंअसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिंपिजिणाणं । जहियंलब्धाउपढमजिस्काउ । वहियंवसुंधरानं । सरीरमेत्ताउ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

पुण्यदत्त ८ । पुनर्वसु १० । नंद ११ । सुनंद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपक्षे धर्मसिंह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिंह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित
 १८ । विवसेन १९ । वोसमो ऋषभसेन २० । दिव २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाके भली लेख्याना
 धणो जिनवरनो भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजोडो आगलिरक्षा के । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणोये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ
 परमेश्वरने १ वरसे भिक्षालीधी दीक्षानो पहिलो पारणं थयो । शेषथाकता २३ तौथेकरने बीजेदिन पारणं थयो । आदिनाथनो । इक्षुरसेकरी शेष २३ नेखी
 रथी परमावथी प्रारणं थयो तह परमाव अमृतरसनी उपमानंके ॥ ३१ ॥ सघलाई जिनने जिहां प्रथम भिक्षालीधी तिहां देवता माटे १२ कोडि सोनइयानी वृष्टि

॥ भाषा ॥

रसरसोवमंभासि ॥ १ ॥ सरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमात्रा चेइयरुक्खेत्ति वडपीठवृत्ता येषा मधः केवलान्युत्पन्नानीति वत्तीसाइं धणंयं गाहा निच्चोउगोत्ति नि
त्यं सर्वदात्ततुरेव पुष्पादिकालो यस्यस नित्यतुलकः असोगोत्ति अशोकाभिधानो यः समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छ्रसोसालरुक्खेणंति अवच्छन्नः शालवृक्षे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

वद्दाउ ॥ ३२ ॥ एणसिंचउट्ठीसाएतित्यगराणंचउट्ठीसं चेइयरुक्काहोत्था तंजहा । णिग्गोहसत्तिवस्सेसा
लेपियएपियंगुत्ताए । सरिसेयणागरुक्के । मालीयपिलुंकरुक्केय ॥ ३३ ॥ तंदुलपाळलजंबू । श्वासत्येखलुत
हेवदहिवस्से । णंदीरुक्केतिलए । अंवगरुक्केअसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वेतसिरुक्केयधायईरुक्के
सालेयवहुमाणे । चेइयरुक्काजिणवराणं ॥ ३५ ॥ वत्तीसाइंधणुइं । चेइयरुक्कोयवहुमाणस्स । णिच्चोअगो
असोगो । उच्छ्रसोसालरुक्केणं ॥ ३६ ॥ तिसोवगाउआइं । चेइयरुक्कोजिणस्सउसन्नस्स । सेसाणंपुणरुक्का

॥ भाषा ॥

शरीरप्रमाणे उंचो करी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृक्ष पूज्यवृक्ष जे हेठे केवलज्ञान उपनो ते कहैके । आदिनाथने न्यग्रोध १ । वडनां पेडनीचे केवलज्ञान
उपनो एमअनुक्रमे २४ जगे कहिवो । सप्तपर्ण २ । शालवृक्ष ३ । प्रियालु ४ । प्रियंगु ५ । कुचवृक्ष ६ । मरस ७ । नाग ८ । मालवी ९ । पीलुख १० । टींबरु
११ । पाडल १२ । जंबू १३ । पीपल १४ । दधिपर्ण १५ । नंदीवृक्ष १६ । तिलक १७ । आम्बा १८ । अशोक १९ । चंपा २० । बकुल २१ । वेतस २२ । धातकी आवला
२३ । शालिवृक्ष २४ । वर्द्धमानस्वामीनो चैत्यवृक्ष २४ जिनना कथा ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाणे चैत्यवृक्ष जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहांवैसी भगवंतवर्द्धमानस्वामी
व्याख्यान करे । नित्य वारेमासे फल्यो फूल्यो अशोकवृक्ष शालवृक्ष करी व्याप्त एतले अशोकवृक्षने उपर शालवृक्षके । आदिनाथनो चैत्यवृक्ष ३ कोस ऊंचो एतले

येत्यत एववचना दशोक्त्योपरि शालवृक्षापि कथं चिदस्तीत्यवसोयत इति तिस्रैवगाउयाइं गाहा ऋषभस्वामिनो द्वादशगुणइत्यर्थः सवेदयन्ति वेदिकायुक्ता
एतेचाशोकाः समवसरणसम्बन्धिनः सभायन्तइति तहा भरहोसगरोमववं सणकुमारोयरायसहुलो संतीकुंथूयअरोह वइसुभूमोयकोरव्वो ॥ १ ॥ नवमोय

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

सरीरुं वारसगुणानुं ॥ ३७ ॥ सच्छत्रासपत्नाना । सवेइयातोरणेहिउववेया । सुरञ्चसुरगरुलमहिया । चे
इयरुक्काजिणवराणं ॥ ३८ ॥ एएतिवउव्वीनाए तित्थगराणं चउव्वीसंपठमसीसाहोत्था तंजहा । पठमेत्थ
उसन्नसेणे वीएपुण्होइसीइसेजेय । चारुयवज्जगान्ते । चनरेतहसुत्रएविदप्पेय ॥ ३९ ॥ दिस्सेवाराहेपुणञ्चा
णंदेगोथुजेसुहम्मयेय । मंदरजसेञ्जरिठे । चक्काउहसंअकुंजएज्जिगयेय ॥ ४० ॥ इंदकुंजेयसुजे वरदत्तेदिस्सइं
दन्नूइय ॥ उदितोदिनकुलवंसा विसुद्धवंसागुणेहिउववया । तित्थप्पवत्तयाणं । पठमासिस्साजिणवराणं ॥

भगवतथो १२ गुणो जंचाथयो शेष २३ तीर्थ करणावृत्त पोतानां शरीरथो १२ गुणां कहिवा ॥ ३७ ॥ तेष्वच ३ क्वच सहित ध्वजा सहित वेदिका सहित
तोरणयुक्त सुरवैमानिकदेव असुर भवनपत्यादिक मुपर्णादिकदेवे करो पृजितके एहवा जिनंद्रना चैत्यवृत्त जाणिवा ॥ ३८ ॥ २४ जिनना २४ प्रथम शिष्य
बडागणधरयथा तेकहेके । आदिनाथनो बडाशिष्य ऋषभनेन १ । सिंहसेन २ । चारुरूप ३ । वज्रनाभ ४ । चमर ५ । सुव्रत ६ । बीजोनाम प्रद्योतन ६ बि
दर्भ ७ ॥ ३८ ॥ दिव्य ८ । वाराह ९ । आनंद बीजोनाम पद्मनंदी १० । गोस्तून बीजोनाम कृतार्थ ११ । सुधर्मा बीजोनाम सुभूम १२ । मंदर १३ । यशोधर १४
परिष्ट १५ । चक्रादुध १६ । बाल्य १७ । कुंभ १८ । अभिनय १९ ॥ ४० ॥ इन्द्रकुंभ बीजोनाम मल्ली ३० । शुभ २१ । वरदत्त २२ । आर्यदिव २३ । इन्द्रभूति २४

॥ भाषा ॥

॥ २३३ ॥

४१ ॥ एएसिणंचउयीसाए तित्यगराणं चउयीसं पढमसिस्सणीहोल्या तंजहा । वंज्जीयफग्गुसामा । अजिया
कासवीरडंसोमा । सुमणावारुणिसुलसा । धारणिधरणीयधरणिधरा ॥ ४२ ॥ पउमासिवासुयीतह । अंजुया
नावयप्पायरस्कीय । बंधुवतीपुष्पवती । अज्जाअमिलायआहिया ॥ ४३ ॥ जरिणीपुष्पचूलाय चंदण
जायआहिया ॥ उदितंदिउयकुलवंसणाहा । जंबूदीपेणं नारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए वारसचक्कवट्टिपिय
रोहोल्या तंजहा । उसजेसुमिअविजए समुद्रविजएयआससेणेय । विस्ससेणेयसूरे । सुदंसणेकत्तवीरिएचेव ॥
४४ ॥ पउमुत्तरेमहाहरी । विजएरायातहेवय । वंजेवारसमेउत्ते । पिउनामाचक्कवट्टिणं ॥ ४५ ॥ जंबूदीवे

॥ मूल ॥

एह २४ गणधर उदितोदित कलवंशके । इत्यादि पूर्वगाथा कहिबी ॥ ४१ ॥ एह २४ जिनवरानी २४ प्रथम शिष्यणी बडौ साध्वीथई तेकहेके । ब्राह्मी १ । फ
लगुनो १ । श्यामा ३ । अजिता ४ । कायपौ ५ । रतौ ६ । सोमा ७ । सुमना ८ । वारुणी ९ । सुलमा १० । धारणी ११ । धरणी १२ । धरणीधरा १३ ।
॥ ४२ ॥ पद्मा १४ । शिवा १५ । हृति १६ । अंजुजा बीजोनाम दामिनी १७ । भावितात्मा एहवी रक्षिता १८ । बंधुमती १९ । पुष्पवती २० । अमिला २१ ।
४३ ॥ यत्तिगौ २२ । पुष्पचूला २३ । चंदनवाला २४ ॥ एह साध्वी कोहवी के उदयप्राप्तवंशमे उपनी के । इत्यादि पूर्वनी गाथा जाणवी ॥ जंबूदीप ने
विषे भरत केके एणी वर्त्तमान अवसर्पणीये १२ चक्रवर्त्तिना पितादया । ते कहैके । भरतनो पिता ऋषभ १ । सुमतिविजय २ । समुद्रविजय ३ । अश्व
सेन ४ । विश्वसेन ५ । सूर ६ । सुदर्शन ७ । कार्तवीर्य ८ । पद्मात्तर ९ । महाहरी १० । राजाविजय ११ । ब्रह्मा १२ । एह १२ चक्रवर्त्तिपितानानाम ॥ ४५ ॥

॥ भाषा ॥

महापठमो हरिसेनोचेवरायसहूलो जयनामोयनरवई वारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयबंभो सोमोरुहोसिवोमहसिरोय अग्निसिहोयदसरहो न

॥ मूल ॥

॥ टीका ॥

जारहेवासे डमीसेनुसप्पिणीए वारसचक्कावहिमायरोहोत्या तंजहा । सुमंगलाजसवती नद्दासहदेवी अइरा
सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीअपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्वीवे० । वारसचक्कावहीहोत्या तंजहा । जरहे
सगरेमघवं । सणंकुमारोयरायसहूलो । संतीकुंथूयअरो । हवइसुजूमोयकोरहो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउ
मो । हरिसेनाचेवरायसहूलो । जयनामोयनरवई । वारसमोबंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एएसिंवारसराहंचक्कावही
णं वारसडत्तिरयणाहोत्या तंजहा । पढमाहोइसुजहा । नद्दसुणंदाजयायविजयाय । किराहसिरीसूरसिरी
पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लत्तिमईकुसुमई इच्छीरयणाणणामाई ॥ जंबूद्वीवे० नववलदेवनववासु

जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति मातायई ते कहेके । सुमंगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६
देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ केहलो चुल्लणी १२ ॥ जंबूद्वीप संबंधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्पिणीये १२ चक्रवर्त्त यथा ते कहेके भरत १
सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा मांहि सिंहसमान शांतिनाथ ५ । कुंथु ६ । अर ७ । संभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म । हरिसेन १० । जय ११ ब्रह्मदत्त
१२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न यथा ते कहेके सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णाय ६ सूर्याय ७ पद्म ८ वसुंधरा ९ देवी १०
४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्पिणीये ९ बलदेव ९ वामुदेवना पिता यथा

॥ भाषा ॥

वसोभिशिभोयवसुदेवोति ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेत्यादि दशाराणां वासुदेवानां मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दादो
 रामकेतवति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवानां दशारमण्डलानौति पूर्वमुद्दिष्ट्यापि दशारमण्डलव्यक्तिभूतानां तेषां विशेषणार्थमाह त
 द्यथेत्यादि तद्यथेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारम्भार्थः केचित्तु दशारमण्डला इति तत्र दशाराणां वासुदेवकुलीनप्रजानां मंडलाः शोभाकारिणी दशारमण्ड
 ना उत्तमपुरुषा इति तोर्थकरादीनां चतुःपंचाशत् उत्तमपुरुषाणां मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्तोर्थकरचक्रिणां प्रतिवासुदेवानां च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

॥ टीका ॥

देवपितरोहोत्या तंजहा । पयावर्द्धयवन्तो सामोरुद्धोसिधोमहसिरोय । अग्निशिहोयदसरहो । नवमोज्जणि
 उयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्वीवेणं ० । णववासुदेवमायरोहोत्या तंजहा । मियावर्द्धउमाचेव पुह्वीसीया
 यश्चिविया । लच्छिमर्द्धसेसमर्द्ध केकर्द्धदेवर्द्धतहा ॥ ५० ॥ जंबूद्वीवेणं ० । णववलदेवमायरोहोत्या तंजहा ।
 नदातहसुनदाय । सुप्पजायसुदंसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

॥ मूल ॥

प्रजापति १ ब्रह्मा २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दशरथ ८ नवमोवसुदेव ९ ॥ १ ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान काले ९ वासुदेवनी माता यद्
 तेकहेके मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकर्द्धवीर्जानाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिवे ९ बल
 देवनी माता कहेके ॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयंती ६ जयंती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥
 जंबूद्वीपना भरतने विषे एतौ अवसर्पिषीये नव दशारना वासुदेवना मंडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मंडल यया तेकहे के । उत्तम

॥ भाषा ॥

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणां शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् औजस्विनो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शरीरबलोपेतत्वात् यशस्विनः पराक्रमं प्राप्यप्रसिद्धिप्राप्तत्वात् छायांमिति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएव कान्ताः कान्तियोगात् सौम्या अरौद्राकारत्वात् सुभगा जनवत्प्रभत्वात् प्रियदर्शना चक्षुष्यरूपत्वात् मरूपा समचतुरस्रसंस्थानत्वात् शुभं सुखं स्वा सुखकरत्वा च्छीलं स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वा सुखे नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्याः सर्वजननयनानां कान्ता अभिलाषा ये ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः आघवलाः प्रवाहवलाः अव्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिवलाः श्रेष्ठपुरुषबलानामतिक्रमात् महावलाः प्रशस्तवलाः अनिहता निरुपक्रमायुक्त्वा दुरोयुद्धे च भूम्यामपातित्वात् अपराजिता

वलदेवाणमायरो ॥ जंबूद्वीपेण० । णवदसारमंफलाहोत्या तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्जिमपुरिसा पहाणपुरि
सा नुयंसी तेयंसी वज्जंसी जसंसी ठायंसी कंता सोमा सुजगा पियदंसणा सुखुष्णा सुहसीला सुहान्निगम
सव्वजणणयणकंता न्हवला अतिवला महावला अनिहता अपराइयसत्तुमहणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते मां हि वर्त्ति ते माटे बली मध्यम पुरुष तीर्थंकर चक्रवर्त्त तथा प्रतिवासुदेवनी अपेक्षाये प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त औजस्वी मनो-
बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर यो वर्चस्वी शरीर सम्बंधी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कान्तिवान् रुद्रा-
कार नहीं सङ्गने वज्रभ देखवा योग्य समचतुरस्र संस्थानी सङ्गने सुखकारी सुखे सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कान्त देखिवा योग्य बल जेह
नो तूटे नहीं शक्ति बलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीये पराभव्या न जाय शत्रुनामर्दक रिपु सहस्रना मानने मथनहार नम्र

स्तैरेवशृङ्गा मंराजितत्वात् एतदेवाह शत्रुमर्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्शनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तङ्घाङ्कितकार्यविघटनात् सानुक्रीशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वा
 त् अमक्षराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनोवाक्काय स्थैर्यात् अचण्डा निष्कारणप्रवलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुली कोमलप्रलापश्चा
 लापो हसितंच येषाम्ने मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्शितरोषतोषशोकादिविकार श्लेघनादव हा मधुरं श्रवणसुखकर अतिपूर्ण मर्थप्रतीतिजनकं
 सत्य मवितथ म्वचन म्वाक्यं येषाम्ने तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः अभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणेसाधुत्वात् लक्षणानि
 मानादीनि वज्रस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकमषादीनि तेषाङ्गणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रूपेताः सर्करादिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यंजनगुणो
 पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणशरीरता कथ मुदकपूर्णायां द्रोणां निविष्टे पुरुषे यज्जलं ततो निर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाणं स्या तदा स पुरुषो मानप्राप्त

णुक्कोसा अमच्छरा अचपला अचण्डा मियमंजुलपलावहसियगंजीरमधुरपद्मिपुष्पसञ्चवयणा अश्रुवगय

॥ मूल ॥

वच्छला सरस्मा । लरकणवंजणगुणोववेष्ठा माणुम्माणपमाणपद्मिपुष्पसुजायसङ्गसुंदरंगा ससिसोमागारकं

॥ भाषा ॥

विधे दयावंत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करो धैर्यवान् निष्कारण कोप रहित मित ते थोडो मञ्जुल कोमल जे प्रलाप बोलवो अने हसिवो हे
 जेहनो बलो गम्भीर रोष रहित मधुर बोलता सुखकारो प्रतिपूर्ण अर्थनो प्रतीति उत्पादक सांचो विघटे नही एहवो हे वचन जेहनो तथा शरणाग
 तवत्सल शरण राखिवा समर्थ लक्षण तेष्वस्तिकादिक व्यञ्जन तैतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक
 द्रोण परिमाण शरीरनो उंच पणो उम्मान ते अर्ध भार परिमाणता प्रमाण ते अठोत्तर सो अंगुलनो ऊंच पणो तेणे मान १ उम्मान २ प्रमाणे ३

इत्यभिधीयते उन्मान महंभारपरिमाणा कथं तुलारोपितस्त्वं पुरुषस्य यद्यहंभार स्तौष्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाद्यमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु
च्छ्रयः मानोन्मानप्रमाणैः प्रतिपूर्णमन्यूनं सुजातमागर्भाधानात् पालनविधिना सर्वाङ्गसुन्दरं निखिलावयवप्रधानमंगं शरीरं येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका
रमरौद्रमवीभक्तस्त्वा कांतंदौष्टिकं प्रियंजनानां प्रमोदोत्पादकं दर्शनं रूपं येषान्ते तथा अमरिसणत्ति अमृष्टणाः प्रयोजनेष्वनलसा अमर्षणावा अपराधिविषयि
कृतचमाः प्राकाण्डउत्कटोदण्डप्रकार आघ्राविशेषो वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोदुःसाध्यसाधकत्वा इण्डप्रचारः सैन्यविचरणं येषान्ते तथा गम्भीराभल
स्यमाणांतर्हसित्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः प्रचण्डदण्डप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोद्विचविशेषो ध्वजा
येषान्ते तालध्वजाः वलदेवा उद्विडउच्छ्रितो गरुडलजितः केतुर्ध्वजो येषान्ते उद्विडगरुडकेतवो वासुदेवाः तालध्वजाश्च उद्विडगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विड
गरुडकेतवः महाधनुर्विकर्षकाः महाप्राणत्वात् महासत्वलक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा महासत्वसागराः दुर्हरा रणाङ्गणे तेषां प्रहरतां केना
तपियदंसणा अमरिसणा पयंरुदंरुप्पयारा गंभीरदरसणिजा तालोद्विडगरुडकेतु महाधनुर्विकट्टया

करो प्रतिपूर्णं अन्यून । गर्भाधानशको रुडोविधिये करो भलो नीपनोक्ते सर्वं शरीरावयवै करो सुंदरं शरीरं जेहनो । चंद्रमाने समान सौम्य अरुद्रके तेजा
कार कांतं दौष्टिकं । प्रिय प्रेमोत्पादक दर्शनके जेहनो । कार्यने विषे आलस्यो नही अथवा अमर्ष रहित । प्रचंड दुःसाध्यने साधे एहवोक्ते दंडप्रचार
सेनानो विचरवा जेहनो । गंभीर कल्याणजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहना । तालोद्विध ध्वजाके जेहने तेतालध्वज गरुडनो रूपके ध्वजाने विषे
ध्वजा जंचो करोक्ते जेणे । वलदेवने आगितालध्वज होय वासुदेवने आगे गरुडध्वज होय । तथामहाधनुषना खाचणहार । महासत्व लक्षण जलना.

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

पि धन्विना धारयितु मशक्यत्वात् धनुर्धराः कोदण्डप्रहरणा धीरेष्वेते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरेष्विति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्तिस्तत्प्रधानाः पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषाः विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतमहारत्नं वज्रन्तस्य महाराणतया विघटका अद्भुततर्जनीभ्यां चूर्णका महारत्नविघटका वज्रं हि अधिकारस्थं धृत्वा अयोवनेना स्फोटयते न च भिद्यते तावेव भिन्नतीति दुर्भेदं तदिति अथवा महनीया आरचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसंग्राम विधौ अहासैन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयन्ति वियोजयति ये ते महारचनाविघटकाः पाठान्तरेण तु महारणविघटकाः अर्द्धभरत स्वामिनः सौम्या नीरुजः राजकुलवंगतिलकाः अजिताः अजितरथाः हलमुसलकणकपाणयः तत्र हलमुसलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते बलदेवा येषान्तु कणकाबाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्ख पाञ्चजन्याभिधानं चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी संघा लकुटविशेषः श

महासत्तसाञ्चरा दुष्टरा धनुष्टरा धीरपुरिसा जुष्टकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुद्भवा महारयणविहाङ्गगा श्रु
जरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । अजियाञ्जियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्रगयसत्तिनंदगधरा

समुद्र सरीखा समुद्र । रणांगणे दुष्टर कीर्त्तयौ वास्यानजाय । धनुषनाधरणहार । धैर्ययुक्तके । युद्धे करी उपार्जी कीर्त्ति तेषे करी प्रधान पुरुषके बडाकुलना उपना । महारत्न वज्रने अंगूठे करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खंडना सामी । सौम्य अत्यंत ठंडा । राजकुलने बंशने बिषे तिलकसमान अजतकेहथी जीप्या नथी । जेहनारथकेहथी जीप्यानथी । तथा हल मुसलके हाथने बिषे ते बलदेव । अने कणककहीबाणके हाथने बिषे जेहने ते वासुदेव । शंख पाञ्चजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विशेष शक्ति विशूल विशेष नंदकनामा खड्गना धरणहारके । तथा प्रवर प्रधान उजलोस

क्षिप्तं त्रिशूलविशेषो नन्दकच नन्दकाभिधानः खड्ग स्ताम्भार्यन्तीति शङ्खचक्रगदाशक्तिनन्दकधराः वासुदेवाः प्रवरो वरप्रभावयोगा दुज्वलः शुक्लत्वात् स्व
च्छतया वा सुकान्तः कान्तियोगात् पाठांतरे मुकुटमुपरिकर्षितत्वात् विमलो मलवर्जितत्वात् गोथुभक्ति कौसुभाभिधानो यो मणिविशेष स्तं तिरीडंति
किरीटं च मुकुटं धारयन्ति येते तथा कुंडलोद्योतिताननाः पुंडरीकवद्वयने येषांते तथा एकावली आभरणविशेषः सा कंठे योवायां लगिता विलंबिता
सती वक्षसि उरभिवर्त्तते येषांते एकावलोकठलगितवक्षसः श्रीवत्साभिधानं सुट्टलाच्छनं महापुरुषत्वसूचकं वक्षसि येषांते श्रीवत्सलाच्छना वरयशसः सर्वत्र
विख्यातत्वात् सर्वर्तुक्रान्ति सर्ववृत्तसंभवानि नुरभोणि सुगंधानि यानि कुसुमानि तैः सुरचिता कृता या प्रलंबा आप्रपदीना शोभितत्ति शोभमाना कांता
कमनोया विकसन्ती फुल्लन्ती चित्रा पंचवर्णा वा प्रधाना माला स्रक् रचिता निहिता रतिदा वा सुखकारिका वक्षसि येषांते सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुर
चितप्रलंबशोभमानकांतविकसच्चित्रवरमालारचितवक्षसः तथा अष्टशतसंख्यानि विभक्तानि विविक्तरूपाणि यानि लक्षणानि चक्रादीनि तैः प्रशस्तानि मं

॥ टीका ॥

पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्युन्नतिरीढधारी कुंठलउज्जाड्याणणा पुंठरीयणयणा । एकावलिकंठलइयवच्छा सि
रिवच्छसुलंठणा वरजसा सद्योउयसुरजिकुसुमरचितपलंबसोन्नंतकंतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा । अठ

॥ मूल ॥

कांत निर्मल कौसुभ मणि विशेष अने मुकुट ने धारण करेछे । कुंडलनी प्रभाये करी उद्योतितके मुख जेहनो । पुंडरीक कमल सरीखा मनोहर नेत्र
छे जेहना एकावली आभरण विशेष तेकंठे लगाडी विलंबितके वक्षस्थलने विषे जेहने । श्रीवत्स नामा भलो लक्षणके जेहने । वर प्रधानके यश जेहनो ।
सषली वृत्तना नुरभि सुगंध फूल तेनेकरी सुरचित कीधीछे प्रलंबायमानके शोभायमान कांत कमनीय विकसन्ती पांचवर्ण नी प्रधान माला तेनेकरी

॥ भाषा ॥

लपोतकोशियवाससः प्रवरदोस्ततेजसो वरपभावतया वरदोस्तितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा अरपतयः तदायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उ
 त्वितकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकृपाः देवराजोपमा अभ्यविकं श्रेष्ठराजेभ्यः राजतेजोलक्ष्मा दीप्यमानाः नीलकपीतकवसना इति पुनर्भणनं नि
 गमनार्थं कथं तेन वेचाह दुवेदुवेइत्यादि एवच नववासदेव नवलदेवा इति त्रिविध्यं यावत्करणात् दुविध्यं सयंभपुरिसुत्तमेपुरिससीहे । तहपुरिसपुंडरीये
 दत्तेनारायणेकपहेत्ति ॥ १ ॥ अयलेविजयेभदे सप्यभेयसुदंसणे आनंदेणंदणेपउमे रामेयावियपच्छिमेत्ति ॥ २ ॥ कित्तीपुरिसोणंति कीर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति महु
 रायकृष्णवत्थू मावथापोयणं वरायगिहं कायदोकासवो महिलपुरोहयि गपुंत्वं तथा गाविजुरसंगामे तहइत्थिपराहओरंगे भज्जाणुरागगोठ्ठी परइदुदीमाउ
 याइयति तथा असनावेतारए मेरएमहुकेटभेनिसुंभेय वलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरासंधेत्ति ॥ ३ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं सव्वेवि

॥ टीका ॥

रवसहा मरुयवसजकृपा अण्णहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवाजाय
 रोहोल्या तंजहा । त्रिविध्यं जावकराहे अयलो जावरामेय अपच्छिमे एणसिणं णवरहं वलदेववासु

॥ मूल ॥

मांहि वृषभ समान के पाखो भार वाहवा समर्थपणां यो । इन्द्र समान के । अन्य राजा यको अविक राजतेज लक्ष्मीयें प्रदीप्तमान के । नीला अने
 पीला के वस्त्र ओहना दो दो राम अने केशव दोनुं भाइ होय राम तेवलभद्र केगव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुंभाई होय । एणीचीवीसीये ८ बलदेव
 ८ वासुदेव थया तेकहे के । विपुठ १ । प्रथमयो यावत् शब्दे द्विपुठ २ । स्वयम्भू ३ । पुरुषोत्तम ४ । पुरुषसिंह ५ । पुरुष पुंडरीक ६ । दत्त ७ । नारायण ८
 कृष्ण ८ इहांलगे जाणवा ॥ अचल १ । यावत् शब्दे विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनंद ६ । नंद ७ । पद्म ८ । राम ९ । एहबलभद्र जाणि

॥ भाषा ॥

देवणं पुव्वजविद्या नवनामधेज्जाहोत्या तंजहा । विसंभूईपव्वयए धणदत्तसमुद्धंदत्तइसिवाले । पियमित्रललि
यमित्ते पुणव्वसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइंनामाइं पुव्वजवेअसिवासुदेवाणं । एत्तोवलदेवाणं जहक्कमंकित्तइ
स्सामि ॥ ५३ ॥ विसनंदीयसुवंधू सागरदत्तेअसोगललिएय वाराहधम्मसेणे अपराइयरायललिएय ॥ ५४ ॥
एएसिंनवराहं वलदेववासुदेवाणं पुव्वजवियानवधम्मायरियाहोत्या तंजहा । संभूएयसुज्जहे सुदंसणेसेयकराह
गंगदत्तेअ । सागरसमुद्धनामे दुमसेणेणवमिएहोइ ॥ ५५ ॥ धम्मायरियाकित्ती पुरिसाणंवासुदेवाणं ।
पुव्वजवेएअसिं जत्यनियानाइ कासीए ॥ ५६ ॥ एएसिणंनवराहं वासुदेवाणं पुव्वजवे नवनियाणनूमीउहो

॥ मूल ॥

वा॥ एह बलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ८ नामधेय कहे के । विश्वभूति १ प्रव्रतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ प्रियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुन
र्वसु ८ गंगदत्त ९ । एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया । हिवे बलदेवना नाम कहे के । विश्वनन्दी १ । सुवंधु २ । सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५
वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९ । एह ८ बलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे के । संभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ त्रेयां
य ४ कृष्ण ५ गङ्गदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ दुमसेन ९ धर्माचार्य थया कीर्त्तिपुरुष ८ बलदेववासुदेवना । जिहां नियाणाकीधा तेणे समये ९ पूर्वभवने विषे
नियाणा भूमि थई ते कहे के । मथुरा १ यावत् शब्दे कनकबस्तु २ सावथी ३ पोतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हृष्यापुर ९

॥ भाषा ।

वक्त्रजोही सखेविहयासचक्केहिंति अविद्याणकडारामा सर्वेवियकेसवानियाणकडा उदुंगामीरामा केसवसखेअहोगामीति आगमिस्सेणंति आगमिथता कालेन आगमेस्साणंति पाठांतरे आगमिथता अविथता अध्ये सेत्स्यंतीति जंबूद्वीपैरवते अस्या मवसर्पिण्यां चतुर्विंशति स्तौर्यकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

॥ टीका ॥

त्या तंजहा । मञ्जराजावहत्यिणाउरंच एतेसिणंनवरहं वासुदेवाणं नवनियाणकारणाहोत्या तंजहा । गावी जुवे जाव माउष्ठा । एएसिं नवरहंवासुदेवाणं नवपफिसत्तूहोत्या तंजहा । आसग्गीवेजावजरासंधे । जा यसचक्केहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयठठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउत्थीए करहोपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥ अणिदाणकळारामा सखेवियकेसवानियाणकळा । उदुंगामीरामा केसवसखेअहोगामी ॥ ५८ ॥ अठंतकळा रामा एगोपुणयंजलोयकप्यम्मि । एक्कोसेगप्पवसही सिज्जिस्सइ आगमिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूद्वीवे० एरवए

॥ मूल ॥

लगे जाणवो । एह वासुदेवना ८ नियाणाना कारण थया ते कहे के । गाइ १ यावत्शब्दे यूपस्तंभ २ संयाम ३ स्त्रीपराभव ४ रंग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्टी ७ परक्कट्टी ८ मातापराभव ९ । एह वासुदेवना ८ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे के । अश्वग्रीव १ यावत् शब्देतारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बलि ६ प्रलहाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कौर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्केकरी युद्धकरे पोतानाचक्रथी मरे । पहिलो वासुदेव सातमीये गयो पांच वासुदेव छठ्ठीये गयो एक वासुदेव पांचमीये गयो १ चउथीये गयो कृष्ण ३ जीये गयो । बलदेव नियाणा न करे सघला वासुदेव नियाणाना करणहार के उच्च गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थकी माडी पहिला अंतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ५ मे ब्रह्म देवलोके गयो ।

॥ भाषा ॥

रेणाह तद्यथा चंद्राणसंगाहा चंद्राणसुचंदं अग्निसेणचनंदिपेणञ्च कचिदात्मसेनोप्ययं दृश्यते ऋषिदिक् व्रतधारिणञ्च वंदामहे श्यामचन्द्रञ्च वंदामिगाहा
 वंदेयुक्तिसेनं कचिदयंदीर्घबाहु दीर्घसेनोवाच्यते अजितसेनं कचिदयंशतायु रुच्यते तथैव शिवसेनं कचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यकिश्चेति वुष्टंवावगततत्वञ्च
 देवशर्मांश्च देवसेनापरनामकं सततंसदावंद इति प्रकृतं निश्चितशस्त्रं च नामांतरतः श्रेयांसं असंजलं गाहा असंज्वलं जिनवृषभं पाठांतरेण स्वयंजलं वंदेअनंत
 जिन ममितज्ञानिनं सर्वज्ञमित्यर्थः नामांतरेणायं सिंहसेनइति उपशांतं च उपशान्तसंज्ञं धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनं च अद्रपासंगाहा अतिपार्श्वं च सुपार्श्वं

॥ टीका ॥

वासे इमीसेनुसप्पिणीए चउद्धीसंतित्यगराहोल्या तंजहा । चंद्राणसुचंदं अग्निसेणचनंदिसेणं च । इसिदि
 संवयहारिं वंदामोसोमचंदं च ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । वुष्टं च देवसम्मंसिद्धं
 निखित्तसत्थं च ॥ ६१ ॥ अस्संजलंजिणवसहं वंदेयअणंतयंअमियणाणि । उवसंतं च धुवरयं वंदेखलुगुत्तिसे

॥ मूल ॥

१ भव वासना अंतरथी मोक्ष जात्ये जंबूद्वीपने विषे ऐरवते एणी अवसरिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे छे चंद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नंदिसेन ४
 ऋषिदिक् ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुक्कुं । सोमचंद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम शतायु । शिवसेन
 १० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाछे सकलकार्यजेहना एहवो निश्चित शस्त्र बीजो नाम श्रेयांस १२ ॥ ६१ ॥
 असंज्वल १३ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयंजल १४ बांदो अनंतक १४ अमित ज्ञानी नामांतरे सिंहसेन उपशांत १५ । कर्मरज रहित वांदो गुप्तिसेन १६ ।

॥ भाषा ॥

देवेश्वरवंदितं च मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं क्षीणदुःखं श्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे क्षीणरजस मग्निपु
त्रं च व्यवकृष्टप्रेमहेषं च वारिषेणं गतं सिद्धमिति स्थानान्तरे किञ्चिदन्यथा प्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयान्ता शतुर्विंशतिः एवमिदं सर्वं

॥ टीका ॥

॥ २४० ॥

णं च ॥ ६२ ॥ अतिपासंच सुपासं देवेश्वरवंदियंच मरुदेवं । निष्ठाणगयंच धरं खीणदुहंसामकोष्ठं च ॥ ६३ ॥
जियरागमग्निसेणं वंदे क्षीणरयमग्निउत्तंच वोक्तासियपिज्जदोसं वारिसेणंगयंसिद्धं ॥ ६४ ॥ जंबूद्वीवे ०
आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नारहेवासे सत्तकुलगराजविस्संति तंजहा । मियवाहणे सुज्जमेय सुप्पजेयसयंपजे
दत्ते सुज्जमे सुबंधूय आगमिस्साण होस्सकति ॥ ६५ ॥ जंबूद्वीवेणंदीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए ऐरवए वासे
दसकुलगराजविस्संति तंजहा । विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ मूल ॥

॥ ६२ ॥ अतिपासं १७ । सुपासं १८ देवेश्वरवंदित मरुदेवं १९ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ठ २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित
अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन जय गर्दछे पापरज जेहनो एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाछे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जंबूद्वीपना
भरतने विषे आगामी उत्कर्षिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छे । मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ । सूक्ष्म ६ । सुबंधु ७ । आवती चो
वीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जंबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमंधर ३ ।

॥ भाषा ॥

पणिसुई सुमुइइंति जंबूद्वीवेणंदीवे नारहेवासे आगमिस्साए उरसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराजविस्संति
तंजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपत्ते । सव्वाणुज्जूइअरहा देवस्सुएयहोरकई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते
य पोहिलेसतकित्तिय । मुणिसुव्वएयअरहा सव्वजावविज्जिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निप्पलाएयनि
म्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय आगमिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ संवरएणियद्दीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअ
रहा अणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं नरहेवासम्मिकेवली आगमिस्सेणहोरकंति धम्मतित्थस्सदेस
गा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाएतित्थकराणं पुव्वजवियाचउव्वीसंनामधेज्जा नविस्संति तंजहा । सेणियसुपा

॥ मूल ॥

श्लोकंकर ४ । श्लोकंकर ५ । दृढधनु ६ । दशधनु ७ । शतधनु ८ । प्रतिश्रुति ९ । सुमंवि १० । जंबूद्वीपना भरतनेविषे आगामिकाले २४ तीर्थंकर थासे ते कहहेके । महापद्म
१ । सूरदेव २ । सुपास ३ । स्वयंप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवश्रुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोहिल ९ । शतकीर्ति १० । मुनिसुव्वत ११ । सत्यभाववि
त् अमम १२ । निष्कसाय १३ । निष्पलाक १४ । निर्म्मम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समाधि १७ । संवर १८ । यशोधर १९ । अनर्हिक २० । विज
य २१ । विमलबीजोनाममल्लो २२ । देवोपपात २३ । अनंतविजय २४ बीजोनाम अनंतवीर्य ॥ एह कथा २४ तीर्थंकर भरतचेवनेविषे आवतीउत्कर्षिणीयेहो
स्य धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पूर्वभवना नाम थास्ये तेकहेके । श्रेणिकराजा १ । सुपास २ । उदय ३ । पो

॥ भाषा ॥

सउदए पोहिलअणगारतहदढाऊय । कत्तियसंखेयतहा नंदसुनंदेयसतएय ॥ १ ॥ बोधव्वादेवईय सच्चइत
हवासुदेववलदेवे । रोहिणिसुलसाचेव तत्तोखलुरेवईचेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइसयाली बोधव्हेखलुतहानयाली
य । दीवायणेयकराहे तत्तोखलुनारएचेव ॥ ३ ॥ अंवळदारुमळेय साईवुळेयहोइवोधव्हे । ज्ञावीतित्यगराणं
णामाइंपुव्वज्जवियाइं ॥ ४ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्यगराणंपियरोमायरोज्जविस्संति । चउव्वीसंपढमसीसा
ज्जविस्संति । चउव्वीसंपढमसिस्सणीज्जविस्संति । चउव्वीसंपढमज्जिस्कादायगाज्जविस्संति । चउव्वीसंचे
इयरुस्काज्जविस्संति । जंवूहीवेणंदीवे नारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए वारसचक्खवहिणोज्जविस्संति

॥ मूल ॥

दिल अणगार ४ । दृढायु ५ । कार्त्तिकसेठ ६ । शंखश्रावक ७ । आनन्द ८ । सुनन्द ९ । शतक १० । देवकी ११ । सत्यकी १२ । कृष्णवासुदेव १३ । वलभद्र
१४ । रोहिणी । १५ । सुलसाश्राविका १६ । वली रेवतीश्राविका १७ ॥ ॥ सयाल १८ । भयाल १९ । द्वीपायन कृष्णनाम २० । नारद २१ ॥ ॥ अंवळ २२ ।
दारुमृत बीजोनाम अमरजीव २३ । स्वातिबुद्ध २४ । एह आगामिउत्सर्पिणीये भावी तीर्थकरपूर्वभवनाम जाण्णिवा ॥ एह २४ तीर्थकरना २४ पिता होस्से । २४
माता होस्से । २४ प्रथम शिष्य थास्से । २४ प्रथम साध्वी थास्से । २४ प्रथम भिक्षादायक थास्से । २४ चैत्यवृक्षथास्से । जंवूहीपना भरत ने विषे आगामिउ
त्सर्पिणीये १२ चक्रवर्त्ती थास्से तंकरहेछे । भरत १ । दौर्घदंत २ । गूढदंत ३ । शुद्धदंत ४ । ओपुत्र ५ । श्रीभृति ६ । श्रीसोम ७ । पद्म ८ । महापद्म ९ । विम

॥ भाषा ॥

तंजहा १०। जरहेयदीहदंते गूढदंतेयसुदंतेय । सिरिउत्तेसिरिजूई सिरिसोमेयसंतमेपउमे ॥ १ ॥ महापउमेय
विमल वाहणेविपुलवाहणेचेव रिठेवारसमेतह आगामिजरहाहिवाउत्ता ॥ २ ॥ एणसिणंवारसरहंचक्काव
हीणं वारसपियरोज्जविस्संति वारसमायरोज्जविस्संति । वारसइत्थीरयणाज्जविस्संति । जंबूद्वीवेणंदीवे जारहे
वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नववलदेव वासुदेवपियरो ज्जविस्संति नववासुदेवमायरो नववलदेव
मायरो ज्जविस्संति । नवदसारमंढलाज्जविस्संति तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा तेयंसी
एवंसोचेववस्सन् जाणियहो जावनीलगपीतगवसणा । दुवेदुवे रामकेसवाज्जायरो ज्जविस्संति तंजहा । नंदेय

॥ मूल ॥

ल वाहन १० । विपुलवाहन ११ । रिष्ट १२ । आवती २४ वीसीये भरतजेवना अधिपति थास्ये । एह १२ चक्रवर्त्तना १२ पिता अने १२ माता थास्ये ।
१२ स्त्रीरत्न होसे । आवती उस्सप्पिणीये जंबूद्वीपनां भरतनेविषे ६ वलदेव ८ वासुदेवनांपिताहोसे । ८ वलदेवनो माता होसे । ८ वासुदेवनो माताहोसे
८ । दशारमंढल होसे । जिम पूठे उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष प्रधान पुरुष वर्णआळे तेहिज भणिवो जिहांलगे नीला पीला वस्त्रना पहिरणहार ए
ह आवे । दोदो रामते वलदेव केशवते वासुदेव एविहुं भाईहोवे पिता १ माता जुई जुई होय तेकहेके । नंद १ । नंदमित्र २ । दीर्घबाहू ३ । म
हाबाहू ४ । अतिबल ५ । महाबल ६ । बलभद्र ७ । द्विपृष्ठ ८ । त्रिपृष्ठ ९ । आवती २४ सीये वासुदेवना नाम जाणिया हिवे वलदेवनाम कहेके । ज

॥ भाषा ।

नंदमित्रे दीहबाह्ममहाबाह्म । अइबलेमहाबले बलजदेयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठूयदुविठूय आगमिस्सेणव
 रिहणो । जयंतेविजएजदे सुप्पजेयसुदंसणे आणंदे नंदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एणसिणंनवराहं
 बलदेववासुदेवाणं पुव्वजवियाणवनामधेज्जाजविस्संति । नवधम्मायरियाजविस्संति । नवनियाणज्जमीन
 नवनियाणकारणाजविस्संति । नवपफिसत्तूजविस्संति तंजहा । तिलएयलोहजंघे वड्ढरजंवेयकेसरी पल्हा
 एअपराजिए भीमसेणेमहाभीमे सुग्गीवेयअपच्छिमे ॥ ॥ एणखलुपफिसत्तू किन्तीपुरिसाणवासुदेवाणं ।
 सव्वेविचक्कजोही हम्मिंहंतासचक्कोहिं ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेएरवएवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं ति
 त्यकराजविस्संति तंजहा । सुमंगलेश्चसिद्धत्ये णिव्वाणेयमहाजसे धम्मज्जएयअरहा आगमिस्सेणहोस्कर्इ १

॥ मूल ॥

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नन्दन ७ । पद्म ८ । संकर्षण ९ । एह १० बलदेव ११ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ये । नवध
 र्माचार्य धर्मगुरु आस्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । १२ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजंघ २ ।
 वज्रजंघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह प्रतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सघलाई प्रतिवासुदेव चक्र
 करो युद्धकरे आपणा चक्रथी मरणपावे । जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये २४ तीर्थंकरहोस्ये तेकहेछे । सुमंगल १ । अर्थसिद्ध २ । निर्व्याण ३ ।

॥ भाषा ॥

सिरिचंदेषुष्कंज महाचंदेयकेवली । सुयसागरेयश्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ २ ॥ सिद्धत्येपुसघोसेय
 महाघोसेयकेवली । सन्नसेणेयश्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयश्चरहा महासेणेयकेवली । सत्ता
 णंदेयश्चरहा देवउत्तेयहोस्कई ॥ ४ ॥ सुपासेसुवृएश्चरहा अरहेयसुकोसले । अरहाअणंतविजए आगमि
 स्सेणहोस्कई ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेश्चरहा अरहायमहावले । देवाणंदेयश्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ६ ॥
 एएवुत्ताचउव्वीसं एरवयम्मिकेवली । आगमिस्सेणहोस्कंति धम्मतित्यस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचक्कावट्ठिणी
 न्निविस्संति वारसचक्कावट्ठिपियरोज्जविस्संति । वारसइत्थीरयणा न्निविस्संति नववलदेववासुदेवपियरोज्जवि
 स्संति णववासुदेवमायरो णववलदेवमायरोज्जविस्संति । णवदसारमंढलान्निविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

महावश ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्पकेतु ७ । महाचन्द्र ८ । सुतसागर ९ । मिडाय १० । पूर्णवास ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४
 सिद्धसेन वीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानंद १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोमल १९ । अनंतविजय २० । विमल २१ । उत्तर २२ । महावल २३ । देवा
 नंद २४ होस्ये । एरवतक्षेत्रे २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्त्तना पिताहोस्ये । ९ वासुदेवनौ माता ९ वलदेवनौमाता होस्ये । ६ दशारमंडल होस्ये

सुगमं ग्रंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएत्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादे श्युतस्य मनुष्येषूत्यादः सिद्धिश्च यथारामस्येति एवं दोसुवित्ति भरतैरावतयो रागमि
थतो वासुदेवादयो भणितव्याः इत्येव मनेकधार्थानुपदर्श्या धिकृतग्रंथस्य यथार्थान्यभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणा
ऽख्यायते अभिधीयते तद्यथा कुलकरवंशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इति च इतिरूपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवन्तित्यगरवंसे इयत्ति यथा देशे
न कुलकरवंशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तौर्यकरवंशप्रतिपादकत्वा तौर्यकरवंश इति आख्यायते एतदिति एवं चक्रवर्त्तिवंशइति
च दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ताः शेषाजिनशिष्या ऋषयः स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिबंशइति च तत्प्रतिपादनं चात्र पर्युषणाकल्पस्य

॥ टीका ॥

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा ज्ञायरोज्जविस्संति णवपप्फिसत्तूजविस्संति । णवपुब्बजवणा
मधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणज्जमीनु णवणियाणकारणा ज्ञायाएएरवए ज्ञागमिस्साए ज्ञाणियव्वा ।
एवंदोसुवि ज्ञागमिस्साए ज्ञाणियव्वा इच्चेयएवमाहिज्जंति तंजहा । कुलगरवंसेइय एवन्तित्यगरवंसेइय ।

॥ मूल ॥

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये । नव प्रतिशत्रुनाम । पूर्वभवनाम । धर्माचार्य । नियाणा भूमि नियाणानो का
रण । बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक थकी चवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये सिद्धथासे ऐरवतचेत्ते तेसर्व भणिवो । एम भरत ऐरवत चेत्ते आ
गामिकाले बलदेव वासुदेव होस्ये तेसर्व भणिवो । अनेकप्रकारे एम अंगीकृतशास्त्र एणे प्रकारे कहिये तेकहेछे । कुलकरवंश एम तौर्यकरवंश चक्रवर्त्तिवंश

॥ भाषा ॥

समस्तस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा दत्तएव यतिवंशो मुनिवंशश्चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति
 चैतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविवोधनसहत्वादस्य तथाश्रुतांगमितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्गमवयवइतिकृत्वा तथा श्रुतसमासइति
 समस्तसूत्रार्थानां मिह संचेपेणाभिधानात् श्रुतस्कंधइति वा श्रुतसमुदायरूपत्वादस्य समाएवति समवायइति चासमस्तानां जीवादिपदार्थानां मभिधेय
 तयेहसमवायनात् मीलनादित्यर्थः तथा एकादिसंख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिप्रादपरत्वादस्य संख्येति व्याख्यायते तथा समस्त स्मरिपूर्णं न्तदेतदङ्गमाख्यात
 भगवता नेह श्रुतस्कन्धद्वयादिखण्डनेना चारादिव दङ्गतेतिभावः तथा अङ्गयणंतित्ति समस्त मेतदध्ययनमित्याख्यातं नेहोद्देशकादि खण्डनास्ति शस्त्रप

॥ टीका ॥

चक्रवर्तिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा सुच्यंगेइवा

॥ मूल ॥

एतदश्वरवंशं तेषां सुदेव वलदेव वंशं गणधरवंशं एतं ऋषिवंशं यतिवंशं मुनिवंशं एह सर्वानां वंश एह समवायांगने विषे कक्षाके तेमाटेएहना नामकहि
 वा । यद्यपि यतिवंशमुनिवंश एह वेहुं ऋषिवाचीके तथापि आचारने विषे यत्नकरे तेयती अर्थ जाणे तेमुनी तेहना ज्ञान एहमांकक्षाके तेमाटे श्रुतकहिये ।
 परोक्षपणे त्रिकालनो अर्थावबोध । श्रुत पुरुष अंगनो अवयव सरीखो अवयव तेमाटे श्रुतांग । समस्त सूत्रमांहि संचेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये ।
 श्रुतना अंगनो समुदायरूप तेमाटे श्रुतस्कंध कहिये । समस्त जीवादि पदार्थ एह मांहि अवतरा तेथी समवाय कहिये । एकादिक कोटाकोटि लगे

॥ भाषा ॥

रिज्ञादिष्विवेति भावः इति शब्दः समाप्तौ वेमिति किल सुधर्मस्वामी जंबूस्वामिनं प्रत्याहस्मन्नवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनः समीपे यदवधारितं मित्यनेन गुरुपारम्पर्यं मर्थस्य प्रतिपादितं भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धिं रूपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोदर्शितं औद्धत्यञ्च परिहृतं अयमेवार्थः शिष्यस्य सम्पादितो भवति मुमुक्षूणां श्रद्धायाम् आर्म्भ इत्यावेदितमिति समवायाख्यं चतुर्थमङ्गं स्मृतितः समाप्तम् ॥ * ॥

॥ टीका ॥

सुयसमासेइवा सुयस्वंधेइवा समएइवा संखेइवा ॥ सम्मत्तमंगमरकायंञ्ज्जयणत्तित्तिवेमि ॥ ॥

॥ मूल ॥

॥ इति समवायं चउत्थमंगं सम्मत्तम् ॥

संख्या एहमा कहौ तेथौ संख्यकग्रंथं कहिये । परिपूर्णं एह चौथो अंग भगवंते कह्यो । एह अध्ययनं समस्तं कह्यो इति शब्द समाप्तिं वाचकं अर्थं किल सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीप्रते कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान् महावीर स्वामि समीपे सांभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपारंपर्यपणो गुरुने बिषे बहुमानपणो देखाव्यो ॥ इति समवायांगं सूत्रट्ठवार्थं संपूर्णय्यो ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

श्रीपार्ष्वचंद्रसूरि संतानीयेन मुनिश्रवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोयं । ट्ठवार्थं श्लोक संख्या ५६५७ अस्यैव टीकां विलोक्य प्रज्ञानुसारेण लिखितोयं यदज्ञानभावाद्दृष्टं लिखितं तन्मे मिथ्यादुष्कृतं विशोधनीयं च धोधनै रिति ॥ सूत्रट्ठवार्थसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ * ॥ *

॥ भाषा ॥

नमः श्रीबीरायप्रवरवरपार्श्वायचनमो । नमः श्रीवाग्देवैवरकविसभायाअपिनमः ॥ नमः श्रीसङ्गायस्फुटगुणगुरुभ्योपिचनमो । नमः सर्वस्मैचप्रकृतविधि-
 साहाय्यककृते ॥ १ ॥ यस्यग्रन्थवरस्यवाच्यजलधेर्लक्षंसहस्राणिच । चत्वारिंशदहोचतुर्भिरधिकामांनस्यदानामभृत् ॥ तस्योच्चैश्चलुकाकृतिर्निदधतःकालादि
 दापास्तथा । दुर्लेखाखिलताङ्गतस्यकुधियःकुर्वन्तुकिष्मादृशाः ॥ २ ॥ स्वङ्कटेतिनिधायकष्टमधिकस्मामेन्यदाजायतां । व्याख्यानस्यतथाविवेक्तुमनसामल्पश्रु-
 तानाममुं ॥ इत्यालोचयतातयापिकिमपिप्रोक्तमयातत्रच । दुर्ग्याख्यानविगोधनंविदधतुप्राज्ञाःपरार्थोद्यताः ॥ ३ ॥ इहवचसि विरोधोनास्ति सर्वज्ञवाक्यात् ।
 कचनतदवभासोयःसमाद्यान्वृद्धेः ॥ वरगुरुविरहाहातीतकालेमुनीशै । र्गणधरवचनानांशस्तसङ्गातनाडा ॥ ४ ॥ व्याख्यानंयद्यपीदम्प्रवरकविवचःपारतन्त्र्ये-
 णदृष्टं । सभायोस्मिंस्तथापिक्वचिदपिमनसोमोहतोर्यादिभेदः ॥ किन्तुयोसङ्गबुद्धेरनुशरणविधेर्भावशुद्धेस्वदोषो । मामेभूदल्पकोपिप्रश्नपरमनास्ताच्चदेवीशु-
 तस्य ॥ ५ ॥ निःसम्बन्धविहारिहारिचरिताश्रीवर्धमानाभिधान् । सूरौगन्ध्यातवतोतितीव्रतपसोग्रन्थप्रणोतिप्रभाः ॥ श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्यजयिनोदर्य्ययसांवा-
 ग्मिनां । तद्वर्धारपिवृद्धिसागरइतिख्यातस्यसूरेर्भुवि ॥ ६ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्य । सूरिणाविश्रुतिःकृता ॥ श्रीनतःसमवायाख्य तुर्याङ्गस्यसमाप्तः ॥ ७ ॥
 एकादशसुशतेश्च । विशन्त्यधिकेषुविक्रमसमानां ॥ अणहिलपाटकनगरे । रचितासमवायटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरनिरूप्यास्याः । ग्रन्थमानम्निनिश्चितं ॥
 श्रीणिश्लोकसहस्राणि । पादन्यूनाचषट्शती ॥ १ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ श्रीरसु

सकल भव्यजनोंको सविनय निवेदन करते हैं कि लुपकगणोपासक मुर्शिदाबाद अजीमगंज निवासी श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुरने परोपकारार्थ छपवायके जैनागम का संग्रह किया सोऐसा कि ५०० पुस्तक ५०० जगह भंडारकरके स्थापित किये जिन्हें साधु श्रावक प्रभृति पठन पाठनादिकरके स्वधर्ममें दृढभक्तियुक्त होय और धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि होय उस आगम संग्रहका यह समवायांग चतुर्थभागहै इस ग्रंथको हमने बहुत प्रयाससे शोधनकरके छापाहै तथापि कोई जगह मतिमान् लोगोंकी यदि अशुद्ध नजर आवे तो वहलोग शुद्धकरलें अशुद्ध रहजानेमें कारण यहहै कि अनेक हाथसे काम होताहै और हमलोगभी प्रमादीहै और प्रायः लेखकदोषसे पुस्तकोंमें नये २ पाठ नजर आतेहैं दस पुस्तकोंमें दस पाठ हैं इसलिये बहुसंमत टीकासंमत और श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रजीगणीके विदित पारंपर्यानुसार पाठ रखके मुद्रितकिया इसमें भूलचूक होय तो आप लोगों की साक्षीसे मिथ्या दुष्कृत है ॥

मुद्रासहस्रकिरणै ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ।

पुस्तककमलविकासी द्युनिशजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ १ ॥

॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापगया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

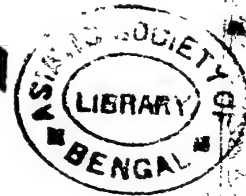
नानकचंदजती

गणधर सुधर्म स्वामि सङ्कलित सूत्र, [तदुपरि श्रीमदभयदेव सूरि कृता संस्कृत टीका] और मेघराजगणि कृत भाषा टीका युत

श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादुर के ज्ञागमसङ्ग्रह का भाग चउथा ४
अथवा

॥ समवायांग सूत्र चतुर्थाङ्क ॥

बृहन्नागोरी लोकागच्छीय वाचनाचार्य श्रीरामचन्द्रगणि शिष्य
ऋषि नानकचन्द से संशोधित होके मुद्रित हुआ



५०० जैनबुक् सुमाहटी से
५०० राय धनपतिसिंह बहा०

पहिली दफे १९०० पुष्पक
फो पुस्तक दाम २५

